ब्रज लोक वैभव

सम्पादक

मोहनलाल मधुकर



राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी

118, वसुंधरा कॉलोनी, टोंक रोड, जयपुर

विसै सूची

प्रकासकीय

एक कदम मंजिल की ओर

लोक साहित्य कौं समग्र रूप सौं प्रस्तुत करबे कौ हमारौ मंतव्य जि है कै जो बिखरौ भयौ लोक साहित्य कौ खजानौ है वाए एक ठौर पै रखौ जाए। यासौं पाठकन के सामई एक पूरी तस्वीर बन सकैगी सुधीपाठकान कूँ लोक साहित्य की समृद्ध परम्परा सौं परिचय मिल सकैगौ।

हमनैं प्रारंभ में चार अंक निकारवे कौ लक्ष्य रखौ। ब्रज लोकगीत के समीक्षात्मक लेख और गीत इतेक आए कै हमकूँ दो अंक निकारने परे। कछू लोकगीत संग्रह करबे बारे और रचयितान के औरहू लोकगीत आए हैं पर अपनी सीमा के भीतर रहकैं हमैं अपने कूँ सिमट कैं रह जानौ परौ है। लोकगीतन की कोऊ सीमा नाएँ। लोकगीतन में लोकानुभव की इतनी सामग्री बिखरी परी है कै याकूँ योजनावद्ध रूप सौं संयोजन कियौ जाए तौ ऐसे बीसौंन ग्रंथ तैयार करे जा सकैं। दृष्टिवान लोग इकट्ठे हैकें या काम कौं करैं तौ जि कई बरसन कौ काम है। जो अपने सामई आ जाए बाए पायकैं हम सन्तुष्ट है लैं पर काम वहौत है। यह कष्ट साध्य और श्रम साध्य जरुर है याकौ कारन जि है कै लोक साहित्य विपुल मात्रा में विखरौ परौ है। यही वात ब्रज लोककथा, ब्रज लोकोक्ति और ब्रज लोकमंच पै लागू होय।

लोक साहित्य के आदिसरूप कौं हम रेखांकित करबौ चाहैं तौ संसार के हर क्षेत्र में मनुष्य कविता या गीत के रूप में ही प्रस्फुटित भयौ। श्रम के संग बाकौ आह्लाद झरना की तरियाँ फूट परौ। ज्यों- ज्यों जनमानस संस्कारवान हौंतौ गयौ त्यों-त्यों गद्य लेखन की ओर अग्रसर भयौ। लोक कथा, लोकमंच विधा तौ वाद में जनमी बाद में पनपी याही सौं लोकगीत आजहू विपुल राशि में हैं जन्म सौं लैकैं मरण तक लोकगीतन कौ भंडार भरौ भयौ है। व्याह बरौंदन पै जब महिला स्वर फूट परैं तौ इच्छा होय टेप कर लिए जाएँ। जिनकौं यह संयोग मिल जाए वे धन्य हैं। जिन महानुभावन नैं यह काम करौ है चिनसौं इतेक अनुरोध है कै लोक कंठ सौं उतरवे वारे लोक साहित्य कूँ लिपिबद्ध करैं तौ शुद्धता कौ जरुर ध्यान रखैं नहीं तौ प्रकाशन में अत्यधिक असुविधा होय। यही कठिनाई हमारे सामईं आई है। ब्रज लोकगीतन की पांडुलिपि हमें जिनसौं मिली हैं वे इतेक अस्पस्ट और त्रुटिपूर्न हैं कै बात गरे नाहिं उतरैं। यदि पांडुलिपि शुद्ध हौंती तौ हम 400-500 लोकगीतन कूँ अलग सौं छापकैं आपके सामईं रखते। फिर हू हम आसावान है। हमारे पास काफी सामग्री है और अगले प्रकासनन में हम ब्रज लोकगीतन कूँ इकट्ठे करकैं प्रकासित करिंगे।

अव तौ या वरस हम जितेक साहित्यकारन सौं संपर्क साधकैं लोक साहित्य इकठौरौ कर सके वह आपके हाथन में **ब्रज लोक वैभव** के रूप में है। यह एक कदम मंजिल की ओर बढ़बे कूँ है। या यात्रा में जिन सहयोगीन नैं हमकूँ सहयोग दियौ है विनके प्रति हम हृदय सौं कृतज्ञ हैं। सबके रोम-रोम में रमे हमारे विशेष प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। हम विनकी प्रेरणा सौं और चौगुने चांव सौं आगे वढ़िगें। हमें सवकी हमेशा प्रेरना और सहयोग की आकांक्षा बनी रहेगी।

गोपालप्रसाद मुद्‌गल

सम्पादकीय.............. 

लोकसाहित्य के न्यारे-न्यारे रूपन में ब्रज कौ लोकवैभव ब्रजवासिन के कंठन माँहि युग-युग सौं विराज्यौ भयौ है। ब्रज कौ जि अनूठौ लोकसाहित्य मुखर हैकेँ जहाँ-जहाँ पहौंच्यौ, वहीं अपनी अमिट छाप छोड़तौ गयौ। देश-देशान्तरन के लोग वाकी सरसता, मधुरता अरु लालित्य पै लट्टू है गये। लोकगीत, लोककथा, लोकोक्ति अरु लोकनाट्य या अपरिमित लोकसम्पदा के प्रमुख प्रकार हैं।

लोकमानस जब संगीत की स्वर लहरीन सौं स्वर मिलाइकेँ गाइ उठै तौ लोकगीत बन जाय अरु किस्सागोई सौं जुरिकेँ मुखर होइ तौ लोककथा कौ रुप धारण कर ले। याई तरियाँ लौकिक ज्ञान अरु व्यंग-विनोद कौ सहारौ ले तौ लोकोक्ति अरु हावभावन के माध्यम सौं संवादन में प्रगट होइ तौ लोकनाट्य बन जाय।

'ब्रज लोक वैभव' ग्रंथ माँहि अधिकारी विद्वानन्नैं ब्रज लोकसाहित्य के इन चारौं प्रकारन के नाना रूपन कौ विवेचन किया है।

जब लोक-मानस गहरी लोकानुभूति सौं लबालब भरिकेँ मुखरित हैवे लगै, भाव-विभोर हैकेँ सहज भाव सौं समवेत स्वरन में कछू गाइ उठै, तौ सरस लोकगीत बनि जाय। लोकगीतन माँहि मन-सुमेरु सौं निकसे ऐसे निर्मल निर्झरन कौ सहज स्वर मिलै है जो उछरि-उछरि कैं जन-मन कूँ अपार आनंद सौं आप्लावित करि डारै है। लोकगीतन की लय सौं लहरातौ-बलखातौ, उठतौ-गिरतौ लोकजीवन भावनान के उद्गारन सौं तन-मन-प्रान, स्वास-प्रस्वास अरु रक्त प्रवाह कूँ तरंगित करतौ रहै है। साँचौ अरु सपूरौ लोकजीवन लोकगीतन कौ आधार है।

लोकजीवन के ये लोकगीत गाइबे कूँ होंय, हिलिमिलि कैं गाइबे कूँ। लोकजीवन की सहृदयता, सुकुमारता, निर्मलता अरु भाव-विह्वलता लोकगीतन में ही छलकै है, स्पंदित होइ है। लोकगीतन में जैसी सरलता, सरसता अरु सहजता मिलै है, वैसी और कहूँ नाँय मिलै। बनावटीपन सौं तौ लोकगीत कोसन दूरि रहैं हैं।

लय, माधुर्यभाव अरु भावना लोकगीतन के मुख्य तत्व हैं। लोकगीत लोक-मानस की सहज, सरल अरु अवाध अभिव्यक्ति हैं, लोकमुख की मधुर वानी हैं। यिनमें लोच होइ, जीवन्तता होइ, सहज भावनान कौ आवेग होइ, छन्द-व्याकरन अरु रीति के बन्धनन सौं मुक्ति होइ। मानव-समाज सधी-सुधरी

भाषा की ठौर अपनी-अपनी बोलीन माँहि लोकगीतन कूँ गामतौ रह्यौ है, यासौं लोकगीतन की लोकभाषा अपनी शैली में निराली, शब्दन में अनगढ़ अरु उच्चारन में आंचलिकता सौं भरी भई होय।

लोकभाषा माँहि लोकानुभूतीन के व्यक्त ह्वैवे के कारन लोकगीतन कौ लोकमानस पै बहौत गहरौ प्रभाव परै है। वे तत्काल लोकहिरदे के आरपार ह्वै जाँय अरु लोकमानस- पटल पै अमिट छाप छोड़ैं हैं। जो बात लोकगीत की एक कड़ी में कही जाइ सकै है बापै सैकरान शब्दन की लम्बी कविता या पोथी हूँ व्यक्त नाँय करि सकै। लोकगीत के माध्यम सौं जो भाव बड़ी आसानी सौं लोगन के गरे उतरि जाय वु काऊ और साहित्य-विधा के माध्यम सौं कैसैंऊ नाँय भावै।

जि बड़े परेखे की बात है कै युग विसेस की काहू विवसता के कारन जन-मन नैं लोकगीतन कौ अलिखित अरु मौखिक रहवौ आवस्यक मानि लियौ। काहू युग में लोकगीतन कूँ हाथोंहाथ लिखिकैं निश्चित शब्दन में बाँधिवे की, बिनकूँ स्थिर रूप दैवे की चिन्ता नाँय करी गई। या कारन लोकगीत समै-समै पै न्यारे-न्यारे व्यक्तीन सौं प्रभावित हौंत रहे हैं। बिनमें कछू गंगाजल अरु कछू मेह कौ पानी मिलतौ रह्यौ है। यासौं लोकगीत मौखिक हौंते भए हू अपने रूप कौ निरन्तर परिवर्तन, परिवर्धन अरु परिशोधन करत रहे हैं। भाषा बहते नीर की तरियाँ गति-पथ-गामिनी होइ। वाकौ रूप सदाँ एक सौ नाँय रहै। सो जन-मन की रुचि अरु युग-प्रवाह के अनुसार लोकगीतन की भाषा हू अदलती-बदलती रही है। तौऊ शैली अरु भाषा कौ भेद हौंते भए हू इन असंख्य लोकगीतन की आत्मा अभिन्न है।

लोकगीतन की परंपरा अलिखित अरु अनाम रही है। बिनके सिरजनहार कौ कछू अतौ-पतौ नाँय चलै. या कारन लोकगीतन में बिनके रचवैया की निजी रुचि न ह्वैकैं, लोकजीवन की व्यापक भावानुभूतीन कौ उद्वेलन अरु मानव के समूहगत भावन की अभिव्यक्ति मिलै है। वे लोकमंगल की भावना सौं परिपूरन होंइ, चेतन अरु जड़ सबकी हित-कामना सौं अनुप्राणित रहैं। लोकगायक याई व्यापक आत्मीयता की भावनान में तरंगायित ह्वैकैं गाइ उठें हैं। यासौं वे लोक-समुदाय की अनुपम धरोहर हैं, लोक की अनमोल सम्पत्ति हैं, जन-जन की बेजोड़ थाती हैं, कबहू न छीजिवे वारे रस के निर्झर हैं। वे जन-भावनान के छलकते भए ऐसे कुल्लड़ हैं जिनके होठन पै उतरते ही जन-मन-मयूर मदमातौ ह्वैकैं समवेत स्वरन में गाइ उठै है, सब सुधि-बुधि भूलिकैं नाँचिवे लगि जाय।

लोकगीतन कूँ लोकजीवन कौ मंत्र कह्यौ गयौ है। लोकगीतन में संवेदनशीलता के संग-संग वेद-मंत्रन कौ सौ मन्दौ-मन्दौ सम्मोहन होइ जो अपनी सरल लय-गति सौं मन-मस्तक पै छाइवे लगै है। बिनकी गेयता में शब्दन की ठौर स्वर, लय, ध्वनि, स्पन्दन, उतार-चढ़ाव अरु मूल लोकगीतन कौ मन्द, मध्यम लय-विधान याकौ प्रमान है। लोकगीतन में साहित्य, संगीत, कलात्मक सुन्दरता; जो कछू ढूँढौगे, सोई पाऔगे।

लोक-जीवन कूँ उल्लास, आनन्द अरु उत्साह बहौत भावै है। लोकगीत इनही भावन सौं ओतप्रोत होंय। लोकगीतन सौं दुख हलकौ ह्वै जाय, सुख दूनौ बढ़ि जाय अरु मेहनत की थकान महसूस ही नाँय

होय। या कारन लोक-जीवन सौं लोकगीतन कूँ निकासि दियौ जाय तौ जीवन सूनौ-सूनौ रह जायगौ, निरर्थक अरु बेकार लगिबे लगैगौ।

जिन दिनान में आजु जैसे नाना प्रकार के खेलकूद अरु मनोरंजन के आधुनिक वैज्ञानिक साधन नॉय हते बिन दिनान में मेले-ठेले, कुश्ती-दंगल अरु लोकगीत-संगीत सम्मेलनन के आयोजन ही मन बहलाइबे के उत्तम माध्यम हे। बसंत रितु, होरी-दिवारी अरु न्यारे-न्यारे त्यौहारन के, उच्छवन के औसरन पै इनकौ आयोजन होयौ करतौ। लोकगीत सम्मेलन इन आयोजनन कौ सिरमौर रहतौ। आजहू लोकगीत ख्याल, दंगल, रसिया सम्मेलन, भजन-जिकड़ी, फूलडोल, आल्हा, ढोला-राँझा गायकी, नौटंकी खेल आदि के आयोजन देखिबे-सुनिबे कूँ मिल जाँय हैं। इन आयोजनन में ढ़ोलक, सारंगी, बाँसुरी, इकतारा, चिकाड़ा, खरताल, डंडा, नगाड़े आदि साज-बाजन पै लोकगायक लोकगीतकार अपनी उत्तमोत्तम रचनान कौ हिलमिलकैं गायन करैं हैं, नाँचकूद सौं अपनी कला कुसलता में निखार लावैं हैं। इन औसरन पै इकठौरौ जनसमूह लोकगीतकार के सुमधुर स्वरन सौं आनन्द विभोर है-है जाइ। लोककवि की कही भई कहन घर-घर माँहि गहराई लौं घर करि जायौ करै है। तबई तौ लोक साहित्य के न्यारे-न्यारे रूपन में लोकगीतन कौ सबसौं ऊँचौ स्थान है।

आनंद सौं उमंगित हैकैं गुनगुनाइबौ अरु गाइबौ मानव कौ सहज स्वभाव है। यासौं जाहिर होइ कै लोकगीत उतने ही प्राचीन हैं, जितनी मनुष्य जाति। या कारन लोक-मानस सुदूर अतीत माँहि जब-जब आनंदित, उल्लसित, उमंगित अरु हिलोरित भयौ होइगौ, तब-तब वाके हिरदे के लयबद्ध स्वर अनायास मुखरित भये होंइगे अरु बिन्नैं लोकगीतन कौ रूप धारन कियौ होइगौ। तबई तौ लोकगीतन माँहि लोक की युग-युगीन पावन वाणी की साधना समाहित रही है। बिनमें लोकरुचि, लोकरीति अरु लोकनीति की त्रिवेनी कौ अनूठौ संगम हू देखिबे कूँ मिलै है।

लोकगीतन माँहि देस की सभ्यता के विकास की, वाके जीवन की गतिविधीन की अरु सांस्कृतिक धरातल के न्यारे-न्यारे स्तरन की मनोरम झांकी मिलै है। लोकगीत अपने युग के लोक-सत्य कौ सूधौ-सच्चौ उद्घाटन करैं हैं। लोकगीतन सौं युगीन जातीय जीवन के सच्चे सुख-चैन की झलक मिलै है, हिरदे की चुभन अरु कसक कौ पतौ चलै है। लोकगीतन माँहि लोक-मनोविज्ञान के अध्ययन कौ बहौत सौ माल-मसालौ भर्‌यौ पर्‌यौ है।

पच्छिमी देसन के विद्वानन्नैं भारत कूँ लोकगीतन कौ देस बतायौ है। फिर ब्रज कौ तौ कहनौं ही कहा! जहाँ 'डार-डार अरु पात-पात पै राधे-राधे होइ' है। यौं तौ संसार की सिगरी भाषा-बोलीन माँहि लोकगीतन की अटूट परम्परा रही है परि ब्रजभाषा सी मिठलौनी और कोऊ भाषा नाँय। जिही कारन है कै ब्रज लोकगीतन कौ अमिट प्रभाव सिगरे देस पै, सब भाषा-बोलीन पै पर्‌यौ है।

ब्रज लोकगीतन के स्वरन सौं वातावरन इतनौ सुन्दर, सुमधुर अरु सरस है जाय कै कछू कही नाँय जाय सकै। ब्रज-लोकगीतन कौ क्षेत्र इतनौ व्यापक है कै बिनसौं कोऊ महत्वपून विषय अछूतौ नाँहि

रह्यो। इन गीतन के महासागर माँहि गोता लागइबे पै नाना प्रकार के रत्नन की प्राप्ति होइ है। ब्रज लोकगीत सुख-दुख, हास-परिहास-रुदन, हर्ष-विषाद, आसा-निरासा, उत्थान-पतन, इच्छा-अनिच्छा, संजोग-वियोग, राग-विराग अरु मनन-चिन्तन के ताने-बानेन सौं बुने भये स्वरमय वितान हैं। बिनकी बनावट-बुनावट, रचना-कौशल अरु शिल्प-बिधान सब कछू 'सहज' हौंते भये हू कलात्मक है। इतने पै हू ब्रज लोकगीतन पै कला सवारी नाँय तानि सकी। जौ कवीसुरन की कृपा सौं कहूँ लोकगीतन पै कला सवार है गई तौ लोकगीतन में लोकगीतपन ही नहीं रहैगौ, अकेली कला के ही दर्सन हैबे लगिंगे जैसौ हाल-बेहाल हमारे पक्के संगीत कौ हौंतौ जाइ रह्यौ है। कोकिल-कंठी कामिनीन के स्वर-माधुर्य में मिलिकैं लोकगीत तौ पहलैं ई संगीत के सर्वोत्तम सरूप हैं, फिरि बिनपै कला थोपिबे कौ उपक्रम नहीं हौनौ चहिए।

ब्रज लोकगीतन की विविधता अरु बहुलता कौ कछू ठिकानौं नाँय। लोक-जीवन कौ ऐसौ कोऊ पहलू नाँय जो ब्रज-लोकगीतन की परिधि में न आयौ होइ। हाँ, इतनौ जरूर है कै ब्रज लोकजीवन की समग्र झाँकी करिबे वारेन कूँ ब्रजभाषा के संगमरमरी घाट पै पहौचिकैं लोकगीतन के स्वर-सागर में गहरे गोता लगामने परिंगे। ब्रजवासी तौ ऐसे औसरन की बाट देखतेई रहैं हैं। जब वे उच्छवन पै, पर्वन पै, अनुष्ठानन पै लोकगीतन के माध्यम सौं अपने सहज संगीत कौ परिचै दै सकैं। साँची पूछौ तौ सरस, सरल, मधुर अरु सहज-स्वाभाविक लोकगीत ब्रजभाषा अरु ब्रजवासीन की अनमोल निधि हैं।

ब्रज लोकगीत जीवन के सिगरे उच्छवन में, कामन में, धामन में अरु हरेक बात में इतेक घुरिमिलि गये हैं कै लोकगीतन के बिना ब्रज में कोऊ काम खूबी सौं हैई नाँय सकै। परम्परा सौं चले आये पुराने ब्रज लोकगीतन की बेलि बढ़ती ही जाइ रही है। परिवार अरु पारिवारिक भाव-सम्बन्धन सौं ब्रज लोकगीतन कौ तानौं-बानौं निरन्तर बुन्यौ जाइ रह्यौ है। अबहू नित नये लोकगीतन कौ सृजन सहज भाव सौं है रह्यौ है। याके ताँईं साधुवाद है हमारी मैया-बहनान कूँ, बहू-बेटीन कूँ जिन्नैं लोकगीतन के माध्यम सौं हमारी सभ्यता अरु संस्कृति के पुराने मान-मूल्यन कूँ अपने कल-कंठन माँहि चिर-संचित राख्यौ है। बिन्नैं ही लोकगीतन कूँ एक पीढ़ी सौं दूजी पीढ़ी लौं पहौंचायौ है।

या प्रसंग में एक विपरीतता की ओर हमें ध्यान जरूर दैनौं परैगौ। पच्छिमी प्रचार-माध्यमन सौं आये पछुवा हवा के अन्धड़ सौं हमारे सूधे-साँचे भाव, हमारे लोकगीतन कौ कच्चौ माल तेजी सौं छीजतौ जाइ रह्यौ है। विदेसीपन के लदान अरु सनेमा-टी. वी. जी.टी.वी.-स्टार टी. वी. अरु जानैं काहे-काहे के उल्टे असरन सौं हमारे लोकमानस के सहज-सनातन-समवेत भावन कौ सागर सिमटतौ जाइ रह्यौ है। आजकाल की नई नवेली बहून कूँ अरु छोरी-छापरीन कूँ बूढ़ी-बड़ीन के परम्परागत संस्कारगीत नाँइ सुहामें अरु वे दूरि हटिकैं नई तर्जन के नये गीत गढ़िकैं अपने फूहड़ आधुनिकता-प्रेम कौ परिचै दैवे लगी हैं।

हमारे लोकगीतन की सबसौं ज्यादा रेढ़ पीटिबे कौं काम करि रहे हैं सनेमा के वेतनभोगी कलाक़ार, जो लोकगीतन के नाम पै स्टूडियोन में कटी-छटी वानी की की अपनी 'मिठास' कौ मोल माँगें हैं,

लोकगीतन की धुनन में विकार पैदा करें हैं। सनेमा के सितारेन के अरु तारिकान के बनावटी प्रेम अरु प्रत्यारोपित 'दिल' सौं लोकजीवन की सच्चाई कैसें प्रगट है सकैं हैं?

जिही कारन हैं कै सनेमा के तथाकथित लोकगीत चाहैं कछू दिनान कूँ झूँठी लोकप्रियता भलैंई पाइलैं, वे हमारे लोकगीतन की बराबरी पै कबहूँ नाँइ पहौंचि सकैं। बिनमें लोक-मानस की साँची झलक थोरेंई मिलै है। हमें सावधान रहनौं चहिए कै ये देसी-विदेसी विपरीत प्रभाव हमारे लोकगीतन के निर्मल निर्झरन कूँ कहूँ सुखाइ नहीं डारैं।

जैसें लोकगीत जनमानस के प्रतिबिम्ब होंइ, वैसें ही लोकगीतकार आम जनता के सच्चे प्रतिनिधि। लोकगीतन की विसेसतान कूँ अपनाइबे वारे रचनाकार जन-मन के पारखी कौ हू काम करें हैं। विनपै लोकहित को बहौत कछू दायित्व निर्भर रहै है। लोक की समसामयिक समस्यान कूँ सुरझाइवे के ताँईं वे जन-जन कूँ जगाइबे कौ जतन करें हैं। जो लोकगीतकार जादा सौं जादा जनता के हिये कौ हार बनि सकै बुही साँचौ लोककवि अरु लोकगीतकार कह्यौ जाइ सकै है। लोकगीतकारन के रचे लोकगीतन कौ तानौ-बानौ काहू न काहू परम्परागत परिपाटी पै आधारित होइ। लोकगीतकार की लोकप्रियता अरु सफलता कौ सबसौं बड़ौ सबूत जिही है कै जहाँ कहूँ लोकगीतकार लोककवि पहौंचि जाय वहाँ वाके मनभावने लोकगीतन कूँ सुनिबे के ताँईं मेलौ सौ लगि जाय।

जन-जीवन कूँ प्रभावित करिबे वारी परिस्थितीन के अनुसार लोकगीतन की रचना चिरकाल सौं हौंती रही है। जब जन-जीवन के उतार चढ़ाव लोकगीतकार के हिरदे कूँ स्पंदित करदें तब वाकौ हिरदै भावोद्रेक सौं उद्वेलित हैकें स्वानुभूतीन कूँ शब्दन माँहि गूँथिकैं गाइ उठै अरु या तरियाँ एक नये लोकगीत कौ जनम है जाय। समसामयिक घटना एक-एक करिकैं नित नये लोकगीतन कौ रूप धारिकैं जन-जन में व्याप्त हौंती रहैं। या प्रकार सौं ज्ञात रचनाकारन के लोकगीतन कूँ विकसनशील लोकगीतन की गिनती में लियौ जाइ सकै है। इन लोकगीतन में हू लोकमानस की सहज अभिव्यक्ति के अलावा न कोऊ बनावट लखाई परै, न विसेस सजावट।

गाँम-गाँम में ऐसे लोकगीतन के स्वनामधन्य गायक पासी, डूम, भाट, राय, चारण, जोगी, भोपा, भगत, बनजारे आदि प्रसिद्ध रहे हैं। ये समसामयिक लोकगीतन के रचनाकार माने जाँय अरु समै-समै पै न्यारी-न्यारी विधान के नये लोक साहित्य कौ सृजन करत रहें हैं। घाघ, भड्डरी, ईसुरी, पतोलों, शिवराम, इन्दरमल, चिरंजीलाल, नथाराम, घासीराम, पातीराम, खिच्चू आटेवारौ, मटोलसिंह दुलैया, कोमल सिंह आदि ब्रज के ऐसे जाने-माने लोककवि भए हैं जिन्नैं श्रेष्ठ लोकसाहित्य अरु उत्तमोत्तम लोकगीतन की रचना करी है।

या ग्रंथ माँहि ब्रज लोकगीतन सौं सम्बंधित शोध परक अरु समीक्षात्मक लेखन के अलावा कछू परम्परित लोकगीतन की बानिगी के संग-संग आजु के लोकगीतकारन के रचे भये नये चल्ला के लोकगीत हू दिए जाइ रहे हैं। ब्रज के इन नये लोकगीतकारन की मेधा लोकमानस सौं पूरी तरियाँ जुरी भई है।

ये लोककवि लोकमानस की संवेदनान कूँ ब्रजभाषा में बड़ी मनोरमता अरु ईमानदारी सौं व्यक्त करि रहे हैं। इन नये लोकगीतन में जन-मन कौ सहज-स्वाभाविक चित्र खैंच्यौ गयौ है। साँची पूछौ तौ इन लोकगीतन में हमारे समै की झंकार है, व्यक्ति की पुकार है, समाज सुधार की गुहार है अरु धर्म की मनुहार है। इनसौं पतौ चलै है कै लोकमानस की अनुभूति-चाहे सुख की होइ या दुख की, सदा उन्मुक्त रहै है। वामें मर्यादा कूँ कोऊ ठौर-ठिकानौ नाँइ होइ। ऐसी सूरत में इन नये लोकगीतन में मानुस-मन की सिगरी रागात्मक प्रवृत्तीन कौ खुलिकैं बर्नन भयौ है।

इन लोकगीतन कौ संगीत परम्परागत परिपाटी पै आश्रित है। लोकगीतकारन्नैं इन गीतन की रचना काहू न काहू तान या लय के आधार पै करी है। लयबद्धता इन गीतन की प्रमुख विशेषता है ! इनमें न्यारी-न्यारी धुन हैं, अलग-अलग राग हैं। शैली के अटपटेपन के कारन हरेक लोकगीत अपनी विसेस पहचान बनाइवे वारौ है। नये चल्ला के इन लोकगीतन में अनेकन लोकछंद देखे जाइ सकैं हैं, जैसैं-मल्हार, लाँगुरिया, सपरी, होरी, रसिया, आल्हा, भजन आदि।

लोकगीतन कौ क्षेत्र बड़ौ व्यापक रह्यौ है। या ग्रंथ में हू भक्ति, नीति, सिंगार, हास-परिहास, वीर विषयक लोकगीतन के अलावा श्रीकृष्ण की विविध लीलान सौं लैकैं साक्षरता महिमा, पर्यावरण-सुधार अरु संरक्षण, परिवार-नियोजन; बाल विवाह, दहेजप्रथा, सट्टा लाटरी, फैसह्नपरस्ती कौ विरोध, देसप्रेम, स्वदेसी में आस्था, श्रम की महत्ता, नसाबन्दी, नारी-जागृति, भ्रष्टाचार, घूसखोरी, चोरबजारी, उग्रवाद, आतंकवाद, राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सद्भाव आदि विषयन के लोकगीत हैं।

लोकगीतकारन के ये लोकगीत जन-मानस कूँ प्रभावित करिबे की पूरी छमता राखैं हैं। साँची पूछौ तौ लोककवि की एक चुटकी जनता के पत्थर दिल कूँ हू पिघलाइ सकै है। हमारी आजादी की लड़ाई में देसभक्तन कूँ अपनौ सर्वस्व निछाबर करिबे की प्रेरना लोककविन के रचे लोकगीतन सौं खूब मिली। आजादी मिले पाछैं हू राष्ट्र निर्माण में लोकगीतन्नैं अच्छौ सहारौ लगायौ।

आजु के हमारे राष्ट्रीय सरोकारन के ताँईं जनरुचि जगाइवे की दिसा में ये लोकगीत बहौत सहायक है सकैं हैं। देस में चलि रहे सम्पूर्ण साक्षरता अभियान के काजैं वातावरण बनाइबे में लोकगीत सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाइ रहे हैं। नये-नये गीतन के कैसिट ठौर-ठौर बजते सुनाइ देंय। लोककविन के रचे इन लोकगीतन कूँ लोकमानस अपनाइवे लग्यौ है। बिना पढ़ौ लिखौ समाज इन गीतन कूँ बड़े चाव सौं सुनै है। यासौं प्रतीत होइ कै ये लोकगीत चिरजीवी हुंगे अरु परम्परित लोकगीतन की हर कसौटी पै खरे उतरिंगे।

ब्रज लोककथा

लोककथा अपनी मधुरता, रोचकता अरु उपयोगिता सौं सबकौ मन मोहिबेवारी लोकसाहित्य की सबसौं ज्यादा जीवन्त अरु कलात्मक विधा है। कथा कहिबे की प्रवृत्ति मनुष्य की आदिम प्रकृति हैबे तें लोककथा आदिकाल सौं चली आई है अरु जौलौं आदमी रहैगौ तौलौं लोककथा रहैगी।

कंठानुकंठ यात्रा करिबे वारी लोकमानस की या *अलिखित परम्परा की प्राचीनतम अभिव्यक्ति* माँहि लोकसंस्कृति अरु लोक विस्वासन की सशक्त प्रस्तुती हौंती रही है।

लोककथा के बीज रूप कूँ खोजिबे वारे विद्वानन को मानिबौ है कै मानसनैं जबसौं आँखि खोली यानी अपनी विकास-यात्रा आरंभ करी तब ही सौं लोककथा कौ जनम भयौ। जीवन के हर क्षेत्र में जन-जन जो कछू देखतौ, अनुभव करतौ अरु समझतौ वाकूँ अपनी कल्पना सौं एक दूसरे सौं कहतौ रह्यौ। जब अपने सत्य कूँ अपनी कल्पनान के सहारे मनोरंजक रूप में प्रगट करिबे लगौ तौ लोककथान कौ सहज ही उद्भव है गयौ। लोककथा के प्राचीन रुप कूँ खोजें तौ ऋग्वेद के बिन स्थलन तक पहुँच जाँय जिनमें कथोपकथन के माध्यम सौं यम यमी जैसे सम्वाद-सूक्त कहे गये हैं। याही सौं कथान कौ जनम भारत में ही भयौ जि निर्विवाद है।

लोककथा वैदिक संस्कृत, संस्कृत, प्राकृत, पाली अरु अपभ्रंस सौं यात्रा करती भई आजु की भापा लौं आ पहुँची है। 'हरि अनंत, हरि कथा अनंता' की भाँति लोककथान कौ अरु बिनकी विधान कौ कोऊ अंत नाँय; बिनकी विविधता, बहुलता अरु विचित्रता कौ कछू ओर-छोर नाँय, ठिकानौ नाँय। लोकजीवन कौ ऐसौ कोऊ पहलू नाँय जो लोककथान की परिधि में न आयौ होइ। या कारन बहौत कठिन हौंते भए हू विद्वानन नैं लोककथान के वर्गीकरण अरु न्यारे-न्यारे रूपन के विवेचन कौ प्रयास कियौ है। डा. हरद्वारीलाल शर्मा नैं जीवन्त कथान के द्वै रूप बताये हैं, जिनमें एक वेहैं जो लोकमानस की स्मृतीन सौं संबंधित हैं, अरु दूसरे वे जो लोकमानस की सद्यसर्जना हैं। फिरि बिन्नैं स्मृतिस्थ लोकोक्ति कूँ हू सद्य सर्जना कौ ही एक रूप सिद्ध करि डारौ है। इन जीवन्त लोककथान के संबंध में डा. शर्मा कौ कथन है- '' समूचा लोकमानस इनमें प्रतिविम्बित होता है, इनके माध्यम से बोलता है, बताता है, टकराता है, पुचकारता है, ललकारता है ओर हुँकारता है, क्रोध और आवेश प्रकट करता है, हँसी के साथ व्यंग-विनोद करता है, घाव करता और चोट मारता है, बिना खून बहाये, सिखाता है बिना प्रशिक्षक के, धमकाता है बिना डराये। जो हो से सर्जनाएं हैं, ठीक काव्य-सर्जनाओं की भाँति।'' - (लोकवार्ता विज्ञान, पृष्ठ 518)

हर युग अपनी अनुभूतीन सौं अरु समृद्ध चेतना सौं लोक-उत्थान में कछू न कछू जोरतौ रहै है, बिनकौ संस्कार करतौ रहै है। या लोच के कारन ही लोककथान कौ संवर्धन अरु संप्रेषन हौंतौ रह्यौ है। श्री परिपूर्णानंद वर्मा कौ तौ यहाँ तक कहनौ है-

'' हर देश का लोक साहित्य आर्थिक, सामाजिक तथा वैज्ञानिक प्रगति के संदर्भ में बदलता रहता है। अब परी कम्प्यूटर लेकर चलती है। बिल्ली कार भी चलाती है। पर अन्ततोगत्वा परिणाम और उपदेश वही होगा। जहाँ सुखान्त रुचिकर है, वहाँ की लोककथाएँ सुखान्त होंगी। जहाँ दुःखान्त रुचिकर है वहाँ वैसा ही प्रसंग बनेगा।'' - (लोकवार्ता विज्ञान, निवेदन, पृष्ठ 5-6)

" मुझे ब्रज जनपद कहानियों का मूल प्रदेश प्रतीत होता है। विश्व में आज प्रचलित कहानियों के विश्लेपण से अधिकांश विद्वानों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि भारत ही वह देश है जहाँ से कहानियों का उद्‌गम हुआ। भारत में ब्रज वह जनपद है जहाँ से भाषा ने समस्त भारत को ऐक्य प्रदान किया। इसी क्षेत्र में ढली संस्कृत समस्त भारत के अन्य साहित्य का माध्यम बनी।"

ब्रज की लोककथान में वुही वर्नन है जो ब्रज के लोकजीवन में रह्‌यौ है। बिनमें ब्रज की सिगरी विशिष्ट लोक परम्परान कौ समावेश है। लोकमानस अमंगल की उद्‌भावना नाँय करै। यासौं ब्रज लोककथा लोकमंगल की भावना सौं परिपूरन होंय चेतन अरु जड़ सबकी हितकामना सौं अनुप्राणित रहै अरु सदा सुखान्त होंय।

ब्रज लोककथान में नैतिक आदर्शन की स्थापना करते भये सुखान्तता के दर्शन होंय हैं। जन-जन की सुख समृद्धि के ताँईं मंगलकामना करी जाय है। लोककथा चाहें पसु-पंछीन की हौंय, चाहें दई-देवतान की, चाहें दानवन की, चाहें परीन की होंय चाहें राजरानीन की, सबन में मनोरंजकता सौं मंगल-कामना प्रगट करिवे कौ ध्यान राख्यौ जाय। या मंगलकामना कूँ प्रगट करिबे कौ ढंग हू लगभग एक जैसौ होय। जैसें-'वा डोकरी पै गनेस जी नैं जैसी कृपा करी, ऐसैं ही सबपै करें।" "हे भगवान, सबरे भैयान कूँ ऐसी ही बहन दीजौ।" "जैसें शंकर जी नैं वाकूँ सुहाग दियौ, वैसें ही सबकूँ दें।" "जैसौ वाकूँ आनंद भयौ, वैसौ सब काहू कूँ हूजौ।" आदि आदि। जौ कहूँ बुराई पै अच्छाई की विजय के कारन सखान्तता में कमी झलकिवे लगै तौ कह्‌यौ जाय-" जैसौ वाकौ भयौ, वैसौ काहु कौ न होइ।"

सिगरी ब्रज लोककथान में परिवार, समाज, राष्ट्र अरु संसार के कल्याण के ताँईं परंपरा सौं चली आ रही निष्ठा-भावना निहित है, कोरौ ढोंग-ढपांक नाँय। 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना अरु सबके सुहित की चाहना है। ब्रज लोककथान में मानवीय सम्बन्धन कौ लौकिक कथ्य है जो पारलौकिक सत्य कौ उद्‌घाटन करै है। परिवार के सिगरे सदस्य जि सम्बन्धन सौं जुरे भए हैं, जिनसौं परिवार माँहि सुख-शान्ति मधुरता वनी रहै है विन सवन कूँ ब्रज लोक-कथान में पिरोयै गयौ हैं। जैसें-मैया-बेटा, पिता-पुत्र, भैया-वहन, सास-वहू, पति-पत्नी जिठानी-दौरानी, देवर-भाभी, ननद-भौजाई, मामा-भानजे, विमाता, मेहमान, मित्र पारौसी आदि। इनके अलावा राजा अरु प्रजा कौ संबंध कैसौ हौनौ चहिए मानव धर्म कौ निर्वाह कैसैं करनौ चाहिए आदि हू लोककथान के विषय हैं।

ईश्वर अरु अलौकिक के प्रति श्रद्धा-विश्वास सौं धार्मिक भावनान कूँ पुष्ट करिबे के ताँईं ब्रज लोककथा परम्परा सौं एक प्रभावपूर्ण भूमिका कौ निर्वाह करती चली आई है। इन लोककथान में मानवेतर संस्कृति के हू दर्शन होंय। मानव सौं हटिकें पसु-पंछीन की कथान में हू जीवन के आनंद-तत्व की उद्‌भावना करी गई है। याही तरियाँ दई-देवतान सौं जो संवंध जोरे गये है वि [illegible] रीति-नीति के पथ पै चलिकैं आदर्श जीवन की कामना करी गई है, लोकहित कौ उद्‌घाटन कियौ [illegible] अनाचार, दुराचार, भ्रष्टाचार कूँ रोकिवे के ताँईं पानी [illegible] पार बाँधिवे कौ रुचिकर अ [illegible] । जुटायौ

गयौ है। ब्रज लोककथान के 41 अभिप्राय गिनायकैं डॉ. सत्येन्द्र नैं कही है कै हर कथा कौ कछू न कछू अभिप्राय जरूर होय। जिही कथा कौ मूल तत्व है, कथा कौ प्राण तत्वहै। याही के माध्यम सौं सांस्कृतिक विरासत पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तान्तरित हौंती चली आ रही है।

सामान्यजन की कोऊ अनुभवसिद्ध आकर्षक उक्ति ही लोकप्रिय हैकैं कालक्रम माँहि लोकोक्ति बनि जायौ करै है। लोकोक्ति की बुनावट माँहि प्रमुख रूप सौं लौकिक ज्ञान अरु व्यंगार्थ कौ तानौ-बानौ रहै है।

ब्रज लोकोक्ति

लोकोक्ति कौ कोऊ न कोऊ उद्देश्य हू जरूर रहै है, व्यंग-विनोद के संग थोरी-बहौत अन्योक्तिपरकता हू पाई जाय।

लोकवार्ता विज्ञानीन्नैं लोकोक्ति कूँ व्यावहारिक जीवन की कुंजी, मानव जाति कौ अलिखित कानून-संग्रह, मानव-स्वभाव अरु व्यवहार-कौशल कौ सिक्का, व्यक्ति कौ बुद्धि-चमत्कार, लोकमान्य निष्कर्ष, अनुभव की दुहिता आदि विशेषणन सौं विभूषित कियौ है। लोकसाहित्य के मर्मज्ञ मनीषी डॉ. सत्येन्द्र के शब्दन माँहि '' लोकोक्तियाँ मानवी ज्ञान का सार हैं। वे मर्म को स्पष्ट करती हैं और थोड़े में ही बहुत कुछ कह देने की सूत्र प्रणाली को लोक में बनाए हुए हैं।''

लोकोक्तीन माँहि मानव समुदाय की बौद्धिक अरु रागात्मक विरासत संचित रहै है। ये लोक की अनमोल थाती हैं, लोकजीवन की अविच्छिन्न देही हैं। लोकोक्ति लोक संस्कृति माँहि संचित रहकैं अतीत की परम्परा कूँ वर्तमान में गतिशील राखिवे अरु वाकूँ भविष्य की देहरी लौं पहौंचाइवे वारी हैं। याही सौं जाने माने विचारक फ्रांसिस बेकन कूँ कहनौ पर्‌यौ कै काहू राष्ट्र की प्रतिभा, विदग्धता अरु भावना वाकी लोकोक्तीन सौं अन्वेषित होइ है।

लोकोक्तीन पै शोध करिकैं डॉ. शशि शेखर तिवारी नैं निष्कर्ष निकार्‌यौ है-'' लोकोक्ति लोक समुदाय के समवेत अनुभव और अभिज्ञता की सूत्रात्मक विदिग्ध और अभिव्यक्ति के रूप में अभिधान को सार्थक करती है। इसका प्रथम शब्द 'लोक' सारगर्भ है। यह लोकोक्ति की सृष्टि, प्रयोजन और महत्व को संकेतित करता है। लोकोक्ति लोक के कर्मसंकुल जीवन के समस्त अवसरों और क्षेत्रों में यथास्थान प्रयुक्त होकर सत्यवचन, प्रमाण, आप्तवाक्य, साक्षी ओर लोकमत के रुप में सर्वसाधारण को प्रभावित और प्रेरित करती हैं।'' (भोजपुरी लोकोक्तियाँ ; प्रस्तावना)

लोकवार्ता- विज्ञानी डॉ. राजेन्द्र रंजन नैं 'लोकोक्ति परिवेश प्रवृत्ति और प्रक्रिया' के सम्बन्ध में बतायौ है कै लोकोक्ति समाज की लोकचेतना होंय। इनकौ जनम लोकजीवन की परिस्थितिन के गर्भ सौं होय इनके बीच ही विकास होइ। जीवन के साँच की अनुभूति जिन्दगी सौं ही होय। जानैं कितेऽ जिन्दगी गुजर जाँय तब एक ही निष्कर्ष निकसै। तब कहूँ एक सत्य के दर्शन होंय। तब कहूँ एक लोको हाथ लगै।

लोकोक्तीन की व्यापकता अरु विनके प्रादुर्भाव की जानकारी दैंते भये लोकसाहित्य वेत्ता डॉ. गोविन्द रजनीश नैं कही है – ''सभ्य, अर्धसभ्य, संस्कृत और असंस्कृत-सभी समाजों में लोकोक्तियाँ प्रचलित एवं व्यव्हत होती हैं। अनुमान यह है कि लोकोक्ति का प्रचलन उस समय हुआ होगा जब आदिम समाजों की आदिम भाषाएँ वैचारिक आदान प्रदान के लिये सहज हो चुकी होंगी। यह सुनिश्चित है कि लोकोक्तियों का प्रादुर्भाव लिपिबद्ध साहित्य से पूर्व हो चुका था, अत: इसे इस दृष्टि से आदिम ज्ञान का संचित कोष कहा जा सकता है।'' (राजस्थान के पूर्वी अंचल का लोकसाहित्य, पृष्ठ 169)

विद्वानन के ऊपर दिए विचारन के अध्ययन सौं ऐसौ लगे है कै लोक कूँ जब वाणी कौ वरदान मिल्यौ होइगौ तौ लोकोक्ति वैसें ही फूटि परी होइगी जैसें पानी पत्थरन नैं फोरिकें झरना के रुप में झरि परै है। हाँ इतेक जरूर है कै लोकोक्ति कूँ एकाएक मान्यता नहीं मिली होइगी। कोऊ उक्ति वरसन लौं ताई गई, छानी गई और लोक की तराजू ते तोलिवे पै खरी उतरी, तवई लोकोक्ति वनि पाई, तवई वापै लोकोक्ति की मौहर लगी, तवई वाकूँ लोक नैं मान्यता दई, शास्त्रकारन्नैं स्वीकार करी है।

लोकोक्ति काहू तरियाँ के साधन सुविधान की मौहताज नाँय रही। जि तौ कंठ सौं कंठ उतरती भई न जानें कव सौं सतत यात्रा करती चली आइ रही है। जीवन के अनुभवन के निचोड़ कूँ निरन्तर लुटामती आइ रही है। लोकभाषा कौ, लोकसाहित्य को अरु लोकसंस्कृति कौ सरंक्षण, संवर्धन करती चली आइ रही हैं। लोकोक्ति हमकूँ लोकचेतना की गहराई मे लै जावै है। जन-जन की सनातन प्रवृत्तीन कूँ उजागर करै है। सामूहिक अनुभूतीन कूँ वौद्धिकता कूँ अपने में समेटि लेइ है।

साँची पूछै तो लोकोक्ति लोकजीवन की अनिवार्य प्रक्रिया है जो सतत चलती रहै है। लोकोक्ति वनती रहै, विगरती रहै। ये जन-जन कूँ प्रेरणा दैंती रहैं, सँवारती रहैं दुलरामती रहैं , डाँटती-फटकारती रहैं, समझाती रहैं। ये व्यंगवानन सौं प्रहार करती भई प्रकृति अरु समाज के प्रति मानुसन की प्रतिक्रिया कूँ संतुलित राखैं हैं।

लोकोक्तीन कौ असर सिर पै चढ़िकैं वोलै। ये मारैं, पुचकारैं, गुदगुदावैं, हँसावैं अरु समाज कूँ रीति-नीति पै चलिभे की राह दिखावैं। ये नैंकहू लगी लूथरी नाँय छोड़ैं। ये राव कूँ वख्शैं, न रंक कूँ इनको सहारो लैंकैं लोकोक्तिकार समाज सौं चोली-दामन की नाँई जुड़ै। साहित्यकार अपनी गहरी पैठ जमावै। ये कवहू लोक की प्रकृति के परतन कूँ खोलैं तो कवहू इतिहास की घटनान कूँ उजागर करैं।

थोरे में वनौं कहवौ लोकोक्तीन कौ सुभाव है। दोहानकूँ 'देखन में छोटे लगैं ' 'घाव करैं गंभीर' कह्यौ गया है परि लोकोक्तीन नैं तौ दोहान कूँ हू मात कर दियौ है, पछाड़ दियौ है। कहानीन के घिसे भए अंशन सौं हू इनकूँ जान्यौ जाइ। अनेक कहानीन के तथ्य लोकोक्तीन में छिपे रहैं। भारी अंतर कूँ वताइवे के ताँई 'कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली'' कौ प्रयोग कियौ जाइ। याके पीछैं ऐतिहासिक तथ्य छिप्यौ भयौ है। राजा भोज कौ गांगेय तैलप सौं युद्ध भयौ। राजा भोज ने युद्ध में वाजी मारि लई। गांगेय तैलप कूँ मौंह की खानी परी। याही पै कहावत वनि गई कै 'कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली' ।

ब्रज लोकसाहित्य माँहि लोकोक्तीन कौ अखूट भंडार है। पग-पग पै बात में कोऊ न कोऊ चुभती उक्ति कहावत के रूप में सुनिबे कूँ मिली जाय। ये लोकोक्ति द्वै तरियाँ की होइ- एक तौ सामान्य अरु दूसरी स्थानीय।

सामान्य लोकोक्ति तौ सब ठौर प्रचलित रहें अरु एक सी ही होंय। ये लोकोक्ति घुमक्कड़ होंय है। जिही कारन है कै देश देशन की भाषान की लोकोक्तीन माँहि एक ही लोकोक्ति के रूपान्तर अथवा पाठान्तर मिल जाँय।

स्थानीय कहावत काऊ स्थान या गांव की घटनान के आधार पै जरूरत के मुताबिक बन जाँय अरु बिनकौ प्रचलन हू वा ठौर के आसपास ही हौंतौ रहै। लोकोक्तीन माँहि काहू-काहू रूप में जनपद विशेष के विश्वास अरु दीर्घ अनुभवन की अनुगूँज रहै है।

विषयवस्तु के आधार पै मोटे तौर पै विद्वानन्नैं लोकोक्तीन कौ वर्गीकरण या तरियाँ कियौ है-

(1) मानुसन की विफलता, त्रुटि अरु दोषन सौं सम्बन्धित लोकोक्ति।
(2) लौकिक ज्ञान, व्यौहार, उपयुक्ता चातुरी, चेतावनी अरु परामर्श सम्बन्धी लोकोक्ति।
(3) कछू जातीन की अरु वर्गन की विशिष्टता अरु विशेषतान सौं सम्बन्धित लोकोक्ति।
(4) सामाजिक अरु नैतिक विषय, धार्मिक रीति रिवाज अरु लोक विश्वासन सौं सम्बन्धित् लोकोक्ति।
(5) खेती-बाड़ी अरु मौसम सम्बन्धी लोकोक्ति।
(6) पशु अरु सामान्य जीव-जन्तु सौं संबंधी लोकोक्ति।

लोकनाट्य

'काव्येषु नाटकं रम्यम्' की उक्ति के आधार पै निस्संकोच कह्यौ जाइ सकै हैकै लोकनाट्य की मंचीय विधा लोकसाहित्य माँहि सबसौं रमणीय लोकविधा है। याकौ कारण जिहै कै लोकनाट्य माँहि गीत, संगीत, कथा, नृत्याभिनय अरु संवाद पाँचौं तत्व इकठौरे हैकैं आयें हैं।

भारत की जि लोकनाट्य परम्परा अति प्राचिन काल सौं जन-जीवन माँहि प्रवहमान रही है। ऋग्वेद माँहि वाके प्राचीनतम उद्धरण मिलैं हैं। कदाचित् याही सौं विद्वानन्नैं नाटक कूँ पाँचवौं वेद कह डार्‌यौ।

धार्मिक सांस्कृतिक प्रेरणान सौं भारतीय लोकनाट्य कौ जनम भयौ। धार्मिक उत्सवन के औसरन पै अरु पर्वन के आयोजनन माँहि लोकानुरंजन की या लोकप्रिय विधा कूँ महत्त्व मिलतौ रह्यौ है।

वर्तमान लोकनाट्य कौ प्रारंभ कुटियाट्टम केरल में भयौ। '' सुभद्रा हरण'' नाटक केरल की पहलौ नाटक है। वह कुटियाट्टम शैली में लिखौ गयौ। याकौ सम्बन्ध पूर्वांचल सौं रह्यौ। याही सौं केरल ते जि परम्परा पूर्वांचल में गई। वहाँ कीर्तनिया शैली में लोकनाट्य लिखे गए। नेपाल हू पूर्वांचल कौ अंग हौ। बा समै नेपाल, बिहार, उड़ीसा कौ एक ही राजा हौ।

12 वीं सदी में गीत गोविंद आयौ। गीत गोविंद कौ नाट्य रूपान्तर भयौ। यहाँ ते लैंकें तंजौर (दक्खिन) तक जि नाट्य परंपरा चली। तंजौर के पुस्तकालय में एक नाट्य प्रतिलिपि डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल नें देखी।

धार्मिक लोकनाट्य

गीत गोविंद के पाछें उड़ीसा के संत महात्मा शंकर देव नें अपने जीवनकाल में ब्रज की हू यात्रा करी। वे अपने बहुत से सिस्यन के संग ब्रज में आए। यहाँ कृष्ण लीलान की परम्परा कौ अध्ययन कियौ और समझौ। विन्नैं " अंकिया नाट" नाम सौं एक धार्मिक मंच स्थापित करौ। विन्नैं पहलौ नाटक " कालियदमन" लिखौ। जि नाटक बहुत प्रसिद्ध भयौ। बंगाल में याकी बड़ी धूम मचौ। यह " कालिया दमन यात्रा" के नाम सौं प्रसिद्ध भयौ। याकी बड़ी विसेसता यह रही कै यह असमिया भाषा में नहीं लिखौ गयौ। यह ब्रज, भोजपुरी, असमिया आदि भाषान के मेल सौं "ब्रजबुली" के नाम सौं विकसित कियौ। ब्रजबुली में सैकरान कवि भए। याकौ विस्तृत वर्णन है। रवीन्द्रनाथ टैगोर नैं हू ब्रजबुली में कविता लिखीं।

याके पाछें ब्रजवासी चेते। जयदेव हू ब्रज में आए। वहाँ के राजा नैं विनकूँ रावल की उपाधि दई। ता समै मथुरा में वैराग्यपुरा में वैरागी रहते। जयदेव रावल के ही नाम पै मथुरा में गली रावलिया नाम परौ। वे यहाँ कैई साल रहे। यहाँ पै जो वातावरन बनौ वाई सौं रास कौ प्रारंभ भयौ।

ब्रजरास पहलें हतौ पर बीच में ठप्प है गयौ। महमूद गजनवी के आक्रमण में ब्रज की पुरानी परंपरा और ब्रज संस्कृति सब ध्वस्त है गई। भक्तिकाल में फिर सौं याकौ रूप स्थापित भयौ। भक्ति के केन्द्र बनवे ते भक्ताचार्यन नैं फिर सौं रासलीला की परंपरा चलाई। यामें वल्लभाचार्यजी और स्वामी हरिदास जी कौ प्रमुख योगदान रहौ। विश्राम घाट पै प्रथम रास भयौ। रास के बीच में स्वरूप अन्तर्ध्यान है गए। विनकौ पतौ नहीं चलौ। स्यात यवन अपहरण करकैं लै गए। अभिभावक रोए तौ वल्लभाचार्यजी नैं कही रोऔ मत, यमुना में स्नान करौ- बालकन के दर्शन यमुना माँहि हुंगे। विन्नैं ऐसौ ही करौ। विन्नैं देखौ कै विनके बच्चा राधाकृष्ण की गोदी में बैठे हैं। यह बरनन "रास सर्वस्व" रासधारी राधाकृष्ण की पुस्तक में है। राधाकृष्ण अपने युग के प्रमुख रासधारी हे। दतिया महाराज नैं प्रभावित हैकैं इनकूँ दतिया कौ दीवान बना दियौ।

वल्लभाचार्यजी नैं याके पाछें स्वामी घमंड देव करहला के ब्राह्मण कूँ रास करवे कौ काम सौंपौ। विन्नैं करहला में पहलौ रास मंडली बनाई। वहीं सौं रास कौ प्रचार-प्रसार भयौ। याके पाछें हितहरवंश प्रभुजी नैं रास कूँ अपने सम्प्रदाय में उपासना कौ अंग बनायौ। वृंदावन में सबसौं पहलैं चैनघाट पै रास मंडल बनवायौ गयौ। श्री हरिराम व्यास विनके सहयोगी हे। रसिक त्रयी हरित्रयी के नाम सौं रसिक सम्प्रदाय कौ उदय भयौ जामें राधिका सर्वोपरि है और रासलीला की अधीश्वरी मानी जाए। या तरियाँ वृंदावन रासलीलान कौ केन्द्र बनौ।

गोस्वामी तुलसीदास जी नैं एक बेर ब्रज यात्रा करी तौ वे रासलीला सौं बहौत प्रभावित भए। विन्नैं सबसौं पहलें गंगाजी के घाट पै " कालिया दमन" लीला प्रारंभ करी जो आजहू प्रचलित है। लीला छोटी

सो है। बालक कृष्ण वनकें गंगाजी में कूदें। वहाँ पानी में काठ कौ नाग बनौ होय। चू एक संग ऊपर उठ आवें। वापै कृष्ण खड़े है जाँय। दर्शक दर्शन करकें तृप्त है जाएँ। यह मूकलीला हो। तुलसीदास जी नें रामचरित मानस लिखौ वाके बाद रामलीला बनारस में प्रारंभ भई औरु असि घाट सौं लैकें विश्व विद्यालय तक चलती फिरती लीला हैवे लगी। खुले मंच पै विकसित हौंती भई यह लीला परंपरा ब्रज में आई औरु अपने ढंग सौं हर शहर में रामलीला हैवे लगीं। रासलीला अरु रामलीला मौंहि लोकपरम्परान कौ अरु पुरानन के प्रसंगन कौ घुरौमिलौ असर होइ।

इन धार्मिक मंचन सौं हटकें स्वांग की एक ऐसी लोकनाट्य विधा पनपी जाकौ आयोजन खुले मैदान में कियौ जाय। स्वाँग परंपरा कौ सबसौं प्रथम उल्लेख '' आइने अकबरी '' में मिलै। अबुलफजल नें स्वाँग के दो रूप लिखे हैं। एक तौ रूप है कीर्तनिया जामें राधाकृष्ण के रूप सजाए जाएँ औरु चिनके सामई भक्तिपद गाए जाएँ। दूसरी भगतिया परंपरा ही, जामें मनोरंजक शैली में लोकनाट्य औरु नकल करी जाएँ हीं। या दूसरी शैली ते ही सांगीत कौ विकास भयौ। सबसौं पहलौ सांगीत आर. सी. टैम्पिल नामक अंग्रेज नें बंशीलाल स्वाँगिया ते जगाधारी में संकलित करौ। 'दी लीजैन्डस आफ दी पंजाब' में बानैं तीन स्वाँग छापे हैं। वहीं सौं जि परंपरा विकसित भई। याके दो गढ़ बने। एक अमरोहा, दूसरौ कामाँ। इनकी गायन शैली में स्थानीय भेद के कारन अंतर है गयौ।

कामाँ ते ई परंपरा मथुरा, वृंदावन आई औरु भगत के नाम सौं याके अखाड़े स्थापित भए। अमरोहा ते ई परंपरा आगरा आई। आगरा में हू भगत के अखाड़े स्थापित भए। इनकी गायिकी परंपरा में आजहू अन्तर बनौ भयौ हैं, जबकै छंद एक ही हैं। मथुरा ते ई परंपरा हाथरस पहुँची और वहाँ स्वाँग नाम सौं प्रसिद्ध भई। माँग बढ़ी तो नथाराम और मुरलीधर नें याकौं व्यावसायिक बनाय दियौ। नथाराम सामन में कानपुर जाते। वहाँ स्वाँग करै हे। नथाराम की प्रेरणा सौं फटकेन के आधार पै नौटंकी बनी।

जातीय लोकनाट्य, एक अलग परंपरा चली। यामें कोली, धोबी, कुम्हार, जाटवन के अलग-अलग लोकनाट्य हैं जो बिना काई मंच के सामान्य वेशभूषा सौं अपने-अपने क्षेत्रन में होंय। ये संगीत की देहाती लोकधुनन में प्रस्तुत करे जाएँ।

कछू समै तक नौटंकी छिन्न-भिन्न रही। लालाराम बाबूलाल नें ब्रजकला केंद्र के माध्यम सौं याकूँ पुन: गठित करौ है। कृष्णाकुमारी, गिर्राज-मनोहर आदि कूँ इन्नें अपने यहाँ रखौ। अश्लीलता समाप्त करी, राष्ट्रीयता लाए। छज्जन हू यामें रह्यौ है। आजकल जो मंडली चल रही हैं वे ब्रजकला केंद्र की देन हैं। या समै गोपीचन्द जी (मुरसान), रामसिंह नैमसिंह (अकबरपुर), कृष्णा कुमारी, ताराचंद (शिकोहाबाद छाता), अमरनाथ (मथुरा) आदि की मंडली याए जीवित राखे भए हैं। देहातन में निरी मंडली हैं। हाँ भविष्य अंधकारमय है। नौटंकी पुरानी पर गई हैं। घिसे पिटे कथानकन कूँ सुनते-सुनते श्रोता ऊब गये हैं। भाषा पुरानी पर गई है। हरिशचन्द्र रोहिताश ते '' पिसर '' कहै, जाए आज जनता नहीं समझ पावै। अब नई भाषा होनी चहिए। नए कथानक हौने चहिएँ। याही के ताईं ब्रजकला केंद्र हरसाल नयी नौटंकी करै। श्री रामनारायण अग्रवाल यामें प्राणप्रण सौं जुटें भए हैं। बिनकौ कहनौ हैं कै नए स्वाँग होने चहिएँ। तबई याकौ भविष्य सुंदर औरु उपादेय बन सकै। अन्त में जिही कहनौ परैगौ कै आधुनिक तकनीकी, यांत्रिक अरु औद्योगिक युग नें लोकजीवन के शाश्वत मूल्यन कूँ मटियामेट करिवे में कोऊ

कोर-कसर नाँय छोड़ी। नगर अरु गाँमन के परम्परागत शिल्प-व्यवसायन में लगे लोक-समुदाय अरु वाके लोकजीवन कूँ उखारि फँक्यौ। सनैमा, रेडियो अरु टी.वी. नैं लोकजीवन की लोकानुरंजनकारी विधान में भारी उलटफेर कर डार्यौ। हमारे जीवन-मूल्य एकदम बदल दिये। भौतिकवाद हमपै हावी हौंतौ चल्यौ गयौ। व्यक्तिवाद, अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा अरु असीमित धन कमाइवे की बढ़ती भूख नैं हमारी लोकसंवेदनान के उत्स सुखाइवे कौ काम कियौ। आदमी-आदमी ते कटिवे लग्यौ, दूरि हौंतौ चल्यौ गयौ।

ऐसी परिस्थितीन में लोकसंस्कृति निरन्तर क्षीण हौंती गई। फलत: लोकनाट्य कौ सरस सरोवर सूखिवे लग्यौ है। हमकूँ आन्तरिक उत्फुल्लता, उछाह, आस्था अरु आशा कौ पाठ पढ़ाइवेवारी लोकमंचीय पाठशाला बन्द हौंती जाइ रही है। हमारे पारिवारिक, सामाजिक अरु राष्ट्रीय सम्बन्धन के सूत्र टूटते चले जाइ रहे हैं।

इतने पै हू, हिंम्मत हारिवे की कोऊ जरूरत नाँय। लोक-संस्कृति अरु लोकसाहित्य के जनमदाता अरु लोक-परम्परान के वाहक भारत कौ लोकजीवन अवई जीवन्त है। हमारी लोक-संस्कृति की आजहु प्रवहमान जीवन-धारा वाहरी तत्वन कूँ आत्मसात करिकैं नये-नये सरूपन कूँ जनम दै रही है। हमारे लोकजीवन की जड़ इतनी गहरी हैं कै विनसौं नये परिवेश में नई-नई लोकरचनान कौ अरु नई-नई लोकविधान कौ हू उदय है रह्यौ है। लोक की समसामयिक अनुभूतीन कूँ असरदार अभिव्यक्ति मिलि रही है। लोकजीवन में खेले जाइ रहे आजु के नुक्कड़ नाटक याके अच्छे उदाहरण हैं। जरुरत या बात की है कै आधुनिक ज्ञान-विज्ञान अरु प्राविधिकी कौ सृजनात्मक उपयोग करिकैं लोकनाट्य विधा के विरवे कूँ सींचिवे अरु फैलि-फूटिकैं विकास करिवे के जतन किये जाय।

इन प्रतिकूल परिस्थितीन में हमारौ कर्त्तव्य है कै लोकसाहित्य की सबसौं रमणीय लोकनाट्य विधा की सांस्कृतिक धरोहर कूँ बचाइवे अरु वाकी वेलि आगे बढ़ाइवे के पूरे-पूरे प्रयास करैं

या ग्रंथ के लोकगीत भाग एक के सम्पादन माँहि ब्रजलोक साहित्य अरु ब्रज लोकमंच के जाने माने सेवक श्री ब्रजेश कुलश्रेष्ठ नैं अरु लोकगीत भाग दो समेंत पूरे ग्रंथ के सम्पादन में ब्रजभाषा अकादमी के सचिव श्री गोपालप्रसाद मुद्‌गल नैं जो सहयोग दियौ है वाके तौंईं बिनकूँ अरु लोक साहित्य की न्यारी-न्यारी विधान के सम्बन्ध में आलेख भेजिवे वारे लेखकन कूँ लोकगीत, लोकोक्ति अरु लोककथा संकलित करकैं भेजिवे वारे विद्वानन कूँ अरु स्वरचित लोकगीत भेजिबे वारे लोकगीतकारन कूँ अकादमी की ओर सौं वहौत-वहौत आभार, वारम्वार नमन।

भरोसौ है, ब्रज के विखरे लोकवैभव के संकलनकर्ता अरु अनुसंधानकर्तान कूँ जि प्रकासन उपयोगी सिद्ध होइगौ। अकादमी कूँ या प्रयास में कहाँ तक सफलता मिली है याकौ आंकलन तौ सुधी पाठक ही करि सकिंगे ।

-मोहनलाल मधुकर।

लोकगीतन कौ स्वरूप अरु महत्व

-प्रो. गैंदालाल शर्मा

लोक साहित्य कौ अभिप्राय जनवादी जीवनव्यापी दृष्टि सौं है । ग्रामीण जनता, आधुनिकता सौं अनभिज्ञ वन प्रान्तन में रहवे वारी आदिम जंगली जातिन अरु आदिवासी समुदाय मिलकैं लोक कौ निर्माण करैं हैं । लोक की जीवन पध्दति, उत्सव, पर्व,तीज-त्यौहार,वेशभूषा, नृत्य-संगीत अरु कला-कौशल हमारी विरासत तौ हैं ही,जे हमारी तहजीवी अरु रूहानी विकास-सरिता के प्रबल प्रवाहऊ हैं । आधुनिकता की भौतिकतावादी प्रवृत्ति की आँधी नैं जा लोकगीत-प्रसूत जनमानसी गंगा-धारा कूं मलिन अरु मन्द करि दियौ है । फिर ऊ आज हमारे समाज में धर्म, जीवन-दर्सन, साहित्य अरु कला के जो आदर्स अरु मूल्य जीवित बचे हैं वे जा लोकगीतन की सांस्कृतिक धारा की दैन हैं ।

जि सत्य है कि भारत की आत्मा गाँमन में बसै है अरु जि लोक-आत्मा हमारी सहज प्राकृतिक जीवन धारा कौ निर्मल दर्पण प्रवाह है । जासौं हमारौ छोटौपन दूरि होय है । सामाजिक दायरे कौ विकास-सेतु है । परम्परा अरु प्रथा जीवित रहैं हैं । आधुनिकता की विलासी जीवन पद्धति सौं प्रभावित ह्वै कैऊँ लोकगीतन नैं युग युगनसौं सिंचित इन आदर्स अरु अनुभवन कौं अपने में संजोये रखौ है । लोकगीत हमारे ज्ञान अरु विज्ञान, निर्देस-उपदेस, आचार-विचार, नैतिक धार्मिक विश्वास, सामाजिक ऐतिहासिक विकास अरु सांस्कृतिक दार्सनिक सिद्धांतन की अमूल्य निधि हैं । इनकी विशालता अर गम्भीरता आज तक विद्वानन के चिंतन अरु खोज के विसै बने भये हैं । जिज्ञासु गोताखोरन कौं चिरकाल सौं संचित जा लोकगीत सागर में घुसवे पै विविध ज्ञानरत्नन की प्राप्ति होय है । मानव विकास की रहस्यमय पहेली अर याके विविध स्पन की प्राचीनतम जानकारी कौ सबसौं अधिक प्रमाण लोकगीत ही हैं ।

जब-जब इतिहास मूक भयौ है । शिलालेख अरु ताम्रपत्र धूमिल ह्वै गये हैं । कवि की प्रतिभा कुंठित है गई है, उत्साह फीकौ परि गयौ है । सिच्छा कौ प्रभाव क्षीण ह्वै गयौ है अरु साहित्य की धारा सूखवे लगी है । तब-तब हमें लोकगीत-मानस-गंगा के अमृत-तत्वन सौं निकसी नवीन ज्ञान दृष्टि अरु जीवन शक्ति की प्राप्ति भई है ।

संगीत अरु कला जब-जब जीवन सौं कटिकैं राजमहलन अर उच्च दरबारन में कैद भई है, तब-तब लोकगीत धारा कौ जि स्रोत ग्रामीण अंचलन में ग्राम वधूटिन अरु युवान के कलकण्ठ सौं मुखरित भयौ है । कला की, साहित्य की सरस्वती मीरा के घुंघरून के रूप में निनादित भई है । ग्राम निवासिन की दीवारन पै चित्रित भई है । [illegible] में बसी है । अनगिनत गीतन में गूंजी है । लोकगीत प्राचीन काल सौं ही हमारे उल्लास अरु आनंद कौ [illegible] है । "[illegible] सर्वभावेन भजनीयो व्रजाधिप:" की पावन भावनान सौं अनुप्राणित, सामाजिकता सौं सुवासित, [illegible] लोकगीत हमारी अस्मिता की सच्ची पहचान हैं, जो हमें सदा सौं आस्थापूर्ण कर्मरत जीवन की [illegible] है । [illegible]

सरल,स्वाभाविक अरु सजीव है वैसौ ही हमारे लोकगीतन कौ स्वरूप है, जिनकौ "सवजन हिताय सवजन सुखाय" मूल मन्त्र है । आचरण कूं यहाँ प्रमुखता दयी गई है ।

आज सामाजिक उत्थान के लए, भावात्मक जीवन दृष्टि के विकास के लए लोकगीतन की प्रासंगिकता अरु उपयोगिता सबसौं अधिक है । जे हमारे समाज, संस्कृति अरु आस्था के संरक्षक किसान मजदूर अरु कलाकारन द्वारा अभिसिंचित हैं। आज पोषित मानवीय मूल्य, श्रद्धा, सहिष्णुता, प्रकृति प्रेम ,अनेकता माँहि एकता कौ भाव इन गीतन सौं ही अधिक विकसित है सकै है । भेदभाव अरु जाति विसमता कूं समाप्त करवे में जे लोकगीत अधिक उपयोगी हैं । एक ओर इनसौं हमारौ लोकानुरंजन होय है, दूसरी ओर लोकसासन अरु लोक शिक्षण कौ उद्‌देश्य ऊ पूरौ होय है । लोकगीतन की सदासयता अरु आत्मीयता हमकूं सन्ति अरु सार्थकता प्रदान करै है । आज के युगधर्म की जि महती आवस्यकता है कै हम अपनी गतिसील परम्परान कौ अभ्यास करैं । विनके अनुसार अपने आचार-विचार पोषित करैं अरु समानता, सहअस्तित्व समर्थक लोकगीतन की चिंतन धारा पै आधारित सुखद भविष्य कौ निर्माण करैं ।

या कथन कौ अभिप्राय जि कदापि नाँहिं कै हम आधुनिकता कूं नकारि दैं, नवीन साधनन की अवहेलना करैं, वैज्ञानिक मूल्यन कूं अस्वीकार करि दैं । किन्तु हमारौ उद्‌देश्य जि है कै जिन लोकगीतन में जो सार्थक अरु उपयोगी हैं उनकौ अपने आन्तरिक जीवन के संग समन्वय करैं, देस अरु समय के अनुरूप विनकौ विकास करैं ।

आज इन लोकगीतन के संचयन,सम्पोषण अरु संवर्धन की महती आवश्यकता है, जिनसौं हमारे उच्च आदर्स अरु मानवीय मूल्य विकसित है सकिंगे ।

-सोमांचल,मैरिस रोड ,
अलीगढ़ (उ.प्र.)२०२००१

सहसन बरसन के अनुभवन सौं संचित लोकगीत हमारे
जीवन-महासागर की अनमोल रत्न-रासि हैं।
-प्रो. गैंदालाल शर्मा





संस्कृति कूँ लोकगीतन की देंन

-डा. रामकृष्ण शर्मा

संस्कृति जीवन रूपी तरुवर कौ फल है जासौं जीवन की सार्थकता सिद्ध होय । बिना फल के विटप कौ कहा कोऊ महत्व है? ना तौ बाकौ आगें बंस चलि सकै,ना बासों कोऊ ब्यौसाय सकै । याई तरियाँ सौं बू मनुज कछू मतलब कौ नाँय होय,जो अपने पुरखान की बिरासत कूँ सहेजकें नाँय रखि सकै अरु आगे की पीढ़ीन कूँ कछू बहुमूल्य हस्तान्तरित नाँय करि सकै । जो पसू की नाँई खाइबे कूँ जीवै बू मनुज की स्रेनी में नाँय आवै । मनुज तौ यू कह्यौ जाय जो पुरानी पीढ़ी की थाती कूँ सँवारिकें बामें चारि चाँद लगायकें,अगली पीढ़ी कूँ सौंपिकें सिरजनहारन में अपनोंऊ नाम लिखाय जाय । या लेंन-देंन कूँ संस्कृति कहें ।ई मनुज कूँ पसू सौं अलग करिकें रचनासील बनावै। मनुज की ई सिरजनकारी प्रवृत्ति ही बाकी प्रगति अरु बाके विकास के मूल में दीखै है । याही के परताप सौं पसू सम जंगली जीवन सौं ऊपर उठिकें मनुजाई आज की विकसित दसा तानूँ पहुँची है । ई सबरौ वैभव जो दुनियाँ में दीख रह्यौ है सब संस्कृति की ही देंन है ।

संस्कृति मनुज सौं रचित जीवन की एक कृत्रिम व्यवस्था है ।यासौं नैसर्गिक वृत्तीन कूँ संस्कारवान बनायौ जाय। संस्कार कौ मतलब सफाई करिकें ऊँचौ उठाइबे ते है ।नैसर्गिक वृत्ति तौ सहज होंय। बे अनायास क्रियावान रह्यौ करें । बिनसौं जरूरतन की पूर्ति कौ सीधौ सम्बन्ध होवै है ।परि बिनमें उचित-अनुचित, करनीय-अकरनीय, सही-गलत कौ विवेक-बंधन नाँय होय ।ऐसी अनायास अरु सहज क्रियान कूँ बिवेकसम्मत अरु करनीय बनायबे कौ सायास प्रयास ही संस्कार कह्यौ जाय ।याही सौं संस्कृति सब्द ब्युत्पन्न भयौ है ।संस्कृति कौ रचना विधान कोऊ आकस्मिक किंवा सहसा घटित कारज नाँय होय, बरन एक दीर्घकालीन परम्परा होय, जाके आदि अरु अन्त के बारे में कछू कह्यौ नाँय जाय सकै ।

मनुज जीवन को विकासवादी ब्याख्या ते इतेकई आभास होवै है कै सिरू की जंगली अवस्था सौं दुखन की मात्रा कूँ कम करिबे की कोसिसन की परिनतो ही बिकास की नाना अवस्थान कूँ पार करती भई संस्कृति कहाई है ।नाना भाँति की धार्मिक साधना, कलात्मक प्रयास, सेवा परायनता, भक्तिभाव अरु जोग मूलक करम अरु भावनान सौं मनुज नें जा महान साँच कूँ अवगत कर्‌यौ है बू ई संस्कृति है ।ई उपलब्धि इतेक ब्यापक बनि गई है कै वर्तमान समै तानूँ आँते-आँते ई कह्यौ जाय सकै कै जो कछू हम हैं बू ई हमारी संस्कृति है अरु जो कछू हमारे पास है बू ई हमारी सभ्यता है ।

अब तानूँ देस बिदेस के चतुर जनन ने जा छेत्र माँहि भारी खोज करी है। इतिहास सौं पहले कैऊ प्रमान खोजे हैं अरु इतिहास कूँ तौ खूबई छानि मार्‌यौ है। इन प्रागैतिहासिक अरु ऐतिहासिक प्रमानन के आधार पै हमारी संस्कृति दुनियाँ की सबसों पुरानी संस्कृति सिद्ध है गई है। याकी पृष्ठभूमि कूँ देखिबे कौ एकई आधार मनोवैज्ञानिक हमारे साँमई रह गयौ है ।

याकी इतेक भारी पुरातनता और सबई आधारन कूँ अतीत के कुहरे माँहि डारि चुकी है । मानव मनोविज्ञान के छेत्र माँहि विहंगम दृस्टि सौं निहारिये तो ई साफ पतौ परै कै संस्कृति कौ उद्‌गम लोकजीवन की दु:ख सुख मयी विविध अनुभूतिन सौं है । निसर्ग अरु नियति के निर्मम चक्र नें मनुज की सदाँ ठपेच्छा करी है । परि मानवीय जिजीविसा नें कबहूँ हार नाँय मानीं । जैसें जैसें जीवन की विसमता बढ़ी हैं, वाई क्रम सौं मनुज नें विनके विकल्प के रूप में आनन्द, उल्लास अरु अभिव्यक्ति के विविध रूपन की खोज करि लई है । यू कबहूँ तौ मनुआ के बोझ कूँ हल्कौ करिबे के ताईं दया द्रवित हैकें गीतन की लय में रोयौ है तौ कबहूँ उल्लास की अभिव्यक्ति नाच अरु रस भरे थिरकते गूँजते गीतन में भई है :

1. मेरौ मनुआँ रोवै झार झार मेरे बलम गये परदेस जी
   गिर्‌यौ ठझीना कागा बोल्यौ आऔ बलम निज देस जी

2. पिया रँगीले निज घर आये जिनकी जोहति बाटजी
   घर घूम्यौ छप्पर हाँस्यौ मोरी खेलन लागी खाट जी

ऐसी अनगिन रागात्मक अभिव्यक्ति लोकगीतन माँहि भरी परी हैं । इनमें जीवन कौ सागर हिलोर लैंतौ दिखाई देवै है:

1. ठाडी पारि मेरौ बटुआ भीजै,पाछी पारि मेरौ हार जी
   भर्‌यौ समन्दर चुनरी भीजै,है कोऊ काढ़न हार जी
   काढ़ैगौ मेरौ बीर प्यारौ जिन्नें दई परदेस जी
   नौवा रे तू बर के कौवा काहे दई परदेस जी
   कहा करूँ जिजमान की बेटी करम लिखे परदेस जी
   पाती होय बाय बाँचि लऊँ मोपै करम न बाँचे जाँय जी

2. अर रर नथ कौ सौ नगीना गोरी धन बलमा ते बतराय रई है
   ओ जुबना जोर कर्‌यौ धर धसकै नये नये रूप दिखाइ रई है

ये अनुभूतियाँ मूल रूप सौं तौ व्यक्तिपरक हैं । परि इनकौ रूप समाज में समस्टिपरक बनतौ चल्यौ गयौ है । एकाकी अभिव्यक्ति धीरें धीरें सामूहिक रूप लैंती चली गई हैं । इनके संग नाच कूद जुरते चले गए हैं । जिन्दगी के दु:ख भरे थपेड़े जैसें-जैसें आदमी कूँ सताते गये हैं वाई गति सौं लोकगीतन नें वाकूँ भौत बल दीनौ है । गायकें नाचिकें आदिमी नें अपनी पीर ढोली है । ये लोकगीत अरु नाचकूद, तीज-त्यौहार ,मेले ठेले नईं हौंते तौ आदमी पागल हैकें कबहू कौ सिधार जांतौ । लोकगीतन सौं सजी सँवरी संस्कृति की कछू धरोहर अरु कछू अपनी सूझबूझ सौं वाकी बढ़ोतरी सौं इतेक बल मिलतौ गयौ है कै मानव प्रकृति के अत्याचारन कूँ अरु नियति के थपेड़ेन कूँ सींग बतायकें बढ़तौ रह्‌यौ है ।

लोक साहित्य विविध अनगढ़ विधान में उद्वेलित भयौ है । परि लोक साहित्य कौ प्रान तत्व लोकगीतन में ई बसै है । ये लोकगीत मानव मन की गहरी सौं गहरी थाह लैवे वारे होंय । विसेस रूप सौं नर नारी के सम्बन्ध जो सृस्टि के मूल हैं , ये जितेक बारीकी सौं लोकगीतन में अभिव्यक्त भये हैं वैसे और कहूँ नाँय । नारी के उर कौ तौ सपूरौ चित्र खुलि जाय । इनमें नारी के मनुआ की अभिव्यक्ति देखौ :

1. सिर के दरद की दवाई लई
   घर में सास लरै घर में सुसर लरै

सेजा सैंयाँ भी लरै मेरी कदर नईं
पीहर पास नईं जामें खबरि करूँ
छोटौ बीरन भी नईं जासौं रोय कें मिलूँ

2. मेरी सास लरै दिन राति अट्टे पै चढ़ि चढ़ि कें
रोऊँ तौ दूखें आँखि लरूँ तौ सिर धमकै
कुआ में झाँकूँ जान चूनर मोरी चमकै
जिठानी लरै दिन राति अट्टे पै चढ़ि चढ़िकें
रोऊँ तौ दूखें आँखि लरूँ तौ सिर धमकै

लोकगीतन माँहि नर-नारिन के हास-परिहास ,व्यंग-विनोद, अनुहार-मनुहार अरु सिंगार भरे नेह-निवेदन, विरही उर की वेदना ,आहें ,आँसू ये सबई मनुज जीवन कूं पसु जीवन सौं अलग करिकैं वाय संस्कृति कौ इमरतपान करामें हैं ।ये लोकगीत मनुओं के सबरे मैलमाँकर कूं निकारिकें निरमल करि दें । ये नांय होंते तौ आदमी मतवारौ हैकैं पसु सौं ऊ बदतर जानें कहा करि डारतौ । जा विज्ञान की चकाचौंध के जमाने में जब मानुस जंत्रवत नेहहीन होंतौ जाय रह्यौ है, चलचित्र , रेडियो अरु दूरदर्सन नें जब बाकूं करमहीन साझीदारी सौं दूरि निस्क्रिय दरसक बनाय दीनों है तो जाकौ परिनाम देख लेओ । आदमी कितेक तनाव में जी रह्यौ है, हृदय रोग कितेक बढ़ि गयौ है, परिवार कौ जीवन कितेक रसहीन है गयौ है । पति-पत्नी के बीच जो मीठे आनन्द सौं पूरित संबंध रह्यौ करते बिनकी जगै अब कैसी कटुता पैदा है गई है ।ई संस्कृतिहीनता कौ परिनाम है जासौं जीवन की विकृति बढ़ती ही जाय रही है । आज हू जिन समाजन में लोकगीत गवें, नर-नारी नाचें-कूदें अरु मेले ठेलेन में जाँय, तीज त्यौहार मनावें म्हाँ जीवन की सरसता बची भई है, म्हाँ संस्कृति कौ तरुवर अबई ताँनू फलि-फूलि रह्यौ है । देखौ एक बानगी:

गोरी धन देख देख मन मलकै
मुख पै जोबन कौ रस झलकै
इमरत टपकै जोधा लपकै
तारे टूटि गये महलन के लडुआ फूटि रहे तन मन के

लोकगीतन कौ वर्गीकरण करिकें देखें तौ हाल पतौ लगि जाय कै जीवन कौ कोऊ भाग ऐसौ नाँय जाकौ चित्रन इनमें नाँय अरु जामें इमरत सरीखी सरसता जिननें नाँय घोरी ।बचपन कौ भोरौ भारौ रूप,किसोर अवस्था की निस्चिंतता अरु ताजगी, जोबन कौ प्यार,सनेह कौ मिठास,प्रौढ़ता कौ अनुभव, बुढ़ापे की वेदना ये सबई लोकगीतन माँहि भरे परे हैं । बचपन कूं पुचकारिबे बारी लोरी देखौ:

सोय जा सोयजा लाल लड़ैते मैया गोद सुवायैगो
अमवा की डार पालनों लटकै सोंनपरी थपकायैगी

भैन अपने बीरन कूं कितेक चाहै याकौ हिसाब लोकगीतन में ई मिल सकै :

अरी मैं चन्द्रलोक है आई भैया सी चीज नाँय पाई
भैया अइयौ रे रथ की झनकार
राजा किरोरी मेरौ भातैया

देवर-भाभी के रस सौं पूरित उमंग सौं भरे कैसे-कैसे लोकगीत भरे परे हैं, जिनमें जीवन की मस्ती कौ अगाध अम्बुधि लहरायौ करै । भाभी अपने देवर कूं बागन में मिलबे कौ न्यौतौ देय, देवर अपनी विवसता बतावै, भाभी बाकूं हिम्मत

जा रस रंग राग भरे सांस्कृतिक जीवन कौ रस आज सूखतौ जाय रह्यौ है:-

बागन अइयौ रे लाला, बागन नारि अकेली
मैं कैसे आऊँ रे भाभी सबई जगत मेरौ बैरी
मरन न दऊँगी रे लाला संग सती है जाऊँगी
ऐसी लै चलि रे लाला दिन ऊगे बा पुर में

लोकगीतन मांहि बुढ़ापे कौ कैसौ करुन चित्तर उभर्यौ है:-

बालपना सब खेल गँवायौ,
जुवा भयौ तौ होस न आयौ
वृद्ध भयौ रोय-रोय पछतायौ
चुगिगई खेत चिरैया रे ।
ना कोऊ भैंन न भैया रे ।।

इन गीतन कूँ गायकैं मनुआँ कौ दरद भौत कम है जाय । हृदय कौ ऐसौ बिस्तार है जाय कै कोऊ परायौ ई नाँय लगै। दुःख -दर्द हू मीठे है जाँय । घोर निरासा हू सरस बनि जाय। याही कौ नांम तौ संस्कृति है । संस्कृति मन की सरसता कौ नाम है । ई कोऊ ऊपरी तरक भरक नाँय, ई तौ मन कौ मिठास है । ई मिठास हमारे बुजुरगन नें हमकूँ दीनौं है। हम यामें बढ़ोतरी करिकें आगे की पीढ़ी कूँ सौंपि जायँ, ई ही जीवन की सार्थकता है ।

-सरस्वती सदन ,कौड़िया मोहल्ला,भरतपुर(राज)



सबसौं पहलौं लोकगीत कौन नें कब रचे अरु गाये या बातै स्यात् ही कोऊ जनतौ होय, परि जि बात सही है कै लोकगीतन पै काहू एक व्यक्ति या सम्प्रदाय कौ ही अधिकार नांय। लोकगीत तौ जन-जन की थाती हैं। हमारे अतीत की स्मृति आज हू इन लोकगीतन में मूर्तिमान है। हमारे देस के हर प्रान्त के लोकगीतन में अपने प्रान्त-विसेस की प्रथान कौ वर्नन और सहज जीवन के सजीव चित्रन कौ दर्सन मिलै है। लोकगीतन माँहि हमारी परम्परागत संस्कृति कौ इतिहास निहित है।



ब्रज-लोकगीत अरु विकास-प्रक्रिया

-श्री गजेन्द्रसिंह सोलंकी

लोकगीतन सौं तात्पर्य है ऐसी स्वर लहरियाँ जो सरल लोकभाषा माँहि सहज रूप सौं कंठन सौं निसृत हौंय अरु जन-जन कूँ आल्हादित, उद्वेलित अरु मुग्ध करैं। भारत कौ कोई सौ आँचर होय, बोली कहूँ की होय, लोक-धर्म-कर्म कैसौ हू होय, लोकगीतन माँहि अपने-अपने आचर की प्राकृतिक सोभा, लौकिक परम्परा, जातीय स्वभाव, तीज-त्यौहार, पर्व-उच्छव, जनम-मरन-परन सबही औसरन पै कुल जाति के देवी-देवतान सौं लैकैं मानवीय सम्बन्धन, लोग-लुगाइन के निजी रिश्तेन, सामुदायिक व्यवहारन को मौखिक अभिव्यक्ति समूहन के कंठन सौं लयबद्ध फूटि परै वोई लोकगीत कहावै है।

जैसी लोक-परम्परा वैसे ही लोकगीत देखे सुने जात हैं। असल में लोकगीत बहती भई धारा की तरियाँ हतैं जो निरन्तर सृजित-विकसित होत रहत हैं। यिनमें झरनान की कलकल, पेड़न की सनसन, पत्तान की मरमर, खेतन की सरसर, पंछीन की चहचहाहट, ढोरन की रम्हाहट अरु मानसन की चक-चक अर्थात भोर सौं लैकैं दुपहरी, संझा के कार्यन कौ सन्नाटौ अथवा *कलरव, ज्योति को जगमगाहट, षटऋतुन की छटा अरु मानव जीवन पै परिवे वारे प्रभावन कूँ संवेदनशील नर-नारी-बालक* गुनगुनाइवे कूँ हुलसि उठैं और लोकगीत बन जावै, जन-जन सौं जुर जावै अरु परम्परा कौ निर्माण कर देत है।

मजे की बात तौ जि है कै इन गीतकारन कूँ न तौ गढ़ी-गढ़ाई भाषा चहियै,न छन्द विधान की पढ़ाई-लिखाई अरु न शास्त्रीय ताल सुर विधान। जाकौ मतलब जि नांय कै वे प्रज्ञाहीन हौंय । असल में लोकगीत प्रज्ञा की सहज रागात्मक अरु भावात्मक गेय मौखिक अभिव्यक्ति हतैं । संगीतात्मकता बिनकी अपनी हतै जाय लोकधुन कहत हैं युही याकौ मूल स्रोत है अरु कंठ याकौ उद्‌गम । व्यक्ति सौं लैकैं समाज तांईं याकौ पसारौ हतै । अर्थात लोकगीतन की परिधि व्यापक, बहुआयामी है अरु असीम हू है। बिनकी भावभूमि समाज की मानसिकता,परम्परा,रूढ़ि अरु इतिहास सौं जुरी होत है। अतः लोकजीवन कौ संगीतात्मक वर्नन वामें रहत है,जो श्रुत परम्परा सौं अनादिकाल सौं आज लौं चल्यौ आइ रह्यौ है अरु चलतौ रहैगौ, शिष्टजन भलेंई वासौं अपरिचित है रह्यौ है ।

युग सौं जुरिकैं लोकगीतन कौ कलेवर बहुविध अद्यतन प्रसंगन के सब्द-चित्र प्रस्तुत करत है वहीं परंपरा की पृष्ठभूमि हू आँखिन सौं ओझल नांय हौंन देत । अतः नित्य विकासशील रहत हैं । जो जो प्रसंग, घटनाक्रम जन-जन कूँ (जन समूह कूँ) प्रेरित करवे वारौ घट जावै अरु जनश्रुति बन जावै उन उन के लोकगीत गूँजन लगत हैं । यिनमें राजनीति को घटना हू है सकत हैं । कालांतर माँहि ये परिवर्तित हू होत जात हैं अरु यिनके पाठभेद हू होत जात हैं ।

किन्तु जबसौं लोकगीतन के संकलन हौन लगे,उनकूँ लिपिबद्ध कर लियौ गयौ है अरु उनके प्रकासन हौन लगे, लोकगीतन कौ मूल पाठ (स्वरूप)सुरच्छित हौन लग्यौ है अरु ये शिष्ट साहित्य के अंग हू बनत जाइ रहे हैं। बिनकी धुनि हू टेप करी जाइ रही हैं ।टेप-आलयन में ये सुरच्छित हैं तथा आकासवानी अरु दूरदर्सन सौं प्रसारित-प्रदर्सित हू हौन लगे हैं ।तब लोकगीतन

के संबंध में पूर्वधारणा हू बदलन लगी है । वे अब मौखिक,अलेखे अरु अज्ञात नहीं रह सकिंगे । अलबत्ता बिनको सृजन-प्रक्रिया अरु स्रोत लोकजीवन सौं जुरौ रहैगौ अरु तब ही वे लोकगीत कहे जाइ सकिंगे।

ब्रज लोकगीत

अन्य छेत्रन की तरियाँ ब्रज माँहि लोकगीतन की भरमार हतै । जहाँ ब्रजभाषा माँहि विपुल शिष्ट काव्य भरौ परौ है अरु आज हू अद्वितीय कह्यौ जाइ सकै है, वहाँ अज्ञात रचनाकारन के लोकगीत हू जन-जन के कंठन सौं सुनाई देत हैं ।इन लोकगीतन माँहि ब्रज संस्कृति सुरच्छित है ।बिनकी अपनी-अपनी धुन हैं ।उनकौ छेत्र हू व्यापक हतै तथा ब्रजमंडल सौं बाहर हू बिनकौ पसारौ है ।जो लोकगीत ब्रजवासीन के संगई देस-विदेसन में ठौर-ठौर तक पहौंचे भए हैं बिनकी गूँज आज हू सुनाई परै है ।

संस्कार गीत--संस्कृति सूचक

वैदिक जीवन भारत की आधारभूत रचना हतै तथा वर्णाश्रम धर्म सौं गुथी भई है । भलेंई आज बू व्यवस्था छिन्न-भिन्न है गई है पर वाके अवशेष हमारी जीवन-चर्या सौं लोप नाँय है सकैं अरु सबसौं मुखर लोकगीतन में भई वही जातीय एवं कुलीय संस्कार-परंपरा हू लोकगीतन सौं समझी जाइ सकैं हैं ।सही रूप माँहि भारतीय लोक कूँ समझिबे कौ माध्यम लोकगीत ही हैं ।शिष्टवर्ग यानी अभिजात्य वर्ग अपवाद है गये हैं जहाँ वैदिक जीवन लोप सौ ही है गयौ है अरु आधुनिक बनावटी उपभोक्ता संस्कृति की भौंड़ी नकलन के दर्सन होत हैं।या विकृति अरु विसंगतिन के चित्रन हू लोकगीतन माँहि देखे जाइ सकैं हैं,जिनके उदाहरन या आलेख के सीमित कलेवर में नाँहि आइ सकैं ।

इन लोकगीतन माँहि जीवन के हर औसर की छाया देखी जाइ सकै है ।बिनकी धुन संस्कार, तीज-त्यौहारन पै सुनाई देत हैं ।लोकजीवन के सोलहों संस्कारन के लोकगीत उपलब्ध हतैं ।जो लोकगीत सामान्य रूप सौं कंठन पै बिराजि गये हैं बिनमें अठमासे के गीत,सौर के गीत, छटी के गीत,मुंडन के गीत, विवाह के गीत बिनमें हू चकियन के गीत,रतजगे के गीत, तेल चढ़ावे के गीत, भतैया के गीत, घुड़चढ़ी के गीत, ज्यौनार के गीत, गारीन के गीत, भाँवरन के गीत गाये जावैं हैं। इन सबन की सुरूआत देवी-देवतान के आह्वान सौं होत है ।छोरा अरु छोरीन के ब्याआन के गीत न्यारे-न्यारे होत हैं अरु बिनमें कुलन कौ वर्नन होत है ।तीनि पीढ़ीन की नामावली गाई जावै है ।गीतन कौ सिलसिला भोर सौं राति लौं चलत रहत है ।सूरज उगये ते सुभकामना अरु प्रार्थनान सौं पूरौ वातावरन गूँजत रहत है ।जे क्रम विदाई के गीतन लौं चलत है ।

ब्रज में जितने पर्व आत हैं, जात्रा होत हैं,काँमर लाई जात हैं उन सबके जातीन के अलग-अलग गीत होत हैं ।देवी मैया के गीत ठेठ मानव-उत्पत्ति के भावन सौं जुरे होत हैं ।काँमर या काँवर के गीतन में ''बोल रे भाई बम कै बम भोले'' की टेर गंगाजी सौं सुरू हैकैं गाँमन तक पहुँचत रहत है ।उनकी खड़ेसरी गंगा लाइबे की साधना इन गीतन सौं मधुर है जावै है ।याही के संग लांगुरिया प्रेरना देत रहत है ।ब्रज की संस्कृति के केंद्र बिन्दु हतैं ग्राम,गौ, गंगा, जमुना अरु राधा-कृष्ण। लोकगीत इनके चारों ओर घूमत रहत हैं ।वहीं पर्वन में होरी कौ अपनौ अन्हौंतौ स्थान हतै।जामें गीत, गारी, चिराउनी, रंग-गुलाल, गोयर अरु लट्ठमार हुरंगा के सैंकरान गीत बिखरे परे हैं ।रसिया की धूम तौ ब्रज-होरी-फाग की विसेस पहचान हतै ।ब्रजमंडल कौ हर गांम,हर अलाव,हर मंदिर, चौपाल बसंत पंचमी सौं रंग पंचमी लौं फागमय है जाय है ।होरी के दिना (धुलैंडी पै) तौ ब्रज कौ हर नर कृष्ण अरु हर नारी राधा कौ सात्विक सरूप जान परत हैं ।होरी के कछु बहु प्रचलित लोकगीतन के मुखड़ा दिये जाइ रहे हैं ।पूरे गीत या कारन नांय दिए जाइ रहे कै आप गातई होइंगे ।मुखड़ा हैं -

1. आजु बिरज में होरी रे रसिया, होरी रे रसिया बरजोरी रे रसिया ।
2. मैं होरी कैसैं खेलूँ री या साँवरिया के संग?
3. होरी खेलन आयौ स्याम आज याहि रंग में बोरौ री

4. फगुआ दै मोहन मतवारे ।
5. ठाड़ौ रे कनुआ ब्रजवासी ।
6. बाबा नंद के द्वार मची होरी ।
7. मति मारौ दृगन की चोट रसिया होरी में मेरे लगि जाइगी ।
8. वृंदावन में फाग मच्यौ भारी । आदि आदि

ब्रजमंडल सौं बाहर के होरी के गीतन में नर-नारीन के संबंधन कौ उल्लेख हू होत है । विनकौ तेवर हू कछु और होवै है । एक लोकगीत या तरियाँ है--

मैं तौ बंसीवारे ते हारी ।
चलावत घूँघट में पिचकारी ।।
गाढ़ौ रंग बनौ मेरी सजनी ,
भर पिचकारी मेरे सनमुख मारी ।
तौ भीजि गई गुल सारी ॥ .. ..

एक ऐतिहासिक प्रसंग में रची गई होरी की इन पंक्तिन सौं जान परत है कि ऐसी कछु बात जो आम दिनान में नांय कही जाइ सकैं वे या औसर पै गीतन में कही जाइ सकैं है । मोय जि गीत मेरी मैया सौं मिल्यौ है । सुनें जि गीत अज्ञात है गयौ है-

सखी री ब्रज कौ बसिवौ री तजौ,
अंगरेज की रीति बुरी ।
मार तरवरिया भरतपुर लूटौ ,
गुइयाँ ठकुराइन कौं कैद करी ।
काऊ की तिरिया काऊ कौ पुरष है,
गुइयाँ बा तौ राजी बोल गई ।
सखी री जा ब्रज कौ बसिबौ तजौ.........

ग्रामीण छेत्रन में अधुनातन महापुरुषन कूं लैकें विसेस रूप सौं गांधी जी,चरखा, शराबबंदी अरु अनेक कुरीतीन कूं उजागर करिबे अरु सुधार के हू लोकगीत प्रचलित रहे हैं अरु युग के संग प्रस्तुत हौंत रहे हैं । बिनकी संख्या अनगिनत है अरु आलेख कौ सीमित कलेवर हैबे ते विस्तार नाँय कियौ जाइ सकै ।

-गागर प्रिंटर्स, लाड़पुरा
कोटा (राजस्थान) -6

□



लोकगीतन की परम्परा अरु ब्रज लोकगीत

-श्री शांति स्वरूप शर्मा

लोकगीत जैसौ कि नाम ते ई ध्वनित है रह्यौ है कि जो गीत आम बोलचाल की भाषा में अनगढ़े स्थानीय कविन के द्वारा अपने आसपास के वातावरन सौं प्रेरना लैकें बनाये जांय अरु आम जनता में लोकप्रिय है जांय संगई बिनमें स्थानीय लोकजीवन की झाँकी मिलै,लोकगीतन की स्रेनी में आयौ करैं । इन गीतन में छन्द ,रीति आदि सास्त्रीय मान्यतान की एवं स्थापित रूढ़िन की उपेक्षा देखबे कूँ मिलै ।

लोकगीतन की या परिभाषा में वे ही गीत आय रहे हैं जो काऊ देवता की तारीफ में या आम मानवीय प्रेम या सामाजिक पारिवारिक समस्यान कूँ दरसावें । लोकगीतन कौ बहुत बड़ौ भाग उन गीतन कौ है,जो जन्म,मूंडन, सादी-ब्याह के मौके पै बैयरन के द्वारा सैकरान सालन ते गाये जाय रहे हैं अरु जिनके बनायबे वारेन कौ कछू अतौ-पतौ नांय, जिनकूँ बूढ़ी-बड़ी मोंहजयानी नयी भौटियान (बहुअन) कूँ धरोहर की तरियाँ सौंपती रही हैं ।

चौंकि लोकगीत स्थानीय (लोकल) कविन के द्वारा बनाये जाँय जिनकूँ ज्यादा सास्त्रीय ज्ञान नांय होय पर बे रस तें भेरपूरे होयौ करैं । याही कारन सौं ये कवि छेत्र विसेस सौं,वाके परिवेस सौं ज्यादा प्रभावित होवें । याई लए लोकगीतन में रस की अधिकता के संगई मुख्य विषैवस्तु सामाजिक रीति-रिवाज, त्यौहार-उत्सव, खान-पान, रहन-सहन, घर-परिवार,स्त्री-पुरुष, बालक-बच्चे,सादी-ब्याह आदि रह्यौ करैं । यदि लोकगीतन कूँ छेत्र विसेस की लोक संस्कृति कौ दरपन कहैं तौ कछू अनुचित नांय होयगौ । इन गीतन में वा छेत्र की माटी की एक अनौखी गन्ध रची बसी होय । इनमें एक अनौखौ अलमस्तपनौ देखिबे कूं मिलै,जो इनकूं दूसरे गीतन ते अलग करै । इन गीतन में एक आम आदमी की इच्छा,आसा-निरासा,खुसी-गमी, प्रेम-घृणा, कुण्ठा-महत्वाकांछा, लाग-डाँट आदि दिखाई परै । याही कारन सौं विसेस औसरन पै, रितुन पै, गीतन के अलग-अलग नाम पाये जांय जिनके नामन में जगह-जग़ह तौ अन्तर मिल सकै पर बिनकी विसेषता लगभग एक जैसी रहैं । जैसें ब्रज में फागुन के महीना में फाग गायौ जाए वैसेंई दूसरी जगहन पै होरी होयौ करै ।

जहां लौं लोकगीतन के उद्भव कौ सवाल है, लोकगीत तबई ते बनिबौ सुरू है गये जबतें आदमी नें होस संभार्यौ अरु अपनी मस्ती में अपनी भावनान कूँ निकारबे लग्यौ । या विचारते तौ भारतीय परम्परा में लोकगीतन की सुरूआत वैदिक युग ते ई मानी जानी चहियै, चौं या समै वैदिक भाषा आम बोलचाल की भाषा हती अरु ऋगवेद में ऐसे प्रसंग ऊ देखबे कूँ मिलैं जिनमें लोकगीतन कौ सहज रूप देख्यौ जाय सकै । पाछे ब्राह्मण साहित्य में ऐसे धार्मिक गीतन कौ संकेत मिलै जो जग्य (यज्ञ) के मौके गाये जायौ करते,जो आम जनता में खूब प्रचलित हते। रामायन-महाभारत तौ सुरू में लोकगीतन के रूप में ई प्रचलित हते जिननें जगै जगै घूम-घूम कैं गाइबे वारे गायौ करते । प्राकृत भाषा में ऊ लोकगीतन कौ कोई न कोई सरूप

जरूर होयगौ,जाकौ अनुमान ई कर्यौ जाय सकै,समै के फेर के कारन उपलब्ध तौ नांय पर थोरी सी झलक आज मिलये यारे छन्द गाथा में देखी जाय सकै अरु जब सैकरान सालन के बाद अपभ्रंस ते ब्रजभाषा आदि छेत्रीय भाषान कौ विकास भयौ तौ लोकगीतन की परंपराऊ इनमें संगई आय गयी तौ या ब्रजभाषा में लोकगीतन की रचना हैयौ उतनौ ही पुरानौ है जितनी कि ई हमारी ब्रजभाषा । हाँ ई वात जरूर है ये सुरू के गीत आज मिलैं नॉय।

दूसरी भाषान की तरियाँ ब्रजभाषा में सैकरान सालन ते हजारन लाखन लोकगीत रचे गये और रचे जाय रहे हैं । ब्रज लोकगीतन कूँ अध्ययन की सुविधा सौं ऐसे बाँट्यौ जाय सकै :

1. लोकनायक-चरित-परक -

ऐसे लोकगीतन मे वे आवैं जो इतिहास और दन्तकथान में प्रसिद्ध नायकन की तारीफ में विनके वड़े-वड़े कामन की तारीफ में बनाये गये हैं । ये लोकगीतन की स्रेनी में होते भयेऊ छन्द, रीति आदि की रूढ़िन में बंध गये हैं अरु प्रबन्धकाव्य कौ आनन्द दियौ करैं। आल्हा, ढोला, रांझौ, नौटंकी आदि ऐसे ई गीत हैं । इनकौ स्थापित छंद विधान इनकूँ उपसास्त्रीय स्थिति तकऊ लै जाय।

2. लोक देवतान के स्तुतिपरक लोकगीत-

ये गीत या छेत्र में माने जायबे वारे लोकदेवता जैसे कूआ वारौ,जखिया पीर,जाहरवीर, कनुआभगत, देववाबा की तारीफ में गाये जाएं । इनकी जात दैबे जाते समय लुगाई इनकूं गायौ करैं । जैसें- 'कूआवारौ बिचर गयौ बगियन में । '

3. लाँगुरिया -

है तौ येऊ स्तुतिपरक पर ये खाली देवी मइया (दुर्गा माता) की तारीफ में ई गाये जायौ करैं । इन गीतन में देवी कौ प्रमुख पार्षद लांगुरा विसैवस्तु रह्यौ करै । बाते भक्तन की विनय, सिकायत, छेड़छाड़ इनमें देखी जाय-

'वारे लांगुरिया अति की लड़ाई मोते मति करै ।
वारे लांगुरिया तेरी धन खाय लई कारे नाग नें ।'

4.ऋतुपरक लोकगीत -

सिगरे भारतवर्ष की तरियाँ या ब्रज छेत्र मेंऊ रितुन कौ बदलबौ त्यौहारन के रूप में मनायौ जाय । फागुन के महीना में अरु सावन के महीना मे यहाँ बड़ी धूमधाम होयौ करै,जो यहाँ के लोकगीतन में अच्छी तरह सौं स्पस्ट होय । फागुन के महीना में गाइबे जावे बारे फाग तौ सिगरे भारत में मसहूर हैं । इन फागन में लोक-आराध्य राधाकृष्ण, गोपी, ग्वाल-बालन कूँ लैकें आम आदमी की मस्ती दीख्यौ करै । गोपीन की कन्हैया सौं छेड़छाड, विनती, शिकायत इन फागन की विसैवस्तु पायी जाय। गोपीन की कन्हैया सौं होरी नॉय खेलिबे कौअनुनय 'पॉय लागूँ करजोरी, स्याम मोसे न खेलौ होरी ।' कृष्ण सौं होरी खेलबे की इच्छा'होरी तौ खेलूंगी हरि सौं कोई कहौ स्याम सुंदर सौं ।' मैं तो सोय रही सपने में मोपे रंग डार्यौ नन्दलाल आदि सैकरान होरीन कूँ रचिबे बारे लोकगीतकार इन फागन के कारन यहां अमर है गये हैं ।

होरी के संगई ब्रज में सावन के महीना में गायी जावे वारी मल्हारऊ खूब प्रसिद्ध हैं । इन मल्हारन में युवतीन की टीस, विनकौ उल्लास, सिकायत पायी जाय -

सावन आयौ अम्मा मेरी सुहावनो जी,
एजी कोई सब सखि हम्वै कोई सब मिलि झूलन जांय ।

5. बारहमासा-

या प्रकार के गीतऊ रितु पै आधारित हैं । इन गीतन में काऊ घटना कौ या काऊ व्यक्ति कौ पूरौ बारहौ महीनान कौ वर्नन मिल्यौ करै ।

सती कौ किस्सा सुनौ, सुन लीजै चित लाई, गोवरधनके पास गाम एक सी पलसौं भाई ।

6.सादी-व्याह आदि खुसी के मौके पै गाइवे जावे वारे गीत-

वास्तव में ब्रज लोक संस्कृति कौ सही स्वरूप इनई गीतन में पायौ जाए । इनमें यहां की रीति रिवाजन कौ, लोगन की भावनान कौ चित्रण पायौ जाए । इनकूं मंगल अवसर पै वैयर गायौ करैं और ये सैकरान सालन ते चले आय रहे हैं। इनके बनायवे वारे कौ कोई अतौपतौ नाँय । हर मंगल अवसर पै अलग-अलग तरह के गीत मिलैं । जन्म के समै बच्चा अरु वाकी मइया कूं लैकें जच्चा गाये जांय-' जच्चा मेरी खाइयौ न जानैं ।'

बालक के मूड़ने पै मूड़ने के गीत, सादी ब्याह के मौके ते लगाय लगनु और ब्याह के पीछे दई देवता पूजिवे तक अलग-अलग नामन के गीत या छेत्र में प्रचलित हैं ।

लगुन पै-' लगुन आयी हरे हरे लगुन आयी हरे हरे मेरे अंगना रघुनन्दन फूले न समांय ।'
लगुन के दो दिना बाद रतजगौ, बरना घोड़ी -

आज हरियाले बरना ने धनुष उठाय लियौ ।
धनुष उठाय राम सीता जी कूँ ब्याह लियौ ।

हर मंगल मौके पै गाइबे जाये वारे बधाये जिनमें देवर जेठ सुसर सबकौ उल्लेख आय जाए -

आज दिन सोने कौ हुऔ महाराज,
सोने के सब दिन रूपे की रात,
सोने के कलस भरइयो महाराज । आज ---

बारौठी गीत -

राम रंग बरसैगौ हां हां राम रंग बरसैगौ
कौन ने कुलाई घोड़ी कौन ने सजाई
कौन के कारन आई, रंग बरसैगौ । हां हां राम रंग-----

गारी -
बरात के जेंमते बख्त गायी जाये वारी-

काहे उठ बैठे और लै लेंते काहे उठ बैठे
बाखर में राज हमारौ री बाखर में ------

ललमुनिया-

ज्यौनार के मौके पै मुड़गैलो पै बैठकें लुगाइन के द्वारा गाए जाये वारौ गीत-'लै लै पनमेसरी कूकर खोइया।' लुगाइन के द्वारा ब्याहबे के ताईं बरात जाइबे बाद कर्‌यौ जाये वारौ-यामें गीतन के संगई अभिनयऊ होयौ करै ।

पत्तर बांधबौ अरु खोलबौ-

ब्रज छेत्र में बरात के जैंमे ते पहलैं बेटी बारेन की ओर ते पत्तर बांधी जाए अरु बेटा बारेन की ओर ते खोलो जाए । या अवसर पै जो गीत गाये जांए वे विसेस प्रकार के होंवें । इनमें लड़की बारेन की ओर ते लड़का बारेन के लोगन कौ वाक्-चातुर्य परख्यौ जाए संगई इनमें बेटा बारेन के प्रति आदर भाव झलकै ।

भाँवर गीत- दुल्हे-दुल्हन के फेरा लेंते समै बैयरन के द्वारा गाए जांए-

मेरी पैली भँवरिया अबहू बेटी बाप की
मेरी संतवी भँवरिया अब बेटी सुसर की ।

दई देवता पूजिबे जाते समै गाये जाबे वारे गीत-

बिना कुल देवतान के प्रति आदर भाव दिखाइबे अरु पूजिबे तक ब्याह की रस्म पूरी नांय मानी जाएं । ऐसे मौके पै लुगाइन के द्वारा गीत गाये जांए। इनमें कुल देवतान कौ उल्लेख होयो करै । 'मुकट याकौ हीरा ते जड़ियौ जी मुकट याकौ हीरा ते जड़ियौ, घर में सुंदर नार बलम तोय पर नारी भावै ।'

7. लावनी -

ये लोकगीत संस्कार प्रधान होयौ करैं । इनमें नायक-नायिका के सवाल जवाब रह्यौ करैं । तर्ज के आधार पै अनेक भेद पाये जायें । इनमें लंगड़ी एवं वशीकरण लावनी ज्यादा प्रसिद्ध हैं ।

8. रसिया -

ये लोकगीत सिंगार, भक्ति, करुण रस प्रधान होयौ करें । रस की अधिकता के कारन ही स्यात इनकूं रसिया कह्यौ जाय। ब्रज छेत्र कूं भगवान कृष्ण एवं उनकी अभिन्न प्रियतमा राधिका जी की जन्म स्थली एवं लीला स्थली हैवे कौ गौरव प्राप्त हतै। ह्यां के लोकगीतन में विसेसकर रसियान में भगवान कृष्ण अरु राधा खूब देखिबे कूं मिलैं । रसियान कौ अधिकतर भाग राधा-कृष्ण की लीलान कूं लैकें बन्यौ भयौ है । ऐसौ कौन ब्रजवासी होयगौ जानें माखन चोरी, माटी खावन, चीरहरन, नागदमन, दधि ,लिलहार, रंगरेजिन, गौचारन, गोवर्धनधारन , सगाई, दुल्हन आदि लीलान ते सम्बन्धित रसिया नांय सुने हुंगे। इन रसियान कूं रचिबेवारे या छेत्र में मसहूर हैं। इनमें पं.घासीराम जी, बाबू खलीफा, पुरुषोत्तम ,मदनमोहन ब्रजवासी, प्रभुदास, स्यामबाबू गांठौली बारे, सिवराम, सालिगराम, अवधबिहारी, चन्द्रसखी के बनाये भए रसिया बच्चा बच्चान कोजुबान पै रच बस गये हैं -

'मैया जब मैं घर ते चलूं बुलावें ग्वालिन घर में मोय ।'
'इकली घेरी बन में आय स्याम तैनें कैसी ठानी रे ।'
'मैया कर दै मेरौ ब्याह मंगाय दै दुल्हन गोरी सी ।'

सिंगार प्रधान रसियान में राधाकृष्ण बिसै ते अलग रसिया अरु गोरी कूं लैकें बने भये रसियाऊ खूब पाये जांय। इनमें रसिया सामान्य प्रेमी नायक अरु गोरी सामान्य प्रेमिका नायिका होयौ करै-

'मृग नैनी तेरौ यार नवल रसिया ।'
'जुरि आयौ दल रसिया गोरी कौ जुरि आयौ रे ।'

9. अन्य गसिया –

या वर्ग में वे लोकगीत आवें जो ऊपर के काऊ वर्ग में नाँय गिने जांय । ऐसे गीतन में प्रमुख विसै वस्तु कोई तात्कालिक घटना ,कोई समस्या, पारिवारिक सामाजिक मुद्दा रह्यौ करै जैसे सास बहू कौ झगरौ – 'सास तेरे बोलन पै बावाजिन है जाऊंगी ।'

पति सौं न्यारौ हैबे की मांग –

'मोपै बोल सहे नांय जांय बलम बनवाय दै घर न्यारौ ।'

पति ते हुक्का पीबौ छोड़िबे की गुजारिस–

'बलम तुम हुक्का छोड़ौ ,कैसे कटैगी सिगरी रात ।'

वैसे आजकल दहेज, परिवार नियोजन, राष्ट्रीय एकता, साक्षरता, सांप्रदायिक सौहार्द जैसे विसैन कूं लैकें बनिबे वारे गीत खूब चल रहे हैं ।

ऊपर दिये गये वर्गीकरन सौं लोकगीतन कौ परिचय आसानी सौं दियौ जाय सकै याइ लिए कियौ गयौ है। ई कोई पूरौ या अन्तिम नाँय । इनमें एक वर्ग के गीत दूसरे में आसानी ते आय सकैं ।

लोकगीत लोकसंस्कृति कौ दरपन होयौ करै । जैसौ आसपास में घटित होय,जैसौ आम जनता सोचै वू सब लोकगीत में झलक्यौ करै । लोकसंस्कृति कौ सही प्रकार ते अध्ययन करिबे के तांईं लोकगीतन कौ जानिबौ अरु अध्ययन करिबौ बहुत जरूरी है । आज जब सबई जगै समै की कमी महसूस करी जाय रही है, सादी–ब्याहन कौ समै बहुत कम है गयौ । ऐसी स्थिति में इन गीतन के खास करके सादी ब्याह के मौके पै गाइबे जाबे वारे गीतन के लुप्त हैबे कौ खतरा पैदा है गयौ है । आज की नई पीढ़ी की उदासीनताऊ याकौ एक कारन नजर परै । पढ़ेलिखे समाज में इनकौ गाइबौ और जानबौ पिछड़ौपन कौ प्रतीक मान्यौ जाए । या दिसा में जागरूकता लाइबौ जरूरी है । संगई इन लोकगीतन कौ संकलन करौ जाय । जो बहुतई जरूरी है । या छेत्र में लोकगीतन ते संबंधित गीतन के संकलन फुटपाथन पै बिकते भये मिल जाएं,पर ये सब बहुत थोरे अरु छोटे हैं । ब्रज अकादमी कूं या दिसा में गम्भीरता सौं सोचनौ चइयै । आकासवाणी मथुरा अपने केन्द्र ते लोकगीतन कूं प्रसारित करके महत्वपूर्न काम कर रही है पर ब्रज लोकगीतन के संरच्छन के तांईं ये सब नाकाफी है। संगठित प्रयास जरूरी हैं।

–ग्राम गाँठौली, पो.जतीपुरा, जिला.मथुरा

☐

लोकगीत विसेस औसरन सौं और विसेस भौगोलिक और ऋतु आदि परिस्थितीन सौं जुरे भए हौंय हैं। सामन की धुनि सामन में ही सुहामें हैं, फूस-माह के जाड़ेन में नहीं। ब्याह के गीत चैती सौं न्यारे हैं। जेई कारन है कि हर एक आँचर में अपने ही लोकगीतन कौ विकास होय। पहाड़ी क्षेत्रन की धुनि ब्रज की धुनन सौं अलगइ पहचानी जांय।



ब्रजनारी लोकगीतन कौ सांस्कृतिक अरु साहित्यिक महत्व

-डा. आशा कुलश्रेष्ठ

आदिकाल ते ही कोमलता की अवस्था में पली नारी जाति के प्रतीक गीत अरु संगीत कूं अपनाती रही है । यानें अपनी भावनान की कोमलता, कंठ की मधुरता अरु हृदय की सुकुमारता में साम्य देख्यौ अर अपने सुमधुर कंठ में संगीत कूं बैठाय लियौ । जाय पुरुष वर्ग विसेस परिसम के पस्चातऊ उतनौ सुमधुर बनायवे में सफल नाँय है सकौ है । चौकें संगीत मधुर है तौ नारी सुमधुर, संगीत रस की अधिष्ठात्री अरु भावनान कौ प्रतीक है । याई कारन ते अनादि काल सौं नारी अरु संगीत द्वै भिन्न रूप नाँय हैकें एक समझे जाँय हैं । याऊ में ब्रज बनितान कौ संगीत, याकी तौ कछु मिसालई नाँय।

ब्रज कौ नाम लेतई एक अनुपम अरु विसिस्ट छेत्र कौ आभास होन लगै । जा भगवान श्री कृष्ण की लीलाभूमि कौ तौ हर दिना ई आनंद ,उमंग अरु उल्लास में डूबौ रहवै । यहाँ नित नवीन पर्व अरु त्यौहार आमते रहमें । समाज के भौगोलिक परिवेस, आचार-विचार, रहन-सहन,खान-पान अरु रीति-रिवाज के अनुरूपई जीवन के क्रिया कलाप संपन्न होय है अरु जाई सौं संस्कृति कौ निर्मान होय है। ब्रज के सांस्कृतिक जीवन कौ सबसौं रंगीलौ अरु रसीलौ रूप ह्यां के लोकगीतन मांहि देखिवे कूं मिलै है अर याऊ में ब्रज की कोकिलकंठी नारीन के गीतन कूं सुनिकैं मनुस्य की बातई का देवताऊ अपनी सुधिबुधि खो बैठैं । ब्रज में स्त्री गीतन के द्वै रूप देखिवे में आमें। एक अनुष्ठानिक अरु दूसरौ मांगलिक । अनुष्ठानिक गीत वेद मंत्रन कौ कार्य करें अरु मांगलिक गीत अवसर की सुंदरता बढ़ामें साथई जे लोकरंजन करिबे में ऊ सहायक होय हैं। सबते पैलें त्यौहार, पर्व अरु उच्छवन पै गाये जायबे वारे नारी गीतन में सांस्कृतिक रूप की बानगी देख रहे हैं ।

यौरे भौत त्यौहार, पर्व अरु उत्सव तौ सब जगै ई मनाये जामें हैं । पर ब्रज में इनकूं भौतई महत्व मिलौ भयौ है । काऊ नें ठीक ई कही है कै इनपै सात वार में नौ त्यौहार की उक्ति चरितार्थ होवै । ब्रज के सांस्कृतिक जीवन में जे ऐसे रचे बसे हैं कै इनकूं अलग नाँय कियौ जाय सकै । ब्रज के इन पर्व अरु त्यौहारन पै ब्रज ललनान के कोमल कंठ ते निकरिवे [illegible] सुरीली, रंगीली अरु रसीली तान सुनवैयान के कानन मे ऐसौ अमृत घोर देय है कै बे अनिर्वचनीय [illegible] लगे हैं । जे त्यौहार अरु पर्व कहूं तौ धर्म कौ सहारौ लए है तौ कहुं सामाजिकता अर कहूं [illegible] भये देस की मुख्यधारा ते निरंतर जुरे भये हैं । धार्मिक पर्वन में दसहरा, सकरात, [illegible] दुर्गास्टमी आदि प्रमुख माने जायें । इन पर्वन पै गंगा-जमुना, ताल-तलैया, कुआ-[illegible] प्राप्त करें । कातिक मास में भोर ते ई इनमें न्हायबे के लै बैयरन की भीर [illegible] राई दामोदर की कथा सुनकें पूजा करें अरु भजन गामें । पूजा में कछु [illegible] कूं पैलेंई दै दैमें ।

राधा बूझै बात किसन सौं किसविध कातिक न्हाइयै राम
नौन मिरच कौ नेंम राधा प्यारी फीकेई भोजन करियै राम ।

*　　　　*　　　　*

अपने पति कौ नेंम राधा प्यारी धरती में सेज बिछइयौ राम
दामोदर कें मंदिर जइयो हरिगुन गइयौ राम ।

*　　　　*　　　　*

मकर सकरात कौ पर्व भूमरे चार बजे तेंई सुरू है जावै है। या दिना दान पुन्य कौ विसेस महत्व मानौ जाय। कछु लोग गुप्त दानऊ करें । कोऊ वैयर तौ या दिना ते सुरू करिकैं बारह महीना की हर चौदह तारीख कूँ भजन गवावै ।

माह महीना आई सकरात भजन करौ हर की प्यारी
भजन करौ अरु गीत गवाऔ तिल कौ दान करौ हर की प्यारी ।

इन पर्वन में चंदा अरु सूरज ग्रहन कौऊ विसेस महत्व मान्यौ जाय है । आस परोस की वैयरबानी इकठौर हैकै नांई गीत गामें अरु भजन कीर्तन करें । ब्रजलोक में याके पीछे एक विसेस मान्यता है । एक बेर मेहतरन ते चन्द्रमा नें एक समा की बार उधार लै लीनी । पर वू काऊ कारन ते लौटाय नाय पायौ । तब मेहतरन नें बापै चढ़ाई कर दीनी। या विपदा ते चन्द्रमा कूँ छुड़ायवे के काजें भगवान के भजन गाइकै विनते फरियाद करी जाय अरु मेहतरन कूँ दान दियौ जाय ।वैयर जो गीत गामें याकी कछु पंक्ति या तरियाँ हैं –

चन्दाऊ सुखिया सूरजऊ सुखिया रामा
गहन परे तौ जब वोऊ दुखिया रामा ।

या गीत में जीवन में अनुभूत सास्वत सत्य कौ उद्घाटन कियौ गयौ है कै या संसार में कोऊ सुखी नॉय रह सकै । जाते दुख कौ समै हँसि बोल कै काटनौ चइयै । जी जीवन दर्सन जा गीत में कैसी स्वाभाविकता के संग दर्सायौ गयौ है ।

बर्स के विभिन्न महीनान में परिवे बारे त्यौहार, व्रत, उत्सव अरु मेलान पैऊ नारीन के गीतन कौ बड़ौ अनूठौ रूप देखवे कूँ मिलै । जे गीत यहां की संस्कृति की सजीवता अरु समृद्धि कौ द्योतन करवे बारे हैं । ग्रीस्म रितु में छीनहीन भई प्रकृति जब सावन मास में हरित वस्त्र धारन करकैं उत्फुल्ल दीसवे लगै तब भैया भैन कौ लोकोत्सव झूलनौ आवै। या औसर पै भैन भइया कैं राखी बाँधै अरु भाई वाकूँ उपहार देवें । सांझ के समै भैन अपनी सखियन के संग झूला झूलती भई भइया भैन के प्रेम भरे गीत गामें –

कच्चे नीम की निबोरी सावन बेगि अइयोजी
भइया दूर मति दीजो हमनें कौन बुलावेगौ,
भैना पास ही तोय दिंगे तोकूँ हम ही बुलामिंगे ।

नन्ही मुन्नी बालिकान के ही मन में नहीं,सुसरार में वैठी भैंन के मनन मेंऊ भैया के लैवे आयवे की आस लगी रहै–

उड़ि उड़ि कागा मेरे पीहर जाओ, लाऔ खबर माई बाप की,
जौ तक तो कागा मेरौ उड़न न पायौ वीर लिवउआ वे आ गये,
चंदन की चौकी मेरे भैया जो वैठे बात सजन से करि रये ।
भेजो रे भेजो जीजा भैन हमारी, संग की सहेली झूलै बागमें ।

अरु जीजा जब भैन कूं नाँय भेजै तौ भैन कौ मन हाहाकार कर उठै-

मिलतै तो जइयो मेरे माँ के रे जाये
छतिया हिलोरे लै रई,
मत रोओ भैना मेरी मत रोओ माँ की जाई
छतिया से पाथर बाँधिये ।

इन गीतन के अतिरिक्त अनेक प्रबन्धात्मक गीतऊ गाये जामें जिनमें चंदना, बिजैरानी, लहरिया, पनिहारी अरु चन्द्रावली मुख्य हैं । इन गीतन में प्रियतम के विरह में दग्ध नायिकान कौ चित्रन अधिक मिलै है । परंतु अधिकांस में गीतन के अंत में वू अपने प्रिय की आगोस में खोयकें अपने सिगरे दुख दर्द भूलि जाय है । उदाहरन के लै हम लहरिया गीत कूं लै सकें-

पाँच टका दुंगी गांठ के
है कोई लस्कर जाय लहरिया
सब रंग भीजे धन कौ डोरिया ।

मोरा अरु चन्द्रावली गीत ऐसे हैं जिनकौ अंत दुखांत है । याकौ कारन है कै इनके अंत में प्रियतमा अपने प्रियतम ते हमेसा-हमेसा के लै बिछुर जावै । मोरा गीत में प्राकृतिक अरु मानवीय भावनान को बड़ौ रम्य गुम्फन भयौ है-

भर भादों की रे मोरा रैन अंधेरी
राजा की रानी पानी नौकरी जी ।
* * *
जोई जोई खेंचू रे मोरा देय लुड़काय पंख पसारै मोरा जल पिये जी ।
हट हट हटरे मोरा भरने दे नीर मो घर सास रिसाइये जी
तुमरी तो सासुल रनियाँ हमरी है माय आज बसेरौ हरियल बाग में जी ।

अंत में रानी कौ पति मोर कूं मारिकै लै आवै अरु अपनी रानी ते याय बाँधिवे के ताँई कहै । पर रानी के मन में तौ फेरऊ बाकी चौहक बसी रहवै । या गीत में मोर एक आदर्स प्रेमी कौ प्रतीक बनिकैं आयौ है । मोरा की तरियाँ ई चन्द्रावली मे एक ऐसी ब्रज युवती की कथा है जो परिस्थिति में परिकें एक आताताई के चंगुल में फसि जाय है । वानें हर तरियाँ प्रयत्न करलियौ कै वू कैसैऊ बचि जाय पर सफल नाँय भई । अंत में वानें आत्मदाह करिकें अपने सतीत्व की रच्छा करी । या गीत में भारतीय नारी की वीरता अर अपनी आन की रच्छा के लै मर मिटवे कौ बड़ौई अदभुत रूप बर्नित कियौ गयौ है-

जाऔ सुसर घर अपने जाऔ बाबुल घर आपने
पानी न पीऊँ पठान कौ प्यासी मर जाऊँ
सेज न सोऊँ पठान की ओंघत मर जाऊँ
मुगला नें फेरो है पीठ तमुअन दै लई आग
दाड़ी दो औरै चन्द्रावली जाके माई न बाप ।

इनके अतिरिक्त कछु ऐसे फुटकर गीतऊ मिलें जिनमें प्रकृति कौ बड़ौई मनोहारी चित्रन भयौ है । सावन ते पीछे भादों के महीना में जनमाष्टमी कौ लोकोत्सव आवै जा दिना कृस्न नें मथुरा में कंस की जेल में जन्म लियौ। या औसर पै कृस्न की झाँकी सजाई जावै अरु बाके जन्म संबंधी गीत गाये जामें-

सिरी कृस्न नें जनम लियौ मामा की जेलन में ।
या
हुए देवकी के लाल जसोदा जच्चा बनी ।

क्वार के महीना में दसहरा कौ लोकोत्सव आवै । ब्रजनारी नव दुर्गा की स्थापना करें । छई छापरी नौ दिना तॉनू नौरता खेलें अरु देवी के गीत या लांगुरिया गामें । लांगुरिया ब्रज नारीन कौ अति प्रिय गीत है । एक दो गीतन की झलक ह्यां दिखाय रहे हैं -

कैला मैया के भमन में घुटवन खेलै लांगुरिया ।
कैला मैया कौ जुरौ है दरबार लांगुरिया चलौ तो दर्सन करि आमें ।

दिवारी हमारौ प्राचीन धार्मिक सांस्कृतिक समारोह अरु लोक प्रसिद्ध उच्छव है । या औसर पै तीन पर्वन कूँ इकठौर कर दियौ गयौ है -दिवारी, गोर्द्धन अरु यमद्वितीया । दिवारी के दिना तौ लक्ष्मी पूजा ही होय है, गीत ना के बराबर सुनिबे में आमें पर गोर्द्धन के दिना वैयरबानी गोर्द्धन की पूजा करती भई निरे गीत गामें । एक गीत ह्यां प्रस्तुत है-

मैं तो गोवरधन कूँ जाऊँ मेरे बीर
नाँय मानें मेरौ मनवा ।
पान चढ़ाऊँ तोपै फूल चढ़ाऊँ
दूध की धार चढ़ाऊँ मेरे बीर । नाँय--------

यम द्वितीया व दौज के दिना के गीतन में भैन की प्रसन्नता अरु भाई की मंगल कामना कौ उल्लेख रहबै-

मेरे भैया की आव अहो,
नैंक वेगि जुरि जइयो ।

दिवारी ते पीछे रंग गुलाल के बादर उड़ामतौ भयौ होरी कौ महान पर्व आवै। फगनोटे की मस्ती में मस्त ब्रजनारी-गीतन में ब्रज बनितान के संग राधा कृस्न प्रेम कौ, उनकी अनौखी लीलान कौ, हास -परिहास कौ, हिंडोरा फाग कौ ऐसौ अजब अरु मनोमुग्धकारी रूप मिलै कै आजहु ब्रजनारी गीत साहित्य सिगरे भारत कूँ भावात्मक एकता की प्रेम डोर में बाँधिबे में समर्थ है। बसंत तेई वैयरन कौ जुट इकठौर हैकै नांई फाग उड़ायौ करै। होरी के दिना होरी पूजते समै बिनके मुख ते ई गीत फूट परै-

राजा नल के द्वार मची होरी राजा नल के ।
या
बरसाने स्याम मची होरी बरसाने ।
कौन के हाथ में झांझ रे मजीरा
तौ कौन के हाथ ढपल होरी ।

इतनौई नाँय जब बनितायें इक दूसरी के घर होरी खेलबे जामें तब वू होरी की मस्ती में ऐसी मस्त है जांय कै बिनके मुख ते ई बोल बरबस ई निकस परै-

आज बिरज में होरी रे रसिया
होरी रे रसिया बरजोरी रे रसिया ।

अब हम संस्कार गीतनै लैहैं । हमारे सास्त्रन में सोलह संस्कारन कौ उल्लेख आयौ है, पर आज इनमें ते केवल तीन संस्कारई दीस परें । जन्म, ब्याह अरु मृत्यु । जन्मगीतन में सिसु के गर्भ में आमते ई माता के सुभाव में जो बदलाव या परिवर्तन आवै वाकौ चित्रन इन गीतन में रहवै है । जन्म हैवे के बखत जो गीत गायौ जावै यामें बड़ी गूढ़ बात बताई गई है । बच्चा कूँ सम्बोधित करिकैं -

ये नौ ये दस मास गरभ के
सुमिर साहिब कौ नाम जिनें तोय जनम दियौ हो,
लगि कलजुग की ब्यारि हरिनाम बिसर गयौ हो ।

छटी के दिना (छै दिना पाछैं) सास चरूआ धरै । ननद सांतिया अरु जिठानी, देवरानी, देवर आदि सब अपनौ-अपनौ कर्तव्य करें । याकौ इनकूं जच्चा की ओर ते नेग मिलै है । जा दिना के गीतन में इनई बातन कौ उल्लेख रहवै। याके अतिरिक्त जच्चा कूं जो कछु खायबे कूँ दियौ जाय बाऊ कौ उल्लेख गीतन में होय है । जैसें-

तेरौ ललना भाभी तेरौ ललना
आंगन में खेलै भाभी तेरौ ललना ।
सासुल आमें चरूआ चढ़ामें
जिठानी आमें सोंठ कुटामें
ननदी आमें सतिए रखामें
यू हरवा भाभी यूही कंगना
सासुल कूं दीजौ भाभी यू ही ककना ।

दस दिना बाद बच्चा कौ नामकरन संस्कार होय है। तब जच्चा के पीहर ते छोछक आवै । याबै देख जब जच्चा अपने पति पैते ऊ उपहार की उम्मीद करै तौ यू कहवै-

पीयरौ बिरन पैते मांग
हम्पै रातौं मागीए।

इनके अलावा ननद-भावज के नौंकझौंक भरे गीतऊ सुनिबे में आमें -

ककनया मांगें ननदी लाल की बधाई
ये ककनवा मेरे सुसर की कमाई
रुपैया लै जा ननदी लाल की बधाई ।

जा दिना कछु प्रबंधात्मक गीतऊ गाये जामें जिनमें कौमरी, जगमोहन ,लुगरा प्रमुख हैं । इनमें भाभी की संकीर्णता अरु ननद की उदारता कौ बरनन कियौ गयौ है । अंत में भाभी कूं अपनी गलती कौ अहसास है जावै । अंत में जच्चा कूं ढोला गामती भई कूआ पुजाबे लै जामें -

अरे चंदा तेरी निरमल कहिए चांदनी
राज्य की रानी पानी नीकरी।
अरे कुअरा तेरे ऊँचे नीचे घाट रे,
वापै रे धोवै छोरा धोवती ।

ब्याह के औसर पै गाये जायबे बारे गीतन में ऐसो विविधता है, ऐसो मार्मिकता है कै याकौ जितनौ बरनन कियौ जाय थोरौ है । लरिका की सगाई ते लैकें लगुन तानूं के गीतन में नई-नई तैयारीन कौ, घरबारेन के उछाह कौ बरनन रहवै है । जब कै कन्यापच्छ में गीत करुन रस प्रधान होमें -

लेऔ ना रे बाबा मेरे हियरा लगाई,
अब कैसै लाड़ो मेरी हियरा लगाई ,
कोरे से कागद बेटी भई ऐ पराई ।

क्वार के महीना में दसहरा कौ लोकोत्सव आवै । ब्रजनारी नव दुर्गा की स्थापना करें । छई छापरी नौ दिना तॉनू नौरता खेलें अरु देवी के गीत या लांगुरिया गामें । लांगुरिया ब्रज नारीन कौ अति प्रिय गीत है । एक दो गीतन की झलक ह्यां दिखाय रहे हैं -

कैला मैया के भमन में घुटवन खेलै लांगुरिया ।
कैला मैया कौ जुरौ है दरवार लांगुरिया चलौ तो दर्सन करि आमें ।

दिवारी हमारौ प्राचीन धार्मिक सांस्कृतिक समारोह अरु लोक प्रसिद्ध उच्छव है । या औसर पै तीन पर्वन कूँ इकठौर कर दियौ गयौ हैं -दिवारी, गोर्द्धन अरु यमद्वितीया । दिवारी के दिना तौ लक्ष्मी पूजा ही होय है, गीत ना के बरावर सुनिबे में आमें पर गोर्द्धन के दिना वैयरवानी गोर्द्धन की पूजा करती भई निरे गीत गामें । एक गीत ह्यां प्रस्तुत है-

मैं तो गोवरधन कूँ जाऊँ मेरे वीर
नॉय मानें मेरौ मनवा ।
पान चढ़ाऊँ तोपै फूल चढ़ाऊँ
दूध की धार चढ़ाऊँ मेरे वीर । नॉय---------

यम द्वितीया व दौज के दिना के गीतन में भैन की प्रसन्नता अरु भाई की मंगल कामना कौ उल्लेख रहवै-

मेरे भैया की आव अहो,
नैंक वेगि जुरि जइयो ।

दिवारी ते पीछे रंग गुलाल के वादर उड़ामतौ भयौ होरी कौ महान पर्व आवै। फगनोटे की मस्ती में मस्त ब्रजनारी-गीतन में ब्रज वनितान के संग राधा कृस्न प्रेम कौ, उनकी अनौखी लीलान कौ, हास -परिहास कौ, हिंडोरा फाग कौ ऐसौ अजब अरु मनोमुग्धकारी रूप मिलै कै आजहु ब्रजनारी गीत साहित्य सिगरे भारत कूँ भावात्मक एकता की प्रेम डोर में बाँधिबे में समर्थ है। वसंत तेई वैयरन कौ जुट इकठौर हैकै नांई फाग उड़ायौ करै। होरी के दिना होरी पूजते समै बिनके मुख ते ई गीत फूट परै-

राजा नल के द्वार मची होरी राजा नल के ।
या
वरसाने स्याम मची होरी वरसाने ।
कौन के हाथ में झांझ रे मजीरा
तौ कौन के हाथ ढपल होरी ।

इतनौई नॉय जब वनितायें इक दूसरी के घर होरी खेलवे जामें तव वू होरी की मस्ती में ऐसी मस्त है जांय कै बिनके मुख ते ई वोल वरवस ई निकस परै-

आज विरज में होरी रे रसिया
होरी रे रसिया वरजोरी रे रसिया ।

अव हम संस्कार गीतनै लैहैं । हमारे सास्त्रन में सोलह संस्कारन कौ उल्लेख आयौ है, पर आज इनमें ते केवल तीन संस्कारई दीख परैं । जन्म, व्याह अरु मृत्यु । जन्मगीतन में सिसु के गर्भ में आमते ई माता के सुभाव में जो वदलाव या परिवर्तन आवै वाकौ चित्रन इन गीतन में रहवै है । जन्म हैवे के वखत जो गीत गायौ जावै वामें वड़ी गूढ़ वात वताई गई है । वच्चा कूँ सम्वोधित करिकैं -

घर कूँ जाय । जय बरात बेटी वारे के दरवज्जे पै पोंहचै तव बैयर दूल्हा की अगवानी करती भई बाते हँसी ठिठोली करैं-

सारौ घोड़ी न लायौ नचायबे कूँ साजन के द्वार ।
सारौ इकलौ ही आयौ लजायबे कूँ साजन के द्वार ।

ब्रज नारी गीतन कौ एक सलौनौ रूप हमें ब्याह के औसर पै बरात जैमे के वखत उनके मनोरंजन के तांई गाई जायवे वारी गारीन में मिलै, जिनके सामई हमारे बेदऊ फीके परि जाँय । ब्रज की बरात अरु म्हाँ की नारीन की गारी बरातीन कूँ कैसौ उन्माद प्रदान करैं जाय यूई जान सकै जानें कबहुं ब्रज की बरात करी होंय । इन गारीन में यदि कहुं विभिन्न पकवानन कौ उल्लेख है तौ कहुं समधी ते हँसी ठट्टा,जीजा साली कौ मधुर हास तौ कहु समधी ते निवेदन-

हाँ हाँ राम रंग बरसैगौ
रंग बरसै कछु इमरत बरसै और बरसै कस्तूरी ।
समधी जेंऔ जौनार जुगत सौं हरे-हरे जुगतसौं पाय लीजौ जी ।

या गीत में समधी कूं बडे रतन जतन सौं खानौ खवायौ जाय रह्यौ है पर अगले ही गीत में-

तुझे रखूंगी नौकर बनाय सारे समधी मेरी हवेली अइयौ ।

अरु जब पांत उठिबे लगै-

काहे उठ बैठे और लै लेते ।

बरात जब लड़की कूं बिदा करायकें लै जावै तौ विदा के गीत गाये जामें । जे गीत करुन रस प्रधान होय हैं । इन गीतन्नें सुनिकें सायदई कोई पत्थर दिल होयगौ जाको आँखन में आँसू नाँय आ जामें ।

काहे कूँ ब्याही बिदेस रे सुन बाबुल मोरे ।
हमतौ बाबुल तोरे अंगना की चिड़िया ।
चुग्गा चुगत उड़ जांय रे सुन बाबुल मोरे ।

विदा के एक अन्य गीत में आध्यात्मिक प्रभाव लक्छित है रह्यौ है -

ओरे रे कोरे गुड़िया ऊ छोड़ी रोमत छोड़ी सहेलरी
अब चौं बोलै दारी सोन चिरैया छोड़ौ बाबुल कौ देस,
अपने पुरिख के संग चली लेऔ बाबुल घर आपनौ
अपनौ कुटुम्ब लै उतरूंगी बाबुल त्यारौ नगर सू बस बसै ।

या गीत मे आत्मा सारे बन्धनन ते मुक्त हैकै नांई अपने प्रियतम के संग लग लेय । कोऊ भौतिक बैभव अब बायै आकर्सित नाँय कर सकै । बरात लौटबे पै दूल्हा दुल्हन कुल देवी की पूजा करैं तब बैयरबानी याये गामें-

सालू सरस रेसमी लंहगा,चादर के बीच किसन प्यारी,
दूल्है बन्यौ नंद कौ लाल दुल्हन राधा प्यारी ।

ऐसौ प्रतीत होय कै कृस्न-राधा के रंग में रंगी लुगाई अपने दूल्हा दुल्हन में नंद कौ लाला अरु बृषभानलली के ही दर्सन करैं। रातके समै सुहाग टोना गाये जामें । एक उदाहरन दियौ जाय रह्यौ है-

एक अन्य गीत में समाज में नारी की हीन दसा कौ कैसौ चित्रन भयौ है-

जा दिन लाड़ो मेरी तुमरे भई ओ भइए वजुर की रात,
टूटे झटोला त्यारी माइल सोवै चावुल वसै खिरान हो ।

लगुन के पस्चात भैन अपने भइया के घर भात नौंतवे जावै तौ अपने वड़ेन ते कहै-
ऐ यू अथई वैठन्तेओ सुसर मेरे
अचरा तो लिख देओ मेरे भातई ।

भौर जव भाई के आयवे कौ समाचार वाकू मिलै तौ-

आज तौ गोड़ौ मेरो रंग भरौ जी
गोड़ेन हरी हरी दूव तौ करिहा चरावै मेरौ भातई ।

इन गीतन में कहूँ तौ पैलें घर के वड़ेन कूँ भातई ते सम्मान दिवायौ गयौ है अरु कहूँ वाकी उदारता ते द्रवित हैकें भैन अपने कुटम्बीन ते कहवै-

उनेरे उनेरे वरसै मेह इत मेरौ वरसै रे भातई ,
उसरौ उसरौ रे देवर जेठ पियारे भौत लुटौ मेरौ भातई ।

रतजगे के दिना कई प्रकार के अनुष्ठान किये जामें जिन्हें वैयर अपने गीतन ते पूरौ करैं । एक गीत में वैयर सिगरे ग्राम देवतन कूं नौंत-नौंत कै वुलामें अरु विन्नें एक हड़िया में वंद करि देमें । याकूं वायवंद कह्यौ जाय । व्याहते पीछें जाये नदी या पोखर में घर की लुगाई वहा आमें । व्रज के इन टौना टोटकान में हमारी संस्कृति के लौकिक तत्व विद्यमान हैं, जिनकूं लौकिक भूतात्मवाद कह्यौ जाय सकै । ऐसौ लोक विस्वास है कै या तरियाँ इन्हें मूंदिवे ते जे व्याह में काऊ प्रकार कौ विघ्न नॉय फर सकैं । ई टोटका व्रज में वुढ़िया पुरान के नामते प्रसिद्ध है । ई धर्म के आदि रूप अरु धार्मिक आधार के आदिम चरन कहे जाय सकें । गीत या प्रकार है -

ऑधी मेह तुम वड़े हौ आज हमारे नौंते ।

याके अतिरिक्त पुरान प्रसिद्ध देवतान के ऊ गीत गाये जामें, जिनमें गणेश, हनुमान, महादेव व देवी प्रसिद्ध हैं । व्याह ते पैलें वरना-वन्नी के रूप सौंदर्य में वृद्धि करवे के तांई जिन प्रसाधनन कौ उपयोग कियौ जाय वाई कौ उल्लेख तेल, उवटन, मेंहदी आदि के गीतन में होय । व्याह ते पैलै घूरौ पुजवायवे की विसेस रीतिऊ व्रज लोक जीवन में मानी जाय । घूरे पैते वरना-वरनी नैंक मट्टी लैकें आमें अरु लाइकैं पार्स में धर देमें । ऐसौ लोक विस्वास है कै पार्स (भंडारघर) में दिन दूनी रात चौगुनी वरकत वनी रहै । या समै व्रज की लुगाई ये गीत गामें-

फिरंगी नल मत लगवावै रे
नल कौ पानी भौत वुरौ मेरौ जियरा घवरावै ।

वरात जायवे ते पैलें जीजा दूल्हा की महरामनी करै । घोड़ी पै वैठकें दूल्हा दुल्हन कूँ लैवे जाय । या दूल्हा की मैया अपने वेटा की वलैया लेती भई कहै-

दुनियाँ कहै दूल्है कारौ ही कारौ,
माय कहै मेरौ जगत उजारौ ।

अंत में मैया कूआ में पैर फांसिकें वैठ जावै अरु अपने वेटा ते अपनी सेवा करवायवे कूँ वहू लाइवे कौ वचन लेवै तव

घर कूँ जाय । जब बरात बेटी वारे के दरवज्जे पै पौंहचै तब बैयर दूल्हा की अगवानी करती भई याते हँसी ठिठोली करैं-

सारौ घोड़ी न लायौ नचायवे कूँ साजन के द्वार ।
सारौ इकलौ ही आयौ लजायवे कूँ साजन के द्वार ।

ब्रज नारी गीतन कौ एक सलौनौ रूप हमे ब्याह के औसर पै बरात जैमे के वखत उनके मनोरंजन के तांईं गाई जायवे वारी गारीन में मिलै, जिनके सामई हमारे वेदऊ फीके परि जाँय । ब्रज की बरात अरु म्हाँ की नारीन की गारी बरातीन कूँ कैसौ उन्माद प्रदान करै जाय वूई जान सकै जानें कबहुं ब्रज की बरात करी होंय । इन गारीन में यदि कहुँ विभिन्न पकवानन कौ उल्लेख है तौ कहुँ समधी ते हँसी ठट्टा,जीजा साली कौ मधुर हास तौ कहु समधी ते निवेदन-

हाँ हाँ राम रंग बरसैगौ
रंग बरसै कछु इमरत बरसै और बरसै कस्तूरी ।
समधी जेंऔ जौनार जुगत सौं हरे-हरे जुगतसौं पाय लीजौ जी ।

या गीत में समधी कूं बड़े रतन जतन सौं खानौ खवायौ जाय रह्यौ है पर अगले ही गीत मे-

तुझे रखूंगी नौकर बनाय सारे समधी मेरी हवेली अइयौ ।

अरु जब पांत उठिवे लगै-

काहे उठ बैठे और लै लेंते ।

बरात जब लड़की कूँ विदा करायकें लै जाबै तौ विदा के गीत गाये जामें । जे गीत करुन रस प्रधान होय हैं । इन गीतनें सुनिकें सायदई कोई पत्थर दिल होयगौ जाकी आँखन में आँसू नाँय आ जामें ।

काहे कूँ ब्याही बिदेस रे सुन बाबुल मोरे ।
हमतौ बाबुल तोरे अंगना की चिड़िया ।
चुग्गा चुगत उड़ जांय रे सुन बाबुल मोरे ।

विदा के एक अन्य गीत में आध्यात्मिक प्रभाव लक्छित है रह्यौ है -

ओरे रे कोरे गुड़िया ऊ छोड़ी रोमत छोड़ी सहेलरी
अब चौं बोलै दारी सोन चिरैया छोड़ौ बाबुल कौ देस,
अपने पुरिख के संग चली लेऔ बाबुल घर आपनौ
अपनौ कुटुम्ब लै उतरूंगी बाबुल त्यारौ नगर सू बस बसै ।

या गीत में आत्मा सारे बन्धनन ते मुक्त है कै नांई अपने प्रियतम के संग लग लेय । कोऊ भौतिक वैभव अब बाये आकर्सित नाँय कर सकै । बरात लौटवे पै दूल्हा दुल्हन कुल देवी की पूजा करैं तब बैयरबानी याये गामें-

सालू सरस रेसमी लंहगा,चादर के बीच किसन प्यारी,
दूल्है बन्यौ नंद कौ लाल दुल्हन राधा प्यारी ।

ऐसौ प्रतीत होय कै कृस्न-राधा के रंग में रंगी लुगाई अपने दूल्हा दुल्हन में नंद कौ लाला अरु वृषभानलली के ही दर्सन करैं। रातके समै सुहाग टोना गाये जामें । एक उदाहरन दियौ जाय रह्यौ है-

सरकतु नाँय वटुआ डोरी विना । डोरी विना वू तौ गोरी विना ।

या

लहरै लेंते आमें सुंदर मोतियन के हार
वन्ने के वावा चिरजियौ दादी रानी कौ अमर सुहाग ।

जनम अरु व्याह, उल्लास और आल्हाद के औसर माने जामें । याही कारन ते इनके गीतऊ खूब मिलें । पर मृत्यु,दुख अरु विसाद कौ अवसर होय है। याते या समै गीत नाँय गाये जामें अरु गायेऊ जामें तौ भौतई कम। वैसे व्रज में मृतक के गुनन्नें गाय गाय कै रोवे की प्रथा आजहू विद्यमान है । मृत्यु गीतन में संसार की निस्सारता अरु जीवन की छनभंगुरता कौ ई उल्लेख रहै और मनख कूँ अच्छौ कर्म करवे कौ संदेस छिपौ रहै-

पाँच पेड़ गंगाजी में लगाये तौ विन विरछन कछु करि रे
कछु करि रे धरम जाते तिर रे ।

ई गीत मीरा के या पद की याद दिवावै जामें वानें कह्यौ है-

नाँहि ऐसौ जनम वारम्वार
विरछ के ज्यौं पात टूटे वहुरि ना लागें डार ।

उपर्युक्त संस्कार त्यौहार अरु पर्वन के अतिरिक्त दो पर्व ऐसे ऊ हैं जिन्हे राष्ट्रीय पर्व के नाम ते जान्यौ जाय । स्त्रीन में ऊ जा दिना राष्ट्रीय चेतना देखिवे कूं मिलै । प्रभात फेरी लगामते समें उनके हृदय माँहि देसभक्ति की भावना उभरि परै-

रे लांगुरिया दिन पन्द्रह अगस्त कौ आय गयौ
जा दिन देस भयौ आजाद । लांगुरिया ------

छव्वीस जनवरी कूं जो चेतना नारी मानस में देखिवे कूँ मिलै वाकी एक झलक प्रस्तुत है –

मैं तौ जाऊगी देखिवे आज छव्वीस जनवरी दिल्ली की ।

या तरियाँ उपर्युक्त वरनन ते ई स्पस्ट है जाय कै व्रजनारी गीतन में हमारी संस्कृति के सभी रूपन के संग वाके सुभासुभ पच्छ कौ दिग्दर्सनऊ भलो भाँति होय है । अव हम इन गीतन के साहित्यिक महत्व के वारे में ऊ कछु चर्चा कर लेंय –

साहित्यकारन की दृष्टि ते देख्यौ जाय तौ लोकेगीत मात्र मनोरंजन की वस्तु समझी जाइवे वारी अभिव्यक्ति है। लोकगीतन के वारे में साहित्यकार यात तौ भौत वनामते रहें ह्यां तक कै कछु एक विद्वानन नें लोकगीतन माँहि सास्त्रीयता अरु साहित्यिकता की वातऊ कही हैं अरु विन्नें सिद्ध करिवे कौ प्रयासऊ कियौ है । पर सामान्य रूप ते साहित्यकारन्नें ऐसौ साहस नाँय कियौ जामें सकारात्मकता दृष्टिगोचर होय । या संदर्भ में इन व्रजनारी गीतन कौ उपयोग का सम्वन्धित भासा (हिन्दी भाषा) के विकास में सहायक वनि सकै है? वास्तव में इनते न केवल भाषा कूँ सरल, सुवोध अरु ग्राह्य वनायौ जाय सकै वरन जे राष्ट्रभाषा के रूप कूँ प्रतिष्ठित करिवे में एक सफल प्रयास सिद्ध होयगौ ।

जव हम छात्रन कूँ भासा-व्याकरन या काव्यसिल्प कौ अध्ययन करामें हैं तौ वूई घिसेपिटे उदाहरन प्रस्तुत करि देंय हैं- 'कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।' मैं ई वताइवे कौ प्रयास करी रई हूं कै का रस, का अलंकार, का मुहावरे -लोकोक्ति, का सव्दसक्ति कौ अर्थगौरव अथवा व्याकरन सौं ऐसौ कोऊ तत्व नाँय जो लोकगीतन की भासा में न पायौ जातो होय । या सम्वन्ध में मेरौ अपनो सोध प्रवन्ध "भरतपुर तहसील के लोकगीतों का लोकशास्त्रीय अध्ययन" (1977, आगरा विश्वविद्यालय) अपने आप में प्रमान है ।

भासा के तीनोंई गुन ओज,माधुर्य अरु प्रसाद प्रसंगानुसार इन गीतन में मिलें । दूसरी विसेसता चित्रोपमता होय। या गुन

के कारन भासा स्रोता के सांमई एक चित्र सौ खड़ौ कर देय है । निम्न गीत में भ्रातविहीन भैन के रूप में करुना की साकार मूर्ति ई ठाढ़ी है जाय है -

सासुलिया रानी मत योलै गरब के बोल
मेरौ जियरा लरज़ै नैनन यरसै जलकी धार
मेरौ नांये भतीजौ नॉये मैया कौ जायौ बीर
मेरौ बाबुल जोगी जोगी पै नायें हत भात ।

अलंकारन की दृष्टि ते यदि इन गीतन पै दृष्टिपात करौ जाय तौ हम पामिंगे कै सब्दालंकार अरु अर्थालंकार दोनूं स्थान-स्थान पै इन गीतन में आए हैं ।सब्दालंकार अनुप्रास, श्लेस, यमक आदि इन गीतन में अधिकांस मिलैं । अनुप्रास कौ एक उदाहरन प्रस्तुत है-

'झारे झमकन बरसैगौ मेह' अथवा 'चंदन चौकी मेरे भैया जो बैठे ।' ह्यां पै ''झ'' अरु ''च'' वर्न की एक ते अधिक वार आवृति भई है सो अनुप्रास अलंकार है । अर्थालंकार की दृष्टि ते इन गीतन में रूपक, उपमा, विनोक्ति, स्मरन, तुल्योगिता, उदाहरन, अतिसयोक्ति व अन्योक्ति मिलै है । उपमा कौ एक उदाहरन प्रस्तुत है-

हाड़ जरैं जैसें लाकड़ी केस जरैं जैसे घास,
ठाड़ी तौ जरे चन्द्रावली जाके माई न बाप ।

इनके अतिरिक्त असंगत, विसम, व्याजोक्ति व लोकोक्ति इन गीतन में मिलैं । सब्दन कौ अर्थ गौरव यढ़ायवे में ऊ लोकगीतन कौ कोऊ सानी नाँय । मन की भावनान के अनुसारई सब्दन कौ अर्थ बदल जावै है। ब्रज के द्वार जय सुआगतकूं खुले तौ बिन्नें ''झंझन किवार '' अरु जब मन में मैल होय तौ बिन्नें ''बजुर किवार'' कह्यौ जाय । सब्दन कूं मिलाय कै नयौ भाव भरिये में तौ ब्रज की बैयरन कूं कमाल हासिल है। जैसे ''चकर पैद ने घेरी पर घेरी मेर राजा।'' जैसे रानी से रानियाँ, रास से रसिया आदि। वास्तव में भासा कौ विकास पंडित विद्वान नाँय कर सकौ । याकौ झंडा तौ जनपदीय हाथनमे ई रहैगौ जो खास तौर ते पुराने सब्द कौ विकास करै अरु नये सब्दनें गढ़ै है।

काव्य-सिल्प के बाद लोकगीतन कूँ सिच्छा के अन्य पहलून की दृष्टि तेऊ देख सकें । प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर में सिच्छा कौ एक प्रमुख उद्देश्य बालक कौ मानसिक अरु बौद्धिक विकास करिबौ है । हम या बात कूं भली प्रकार ते जानें कै या उद्देश्य की पूर्ति तबई है सकै जब बालक की मनोवैज्ञानिक आवस्यकता की पूर्ति होय । लोकगीतन की लोकप्रियता ते ई प्रमानित है चुकौ है कै ये इन आवस्यकतान की पूर्ति करिये में सच्छम हैं । इन गीतन में मानव मन की संवेदनान कौ चित्रन मिलै है । याके आधार पै बालक की मूलप्रवृत्ति कूं पहचानकें बाके मानसिक अरु बौद्धिक विकास में सहायता करी जा सकै । छात्रन में नैतिक एवं चारित्रिक विकास हू इन गीतन ते कियौ जाय सकै । सामाजिक विकास के गुनन कूं पनपायवे में जे लोकगीत रामबान कौ काम करें । रसिया, ढोला, होरी आदि ऐसे गीत हैं जो समूह की भावनान कूं प्रेरित करैं हैं । इतनों ई नहीं जे गीत सारीरिक विकास जैसे सिच्छा के उद्देश्य की पूर्ति मेंऊ सहायक की भूमिका निभामें । अब आप ई सोचौ कै हिन्दी पाठ्यपुस्तक में या विधा कूं क्यों नाँय अपनायौ जाय ? पाठ्यक्रम में सम्मिलित करिबे ते ई लाभ होयगौ कै साहित्यकारन कूं एक नई दिसा मिलैगी, हिन्दी कौ विकास होयगौ । हिन्दी की सब्दावली बढ़ैगी, हिन्दी कूं सरल एवं अवबोधीय बनायवे में, हिन्दी सिच्छन में नवीनता लाइवे में छात्र अपनी संस्कृति कूं भली प्रकार समझ सकिंगे । ऐतिहासिक तथ्य मूल रूप में उजागर है सकिंगे । या प्रकार के हिन्दी सिच्छन सौं भासा कौ विकास है सकैगौ । हमारी जो संस्कृति अरु सभ्यता लुप्त हैती जा रही है यू जीवित रखी जाय सकैगी । छात्र जो दोहा कवितान के रूप में रटते रहमें उनते मुक्ति मिल सकैगी ।

ललितकला साहित्य की दृष्टि तेऊ इन गीतन कौ महत्व नेंकऊ कम नाँय । इन लोकगीतनें गाइये के समै अनेकानेक ऐसे औसर आमें जब इनकौ सम्बन्ध काऊ न काऊ मूर्तिकला या चित्रकला सौं जुरौ रहयै। संस्कारगीत अथवा त्यौहारन के

औसर पै कोऊ न कोऊ मूर्ति, अल्पना, रंगोली अथवा भित्ति चित्र अवस्य बनायौ जाय । जैसे करवा चौथ पै दीवार पै लोककला कौ चित्रन, देवठान अरु होरी पै बनाई जायवे वारी अल्पना अरु रंगोली । याही प्रकार सांझी गीतन में चौदह दिना तानूं जिन भावनान कौ उल्लेख रहवै उनई भावन कूं भित्ति चित्र में दर्सायौ जाय है । कहवे कौ तात्पर्य ई है कै कलाके छेत्र में इन गीतन सौं नये भाव अरु नये आयाम स्थापित किये जाय सकैं ।

संगीत साहित्य की दृष्टि ते देखें तौ इन गीतन्नें संगीत की लयन के विकास में अपनौ महत्त्वपूर्न योग दियौ है । जा संदर्भ में जौ कहवौ अनुचित न होयगौ कै कितनी ऊ फिल्मी धुन आइवे के बादऊ लोकगीतन पै उनकी लयन पै कोऊ प्रभाव नाँय भयौ है । अस्तु फिल्म वारे लोगीतन की धुनन कूं अपनाइवे कूं बाध्य है रहे हैं । ब्रजभूमि फिल्म में ''झूला तौ परि गये अमवा की डार पै जी ''तथा''सामन का महीना पवन करे सोर ''जैसे गीतन्नें या बात कूं सिद्ध करि दियौ है । संगीत की स्वर साधना सास्त्रीय मानसिकता ते जैसे आक्रान्त रहवै वैसे लोकगीत की नाँय रहवै । लोकगीतन की ताल अरु लय, आरोह–अवरोह सिगरे बन्धन स्वाभाविक मानवावेगन के अनुकूल रहमें । एक उदाहरन प्रस्तुत है–

लाला नन्द कौरी जोगनिया बनाय गयौ री ।

–1 एल.5 न्यू हाउसिंग बोर्ड
एस.टी.सी. स्कूल, भरतपुर



नारीन नैं ही चाहें वे बूढ़ी होंय, ज्वान होंय, चाहें छोरी–छापरी होंय, लोकगीतन कूं अपने कंठन में बसायौ है। याकौ कारन नारी–स्वभाव की भावुकता, मन के मूलभावन की सम्पन्नता है सकै है जाकी पुरुषन में कमी होय। लोकगीत मन के गंभीर धरातल कूं स्पर्श नांय करैं, वे तौ जीवन के अति समीप होंय। नारी कौ मन जीवन के समीप रहवे के कारन लोकगीत वाही की दैंन बनि गए हैं। नारी कौ सुरवर हू याकौ एक कारन है सकै है।



ब्रज लोकगीत : विहंगम झाँकी

- श्रीमती राज चतुर्वेदी

प्रत्येक देस के लोकगीत व लोक संगीत में याकी आत्मा प्रतिध्वनित होय है । वे जा काऊ आंचर के होय हैं याकौ सांस्कृतिक सौष्ठव अरु वैशिष्ट्य यामें बिराजै है । वे या परिवेस को झाँकी प्रस्तुत करैं हैं । एक प्रकार सौं जीवन के समस्त क्रिया-कलापन सौं इनकौ संबंध होय है । मर्यादान सौं अनुरंजित ये लोकगीत केवल व्यक्ति के मनोरंजन करवे के साधन ई नहीं बल्कि वे यामें चेतना व स्फूर्ति भरकें वाके जीवन कूं अनुप्राणित ऊ करैं हैं । बारहमासे, मल्हार, लांगुरिया, ख्याल, रसिया ये सब लोक संगीत के विविध प्रकार हैं । इनमें भक्ति, सिंगार, लोकमर्यादा सब भाव भरे पड़े हैं । भक्ति भाव सौं परिपूर्न लाँगुरिया के गावे की अदा कछु ऐसी मनमोहक छटा उत्पन्न करै है जासौं गाते समै गावे अरु सुनवे वारे दोनों ई रसविभोर होकैं आत्मलीन हो जाएँ हैं । मन व आत्मा कूं जुरा दैवे वारौ देवी के प्रति श्रद्धाभाव सौं परिपूर्न ये लाँगुरिया दृष्टव्य है- "कुल्हड़ फूट गयौ मोटर में, प्यासी मर गई लाँगुरिया । सास हमारी चढ़ी अटरिया, सुसरा जोड़े हाथ, उतर-उतर परमेसरी मैंने तोपै बोली जात ।" एक दृष्टि भक्ति भाव सौं ओत -प्रोत या लाँगुरिया पैऊ डार लैं- "ऊपर चढ़कै देख लाँगुरिया कैला कितेक दूर । दो-दो जोगिनी के बीच अकेलौ लाँगुरिया । छोटी जोगिन यो कहैं मोहे टीका ला देरे, बड़ी जोगिन यों कहे मोहे नथनी ला देरे । दो-दो जोगिनी के बीच अकेलौ लाँगुरिया ।" भक्ति रस के संग हास्य -सिंगार रस कौ संजोग इनकी एक अद्भुत विसेसता है । गाते समै जहाँ एक मांऊ भक्त जनसमूह भक्ति भाव सौं भरकैं कैला देवी की भक्ति में गावैं है । म्हां दूसरी मांऊ गाते समै मीठे हास परिहास की रसमाधुरीऊ बिखरते जाएं हैं । "लाँगुरिया" ब्रज में देवी के भक्तन कूं कह्यौ जाय है ।

गोवर्द्धन पर्वत कौ ब्रज संस्कृति मांहि वरेण्य स्थान है । जाकी परकम्मा बहुत पवित्र मानी जाय है । जाय पूरी करबौ ब्रजवासी अपने जीवन कौ परम काम मानैं हैं । आखिर गोवर्द्धन महाराज बिनकी कामनान की पूर्ति ऊ करैं हैं । जाई कारण मनौतीऊ मानी जाँय हैं । एक भैन अपने भईया ते यों कहै है-

> मैं तो गोवर्धन कूं जाऊं मेरे वीर
> ना मानै मेरौ मनवा ।

गोवर्द्धन महाराज की स्तुति में कोई कह रह्यौ है-

> श्री गोवर्धन महाराज तेरे माथे मुकुट विराजै ।
> तेरे गले वैजन्ती माल ।
> तोपै हार चढ़ै तोपै फूल चढ़ै ।
> तोपै चढ़ै दूध की धार । श्री गोवर्धन -------

गोवर्धन महाराज की कृपा ते कहूँ कोई कमी नाँय । दूध दही की नदिया यह रही है अरु बाकी धार श्री गिर्राज जी महाराज पै पड़ रही है । याई ते विनकौ सिंगार ऊ है रह्यौ है । ब्रजभूमि की लीला अनुपम है, भक्ति अरु प्यार ते आप्लावित मनोहारी रसियान के काजें प्रसिद्ध है । प्रेम अरु रस में पगे जे रसिया जब गाये जाँय हैं तौ अपनी अनौखी छटा बिखेरें हैं । होरी के एक रसिया पै दृष्टिपात करैं । होरी के रस के संगई संग सप्दन तथा स्वर,लय, ताल में जाकी रस माधुरी व्याप्त है -

आज बिरज में होरी रे रसिया,
होरी है रे रसिया बरजोरी है रे रसिया
अपने अपने घर सौं निकसीं
तौ कोई गोरी तौ कोई कारी रे रसिया ।
नौ मन रंग घुरौ मथुरा में
तौ दस मन केसर घोरी रे रसिया ।

रसिया कौ मतलब है रस की खान। इन विभिन्न रंगन के रसियान में रस माधुरी लबालब भरी पड़ी है । ब्रज लोक साहित्य के सिरमौर रसियान में मनुहार ते लैकैं प्रेम की प्रतीती तॉनूं सबई कछु विद्यमान है ।

कान्हा बरसाने में आ जइयौ,
बुलाय गई राधा प्यारी ।
उड़द की दार, गेंहून के फुलका,
तोय भूख लगे तौ खा जइयौ । बुलाय गई ----
सौने की थारी में भोजन परोसौ,
तेरी गरज परै तौ खा जइयौ । बुलाय गई -----

इन रसियान ते इतरऊ कछु और है जाकी मधुर लय व तान पै ब्रजवासीन के पाम थिरकैं हैं । हाँसी- मजाक,मनोविनोद तौ ब्रजवासीन के जीवन कौ अहम हिस्सा है । जाके अभाव में हम विनके जीवन की पूर्णता की कल्पनाऊ नाँय कर सकैं। जा राग रंग भरे माहौल में नाच के समै गाये जाये वारे ख्यालन कौ अपनो अप्रतिम स्थान है । माधुर्य रस में पगे जे गीत पति अथवा प्रियतम के प्रति सतरंगी भावनान ते तरंगित हैं-

कारौ री बलम मेरौ कारौ री ।
सास गई दिल्ली , ससुर गयौ बम्बई ।
मेरौ कारौ गयौ री कलकत्ता की सैर कूँ ।
सास लाई लड्डू ,बिखर गए पेड़ा ।
खूब खायौ री कारी गाजर कौ हलुआ ।

एक अन्य ख्याल कौ जायका देखौ-

ढोलक मंदी पड़ गई रे ।
मेरो पाम उठे ना देवरिया ।
जैसी बुससर्ट राजा पहरै ।
वैसी पहनै देवरिया ।
राजा के भरोसे मैंने ।
जाय जगायौ देवरिया । ढोलक मंदी -------

हर औसर पै हास्य की फुहार छूटती ही रहें हैं । खुसी कौ कोऊ औसर च्यौं ना हो । फिर ब्याह सादी जैसे महत्वपूर्न समारोह भला हँसी मजाक सौं कैसें अछूते रह सकें है । ब्याह के अलग-अलग औसरन पै गाये जाबे बारे जे गीत बा समै

की माधुरी कूँ औरऊ ज्यादा बढ़ाय कैं रसकी अनौखी छटा बिखेरें हैं । हास्यरस के रंगारंग कार्यक्रमन में ब्रज की नारीऊ दै कदम आगे ई है । हँसी-हँसी में यू भौत कछु कह जाय है-

चिड़ी तोय चामरिया भावै,
घर की नारी छोड़ पिया जी
कूँ पर नारी भावै।
सहर के सोय गये हलवाई ।
अब तौ मुखड़ा खोल कलाकन्द ,
लायौ हूं प्यारी ।

केवल कटाक्ष ई नाँय पति अरु प्रियतम के प्रति समरपन अरु प्यार कौ भावऊ दीख परै है । जैसें-

भरौ कटोरा दूध कौ,
पिया बिन पियौ न जाय ।
मैया बाप की लाड़ली जी,
कोई पिया बिन रह्यौ न जाय ।
ओटा पै जी कोई ओटरी जी,
कोई सोना घड़ै सुनार ।
ऐसे बिछुआ गढ़ दै,
धमक सुनै कोई यार ।

ब्रज की नारी केवल अल्हड़ अरु भोरी ई नाँय है,सम सामयिक परिवर्तनन के बारे मेंऊ बाकी सोच है ,बिनके प्रतिऊ बो सचेत है । अंगरेजन कूँ जिनकूँ फिरंगी हू कह्यौ जाय है, बिनकूँ अपने कटाक्ष ते नांय बख्सौ । जब यहां नल लगवाये गये हे, फिरंगीन कूँ बिन्नै जा तरियाँ ते तानौ दियौ-

फिरंगी नल मत लगवावै,
नल कौ पानी भौत बुरौ,
मेरी तबीयत घबरावै ।

मन की सरलता ,परिवारजनन के प्रति अटूट प्रेम, ब्रजभूमि की, म्हाँ के नर नारीन कूँ अनुपम दैन है । प्रकृति, छोटे-बड़े , स्त्री-पुरुष सबन कूँ समान रूप ते उत्फुल्ल करै है । हर रितु कौ बिनके जीवन में महत्वपूर्न स्थान है ।सिगरे त्यौहार म्हाँ की नारीन के प्रियजन अरु सगे संबंधीन ते जुड़े रहे हैं ।समै-समै पै बिनकी सुधि बिन्नैं झकझोर देय है ।सामन के महिना में जब बादर उमड़-घुमड़ कैं आसमान पै घिर आवैं हैं ।रिमझिम -रिमझिम सामन की फुहारें पड़बे लगैं हैं ।माटी में ते सौंधी-सौंधी गंध आयबे लगै है ।ऐसे में भला कौनसी नारी होयगी जो सतरंगी चूनर,लहरिया अरु चुनरी की कामना नाँय करती होगी ।क्वारी कन्या ते लैकैं नव सुहागन,बधुन ते लैकैं प्रौढ़ान के मनऊ भीगे-भीगे मौसम में झूमबे लगैं ।नारी काऊ न काऊ रूप में पुरुष ते यू चाहै पिता हो, भईया, पति अरु पुत्र ही क्यों ना होय भावनात्मक रूप सौं जुड़ी रहै है अरु हर्ष व बिसाद दोनू ई औसरन पै बाय पुकार उठै है ।धरती नैं हरित परिधान धारन कर लिए होंय ,मयूर पंख पसारे नाच रहे होंय ऐसे माहौल में कोऊ कन्या जब ससुरार में होय तौ पीहर की माटी की भीनी सुगंध बाय आकुल-व्याकुल कर जाय है ।ऐसे में बाय माँ कौ जायौ वीर याद आ जाय है ।अपने बाबुल कौ अँगना याद आबे लगै है जहाँ बाके बचपन की निःशेष स्मृतियाँ जुड़ी भई हैं ।कोयल अरु पपीहा की आवाज में वाकूँ अपने भइया की आवाज गूँजती सुनाई देय है अरु मन बरबस पुकार उठै है-

वाग में पपीहा वोलै,
मैं जानू मेरौ भैया वोलै रे ।

तवई सखी पूछै अरी सात भईयान की इकलौती वहना जे तौ वता कौनसौ भैया वोलै है अरु वू सात भईयान की प्यारी भैना एक-एक कर अपने सातन भैयान के नाम गिनाय दे है-

वाग में पपीहा वोलै,
मैं जानू मेरौ भैया वोलै।
कौनसौ भैया वोलै रे?
वड़ौ भैया वोलै रे ।
आप कौं घोड़ा,वाप कौं घोड़ा,
माँ की चूनर लायौ जी ।
छोटी वहन की चूनर भूल आयौ,
सौ-सौ नाम धरायौ जी ।

भैन उराहनौ देते भये अपने भैया कूँ लोक लाज कौ भय दिखावै है । भैया तुम सब कछु लाये परि या मौसम में भैना कूँ चूँदरी नाँय उढ़ाओगे तौ लोग तुमें भलौ वुरौ कहिंगे । समाज के सबई क्रिया-कलाप एक पवित्र लोक मर्यादा ते बँधे हैं। तीजन पै वहन-वेटिन कूँ लहरिया चूँदरी उढ़ावौ हमारी सांस्कृतिक परंपरा है । संस्कृति कूँ जीवित राखवे के काजें थोड़े भौत अंकुस अरु मर्यादान कौ हौनौ अपरिहार्य है । आचार विचार में उच्छृंखलता ,विवेकहीनता, आधुनिकता जीवन के तांईं श्रेयस्कर नाँय । परिवार में हमेसा सौहार्द वनौ रहै, पारिवारिक वातावरन खुस वनौ रहै, जेई ह्यां की स्त्रीन कौ जीवन दर्सन है । परिवार में जव सिसु कौ जन्म होय है यानी कै एक सदस्य की अभिवृद्धि, तो सचमुच जे सबन के काजैं हर्ष प्रमोद की घड़ी होय है। नवजात सिसु की वलईया लैवौ, वाय लोरी सुनावौ जे काम सवन के मन कूँ विभोर करै हैं । परि जानैं ये सुभ औसर दियौ,प्रसव की अकथनीय वेदना सहकैं जे अनमोल उपहार दियौ भला वाकौ मन क्यों भारी रहै । वाकौऊ तौ ख्याल रखनौ है,वाकूँ ऊ तौ प्रसन्न रखनौ है। जच्चा नैंई तौ वच्चा जायौ है । तवई तो ये खुसनुमा घड़ी आई है । तवई तो ढोलक पै थाप मारकैं रस विभोर वैयर ठिठोली करती भई गावैं हैं-

जच्चा चढ़ गई रे अटरिया ,
कैसे सपरी ।
सासुल आमें चरुआ चढ़ावैं,
माँगें अपनों नेग ।
नेग की विरियाँ ,सौंग दिखावै,
पिया वता दे परदेस ।
चावी लै गये रे सजनवा ,
कैसे सपरी ।

दूसरौ जच्चा ऊ कछु जाई प्रकार परिहासपूर्न है -

जच्चा मेरी भोली भाली रे ,
जच्चा मेरी लड़नौ ना जानै रे ।
साँप मार सिराहने राख्यौ,

विच्छू मार पंगायत जी ।
जच्चा मेरी झींगुर ते,
डर गई रे ।
सास ननद की धोती फारै,
आये गये की चादर जी ।
जच्चा मेरी लड़नौ ना जानै री ।

लोकगीत अरु लोकपर्वन के रूप में ब्रज की संस्कृति आजऊ जीवित है । कृस्न-राधा की पवित्र भूमि आधुनिक युग की विकृतीन ते अपने आप कूँ बचावे की भरपूर चेस्टा कर रही है । मनीषीन अरु साहित्यकारन कौ ये दायित्व,पुनीत कर्तव्य है कै वे जाय धूमिल अरु नस्ट नाँय होन दें । आज जरूरत है ऐसे पारखी गोताखोरन की जो लोक के बहुमूल्य रतन कूँ खोज कैं निकार सकैं । काऊ देस की आंचलिक धरोहर ई या देस की वास्तविक निधि व वाकी वास्तविक संपदा है । आधुनिकता के मोह अरु आपाधापी मे कहूँ हम अपने अनमोल रतन ते वंचित न रह जाँय,अपनी जमीन ते ना कट जाँय ।

-23, चन्द्रपथ, सूरज नगर (पश्चिम)
सिविल लाइन्स ,जयपुर

□

लोकगीत लोकमानस की पूरी-पूरी, सहज और बेरोकटोक अभिव्यक्ति होंय। जो सहज होय बुही सरल होय। याही कारन सौं लोकगीत वाद्य, नृत्त, नृत्य आदि तत्वन सौं अलग नांय होंय। लोकगीतन की लय के संग नृत्त-नृत्य-वाद्य हू चलैं हैं।



ब्रज में विविध औसरन पै गाये जाबे वारे लोकगीत

-डॉ. विष्णुदत्त शर्मा

ब्रज में विविध औसरन पै गोविवे वारे मधुर ब्रज लोकगीत मिलैं हैं । ब्रज की सामाजिक अरु सांस्कृतिक रीति-रिवाजन मांहिं ,ब्रज के लोकोत्सवन मांहिं अरु ब्रज के लोकपर्वन के औसर पै व विसेस रूप ते होरी एवं सामन के औसरन पै , बाल पर्व डंडा चौथ अरु बालक्रीड़ा के औसरन पै, ब्रज माहिं ब्रज लोकगीतन की छटा यत्र तत्र भरपूर मात्रा में देखिबे कूं मिलै । ब्रज के इन लोकगीतन के मधुर रस ते ब्रज संस्कृति भरपूर मात्रा मांहिं सराबोर है रही है । ब्रज मांहिं विसेस औसर पै वाके अनुकूलई गीत गाये जाँय। जनम ते लैकें मृत्यु तक के सिगरे सोलह संस्कारन मांहिं अरु विविध औसरन पै ब्रज के लोकगीत गाये जावें। या तरियों ते एक एक औसर पै अनेकन गीत गाये जाँय । ब्रज मांहिं विविध औसरन पै गाये जाबे वारे गीतन की कछु बानगी नीचे दई जा रही है -

1. बच्चा के जनम के औसर पै गाये जाबे वारे गीत :-

ब्रज लोक संस्कृति में सिसु के माता के गर्भ में आते ही बाके दोहन अवस्था कौ चित्रन ब्रज लोकगीतन में खूब आकर्सक ढंग ते कियौ गयौ है । जा तरियाँ ते फल ते पहलैं फूल आवै वाई तरियाँ ते मैया के गर्भ में बच्चा फूल की तरह आये लगै है । मैया के गर्भ में सिसु जैसे-जैसे बढ़िवे लगै वैसे-वैसे मैया कौ मन अलग-अलग चीजन नैं खाइवे कूँ करै । याकौ ग्यान नीचे लिखे ब्रज लोकगीत ते होय :-

पहलौ महीना लागिये वाकौ फूल गह्यौ फल लागिये,
ए वाई दूजौ महीना जब लागिए,
राजे तीजौ महीना जब लागिए वाको खीर खांड़ मन लाइयौ ।

*　　*　　*

जब राजे चौथौ महीना जब लागिए,
ए वाई पांचौ महीना जब लागिए,
ए वाकू कौल के आम मगाइए ।

*　　*　　*

राजे छट्यौ महीना जब लागिए,
ए वाइ सतयौ महीना जब लागिए,
ए अपविस अपविस साधु पुजाउ,

राजे आठ्यौ महीना जब लागिए,
ए मैं अपविस अपविस महल झराऊ
ए बाई नौऔ महीना जब लागिए,
ए मैं अपविस अपविस दाइ बुलाऊ
तो होरल जानऊ ।

छठी के औसर पै लोकगीतन के बोलन ते संस्कारन के विधि-विधान कौ पूरौ पतौ लगि जाय । जनम के छटवे दिना बच्चा की छटी पूजी जाय । या औसर पै भूआ नए जन्मे भतीजे की आँखिन मांहिं काजर आँजि कैं नेग लेय -

लैकें भतीजे कूं बैठी सहोदरो,
अब कछू देउ भौजाई ।
सौ लाख गउअर सवा लाख भैंसिया,
तौ हम करैं अंजाई ।

बच्चा को छठी पूजते समय मैया नवजात सिसु कूं गोदी में लैकैं देवी देवतान ते धन-सम्पत्ति की कामना करै। लोकगीतन में सीता अरु उर्मिला कौ स्मरन करैं :-

छठी पुजन्तार बहू आई सीता,
छठी पुजन्तार बहू आई उर्मिला,
छठी पुजन्तार कहा फल मांगे ,
अनु मांगे धनु मांगे ,अपने पुरखन कौ राज मांगे ।
बारौ झडूला गोद मांगै ।

छठी के औसर पैइ देवर ते पलौ सधायौ जाय । चरूऔ धराई,सौंतियो धराई सबके नेग दैने परैं तौ नवजात सिसु की मैया अपने देवर, ननद अरु सास कूं नेग न दैकें पति सौं अपने भईया,भैन अरु मैया कूं नेग दिवानौ चाहै:-

हम तौ अकेली सैंया सब न लुटाइ दीजौ ।
सासू जो आमैं सैंया द्वारे ते लौटाइ दीजौ ।
सासू कौ नेग मेरी अम्मा पै कराइ लीजौ ।
ननदी जो आमै सैंया उनहूं कूं लौटाइ दीजौ।
ननदी कौ नेग मेरी बहना पै कराइ लीजौ।
दिवरा जो आमै सैंया उनहूं कूं लौटाइ दीजौ।
दिवरा कौ नेग मेरे भइया पै कराइ लीजौ ।

सिसु के नामकरन संस्कार के दिना जच्चा के मैया-बाप अरु भैया 'छोछक' दैहैं । वा छोछक में आये उपहारनै देखि कैं जच्चा अपने पति तेऊ उपहार लायबे कूं कहै है तौ पति या तरियों उत्तर देय:-

ए धन पियरो बिरन पैते मांगि,हम पै मति मांगिए ,
खियरो भवज पैउ मांगि, लडुअरे माय पै ते मांगिए ।
पति की बातै सुनिकै भैया-भावज अरु मैया-बाप या तरियां ते कहैं :-

बेटी नित उठि जननौगी पूत,कहां ते लाऊं लाडुए ,
बी बी नित उठि जननौगी पूत,कहां ते लाऊं पीजरी
बेटी नित उठि जननौगी पूत,कहां ते लाऊं खीचरी,
भैना नित उठि जननौगी पूत,कहां ते लाऊं पीयरी ।[1]

2.ब्याह के औसर पै गाये जावे वारे ब्रज लोकगीत

ब्याह के औसर पै समय-समय पै विविध लोकगीत गाये जाँए। तिलक-सगाई, पीरी चिट्ठी , देहरी पूजन, घूरौ पूजन, चूर्हौ चाकू पूजन, माड्यौ गाड़िवे, नगौरी तोरिवे, भात पहरायवे, चाक वाल पूजिवे, घुड़चढ़ी, खोरिया, बरोठी, भामर परायवे, पलकाचार, कुंवर कलेऊ, दूधवाटी, पड़ार, गारी, वंदनवार, म्हौं मड़ई, विदा, दई देवता और चूल्हौ पूजन के न्यारे न्यारे ब्रज लोकगीत गाये जात हैं। इन गीतन कौं जब यथा औसरन पै गायौ जाए तौ ब्याह में रंग अरु समा बँध जाए । ब्याह कौं निस्चै अरु दैमारो सुरु हैवेऊ सबन ते पैलें भैन अपने भइया के घर भात नौतवे जाय । भात नौतवे के औसर पै नीचे लिखौ गीत गायौ जाय-

वीर बहन चली ए वीर के
 भेलितु बरध लदाइ,
राजा भातई ।
 जबरे बहिन तालन गई,
और सूखे ताल हिलोरे लेइ,
जबरे बहिन तोमन गई,
हरी हरी दूब हर्याय
राजा भातई ।-----

ब्याह की तिथि हौले-हौले पास आय जाय अरु भैया भैन के घर लाला-लाली के ब्याह के एक दिना पैलें भात लैकें पौंचे । भैया कूं भात में ससुरारियान कूं चीजन नें लुटते देखिके भैन अपने ससुरार वारेन कूं उलाहनौ देती भई कहै-

उसरौ रे उसरौ,
 देवर जेठ,
भैया लुट्यौ ए मेरौ भातई ।

भैना के भात पहराबे के बाद भैन अपने भैया ते बांह पसार कैं मिलै । या औसर पैक गीत गायौ जाय । बू गीत या प्रकार है -

"और भैना नैं भैया पसारिये,
और वीरन गये ऐं समाय ,
भैया धीर जिठानी बोलै बोलने,
सोई भड्ड पहरायौ तोय भात ।"

ब्याह ते पैलें लड़ी कूं उबटन ते न्हवायौ जाय । या औसर पै ब्रज लोकगीत गायौ जाय जो या तरियां है-

काहे केसा उबटनौ ? काहे कौ तेल फुलेल,

करहु लड़लड़ी कौ उयटनौ,
कांसे कौ येला उयटनौ,सरसौं कौ तेल फुलेल। करहु.....
योलौ लड़लड़ी के ताउए, यायाए,
जिआ सुख देखें हो आइ । करहुं ......

उवटन के पाछैं लाड़ो कूं जल सौं स्नान करायौ जाय । या औसर पै गाये जाये यारौ गीत या प्रकार ते है –

याया नें सागर खुदायौ ,पार यँधाई ए ताऊ,
सागर की तौ पार यँधाई ऐ ।
याकी दादी के भरत कहार
कुमारि अन्हवाइयै।

यरात के रवाना होवे ते पैलै दूल्हा घोड़ी पै चढ़िकैं जाय है। वाय निकासी कहैं हैं । या औसर पै दूल्हौ चाँय कारौ होय या गोरौ यू मैय्या के तांई तौ जगत कौ उजारौ लगै–

ठाड़ौ रह दूल्हा,तेरी माइल योलै
खोलौ खाई देउ बधाई
दूल्हा ऐ देखन आई लुगाई ।
धनियौ उम्हायौ दूल्हा यागन मोरे,
हासुली मेरी चाल सुहाई,
लोग कहैं दूल्ह कारौई कारौ,
माइ कहै मेरौ जगत उजारौ ।

व्रज माँहिं यरात जीमते समै लाड़ी के घर की यैयरयानी या औसर पै रसभरी गारी गामें । इन गारीन के यिना यरात जीमवे में रंग अरु रस नाँय आवै । सबते पैलैं मीठी धुनवारी गारी या तरियाँ ते गाई जाय हैं–

दारी समधिन न्हाइवे कूं चाली,
संग लिये गिरधारी..... रंग यरसैगौ ।
हाँ हाँ राम रंग यरसैगौ ।
रंग यरसै कछु इमरत यरसै। हाँ हाँ....
हारि उतारि तीर पै धरि दियौ,रखि दई हंसुली सारी ।
रंग यरसैगौ ....
चीर उतारि घाट पै धरि दिये ,जल विच निपट उघारी ।
रंग यरसैगौ-----
ताक लगाय कुंज विच यैठे,लै भागे गिरधारी
रंग यरसैगौ-----
हमरौ चीर हमें देऔ कान्हा,मरीं लाज की मारी ।
रंग यरसैगौ-----
तुम्हरौ चीर जवई देंय प्यारी, जल सौं है जाऔ न्यारी
रंग यरसैगौ----
जल सौं जय हम न्यारे होंगे, आप हंसौगे दै तारी

वेटी नित उठि जनमौगी पूत,कहांते लांऊ लाडुए ,
वी वी नित उठि जनमौगी पूत,कहां ते लांऊ पीअरी
वेटी नित उठि जनमोगी पूत,कहां ते लाऊं खीचरी,
भैना नित उठि जनमौगी पूत,कहां ते लाऊं पीयरी ।'

2.व्याह के औसर पै गाये जावे वारे ब्रज लोकगीत

व्याह के औसर पै समय-समय पै विविध लोकगीत गाये जाँए। तिलक-सगाई, पीरी चिट्ठी , देहरी पूजन, घूरौ पूजन, वूढ़ौ वावू पूजन, माढ्यो गाढ़िवे, मगौरी तोरिवे, भात पहरायवे, चाक वास पूजिवे, घुड़चढ़ी, खोरिया, वरोठी, भामर परायवे, पलकाचार, कुंवर कलेऊ, दूधावाती, वढ़ार, गारी, वंदनवार, म्हौ मड़ई, विदा, दई देवता और चूल्हौ पूजन के न्यारे न्यारे ब्रज लोकगीत गाये जात हैं। इन गीतन कौं जव यथा औसरन पै गायौ जाए तौ व्याह में रंग अरु समा बँध जाए । व्याह कौ निस्चै अरु तैयारी सुरू हैतेई सवन ते पैलें भैन अपने भइया के घर भात नौतबे जाय । भात नौतबे के औसर पै नीचे लिखौ गीत गायौ जाय-

वीर वहन चली ए वीर के
भेलिनु वरध लदाइ,
राजो भातई ।
जवरे वहिन तालन गई,
और सूखे ताल हिलोरे लेइ,
जवरे वहिन सीमन गई,
हरी हरी दूव हर्याय
राजा भातई । ------

व्याह की तिथि हौले-हौले पास आय जाय अरु भैया भैन के घर लाला-लाली के व्याह के एक दिना पैलें भात लैकें पौंचै । भैया कूं भात में ससुरारियान कूं चीजन नै लुटाते देखिकें भैन अपने ससुरार वारेन कूं उलाहनौ देती भई कहै-

उसरौ रे उसरौ,
देवर जेठ,
भौत लुट्यौ ए मेरौ भातई ।

भैया के भात पहरावे के वाद भैन अपने भैया ते वांह पसार कैं मिलै । वा औसर पैऊ गीत गायौ जाय । वू गीत या प्रकार है -

"और भैना नैं वैया पसारिये,
और वीरन गये एं समाय ,
भैया घौर जिठानी वोलै वोलने,
सोति भतु पहारायौ तोय भात । "

व्याह ते पैलें लाड़ी कूं उवटन ते न्हवायौ जाय । या औसर पै ब्रज लोकगीत गायौ जाय जो या तरियाँ है-

काये येला उवटनौ ? काये कौ तेल फुलेल,

करहु लड़लड़ी कौ उबटनौ,
कांसे कौ वेला उबटनौ,सरसौं कौ तेल फुलेल। करहु.....
योलौ लड़लड़ी के ताउए, बाबाए,
जिआ सुख देखें हो आइ । करहुं ......

उबटन के पाछैं लाड़ी कूं जल सौं स्नान करायौ जाय । या औसर पै गाये जावे वारौ गीत या प्रकार ते है –

बाबा नें सागर खुदायौ ,पार बँधाई ए ताऊ,
सागर की तौ पार बँधाई ऐ ।
वाकी दादी के भरत कहार
कुमारि अन्हवाइयै।

बरात के रवाना होवे ते पैलै दूल्हा घोड़ी पै चढ़िकैं जाय है। वाय निकासी कहैं हैं । या औसर पै दूल्हौ चाँय कारौ होय या गोरौ बू मैयूया के तांईं तौ जगत कौ उजारौ लगै-

ठाड़ौ रह दूल्हा,तेरी माइल बोलै
खोलौ खाई देउ बधाई
दूल्हा ऐ देखन आई लुगाई ।
धनियौ उम्हायौ दूल्हा बागन मौरे,
हासुली मेरी चाल सुहाई,
लोग कहैं दूल्ह कारौई कारौ,
माइ कहै मेरौ जगत उजारौ ।

ब्रज मॉहिं बरात जीमते समै लाड़ी के घर की बैयरबानी या औसर पै रसभरी गारी गामें । इन गारीन के बिना बरात जीमवे में रंग अरु रस नाँय आवै । सबते पैलैं मीठी धुनवारी गारी या तरियाँ ते गाई जाय हैं-

दारी समधिन न्हाइवे कूं चाली,
संग लिये गिरधारी..... रंग बरसैगौ ।
हाॅ हाॅ राम रंग बरसैगौ ।
रंग बरसै कछु इमरत बरसै। हॉ हॉ....
हारि उतारि तीर पै धरि दियौ,रखि दई हंसुली सारी ।
रंग बरसैगौ ....
चीर उतारि घाट पै धरि दिये ,जल विच निपट उघारी ।
रंग बरसैगौ-----
ताक लगाय कुंज विच बैठे,लै भागे गिरधारी
रंग बरसैगौ-----
हमरौ चीर हमें देऔ कान्हा,मरीं लाज की मारी ।
रंग बरसैगौ-----
तुम्हरौ चीर जबई दैंय प्यारी, जल सौं है जाऔ न्यारी
रंग बरसैगौ----
जल सौं जब हम न्यारे हुंगे ,आप हंसौगे दै तारी

रंग बरसैगो-----
आप हँसैंगे सब ग्वाल हँसिंगे अरु हसेंगी ब्रजनारी
रंग बरसैगौ । हाँ हाँ राम रंग बरसैगौ ।

ब्रज की इन लोकगारीन माँहिं सबते ज्यादा लच्छ समधिन कूँ ई रख्यौ जाय -

समधिन है मोरी प्यारी,गोदी में खेलै भोला जती ।
सखियन के म्हारे प्राणपति ।
फूट्यौ नगाड़ौ,डूंडौ नदिया, वैठौ क्यों नहीं भोला जती ।
रूंड मुंड की माला वनाई,पैरी क्यों नहीं भोला जती ?

*   *   *

दारी समधिन निकरी दधि वेचन ,डोलै सौत सब गली गली ।
आगें मिल गये किसन कन्हैया,हाथ पकरि कै खेंची लली ।
छोड़ौ साजन वइयां मोरी ,मौरे हमारी चूरिया हरी ।
अव नाँय छोड़ूँ सजनी प्यारी,अव तू वस छैला के परी ।

जब बराती चलवे लगि जाँय तौ ब्रज की वनितान के तेवर देखतेई वनैं-

काहे उठि वैठे और लै लेंते ।
लड्डू लै लेंते कचौरी लै लेंते
त्यारी भैना कूँ वैने धरि देंते ।
गोरी गोरी भुआ तिहारी
हमरे सजन के नाम करि देंते ।

ब्रज माँहिं फेरान के पाछे दुल्हन की भौजाई के हाथन ते दूधावाती कराई जाय। या औसर पै दूल्हा के म्हौं में वतासौ दैकै वैयरवानी या लोकगीतै गामें-

खा मेरे दूल्हा दूधा वाती
भूकों कौ जायौ है लपलप खाय गयौ ।
अघाई की जाई जानैं चौंच न चोरी ।
छिनरी कौ जायौ है लपलप खाय गयौ ।....

ब्रज लोकगीतन में ब्याह के पाछें दुल्हनै वैयर नचामें हैं तौ वा औसर पै हू गीत गायौ जाए-
कहा नाचै कहा नाचै
जीउ चंग नाँय है,
जसरथ जोई नचामते चौं नाय ।
जीउ चंग नाय मेरौ मन चंग नाय ,
दिल्ली ते वैद वुलामते चौं नाऔं ,
रानी की नारी दिखावते चौं नाऔं ।

ब्याह के पाछे वधावे में दूल्हा-दुल्हन के सुखी सम्पन्न जीवन की कामना या औसर पै करी जाय-

आज दिन सौने कौ दूजौ महाराज ।
सौने कौ सव दिन रूपे की राति ,
सौने के कलस दीजौ भरवाइ । आज दिन....
पैलौ वधायौ ससुर घर आयौ,
सासुल ने लियौ करि गोद महाराज ।आज दिन.....

3. लोकोत्सवन पै गाये जाबे वारे ब्रज लोकगीत –

ब्रज माँहिं लोकोत्सवन की धूम मची रहै है । रितुन के छ चकरन के अनुसार ब्रज में लोकोत्सवऊ व्यवस्थित रूप ते मनाये जाँय ।"बरसा रितु" के त्यौहारन माँहि झूलोत्सव,हरियाली मावस,हरियाली तीज,बल्देव जन्मोत्सव, पंचतीर्थ,नाग पांचै,जन्म आठें, गणेश चौथ,राखी आदि प्रमुख माने जाँय ।"ग्रीस्म रितु" के उत्सवन में अक्षय तृतीया,जानकी नौमी,नृसिंह चतुर्दसी,वैशाख पूनौ,वनविहार ,जल विहार,गंगा दशहरा,निर्जला ग्यारस,वटपूजन, शीतला कौ मेला,रथ यात्रा,भडरिया नौमी,देवसयनी ग्यारस,व्यास पूनौ आदि प्रमुख हैं ।"शरदोत्सव" में सांझी,टेसू,नवरात्रा, दसहरा,रामलीला, देवोठान(देवउठनी ग्यारस) आदि प्रमुख उत्सव माने जाँय । "वसंत रितु" में वसन्तोत्सव,होरी,फूलडोल,सीतलामाता पूजन,गणगौर देवीपूजन(कैलादेवी आदि) उत्सव प्रमुख हैं ।इन लोकोत्सवन पै ब्रज में लोकगीत अलग-अलग गाये जाँय हैं ।इन उत्सवन के औसर पै गाये जाबे वारे कछु ब्रज लोकगीत नीचे दिये गये हैं जो देखवे जोग हैं–

बरसा रितु के गीत – सामन ब्रज के नर-नारी अरु वालक-वालिकान के लये परमानन्द कौ लोकोत्सव है । झूला झूलती भई ब्रजनारी जा गत ते सामन कौ आह्वान करैं –

'कच्चे नीम की निबौरी सामन जल्दी अइयौरे ।
उह्नी पार मेरौ बटुआ भीजै पह्नी पार मेरौ वीर जी।'

सामन की रिमझिम फुहारन में बागन मे झूला डारिकै ब्रज की नारी झूलान पै पैंग बढ़ाती भई सुरीले कंठ ते गामें हैं–

सामन आयौ,सुघड़ सुहावनौजी एजी कोई आई है अजव वहार । सावन आयौ. ..
झूला तौ झूलें सखियां वाग मे जी, एजी कोई गावें गीत मल्हार । सावन आयौ.... .
नैन्हीं नैन्हीं बुंदियाँ देख्यौ झर लग्यौ जी, एजी कोई बरसत मूसलधार । सावन आयौ..
पटुली पकड़ झोटा दैरहे जी, एजी कोई झुकि झुकि कृष्णकुमार । सावन आयौ . ..
पिहु पिहु पपीहा देखौ करि रह्यौ जी, एजी कोई डरपै कामिनी नार । सावन आयौ..

सामन की हरियाली तीज के औसर पै ये लोकगीत गायौ जावै है–

'सामन आयौ सो अम्मा मेरी सुहामनौ जी,
एजी कोई आइऐं हरियाली तीज.......'

रिमझिम फुहारन के उत्साह में झूला झूलती ब्रजनारी गामें हैं–

अरी भैना ,घटा तौ उठी है घनघोर,सामन में चमकै बीजुरी जी ।
कारे कजरारे री बदरा झुकि रहे,अरी भैंना उमड़ि घुमड़ि चंहु ओर । सामन में ....
झूला झूलती री भैना डर लगै अरी भैंना पिया गये परदेस । सामन में . ..

ब्रज मे छात्रन कौ उत्सव डंडा चौथ (गणेश चतुर्थी) भौत मनमोहक होय। या औसर पै पंडित जो छात्रन नैं लैकैं बुलायवे वारे के घर जाँय हैं। या औसर पै गाये जावे वारे लोकगीतन की बानगी या तरियाँ ते है–

" भादौं चौथ चांदनी सोय । गननायक को पूजा होय ।
माता री तू खोल किवार । पंडित आये तेरे द्वार ।
इन पंडित कौ आदर देउ । चंदन चौकी आसन देउ ।
रहली फूली माता फिरै । सहस बधाई मंगल करै ।"

चट्टा जब भौत देर तक गाते रहैं अरु वाऊ घर वारे छात्रन कूं मिठाई नाँय बांटें तौ वे फिर गायबे लगें–

उठ उठरी मोहन की माँ । भीतर ते तू बाहर आ ।
गढ़े गढ़ाये रुपया ला । पंडित जी कूं वागो ला ।
मिसरानी कूं तीहर ला। चट्टन कूं मिठाई ला ।
चट्टा दिंगे बड़े असीस । बेटा होंगे नौसै तीस ।
आयौ बसंत कै सुन चकपैया । अब का देखौ लाखौ रुपइया ।

शरद रितु के उत्सवन के गीत–सरद रितु के उत्सवन में सांझी,टेसू ,दिवारी,देवोठान,मकरसंक्रान्ति के उत्सव प्रमुख हैं। इन उत्सवन में अलग–अलग लोकगीत गाये जाँय । सांझी कूं नन्हीं कुमारी गोबर ते बनावें । वा औसर पै सुरीले कंठ ते गावें–

सांझी भैना री,का ओढ़ैगी,का पहिरैगी
काहे कौ सीस गुंथावैगी ?
मैं तौ सालू ओढ़ूंगी,मिसरू पहिरुंगी
मोतियन की मांग भराऊंगी ।

टेसू की रचनाऊ ब्रज बालक याई समै करैं अरु वाय लैकैं घर–घर जायें अरु ई गीत गामें–

टेसूरा टेसूरा घंटार बजइयौ,
दस नगरी दस गांम बसइयौ,
बस गये तीतर बस गये मोर,
सड़ी डुकरियाय लै गये चोर,
चोरनके घर खेती भई,
अब चोरन के आगि लगी,
वानें डुकरिया पजर मरी ।

दिवारी के औसर पै गोवर्द्धन पूजा होय । वा दिना वैयर या गीतै गावें–

सिरी गोवर्धन महाराज त्यारे माथे मुकुट विराज रयौ ।
तोपै पान चढ़ै तोपै फूल चढ़ै, तोपै चढ़ै दूध की धार 1 त्यारे माथे.....

देवोठान ग्यारस कूं ब्रजनारी बड़ी पवित्र भावना ते अपने घरन में गेरू अरु सफेदी ते चौक पूरैं। वा औसर पै देवतान कूं उठाते भये ब्रजनारी या गीतै गावैं –

"उठौ देवा ,बैठौ देवा ।अंगुरिया चटकाऔ रे देवा "

मकर संक्रान्ति कौ उत्सवऊ सरद रितु में मनायौ जाय । या दिन दान दैबे कौ महात्म है । या औसर पै गाये जाबे वारौ गीत है–

सब कोऊ दानी करि रहे दान । तुम कैसें बैठे जिजमान । हर गंगा---
मकर परब आवै इक बार। बरस दिना में बे त्यौहार । हर गंगा ---
देस दिवस अरु पात्र विचार । दीजै दान होय उद्धार । हर गंगा---

बसंत रितु एवं ग्रीस्म रितु के लोकोत्सवन के ब्रजगीत-बसंत रितु एवं ग्रीस्म रितु के त्यौहारन में होरी,देवी पूजन अरु गनगौर के उत्सव मुख्य हैं । बसंतोत्सव के बाद में होरी कौ त्यौहार मनायौ जाय । ब्रज की होरी सिगरे भारत में जानी जाय। नंदगाम अरु बरसाने की लठामार होरी देखिबे लायक होय । जा औसर पै साखी गाई जाय जाकौ नमूना या तरियाँ ते है-

चूदरिया रंग बोर गयौ,बो कान्हा बंसी वारौ ।
भरि पिचकारी मुख मारी, मोपे केसर गागर ढोरि गयौ । बो कान्हा....
वृंदावन की कुंज गलिन में, नथ दुलरीए तोरि गयौ । बो कान्हा....
गहवर बन और खोर सांकरी,दधि की मटकी फोर गयौ । बो कान्हा......
चंद सखी भजि बाल कृष्ण छवि चितवन में चित चोर गयौ । बो कान्हा....

ब्रज के होरी के गीतन में कृष्ण अरु गोपिन कौ हास, परिहास देखते ई बनै । होरी के औसर पै ब्रज के लोग-लुगाई ऐसें गावैं हैं-

होरी खेलन आयौ स्याम आज याय रंग में बोरौ री ।
कोरे कोरे कलस मंगाऔ रंग केसर घोरौ री ।
रंग बिरंगौ करौ आज ,कारे ते गोरौ री ।
हरे बांस की बंसुरिया,जाहि तोर मरोरौ री ।
चन्द्र सखी की यही बीनती,करै निहोरौ री ।
हा हा खाय परै जब पैंया ,तब याह छोरौ री ।

होरी के औसर पै गली-गली में जेई आवाज सुनाई देय है-

आज बिरज में होरी रे रसिया
होरी रे रसिया बरजोरी रे रसिया । आज बिरज में...

होरी की भइया दोज के औसर पै दौज पूजती भई ब्रज नारी सुर में सुर मिलाय कैं इकठौरी ह्वैकें गावें -

दौजरिया भल पूजियौ
दौज पूजत मेरौ मन हंसै,मन हंसै हियरा हंसै । दौजरिया भल.....

नौ रात्रान में ब्रजके नर-नारी कैलादेवी(करौली) के दर्सनन कूं उमड़ि पड़ैं । या औसर पै वे देवी की भक्तिभावना के गीतन के संग लांगुरिया जरूर गावैं -

1. देवी मैया के भवन में घुटरन खेलै लांगुरिया ।
2. दो दो जोगनी के बीच अकेलौ लांगुरिया ।
3. कैला मैय्या के जुड़ौ है दरबार लांगुरिया,चलौ तौ दर्सन कर आमें।
4. मैं मरूंगी जहर बिस खाय रे लंगुरिया मति फंसि जइयो काउ और ते ।
5. नसे में लांगुर आवेगौ,नेकु ड्यौढ़ी ड्यौढ़ी रहियौ ।

गनगौर कौ उत्सव ऊ ब्रज में धूम-धाम ते मनायौ जावै । गौरा पूजन के औसर पै ब्रज कुमारियां पूजन करती भई या तरियाँ ते गीत गावैं-

1. गौर ए गनगौर माता,खोल किवारी ,वाहर ठाड़ी तिहारी पूजन हारी,
   पूज पुजंतर वेटी का मांगै,अनु मांगै,धनु मांगै, भैया भतीजे मांगै ।
2. गदि लाई म्हारी गौर, छोटौ सौ खेलना ।

4. राष्ट्रीय उत्सवन के औसर पै गाये जावे वारे ब्रज लोकगीत -

ब्रज नारीन में 26 जनवरी अरु 15 अगस्त के राष्ट्रीय उत्सवन के औसर पै देसभक्ति की चेतना देखवे कूँ मिलै -

रे लांगुरिया दिन पन्द्रह अगस्त कौ आय गयौ,जा दिन देस भयौ आजाद ।
रे लांगुरिया सरदार भगतसिंह ,आजाद और गॉधी,सुभाप लाजपत नें दै दिये अपने प्रान । लांगुरिया....

26 जनवरी कूं जो चेतना ब्रजवासिन में मिलै है वू या गीत में है-

" मैं तौ जाउगी देखवे आज,छब्बीस जनवरी दिल्ली कूँ। "

जा प्रकार ते विविध औसरन पै गाये जावे वारे लोकगीतन की ब्रज में भरमार है । इन ब्रज लोकगीतन कौ ब्रज में इतेक अथाह भंडार है कि याकी कोई सीमा नॉय । हरेक औसर पै सुरीले अरु मधुर लोकगीत ब्रज में गाये जावैं । ब्रज में इन लोकगीतन कौ आनंद लैकें ब्रज नर नारी परमानंद कौ अनुभव करते भये अपनों जीवन बितामें । जाई कारन ब्रजवासीन के जीवन के सम्बन्ध में यही कहनौ उचित है -

ई तौ न्यारौ है ब्रजधाम ,यहां की न्यारी हैं ब्रज नार ।
यहां पै होमें न्यारे पर्व,विनमें गामें न्यारे गीत ॥

-'विनायक' 408 वरकत नगर,टोंक फाटक,जयपुर



लोकगीतन में न्यारे-न्यारे औसरन के अनुरूप अपनौ विसेस स्वर-वितान
अरु स्वर-विस्तार होय। विसेस लय, ध्वनि अरु आरोह-अवरोह होय।



लोक-जीवन में संस्कार-गीतन कौ महत्व

-श्री भगवानदास मकरंद

लोकगीत सौं आशय लोकजीवन ते गहराई तक जुड़े भये उन गीतन सौं लगायौ जावै जो या जीवन की हरेक सांस के च्छो अर हमसफर कहे जावैं ।इन्हीं लोकगीतन के माध्यम सौं हम वा समाज में प्रचलित मान्यता,विश्वास,परंपरा अरु संस्कृति । ज्ञान कर सकें हैं ।लोकगीत समाज के इतने अभिन्न अंग होयें कि वा समाज की संस्कृति कूं विना लोकगीतन के समझवौ सम्भव नाँय तौ दुरूह अवश्य है ।लोकगीत एक पीढ़ी सौं दूसरी पीढ़ी कूँ स्थानान्तरित होते भये अपने गरभ में लोकसंस्कृति । अमूल्य धरोहर ऐ संजोये भये निरन्तर चलते रहैं ।

इन्हीं लोकगीतन कौ एक रूप है-संस्कार गीत।षोड़श संस्कारन के समै मंगल उत्सवन पै गाये जावे वारे गीत संस्कार त कहलामें ।ब्रज अंचल के समूचे जीवन में छोटे ते छोटे उत्सवन में हू महिलान द्वारा जे संस्कार गीत गाये जामैं ।जे संस्कार ात अपने संग समाज कूँ दियौ जावे वारौ अमोलक उपदेस हू राखैं ।जिन समाजोपयोगी बातन कूँ बड़े-बड़े धार्मिक ग्रंथ रु वैरागी हू नाँय समझा सकैं वाई संदेस कूँ जे गीत बड़े ही सहज भाव सौं कह जाँय -

सुमर साहिब कौ नाम जिन्नें तोय जनम दियौ ,
अन्ध गोप दस मास गर्भ में राख लियौ ।
साहिब मेरी बन्ध छुड़ाय दै मैं तेरौ भजन करूँ ,
आयौ है मुट्ठी बाँध,हाथ पसार दियौ ।
लागी है कलियुग ब्यार हरिनाम बिसार दियौ ,
सुमर साहिब कौ नाम जिन्नें तोय जनम दियौ ।

जि संस्कार गीत हरेक उत्सव कौ पहलौ गीत मानौ जावै ।समाज के सामाजिक मूल्य अरु मान्यतान कौ आभास इन संस्कार गीतन में पायौ जावै है। संस्कारगीतन द्वारा दिये जाये वारे संदेस की एक और झलक देखौ -

जे घर कन्या होय अछूतौ नाँय खइयौ।
जे घर लक्ष्मी होय उधारौ नाँय लइयौ।
जे घर दीपक होय अंधेरौ नाँय रहियौ।
जे घर गोरस होय तौ रूखौ नाँय खइयौ।
जे घर घोड़ी होय तौ पैदल नाँय जइयौ।
जे घर भैया होय अकेलौ नाँय चलियौ।

जिन संस्कार गीतन कौ अपने आप में मनोरंजनात्मक महत्व कम नाँय ।मंगल समै पै समयानुकूल रिट

...न इन गीतन में ग्राम देखबे कूँ मिलै है । एक स्थान पै महिला गा उठैं -

राजा तुम चढ़ जइयों अटरिया सिगरौ इंसाफ करूंगी
तुम्हारी दाई आयेगी,वोआके होरल गनायेगी
तुम्हारी माई आयेगी वो आके चरुआ चढ़ायेगी
वो अपनौ नेग माँगेगी मैं उनके हाथ जोड़ूँगी
राजा इतनौ न मानें मेरौ कहनौ मैं उण्डान सौं बात करूंगी।

सच पूछौ तो नीरस समाज में सरसता पैदा करबे कौ काज जे संस्कारगीत ई करैं हैं। मंगल औसर पै स्वस्थ मजाकन की परंपरा हू इन्हीं संस्कारगीतन में पाई जावै । भोजन के समै गाई जाबे वारी ज्यौनार कौ अपनौ अलग ई स्थान है-

काहे उठ बैठे और ले लेते
लड्डू लै लेते कचौड़ी लै लेते
अपनी मैया कौ मोल कर देते
अपनी बहिना कौ मोल कर देते
काहे उठ बैठे और लै लेते।

ब्याह के समै पक्ष प्रतिपक्ष की बैयरन द्वारा अपने यहाँ आये वारे रिस्तेदारन कूँ,बरातीन कूँ दई जाबे वारी गारी हू सरसता की पराकाष्ठा मानूं छींच जावैं । बैयरबानीन के मौंहड़ेन सौं सरस गारीऐं सुनकें सिगरौ वातावरन रससिक्त है जावै। हरेक आदमी बिना बुरौ माने जिन गारीन कूँ बड़े चाव ते सुनतौ चाहौ जावै है । गारीन के गाये बिना ब्याह बिरौद सूनौ-सूनौ सौ लगबे लग जावै है । प्राय: एक झुण्ड में औरतें रिस्तेदारन कौ नाम लै लैकें गारी गायबे लग जावैं हैं -

'रमेश की मैया नें खसम करौ पै, भुलन राम हमारौ रंग बरसैगौ।'

इन्हीं हिठोलिनै लाला कन्हैया सौं जोर कै हू कहौ जावै-

मुकुट धर सांवरे रे लाला दो बापन कौ जायौ
एक बाप मथुरा बसै दूजौ गोकुल गाम
बहन तुम्हारी सुभद्रा कहियै अर्जुन संग सिधारी, रंग बरसैगौ
बुआ तुम्हारी कुन्ती कहिए बयारी नें लाला जायौ, रंग बरसैगौ।

संस्कार गीतन कौ सम्बन्ध अधिकतर धार्मिक भावनान ते जुड़ौ भयौ पायौ जावै है। मंगल समै पै अपने आराध्य देव कौ नाम लैबौ मंगल कौ प्रतीक समझौ जावै है। जन्म के समै मन्त्रोच्चारण अरु देवतान की स्तुति अरु नाम स्मरण के समान ई संस्कार गीतन द्वारा या कमी की सहज भाव में पूर्ति है जावै-

गोरे गोरे गाल हैं घूंघर वारे बाल हैं
तारकसी कौ झगुला पहरै ऐसे नन्दलाल हैं
अरे राम आए अयोध्या आनन्द भये माई
राजा दशरथ के चारों बेटा, चारौं बैठो अथाई-

यही नाहीं सभी प्रकार के देवी देवतान कौ पूजन-वन्दन हू इन संस्कार गीतन के माध्यम ते ई सम्भव है। लुप्त प्राय: देवी-देवतान कौ वन्दन अरु अस्तित्व पुराने समै ते ई संस्कार गीतन के माध्यम ते ई सम्भव है सकै है। दई-देवतान की कृपा-पात्रता लगातार पायबे की आस्था छिपी रहवै-

1. सुमर साहिब कौ नाम जिन्नें तोय जनम दियौ।
2. ए मैं ठाड़ी वन्दन तेरी ओट जामें प्रेमराज रम रह्यौ।

3. ऊँचे से खेरे भुमिया बसैरे।
4. कौन तेरी डार नवाइये चामुण्डा माय।
5. कीकरियां झक झालरीं वहां सैयद कौ थान।
6. अऊतम की इतनौ लै मुकुट निकरौ।
7. भैरौं के पामन घूघरा कौई रुन झुन रुन झुन होय।

इन संस्कार गीतन कौ अपनौ सामाजिक महत्व हू भुलायौ नाँय जा सकै। परिवार कूँ प्रत्येक औसर पै समाज सौं जोड़े रखवौ इनकौ मूल उद्देश्य है। जीवन के हरेक औसर पै समाज की भागीदारी वसुधैव कुटुम्यकम् की भावना कूँ प्रदर्शित करै है। काऊ के हू घर पै मंगलकार्य की सूचना लगते ई समवेत स्वर में औरतन कौ संगीत प्रारम्भ है जावै। इन संस्कार उत्सवन के माध्यम सौं समाज कूँ अपने आप सौं जोड़े रखवे कौ अभूतपूर्व कार्य सिद्ध है जावै है।

गर्भावस्था में शिशु हैवे पै ई अठमासा पूजवे के नाम पै पुत्र जन्म की पूर्व सूचना समाज कूँ दै दई जावै है। या तरह समाज परिवार की हरेक धड़कन कौ साच्छी बन जावै है। ब्रजांचल में अधिकतर अठमासौई पूजौ जावै है। याकूँ सीमन्तोन्नयन हू कह्यौ जावै।

अन्त में जिई कहनौ परैगौ कै लोकजीवन में संस्कार-गीतन कौ महत्व बतानौ सूरज कूँ दीपक दिखावै के समान है। ऐसौ कौन सौ कौनौ है जहाँ पै संस्कार गीत की पैठ नाँय?

पर आज के पाश्चात्य सभ्यता के अन्धानुकरण के जा युग में नई लेडीज इन संस्कार गीतन कूँ भूलती जाय रही हैं। आज फिल्मी गीतन के हा हुल्लड़ अरु डिस्को की धूम धड़क में संस्कार गीतन कूँ गावे अरु सुनवे वारौ मुस्किल ई मिलै। ब्रज अंचल में जरूर इन गीतन कौ अस्तित्व जीवित है।

आज इन संस्कारगीतन के संरक्षण अरु संवर्धन की परम आवश्यकता है वरना जा आपाधापी के युग में हमारे लोक-रंजन के बहुआयामी परिदृश्य की जि धरोहर धीरे-धीरे समूल नष्ट है जावैगी।

-कीर्तनिया निवास
गोविन्द मौहल्ला ,कामां
(भरतपुर)





ब्रज लोकगीत (विशेष सन्दर्भ - विवाह गीत)

-श्रीमती इन्दिरा त्रिपाठी

शीरी जुवान के गर्व सौं गर्वित फारसी कौ गरूर चूर करबै वारी , ब्रज गलीन में सुनी जायबे वारी बोली "माय री माय गैल सांकरी पगन मै कांकरी गड़तु हैं" की मधुराई नें हिन्दू, मुसलमान, विद्वान अरु साधारन जनता कौ मन समान रूप सौं मोह्यौ है।

ब्रज भाषा के परस सौं, सरस भई कवि बानी ।
बोलन में मुखसुख अमित, सकल गुननि की खानि ।।

जो ब्रज भाषा उत्तरी भारत के अनेक प्रान्तन में पढ़ी समझी जाय अरु ब्रज अंचल तथा आसपास के छेत्रन में बोली जाय तथा जाकौ साहित्य अति समृद्ध है जासौं हमारौ पुरानौ सम्वन्ध है, यापै हमें गर्व है। अवधी अंचल में पले बढ़े राम के अनन्य भक्त संत तुलसीदास पैऊ ब्रजभाषा नें ऐसौ जादू डारौ कि कवितावली, विनयपत्रिका, कृष्ण गीतावली की रचना जाई भासा में कीनी।

भक्तिकाल सौं आज तांई साहित्यकारन माँय ब्रजभाषा काव्य कौ सूरज चमकि रह्यौ है । भक्ति अरु रीति काल में तौ याकौ तेज अति प्रखर हो । भरतेन्दु काल अरु आधुनिक काल में ऊँ उत्तम कविता के दर्सन होंय, पै प्रेस की सुविधा सौं खड़ी बोली नाना विधान सूँ ऐसी छाय गई कि जाके तेज पै एक परत सी परि गई ।

कृष्णाराधना तथा ब्रजभाषा साहित्य सौं हमारे प्रान्त कौ पुरानौ सम्वन्ध है । मीरा, पदमाकार, बिहारी के राजस्थान में ब्रजभाषा की कुम्हलाई वल्लरी कौ सींचिबे कौ प्रंससनीय जतन राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी दस बरसन सौं कर रही है। साहित्यिक काव्यधारा के समानान्तर लोकगीत की सरिताऊ लहराती इठलाती प्रवाहित है रई है। इन गीतन में जनमानस की सहज भावना अभिव्यक्त होय, देसकाल के प्रति प्रतिक्रिया दिखाई परै याते इनमें ठहराव नॉय आवै, ताजगी बनी रहै।

साहित्य समाज कौ दरपन कह्यौ गयौ है। ऊँचे साहित्य की रचना तौ सायास होय है। पै लोकगीतन के दर्पन में समाज कौ जो रूप उजागर होय यामें ईमानदारी होय। लोकगीत की परिभाषा कछु जा प्रकार करी जाय सकै - ' लोकगीत उन लोगन के जीवन की अनायास प्रवाहात्मक (Spontaneous) अभिव्यक्ति है जो औपचारिक सिच्छा औ उच्च वर्ग की सभ्यता सौं दूर हैं। जे गीत मौखिक परम्परा की अमूल्य धरोहर हैं। इनके रचनाकार एक या अनेक है सकैं तथा ग्यात औ अग्यात हू है सकैं। काऊ सामाजिक औसर या सामूहिक औसर या सामूहिक कामकाज पै समय अनुसार, मन के भावन के हिसाब सूँ पांत दर पांत जे गीत धुन ताल लय में बँधे भये जुरते चले जायँ ।

लोकगीतन की भासा पै अंचल विसेस की भासा सो आधार रूप सौं होय-यानी कोई मानक भासा नांय होय। परौसी नगर प्रान्तन की बोलीन कौ भी प्रभाव होय। ब्याह के बाद नारियाँ अपनी ससुराल की नगरी में जायँ जा तारियाँ गीतन कौ

आदान-प्रदान बड़ी दूर-दूर तक चल्यौ करै। गीतन में माधुर्य, वाक्‌चातुरी, चुटीलो व्यंग अरु चलती धुन होय तौ वहू की नगरी कौ गीत ससुराल की नगरी में प्रचलित है जाय। इन गीतन माँय क्षेपक कौ आक्षेप नाँय लग सकै-इनके रचयिता तौ लोक है।

लोकगीतन की बिसैबस्तु अनगिनत हैं। मानव के सबई कार्यकलाप, धरती पै पाई जावे वारी सबई वस्तुन सौं लोकगीत सरोकार राखैं। इनमें पुरानन के सन्दर्भ के देवी देवतान के गीत जैसे दुर्गा के अनेक सरूप सिबजी, गनेस, राम, कृस्न की स्तुति, लीलान कौ बरनन कियौ जाय। मानव के जनम सौं लैकैं अन्तिम समै तक सोरह संस्कारन कों भी लोकगीत समेटे भये हैं।

मनोरंजन के गीत हूँ अनेक रूपन मायँ सुनिबे कूँ मिलैं। समसामयिक समस्यान की ओर हू लोकगीत बड़े सजग रहे हैं। गुलामी बिरोधी देस भक्ति गीत, स्वदेसी कौ समर्थन, दंगा, महँगाई, दहेज, राजनीति सवन पै बिना लाग लपेट समर्थन अथवा कटाक्ष कियौ जाय। तदनुसार अनेक रसन की अनुभूति अनायास है जाय। जैसे भजनन माँय सान्त रस, राम-कृष्ण की बाल लीलान में वात्सल्य रस, पुत्र जन्म, छठी, कठुला, पालना, मुंडन, छेदन आदि औसर गीतन में वात्सल्य मिश्रित गर्व की अभिव्यक्ति दिखाई परै। याही तरियाँ रासलीला, पनघट लीला, मनिहारी, लिलहारी लीला में सिंगार रस कौ संजोग रूप तथा राम सीता की फुलवारी लीला माँय अति सुन्दर संयत सिंगार रस देखिबे कूँ मिलै। कृस्न के मथुरा गमन माँय वियोग सिंगार के दरसन होंय। खेल गीत गारी, गीतन में व्यंग तथा हास्य रस कौ आनन्द मिलै। ब्याह गीतन में हास्य-व्यंग, सिंगार तथा विदागीतन माँय करुन रस कौ बिसेस रूप सौं अनुभव होय।

इन गीतन में उपमा आदि अलंकार भी अनायास ही आ जायें।

यहाँ मैं विवाह गीतन की चर्चा करनौ चाहूँ हूँ-विसेस रूप सौं बेटी के ब्याह के। जनम संस्कार के पाछे ब्याह संस्कार ई सबसूँ ज्यादा महत्व राखै। ब्याह के गीतन मे लगन, सगाई, पीरी चिट्ठी, देहरी पूजन, चौक, भात नौतिबो, तेल, रतजगा, बन्नो, चाक पूजन, मढ़ा, भात पहिरबो, गारी, जौनार, भामर, विदा आदि खास हैं।

पुत्री के ब्याह के गीत बर ढूँढ़िये के प्रयासन सूँ सुरू होंयँ। बर के रूप-सरूप, सामाजिक प्रतिष्ठा, सम्पन्नता के मानदंड हू समयानुसार बदलते जाय रए हैं। कछु बानगी आगें प्रस्तुत है।

ब्याह की हर संगीत सभा की सुरूआत देवी देवतान के कम सूँ कम पाँच गीतन सौं होय। पैलौ गीत गनेसजी कौ होय, पाछे देवी अरु देवतान के।

बर ढूढ़न के एक पुराने गीत कौ नमूनौ देखौ। कुँआ सौं पानी खींचिये कों लोटा-डोर अरु खाइबे कों नमक अरु सत्तू लैकें चारों दिसान में बेटी के बाबा, ताऊ, पिता, भाई आदि जायँ तब कहूँ सन्तोस लायक, बेटी के जोग बर मिलै-

1. संभर सतुआ बाँधि कै झारी लीनी है हाथ बर ढूंढ़न बाबा चले(ताऊ, बाबुल, भइया, जीजा आदि)
   अग्गिम ढूंढ़ी पच्छिम ढूंढ़ी, तौ ढूंढ़ी है धुर गुजरात लाड़ो सरीखे बर ना मिले
   जाइ दिल्ली के बीच लालजी सरीखे बर पाइयो।
2. बर की सामाजिक हैसियत ऊँची होनी चइये-
   मेरे दादाजी ऐसो बर ढूंढ़िये जहँ सोनो तराजू में तौलिये
   कोयलिया बोलै बाग में, गजहस्ती झूमैं द्वार पै।
3. बर चतुर औ सुघर होय या लाड़ली बेटी की कामना (ताऊ, चाचा, भइया आदि)
   मड़ये के बीच लाड़ो नें केस सुखाये
   अरे बाबा चतुर बर ढूंढ़ौ सुघर बर ढूंढ़ौ
   दादी, चाची, ताई, अम्मा आदि, लेंगी कन्यादान॥ लाड़ो नें.......
4. आधुनिक मानदंडन के अनुसार बर बंगले कार वारौ होनौ चहिये

मेरी रुनक झुनक लाड़ो खेलौ गुड़िया
याया ऐसौ वर ढूंढ़ौ, ताऊ ऐसौ वर ढूंढ़ो, ऊँची डिग्री वारौ होय
ऊँची डिग्री वारौ होय यंगला मोटर वारौ होय। मेरी रुनक.......

इन गीतन के साथ-साथ रुकमनी औ सीता के स्वयंवर वारे गीत भी गाये जायँ-जहाँ कन्या नें ई वर पसन्द करि यगे हैं-

देखन हित याग वहार फुलवगिया राम पधारे
इत गये लखन रघुराई उत सिया सखिन संग आई
अरे छवि दोनों ओर अपार-फुलवगिया..........
इत सिया विरह की मारी गिरजा के भवन पधारी
सिर दियो चरन में डार.....फुलवगिया...........

सुहाग मांगन कार्जे गौरी मंदिर जानों अत्यंत महत्वपूरन है-

सिसुपाल कौ नौतो दीयो आय गये दल यौधि
रुकमिन चाली गौरी पूजन पूजन म्हा मिलगे भगवान॥
(और यहीं भगवान नें रुकमन कौ हरन करि लीनो)
''गौरा पार्वती के आगे सुहाग मांगन जइये''

सीता जी नें सूरज की उपासना भी कीनी है- सूरज देवता प्रसन्न हैं तथा वर मांगवे कूँ कह दियो है तौ सीता कहै है-

मैंनें मांगी कौसल्या सी सास ससुर राजा दसरथ से।
मैंनें वर मांगे सिरीराम दिवर छोटे लछिमन से।

याई योच येटी की माँ अपने पीहर भात नौंतवे जाय हैं जहां भाई यहन कौं सय प्रकार से सहायता कौ बचन देय पै भौजाई तौ यैठिवे की ऊ नायँ पूछै-

'भतैयन यहुत संकोच करी
ना मेरे मचिया ना मेरे पिढ़िया
तौ खूँटे पै यैठो लली।'

अब कुम्हार सौं यर्तन लानौ(चाक पूजन), मंडपारोपण तथा तेल की रसम होय। प्रश्नोत्तरी जैसे गीत मांय सात सुहागिन के पति के साथ नाम गाये जाँय और ये तेल चढ़ामें-

काहे कौ तेल फुलेल काहे की दो कलियाँ
कौन तो तेल चढ़ावै तो कौन की येलिनिया
चम्पा कौ तेल फुलेल चमेली की दो कलियाँ
बहू प्रेमा तेल चढ़ावैं प्रेमचंद येलिनियाँ।

मंडप के नीचे सब सम्बन्धी जुरैं अरु भातई भात पैरामें। येटी कौ मामा सामर्थ्य भर गहनों, वस्त्र, उपहार आदि लामें अरु सबकौ सत्कार करै। या औसर के गीतन में भाई की यढ़ि चढ़ि प्रसंसा कीनी जाय-

भतैया रेल, मोटर या हवाई जहाज में चढ़ि कैं आयो है।
कपड़ा इतै लायौ है जैसे यजाज कौ पूत है
गहनौ इतौ लायौ है जैसे सुनार कौ पत है

बेटी कौ सिंगार कियो जाय उबटन, स्नान, काजर, मेंहदी आदि औ सिंगार के गीत गाये जायें। अब बरात द्वारे पै आइ गई ए।

"सखि गाऔ मंगलाचार सजन द्वारे आये।"

जा पाछे बराती जीमन बैठें तौ मधुर सुर बारी विनोद भरी गारी गाई जायँ। ज्यौनार माँय व्यंजनन कौ बरनन अरु परोसिबे बारे पुरुषन की प्रसंसा कीनी जाय। षटरस व्यंजन सौं स्वादेन्द्रिय कों सुख मिलै, गारीन सूँ स्त्रवनेन्द्रियन कूँ आनंद प्राप्त होय। हास्य अरु व्यंग मधुर ताल धुन लय में परोसौ जाय- आनंद कौ पार नायँ रहै तबई तौ तुलसी दास नें रामचरित मानस माँय लिख्यौ है-

गारी मधुर सुर देहिं सुन्दरि व्यंग बचन सुनावहीं
भोजन करत सुर अति विलम्ब विनोद सुनि सुख पावहीं
जेंवत जो बढ़्यो अनंद सो मुख कोटि हूँ न परै कह्यो
अँचवाई दीन्हें पान गमने बास जँह जाकौ रह्यो।

गारी कौ नमूनौ देखौ-

गारी गावैं जनकपुर की नारी सुनिये सिरी रामजी लला
तुम्हरी माता कोसल्या सुनिये लला
जिन खीर खाय पूत जाये सुनौ सिरी रामजी लला
तुम्हरी बहना सुभद्रा सुनिये लला
जे अर्जुन संग सिधारी सुनौ सिरी रामजी लला
तुम्हरी भूआ कुन्ती सुनिये लला
जिन क्वारे करन सुत जाये सुनो सिरी रामजी लला।

जा गारी रचिबे बारी स्त्रियन नें बड़ी चतुराई सौं रामकृष्ण औतारन कौं एकमएक करि दीनौ है।

ब्रज में एक अति प्रचलित गारी कौ उल्लेख डा. रामकृष्ण शर्मा नें कीनों है जामें चीरहरण लीला कौ उपयोग समधिन के प्रसंग में कियौ गयौ है। जाई तरियाँ समधिन कौ दधि बेचन कूँ निकरिबौ अरु कन्हैया (या कन्या पक्ष के लोगों के नाम) द्वारा छेड़ियौ गायौ जाय। जे गारी भिन्न-भिन्न रूपन में उत्तर प्रदेस में ऊ गाई जाये। जैसे-

"दधि बेचन निकरी हो, फिरै छिनरी गलिन गलिन।"

ज्यौनार-

हौलें हौलें परसौ(कन्या पक्ष का पुरुष) मैलो न होय दुपट्टा रंग बरसैगौ-

याकौ उत्तर प्रदेश कौ रूप-

निहुरे निहुरे परसै, (कन्या पक्ष का व्यक्ति-लक्ष्मीदत्त)
" धोतिया मइलि जनि होय"

ज्योंनार पाछें मुख्य बराती अर्थात् वर के सगे सम्बन्धी रह जायें अरु पाणिग्रहण संस्कार तथा भामरें होयँ। पैली सूँ छठी भामर तक तौ बेटी बापई की-

औ-"सतई भामर हो, बेटी भई है पराई।"
-सीता सिरीपति फिरत भभरियाँ सखियन मंगल गाये। आजु मेरी सीतायै रघुबर ब्याहन आये।

ब्याह के सबई काम-काजन बीच बिदाई की संभावना कौ करुण अन्तर्प्रवाह जो दब्यौ रहै वू बिदाई के समै तेज धार बनि कै फूटि परै-

> काहे कों ब्याहीं बिदेस रे सुन बाबुल मेरे
> हम तो बबुल तेरे अंगना की चिरियां चुगत-चुगत उड़ि जावें रे सुन
> हम तो बबुल तेरे खूंटा की गइयाँ जित हाँकौ तित जावें रे सुन.....
> भइया को दीने हैं महल दुमहला हमको दियौ परदेस रे.......

जा औसर पै करुन रस कौ ऐसौ परिपाक होय कि सिगरेइ जनन की आंखिन में आंसू आय जावें।

इन विवाह गीतन की बड़ी विसेसता जे है कि संयुक्त परिवार औ कुटुम्ब के सबई सदस्यन कूं महत्व दियो जाय-बिनके नाम गिनाये जावें-नये तौर तरीकन में यह सब विलुप्त है रयो है।

ब्रज के इन ब्याह के लोक गीतन मांय जो बात ध्यान दैबे जोग है कि इनमें राम सीता कूं आदर्स जोड़ी मानी गई है। जाको कारन मर्यादा पुरुषोत्तम कौ आदर्स वैवाहिक जीवन है। श्री कृष्णा जी कूं एक पत्नी व्रत नायें बतायो है, सो जा मामले में ब्रजनारी बड़ी सजग जान परें। पुत्र के ब्याह में ऊ बारम्बार रघुबर बन्ने के गीत गाये जावें।

डी-90, कृष्णा मार्ग सिवाड़ एरिया,
बापू नगर, जयपुर
-302015





विवाह-संस्कार के औसर पै गाये जावे वारे ब्रज-लोकगीत

-श्री सर्वोत्तम त्रिवेदी 'लघु'

भारतीय हिन्दू जीवन पद्धति में मनुष्य के सोलह संस्कार किये जावें हैं। जन्म के पहले ते मरन के बाद तानू पुंसवन, पाणिग्रहन अरु उत्तरकर्म आदि संस्कारन मांहि, पानिग्रहन अर्थात् विवाह-संस्कार सबते बड़ौ अरु महत्वपूर्न संस्कार मानौ जाय है।

भौतिकवादी संसार भले ही याऐ 'अनिवार्य बुराई' मात्र कहै पन हमारे यहाँ तौ याए 'पितृ-ऋण' उतारिबे (पिताश्री नें जो हमकूँ जन्म दियौ है बाकौ कर्ज चुकायवे) कौ साधन मानौ जाय है। इतनौ ही नायँ तौ याए 'अम्बर पै रचौ भयौ स्वयंवर' अरु है आतमान कौ मेल मानौ जाय है।

ब्रज प्रदेस मे तौ बिसेसत: कांमा अंचल में तौ याए साक्षात कन्हैया जी कौ राधा-रुकमनी ते ब्याह ही मानौ जाय है।

यामें सगाई(तिलक) ते फेरा, बढ़ार अरु बिदायी तानूं बैयरबानी सैकरान लोकगीतन में गामें हैं कि जिनते या मंगलमय संस्कार कौ आनंद दुगुनौ-तिगुनौ है जावै है।

सगाई होयकैं छोरी की गोद भरैं तौ चौकी पै बैठबे कौ गीत, आरते कौ गीत अरु बन्ना-बन्नी गवें।

चौकी कौ गीत ऐसे गामें-

बोलो री वा खाती के लड़के कूँ, चौकी तौ लावै मेरे लाल कूँ।
चौकी तौ लावै मेरे चन्द्र बदन सिंह कूँ, गढ़ मथुरा के कारने।
बोलो री वा कुम्हार के लड़के कूँ, कुंभकरस तौ लावै मेरे लाल कूँ।

ऐसे बोलौ री, बोलौ री कहि कहि के पंडित के लड़का कूँ लगन सुनायवे/लिखायवे के तांई, बजाज के लड़का कूँ कपड़ा लायवे के तांई, सुनरा के कूँ गूंठी, हलवाई के कूँ लड़ुआ, कहार के कूँ डोला, पंसारी के कूँ मेंहदी लायवे के तांई कहि कहि कें ये गीत आगे बढ़ायौ जावै। यामें समधी के लड़का कूँ, बेटी तौ ब्याहवै मेरे लाल कूँ अरु है बजाज ल्यावै मेरी लाली कूँ हू गायौ जावै।

गोद भरते समै चन्द्र बदनियाँ कह्यो जावै। यामें मथुरा कूँ बड़ौ गढ़ कह्यौ गयौ है अरु यहां ते चौकी बनवायवे की मांग करैं हैं।

सगाई हैवे कै गोद भरिये के पीछे बहन बेटी आरती करैं तब ऐसें गावें-

झारे झमकेन बरसैगी मेह, तुम लाड़गढ़ी चौक
ल्यारी भुआ बहन करैगी आरती।

थैयाँ तौ पूछिंगे वात, वहना कहारे लादे औ आरतौ
लादी लादी ऐं मौहर पचास, रुपैया लादे डेड़ सौ॥
दीयौ दीयौ री जगदीस के पूत भलौ लादौ आरतौ ॥

यामें थैया कौ अर्थ वहन भुआ के सुसरारियान ते है अरु जगदीस वर/कन्या के पिता कौ प्रतीक नाम है।

वन्ना ऐसे हू गामें-

व्याहन जनकपुर आये। राम वरना वन आये॥
अपनी अयोध्या में सेरौ वँधामें सेरे की सोभा जनकपुर छाई राम, बरना....

या गीत में आगे सेहरे की जगह कुण्डल, माला, मुकुट, झामा आदि पहरवे धरायवे की अरु सोभा छायवे की बात जोरि- जोरि कें गीत कूँ आगे वढ़ामें। झामा लम्वी वण्डी जैसौ अरु सूथन, पजामा जैसौ होय है ॥

वन्नी की वानगी देखौ-

वन्नी वावा जी वाग लगाइयौ। वन्नी ताऊजी वाग लगाइयौ॥
वन्नी तुम विन सींचैगौ कौन, म्हारी हरियल वन की कोयली.
वावा हमते तौ छोटी हमरी वहन जी।
ई तो चकल्या चकल्या सींचैगौं वाग॥ म्हारी हरियल..................
ऊ तो आम पके नींवू रस रमे।
वावुल कासीफल कौ करौ नाँ साग॥ म्हारी हरियल.........

या लोकगीत में वाव ताऊ की जगह ताऊ चाचा, चाचा फूफा आदि नाम लै लै कै अरु फल-सब्जीन के नाम बदल बदल कै गीत कूँ आगै वढ़ायौ जावै है॥

छोरी के व्याह में लगन लिखी जाय तौ वन्नी/लाड़ी गवें। छोरा के व्याह में लगन आवै तौ घोड़ी-बन्ना गवें/दोनोंन में चौकी गवै। लगन लिखें तव ऐसे गामें-

एजी मेरे वावाजी लगन लिखाइयों। मेरे ताऊ जी लगन लिखाइयौं॥
मैं तोय पूछूँ रुकमनि लाड़ली, तेरे किस विध लम्वे-लम्वे केस
सुहागिन रुकमनि लाड़ली।
मेरी माता तौ केस पँछारियो। मेरे इस विध लम्वे-लम्वे केस॥ रुकमनि...
मैं तोय पूछूँ रुकमनि लाड़ली, तेरे किस विध मोटे मोटे नैन। सुहागन......
माँ मेरी कजरा सारियो
माँ मेरी कजरा सारियो, मेरे इस विध मोटे-मोटे नैन॥ रुकमनि..........
मैं तोय पूछूँ रुकमनि लाड़ली। तेरौ किस विध गोरौ-गोरौ अंग। सुहा. .....
माँ मेरी उवट नहवाइयो। मेरौ इस विध गोरौ गोरौ अंग॥ रुकमनि.... ॥

लगन आवै तव ये गीत तौ सव जातीन में गवै कि-

लगन आई हरे-हरे लगन आई हरे-हरे। मेरे अंगना।
रघुनंदन फूले ना समायँ।
वावा सज गए, ताऊ सज गए, सज गई सगरी वरात।
रघुनंदन तौ ऐसे सज गए जैसे सिरी भगमान॥ लगन आई.......

या गीत में बाबा अरु ताऊ की जगह अन्य अन्य भाई बंध रिस्तेदारन के नाम जोड़ जोड़ कै गीत ऐ मुकतेरौ लंबौ कर लेमें हैं।

बरनी ऐसे हूँ गामें लगन चढ़ै तब-

> फूलों से सजाया है बरना पर बरनी काली आयी है।
> बरनी के चाचा यूँ पूछै बेटा बरनी कैसी आयी है।
> बरने ने हँस के फरमाया, बरनी मेरे पसंद नहीं आई है।

या गीत में चाचा के स्थान पै पापा, ताऊ, बाबा, मामा, फूफा आदि कौ नाम हू लियौ जावै। आजकल फिल्मी धुनन पै ब्हौत सारे लोकगीत अपने आपई बनते जाय रहे हैं।

लगन लिखे जावे कै लगन आवे ते हू पहले देहरी सिरावैं। देहरी सिरावे कौ मतलब है ब्याहहात सैनौ। अर्थात् ब्याह कौ कार्य प्रारम्भ करनौ। या समै पै हू क्रमश: बन्नी कै बन्ना गाये जामैं। ऐसे ही लगन लिखिवे/लैवे के बाद हरदात होय। *हरदात कै तेल कै अन्य कछु के घोड़ी बन्ना बन्नी ख्याल भजन रसिया आदि गायकै जब घर ते लुगाई बाहर जावे लगैं तौ* रसिया आदि गाय कै जब घर ते लुगाई बाहर जावे लागे तो ढोला गामैं।

ढोला को एक बानगी में भाभी-देवर की बातचीत देखौ-

> कौन कौ भेजौ ढोला लैवे कूँ आयौ।
> कौन कौ सिखायौ ढोला रातौ बतरायौ
> भैया कौ भेजौ गोरी लैवे कूँ आयौ।
> भाभी कौ सिखायौ ढोला रातौ बतरायौ॥
> *सामन कौ महीना मैंने हँस कै निकारौ।*
> फागुन कौ महीना मैंने पीहर में बितायौ॥ कौन कौ.... ॥

तब घर के दरवज्जे पै ये गीत हू गायौ जावै-

> मेरे ससुर लगायौ हरियल बाग, पंजापन डेरा दै रहो॥
> ह्याँ ते हटजा पंजापन दारो सौत, तेने तौ मोहे साहिया॥
> ह्याँ ते नायँ हटैगी नर की नार, समझालै अपने साहिया॥
> मैंने कस-कस कै बाँधी ल्हौरी सौत, पाटी ते बांधे साहिया॥
> *मैंने आधी पै खोली ल्हौरी सौत, सबेरे खोले साहिया॥*

हरदात के बाद रात कूँ रतजगौ होवै। यामैं मेहँदी, अरु रजना गाये जामैं। रजना में दोहा बोले जामैं। रत जगे मैं दैदेवता विनायक गनेस, हनुमान , गंगा, जमना, प्रेत, देवी अरु महादेव जी आदि के गीत गाये जामैं। अपने इष्टदेवतान के गीत गामैं।

रतजगे मैं मेहँदी कौ गीत-

> देवर के पिछवाड़े बारी लाल मेहँदी तो *योवन धन चली।*
> वो धन कैसी मलूक बारीलाल उनके बिछुआ बाजने॥ मेरे लाल ...
> वो धन जइये पोसाक बारी लाल बिछुआ तौ गये हैं सुनार कै।
> लै लेऔ घोड़ा असवार बारी लाल, भाभी के लिवउआ देवर चल दिये॥

थैयाँ तौ पूछिंगे यात, वहना कहारे लादे औ आरतौ
लादी लादी ऐं मोंहर पचास, रुपैया लादे डेड़ सौ ॥
दीयौ दीयाँ री जगदीस के पूत भलौ लादौ आरतौ ॥

यामें थैया कौ अर्थ वहन भुआ के सुसरारियान ते है अरु जगदीस वर/कन्या के पिता कौ प्रतीक नाम है।

यन्ना ऐसे हू गामें-

व्याहन जनकपुर आये। राम वरना यन आये॥
अपनी अयोध्या में सेरौ वँधामें सेरे की सोभा जनकपुर छाई राम, बरना....

या गीत में आगे सेहरे की जगह कुण्डल, माला, मुकुट, झामा आदि पहरवे धरायवे की अरु सोभा छायवे की बात जोरि- जोरि कें गीत कूँ आगे यढ़ामें। झामा लम्वी वण्डी जैसौ अरु सूथन, पजामा जैसौ होय है ॥

यन्नी की यानगी देखौ-

यन्नी यावा जी याग लगाइयौ। वन्नी ताऊजी याग लगाइयौ॥
यन्नी तुम विन सींचैगौ कौन, म्हारी हरियल यन की कोयली.
यावा हमते तौ छोटी हमरी यहन जी।
ई तो चकल्या चकल्या सींचैगी याग॥ म्हारी हरियल..................
ऊ तो आम पके नींयू रस रमे।
यायुल कासीफल कौ करी नाँ साग॥ म्हारी हरियल.........

या लोकगीत में याय ताऊ की जगह ताऊ चाचा, चाचा फूफा आदि नाम लै लै कै अरु फल-सब्जीन के नाम बदल बदल कै गीत कूँ आगै यढ़ायौ जावै है॥

छोरी के व्याह में लगन लिखी जाय तौ यन्नी/लाड़ी गवें। छोरा के व्याह में लगन आवै तौ घोड़ी-बन्ना गवें/दोनोंन में चौकी गवै। लगन लिखें तब ऐसे गामें-

एजी मेरे यावाजी लगन लिखाइयों। मेरे ताऊ जी लगन लिखाइयौं॥
मैं तोय पूछूँ रुकमनि लाड़ली, तेरे किस विध लम्बे-लम्बे केस
सुहागिन रुकमनि लाड़ली।
मेरी माता तौ केस पँछारियो। मेरे इस विध लम्बे-लम्बे केस॥ रुकमनि...
मैं तोय पूछूँ रुकमनि लाड़ली, तेरे किस विध मोटे मोटे नैन। सुहागन......
माँ मेरी कजरा सारियो
माँ मेरी कजरा सारियो, मेरे इस विध मोटे-मोटे नैन॥ रुकमनि..........
मैं तोय पूछूँ रुकमनि लाड़ली। तेरौ किस विध गोरौ-गोरौ अंग। सुहा. .....
माँ मेरी उयट नहवाइयो। मेरौ इस विध गोरौ गोरौ अंग॥ रुकमनि.... ॥

लगन आवै तय ये गीत तौ सय जातीन में गवै कि-

लगन आई हरे-हरे लगन आई हरे-हरे। मेरे अंगना।
रघुनंदन फूले ना समायँ।
याया सज गए, ताऊ सज गए, सज गई सगरी यरात।
रघुनंदन तौ ऐसे सज गए जैसे सिरी भगमान॥ लगन आई.......

या गीत में बाबा अरु ताऊ को जगह अन्य अन्य भाई बंध रिश्तेदारन के नाम जोड़ जोड़ कै गीत ऐ मुकतेरौ लंबौ कर लेमें हैं।

बरनी ऐसे हूँ गामें लगन चढ़ै तब-

फूलों से सजाया है बरना पर बरनी काली आयी है।
बरनी के चाचा यूँ पूछै बेटा बरनी कैसी आयी है।
बरने ने हँस के फरमाया, बरनी मेरे पसंद नहीं आई है।

या गीत में चाचा के स्थान पै पापा, ताऊ, बाबा, मामा, फूफा आदि कौ नाम हू लियौ जावै। आजकल फिल्मी धुनन पै ब्हौत सारे लोकगीत अपने आपई बनते जाय रहे हैं।

लगन लिखे जावे कै लगन आवे ते हू पहले देहरी सिरावै। देहरी सिरावे कौ मतलब है ब्याहहात लैनौ। अर्थात् ब्याह कौ कार्य प्रारम्भ करनौ। या समै पै हू क्रमशः बन्नी कै बन्ना गाये जामैं। ऐसे ही लगन लिखिबे/लैबे के बाद हरदात होय। हरदात कै तेल कै अन्य कछु के घोड़ी बन्ना बन्नी ख्याल भजन रसिया आदि गायकै जब घर ते लुगाई बाहर जावे लगैं तौ रसिया आदि गाय कै जब घर ते लुगाई बाहर जावे लागे तो ढोला गामैं।

ढोला की एक बानगी में भाभी-देवर की बातचीत देखौ-

कौन कौ भेजौ ढोला लैवे कूँ आयौ।
कौन कौ सिखायौ ढोला रातौ बतरायौ
भैया कौ भेजौ गोरी लैवे कूँ आयौ।
भाभी कौ सिखायौ ढोला रातौ बतरायौ॥
सामन कौ महीना मैंने हँस कै निकारौ।
फागुन कौ महीना मैंने पीहर में बितायौ॥ कौन कौ.... ॥

तब घर के दरवज्जे पै ये गीत हू गायौ जावै-

मेरे ससुर लगायौ हरियल बाग, पंजापन डेरा दै रही॥
ह्याँ ते हटजा पंजापन दारी सौत, तेने तौ मोहे साहिया॥
ह्याँ ते नायँ हटैगी नर की नार, समझालै अपने साहिया॥
मैंने कस-कस कै बाँधी ल्हौरी सौत, पाटी ते बांधे साहिया॥
मैंने आधी पै खोली ल्हौरी सौत, सवेरे खोले साहिया॥

हरदात के बाद रात कूँ रतजगौ होवै। यामैं मेहँदी, अरु रजना गाये जामैं। रजना में दोहा बोले जामैं। रत जगे में दैदेवता विनायक गनेस, हनुमान , गंगा, जमना, प्रेत, देवी अरु महादेव जी आदि के गीत गाये जामैं। अपने इष्टदेवतान के गीत गामैं।

रतजगे में मेहँदी कौ गीत-

देवर के पिछवाड़े बारी लाल मेहँदी तो बोवन धन चलो।
बो धन कैसी मलूक बारीलाल उनके बिछुआ बाजने॥ मेरे लाल ...
बो धन जइये पोसाक बारी लाल बिछुआ तौ गये हैं सुनार कै।
लै लेऔ घोड़ा असवार बारी लाल, भाभी के लिवउआ देवर चल दिये॥

रतजगे में रजना या प्रकार ते गवै-

मंदर पै सुन्दर खड़ी जी कोई, खड़ी सुखावै केस।
कृष्ण मिठाई दै गए जी कोई धर जोगी कौ भेस॥
कोठे अंदर कोठरी जी कोई यामैं कारौ नाग।
खाई होती पच गई जी या छैला पति के भाग॥
पत्ता टूटौ डार ते जी कोई लै गई पवन उड़ाय।
अब के बिछुरे कब मिलैं जी कोई दूर परे हैं आय॥
साइकिल कौ तो बैठियौ जी कोई धोती कौ सत्यानास।
ऐसे गिरियौ साहिबा सो कोई टूटैं हाथ और पाम॥
हाथी ते हाथी लड़ै जी कोई लड़ै सूर ते सूर।
देवर ते भाभी लड़ै सो कोई करै गजब के टूक॥

रतजगे में यह भजन माली समाज में ब्हौत गवै-

सुमरि साहिब जी कौ नाम जिन तोय जनम दियौ।
एक पानी की बूँद, मिनका जनम लियौ॥
आयौ मुठरी बाँध, हाथ पसार दियौ॥
जिन घर कन्या होय, अछूतौ ना खइये।
जिन घर दीपक होय, अँधेरे मैं ना रहिये॥
देख पराई नार हर-हर ना हँसिये।
देख हरीलौ खेत मन ना डुलाइये॥

या भजन में पहलै कन्या कूँ खवाय के पीछे खावे कौ नीति विचार अरु घर के दीपक जरिये को इतिहास दिखाई परै है।

रतजगे के दूसरे दिना छोरा/छोरी अर्थात् बन्ना/बन्नी के तेल चढ़ै। उबटन लगै। उबटने में आटे में हल्दी अरु तेल मिलायकै शरीर पै लगायौ जावै। तेल चढ़ायवे के तांई कहूँ चार अरु सात बहन बेटी कै बहू निश्चित करी जामैं।

तेल चढ़ै तब ऐसे गामैं-

तेली रे तेली तेल। मेरौ राय चमेली कौ तेल॥
बरई मनोहरी बलैया बहू बिमला तेल चढ़ाईयौ॥

या तरह मनोहरी अरु बिमला की जगह अन्य छः और पति पत्नीन कौ नाम लै लै कै तेल लगामैं।

उबटने कौ गीत ऐसे है-

गेहूँ चना कौ उबटनौ, राय चमेली कौ तेल
हत लाड़ा बेटौ उबटनौ।
आ दादी देखलै, तोय घनेरौ चाव, हत लाड़ा हतलाड़ा बेटौ उबटनौ॥
देखे कौ कहा देखियौ, जैसे पूनौ कौ चाँद, हतलाड़ा बेटौ उबटनौ॥

उबटने में काऊ घर में वेसन कौ हू प्रयोग कियौ जावै है अर या गीत में दादी की जगह चाची, भाभी, मामी, भुआ कह-कह कै या गीतै आगे बढ़ाती जामें अरु सातौ जनीं उबटनौ लगामें हैं।

ब्याह में जब सब समाजन कौं साथ लियौ जावै तौ फिर बिना चाक पूजे, काम कैसे चल सकै है। पुराने फ्रिज (मटका) तौ वहीं ते आमें अरु चौंरी बाँधबे कूं हू मटका मटकी चाक ते ई बनैं।

चाक पूजिबे जामै तब कौ गीत-

झुक जा रे मरुए तो में महक आवै॥
जब मोए टीका की याद आवै॥
तब रे हमारौ ढोला याद आवै॥ झुक जा रे....... ॥

या गीत में टीका की जगह हरवा, बिछुवा, तगड़ी, बिंदिया अरु चूरिन आदि की याद आवै कहिकै गीत बढ़ायौ जावै।

चाक पूजते समय ये हू हँसिकैं गामें-

तौ जी रौंड़ कारे! कुम्हार का रे!! बासन गढ़वौ छोड़।
हमनें खिंदायो माँटी लैवे लै आयौ फूटौ कूलड़ौ रे॥ रौंड़ कारे...
हमनें खिंदायौ तूड़ी लेबे कू, लै आयौ फूटौ सकोरो रे॥ रौंड़ कारे...

जब चाक पूजिकै, जेघड़ रखिकै माथे पै, वापिस आवे लगें, तब रूढ़ी गामें-

रूढ़ी रँगरेज को जी, हलवाई घर मोह्यो री राज॥
राम नाम की कोठरी जी, चन्दन जड़े किवाड़।
ताले लागे प्रेम के जी खोलें कृष्ण मुरार॥ रूढ़ी रँगरेज को जी.. ॥

ऐसे यामें कैई दोहा लगाय कै गीत बढ़ाते घर आमें हैं॥

चाक पूजिकै आकै कबहू बैठ हू जामें तौ ये बारहमासी हू गायी जावै है-

सिरी कृस्न के बिना राधिका ठाड़ी गस खावै।
बरसन लग्यौ अषाढ़ पपैया कैसौ चिल्लावै॥
सखी मेरे मन में मन भायौ।
जाय बसे मथुरा में श्याम कुब्जा नें भरमायौ॥
भयौ अब बृन्दावन सूनौ।
बिना पति मद मोय सतावै दिन पै दिन दूनौ॥
भभक रहो स्याम बिना छाती।
लल्लू भजना कहै नायँ घर में दीया बाती॥

चाक के बाद भात नौंतिबे कौ नंबर आवै। जौ भतैया भात लैकै न आवै तौ फिर तौ बन्ना/बन्नी की माँ कौ म्हौड़ौ ही उतर जावै।

भात नौंतिबे कौ एक गीत ये है-

मेरे बाबुल को गाढ़ा रे लुढ़कनौ,
रड़कै रड़कै रे जंवाई दरबार, सिदौसी अइयो भातई।

मेरे वीरन कौ घुड़ला/हाथी हींसनौ।
हींसै हींसै रे जीजा जी दरबार, सिदौसी अइयौ भातई॥
मेरी भाभी कौ चुड़ला रे चमकनौ।
चमकै-चमकै रे नन्देऊ दरबार, सिदौसी अइयौ भातई॥
मेरे भतीजे की टोपी चमकीली।
चमकै-चमकै रे फूफाजी दरबार, सिदौसी अइयौ भातई॥

भात नौंतिवे जावे कौ एक पुरानौ बहुप्रचलित गीत है-

मेरे काए ते नौंतूँ बाबुल राजा, काए ते कागला?
मेरौ काए ते नौंतूँ हजारी वीरा, जिनके अहोलने॥
मेरे भेली ते नौंतूँ बाबुल राजा, डेलीन कागला।
मेरौ मिसरी की कुंजा हजारी राजा, जिन के अहोलने॥
कहा तौ लावै मेरौ बाबुल राजा, कहा तो लावै कागला?
कहा तौ लावै हजारी वीरा, जिनके अहोलने?
पीरौ तौ लावै बाबुल राजा, चवन्नी डारै कागला।
मेरौ साड़ी तौ लावै हजारी वीरा, जिनके अहोलने।
रुपिया तो डारै बाबुल राजा, चवन्नी डारै कागला।
गिन्नी तौ गेरै हजारी वीरा जिनके अहोलने॥

या गीत में भतीजे कौ हूँ नाम लैकै या गीतै दोहरा लेवैं। या गीत में कागला कौ मतलब काका आदि संगी साथान ते होवे अर जिनके अहोलने कौ भाव जिनते मेरौ प्रेम भाव है ये ऐसे हैं।

भात पहनैं तब ये गामैं-

मेरे बागन में रँग बरसे॥
हो पौरी पै बरसे भात, मत बरसै इन्दर राजा॥
ओ मेरौ भीजै लछिमन वीर, मत बरसै इन्दर राजा॥
मेरी साड़ी पै रंग बरसै, मेरे जम्फर पै रंग बरसै, ओ मेरौ भीजै......

गामैं भूषन पै-गड़ियन पै, गूँठिन पै, हरवा पै, सैंड़ल पै, भोजन पै कहि कहि के गीतै आगै बढ़ाते जामैं हैं।

माली समाज में भात पहनैं तब याऐ गामैं-

पहर रे तू पहर सर्वोत्तम, लैंग धैंग तेरी मैया कातन जानै।
दारी कातन जानै, रेतन जानै, कोरी सूँ बतरावै।
कोरी गज ठोक बुनैगौ, धोबी रा धो देगौ।
कच्चौ सूत, अलौनौ माढ़ौ, पहरैगौ का लाड़ो?

गामैं दारी शब्द, भात पहरबे वारे की पत्नी के तांई आयौ है। जो भात पहरै बाई कौ नाम सर्वोत्तम की जगह बोल्यौ जाय-कैं गीत बढ़ायौ जाय।

गूजर समाज में भात पहनें तब ऐसे गामें हैं-

देख बहन कौ जलसौ, ऊपर चढ़ी बीरौ भातइया।
झुमकी हू लायौ भैया, कालर हू लायौ।
पैंडल रतन जड़ायौ रे नीचै उतरिया भातइया॥ देख बहन.....

यामें गहने, कपड़ान के नये नये नाम लैकें गीते बढ़ामें।

कोली समाज में भात के टैम पै बाऐ गामें-

सासू जी के आये बीर, मोती जड़ लाये चूँदरी।
ओढ़ूँ तौ हीरा मोती धर परै, धर देउ तौ जिया ललचाय॥

यामें जिठानी, देरानी, सौकन(सौतन) अरु पारौसन आदि के बीर कौ कहि कहि कै लोकगीत कूँ बड़ौ करें।

भात पहनबे के बाद घूड़ौ नौतिबे जामें। जाते समय गायबे कौ गीत-

चिड़ी तोय घावड़िया भावै।
घर में सुंदर नार बलम तोय परनारी भावै॥
छः छल्ला छः आरसी जी कोई छल्लन भरी परात।
एक छल्ला के कारने जी कोई छोड़ौ माई बाप॥ चिड़ी तोय...
भरौ कटौरा दूध कौ जी कोई बूरे बिन पियौ न जाय।
मैया बाप की लाड़ली जी कोई पिया बिन रह्यौ न जाय॥ चिड़ी तोय...
पत्ता पै पत्ता धरौ जि कोई पत्ता पै गुलकंद। भँवर जी पत्ता पै गुलकंद॥
बड़े बलम कौ का करूँ जि कोई छोटौ अक्क्लमंद ॥ चिड़ी तोय।।

या गीत में ऐसे ही बने बनाये कै हार्यों हाथ बनायकैं दोहा जोड़ जोड के गीत कूँ आगे बढ़ामें। ब्याह में तरवारि ते सुई तक कौ, अर्थात् बड़े ते छोटे तक कौ सम्मान करबे के विचार ते घूड़ौ ही नौतौ जावै है। या समै पै,पानी में आग लगामें लुगाई की कहावतै चरितार्थ करती भई, बैबरबानी बकने गीत हूँ गामें जिनकौ लिखनौ ठीक नायँ।

ब्याहबे जावैं तब निकासी के समय कोली समाज में ऐसे गामें-

हथिया पै चढ़ि कै दुल्हा चले री ससुराल।
दुनिया कहै छोरा कारौ री कारौ, मेरौ जगत उजारौ॥
अधबीची बाग लगाऔ, ए रतनारौ सेहरौ॥

यामें हथिया जी जगह घोड़ा आदि लगाय कै गीत बढ़ामें।

और-

बरना के दादा सजे बरात कै ताऊ सजे बरात।
आप सजे पालकी जी महाराज॥
बरना की बरनी पूछे बात ।
इतनी तौ देरी कहाँ लगाई महाराज॥

बरनी मेरौ कुटुम कबीलौ परिवार॥
सचत संजा है गई जी महाराज॥

यामें दादा ताऊ को जगह काका जीजा फूफा आदि लगायकै गीतै आगै बढ़ामें।

निकासी कूँ घुड़चढ़ी हू कहमें। याते एक दिन पहले बान हूँ निकसै। ये हू एक तरह की घुड़चढ़ी सी ही होवै जो बहन भुआन की तरफ ते निकसै अरु दुल्हा लौटि कै घर पै ई आ जावै। इनमें घोड़ी कौ गीत जो सब समाजन में बहु प्रचलित है यो है-

ले चल बजारई बजार घोड़ी॥ ले चल सजन के द्वार-घोड़ी॥
आगे घोड़ी तुम चलौगी, पीछै बाबा हुशियार-घोड़ी ॥ ले चल...
त्याहरे बजारन में क्या क्या बिकत है? नींबू, नांरगी, अनार घोड़ी॥

या गीत में बाबा की जगह चाचा, ताऊ, मामा, नाना, फूफा, जीजा आदि लगामें अरु नींबू,नारंगी, अनार की जगै साड़ी, रुमाल, चिप्पस, पापड़, अचार अरु थारी, लोटा, गिलास आदि लगामें।

जब दूल्हा बारौठी पै मतलब तोरन पै पहुँचै तब गूजरन में यह गामें-

दूलह आयौ कमल कौ सौ फूल, बलइया मैया ढँग ते लीजौ॥
ठिक्का- ऊँचौ हवेली पर्वत झीना। बापै बैठौ बिरन नगीना॥
ठिक्का- पाँच मोर पचमनिया हो तो। भलई बलमा बावरिया हो तो रे प्यारे
रसिया- छोरा तेरे गऊआ घूर के फेरा, अभारी कैसै आयौ रे।
हंसन की मोटर सजी-सजाई ठाड़ी रे॥
ठिक्का- ओ ई रे काच काच मेरे बूटा।
समधी ऐ देखि कै हलै मेरौ गूँठा रे -हूँ प्यारे ॥

पन तोरन पै ये गीत सबन में जरूर गवै-

हाँ हाँ राम रंग बरसैगौ। रंग बरसै कछु इमरत बरसै, और बरसै कस्तूरी
आगे या गीत में कछु गारी सी गवै।

तोरन पै यानी दरवज्जे पै या तरियाँ हूँ गारी देमें-

समधी न आयौ मेरी खातिर में।
जाके डेरा तौ लगायदेऔ पल्ली बाखर में॥
समधी अपनी बहना न लायौ नचायवे कूँ।
सिरदारन की पौर। नम्बरदारन की पौर॥

इन दोनोन में सिगरे समधीन कौ, छोरा के जीजा अरु फूफान कौ नाम लिये जाय है।

फेरान पै गाये जाये वारे गीतन की कछु बानगी प्रस्तुत है-

बाबाजी री ऊँची ऊँची देहरी, पना फूलौ छा रही जी।
समधी कौ बेटा तपसिया, आँगन बैठौ तप करै जी॥

लाल औ थार भर मोती, पर्सें भर लाड़ली जी।
देओ याऐ समधी के हाय, छोड़ें म्हारौ आँगनौ जी॥
नायँ चाहिये थाल पर मोती पसे भर लाड़ली जी।
ब्याहूँगौ राजकुमार तबह छोडूँ आँगनौ जी।

या वर अरु कन्या पक्ष के संवाद जैसे गीत में बाबा के स्थान पै चाचा-ताऊ कह-कह कै गीत कूँ आग बढ़ायौ जावै है।

बरस दिना की भई गौरा, पलना में झूलै। शिवजी महादेव जी॥
दोय बरस की भई गौरा, आँगन में गुड़िया खेलै। शिवजी महादेव जी॥
तीन बरस की भई मेरी गौरा संग सहेलिन में खेलै। शिवजी महादेव जी॥
चार बरस की भई मेरी गौरा, *बारू कौ महादेव बनावै। शिवजी महादेव जी॥*
पाँच बरस की भई गौरा, ब्रह्मा कहै याकूँ वर ढूँढौ। शिवजी महादेव॥
ढूँढ-ढूँढ मर जाऔ मेरे बिरमा, तोकूँ वर नायँ पावै। शिवजी महादेव जी ॥
भटक भटक मर जाऔ मेरे बिरमा, मेरौ वर तोय मैं ही बताऊँ। शिवजी महादेव जी॥
अर्र ततैया, बर्र ततैया, बन बन के भौंरा लटकैं। शिवजी महादेव जी॥
अंग भभूत बगल मृग छाला, सर्पन की पहने माला। शिवजी महादेव जी॥
सर्प देखि कै डर मत जइयो।
बाऐ देखि बिदक मत जइयो॥ बाकैतौ टीकौ काढ़ौ। शिवजी महादेव जी॥

गूजर समाज में फेरान पै बन्ना बन्नी के पाछै ख्याल अरु जिकरी हू गवैं। "पति अपनी पत्नी कूँ लिवाबे जावै पन बाय पहचानै नायँ।"- याकी कहानी "भरतो कूआ पै नीर। आयौ एक रस्तागीर। छोरी मनें नीर पिलाय। भैया तू घर कूँ चल।" ये गायौ जावै।

बढ़ार (बिदाई की जौनार) में पत्तर बाँधवे अरु पत्तर खोलवे के हू गीत पहले गवते पन अब इनकौ प्रचलन बन्द सौ है गयौ है। कोली समाज में याकौ गीत कुँवर के जन्म की घटना तेई प्रारम्भ करिकैं गवै-

जबरे कुँवर जी कौ पहलौ महीनौ, धुक-धुक आमन जाय॥ अस्तोबचन
जबरे कुँवर जी कौ दूजौ तीजौ महीनौ, खीर खाँड मन जाय॥ अस्तोबचन
जबरे कुँवर जी कौ सतवौ नौवों महीनौं कोने में खाट बिछाय॥ अस्तोबचन
जब समधन के दर्द जो मारै। दाई ऐ जल्द बुलवाय॥ अस्तोबचन
जब साजन ब्याहवै पौरी आये सासू तिलक सजाय॥ अस्तोबचन
आक ढाक की पातर बाँधू। कुल्ला और सकौरी बाँधू
और नीम की सींक ॥ अस्तोबचन
खोलन हारे के म्हौड़े ए बाँधू और दाँत बत्तीस॥ अस्तोबचन॥

या गीत में अलग अलग महीना की अलग अलग घटना कही जामें। पत्तर खोलबे बारे हूँ इतनौ 'सासू तिलक सजाय, तक कहै कै फिर या तरह कहमें-

लाऔ कुल्हाड़ी काटूँ ढाक। वाकौ ऐसी तैसी करैं मैं *अरु मेरौ बाप॥*
जेंऔ बराती बूरौ भात॥

बढ़ार नैं लगन नैं पे जरूर गानैं-

एक अरज सुनियौ समधी, वरनी ऐ दुःख मत दीजौ-रंग बरसैगौ ॥
ई तो वरनी बड़ी ए लाड़ली, लाड़, लड़ायकै पारी-रंग बरसैगौ ॥
ई तौ वरनी की मैया मर गई, त्याहरे ऊपर छोड़ी -रंग बरसैगौ ॥
कोरी कलसिया सीरौ सौ पानी, पीवै दारी समधिन-रंग बरसैगौ ॥
या लाड़ो कूँ दुःख मत दीजौ, बुरौ नतीजौ भोगै-रंग बरसैगौ ॥
ऊँची अटरिया, लालौ किवड़िया, सोवै दारी समधिन-रंग बरसैगौ ॥
या लाड़ो के लाड़ लड़ैयौ, परिवार तौ सुखी रहैगौ-रंग बरसैगौ ॥
हरी हरी टोपी फूलन की माला डार गरे में आये-रंग बरसैगौ ॥

विदाई के समै कोली समाज में ये गीत गायौ जावै-

कोरे कोरैं गुड़िया छोड़ी रोमत छोड़ीं सहेली।
अपने पिया के संग चालीं, लेओ बाबुल अपनौ देस।
तू क्यौं बोलै कारी कोहलिया, सोने नैं मढ़ाऊ तेरी चोंच।
पांमन ने मड़ देऊँ तेरे चांदी मैं ।
हमतौ अपने पिया के संग चालीं। लेऔ अपनौ देस॥

गूजरन में विदाई के टैम पै ऐसे गानैं-

खिंदादै मैया काए कूँ करै मन भारौ॥
मनभारौ देखियौ दिल कौ प्यारौ-ओ खिंदादै...
मनभारौ हौं हँसनी सी बती चौंपन वारौ ओ खिंदादै.......
मनभारौ धौंरे कुरता वारौ ओ खिंदादै...
लम्बी नाद, तोरा वारौ-खिंदादे.....। मनभारौ धौंरी धोती वारौ-खिंदादे..
दिल कौ प्यारौ कारे जूतन वारौ-खिंदादे मैया..... ।।

जब छोरी डोला में बैठै तब ऐसे हू गामें-

औंड़े तौ कौंड़े गुड़िया ऊ छोड़ी रोमत छोड़ी सहेलनी।
अपने ससुर के संग चाली, लेऔ बाबुल त्याहरौ देस जी॥
अपने साजन के संग चाली, लेऔ विरन तैरौ देस जी॥

जब बन्ना ब्याहवे जावै ताके पाछै अरु ब्याहकै दुल्हन कूँ लैकै आवै तब बधाई या तरियौं गवै-

आई आई नंद जी को पौर बधाई लाई मालनियौं।
छजन चूरी मोतिन के गजरे मालनिया॥
जा चौक बैठे रानी कौ लाला, मालनियौं॥
संग ललन को आई बधाई लाई मालनियौं।
बहन जी भुआ करै आरती मालनियौं॥
मगड़ें अपनौ नेग सुगड़ पत मालनियौं॥

यहन जो भुआन नैं देओ पहराय सुगढ़ पत मालनियाँ।
पहर ओढ़ के गई ब्रिज यन कूँ मालनियाँ॥
मुड़-तुड़ देत असीम सुगढ़ पत मालनियाँ॥
जियै मेरौ माँ कौ जायौ सुगढ़ पत मालनियाँ॥
जियै मेरौ कुँवर कन्हाई सुगढ़ पत मालनियाँ॥

या गीत मे लाला की जगह लाली कहिकैं, वैठे रानी कौ लड़का हू कह्यौ गायौ जावै। छजन चुरी चांदी सोने अरु मोती के छन हू कहे जामें। ये दो चूड़ी की मोटाई के होमें। यामें सजन कौ अर्थ समधी ते लगामें।

ऐसे सगाई ते प्रारम्भ ये ब्याह-संस्कार कौ उत्सव कहूँ चार अरु कहूँ सात फेरान पाछैं पूर्ण होय है। इनमें गीतन कौ आनंद तौ, या उत्सव के आनंद कूँ दुगनौ चौगुनौ कर देय है। विदाई के समय कौ दुःख हू गीतन के संग संग बह जाय है।

या लेख के लिखिवे में लोकगीत उपलब्ध करायवे में श्रीमती शारदा कटारा, श्री मनोहरलाल नक्शानवीस जी की माननीया माताजी, श्रीमती घंटी शंटी जी, श्रीरामजीलाल जी गुर्जर की श्रीमती अरु सारौ जी, देहली दरवाजे की माता युद्धोजी, कुटी मौहल्ला की सैनी समाज में ते द्वै माताजी पन्नी अरु पं.भग्गो, श्री बालीराम जी कौ सहयोग मिल्यौ है। जिन गीतन के संग, विसेस समाज कौ उल्लेख न भयो है वो गीत बामन-बनिया अरु लगभग अन्य सब समाजन मे हूँ गाये जामें हैं।

-"चतुर्भुज-प्रासाद", कुटी मौहल्ला,

कामाँ-321022, जिला-भरतपुर,

❑



रतजगे के लोकगीत

– श्रीरामदत्त शर्मा

ारे ब्रज अरु आसपास के अंचल मांहिं माँगलिक औसरन पै लोकगीत गायवे की परम्परा कवते प्रारम्भ हतै जाकौ ायवौ वडी टेढ़ी खीर है। जव मैं पाँच-छै वरस कौ वालक हतौ तौ हमारी दादी कहै ही कै मेरी दादी जिन गीतन कूँ विनमें ते मोकूँ आधे ऊ गीत याद नाँय रहे। मैंनें मेरी अम्माँ ते ऊ कछू गीत सीखे हते। बिनमें ते मोकूं भौत से गीत हतें पर कैऊ गीत भूल गई हतूँ। जा ई वात कूँ मेरी माताजी कहतीं। विनकूं माँगलिक औसरन पै गायवे वारे गीत याद हते। आस पड़ौस अरु नाँते रिस्तेदारन के यहाँ ते जब काऊ के छोरी-छोरा कौ जनम होतौ तौ विनकूँ बड़े मनुहार ौ जातौ। वेऊ ऐसे औंसरन पै गीत गावे जायवे की वाट देखती रहतीं। विनकूं गीत गायवे कौ बड़ौ चाव हतौ। जनम र पै छटी के गीत, जच्चा के गीत, पलना के गीत अरु वधाये के अनेकन गीत विनकूँ याद हते।

ोरी-छोरा के व्याह के औसर पै तौ लगन ते ई गीत गायवे कूं वुलायेन कौ ताँतौ लग जातौ। घोड़ी, बन्ना, माँगर, तेल, तजगौ, यूढ़े वावू के गीत गायवे कूँ विनकूँ रोजीना ई जानौ पड़तौ। व्याह के औसर पै तौ परभाती के गीत गायवे कूँ जरूर ई वुलायौ जातौ। मेरी माताजी की परम्परा मेरी चाचीजी नें निभाई। मेरी वड़ी वहनै जी नें वामें चार चाँद लगाय रात के लिये गारी, पत्तर वाँधवौ, ललमनियाँ इनके गीतन कूँ गायवे में वे वड़ी सिद्धहस्त हतीं। बड़े चाव ते इन गीतन ं। मेरी माताजी कौ देहावसान सन् 1938 में है गयौ परन्तु मेरी वहन जी नें जे परम्परा सन् 1989 तक पूरी तरियाँ निभाई। ाह सन् 1944 में भयौ। मेरी पत्नी कूं विननें अनेकन गीत सिखाये। वैसे मेरी पत्नी कूँ ऊ मांगलिक औसरन के लोकगीत कौ वड़ौ चाव है। अपने पास-पड़ौस में जा काई के छोरी-छोरा कौ जनम होय, सालगिरह होय, व्याह होय तौ विन- र वुलायौ जाय। खास तौर ते व्याह के औसर पै रतजगे के दई-देवतान के गीत गायवे कूँ विनकूँ जरूर बुलावौ आवै।

इन मांगलिक औसरन पै लोकगीत गायवे की परम्परा अव धीरे-धीरे क्षीण है रही है। नई पढ़ी लिखी छोरी-छापरीन ल्मन की तर्ज पै नए गीत गढ़ लीने हैं। घोड़ी यन्नाऊ नई तर्ज पै गढ़ लिए गए हतें। इनमें ब्रजभासा की जगह खड़ी वोली लई हतै। फिर ऊ जच्चा, माँगर, तेल, यूढ़ौ वावू अरु रतजगे के औसर पै लोकगीत गायवे की परम्परा अवई ज्यौं की तै। विसेस रूप ते ग्रामीण अंचल में जा परम्परा कौ निर्वाह निर्वाध रूप ते है रह्यौ हतै। रतजगे के गीत छोरा के व्याह येर गाये जाँय अरु छोरी के व्याह में एकई येर गवैं। जा औसर पै महादेव, ठाकुर, हनुमान, देवी, गनेस, कान्हा विहारी, लाया रैयारो, सैयद, पठान, पाँच पीर, घामड़, भौंमिया के गीत ऊ गाये जाँय।

इनमें ते कछू लोकगीत यानगी के रूप में नीचे दिये जा रहे हैं:-

रैवारी कौ गीत

रैयारी याया लाढ़ लौंरे, लाढ़ लौंरे मेरी माय।
ढेरे में कहियै तेरौ थान, मन्दर में कहियै तेरौ थान।

परचै तौ दैदै बाँव बहुगने रे बाबा बहुगने
नगारे बाजें चारों खूँट, ऊंटन को लँगहार।
सोयौ, सौयौ करतौ आवै, करतौ आवै मेरी माय रैवारी बाबा लाड़ लौरं....
चाँमर तौ राँधू बाबा ऊजरे, हरी ऐ मँगौड़ी धोवादा
पुरियाँ तौ पोऊ बाबा लवझवी, पापड़ सेकूँगी चार
झवक परोसूँगी थार, जेंवत निरखूंगी तिहारी आँगुरी
बोलत सुगनी सी जीभ, जेंयौ तौ जूठ्यौ बाबा रसभर्यौ
कोई पौढ़न ठौर बताय,
बारह नौ खन की बाबा रावरी, जामें पलँग पर्यौ ऐ दरयाव
दिवल बलै सारी रात,
परिचै तौ देऔ बाबा बहुघने, नँगारे को ज्यौत चढ़ाऊं।
रैवारो बाबा लाड़ लौरे लाड़ लौरे मेरी माय।

सैयद कौ गीत

सैयद तौ सोये खूँटी तान कें रे बाँकू कौन जगायवे जाय।
कै तौ जगावै बीबी फातमा कै कुलवन्ती नार
गूँठा तौ मोड़ जगाइयौ रे जगाइयौ छछहारी फिर फिर जाँय
सैयद उठे ललकार कें, फटकार कें, टूटे पलंग चारों साल
सूदे तौ भये हैं विलोमना, छछिहारी भर-भर जाय
सैयद तौ सोये खूंटी तान कें।

पाँच पीर

पाहर ते उतरे पाँचों पीर चार सरैया कोरी कोरी आईं
दोइ हलुआ दो माँढ़ी
चार करसिया कोरी कोरी आईं, दो इमरत दो पानी
चार भरोटा हरे-हरे आये, दो आले दो सूखे
घर गये दूध पी गए पानी कर गए लोद मसानी,
तुम देखौ लाल जा साहब की बानी
आगें तौ जीजा कपड़ा न देतौ, अबर लुटावै गुलसारी
सारे देख कमल ज्यों विकसत भैया ऐ देखि लड़ाई
आगें तौ बनियाँ गुड़ नई दैतौ, अबर लुटावै गुड़ की भेली,
जा कलजुग में रीत चली है, सास भरै बहू कौ पानी,
जा कलजुग में रीत चली है, हाँते खाय जिठानी
तुम देखौ लाल जा साहब की बानी
पतरा बाँच मिस्सर घूमै, घर घूमें मिसरानी
हाट-हाट पै बनियाँ घूमै, घर घर घूमें बनैनी
तुम देखौ लालजा साहिब की बानी।

चामड़, भौमिया कौ गीत

दादी वरजै भौंमिया तिहारी मैय्या वरजै ऐ
वा चामड़ के लारै भौंमियाँ मत जा
नहीं मानूँ दादी, नहीं मानूँ मैया वा चामड़ कौ संग मोकूं प्यारौ लागै
वाके वजते नगारे मोय प्यारे लागें।
दिन के नगारे चारों कूट वाजें, जीजी भुआ मैं नहीं मानूँ एक
जीजी वरजै भौंमियाँ, तिहारी भुआ वरजै ऐ
वा चामड़ के लारे भौंमियाँ मत जा,
नहीं मानूं जीजी नहीं मानूँ भुआ, वा चामड़ कौ संग मोकूं प्यारौ लागै
मैं तौ वाकी भगती करूँ अपार।

महादेव जी कौ गीत

तू वैठौ आसन माँढ़ महादेव रे ओ जोगी के
तू वैठौ भुजा पसार, महादेव रे ओ जोगी के
तू राजा कौ रछपाल महादेव रे
तू रानी कौ आँचर मार महादेव रे ओ जोगी के
तू दूल्हा कौ रछपाल, महादेव रे ओ जोगी के
तू लाड़ी कौ आँचर मार महादेव रे।

ठाकुर कौ गीत

राजा मानसिंह नें ठाकुर नौंतियो
रानी के घर सेवा होय, वड़ी ज्यौनार गुलगुले होंय
पपड़िया होय, लपसिया होय, आवें वड़े ठाकुर देवता
तुम ठाकुर मेरे ऊ घर अइयों मैऊ तुम्हें जिमाऊँ ज्यौनार
जा दुलहा कूं आसिस दीजों, लाड़ी कूं दीजों पुत्तर चार
मैं ऊ तुमकूं नौंतौ दूंगी मेरे नौते पै अइयो ठाकुर देवता

वाँकेविहारी औ हनुमान जी कौ गीत

कहाँ ते आये वाँके विहारी	कहाँ ते आये हनुमान
वृन्दावन तेआये वाँकेविहारी	लंका ते आये हनुमान
काए में आमें वाँकेविहारी	काए में आमें हनुमान
गाड़ी में आमें वाँकेविहारी	रथ में आमें हनुमान
काँहर उतरें वाँके विहारी	काँहर उतरें हनुमान
मन्दिर पै उतरें वाँकेविहारी	सिंहासन पै उतरें हनुमान
का कपड़ा पहरें वाँकेविहारी	का पहरें हनुमान
पीरौ कछौरी वाँकेविहारी	लाल लँगोटा हनुमान
काहर जीमें वाँकेविहारी	काहर जीमें हनुमान

लडुआ जीमें बाँकेबिहारी	चूरमा तौ जीमें हनुमान
काहर पीमें बाँकेबिहारी	मसर मलीदा हनुमान
पानी पीमें बाँकेबिहारी	काहर पीवें हनुमान
काहर दिंगे बाँके बिहारी	सरबत पीमें हनुमान
अन धन दिंगे बाँकेबिहारी	काहर दिंगे हनुमान
काहर तोंरें बाँकेबिहारी	पुत्तर दिंगे हनुमान
तारे तोंरें बाँकेबिहारी।	काहर तो रें हनुमान
	लँकाए तोरें हनुमान
	बाँके बिहारी ते कम नाँयें हनुमान।

रतजगे के इन गीतन ते पतौ लगै कै हमारी संस्कृति समन्वयवादी रही हतै। ब्याह जैसे माँगलिक औसर पै रैवारी, सैयद, पीर, पठान के गीत गाये जांए। जाते प्रगट होय कै जा देस में भौत काल तानूं मुसलमान शासकन कौ राज रह्यौ। जाके प्रभाव ते सैयद, पठानऊ पुजवे लग गए। विवाह जैसे माँगलिक कार्य की निर्विघ्न पूर्ती हैजाय जाके लिये अपने ई देवतान के संग इनकूं ऊ मनायौ जाय। जा परम्परा कूँ अंधविश्वास ऊ कह्यौ जा सकै। हमारे जा अन्धविश्वासी हिन्दू समाज में सैयद की मान्यता आजऊ देखी जाय। सैय्यद के थान पै ढोक दैवे मनौतो मनायवे अनेकन पुरस और स्त्री आजऊ जांते भए देखे जाय सकें।

रैवारी के गीत ते प्रकट होय कै राजस्थान ते लगे भए जा ब्रज आँचर में कोऊ ऊंट की सवारी करवे वारौ आयौ अरु वो यहाँ के समाज में ऐसौ घुलमिल गयौ कै यानैं यहाँ ते लौटकें जायवे कौ नाम ऊ नाँय लोनौं। वो एक सिद्ध पुरुष बन गयौ। मानसन की मनौतीन नें पूरी करवे लग गयौ अरु जा आँचल में ई मृत्यु कूँ प्राप्त है गयौ। याके थान कूं आजऊ पूजौ अरु मानौ जाय। जाईते विवाह जैसे माँगलिक औसर पै रतजगे (रात्रि जागरण) के समै पै याकौ ऊ स्मरण कियौ जाय।

चामड़ अरु भौमिया के सम्मिलित गीत ते प्रगट होय कै भौमिया चामड़ कौ बड़ौ ऊँचौ भगत हौ। भौमिया कूँ चामड़ के संग जायवे ते बाके घरवारे रोकते पर वो विनकी एक नाँय सुनतौ। खरौ उत्तर देतौ कै चामड़ मैय्या के बजते नगाड़े मोकूं ऐसे प्यारे लगैं कै मैं उनकी धुन सुनकें विनके दरसन कूँ तत्काल जायवे ते अपने आपकूँ रोक ई नायँ पाऊं। ब्याह के माँगलिक औसर पै चामड़ के संग भौमिया के स्मरण ते पतौ लगै कै हमारी संस्कृति में देवी-देवतान के पूजन अर्चन के संग विनके मन-वचन कूं स्मरन करवे की परम्परा रही है।

बाँकेबिहारी अरु हनुमान जी के युगल गीत ते ऊ प्रकट होय कै भगवान ते ज्यादा हमारी संस्कृति माँहीं भक्त कौ स्थान मानौ गयौ है। ऐसौ जा कारन है कै स्वयं भगवान नें भक्त कूं ऊंचौ बतायौ है। बाँके बिहारी तौ अन्न और धन दिंगे परन्तु हनुमान जी तौ पुत्र दिंगे जाते बंस परम्परा आगें चलैगी। ऐसौ भाव जा लोकगीत में दरसायौ गयौ है।

माँगलिक औसर पै लोकगीतन की परम्परा शहरी क्षेत्र में धीरे-धीरे लुप्त हौंती जाय रही हतै क्योंकि हमारी नई पीढ़ी की युवतियाँ सिनेमा के गीतन ते बहुत प्रभावित हतैं। विननें घोड़ी, बन्ना, बधाये फिल्मी तर्ज पै गायवौ प्रारम्भ कर दीनौ है। इन गीतन में हमारी साँस्कृतिक परम्परा की झाँकी नाँय मिलै। जाते ई ब्याह के औसर पै 'महिला संगीत' नयौ नामकरण भयौ है। जामैं फिल्मी तर्ज के कछु गीत ब्रजभासा अरु खड़ी बोली में मिले जुले गाये जाँए। ग्रामीण आँचल में जे प्रभाव अबई नाँय दीखै। जाते ई लोकगीतन की परम्परा हमारे जा ब्रज आँचल में अबऊ जीवन्त है। रतजगे हमारे गाँवन में अबऊ निर्बाध रूप ते होंय और विन में रतजगे के गीत गाये जांयें। जाते जे गीत आज सुरक्षित हतैं।

-सी-91, रणजीत नगर,
भरतपुर

❑



ब्रज लोकगीतन में पर्व

-डॉ. रामप्रकाश कुलश्रेष्ठ

माह महीना में वसंत पंचमी मनायी जाए। याही दिना ते वसंत रितु कौ आरम्भ मानौ जाय अरु होरी के गीतन कौ गायन सुरू होइ। फागुन के महीना में फुलैरा दौज होइ। फुलेरा दौज कूं घरगुली वनाई जाइ अरु होरी के दिना तक संझा समै टिकुलियाँ रखी जांय। गोवर की गूलरियाँ, ढाल, तलवार आदि वनिवौ आज सूँ सुरू होइ। रंगभरनी एकादसी कूं ब्रज के मंदिरन मांहि अवीर-गुलाल उड़ै। होरी के रसियाऊ गाये जांए। होरी तौ फागुन की पूनौं कूँ मनाई जाय वामें आगि लगाई जाय अरु होरी मँगरने पै घर कौ एक आदमी आगि लाइकें घर की घरगुली पै रखी गुलरियन में लगाइदे। दूसरे दिना होइ धुलेंड़ी, आजु के दिना खूब होली खेली जाइ। आदमी अरु वैयरवानी दहनावर निकारें। दूसरे दिना होइ भैया दूज। जा भैया दूज कूं कछु मनावें, कछु नांय मनावें।

घरगुली खोदी जाइ वा औंसर पै गीतु गायौ जाइ-

> रामा वलि के द्वारा चढ़ी ए होरी
> कौन के हाथ रंगीलौ ढ़प सोहै।
> कौन के हाथ रंगीलौ ढप सोहै।
> कौन के हाथ गुलाव की छड़ी।

होरी मंगरिवे ते पैलें पूजी जाइ। गीत गाये जांयें। वैयरवानी सिकायत करैं कै होरी पूजिवे कैसें जाऊँ मोपै पहरिवे कूं गैहने नांय। पति अपनी पत्नी कूं समझावै, अवकै तौ ऐसे ही पूजि लेउ, अगली वरस खूव गैहने बनावाइ दुंगो। जाकौ सीधौ मतलव ए कै फसल अच्छी है जायगी तौ गैहने अपने आपु दुगने वनि जायिंगे। होरी में आगि लगिवे पै वालि भूनी जांय अरु गीतु कछु ऐसे गायौ जाय-

> वालि वलूलरियाँ
> जौ की लामनियाँ
> कृष्णा जी भैनि वुलाई कै जौ की लामनियां
> सहद्रा दौरी दौरी आवै, कै जौ की लामनियां
> भैना गूंजा खाइये आउ, कै जौ की लामनियां
> कै हिस्से खाइये आउ, कै जौ की लामनियां

होरी मंगरि जाइ, लौटते वखत वैयरवानी जा तरियाँ गीत गावति चलें-

> होरी के हुरिहारे आये राम चना रे,
> फोरे दतार आये राम चना रे,

कृष्न जी दतार आये राम चना रे
होरी मंगरि घर दाऊजी आये राम चना रे
पइदै मइया रोटी राम चना रे
ईंधन नाँय बाँधन नाँय ,
कैसे पैइं बेटा रोटी राम चना रे।

मथुरा के कलेक्टर साहब एफ.एस. ग्राउस (1882) नैं अपने संस्मरनन माँहि जि लिखौ है कै ब्रज माँहि होरी की अजीयो गरीब प्रथाऐं हैं, जाके बारे में बाहर के लोगन कूं पतौ नांय। ब्रज में तौ होरी चालीस दिना चलै, अरु जि कही जाय कै 'जग होली, ब्रज होला।'

ब्रज की होरी द्वै तरियाँ होय-एक तौ सलौनी होरी जामें नाचगानौ, संगीत अरु नाट्य होय, जाकौ केन्द्र होय वृन्दावन। जाय कहें है होरी लीला ए। राधा जू अरु किसन जी फूलनि की पंखुरीन ते होली खेलैं। जा तरियां की होरी मैं मनन फूल लग जांय।

.दूसरी तरियाँ की होरी होय मनोरंजक। जाइ गांमनि में देखि सकैं। दाऊजी में जो 'हुरंगा' होइ याइ दूसरी तरियाँ की होली मानौ जाइ।

दाऊजी कौ दूसरौ नाम ए बलराम। ब्रज क्षेत्र माँहि बलराम की पूजा करिबे की परम्परा भौत पुरानी मानी जाय। मथुरा सूं 14 मील दूरी पै रीढ़ा गाँव के कुण्ड माँहि बलराम-रेवती की मूर्तियां 16 वीं सदी की मिली एं और मिलौ ए दाऊजी कौ मंदिर। ता दिना सूं रीढ़ा गाँव है गयौ बलदेव गाँव।

धुलेण्डी के दूसरे दिना चैत कृष्णा द्वितीया कूं जा मंदिर में होली मनायी जाइ। जा दिना घूँघट वारी बैयरबानी आदमीन कपड़ान कूं फाड़ैं और बासूं बनावैं कोड़ा औरु कोड़ननि सूं मर्दन को करैं पिटाई। लोग तौ दूरि सूं ई रंग डारि सकैं। जाव, बठैन, जतीपुरा, आन्यौर माँहि लोग लुगाईनु में लीला~ युद्ध होय जामें लठिया चलैं। लीला युद्ध लगै तो उग्र परि है बड़ौ मनोरंजक। लोग पिटैं, लुगाई पीटैं जिय है ब्रज की होरी।

ब्रज के फालेन गांम में फागुन की पूनौं कूं होली उत्सव प्रह्लाद मंदिर के जौरे मनायौ जाइ। प्रह्लाद मंदिर कौ पंडा प्रह्लाद कुंड में न्हाइकैं जा आगि में हैकें निकरै। जाइ सब अपनो आंखिन सूं देखें।

फागुन कौ महिना आवत ही सबनि की चाल बदलि जाइ। रंग-ढंग बदल जाइ। आदमी तौ आदमी प्रकृतिऊ बदल जाय। ब्याहु के बाद नई नवेली अपनो ससुराल वारेनु सूं कहि रही ए कै होली आइ गई। आपु तौ बिना गौने के लै आउ। होली खेलिबे कूं ससुराल में होइबौ जरूरी ए-

कच्चौ अम्बलो गदराई रे फागुन में
रांड लुगाई मस्ताई फागुन में
कहियो रे उस ससुर भले से
चाल्ला लेकर आ फागुन कौ
बिना मुकलाई लेजा फागुन में
कच्ची कली..........
कहियो री उस बहू भली से

ब्रज लोकगीतन में पर्व

-डॉ. रामप्रकाश कुलश्रेष्ठ

माह महीना में वसंत पंचमी मनायी जाए। याही दिना ते वसंत रितु कौ आरम्भ मानौ जाय अरु होरी के गीतन कौ गायन सुरू होइ। फागुन के महीना में फुलैरा दौज होइ। फुलेरा दौज कूं घरगुली बनाई जाइ अरु होरी के दिना तक संझा समै टिकुलियाँ रखी जांय। गोवर की गूलरियाँ, ढाल, तलवार आदि वनिवौ आज सूँ सुरू होइ। रंगभरनी एकादसी कूं ब्रज के मंदिरन माँहि अवीर-गुलाल उड़ै। होरी के रसियाऊ गाये जांए। होरी तौ फागुन की पूनौं कूँ मनाई जाय वामें आगि लगाई जाय अरु होरी मँगरने पै घर कौ एक आदमी आगि लाइकें घर की घरगुली पै रखी गुलरियन में लगाइदे। दूसरे दिना होइ धुलेंड़ी, आजु के दिना खूब होली खेली जाइ। आदमी अरु वैयरवानी दहनावर निकारें। दूसरे दिना होइ भैया दूज। जा भैया दूज कूं कछु मनावैं, कछु नांय मनावें।

घरगुली खोदी जाइ वा औसर पै गीतु गायौ जाइ-

> रामा वलि के द्वारा चढ़ी ए होरी
> कौन के हाथ रंगीलौ ढ़प सोहै।
> कौन के हाथ रंगीलौ ढप सोहै।
> कौन के हाथ गुलाव की छड़ी।

होरी मंगरिवे ते पैलें पूजी जाइ। गीत गाये जांयें। वैयरवानी सिकायत करैं कै होरी पूजिवे कैसें जाऊँ मोपै पहरिवे कूं गैहने नांय। पति अपनी पत्नी कूं समझावै, अवकै तौ ऐसे ही पूजि लेउ, अगली वरस खूब गैहने बनावाइ दुंगो। जाकौ सीधौ मतलव ए कै फसल अच्छी है जायगी तौ गैहने अपने आपु दुगने वनि जायिंगे। होरी में आगि लगिवे पै वालि भूनी जांय अरु गीतु कछु ऐसे गायौ जाय-

> वालि चलूलरियाँ
> जौ की लामनियाँ
> कृष्णा जी भैनि वुलाई कै जौ की लामनियां
> सहद्रा दौरी दौरी आवै, कै जौ की लामनियां
> भैना गूंजा खाइये आउ, कै जौ की लामनियां
> कै हिस्से खाइये आउ, कै जौ की लामनियां

होरी मंगरि जाइ, लौटते वखत वैयरवानी जा तरियाँ गीत गावति चलें-

> होरी के हुरिहारे आये राम चना रे,
> कोरे दतार आये राम चना रे,

रत्ती भर घटला(घटेगा तो) माशा भर देऊंगी।
देऊंगी काट के तोल।

ब्रजभासा कौ जि होली गीत गढ़वाल-कुंमायूं इलाके में बड़े चावसूं गायौ जावै।

होली कौ पखवाड़ा तौ मौज-मस्ती कौ पखवाड़ौ ए। राधा-किसन तौ हर गीत में मिल जाये। ब्रज के नर-नारीन के हाथनु में गुलाल होय, मौज-मस्ती होय, हास-परिहास होय, हाथन में पिचकारी होय ब्रज के लोग लुगाई हाथन में अबीर गुलाल लैकें बिखेरते भए होलनि के टोल एक मुहल्ला सूं दूसरे मांहि जांइ, गीत गाएं, गले मिलैं और फिर सब मिलिकैं गावैं-

आज बिरज में होरी रे रसिया,
होरी रे रसिया बरजोरी रे रसिया।
कौन के हाथ कनक पिचकारी,
कौन के हाथ कमोरी रे रसिया। आज बिरज.....
कृष्ण के हाथ कनक पिचकारी
राधा के हाथ कमोरी रे रसिया॥ आज बिरज.....
उड़त गुलाल लाल भये बादर, केसर रंग में बोरी रे रसिया।
बाजत ताल मृदंग झांझ ढप और मंजीरन जोरी रे रसिया।
फेंट गुलाल हाथ पिचकारी, मारत भर-भर झोरी रे रसिया।
इत सौं आये कुंवर कन्हैया, उत सौं कुंवरि किसोरी रे रसिया।
नंद गाँव मे जुरे हैं सखा सब बरसाने की गोरी रे रसिया।
दोऊ मिल फाग परस्पर खेलें, कहि-कहि होरी रे होरी रे रसिया।

जब एक दूजे सूं गले मिलैं सबके दिल एक दूसरे से मिलैं। तब वे अपनी पुरानी सब भूलि जांय। बिनकी मन स्थिति बड़ी विचित्र है जाय, फिरि सब मिलिके गावें।

ब्रज की होरी कौ आनन्द तौ अलग ई ए। बसंत पांचें पै होरी कौ डाँडों गढ़तई खेम ब्रज के लोकजीवन में एकदम नई उमंग आ जाइ। कह्यौ करैं ए-'आई माह पांचै, बूढ़ी डुकरिया नांचे।' इतनौ ई नांय लुगाई ऊ खसम सूं कहै फूफाजी अर फागन में जेठ कहन लागे भाभी। फागुन कौ महीना ब्रज में सबसे ज्यादा महत्ता कौ मानौ जाय-

पौरी आगे चिरा उड़ै उड़ उड़ परै गुलाल
भैया होरी आइयें, ए होरी आइए
भैया खेलो गैदोंलो, बाकी भैना खैलै गुलाल। भैया होरी....

इतै भैयादूज की बात भई अरु एक सखी कहि रई ए-

फागुन आयौ ए सखि गयी गाम की नींद।
आंखिन में सौदा भए होटन करी रसीद॥

जैसलमैर माहि ब्रज की गोरी कन्हैया सूं कहै-

मत मारो पिचकारी मैं तो सगरी भीज गई,
मत मारो पिचकारी मारो तो सनमुख मारो,
नहीं तो देऊंगी मैं गारी हो गारी

चार महीने गम खाये पीहर में। कच्ची कली.....
कहियो री उस जेठ भले से
चाल्ला ले करवा फागुन का
कहियो री उस वहू भली से। कच्ची कली.....
कहियो रे उस देवर भले से
चाल्ला ले करवा फागुन का। कच्ची कली......
कहियो री उस वहू भली से
एक महीना गम खाये पीहर में। कच्ची कली.....
कहियो रे उस राजा भले से
चाल्ला रे करवा फागुन कौ
विनु मुकलावा ले जा फागुन में। कच्ची कली......
कहियो रे उस गोरी भली से
ठाड़ा खसम कर लेगी पीहर में। कच्ची कली.....

किसन कन्हैया के लैं वेचैन नाइका अपनी सिंगारिक मानसिकता के काजैं प्रकृति कूं ऊ सामिल कर लेय। नाइका कह रही ऐ कै आम की डारी पै कोइल कूकि रही ए। वेला, चमेलीन के फूल किनने लगाए ऐं, खुद ई बाकौ उत्तर देइ।

जा तरियां वाकी मन की स्थिति कौ पतौ चल जाइ-

वोलै वोलै आम की डार कारी कोयलिया।
कौना लगाए वेला चमेली, माली लगाए वेला चमेली।
कौना लगाए अनार मालिन लगाए अनार। कारी कोयलिया...
काए से सींचो वेला चमेली, पानी से सीचो वेला चमेली।
काए से सींचो अनार, दूदा से सींचो अनार। कारी कोयलिया...
कौना पियारी वेला चमेली राजा पियारी वेला चमेली।
कौना पियारी अनार रानी पियारी अनार। कारी कोयलिया...

माह सुक्ला पांचे सू ब्रज मांहि होली की रंगीनी दिखाई देइ। जितै देखौ वितै वसंतु ई वसंतु। सव के सव मन सूं दिल सूं, ऊपर ते वाहर ते वसंती है जांय। किसन कन्हैया अरु वृसभानु दुलारी राधा की आराधना सूं विरज मांहि होरी सुरू होय। हर एक जवान पै जे सव्द फूट परैं-

स्यामा स्याम सलौनी सूरत कौ श्रृंगार वसन्ती है।
मोर मुकुट की लटक वसन्ती चन्द्रकला की चटक वसन्ती।
मुख मुरली की महक वसन्ती सिर पै पेच श्रवन कुण्डल छविदार वसंती है।

ऐसे अनूठे वातावरन मांहि होली सुरू होइ। होली के मौके पै संकोच कौ कोई मतलव नांय होइ। नायिका एक लोक-गीत मांहि साफ-साफ कहै कै किसन कन्हैया के विना होली कैसें खेलूँ-

मोरे सांवरे कन्हैया विनु कैसें खेलूँ होरी,
दिन चारे सखी री अपने वलम की
हम सों मांगन दो फागुन के दिन
सुना(सोना) हो होला(है) तोला-स दूंगी,
पिया तोला न जाय, पिया न दिया जाय

रत्ती भर घटला(घटेगा तो) माशा भर देऊंगी।
देऊंगी काट के तोल।

ब्रजभासा कौ जि होली गीत गढ़वाल-कुंमायूं इलाके में बड़े चावसूं गायौ जावै।

होली कौ पखवाड़ा तौ मौज-मस्ती कौ पखवाड़ौ ए। राधा-किसन तौ हर गीत में मिल जावै। ब्रज के नर-नारीन के हाथनु में गुलाल होय, मौज-मस्ती होय, हास-परिहास होय, हाथन में पिचकारी होय ब्रज के लोग लुगाई हाथन में अबीर गुलाल लैकें बिखेरते भए होलनि के टोल एक मुहल्ला सूं दूसरे मांहि जांइ, गीत गाएं, गले मिलैं और फिर सब मिलिकैं गावैं-

आज बिरज में होरी रे रसिया,
होरी रे रसिया बरजोरी रे रसिया।
कौन के हाथ कनक पिचकारी,
कौन के हाथ कमोरी रे रसिया। आज बिरज.....
कृष्ण के हाथ कनक पिचकारी
राधा के हाथ कमोरी रे रसिया॥ आज बिरज.....
उड़त गुलाल लाल भये बादर, केसर रंग में बोरी रे रसिया।
बाजत ताल मृदंग झांझ ढप और मंजीरन जोरी रे रसिया।
फेंट गुलाल हाथ पिचकारी, मारत भर-भर झोरी रे रसिया।
इत सौं आये कुंवर कन्हैया, उत सौं कुंवरि किसोरी रे रसिया।
नंद गाँव में जुरे हैं सखा सब बरसाने की गोरी रे रसिया।
दोऊ मिल फाग परस्पर खेलें, कहि-कहि होरी रे होरी रे रसिया।

जब एक दूजे सूं गले मिलैं सबके दिल एक दूसरे से मिलैं। तब वे अपनी पुरानी सब भूलि जांय। बिनकी मन स्थिति बड़ी विचित्र है जाय, फिरि सब मिलिके गावें।

ब्रज को होरी कौ आनन्द तौ अलग ई ए। बसंत पांचें पै होरी कौ डांडों गढ़तई खेम ब्रज के लोकजीवन में एकदम नई उमंग आ जाइ। कह्यौ करै ए-'आई माह पांचै, बूढ़ी डुकरिया नांचै।' इतनौ ई नांय लुगाई ऊ खसम सूं कहै फूफाजी अर फागन में जेठ कहन लागे भाभी। फागुन कौ महीना ब्रज में सबसे ज्यादा महत्ता कौ मानौ जाय-

पौरी आगे चिरा उड़ै उड़ उड़ परै गुलाल
भैया होरी आइयें, ए होरी आइए
भैया खेलो गैदोंसी, बाकी भैना खेलै गुलाल। भैया होरी....

इतै भैयादूज को बात भई अर एक सखी कहि रई ए-

फागुन आयो ए सखि गयी गाम की नींद।
आंखिन में सौदा भए होटन करी रसीद॥

जैसलमैर माहि ब्रज की गोरी कन्हैया सूं कहै-

मत मारो पिचकारी मैं तो सगरी भींज गई,
मत मारो पिचकारी मारो तो सनमुख मारो,
नहीं तो देऊंगी मैं गारी हो गारी

पनि स्याम काहे कूं मानैं, चौंकि वे जानत हैं कैं-

> कहा करूं कित जाऊँ मेरी सजनी
> लाज रही कछु थोड़ी
> मन भायो सो कियौ मनमोहन,
> ऐ मैं सब ही सहोरी।

जैसलमेर में होरी पै 'जिन्दा-जिन्दो' स्वांग तौ होय परि जि होरी खुब गाई जाय-

> छबीलो बन गयौ छैल बिहारी
> आज सखी सोलह वर्ष की नार
> सोलह वर्ष की नार पहन फूलन गजरा सार
> कर गयो बस में आज छैल श्री वृन्दावन वारौ।
> ले गयो अपने लार, यार श्री राधे को प्यारो..।
> मत छेड़ श्याम मैं आज ब्याह कर आई
> कछु करो शरम नहीं खुले भरम यदुराई।

भरतपुर के हुरियारे सुखैया पौराणिक कथानक पै होरी गायौ करते। महाभारत के कथानक पै आधारित जा होरी में अभिमन्यु कौ मैया चक्कव्यूह(चक्रव्यूह) तोरिवे जावे सूं पैलें कहि रई ए-

> उमर नादान है बेटा दूध के दांत हूं ना टूटे।
> पिता तेरे घर नाहि करम सब भांति सौं फूटे।
> बारह बरस बिरत रह मां दुखिया के सूरज कौ टेकौ है।
> तब तू आंखिन ते देखौ है।

सुखैया के मरे पै बिनकी सिस्य मंडली नें जि होरी गाई-

> दुनियाँ में गितारी बहुत भये,
> सुखलाल की ध्वनि कछु न्यारी।
> पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्खन,
> चारों पटिया मधि डारी।
> जेठ लगत शनिवार सातें को सुरपुर पहुँच गये,
> तेरी कुदरत की बलिहारी है भगवान।
> विधि सौं न बसियाय गति जानी न जाय,
> दुख भयौ है अपार, दुनिया पछिताय।
> तैने बिलखत छोड़े चेला तेरो उड़ि गयौ हंस अकेला।।

करौली(करौली) के बहु सिस्य मोहन सिंघ प्रसिद्ध हुरियारे तथा गितारी माने जावैं। 'परदेसी की प्रीति' होरी ह्यां दई जा रई ए-

> परदेसी की प्रीति कौ है ओस को सो पानी
> दियौ करेजा काढ़ि तऊ भयौ नहीं आपनौ।

कोऊ मति करियौ, प्रीति करै तौ ऐसी करियौ
नित उठि है जाय मैली, नहीं सबते भली अकेली।।

गामन में मंदिरन में गाम के रहवैया मस्ती में गाइ उठें-

रंग लूटें रे आज मंदिर में रंग लूटें
कौन सिखर पै गौरी विराजै, कौन सिखर पै मन भोले।
रंग लूटें रे आज मंदिर में रंग लूटें।

ब्रज की विसेस धुनि-डंडेशाही होरी कौ एक नमूना ह्यां दियौ जा रह्यौ है-

फकीर यार फागुन में फेरी कूं आमें,
फागुन में आमें संग टोली कूं लामें।
फकीर यार फागुन में फेरी कूं आमें,
नई रंगत के रसिया सुनाय जामें।
भंग के नशा में, हरिरंग कूं मनामें,
बजरंग कूं सुमिर के आ दंगल में गामें। फकीर....
द्वार द्वार जामें औ सब कूँ रिझामें,
कर चित कूं प्रसन्न रंग-रंगत रमामें। फकीर......
डंडे बजामें कडंगे मिलामें,
बेढ़ंगे खिलाड़ी जाय देख दहलामें। फकीर........
रंगहूं उड़ामें, हुड़दंग हू मचामें,
करवे दरस कूं प्यारी हम स्वांग लैके आमें। फकीर....
'किशोरी लाल' गामें, गा सबकूंई सुनामें
करिबे कूं रिस्तौ पक्कौ हम साल भर में आमें। फकीर....

करौली माँहि होली गायन बसंत पंचमी ते सुरू होय अरु चैत की पांचै तक चलै। मदन मोहन जू की नगरी करौली माँहि गायन ब्रज की तरियाँ होइ। राजा महाराजा नु के आसय में रहिबे वारे मथुरा सूं पधारे चतुर्वेदी समुदाय के लोगुन नैं जा विद्या कूं बढ़ायौ। करौली के महाराजा भ्रमरपाल अरु भूमिपाल नें अनेक कवीन कूं प्रस्रय दीनौं ओ तबई ते होली गायन के राग, धमार, ध्रुपद, रसिया, ख्याल अरु पैचहटा प्रचलित है गए हैं। ब्रज की भांति करौली माँहि धूलण्डी के दिना ढप, ढोल, नगाड़े, झांझ, मंजीरा, हारमोनियम बजाइके होरी गावैं, नाचें, नये जच्चा, बच्चा के संग नाचैं। कन्हैया अरु राधा सब हमजोलीन के संग होली खेलिये निकरते गावें-

आज होरी खेलन चलौ बरसाने को

हां, मिल जाओ सब बूढ़े वारे
लाल हुए नंदलाल सखी, ऐसौ ब्रज में उड़ौ गुलाल।
लाल हो गई धार यमुना की लाल भये गोपी ग्वाल।
लाल बसन तन राधिका के चन्दन कर मेंहदी लाल।
लाल मुकुट माथे पर कृष्ण के लाल हिये मुक्तन माल।
लाल अरतरी वस्त्र पहिने कान्हा नाचे दे दे ताल
लाल लिए संग सखा सब चले लाल मतवाली चाल

इतनौ ई नांय। ख्याल गायक गिरधर नें होरी कौ बखान जा तरियां करौ ए कै जातौं बारहखड़ी समझि जांय-

करत कान्ह कौतुक निशंक भर अंक छिड़कते रंग।
खिलखिलाय खेलते हैं खेल कान्हा राधा के संग।
गोरी-गोरी ग्वालन खड़ी है गोल बाँध इक लंग।
घूर-घूर घूरत घट औघट रास्ता कर रही तंग।
चलत चाल चंचला चपल चतुराई करु चौरंग।
छक छक छकाइ दई बृजनारी जय जय जहँ मारे पिचकारी।
झूम झपट झट जाए लिपट झकझोरे गोरे अंग।
टपके रंग सरंग झपटझट पटकत रंग दबंग।
ठाठ बाट ठाड़ा ठगिया ठग ठठा करत निहंग।
डटे नहीं डाटे सो पकड़ कर कर रयो रंग बिरंग।
ढूंढ ढूंढ ढूंढ़त सखियन ढप ढोल बजे मोचंग।
लिखा ख्याल गिरधर नें बज रहे चौताले चंग।

होरी कन्हैया की नेह लीलान कौ सलौनौ रूप मानौ जाय। गोपीन कौ टौल होइ चाहे अकेली होए-एकली गोपी बिनके रसाभास के लिये कोऊ अंतर नांय। संकरी कुंज गली मांहि-इकली गोपी अरु इकलौ छैल-फगनौटे कौ रसीलौ रूप देखिबे लाइके-

सखी री बंसी बारौ,
सखी री दैया बारौ, मोय लिवाइ लिए जाय।
मृग के नैन जाको दाड़िम सी बत्तीसी,
पट घूँघट की ओट रही जाय।
सकरी गली गली में ठाड़ौ हां करूँ तौ हाँसी आवै,
ना करूँ तौ मेरौ जिया जाय।
नैना कजरारे जाकी भौंह हैं कटीली,
दिया जिया मैरौ छलनी बनाय।
आगि लगै या होरी के माथे-जानै चौंरे में दई लुटवाय।

मन मोहन कन्हैया सूं होरी खेलिबे की मंशा आजु पूरी है जाएगी ताई सूं गोपी सजि रई ए, संवरि रई ए चौंकि मनमोहन आवे वारे ए-

होरी खेलूंगी मनमोहन आवनहार।
उबटन मज्जन करि लियौ सजनी तन, सज साज सिंगार।
हाथन मेंहँदी पाँय महावर काजर लियौ लगाय।
बेसर कौ मोती अति सुन्दर, सौंधे भीने वार।

होरी के दिना या गोपी की साध पूरी होय ए। संजोए भए रंगीन सपनेन कूं पूरौ होत देखि रई ए।

राग-रंगाई अकेले होरी के बिसय नांय। समय के संग जामें अनेक बिसय अपनें आपु जुड़ि जाएं। रास्ट्रीय भावना

ऊ जुड़ि जांय। ये हुरियारे तौर-तौर के विसयन कूं समैट लैं। शिवाजी अरु राना प्रताप सूं लैकें भगत सिंह, गांधी जी तक सबई नैं देसप्रेम की होरी खेली ए। सुतंत्रता के तांई त्याग भावनान की मटकी में संगठन को रंगरसि उंडेली ए-

खेलौ री देसप्रेम की होरी।
रंग संगठन कौ मिलि-त्याग गगरिया कोरी।
तीन रंग की लै पिचकारी, निर्भय है कै बढ़ौ अगारी।
देखौ अपनी-अपनी बारी खूब करौ बरजोरी।
राणा शिवा सहज हो खेले, तन पै कस्ट अनेकन झेले।
खेले भगतसिंह अति प्यारे, राजगुरू सुखदेव सितारे।
बापू खेले हरि के आगे, हम खेलत रह गए अभागे।
डटे रहे सब ममता त्यागे, प्रीत राष्ट्र सौं जोरी।

जा तरियाँ होरी के हुरियारेन नैं देस कूं सुतंत्र कियौ। देस के विकास कौ बीड़ा इननें ई उठायौ। चाए स्वेत क्रांति होइ, चाए हरित क्रांति, चाए परिवार नियोजन होय, चाए सहकारिता कौ संदेस, ऐसे हुरियारेन नैं होरी कौ दर्सन क्रांति किसोरी के रूप में कर्यौ ए-

ठाड़ी क्रान्ति किशोरी।
खेलौरी इनसौं मिल जुरि करि कै होरी।
हरित क्रांति कौ हर सौं खेलौ-नव उपकरण बटोरी।
स्वेत क्रांति कौ दूधन खेलौ, बात करौ मत कोरी।
खान कारखाने में खेलौ, रोकौ रिश्वत खोरी।
ठाड़ी है क्रान्ति किशोरी।

जिय मानौ आवै कै मथुरा तीन लोक सूं न्यारी ए। जब मथुरा तीन लोक सूं न्यारी है तौ ब्रज की होरी ऊ सबनि की होरी सूं न्यारी होय। सब जगै तौ होरी होय परि ब्रज मांहि होय-होरा।

ब्रज में 'होरा' च्यों है याकौ कारन बतावति भई एक गोपी कहि रई ए-

देखो है ई देस निगोरा, जगत होरी ब्रज में होरा
लाज रहै चाहे जाऔरी सजनी नाहै सरम कौ ओरा
कहा वृद्ध कहा तरन छोहरे,एक ते एक ठठोरा
न काऊ कौ काऊ सौं जोरा।

ब्रज कौ हर घर होरी के रंग सूं चमकै-चहकै। या होरी कौ रंग बरसाने में जैसौ बरसै वैसौ तीन लोकनि मांहि नांय मिलै। गोपिनि के सुर में सुर मिलायकै ब्रज की नारि, ब्रज की ललना होरी कौ नौंतो दै रई ए-

खेलुंगी तोते रंग होरी बरसाने में अइयो राधेश्याम
अरु
कान्हा बरसाने में आ जइयो, बुलाइ गई राधा प्यारी।

परि दूसरी ओर ऐ-

ए लंगुरिया हँसि मति अइयो काऊ और ते
मैं मरूंगी जहर विस खाइ।

चैत महीना के धुरैंड़ी अरु भैया दूज की चर्चा तौ करि चुके एं। अब बचि गयौ ऐ-बासौरी, नौ दुर्गा, गणगौर, देवी आठैं और रामनौमी। बासौरा सीतला सातैं कूं होइ अरु कछु सीतला आठैं कूं मनावैं। बासी सामान सूं सीतला माता पूजी जाय। जा दिना बासौ खानौ खायौ जाइ। ठंडौ खायौ जाइ।

चैत महीना की (सुक्ल पाख) पैले पखवारे की पड़वा सूं नयौ संमत सुरू होइ। जाई दिना सूं सरू होइ नौ दुर्गा। ब्रज की बैयरबानी आठ दिनान तक ब्रत रखैं फिर नौवें दिना बाय खोलैं। कछु तौ आठैं कूं देवी कौ पूजन करैं अरु कछु नौमी कूं करैं अरु कन्या लांगुरऊन कूं जिमावैं। नौ दुर्गानि में जागतु होइ। भगत आवैं, जागन्नु में माता की भेंट, मोहन दे, सुआ बेयरा, सौरंग दाने की जुरतु, पलका चढ़ाई, जगदेव अरु देवी के साहिले, अहिरावन लीला गावैं। तीज कूं गनगौरि कौ मेला भरै, पूजा होइ।

देवी के गीत द्वै तरियां गाये जांय। फुटकर गीतनि में देवी की प्रार्थना, स्तुति, पराक्रम कौ उल्लेख, स्थान तथा शोभा कौ वर्नन, जात की तैयारी अरु जात्रीयनि की कठिनाई गाई जाऐ।

एक जनानी अपने पति सूं कहै कै 'चालि पीया दोऊ मिलि जायें, परसें देवी जालिपा औ माय।' पति जात कूं न जा पाइवे की अपनी दिक्कत बतावै। पत्नी नें सब दिक्कतन कूं दूरि करिवे कौ समाधान बताइ दीयौ। चैत महीना में पंडित कूं बुलाइ कै पोथी देखि कै सनीचर की सातैं कूं चालिवौ तै है गयौ। पत्नी आंगन लीपि रई ए, मां चौक पूरि रई ए और भैन टीके की तैयारी करि रई है परि 'घर ही में बयुल बरजन लागे कठिन पंथ देवी कौ देवी कौ।'

भैया सिंह दहाड़ कजरी कौ,
बारह कोस बनहि बन कहिये सिंह दहाड़ कजरी कौ।

लपई बेटा कहै 'सिंहै मारि जालिपा परसौं, तौ बालुक जननी कौ' जाती कूं तौ मां के जौरे जानौ होइ चौंकि मांऊ बाट जोह रही ए-

मैया लेहु कसनि कसु डारि जियरा मेरौ तोई सौं लगौ
पर्वत चढ़ि कैं देखै मोरी माय जाती मेरौ कहाँ बिलमौ।

सब दिक्कतन लाँघि कै जात्री मैया के मंदिर के जौरें पहुँच गयौ ए। मंदिर कैसौ ए जा बारे में जात्री कहि रह्यौ ए-

दुखहरनी मैया मेरौ दुख तुम न हरौ,
काहे कौ मन्दिर मैया कौ ए दुखहरनी मैया
काहे के लागे चारों खम्भ,
सौने कौ मन्दिर मैया कौ, ए दुखहरनी मैया चंदन चारों खम्भ।
तोइ सुमरि मैया तेरौ छंद गाऊँ, दुखहरनी, मैया जग में होउ सहाई।

मां कूं खोजि भीतर आयो जात्री। जात्री मां के भवन में पौंच गयौ ए परि माँ नांय मिली। बू प्रार्थना करि रह्यौ ए, माँ भवनि माँहि आओ मैं तौ तेरी आस सूं आयौ हूँ-

एक बनु कहियत फूलनि कौ फूल रहे मेहकाय देवी जी बिराजि रही वाई बन में।
एक बनु कहियत लौंगनि कौ लौंग रहीं मेहकाय देवी जी बिराजि रही वाई बन में।

माँ रानी के बन माँहि लकड़ी बीनबु कूँ गई तासूं मंदिर माँहि नांय हति। एक-एक लकड़ी बीनि कै बानैं जूने सूं गठरी बाँधी, तबई फाटक पर असुर आइ गयौ बानैं मां की निरारी लकड़िया बिखेरि दीनौं। जाइ देखि कै मां नें अपने लांगुर वीर कूं टेर दई-

नौ-नौ ठौंको कोल दरदु नैंको मति करिओ।

असुर की चतुर नारि नैं अपने असुर कूं समझाइ कै मां के चरननु में भेज दयो। असुर नें मां के चरन पलोटे, इक इक लकड़ी थौनि कै मां को गठरी बांधि दई। तब मौं पिघलि गई वाकी सेवा सूं और कहिवे लगी-

सुनि रे लांगुरिया वीरु असुर मेरे चरननु आयौ,
नौ नौ खैंची कोल कसरि नैको मति राखियो।

मां 'फूलनि की लोभिनियां ए जाई सूं नन्दन वन चली जाइ। वाके दुआर पै खड़ौ अंधौ आँखि मांगि रह्यौ ए, कोढ़ी ठाड़ौ काया मागि रह्यौ ए, बाँझ खड़ी है कै पूत मांगि रई ए अरु निरधनु धनु को पुकारि करि रह्यौ ए। मां अपने भवन में नांइ, लांगुर इतै-उतै देखि रह्यौ ए-

ना तेरी मैया सोइ गई है परि ना गयी धरती समाइ।
कनहिं जाती कैं होम रच्यौ ऐ परि मांह रि जगो सिव राति।
धुजा औ नारियल लौंग सुपारी जे मोपै दए ऐं चढ़ाइ
सौने कौ दिवला कपूर की बाती परि आरति लइ है उतारि।

मां अपने भवन मांहि लौटि आई। सिगरे जात्री मंदिर के कपाट खुलिवे को कहि रहे ए। किवाड़ खुलि गए, जात्री देखि रह्यौ ए-

भमन में लटकि रहे फुंदना,
हरी हरी गुयरा पियरी सी मांटी तो रोजु लिपाऊँ अँगना,
नंगेउ पाइनि आमैं जाती अरे हाथ जगड़ा
नंगेउ पाइनि आमैं तिरआ तौ हात लओ गडुआ
अरु लट छुटकामें मैया आमै गोद लओ ललना।
कर दे जोरि के ठाड़े जती अरे देत गउंनि की दच्छिना।
तोइ सुमरि मैया तेरौ छंदु गाऊँ औखा मैं होउ सहाई।

जात्री नैं देवी कौ कन्या रूपु ऊ देखौ ए-'कन्या रूप भमानी मैंने आजु देखौ', 'इस देवी के वर अगवारे, वर पिछवारे पीपर धर्म द्वारे ' है।

देवी की पूजा के काजैं जात्री तरै-तरै की तैयारी करै। भक्त इस्त्री कहै कै 'लेउ मैया वीरा, मैं कब की ठाड़ी।' अरु 'ध्वजा-नारियल' अपने राजा सूं चढ़वावैं लाल, होराउ संग में चढ़वावै। मैया वरु मांगिवे को कहि रई ए, इस्त्री कहि रई ए 'राज पाटु मैया तेरौ दऔ ऐ रजवै अमर करि दीओ, मैया कहै, 'जा धरती पै रानी कोई ना अमर है, रजवा अमर कैसे हुइ है।'

'अमर जलफदे की चुंदरी कहिए, अमर लंगुरिया की पगिया।'

जात करिकै जाती जब लैटे तौ यु यतावैं वां का होय-

अंधेनु नेत्तर दै रही, कोढ़िन काया दै रही,
बाँझन पुत्तर दै रही, सुरति थाई देश की।

कैला देवी के दरबार में 'जोगिनी' अरु 'लांगुरिया' बनि कै जाय। खुले भये केश, भूरी भक्त, धौरी कोरी धावती पहिन कै, हरी चूड़िन सूं हाथ भरे भये। नदी मांहि नहाय कै नारियल अरु पुजापा चाढ़इके, देवी मैया के दरसन करिकै बस गयौ

दे हैं जोगिनियाँ। सिर पै लाल टोपी, हाथ में लाल ध्वजा, ये हैं लांगुरिया। भक्ति भाव सूँ परिपूरन कैला मैया के दरबार में पहुँचि के गावे लगें-

दुनियाँ में रोशन है नाम करौली वारी कैला का,
दूर दूर से जात्री आय, सुनि-सुनि तेरो नाम, करौली वारी कैला का।
पीकर मद का प्याला, भवानी मैया सिंह चढ़ी।
कैला माँ सिंह चढ़ी पीकर मद का प्याला,
खड्ग, खप्पर, कृपाण हाथ में और सम्हाले भाला।
भवानी मैया सिंह चढ़ी पीकर मद का प्याला,
[illegible], भैरों, छप्पन, कलुआ हनुमत है मतवाला
भवानी मैया सिंह चढ़ी [illegible] वन में दानव मारे,
चढ़े रक्त का नाला,
भवानी मैया सिंह चढ़ी राजा नल की भई सहाई
कर दियो मेल [illegible], भवानी मैया सिंह चढ़ी।

कैला मैया करौली राजवंश की कुल देवी ए। जिनकौ जस चारों ओर फैलि रह्यौ ए। राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, दिल्ली अर महाराष्ट्र तक के लोग लुगाई जोगिनी अर लांगुरिया बनि कें माँ के दरबार में आवें। दरबार में आवे के वखत वे सुधबुध खोइ कें मतवाले बनि जावें, लोकलाज कूं त्याग कें [illegible] अर नगाड़ेनु पै फिरकनी सी फिरी उठें, सास ससुर कौ [illegible], मैया-भाव सूं हुलस नाचें, अपने नाचे कौ भान नांय। मैया की भक्ति भाव कछु ऐसे ए-

जोगिन चलीं मरोड़ा चाल, दिखाई रंग जवानी को,
सूधे [illegible] मन नहीं भावे रंग [illegible] बढ़ता जावे
जब जन्म की चली ओढ़ि, हुलसी [illegible] को
जोगिन चलीं मरोड़ा चाल, जोगिन नें चढ़ रही जवानी
जब जन्म की दीवानी, रस रह्यौ नहीं [illegible] दीवानी को।
जोगिन चलें मरोड़ा चाल।

अब कुछ मैया की बात ब्रज में करैं तौ 'लांगुरिया' अपने ई आपु आ जाइ। माँथे पै सिन्दूर, शरीर पै लाल कपड़ा, पैरनु में घूंघरू अर कमर में लंगोटा अर [illegible] ऐसौ ए जि लांगुरिया। गावे कौ आगमु होइ, जात होइ लांगुरिया सबसूं आगे।

लांगुरिया सूं जब उनके पूछौ तौ कहिबे लगौ, 'बम्मन के हम बालका, उनने तुलसी पेड़, 'लांगुर कौ मैया सोचति ऐ के यू कछु [illegible] पै यू' [illegible] खाइ।' लांगुर मैया कौ बड़ौ प्यारौ ए, विनकौ सहायक ए, अर आज्ञाकारी ए। देवी मैया की पूजा कैबे के उपरान्त भक्त वाकी सेवा करिबौ करें। एक भक्त तौ सारे दिना गांजौ पिलावै, '[illegible] भर दिन तक लांगुरिया बड़ौ रिझैया गांजे कौ।' जोगिन-भक्तिन तरै तरै सूं लांगुरिया कूं रिझावे- 'कबकैं कारी [illegible] में रहन न लागें लांगुरिया'। कहकें सावधान करें। कबऊँ नक्खर बनाइ जाइ-

ए लांगुरिया तेरौ धन खाइ गई कारे नाग नें,
और ए लांगुरिया कछु खाइ, कछु डसि लई, और कछु मारी फुसकारि
अर
'नांच भयौ ऐ पौरिया मैया लांगुरिया नाचौ तौ दिखाऊं काठ पेट कूँ।'

[illegible] देखि जोगिनि पूछिबे लगीं 'काहे आये मेरे कक्खर में बजाय दे लांगुर ढोल।' अर रस्ता में देखि [illegible] [illegible] लांगुरिया'। जब लांगुरिया ने जोगिनी सूं पूछौ तौ जवाब मिलौ- 'कैला मइया के दरसन जब आई लांगुरिया।' जब प्रेम उमग दिखै तब कहिबे लगौ 'हम लुटिया तुम डोर सरक चलौ जाइ वन में।' परि [illegible] है है-

करि लीए दूसरौ ब्याउ लांगुरिया मेरे भरोसे मति रहियो।
मोइ लीपि न आवै लीपनौं और काढ़ि न आवै खूंट
मोइ पीसि न आवै पीसिनौं और ढारि न आवै कौरू
मोइ रौंधि न आवै रौंधनौं और मोइ परसि न आवै थारू।

मालिनों सूं पूछो कै जि मूंदरा किन नै गढ़वायौ ए, लांगुर नैं गढ़वायौ ए, हाथनु को मैंहदी लांगुर नै रचाई ए, तेरो गोद के लला की छवि लांगुर पै जाय। तव मालिनी अपनौं भावु नांय छिपाय सकी और कहिवे लगी-

ना काऊ के घर गई ना मैंने लीयौ बुलाइ। अनौखी मालनियां
रस कौ बोध्यौ लांगुरा, आइ गयौ मेरी सेज। अनौखी मालनियां

लांगुरिया जोगिनीनि के बीच में कूदतो-फांदतो मिलैगो जा तरियां-

दो दो जोगिनी के बीच अकेलौ लांगुरिया
एक जोगिनी यों कहे तू चूड़ला ला दे मोय
दूजी जोगनी यों कहैं तू नथ गढ़वा दे मोय।

समसामयिक बोज अर भाउ लांगुरिया के माध्यम सूं सबके सामने आ जाए, उजागर होय। सिंगार के संग [illegible]-

लांगुर दसमी फेल विचारौ जोगन भई एम. ए. पास।
कपड़ा छोटे तंग पहरतो *गिटपिट गिटपिट करे है*

सुन्दर बड़ौ यू मन में बनतौ, भोरो बलम बनाय लियो वाने पल में अपनो दास
डीजल फिर फिर मेंहगौ होय
फसल कैसे होयगी लांगुरिया।

जा। करिवे वारी दीवानी अरु मतवाली जोगिनीनि की सबई भावनायें मैया के दरबार मांहि सिमट कै समुद्र [illegible] हिलोरे लैं, *जगै कम पड़ि जाय, नाचु और गानेंनि के बीच मांकौ आंगन चौंक थोड़ौ परि जाय।* तब सबई [illegible] के मन में जि विचार आवै-

दे दे लम्बौ चौंक लांगुरिया, बरस दिना में आमेंगे
अबकी तो हम इकले आये, अबकी जोड़े से आमेंगे।
दे दे लम्बौ चौक लांगुरिया, अबकी तो हम जोड़े से आये,
अबकी लला ऐ लावेंगे दे दे लम्बो चौक लांगुरिया
अबकी तो लाला ऐ लाए, अबको बहुवें लावेंगे
दे दे लम्बौ चौक लांगुरिया

आखिर जि लांगुर या लांगुरिया को ए। डा विद्यानिवास मिश्र कैला मैया के संग लांगुरिया को सम्बन्ध वैदिक [illegible] अरु रिसा के सम्बन्ध की याद कौ स्मरन दिवाइवे वारौ मानैं। डॉ. मनोहर शर्मा को मानिवौ ए कै राजस्थान मे '[illegible]' के सेवक भैरव कूं 'लूकड़ियौ' कहो जाय, जो हिमाचल प्रदेस के 'लौंकड़ा' सूं मिलतौ जुलतौ ए। [illegible] ब्रज मे 'लांगुर' के रूप में प्रचलित ए। डॉ. सत्येन्द्र मानैं कै कैलादेवी के मन्दिर के सामनै लांगुर कौ मन्दिर ऐ। लांगुर की मूर्ति [illegible] हनुमान जी की ऐ। लांगुर ज्यौं कौ त्यौं हनुमान ऐ। अब संका के लिए कोई गुंजायस नांय कै लांगुर की व्युत्पत्ति 'लांगुल' सब्द ते भई है।

[illegible]
[illegible]



मैं ब्रज की गोपिका नवेली
राधा रंगीली मेरो नाम
कि यंसी यजाय जइयो।

ब्रज प्रदेस मे गिर्राज महाराज की परिक्रमा की अधिक मान्यता है तबई तौ भक्तन नें इनकी महिमा या तरियां गाई ए-

तेरौ जनम सफल है जाए
लगाय लै रज ब्रज धाम की
काट दें पाप तेरे ब्रज राज
लगाय ले परिकम्मा गिरिराज की
बनें तेरे बिगरे सब काज।

करौली वारी कैला दैवी की आराधना में लांगुरिया लोकगीतन कौ महत्व और प्रचलन भी कम नांऐं। भक्तिभाव की एक छ्टा या गीत में दिखाई पड़ै-

करि लै दर्सन कैला मां के लांगुर
जनम सुफल है जाए
अपने भगत की मात भगवती
हरदम करै सहाय
दीनन के दुख हरती मैया कारज
देय बनाय॥ करि लै.....

प्रकृति नें वर्षा ऋतु कूँ आमंत्रित कर लीयो है। घनघोर वर्षा है रही है और श्यामा प्यारी राधिका जी झूला पै झूल रही है-

झूले पे झूले प्यारी राधिका जी
ए जी कोई गावत गीत मल्हार
नन्नी नन्नी बुंदिया मेहा बरस रह्यो जी,
एजी कोई बरसत मूसरधार
झूले पे झूले प्यारी राधिका जी।

ब्रज प्रदेस की होरी की अपनी विशिष्ट परम्परा है। समूचे भारत सौं भक्तगन या पावन भूमि पै आध्यात्मिक मूल्य पै आधरित कृष्ण व राधा की प्रेम रंग भरी, लौकिक भावन सौं जुरी होरी कूँ मनाये कूँ मथुरा, वृन्दावन, नन्दगाम और बरसाने में इकट्ठे होवें हैं। मुझ सी अधम अज्ञान कूऊं वहां होरी मनायवे कौ दुर्लभ औसर प्राप्त है चुकौ ए। कछु भीतर्ई प्रचलित होरी गीत है-

मेरे जोरें आ स्याम तोपे रंग डारूं
रंग तोपे डारूं गुलाल तोपे डारूं
अरे तेरे गोरे गोरे गाल गुलचा मारूं। मेरे जोरें
उड़त गुलाल लाल भये बादर
अरे बरसाने आज मची होरी। मेरे जोरें
चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण छवि

तन मन धन सव तोपे वारूं
राधे संग श्याम खेलें होरी राधे संग।
इत अगनित सखियन सगं राधे
उतऊ सखन श्यामऊ जोरी।
फाग समर आंगन वृन्दावन
मिले दोऊ दल झकझोरी
उड़त गुलाल लाल भये वादर
लाल लाल भई व्रज खोरी। राधे संग.....

परम्परानुसार शिवरात्रि के दिना सौं वरसाने में होरी चौपई राधा रानी मंदिर सौं प्रारम्भ हैकें अन्य स्थान कूं प्रस्थान करैं हैं। गहवर वन परिक्रमा, प्रियाकुंड पै स्नान के संगई होरी उत्सव कौ कार्यक्रम प्रारम्भ है जाए।

सप्तमी के दिना वरसाने सों एक सखी गुलाल की हंड़िया लैकें नन्दगांम श्री कृष्ण कूं होरी खेलवे कौ न्योतो दैवे जाए है। दूसरे दिना अर्थात् अष्टमी कूँ श्री कृष्णा अपने एक सखा कूं वरसाने में होरी खेलवे की सूचना दैवे कूं भेजें हैं। जे सखा वरसाने की गलीन में कूदतौ नाचतौ होरी खेलतौ, और पकवान खातौ, लाढ़ली जी के मंदिर में पहुंच जाए। वहां गोस्वामी परिवार के सांमई नाचै है। या औसर पै जे पद गायो जाए-

नन्दगांव को पाण्डे ब्रज वरसाने आयौ
भरी होरी के वीच सजन समध्याने आयौ
अरे हां....हां......हो..................
पांडे जी के पांयन कूं हंस हंस सीस नवायो
अति उदार वृषभानुराय सम्मान करायौ
अरे हां.....हा...

समाज में प्रथा चली आ रही है कि लड्डू पेड़ान कौ भोग लगायो जाए है। जे लीला अति दुर्लभ दर्शनीय है। वृपभानुराय द्वारा श्री कृष्ण जी के दूत के सम्मान में गारी दैवे की प्रथा वहां के लोकजीवन व संस्कृति कौ परिचायक है। कवि नजीर-कृत गारी प्रस्तुत है-

नवरंग माय तिहारी लला नवरंग
समधिन समध्याने आये ये तो कीरती न्यौंति वुलाई लला
याकी चोटी लटके वाहर, छवि स्यौंपिन सी सटकारी लला
ये वड़े-वड़े महाराज, करजोर रहे ढिंग-ठाड़े लला।
ये मीर मुगल महाराज, याने छोड्यो नाहिं कोई लला।

या तरियां अत्यन्त उल्लास और प्रेमानन्द के वीच या अष्टमी की होरी कौ उत्सव सम्पन्न होवै है। नौमी कौ उत्सव सवसौं अधिक भाव-भक्ति पूर्ण अलौकिक सौ है। श्री राधा रानी की नगरी वरसाने के गोस्वामी जी कूँ राधा रानी की सखी भाव सूं भावोत्पन्न होय है।

चौपई गाते भये, होरी गाते भये, ढप-ढोल, मृदंग, नगाड़ा, झांझ, झालरी, चंग, उचंग वजाते भये नाचते गाते गुलाल उड़ाते रंग सौं भरी पिचकारी चलाते नन्दगांव के गोस्वामीन की अगवानी व मोंह मुड़ाया करिवै प्रियाकुंड तक जावै है। वितकूं नन्दगांव के गोस्वामी ढाल पिचकारी लै गुलाल की फैंट कस कै श्री जी के मंदिर में आवे कूं आतुर होय हैं। प्रिया कुंड पै आकें और भांग घोटते भये या गीत कूं गावें-

गहरे कर यार अमल पानी गहरे कर
ले चली है बरसाने तोको
होय मानघर अगवानी। गहरे कर....
उड़द की दार गैंहुन के फुलका
ऊपर खांड खुरासानी। गहरे कर....
पुरषोत्तम भृगु कुंवर लाड़लौ
तेरे मन को हम जानी। गहरे कर....

फिर प्रथा पूरी कर कै आपस मे गुलाल लगावैं। फिर कहें हैं आज रंग होरी है।'कोई बुरो भलो मत मानो आज रंग ब्रज होरी है' कहते भये भीतर आवें। मंदिर श्री लाड़ली पै दोनों पक्षन के गोस्वामी वैठें और ये पद शुरू होवै-

अति रस सरस्यौ बरसाने जू
राजत रमणीक रवानों जू
जब दिन होरी को आयो जू
न्यौंतो नन्दगांव पठायौ जू
सुन कैं मनमोहन धाये जू
सब सखा संग लै आयो जू
श्री जसुमति न्यौंत बुलाई जू
समधिन समध्याने आई जू
जब कर गहि ढिंग बैठारे जू
गावे गारी ब्रज नारी जू

मंदिर में पूरी परम्परा है जावे पै सायं 6 बजे परचात , मंदिर सौं उतरि कैं भगवान श्री कृष्ण के सखा अपनी सुसज्जित ढाल लैकें लाल पीली गोटेदार पगड़ी बाँधे रंगीलो गली में आ जाए है। बरसाने की ब्रज गोपिका सुसज्जित हैकैं आनन्द सौं भरपूर अपनी लाठीन कूं लैकें उनकी प्रतीक्षा में होय हैं।

-68/132, प्रतापनगर, सैक्टर हल्दी घाटी,
सांगानेर, (जयपुर)



ब्रज के लोकगीतन में पारिवारिक सन्दर्भ

-डॉ. त्रिलोकीनाथ 'प्रेमी'

यों तौ लोकजीवन अरु संस्कृति ते जुरी भई हैवे ते लोक साहित्य की सगरी विधा अपने आप मैं मधुर एवं आकरसक होंय पर लोक संगीत अरु आत्मानुभृति की संवेदना सरसता की विग्रमान्यताते लोकगीतन कौ रूप अरु प्रभाव अलगई दीख परै। कानन मैं परतेई विनके मीठे बोल अरु लोक-संगीत के सुर हिये कूँ जैसें बाँध लैं। मन वरवस दूर ते आते विन सुरन की गैल में पग धरिवे लगै। तवी तौ लोकगीतन की चुम्बकीय छमता अनूठी होय। लोक मानस की अंत: सक्ति अरु सुन्दरता इनमैं लयालय भरी रहै अरु ये जन जीवन पै अविच्छिन्न रूपते छाए भए रहैं। इन लोकगीतन की अवाध धारा न कवहुँ अवरुद्ध होय अरु न कवहूँ टूटै। युगीन चेतना नए-नए संदरभनिते जोरिकैं इन्हैं औरऊ तीव्र वनावै। याई लियें इनकी अविच्छिन्न-अच्चुण्ण परंपरा में भूत, भविस्य, वर्तमान की विभाजक रेख नहीं वन सकी है अरु मौखिक-रूप मैं ये पीढ़ी दर पीढ़ी जीवित हैं। अनुभूति की गहराई अरु अभिव्यक्ति कौ प्रकृत संतुलन इनकी अपनी सुन्दरता है। लोकजीवन अरु संस्कृति कौ पूरौ वैभव इनमैं प्रतिविंवित होय। व्रज के लोक गीतऊ या विचारते अनूठे हैं। पारिवारिक जीवन के सम्वन्ध-संदरभ इनमैं यहाँ के परिवेस के अनुरूप व्यंजित भए हैं।

व्रज प्रदेस मूलत: गौ पालक अरु कृषि प्रधान प्रदेस रह्यौ है। आजऊ व्रज के गामन मैं अधिकांस लोगन की जीविका कौ आधार येई दो व्यवसाय हैं। इन दौनोंन के तांईं एकाधिक आदमीन की जरूरत होय। संभवत: याई लियै ह्याँ संयुक्त परिवारिन की परम्परा रही है। वाखर अरु कुटम्बन के रूप मैं अवउ जे देखी जाय सकै। चूल्हे भलैंई अलग-अलग वन गये होंय, पर कृषि अरु पसून मैं साझे की ई व्यवस्था देखी जाय। वाहर के कामन में पुरुषन कौ जितनौ दाइत्व होय, घर के भीतर महिलाई सव कछु होय। परिवार के सगरे सदस्य एक दूसरे के संग अनेक संवन्ध अरु रिस्तेन मैं वंधे रहैं। कोई अपने वड़प्पन की अधिकार लिप्सा मैं आवद्ध होय, तौ कोई मौन अपने कर्त्तव्य पालन मैं दतचित्त। कवहूँ कोई काऊ के प्रति सिकवा-सिकायत करै, तौ कोई काऊ पै रौव जमावै। कवहूँ कोई काऊते अपने तन मन की वात कहै, तो दूसरौ वाके सहारे अपनी स्वार्थ-पूर्ती कौ साधन खोजै। कहूँ कोई अपने छोटेपन मैं दवतौ चलौ जाय, तौ कहूँ कोई अपने वड़ेपन की ऐंठन में काऊ कूँ कछु समुझैई नहीं है। या प्रकार संयुक्त परिवार के सदस्य सर्वथा एकमत अरु परस्पर सहमत नहीं होंय। आपस मैं खड़खड़ाइवे की प्रकृति याई कौ परिनाम है। कवहुँ प्यार अरु कवहुँ लराई व्रज के पारिवारिक जीवन की अपनी कहानी है। याई ते ह्याँ जे कहावत प्रचलित है-'चार वासन हुंगे तौ आपस मैं खनखनाविंगेई' अकेलौ आदमी कौनते लरैगौ अरु कौनते प्यार करैगौ? याई ते या संयुक्त परिवार व्यवस्था में एक ओर माहूँ ऐसे सम्वन्ध पोषित होंय, जिनकौ आधार सहज सनेह अरु सास्वत अपनत्व होय, तौ दूसरी ओर माहूँ परस्पर व्यंग, कटाच्छ, स्वार्थ, आलस, अरु अंहकार के मारे इनके घनत्व में दरार परिजाय, ऐसेऊ संवंध होंय। पहले प्रकार के स्नेहिल प्रेममय अरु वात्सल्यपूर्ण संवन्धन मैं पिता-पुत्र, पिता-पुत्री, माता-पुत्र, माता-पुत्री, भइया-वहन, पति-पत्नी, एवं देवर-भाभी आदि के संवंध हैं। दूसरी तरह के संवंधन मैं परस्पर कटुता अरु तनाव की स्थिती वनी रहै-जैसे सास-वहू, ननद-भौजाई, दयौरानी-जिठानी, अरु सहपत्नी आदि के संवंध। सांस्कृतिक अरु अन्यान्य औसरन पै

एवं रितुपरक लोकगीतन मैं इनकौ यथार्थ-जथावत रूप देख्यौ जाय सकै। नीम अरु मिसरी कौ संग-संग कर औपन अर मिठास ब्रज के इन पारिवारिक संबंधन की निजी विसेसता है। लोकगीत काऊ भाषा, बोली अरु अंचल के च्यों न होय, जो यिनकोई सामर्थ है कै सामाजिक-पारिवारिक जीवन ते जुरे भये अनेकानेक संबंधन एवं सन्दरभन के बाहर-भीतर के तन-मन के कहने-अनकहने, खट्टे-मींठे, मुक्त-प्रमुक्त, देखे-अनदेखे, प्रतच्छ-परोच्छ अरु अपने-पराये सब तरह के मार्मिक सांचे कथ्यन कूँ, अनुभव अरु अनुभूतीन कूँ सहज-सरल अरु सरस-संगीतात्मक भाषा में व्यंजित कर दें। फिर ब्रज की भाषा-बोली कौ तौ लोच-लावण्यई कछु और है। इन सन्दरभन कूँ ह्याँ के लोक-गीतन मैं निम्न रूप मैं आँक्यौ जाय सकै-

पिता और पुत्र-पुत्री के संबंध-सन्दरभ-

बुढ़ापे कौ सहारौ अर परिवार की बेल कूँ बढ़ाइबे के मारें पुत्र कौ अपनौ अलगई महत्व होय। फिर याके बिना अंतिम गति हूँ नहिं होय। तबई तौ बाप बेटा के तांई सब कछु करै। 'खोटौ पइसा अरु खोटौ बेटा समै पै काम आवै' जो कहावत याई ते प्रसिद्ध है। पर ब्रज के लोकगीतन मैं बाप-बेटा के संबंधन की चरचा नहिं मिलै। अनेक लोक-कथानकन मैं जरूर याकौ निरूपन भयौ है।

बेटा की तुलना मैं बेटी कौ जनम बाप के तांई बितनौं सुखद नहीं होय। बेटी पराई धरोहर होय। कुमारी अवस्था मैं ई याके ब्याह की चिंता यांकू घेरबे लगै। न जाने कहाँ-कहाँ बाय झुकबे कूँ बियस होनौ परै। फिरऊ, बाप के हिये मैं याके तांई प्यार दुलार की कमी नहीं होय। बेटी के ब्याह के समै जो सहज प्यार उमड़बे लगै-

> मैया नैं दीने अन-धन कंगना, बाबुल नैं दीनों दहेज।
> मैया के रोये नदी बहति है, बाबुल के रोए सागर-ताल।

ब्याह के लोकगीत-

ब्याह के औसर पै बेटी की बिदा बेला मैं जो लोकगीत गायौ जाय, बाय सुनिकैं तौ करेजौ जैसै फटिबे लगै, करुना कौ उद्रेक सबकी आँखिन कूँ भिगोय दे-

> काहे कूँ जनमी ए धीय रे, सुन बाबुल मेरे।
> हम तौ रे बाबुल तेरे खूँटा की गैया
> जित हाँकौ हँक जांय रे ॥ सुन . ॥
> हमतौ रे बाबुल तेरे पिंजरा की चिरियाँ-
> जब खोलौ उड़ि जांय रे॥ सुन... ॥

मैया-बेटा के संबंध-सन्दरभ-

माँ-बेटा के संबंध की चरचा ब्रज-लोकगीतन मैं अनेक स्थलन पै मिलै। यौं बेटा-बेटी दोनों एकई कोख ते जनम लें और मैया समान प्रसव-पीड़ा सहन करै। फिरऊ, बेटा के तांई याके हिये मैं अगाध सनेह होय। आखिर बिना बेटा के वो निपूती हैबे ते घर-परिवार अरु बाहर सर्वत्र अपमानित होय। सास-ननद के तीखे बोलन कूँ सहन करै अर पतिहू बाय परित्यक्ताकर देय। बिना बेटा की मैया कौ जैसे कछु अस्तित्वऊ नाँहि। याकी कोख की सारथकता तौ पुत्रवती हैबे मैई है। बिना बेटा के बाय जीवन भर रोनौई परै-'बाग मैं पपइया बोलै, बिना पुत्तर की मइया रोवै' बेटा कूँ जनम न दैबे ते याके भाग्यई फूट जाय 'मेरे फूटे भाग पूत मेरी गोद न आयौ।' बेटा के अभाव की वेदना जनमभर कचोटती रहै, तबी तौ वो देवी मइया ते एकइ पुत्र के तांई बेर-बेर याचना करै-

> मोय दै मइया दूध अरु पूत
> तेरी सेवा मैं बलि-बलि जाऊँ

तेरी पूजा में कन्या जिमाऊँ
काहे के काजें मइया धजा-नारियल
काहे के काजें मइया दौनन मेवा?
दूध के तांईं मइया धजा-नारियल
पूत के तांईं मइया दौनन मेवा।

वेटा तेई तौ परिवार चलै औंर वेटा की वहू ते घर के आंगन की सोभा होय-

घूँघरू पहिरन्ते पुत्र हमारे
रुनक-झुनक डोले कुल-वहू
मैं वारी जाऊँ।

मइया की गोद मैं वेटा हैवे पै तौ याकौ रूप-सौन्दर्यई खिल उठै-

रेसम की सारी जब नीकी लागै
गोदी में ललना होय।

मइया वेटा के स्नेहिल संवंध कौ जी रूप जनम के समै सोहर, जच्चा अरु छटी के लोकगीतन मैं वड़ौ सुघरता-सरसता औंर मार्मिकता के संग चित्रित भयौ मिलै। वेदना, करुना अरु आनन्द की ऐसी अनूठी तिरवैनी दूसरे लोक सन्दरभन मैं नहिं दीख परै।

मइया-वेटी के संवंध-सन्दरभ-

यों तौ मइया लोकजीवन मैं वेटा कूँई अधिक सनेह करै, पर वेटी के तांईऊ वाके हिये मैं थोरी जगह नहिं होय। सजातीय अरु पराई धरोहर हैवे ते वो तुरंत वेटी के प्रति द्रवीभूत है जाय। ससुराल मैं कष्टन की परिकल्पना मात्र ते वाकौ हियौ भर उठै। व्याह ते पहलैंऊ वेटी घर-गृहस्थी मैं मइया के हर काम मैं साझीदार वनी रहै। हर पल कौ जी साहचर्य का यौंई भुलायौ जाय? तवई तौ वेटी के ससुराल जाइवे पै दोनों एक-दूसरे के तांई याद मैं फड़फड़ावैं। विवाह के समै विदा की डोली चलिवे पै मइया कौ करेजौ फटिवे लगै, आँसून की नदी वहिवे लगै-'मैया के रोये नदी वहति है।' ससुराल मैं वेटी के कष्ट के समाचार सुनिकैं तौ घर मैं जैसें तूफानई आय जाय। वाप अथवा भइया कूँ पाइ के मइया सान्त होय। जब तक वे नहीं लौटें, द्वार पै पल-पल राह निहारौ करै। मां की ममता कौ जी तरलता लोक-जीवन की विभूति है। वेटी के तांई ऊ मइया के रहते मायकौ वनौ रहै, ता-पीछैं तौ नैहर कौ भावई कम हैतौ चलौ जाय। सावन मैं झूला परतेई वेटी कूँ मायकौ याद आइवै लगै, नित्त काऊ न काऊ वुलौआ की वाट देखी जाय। ससुर की ऊँची अटारी पै चढ़िकैं वाय देखिवे कौ प्रयास कितनौ स्नेहसिक्त अरु सहज स्वाभाविक है-'ऊंची अटारी ससुरजी की तैं चढ़ि देखत वाट।'

ससुराल मैं वेटा कूँ जनम दैवे पै 'पछ' नामक लोकाचार के तांई वाय सवते पहलै मइयाई याद आवै। छत्त पै वैठे कऊआ कूँ उड़ाती भई यो कह उठै-

उड़ि-उड़ि काग सुलच्छने कहियो मेरी माय तै
धीयरली मांगै खींचरी।

मायके मैं वेटी कौ न कोई मान-मर्यादा है अरु न अस्मिता, जैसे व्याह पीछै ऊ मइया के रहते वो वाके खेलवे कौ आंगन है कै गुड़ियान कौ व्याह रचाइवे कौ मनचाहौ स्वच्छन्द परिवेश। तवई तौ गाँव के नऊआ के संग विना वुलाये चलिवे कूँ तैयार है जाय-'नउआ के चलूँगी तिहारेई संग वदनि पूरि है गई'। वाके विचार मैं मइयाई पिरथवी कौ सवते वड़ौ सत है,

कारन, योई तौ जनम दे-'या जन जरमु दिखाइए'। माँ-बेटी कौ जो सास्वत संबंध लोक मैं बड़ौ बेजोड़ अर अतुलनीय है। बेटी कूँ जनम दैकें वो सबते पहलै अपनी कोख कूँ 'सुलच्छनी' बनावै-'मैं तौ जनूँगी पहलै धीय री, मेरी जो कोख होय सुलच्छनी'। बाप ब्याह के जोग देखिकैं मैया प्रसन्नऊ होय कै बेटी की बरात आवैगी अर पालकी पै चढ़िकैं बाकौ साजन आवैगौ-

जाकी गरजत आवैगी बरात री
पालकी चढ़ि आवै साजना।

पर, ब्याह के समै चढाई के औसर पै संदेह अरु विकल्पनते मइया कौ हियौ भर उठै तौ बिदा के समै करना कौ उद्रेक बाय सराबोर कर देय। सनेह अरु करुना के संगम पै या छिन न जानें कितने जाने अनजाने संचारी-भावन कौ उफान है जाय? ममता अरु वात्सल्य मैं डूबी मैया कौ पेट अरु घर दोनोंई रीते है जाएं। जमाई के तांई वाके हिय में अनन्य सनेह एवं वात्सल्य होय, तौऊ या समै अन्यथा भाव कौ उदय बड़ौ नैसर्गिक होय-

मेरौ घरऊ रितौ अरु पेट री
मेरी धीयरी जमइया लै चलौ।

भइया-बहन के संबंध-सन्दरभ-

परिवार मैं मैया-बेटी के पावन अरु सास्वत संबंध के पीछैं बहन-भइया कौ संबंध बड़ौ पवित्र एवं स्नेहिल होय। छोटी-बड़ी सगरी बहन भैया के तांई प्राण दैं। भइया के अभाव मैं सलूने अरु भैया दौज जैसे त्यौहारन पै बहन की आँख आँसून ते भीज जांय। बिना भैया के न तौ ससुराल मैं वाकौ मूल्यांकन होय और न मायकौ आगे चलै। एक भइया के तांई वो अनेक देवी-देवतान अरु पीर-पैगंबरन ते मिन्नत करै। सलूनेन के त्यौहार पै राखी-बन्धन के सहारे बहन अपनी जीवन सुरच्छा कौ भार भइया कूँ सौंप कैं निश्चिंत है जाय। ससुराल मैं भइया कूं आयौ देखि कैं खुसीते फूल उठै। सावन के लगते ही वो वाके आगमन की बाट जोहवे लगै। अपने बीरान कूँ निहारवे कौ उछाह वाय कबहूँ द्वार पै तौ कबहूँ भीतर, कबहूँ ऊपर छत पै तौ कबहूँ नीचें नैंकु टिकनई नहिं देय अरु आयवे पै तौ महमानी कौ ठिकानौई नांय। मामाकूं देखिकैं छोरा छोरीन की प्रसन्नताऊ सीमाकूं तोर दे-

मामा लिवाये आयौ ऐ मां
पूरी पुआ करि लै री मां
छबरिया मैं भरि कै धर दै री मां॥

सावन के दिनान में पूरी पुआ की महमानी ब्रज संस्कृति कौ अपनौ लावण्य है। ब्याह मैं भात के समै भइया की याद बहन कूं बरबस आय जाय। भात नौंतवे पै वो वाय दिन मैं आयवे के तांई आमंत्रित करै, जाते वाके वैभव कूं ससुरारी जन भली तरह देख सकैं-

सिदौसी अइयो भातई
मेरे बाबुल के हाथी झूमने
झूमैं-झूमैं रे जमइया दरबार॥ सिदौसी........
मेरे बिरन के घोड़ा हींसने
हींसैं हींसै रे बहनोई दरबार॥ सिदौसी........

बहन कूं भली इतने तेई संतोष कैसें होय? आखिर, मायके की प्रतिष्ठा अर नाक कौ प्रश्न है। तबई तौ परि[illegible] नों के

तांई सबके कपड़ान की नाम लै-लैकें संकेत करै-

भइया रघुबीर! भात घनेरी लइयो।
मेरी सास कूँ लहंगा लइयो, ससुर कूं पाग पिछौरा,
गरे बिच लइयो जंजीर।

फिर, बहन-भइया की आत्मीयता की भाव दोनोंन कूं अलगाई नहिं होन देय। भइया के बड़प्पन तेई तौ बहन ससुराल में सिर उठावै। वाकौ भइया कोई ऐसौ-वैसौ थोरई है, वो तौ राजा हजारी है, तबी तौ रथ की झंकार के संग वाके आयबे की कहै-

राजा हजारी मेरौ भाअई,
अइयो अइयो रे रथ की झंकार।

आयबे पै सहेली, देवरानी-जिठानी एवं परोसिनन के संग देखिबे कूं दौर जाय-'मेरौ छोटौ भतैया भात लैकें आयौ, चलौ देख आवें।' पर, बिना भइया की बहन के तांई जो औसर बड़ौ दुखद है जाय। वाके पुरे भए चौक सूने रह जायें-'मोकूँ को पहरावै भात बिरन बिन सूने चौक परे हैं।'

याई तरह भईया-दौज कौ पर्व ब्रज-संस्कृति की अनूठी धरोहर है। बहन भइया के माथे पै तिलक करिकें वाके मंगल की कामना करै। मथुरा के विसराम घाट पै हाथ पकरि कै संग-संग नहाइबेते बहन-भइया दोनोंन के जम के बंधन टूट जांय। या पावन त्यौहार पै बहन आनंद तें फूल उठै अरु भइया कूं काठ देस कौ राजा हैबे की असीस देय-

दौज पुजै मेरौ मन हँसै, हियरा हिलोरे लेय।
हाथी के हौदा मेरौ भइया चढ़ै
दै मेरी बहन असीस दै-राजा तौ हूजै काठ देस कौ॥

पति-पत्नी के संबंध-सन्दरभ-

परिवार अरु परिवारते इतर जितने संबंध एवं रिस्ते हैं, इनमें पति-पत्नी कौ संबंध सबते अलगई है। इनके बीच कछुई छिप्यौ नांहि रहै। परस्पर एक दूसरे कूं पायकै निहाल है जांय। दाम्पत्य जीवन के स्नेहपूर्ण संबंधन के अनेक संदरभ ब्रज के लोकगीतन में जगह-जगह मिलैं। रति-भाव के संग दोनोंन में मित्रता अरु अन्योन्याश्रितता कौ भाव पल-पल जुरौ भयौ रहै। पत्नी कौ रूप-सौन्दर्य एवं मन कौ उछाह पति के संगई तौ निखरै-

गोरी कैं काजर जब खुलै, वाकौ बालम निरखै आइ।
मुख भरि बतियाँ तब खुलै, जब बालम हँस बतराइ।
पगने बिछिया तब खुलै, जब बालम निरखै चाल।

जल भरबे गई पत्नी की अंतरंग भावनान के अनेक अछूते संदरभ आखिर पिया के साहचर्य की ई कामना करैं-

जल भरै हिलोरे लेइ, डोरी रेसम की।
रेसम की डोरी जब नीकी लागै, सोने की गगरी होय।
सोने की गगरी जब नीकी लागै, पतरी कमरिया होय।
पतरी कमरिया जब नीकी लागै, सोने की तगड़ी होय।
सोने की तगड़ी जब नीकी लागै, रेसम की साड़ी होय।

रेसम की साड़ी जय नीकी लागै, गोदी में ललना होय।
गोदी मैं ललना जय नीकौ लागै, संग मैं यलमा होय।

पति-पत्नी कौ संयंध तौ दूध-पानी की तरह होय। अपने आप कूं पति के रूप मैं तदाकार-एकाकार करिये मैं ई तौ बन्ने जीवनकी सुन्दरता है-

1. तार मैं तार सितारा, मैं तारा होती।
   तुम यादर मैं चंदा, मैं तारई होती
   सिर यन्ने के साफा, मैं कलंगी होती।
   कान यन्ना के याला, मैं मोती होती।
2. आज मेरें अनंद बधाए जी राज।
   मैं तौ खोलूंगी डिब्बा, पहरूंगी गहने जी राज।
   पहिर दिखाऊं छोटी याईजो के यीरा जी राज।

गर्भावस्था मे अपनी मन की इच्छा पूर्ति के तांई पत्नी पतिते ई तौ कहै-'सईयाँ मोकूँ येर मँगाउ मन चालौ खट्टे येरन पै'। सपने मैं कौमरी देखिये पै विन्नैं वँटवाइये की हठ करै-

सो राजा मेरे सोइ गई नींद सुनींद-
सपने मैं, सपने मैं देखी कौमरी जी महाराज।
सो राजा मेरे पीतर के टोकना मँगाउ-
चना की, चना की डारूं कौमरी जी महाराज।

रन मैं जैसें तलयार चमकै, जल मैं मछरिया अरु घोड़ा पै पिया की पगड़ी, यैसेंई सेज पै प्रिया की माथे की यिन्दी सुसोभित होय-

जल मैं चमकै जल की मछरिया, रन चमकै तरवार रे।
घोड़ा पै चमकै पिय की पगड़िया, सेजिया पै यिंदिया हमार रे।

ब्याह के पीछैं तो दौनोंन कौ अलग रहियौ असंभव सौ है जाय। पत्नी तौ यिना गौने के लिवा लै जाइयै के तांई संदेस भेजै,-मायकौ याय उड़-उड़कैं खायवे लगै-

मोय पीहर उड़ि-उड़ि खाय लंगुरिया।
अय ना रहूँगी मइया-याप कैं।
जाय कहौ मेरे यलम तें, मोय यिन गौने लै जाय॥

उभरते यौवन मैं पति की याद यड़ी मनौवैज्ञानिक है-'मोय याद यलम की आवै, मेरौ जोयन होरा खावै।' पिया के यिना याकौ जोयन पीरौ परि गयौ है अरु इतने पैऊ पपैया 'पीउ-पीउ' की रट लगावै। यिरह को मारी यिचारी कौन के तांई सिंगार भरै, पति तौ परदैस गयौ है-

मेरे यलम गये कलकत्ता, पिय यिन जीवन पीरौ पत्ता।
मैं कौन पै करूं सिंगार, पपइया योलौ योलै।।

आखिर, पति तौ जल है, याके अभाव मैं 'पीरे पत्ता' हैये की यात यड़ी संवेदनात्मक है। गायन के [illegible] मैं अकेलौपन सांचमांच यड़ी भारी है जाय। तयई तौ परदेस ते पति कूं युलायये के तांई यो संदेस भेजै।'तार [illegible]

के लोकगीत मैं जी संवेदना देखेई वनै-

पाँच टका दऊँगी गाँठिके, है कोई लस्कर जाय, लहरिया-
सब रंग भीजै धन को डोरिया।

परिवारी जन जब पति कूं चाकरी के तांईं परदेस भेजिबे की तैयारी कर दैं, तौ पत्नी की प्रतिक्रिया परिवार की मरयादाईए तोर दे, सावन के या लोकगीत के नाटकीय संवाद मैं पत्नी के हिये कूं निकास कैं धरदे-

किन त्यारौ घोड़ा भँवरजी! कसि दियौ जी।
ऐजी कोई, किन त्याहरी कसि दई जीन-
किनके कहे ते भँवर चाले चाकरी जी।
सहेलने नैं घोड़ा गोरी मेरौ कसि दियौ जी-
ऐजी कोई भइयाजी नैं कसि दई जीन-
बाबुल कहे ते चाले चाकरी जी।
सहेलने पै परियो बीजुरी जी-
ऐजी कोई भइयाजी कूं खइयो कारौ नाग-
भँवर विछोयौ ससुरजी कर दियौ जी।

पति के सनेह कौ छप्पर पत्नी कूं सदा सुरच्छित रक्खै अरु बाहरी पानी के प्रभावते बचातौ रहै। सावन मैं पुराने छप्पर के ब्याज ते प्रौढ़ावस्था कौ संदर्भ भारतीय दाम्पत्य प्रेम की सारथकता के निमित्त बड़ौ बेजोड़ अरु भावात्मक बन्यौ है या लोकगीत मैं-

छप्पर पुराने मेरे पिया है गये जी,
कोई तरकन लागे हैं बाँस,
अब घर आइजा धन के साहिबा जी। (सावन के गीत)

तन ते ऊपर मन के सूच्छम प्रेमपरक भाव कौ जी संस्पर्श अनूठौ है। नई-नवेली बहू कौऊ इन दिनान मैं ब्याह की पहली साल मैं हरियाली तीजन पै प्रिय की सोगी लैकें आइवे की आसा मैं बाट जोहिवे कौ सन्दरभ दम्पत्ति की अंतर्भावना ते जुरौ भयौ है-

अरी बहना तीजन कौ आयौ त्यौहार,
बालम तौ लामैं सोहगी।
तीहर तौ लामैं मोकूं रेसमी
अरी बहना, जंफर पै अजब बहार।

ब्रज के इन लोकगीतन मैं पति-पत्नी के मध्य के रति अरु संभोग के सन्दरभऊ बड़ी मार्मिकता, व्यंजना-वक्रता के संग व्यक्त भए हैं-

'अंधिरिया दइया झुकन लागी रे।'

परस्पर हास-परिहास की अवस्था इनके बीच बड़ी मोहक अरु उद्दीपक होय। याते जीवन मैं मिठास की अनुभूति होय तौ आत्मीयता की भावऊ सम्दृढ़ होय। गाँव कौ खेतिहर पति जब सहरी पत्नी के आगें बड़प्पन की डींग मारै तौ पत्नी तुरंत नैन मैं दैहात मार दे-

बरबंड बलम त्याहरौ देस तुम! सेखी मोते मत मारौ।
हाथ खुरपिया मैंनें त्याहरे देखौ, भजि-भजि कैं खोद रहे घास तुम... ॥

पर, मसखरे सुभाव की पत्नी तौ पति कूं खूब चलावै-

'बदलऊंगी बलमा तोय, काऊ जुलफनबारे छैला ते।'

जी बदलबे की बात तौ 20वीं सदी के अंत कौ प्रभाव है सकै, पर एक अन्य लोकगीत मैं तौ पत्नी बिचारे पति कूं तनै छुअनउ नहिं दे, रह-रह कैं तरसावै-

जुबना एँ छुअन नाएं दऊँगी
बलमा तोय मारूँगी तरसाय कैं।
लहँगा पहरि ओढ़नी ओढ़ी
सलूजा पहिरौ बनाय कैं।
सलूजा भीतर चोली पहिरी
ढोला ते छिपाय कैं॥ बलमा......

पर, जी मसखरीऊ जब पति की बेदना कौ कारन बन गई, तौ पत्नी हैकैं पति कूं बेहाल कैसें देख सकै। जी तौ हास-परिहास हतौ। तुरंत ब्यवस्था करै-'सासुल ते लाई दुबकाइ, दही कौ बैला लाई रे '। अपनी गलती कूं स्वीकारै अरु पति कूं स्वस्थ करिबे के तांई दूधन की ब्यवस्था करै-

पीरे परि गए, अब न सताऊँ बलमा,
तोय तीनों दूध पिवाऊँ बलमा।
अरे गाय, भैंस, बकरी मिलमा॥ पीरे.. .....

गइया-भैंस अरु बकरिया के दूधन कूं मिलायकैं पति कूं तन-मन ते स्वस्थ करिबे की गहराई के मरम कूं पति-पत्नी समझ सकैं।

निचिंत अवधि के पीछें लौट आयबे की कहकैंऊ जब पति नहिं लौटै, तौ पत्नी के विरह कातर हिये की पीड़ा अरु बाकी अभिव्यक्ति मैं अनेक भावनान के उतार-चढ़ाव कौ अहसास कोई स्वकीयाई करि सकै। एक संग आक्रोस अरु नमन, प्रेम अरु खीझ, तकरार अरु उपालंभ न जानें अन्त:करन मैं कब-कब कौ रुकौ भयौ ज्वार फूट परै-

मेरे पान रहे री कुम्हलाइ, नारंगी झोका लै रहीं।
खुद तौ अबई न आयौ बेईमान, छैला तौ धर गयौ दौज कौं।

पति-पत्नी के कोमल एकनिष्ठ प्रेम की जो बिसेसता बड़ी भावपरक है। ब्रज के लोकगीतन 'बारहमासा' की छटा और अनुभूतीन की मार्मिकता याईते देखेई बनै। प्रकृति के बदलते परिवेस मैं अरु तीज-त्यौहारन के औसर पै पति की स्मृति बिरहिनी के हिये कूं झकझोर दे-

स्याम बिना मोय कल न परै री।
माघ मास रितु आयौ बसंत, अजहुँ न आयौ पिया तेरौ अंत।
लिखौं कैसें पाती को लैकें जाय, को निरमोही कूं बाकी समुझाय।
फागुन मैं सब घोरें अबीर, मैं कैसें घोरूं बिन जदुबीर।

जरौं जैसें होरी उठत जैसें लूक, विरह अगिन तन दीन्हौं है फूँक।
चैत मास वन फूले हैं फूल, हमरौ वलम हमें गयौ है भूल।
सावन मास मैं हरियर रूख, हमरौ कँवल गयौ पिया विन सूख।
भादौं मास गरव गंभीर, हमरे नैंन भरि आये हैं नीर।
जिया मेरौ डूबै उतराय, हमरौ खिवैया परदेसन छाय।

पति-पत्नी के मध्य के इन कोमल अरु मधुर संवंधन के संग-संग, कछु करुए अरु तीखे सन्दरभऊ इनमैं मिलैं। ब्रज के लोकगीतन मैं यिनकौऊ व्यंजना देखेई वनै। अपने नैहर के तांईं प्रत्येक नारी में अत्यधिक अपनेपन अरु वड़प्पन कौ भाव भर्यौ भयौ रहै, तवी ह्ाँ की थोरीऊ निन्दा याते सहन नहिं होय। मायके कौ गौरव वाकी जवान पै सदा वोलतौ रहै। झूठ वोल कैं ऊ यो वाकी रच्छा करै। आखिर, मायके के आगें ससुराल की गरिमाई कहा है-

दिन अरु रात तहाने मारौ, तिहारी मढ़इया फूटी।
मेरे मायके मैं देख न आऔ, सीस महल सी कोठी।

खान पानमैं ऊ ससुराल की अवमानना करिवे मैं यो नहिं चूकै-

मेरे पीहर मैं जलेवी रसदार, चना के लडुआ को खावै।

पति की अस्मिता याते खंडित होय, परस्पर कटुता कौ भाव उत्पन्न होय। पति जव सपत्नी लाइवे की धमकी दे, तौ पत्नी जोस मैं दूसरे व्याह की वात कहै है-

करि लीजो दूसरौ व्याह लंगुरिया,
मेरे भरोसे इकलौ मत रहियो।
पीस न आवै मोपै पीसनौ अरु डार न आवै मोपै कौर।
राँध न आवै मोपै राधँनौ अरु परस न आवै मोपै थार।

अरु दूसरौ व्याह करि लैवे पै यो अपनी जीवन लीलाइऐ समाप्त करिवे कूँ तैयार है जाय-

'मरूँगी जहर विस खाय, ढोला नैं व्याहि लई दूसरी'।

पत्नी की आभूषण-प्रियता के कारनऊ दोनोंन मैं कटुता पैदा है जाय। पति की आर्थिक सीमा है अरु पत्नी 'लटकन' के तांईं हठ कर रही है-

भूसा विकाय मोकूं लाय देउ लटकन।
गैया विकाऔ चाहै, भैंसन विकाऔ।
वैलन विकाय मोकूं लाय देउ लटकन।

पर-स्त्रिय-गामी अथवा पर-प्रिय-गामी हैवेपै ऊ दंपति मैं कटुता घर करिवे लागै। लोकजीवन अरु त्यौंहार मैं पराई नार है पराये की स्याद कछु औरई होय। पर, स्वयं मैं विस्वस्त एवं आत्म संतुष्ट पति-पत्नी या स्थिति ते प्रभावित हैकेंऊ विचलित नहिं होंय। तवई तौ विस्वस्त पत्नी कह दे-

'कितनै ऊ हार वजाय लै छैला,
पर सुन नाएं व्याली की।'

एकई लाइन मैं तन अरु मन के न जानें कितने गोपनीय रसीले सुखन की अभिव्यंजना पिचकारी के रंगन की तरह भरी भई है। दाम्पत्य जीवन कौ रहस्य साँचमाँच बड़ौ अनूठौ है। कबहुं-कबहुं मानसिक कुंठा अरु करए बोलन ते ऊ दरार परि जाय, मन फट जांय-

> लहँगा तौ फाटत झकझोरन ते,
> चित फाटत राजा के बोलन ते।

पति-पत्नी के सास्वत संबंध की मीठी अनुभूति बुढ़ापे मैं कै एक के न रहबे पै ई होय। बिधुर के तांईं घर काटिबे लगै। ब्रज की मसखरी औरत बहुधा बिधुरन कूं देख-देख कैं अनेक लोकगीतन नैं गावैं-

> ' रंडुआ तौ रोवै आधी रात, चूल्है में जाके राख परी।'
>
> ' फूटी री रे तकदीर रँडुआ तोकूं नांय लुगाई रे।'

बिचारे बिधुर की दुरगति है जाय। बेदना अरु पीड़ा ते आँख डबडबाय उठें।

देवर-भाभी के संबंध-संदरभ-

लोक-जीवन मैं देवर-भाभी कौ संबंध बड़ौ मधुर अरु विनोदपूर्ण मान्यौ गयौ है। बिपदा के समै देवरई संगी साथी बनै। तबई तौ द्वार पै ढोला गामती ब्रज की औरत लछमन जैसे देवर की कामना करें-

> सीया ठाढ़ी जनक दरबार
> सूरज कूं जल दै रही।
> मैंनें वर माँगे सिरी राम,
> देवर माँगे लछमन से।

फागुन के दिनान मैं तौ या संबंध की मधुरता कौ सहज साच्छात्कार होय। हास-परिहास अरु नौंक-झौंक कौ आनंद देखे ई बनै। बूढ़ी भाभीऊ देवर के हाथ ते रंग डरवाय कैं निहाल है जाय। राह चलती भाभी देवर के प्रेम की थाह पाइबे के तांईं अरु स्वयं गद्गद् हैबे के तांईं कह उठै-'काँटौ लाग्यौ रे देवरिया, मोते गैल चलो नायं जाय'। या संबंध मैं [illegible] की पावनता देखेई बनै, याई ते वात्सल्य कौ भावऊ यामैं पनप उठै-

> छोटौ सौ प्यारौ देवर चिरई उड़ावै रे।
> चिरई उड़ावै मेरौ जी ललचावै रे॥

ननद-भाभी के संबंध-सन्दरभ-

ब्रज के पारिवारिक परिवेस मैं ननद की स्थिति मधुर अरु सहेली जैसी हैयेपै ऊ कलहप्रिय एवं ईर्ष्यालु होय। भाभी के आइबे पै जैसें बाकौ सगरौ अधिकार छिन जाय। बात-बात मैं भाभी की चुगली अरु बाय नीचौ दिखायबे की मनोवृत्ति यामैं देखी जाय। पर, भइया-भतीजे के तांईं यामैं बड़ौ प्रेम अरु वात्सल्य होय। हरएक सुभ औसर पै बहिन-बुआई आयकैं सबते पहलैं देहरी-पूजन करैं। भाभी के गर्भवती हैबें पै वो भतीजे की आसा मैं वाकौ मौंह चूमैं अरु भतीजे के जनमबे पै तौ खुसी ते नाच उठै-'ननदिया आज छमछम नाचै।' वही नामकरन के समै सतिए रक्खै अरु हठ परिकैं अपुनौ नेग मांगै। भतीजे के जनम ते पहिलैंई वो भाभीते बचन लै लेय-

> मैं लऊँगी, मैं लऊँगी, मैं लऊँगी भाभी तेरे कंगना।
> जो ननदी मेरे पूत होयगौ, देऊंगी जड़ाऊ तोय कंगना।

कंगना लैके अर पहिरकैं तौ ननद के आनंद कौ ठिकानौई नहिं रहै। भतीजे कूं असीस दैवे लगै–'कंगना पहिर ननदी आंगन में ठाड़ी, भतीजौ मेरौ जुग-जुग जीवै'। भाभी के रहते वो अकेली भैया की प्रिय कैसें रह सकै। जो वेदना ई वाय कुंठित अर कुटिल बनाय दे। फलतः भइया-भाभी के बीच वो कलह कौ कारन बन जाय–

'मोय ऐसी ननद नंय चइए, जो पांच की सात लगावै।'

छठी के एक लोकगीत में तौ भावज अपने पति कूं ननद के ह्याँ निमंत्रन दैवेऊ नहिं जान देइ–

गोरी आज छठी की रात तौ कौनें-कौनें नौति आऊँ रे।
नौति आऔ मइया हमारी अरे बाबुल हमारे रे।
गोरी एक मेरी माँ की जाई बहन तौ बाउए नौति आऊं रे।
ऐसौ बचन मत बोल राजा मरुँगी जहर विस खाय रे।

पुत्र के जनमवे पै भाभी नाइन ते ननद के घर कूं 'छेकिये' की कहैकै 'बाके घर कौनरी दैवे मत जइयो' अरु भूलते जब वो दै आवै, तौ उलटी मंगवाय ले–

नाइन, जइयो डली-पड़ी पार,
ननद कौ घर छेकियौ जी महाराज।
लो राजा मेरे नाइन, असल गंवार,
ननदी कैं, ननदी कैं दै आई कौंमरी जी महाराज।
लो राजा मेरे मरुँगी जहर विस खाय।
उलटी तौ, उलटी तौ लाऔ कौंमरी जी महाराज।

नाइ बहन के घर जायकै कहै तौ बहन मोतिन की कौनारी लैके लौटायवै आवै। भाभी पहलै तौ द्वार नाहिं खोलै पर मोतिन कौ सुनकै लैले। ननदऊ कम थोरेई हैं। मइया-बाप कूं असीस दे अरु अपने बड़े घर कौ भाभी कूं परिचैऊ करावै–

लो भाभी मेरी जियौ मेरे मइया-बाप।
बड़े घर, बड़े घर ब्याही हम गई जी महाराज। (छठी के गीत)

ननदऊ अपने बदले कौ औसर खोज ले। सावन के दिनान में जब 'मनिहार' चूरी-चूरी पहरावे आवै, तौ मनिहार के संग भाभी के प्यार की बात भइयाते कह दे–

पचरंग चूरी पहरिए, पहरुंगी भर-भर हाथ।
ननदी नै भइया सिखाइयौ–
अरे भइया, मनिरा कौ भाभी ते प्यार॥ चूरौ तौ हाथी दांत कौ जी॥ (सावन के गीत)

इनके सिवाय उ दोनोंन के प्रेममय मधुर संबंध की चरचा ब्रज के लोकगीतन में ह्या की संस्कृति कौ चित्र प्रस्तुत करै। भतीजे के जनम पै अन्नप्रासन के समै जब ननद बिना बुलाये पहुँच जाय अर अपमानित हैकैं लौटवे लगै, तौ भाभी वाकी मनुहार करै–

उलटौ ननद गुसांइन, मेरौ ठकुराइन रे।
ननदी हार पान भर जाउ, भतीजे के मोहरे जी। (छठी के गीत)

इन ब्रज संस्कृति के अनुरूप अपने सिर कौ लटान के बाँधे पानन में रखकै छमायाचना करै– 'ननदी, लट छोर लागूं

तेरे पाँम, भतीजौ खिलाऔ री'। सावन के एक लोकगीत मैं जब भइया, भौजाई ते रुठ जाय, तौ ननदई दौनोन कूं मिलावै-

> नाँइ खोलूँ झँझन किवार, पराये पुरष ते ए बिजैरानी च्यौं हंसो जी।
> जाकौ भइया हँसनौ सुभाव, हँसनौ तौ जाइगौ ए बिजैरानी के जीय ते जी।
> *लई धन हियरा लगाय,-*
> जरी के दुपट्टा ऐं बिजैरानी ढक लई जी।

भाभी प्रसन्न हैकें ननद कूं मौंह-भर असीस दैवे लगै-

> 'जीऔ नंदुल त्यारौ रे पूत, भँमर मिलापौ ए ननदरानी, तुम कियौ जी।

सास-वहू के संबंध-सन्दरभ-

पारिवारिक जीवन मैं सास-वहू कौ संबंध बड़ौ महत्वपूर्न है। सास पुत्र कूं जन्म दैवे ते वापै अपुनौ अधिकार मानैं अर पत्नी अग्नि-साछात्कार के मारैं अपुनौ अधिकार जनावै। याई ते सास-वहू के बीच कटुता कौ बीज बुब जाय। बुवावस्था मैं पति कौ पत्नी माहूं झुकयौ बड़ौ सारथक है। सास चाहै तौ पराई जाई बेटी कूं लाड़-प्यार दैकें घर कूं स्वर्ग बनाय सकै। पर, ऐसौ कमई देख्यौ जाय। सास-वहू के संबंध की कटुता ब्रज के लोक-जीवन की विसेसता है। अपने भौतिक सुख के तांईं सास बहू पै अंकुस रखवे मैं गौरवान्वित होय। वाय दिनभर काम-काज मैं जुटायकैं रक्खै। तबई तौ सास के तांईं बहू के हिये मैं श्रद्धा-सदभाव नहीं रहै। सास के रौब के मारैं वाय दूसरे सदस्यन की ताड़ना सहन करनी परै। देवी मइया की जात पै जाइकैं वो अपनी याई व्यथा कूं निवेदित् करै-

> *ओ मइया, तेरी जात करन मैं आई*
> भइया सास के पीसे मैंनें पीसने
> *अरु ससुर की गाय चराई॥ ओ मइया..॥*
> *ननद के सहे उराहने अरु*
> बालम की निठुराई। ओ मइया..॥ (देवी के जात के गीत)

कहूं-कहूं तौ सासकी कठोरता बहू-बेटा के रात मैं मिलिवेमैं ऊ बाधक है जाय। या असह्य वेदना कूं बहू एक लोकगीत मैं सहज आक्रोस के संग व्यक्त करै-

> मेरे राजा की ऊंची अटरिया,
> मिलन जानें कब होयगौ।
> पलका बिछाय मैंनें रजाई-तकिया संभारे, तौजू आय गई सास डुकरिया॥ मिलन

सास की यातनान कूं जब और ज्यादा बहू सहन नहिं कर पावै तौ अपने अधिकार कौ पूरौ प्रयोग करती भई सास कू सबकऊ एक लोकगीत मैं सिखावै-

> सास तेरे दोलन पै बाबाजिन है जाऊंगी
> घर कौ तारौ दै जाऊंगी।
> यौं मत जानैं सासुल भूखी जाऊँगी।
> चून कौ मटका लै जाऊँगी।
> यौं मत जानैं सासुल इकली जाऊँगी।
> संग तेरे बेटा ए लै जाऊँगी। सास ॥

इतने पै ऊ सास-बहू के विरोध मैं बेटाय भड़कावैं। ब्रज की अनेक लोक-कथान मैं जो संदरभ मिलै। ब्याह के समै 'रतजगे' की रात ते पीछैं प्रातःकाल गायवे के 'दाँतुन' नाम के लोकगीत मैं जो संदरभ देख्यौ जाय सकै। पर, सास यामैं विवेक ते काम लेय अर बेटा कूं समझावै कै बहू नंदलाल जनैगी, यातै तिहारे बाप अरु कुल कौ नाम चलैगौ-

ए मइया कहौ तौ दऊं निकास
कहौ तौ खँदे दऊं धन के बाप कैं।
ए बेटा, काहे कूं देऔ निकास,
काहे कूं भेजौ धन के बाप कैं।
ए बेटा जे तौ जनैगी नंदलाल
नाँऊ चलै तिहारे बाप कौ।

लाल जनवे के अपने गुन के मारें बहू कछु कान नहिं करै। देवर के पानी मांगवे पै बड़े अधिकारते वाकी अवग्या करै-

बाहर ते मेरे देवर आये।
भावज मोय पानीरा पिवाऔ हो राज।
पानी रे पिवावै तेरी मइया, बहनिया
मोपै उठौऊ ना जाय।

पुत्र जनन के औसर पै ब्रज मैं सास चरुए चढ़ाइवे कौ लोकाचार करै। पर, बहू वाकी उपेच्छा करिकैं अपनी मैया ते करवावे की सलाह दे-

सास न आवै मेरौ काह करै
चरुए चढ़ावै मेरी मइया।- जच्चा के गीत।

ऐसे मौकेन पै सास कौ रूठियौ ब्रज के परिवारन मैं अबऊ देखौ जाय। पर, हँसी-खुसी सगरे काम हैवे पै बहू सास-ससुर सबरी बलिहारी जाय। आखिर, परिवार के फलवे फूलवे में जो प्रसन्नताई तौ साधक होय-

फूल रह्यौ रस केवरौ मैं वारी-वारी।
हथिया चढ़ंते ससुर हमारे, पीढ़ा बैठंती सास॥ मैं वारी-वारी॥ (बधाए के गीत)

पर, आधी रात मैं जगायकैं चाकी पिसवावे वारी सास को बहू कामनाऊ नहिं करै-'मोय ऐसी सास नांय चइए जो आधी आधी रात पिसावै'। ब्रज के परिवारन की जो पुरानी परंपरा रही है। सास कौ स्थान मइया जैसौ है, तबई तौ बहू वाकौ सम्मान करै। एक लोकगीत मैं जो संदरभ देख्यौ जाय सकै-

ऐसी मइया या धरती पै द्वै बड़े
एक सासुल अर माय
सास दियौ वर आपनौ,
या नै तु जनम दिखाइयै।। (देवतान के गीत)

ब्याह मैं बहू कौसल्या सी सास अर दसरथ से ससुर की कामना करै-

'मैंने मांगी कौसल्या सी सास, ससुर मांगे दसरथ से।' (ढोला के गीत)

इन पारिवारिक जीवन के विविध संदरभन ते अतिरिक्तऊ अनेक संबंध अरु संदरभ अपने खट्टे-मीठे रूप में इन लोकगीतन में चित्रित भए हैं। द्यौरानी-जिठानी के संबंध तौ बहन-बहन जैसे होंय। पर सम्पति के काम में खटका-पटकी हैई जाय। दोनों संग बैठकें प्यारऊ करैं अरु कबहूँ झगरेऊ हैं-

'मैं कौन के पास बैठूँ जिठानी बिना।'
'बाँह पसारि कौनते झगरूं द्यौरानी बिना।'
'रसोई तपंती द्यौरानी मैं बारी-बारी।'
'भैंस दुहन्ते जेठ हमारे, आधौ बटंती जिठानी। मैं बारी-बारी।'

इनमें ब्रज की संयुक्त परिवार-व्यवस्था कौ स्पष्ट संकेत भयौ है। जीजा-सारी कौ संबंध तौ ब्रज के लोक-जीवन कौ मधुरतम संदरभ है। हास-परिहास की मधुरता अरु स्नेह की आत्मीयता यामें देखेई बनै। मीठे उपालंभन कौ तौ ह्यां रसई अनूठौ है-

तैनें मेरी कदर न जानी रे बजमारे जीजा।
सौने की थारी में भोजन परोसे, जैमें जीजा-सारी।

याई तरह सलहज-ननदेऊ के संबंध बड़े आतरिक अरु स्नेहसिक्त होंय-

ननदोइया ते यारी नांइ छूटै, बालम रूठै।
जब रे ननदेउआ बागन में आये, घरर-घरर निबुआ टूटै।

सपत्नी-भाव के संबंध-सन्दरभऊ ब्रज के लोकगीतन में मिलैं। आखिर, 'सौत तौ चूनकी ऊ बुरी होय', ब्रज में जो कहावत प्रसिद्ध है। फिर 'कुबिजा' तौ ब्रज में सौत की प्रतीकई है गई है। सपत्नी, स्वकीया के सगरे सुख-सनेह अरु अधिकार कूँ छीन लेय। बहुत दिना परदेस में रहबेपै ऊ पति काऊ सौत के जाल में फँस जाय, या फिर बाय संगई लिवाय लावै। सावन के 'जाटनी' नाम के एक लोकगीत में सौत के मारैं स्वकीया की वेदना कौ चित्रन भयौ है। स्वकीया-विवाहिता बाके डोला कूं वापस लौटायबे के तांई सगरे परिवारी जनन ते अनुनय विनय करै-

'गए मारू पटना के देस, लगाइ लाए जाटनी जो महाराज'।

अन्य संबधंन में बहन-बहन के संबंध, भाई-भाई के संबंध, सारे-बहनोई, सास-दामाद, समधी-समधी, ससुर-बहू आदि के सन्दरभऊ इन लोकगीतन में देखे जांय। इन संबंध-संदरभन कौ आयाम बड़ौ ब्यापक है। लोक-संस्कृति के विसिष्ट अंग हैबे ते इन लोकगीतन की पारिवारिक सीमान कौ विखराव बाखर ते बाहर, अड़ौस-पड़ौस तक भयौ मिलै। बधाए के लोकगीतन में याई ते सबन की कुसलता अरु समृद्धि कौ संकेत मिलै-

सौने के सब दिन रूपे की रात,
सौने के कलस भरैयौं महाराज।
पहलौ बधायौ ससुर घर आयौ,
सासुल नैं लियौ भर गोद महाराज।
दूसरौ बधायौ पड़ौसी घर आयौ,
पड़ौसिन नैं लियौ भर गोद महाराज।

या प्रकार पारिवारिक जीवन के अनेकानेक संबंध-संदरभन कौ बड़ौई यथार्थ रूप ब्रज के लोकगीतन में देख्यौ जाय। लोक-जीवन अरु संस्कृति के ये सजीव चित्र ब्रज के आंचल की विसेषतान कौ सहज आकलन करैं। इनमें एक ओर माँहू

ब्रज प्रदेस की पारिवारिक व्यवस्था अर स्थिति कौ सरूप स्पष्टत: उजागर होतौ भयौ मिलै, तौ दूसरी ओर मौंहू वाके करुए-मीठे अनुभव-अनुभूतीन की यादगारक तैरतौ मिलैं। ब्रज के पारिवारिक परिवेस मैं परस्पर खड़खड़ाहट के बीच मैं जीवन कौ सरस अर मधुर सलिला कौ प्रवाह वाके आकरसन-बिन्दू कूं काऊ तरह लुप्त नहीं हौंन देय। ब्रज के लोकगीत साँचमाँच झाँकि पारिवारिक जीवन के हँसते-बोलते, रोते-बिलखते, रूसते-मटकते, लरते-झगरते, मिलते-बिछुरते, नाचते-गाते, खाते-गपाते अर नौंक-झौंक करते मनुहार करते छिनन के बड़े संवेदनापरक, भावनासिक्त एवं संगीतात्मक सास्वत बिम्ब हैं। तबई इनके सहारे ब्रज की सामाजिक सांस्कृतिक धरोहर ते सहज परिचय है जाय। फिर, ब्रजभाषा कौ लोच-लावण्य इनकी शिल्पगत-अभिव्यंजना कूँ अलगई स्वरूप प्रदान करै। सावन को 'मल्हार' अरु फागुन के 'रसियान' कौ तौ रसई अनूठो है। फिर, कृष्ण-भक्ति के संदरभन नैं तौ इन लोकगीतन मैं चार चांद लगाय दिये हैं।

-4९, बी, आलोक नगर
आगरा-282010





सामन के लोकगीतन में नारी की बिरह-वेदना

-श्री मेवाराम कटारा

नारी कौ हियौ लौनी घी की नांई कोमल अरु सनेह भर्यौ होय । भावुकता अरु सहृदयता में नारी पुरुप ते ऊ यढ़िकें होय । भावुक हैये के कारन या पुरुष-प्रधान समाज माँहि अपने उद्गारन को अभिव्यक्ति के ताँई सदा लालायित रहै। समाज की कछू ऐसी यियस्था यन गई है कै नारी भीतर ई भीतर धुनती, युनती, घुनती अरु घुटती रहै । अपने मनगुन की यातन कूँ अपने पति के सिवाय काऊ ते नाँय कह सकै । परि जय म्हौंऊ याकी यात नहीं सुनी जाय तौ फिर कौन सौं कहै। पति,सास, सुसर,जेठ,जिठानी, देयर,देवरानी को सिकायत करै तौ कौन ते करै । सो याकी इच्छा होय कै सम्पूरन नारी जाति की या घुटनै सार्वजनिक रूप ते समाज के सांमई व्यक्त करै । स्यातै सुनके कोऊ याको पीर हरै।

पुरानौ साहित्य उठायकें देख्यौ जाय तौ सिद्ध होय कै नारी जाति सदा ते अपने हिये के उद्गार व्यक्त करती आई है । वैदिक युग की ऋपिका,उपनिपदकाल की विदुपी अरु युद्धकाल की भिक्खुणी याकौ प्रमान है । विज्जिका जैसी अनेकन नारी साहित्यकारऊ भई हैं । नारी सृजित साहित्य ते पतौ चलै कै नारी जाति अपने मन की यातै काऊ न काऊ माध्यम ते व्यक्त करती आई है ।

समै यीततौ गयौ । भारत पै विदेसीन को कारो छाया परो । भारतीय संस्कृति मरी अर मर्दन की मति हरी । सो यिचारी नारी के म्हौंपै परदा डारि दियौ,नाक में गहने के रूप में नकेल सी डार दई । गरे में हाथन में अरु पामन में ऊ गहने के यहानें येड़ी अरु हथकड़ी पहराय दई । छाती पै गहने कौ पत्थर धर दियौ । यिलासी संस्कृति के पुजारी विदेसीनें नारी कूँ विलासिता कौ साधन यनाय लियौ । यिचारी नारी गहने के हिसक की मारी घरवारी यनिकें घर की चारदीवारी में इन मोटे अत्याचारनें सहती रही । याके विदुपी हैये के तौ सपने दूर रहे,आखर ज्ञान ते ऊ यंचित रह गई । सो एक भौत यड़ी संख्या अनपढ़ नारी की समाज में है गई परि लाज की मारी सय कछू सह गई ।

मांसि चाहै पढ़्यौ होय या अनपढ़ अपने मनकी यात तौ कहनौई चाहै । पढ़े लिखेन कूँ तौ यात कहये के भौत से साधन हैं परि *अनपढ़न कूँ तौ मात्र लोक साहित्यई सार्वजनीन साधन है । लोक साहित्य की अनेक यिधा होय ।* नानी-दादी यच्चन कूँ कहानी सुनाय-सुनायकें अपनी अभिव्यक्ति करदे अर मन हलकौ करलैं । भौत से अनेक औसरन पै लोकगीत गायकें अपने मन की टीसै कह दें। सार्वजनिक रूप ते मिलकें व्यक्त करी भई टीस काऊ एक नारी की नाँय होय,सम्पूरन नारी समाज की टीस होय ।

नारी यचपन तेई अभिव्यक्ति कौ औसर तोपती रहै । जैसेंई औसर मिलै,अपनी यातै कह दे । य औसर है-सादी - ब्याह के गीत,संस्कार-गीत,तीज -त्यौहारन के गीत अरु मौसम-महीनान के गीत । सामन अर फागुन कौ महीना नारी जाति कौअभिव्यक्ति कूँ सयते जादा औसर दैये वारे हैं । इन महीनान में व्रजवासिनी नारी अपने मन की अच्छी तरियां निकार सकै। फागुन की होरी में तौ अपनी झिझकें पूरी तरियां खोलिकें मर्दन कूँ दो दो हाथ यतावै ।

सामन के गीत नवोढ़ान के गीत हैं। या औसर पै पहली वेर मैया के घरै छोड़िवे वारी, कै ज्याके व्याहै चार छै सालई भये होंय, कै व्याह की उमर आय गई होय,नायिका के रूप में देखी जाय । ल्हौरी-ल्हौरी लालीऊ पहले तेई लैन में लग जांय। सो ये गीत नवोढ़ान केई कहे जाय सकें । पिया के घर जाये पीछें सास,सुसर ,जेठ, जिठानी अरु ननदन की दीवारन में घुटती भई वू जो कछू भोगै वाय झूला पै वैठकें गीतन में कह दे । सुसरार में भैया के आयवे की वाट देखै अरु मैया वापन की याद करै तौ पीहर में आयकें पिया के प्यार कौ सुमरन करै । दोनूं लंग के प्यारै विसार नाँय सकै सो दोनूं ठौर विरहा की आग में जलती रहै अरु याही धुनावुनी में पलती रहै । सूधी सादी भाषा में गाये गये सामूहिक राग अरु लय वारे इन गीतन के भाव भौत गहरे अरु मार्मिक होंय । व्यंजना सब्दसक्ति के माध्यम ते वे अनपढ़ वालिका, किसोरी अरु नवोढ़ा नारीऊ न जानें कहा कहा मन की वातै कह जांय । कवहु-कवहु तौ सूधी अमिधा में ई कह डारें । विनकी भाषा भाव अरु आवेस के अनुसार मीठी अरु करई होय । जैसेंई सामन कौ महीना सिरू होय सवन के भैया अपनी-अपनी भैनान्नें लिवायवे जांय। भैन भैयानके आयवे की वाट अटान पै चढ़कें देखती रहें। विन्नें अपने मायके की याद सतामती रहै । अपनी माँ ते अरदास करै-

मैया मोकूं भैया खंदइयौ री कै सामन आयौ ।
वेटी तेरी भाभी कौ वरज्यौ री कै सामन आयौ ।
मैया मोकूं चाचा खंदइयौ री कै सामन आयौ ।
वेटी तेरी चाची कौ वरज्यौ री कै सामन आयौ ।

या तरियाँ लड़की ज्याय खंदायवे की वात करै वायैमें कोऊ न कोऊ वरजवे वारौ तैयार है जाय । भाभी,चाची ,ताई अपने-अपने मरदन नें वरज दें । अखीर में विचारी अपनी मैयाते ई कहै-

मैया मेरी तूही अइयौ री , कै सामन आयौ ।

पुराने समै में नाई-वाम्हन छोरीन कौ सम्बन्ध करिवे भेज दिए जांते । वे अपनी राजी ते दूर-दूर सम्बन्ध कर देंते। जहां विन्नें कोऊ वेटावारौ खातिरदारी ते राजी करि लेंतौ,चाहें छोरा कैसौऊ होय, वे रुपैया नारियलै म्हांई टिकाय देंते । विनकी वात कौ कोऊ विरोधऊ नाँय करतौ अरु नाक कौ सवाल समझौ जांतौ । इन सम्बन्धन में छोरी की कोऊ सलाह नाँय पूछी जाती अरु न वाकी कोऊ वात मानी जांती । पसु की तरियाँ विना मरजी के वर के संग रथ में वैठायकें ढकेल दई जांती । भौत से तौ क्षत्रिय कहायवे वारे निर्जीव माल की तरियाँ या ढोर की तरियाँ लूटकें कै जीतकेंऊ लै जांते। पीहर ते एक दम भौत दूर पहुँचते ई,जहां अपनौ कोऊ नहीं दीखै,विचारी विपदा की सी मारी, कोमल-कान्त भाव पुष्पन की क्यारी,वचपन की सहेलीन ते न्यारी कहा सोचती होयगी । जो कछू वू सोचै वाय झूला की पटली पै वैठकें अपनी सहेलीन के संग न्यौं गावै-

उल्ली पार मेरौ वटुवा भीजै
पल्ली पार मेरौ हार जी ।
आवेगौ मेरौ-----(नाम) सौ भैया
जिन्नें दई परदेस जी ।

एक लंग याकौ सनेह कौ सम्पत्ति ते भर्‌यौ भयौ सुसरार रूपी वटुआ अरु दूसरी लंग पीहर के प्यार कौ हार,दोनूं लंग प्यार भरै,दोनून के तांई जीवै मरै । दोनूं कुलन की लाज वाके हाथै । या पच्छ में 'वटुआ' अरु वा पच्छ में 'हार' भीजै सो वड़ी सफाई सो याती कहै कै या विरह के कष्ट ते उवारवे की छिमता वाई भैया में है। अरु वूई आवैगौ ज्यानें मोय परदेस में डारौए। भैया सासरे ते आदर के संग लिवाय लैजायगौ अरु सासरे वारेऊ प्यार ते वाके संग पठाय दिंगे । याते दोनूं कुल की लाज वनी रहैगी अरु मेरौऊ मन वंट जायगौ । लोकगीतन की इन सूधी सादी पंक्तिन ते पतौ चलै कै विरह वेदना में डूवी भई लाड़िलीयै अपने भैया पै पूरौ भरोसौ है कै वूई या वियोग के सागर ते पार कर सकै । परि फिर सोचै,या दूर डारिवे में भैया कौ का खोटै, खोट तौ विन नाई-वाम्हनन कौ है जो विना सोचे समझे इतेक दूर सम्बन्ध कर गये हैं। नायिकाय क्रोध आयजाय,आवेस के संगई भाषा वदल जाय अरु नाई-वाम्हनन कूं कोसवे लग जाय -

चौंरे नौवा बरके कौवा
क्यों डारी परदेस जी ?

बिचारी फिर अपनी बुद्धि पै जोर डारै अरु सोचै,यामें बिनकौऊ कहा खोट । बेऊ तौ या बातै भाग्य पै डार सकें। सन्तोष करिबे के काजैं भौत अच्छौ तरीका है । नाई-बाम्हन के मन की बातै न्यौं कहै-

कहा करूं जिजमान की बेटी,
करम लिखे परदेस जी ।

जि बातऊ सांचै । भाग्य कौन के बसमें है? क्यौंकै भाग्य कौ जानबौ तौ सम्भव हैई नांय सकै । क्यौंकै-

चिट्ठी होय तौ बांच लऊं,
करम न बांचौ जाय जी ।

या प्रकार बू अपने मन की बिथाय मन में पालती जाय अरु सामन में झूला पै बैठकें गावै-

कच्चे नीम की निबौरी
सामन जल्दी अइयौ रे ।
दादा दूर मत दीजौ ,
मैया नहीं बुलावैगी ।
बाबा दूर मत दीजौ,
दादी नहीं बुलावैगी ।

सामन कौ महीना लगतेई असाढ़ के अंत में नीम के पेड़न में निबौरी लगबे लग जांय । राह तकती बिचारी मैया-बाप अरु भैया के बियोग ते दुखी भई निबौरी अरु मन्द मंद गन्ध बारे बौर ते लदे नीम के पेड़ै देखकें सामन आयबे कौ अनुमान लगावै । या बीच के बौरे से दिनाऊं बाय भौत लगैं सो सामन कौ आह्वान करै अरु दादा-बाबान ते या बात की बिनती करै कि बाकौ ब्याह इतेक दूर मत करियौ कै मैया,दादी,भाभी बाय बुलामेंई नहीं अरु कोऊ लैवे जाय तौ बाय बरज दें । छ्हारी छोरीऊ सामन में झूलें और गामें । या गीत के माध्यम ते अपने दादा,बाबा,भैया आदि कूं पहलै ई राजी करलें ज्याते बिरह-बेदना सहन नहीं करनी परै । जि गीत काऊ न काऊ के कान परतौई होयगौ, कोऊ न कोऊ तौ कान धरतौई होगौ अरु या कष्ट के निवारन तांई कोऊ न कोऊ तौ ध्यान रखतौ ई होयगौ ।

सासरे में ब्रजनारी सामन के आगमन पै पलक पांवड़े बिछायकें अपने भैया (बीरन)की बाट देखती रहै । आमतई बाय आदर दैकें आसन पै बैठावै अरु बाकी तन-मन-धन ते खातिर करै-

आमत देखुंगी---(नाम)से बीर,
बदलिया बे छोटी।
बैठौरे भैया तरवर,बिछाय,
तिहारी सौने की टोपी।
झरा झर मोती।
मैदा की बे पूरी
जैंपौ से भैया ।
मोती छल्ला भात मैदा की पूरी।

लड़की चाहै पीहर में होय चाहै ससुरार में ,सुख में होय चाहै दुख में, दूर रहै चाहै पास,क्वारी होय चाहै ब्याही, अपने पीहर कूँ कवहूं नाँय बिसरै ।गीत गीत में वाकौ सुमरिन करै ।वाय अपने भैया की सदा बाट लगी रहै।वाके स्वागत के तांई सदा ठाड़ी रहै।याते वाकी बिरह वेदना कौ प्रमान मिलै है ।जैसेई मगरे पै कौवा बोलै बाय और कोऊ नाँय सूझै,अपने भैया के आगमन की सूचना समझै अरु राजी हैकै गावै-

मगरे ऊपर भैया कागा रे बोलै
बोलै वचन सुहावने ।
माँ जाये आमें,
बोलै वचन सुहावने ।
चुगबे कूँ दऊंगी रे कागा ,
सांठी रे चाँमर
सौने की चोंच मढ़ामने ॥

वा विरहन के मन में भैया मिलन की कितेक प्रवल लालसा है ।जब आय जाय तौ वाकौ आदर अरु खातिर करिकैं राजी करै फिर अपने सासरे बारेन ते पीहर जायवे की अनुमति माँगै परि वे वा विरह वेदना ते व्यथित के संग कैसौ अन्याव करैं या गीत ते पतौ चलै-

आयौ री मैया जायौ वीर,
नंदी नखता डाक कें ।
हिरना की वे डोड़ी ।
कहौ तौ सासुल हम पीहर जामें ?
पीहर डरे हिंडोरे जी राज ।
हम का जानें हमारी कुलवहू रानी,
पूछौ ए अपनी जिठानी ते जाय
जव ढुरि जइयौ माई वाप कें ।हिरना---
कहौ तौ जिठानी हम पीहर जामें ?
हम का जानें हमारी कुल वहू रानी
पूछौ ए अपनी द्यौरानी जाय ।

या तरियाँ विचारी सवन ते पूछै ।वे नखरा करती भई एक दूजे के माथे पै बातै डार दें । अन्त में बिचारी बड़ी आस के संग ननदुल ते पूछै,परि ननदुल तौ सबन ते ई कठौर निकरी ।आगे याही गीत में ननद कौ अत्याचार देखिबे कूँ मिलै-

कहौ तौ बाई जी हम पीहर जांय
पीहर डरे हिंडोलने ।

ननद अनुमति तौ दे परि कछूक सर्त लगावै।सर्तऊ ऐसी है जो कबहुं पूरी होंनी नाँय।न सर्त पूरी हुंगी अरु न अपने पीहर जायगी।कठोर हिरदै वारी ननदुलकौ जवाव सुनौ-

जितनौ री भाभी कुआ में नीर
इतनौई पानी भरि जाइयौ ।हिरना----
जितने री भाभी पीपर में पात,

इतनी री रोटी करि जाइयौ । हिरना----।
जितनौ री भाभी कोठी में नाज,
वाय पीस धर जाइयौ । हिरना------।

ना नौ मन तेल होयगौ अर न राधा नाचैगी । सो विचारी ब्रजवाला कहा करै । अपने भैया ते यौं कहै-

सब घर रे भैया आयौय ताव
ननदुल आयौ वैरी इकतरौ । हिरना----।
सब घर कौ भैया उतर्‌यौ ताव,
ननदुलै लै गयौ वैरी इकतरौ । हिरना ---।

इतेक दुखी हैवे पैऊ विचारी विरहिन अपने घर की पोल नाँय खुलन दे अर अपने भैया ते बहानौ लगाय दे अर संगई अपने आक्रोसै ऊ व्यक्त करि देइ ।

पुरुष के कंधान पै सदा गिरस्त पारिवे कौ बोझ होय अर वाके संगई देस की रच्छा कौ । इन दोनूं करमन कौ निर्वाह वू अपनौ धरम समझ कैं करै । याके ताईं वू अपनी प्रानन तेऊ प्यारी घरवारीयै विरह की आग में जरती, तड़पती छोड़िकैं सीमा पै लड़िये कूं चल्यौ जाय है । कालिदास के मेघदूत कौ यक्ष, अमर सिंह राठौर अर बुन्देला मराठा याके उदाहरन हैं । पति कौ विरह नारी मन की सबते बड़ी विथा है-

छाइयै कैसी बहार,
आई रे रितु सावन की ।
अमुआ की डार पै बैठी कोयलिया
जियरा डोलै हमार ।
रेसम की डोरी चन्दन की पटली ।

इन सब आनन्द दैवे वारी परिस्थितिन में नायिका विरह के कारन दुखी हैकैं गीत के आधार में कहै-

'मन कूं सतावै भरतार ।'

ऐसे मनमोहक वातावरन मेंऊ पिया कौ वियोग सदा सतावतौ रहै । इतेकई नाँय चन्दा की चाँदनीऊ वाय जरावै हौरे, आग बरसावै, सतावै-

चांदनियां छिटकी रे बालमा
मैं तौ याही गुन पतरी है गई ।

बागन में पिऊ पिऊ करतौ पपैया वाके विरह वेदना के घावनें कुरेदै। पिया की याद दिवावै अपने याकी विरह कौ-

पपैया बोल्यौ बाग में
री भैना छाइये घटा घनघोर।

या कारन वू प्रवासी पति ते बेर-बेर में पास में रहवे कूं निवेदन करै-

न्ह्याई रहौ मेरे प्रानन प्यारे
न्ह्याई रहौ जी ननदी के वीर ।

आप न्ह्याई रहिंगे तौ मैं सिंगार करूंगी ,पूजा करूंगी । परि विरहनी झूलती झूलती अपनी बिन सहेलीन ते ईर्ष्या करिबे लगै जिनके पति बिनके पासई रह रहे हैं । ऐसी सहेलीन्नें भाग्यवती बतावै परि अपने पति तेई नेह राखै। कोऊ दूसरौ बाते ठट्टेऊ करै तौ वाय अच्छौ नाँय लगै । या प्रसंग पै विचार करौ -

वर के डुग्गे झूलती डावर नयनी
सात सहेली बीच ।
गैल बटोही नीकस्यौ,
लीले घोड़ा असवर ॥

बटोही झूलती युवतीन में ते विरहनी कूँ पहचान जाय । मलिन मुख कान्तिवारी वियोगिनीयै देखिकैं पूछै-

हैं बिनके मुख ऊजरे
त्यारौ मैलौ वेस ?

नायिका उत्तर देइ-

उनके ढोला घर रहैं,
हमारौ बसै परदेस ।

उत्तर सुनकैं राही बाय अपने संग लै चलिबे कौ न्यौंतौ दे- मेरे संग चलौ,तुमन्नें प्रीतम के पास पहुंचाय दऊँ। परि नारी कौ पतिव्रत धर्म जाग उठै अरु पराये पुरुष की भर्त्सना करती भई कहै-

डाढ़ी मूडूँ तेरे बाप की,
पराये ढोला,गोंछन सेत समेंत ।

राही बिचारौ झेंप कौ मारौ वाते वाके पति कौ परिचै अरु सकल सूरत पूछै परि वानें तौ विचारी नें अपने पिया की सूरतई नाँय देखी । वारी सी उमर में ब्याह है गयौ,गौने कौ समै आयौ तौ परदेस चलौ गयौ । बिचारी घर कौ कामकाज करिबे वारी घरवारी बनिकें ई रह गई । बू अपनी सास ते सबरी बात जाननौ चाहै । ज्याते पिया कौ समाचार मिल सकै,आपऊ पिया ते मिल सकै अरु अपने विरहा की आगै बुझाय सकै । सास वाकूं जो सूरत सकल बतावै बू सब बटोही ते मिलै। पहचान के सब चिह्न वा बटोही में पावैं । सास कूँ जब बू या बातै बतावै कै याई सूरत सकल और पहचान वारौ एक बटोही कुआ के पनघट पै ठाड़्यौ है तौ सासऊ बाते मिलबे के तांईं लालायित है जाय अरु बहू ते वाय घर बुलायकें लायबे की बात कहै । जाऔ बहू बू बटोही मेरौ बेटा है ।

या समस्या कौ मूल कारन है बाल-विवाह! छोरी तौ या समाज नें ऐसी समझ राखी है कि जि तौ दूसरे के तांईं जनमी है सो जल्दी ते जल्दी काऊ दूसरे कूँ दैकैं अपनौ बोझ कम करौ । याकौ समर्थन महाकवि कालिदास नें ऊ अपने नाटक 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' में पुरजोर तरीका ते कर्‌यौ है-

अर्थो हि कन्या परकीय एव,
तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः ।
जातो ममायं विशदः प्रकामं,
प्रत्यर्पित न्यास इवान्तरात्मा ।।'

इतेकई नाँय ,शार्ङ्गरव के या वाक्य नें तौ बिचारी वा बिरहिन की कमर तोर दइयै-

शार्ङ्गरव-किं पुरोभागे ! स्वातन्त्र्यमवलम्बसे शकुन्तले!

यदि यथा वदति क्षितिपस्तथा
त्वमसि किं पितरत्कुलया त्वया ।
अथ तु वेत्सि शुचि व्रतमात्मन:
पति कुले तव दास्यमपि क्षमम् ।।

कहकै नारी सुतन्त्रता पै रोक लगाय कै वू अविस्वसनीया बनाय दई है अर महत्वहीन प्रानी की नाईं उपेक्षित करि दई है । कालिदास जैसे महान कवि की बात कौऊ असर या समाज पै आदर्स के रूप में पर्यो है ज्याय नारीजाति कबहुं छिमा नहीं कर पावैगी।

भौत से मैया-बाप अबोध बच्चान कौ अनमेल ब्याह करि दें । बिनें अपनौ सम्पन्न भयौ ब्याहु याद नांय रहे । वे कहा जानें ब्याह की बीमारी । वे तौ न्यौं समझें कै बिनके तांईं कोऊ एक और साथी खेलबे के तांईं मंगाय दियौ है । ऐसे ब्याह ते छोरी बिचारी जीवन भर दुख पामती रहै ।

गरमीन के दिनां तौ सासरे में बड़ी कठिनाई ते निकरें । याऊ में पति कौ बिरह अरु होय तौ कैसें सहै । कैसें सहै वू सास-ननद के अत्याचारनें । या गरमी में पीसनौ-पोयबौ कितेक कष्टदायक होय,याय वूई समझ सकै ज्याय अनुभव होय। ऐसी कस्ट की घरी में भैनाय भैया की याद सतावै अरु गीत के माध्यम ते अपनी या बिथाय न्यौं बतावै -

पाँच पसेरी रे भैया पीसनौ
ओरे भैया ज्याय पीसतई दिन जाय
कहत दु:ख बीर सौं ।

इत जब पति सोभा पै देस की रक्षा करिबे चल्यौ जाय तौ वाके बिरह बेदना ते जरती भई मिलन की आस ते सन्देस-वाहक कूं इनाम दैबे को कहै अरु वाकूं भौत से तरीका बतावै कै वाकौ सन्देसौ कैसें प्रभावसाली बन सकै। या लहरिया ते स्पस्ट होय-

पाँच टका तोय दऊंगी गांठ के
है कोऊ लसकर जाय लहरिया
अब रंग भीजै धन कौ डोरिया ।
वा लसकरिया ते न्यौं कहै
घर मरीयै तेरी माय,लहरिया । अब---
माय मरीयै मर जान दै
चरखा को सोभा उठ जाय,लहरिया । अब--

वा लसकरिया ते न्यौं कहै

घर मरीयै तेरी भाभी लहरिया । अब ----।
भाभी मरीयै मर जान दै,
चाकी को सोभा उठ जाय लहरिया । अब---।
वा लसकरिया ते न्यौं कहै
घर मरीयै तेरी छोटी लहरिया ।अब---।
छोटी मरीयै मर जान दै
रसोई की सोभा उठ जाय लहरिया । अब---।
वा लसकरिया ते न्यौं कहै

घर मरीयै तेरी भैन लहरिया । अब रंग---।
बहन मरीयै मरजान दै
आये साजन फिर जाँय,लहरिया । अब रंग---।
वा लसकरिया ते न्यौं कहै
घर मरीयै तेरी गोरी लहरिया । अब रंग---।

या समाचार कूँ सुनते इ पति चल्यौ आवै-

पूछी कुआ की पनहारियाँ
पूछी घर की कुसलात,लहरिया । अब रंग---।

पनिहारी असलियतै बताय देइ-

मायतौ कातै त्यारी कातनौ
भैना तौ खेलै गुड़िया ख्याल लहरिया । अब ---।

या मिथ्या बातै सुनकें भरतारै क्रोध आय जाय और कहै-

लाऔ कंटीली रे वन की लौदरी
झूरूं लाड़ लड़ीली कौ लाड़,लहरिया
अब रंग भीजै धन कौ डोरिया।

झूला झूलती भई या 'नागनियां' गीत में एक ब्रज नारी नागिन के डसिबे पै अपनी सुसरार वारेन के वियोग ते और बिनके प्रति अपनौ धरम न निभाय पायबे तांईं छिमा याचना करती भई कह रही है । अपनौ फर्ज नहीं निभाय पायबे कौ बाय भौत परेखौ है-

झूला रे झूलत नागिन डस गई जी
ऐजी डस गई अंगुरी की पोर । झूलारे---
सासुल सौं कहियौ मेरी वीनती जी,
और ससुर सौं कहियौ प्रनाम
बहुअल की सेवा अब ना वदी जी । झूला रे---
सैंया जी सौं कहियौ भूलै भूल जी,
घर कूँ बसामें,लामें दूसरी जी
लैमें न भसम रमाय । झूला रे--

परमारथ के कारन सरीर धरिबे वारी ब्रजनारी अपनी चिंता नाँय करै,वाय चिन्ताय अपने सास-ससुर की बुढ़ापे में सेवा की,वाय चिन्ताय अपने पतिकी गिरस्ती की । दूसरे के तांईं अपने अधिकारऊ ए छजोड़ दे ।

या लोकगीत में सामन में झूला झूलती ब्रज बनिता वैसे तौ प्रकृति कौ वरनन करै परि व्यंजनार्थ लियौ जाय तौ याके माध्यम ते जि कहनौ चाहै कै भैया अब तौ लैवे आय जाय,मैया अब तौ मोय बुलाय ले । या लोकगीत ते पिया कौ विरहाऊ व्यंजित होय कै या वातावरनै देख कै बिरहिन कौ प्यार उमड़ परै । भावुकता में भरी दोऊ कुलन के विरह में अपने मनें कैसें बतावै-

सामन आयौ अजय सुहावनौ
एजी कोई आइयै अजय यहार ।
सखियन यागन झूला झूलती जी
कारे कारे यदरा यिजुरी चमकती जी । एजी--
नदियन किस्ती अम्मा मेरी चलि रहीं जी,
भंवरा गुंजारैं अमुआ की डार पै जी । एजी--
यागन कोयल कुहु कुहु कर रही जी,
चम्पा चमेली फूली केतकी जी । एजी--
चमन की सोभा गैंदा दै रहे जी ।

झूलते याय अपने भैया की याद आय जाय । कल्पना करै भैया घोड़ा पै चढ़िकें आय रह्यौ होयगौ जो सयन कूं कछू न कछू जरूर लावैगौ अरु यहन के तांईं तौ चूंदरी जरूरई लावैगौ नहीं तौ लोग याय योलन नहीं दिंगे -

यावाजी के याग में हम झल्ल झल्लर झूले हे ।
याया जी के याग में दो चिड़िया चूं चूं करती हीं ।
इतते आये---(नाम)भैया, का सौदा लाये जी ।
आप कूं घोड़ा याप कूं घोड़ा कै मां कूं जोड़ा लाये जी ।
यहन कूं चूंदरी न लाये तौ सौ सौ नाम धराये जी ।

सासरे में रहै तौ पीहर वारेन की विरह वेदना अरु पीहर में रहै तौ सासरे वारेन की विरह वेदना सतावै। पीहर में सखीन के संग झूलती भई गरजती विजुरियाय देखकें पिया के विरह में डरप रही है-

सावन आयौ सुघड़ सुहावनौ
एजी कोई आइये अजय यहार ।
झूला तौ झूलै सखियन याग में जी
एजी कोई गामैं गीत मल्हार
नहनी नहनी बुंदियन झर लग्यौ जी
एजी कोई झुक झुक कृष्ण मुरार ।
पिहु पिहु पपीहा देखौ करि रह्यौ जी ,
एजी कोई मोरन की किलकार ।

परदेस में गये पिया कौ विरह वाके गीत-गीत में व्यक्त होय -

अरी भैना घटा तौ उठीयै घनघोर,
सामन में चमकै बीजुरी जी ।
कारे कजरारे री यदरा झुकि रहे,
अरी भैना उमड़ घुमड़ चहुं ओर ।
झूला झूलती री भैना डर लगै
अरी भैना पिया गये परदेस ॥

पर फिर यदरियानें उमड़ती-घुमड़ती देखकें विचार करै कै या पिया कूं विरह की वेदना सतावैगी सो वेऊ जरूर आमिंगे, राजी करिये कूं चूंदरीऊ लामिंगे । ऐसौई एक गीत-

बदरिया बरसत है चहुं ओर
किवरिया खोलौरी सजनी ।
दादुर मोर पपैया बोलैं,
अंग कँपत डरपत मन मोरे ।
अब तौ आवौ बिदेसी पिया ,
पचरंगी तोहै चूनर लायौ ।

परदेस गये पिया के वियोग की विथा तौ होय ही है। संग में वाय एक चिंता औरऊ सतावै कै पिया कहूँ परायौ नहीं है जाय ।

वर्षा होय। पानी बहै। बहते पानीयै देखकें पीहर के वियोग ते दु:खी बहन के मन में मैया-बाप अरु भैया की चिंता बनी रहै । छिन छिन याद आमते रहें । न्यौं कहौ एक छिनऊ बिन्नें अपने मन ते त्याग नाँय पावै, भुलाय नाँय सकै ।

रिमझिम रिमझिम मेहा बरसै
जी पानी कहां जाय जी
आधौ पानी नन्दी किनारे
आधे में मेरौ भैया न्हाय जी ।

बाबुल के घर ते विदा होती भई ब्रज ब्याहता अपने बाबुल के घर की अरु बचपन की यादन में ऐसी डूब जाय कै पिया के घरऊ जायबे कौ मन नाँय करै । या गीत में नारी की विरह वेदना की चरम सीमा झलकै-

निबला तले डोला धर दे मुसाफिर
सामन की बहार रे ।
अपने महल में गुड़िया खेलती रे,
झूला झूलती रे,
सैंया के आये कहार रे
गुड़िया तौ खेलन न पाई
झूला तौ झूलन न पाई
डोली लैगये कहार रे ।

जि विरह की विथा बेटी कूँई नाँय रहै मां कूँऊ बराबर होय । मांऊ तौ नारी है । बेटी के आयबे की वाय सदां बाट रहै। या गीत ते पतौ चलै कै मैया की विरह विथा काऊ ते कम नाँय । बू सदा अपनी लाड़िली ते मिलबे की लालसा राखै-

कोठे पै चढ़िकैं बाकी मैया देखै
आज तौ लाड़ी बेटी आवैगी ।

पर जब वू भैया के घोड़ाय खाली देखै तौ दूरतेई पछार खाय जाय-

रीतौ सौ घुड़ला बाकी मैया नें देख्यौ
ठाड़े ते खाई पछार ।

या गीत में मां पच्छ की वेदना चरम सीमा पार कर गई है ।

पति नारी कौ सिंगार है, मांथे की बिंदिया है, मांग कौ सिंदूर है, बाके अधरन की मुसकान है, बूई बाकौ वार है, बूई त्यौहार है । या पति के सुखै पायबे कूँ बू सब दु:खन्नें हँस हँसकें सहती भई संघर्ष करै । पति के विरह में बाय न कोऊ त्यौहार अच्छौ

लगै अरु न कोऊ उच्छव । रिमझिम बरसते सावन के बदराऊ वाय नांय सुहावें अरु उल्टौ विरह की आग में दहकें । पिया के संग रहकें जो घनघोर घटा वरदान बन जायें अरु आनन्दित करैं बेई कारी कजरारी घटाटोप अँधेरौ करिवे वारी घटा पिया के विरह में नागिन सी डसें, मन कौ धीर छुड़ावें अरु पीर पहुँचावें -

अरी भैना घटा तौ उठीयै घनघोर
सामन में चमकै बीजुरी जी ।
कारे कजरारे री बदरा झुकि रहे
अरी भैना उमड़ घुमड़ चहुं ओर ।
झूला झूलती री भैना डर लगै
अरी भैना पिया गये परदेस जी ।

सामन की गुहार अरु कोयल की गुहारऊ वाय नांय भावै। ज्या झूला पै वू बड़े चावते झूलै वू वाय विरह-वेदना के दोनूं पच्छ के भावन में झुलावै अरु अपने मनें सतावै ।

-36 जसवंत नगर,प्रदर्सनी मार्ग,
भरतपुर 321001





ब्रज के लोकगीतन में सास-ननद

-डॉ. नज़ीर मुहम्मद

समाज भाव विभोर हैकें सहज भाव ते जो गाइ उठै है बुई लोकगीत है जाए है। मानव समाज सदा ते ही अपनी-अपनी भासान में लोकगीतन कूं गावत रह्यौ है। लोकगीत हमारे जीवन-विकास के इतिहास हैं, इनमें संगीत अरु काव्य कौ सम्मिश्रन होए है।

वैसे तो सब भासान में लोकगीतन की अटूट परम्परा रही है परि मिठलौनी भरी ब्रजभासा के लोकगीत तौ रस के सागर, प्रेम भाव के निर्झर और ब्रज संस्कृति के उजागर हैं। इनमें मानव जीवन के समस्त क्रिया कलापन कौ सफल चित्रन भयौ है। ब्रजभासा के लोकगीत सुख-दुख, हर्स-विसाद, आसा-निरासा, इच्छा-अनिच्छा, संजोग-वियोग, राग-विराग, प्यार-तकरार के ताने बानेन ते बुने गए हैं। इनमें सामजिक रीति रिवाजन कौ घनौ वर्नन है। समय-समय पै गाए गए लोकगीतन कों संग्रह करिकै इन्हें क्रमते सजाइ दयौ जाइ तौ ब्रज लोक महाकाव्य बन जाएगौ। सास-ननद के सम्बन्ध के अनेक लोकगीत मिलें हैं।

माँ वड़े उत्साह सौं बेटा कौ ब्याह करै है। बहू के आइवे पै बेटा कूं वाके बस में भयौ समझिकें बहू के विरुद्ध है जाए। ननद बाय और भरै और कहति है-

मां भाभी कौ मुंहड़ौ कैसौ ?
नाक चना सी, मुंह बटुला सौ घूँघट में घुर्राई।
बहुतै खानी, नैंक कमानी जै जग जीती आई।
माँ रोटी कितनी खावै?
बेटी चही की चही उड़ावै।
माँ सौनौं कितनौ लाई
नाक की लोंग हाथ कौ छल्ला सब मैके धरि आई।

सास-ननद दोऊ बहू पै पहरौ सौ लगावन लगैं और बाय अपने आदमी तेऊं नांय मिलन देंइ।

गामन में पानी दूरि कूँअन पै ते बहू-बेटी ही भरिकें लावैं। एक दिना विचारौ कुआ पै ही पहुँच जाए अरु रसीली बातन्नें करिबे कौ प्रस्ताव करै है। पर ननद के डर तें बहू बोऊ नांय करि पावै-

पनियाँ भरन चली बांकी रंगीली।
मटका उतारि गोरी कुआ पै धरि देउ ।
हमतें करौ कछु बातें रसीली।

यातें तौ रसिया कैसें कहूं मैं
छोटी ननद मेरे संग गरबीली।

प्यार भरी यातें करिकें यतरस लैवे की चाह तौ बहू के मन में ऊ है। एक दिना मोकों देखिकें अकेली ही पानी भरिबे चली जाए। पनघट पै मिलि जाएं बंसी वारे, नटखट नन्द किशोर और याय घेरि लेंत। बेचारी पनिहारी कन्हैया जू मूं निहोरे करै है-

कान्हा गागरिया मति फोरै मेरे घर सासु लरैगी रे।
परि कन्हैया नांय मानै
बंसी वारे नें घेरि लई, अकेली पनियाँ गई।
सिर पै घड़ा, घड़े पै गागर, गागरि फोरि दई।
हार मेरो भीजौ, सिंगार मेरौ भीजौ चुनरी भीजि गई।
सासु मेरी मारै, ननद फटकारै जग में हंसाई भई।

जाड़े की रात में अटारी पै सोयवे वारौ आदमी बेर-बेर खांसिकें अपनी बहू कूं बुलाइवे कौ इसारौ करै। बहू नीचे बैठी सोवती सासु के पांव दबाय रई है। सोची अब तौ सबु सोय गए। इते में ही ननद कुलबुलाय उठी। बहू बेचारी बोली-

सोइजा सोइजा ननद प्यारी सोइजा
तेरो भैया बुलावै छज्जे पै।

ननद सोय जाय, परि सासु खांसि देय, बहू फिर बोली-

सोइजा सोइजा सासु रानी सोइजा
तेरौ बेटा बुलावे छज्जे पै।

सासु सोवती सी है जाए। बहू जैसे ही उठिवे की कोसिस करै सासु बोली-

बहू पीठि खुजाइदै कुतरी काटि गई है।

बहू पीठ खुजान लगै। परि मन ही मन कहै-

डुकरिया हत्याखोर मरत हति नाहैं।

फिरि खांसिवे की अवाज सुनिकें सासु कहै है जा गडुआ में गुड़ डारि कें दूध लै जा-

बहू दूध लैकें जाए तौ देखै कै नसैनी सबरी टूटी भई है। तौ कहै है-

नसैनी बितु भारली
कैसें पिया की अटारी चढ़ी जाइ।

जैसे-तैसे ऊपर चढ़ जाए तो देखै कि रिस के मारे पती ने किवार ही बंद कर लई-

बिचारी कह उठी-

खोलौ सैंया जी खोलौ किवार
तिहारी धन द्वार खड़ी

वेला हू लाई कटोरा हू लाई, दूध भरौ गडुआ लाई
लाई जुवनवा में प्यार, तिहारी धन द्वारा खड़ी।

बहू कें गर्भाधान होय है। पतौ लगै तौ उमंगति और उछरत सी बल खात भई ननद आवै और भाभी के कान पै मोंह धरिकै हौले ते बोली 'सुनो! हे भाभी, तैनें तौ उड़द की दार खाय लई।'

भाभी खिलखिलात भई बोली 'ऐ, मेरी बहना! तुमनें कहाँते सुन लई', और ननद के मोंह पै प्यारौ सौ स्वीकारोक्ति सूचक चुम्बन दैकें चुप है जाए। ननद एक पांयते उछरत भई मौहल्ला भरि की भाभी और सखी सहेलीन कूं संदेसौ दै आवै

प्रसव हैवे ते पैलैंई ननद नें बेटा हैवे की भविस्यवानी करी है। भावज प्रसन्न हैकै वाकौ गले कौ हार दैवे कौ वचन दै डारै।

जो बीबी मेरे होगौ नंदलाल, तुम्हें दूंगी गलहार।

लाल हैवे पै ननद जब गलहार मांगै तौ भावज मुकरवे लगै, बोली–

लाली जे हरवा मेरे बाप कौ
तिहारे बिरन गढ़ायौ सोई लेउ।

ननद क्रोधित हैकें चल देय और बोली–

पूत जनन्ती भावजी, जनियौ नौ दस धीय।

भावज ननद कूं लौटाय के गलेते लगाय लेय। ननद प्रसन्न हैकें गायवे लगी–

धीय जनन्ती भावजी, जनियौ नौ दस पूत।

इन गीतन में ननद-भाभी के मलिन व्यवहार कौ चित्रन है। जातें लोक की मनोवृत्ति कौ पूरौ पतौ लगै है।

याही तरह एक अन्य गीत में आयौ है जन्ति की पीर ते परेसान बहू सास-ननद ते कहै है कि तुम मेरी पीर कूं बांटि लेउ तौ सासु कूं हँसुला और ननद कूं कँगना दूँगी। और वु दै देय। बेटा कौ जन्म है गयौ। पीर मिटि गई तौ बहू कहै है कै मेरे लल्ला तौ राम की कृपा ते भयौ है। सास ननद तुमनें जामें कहा करौ है। दोनों जनी मेरे हंसला और कंगन लौटाय देउ –

तैनें सासु का कीयौ
मोहि लल्ला राम नें दीयौ
फेरिजा मेरौ हंसला
तैनें ननद का कियौ
मोहि लल्ला राम नें दीयौ
फेरि जा मेरौ कंगना।

बच्चा हैवे पै ही जच्चा और सोहिले गाए जाऐं। गीतन तें जच्चा कौ मन हू लगौ रहै और सबकी प्रसन्नता और खुसी १ जाहिर है जाए। जच्चा के तई गुड़, गोंद, गोला और मेवा डारि कें स्वादिष्ट कैवकौ बनायौ जाए वाय चाखिवे के काजें सब के संग सासु-ननद कौऊ मन चल निकरै परि जच्चा कैवकौ खबाइवे की बड़ी कर्री सर्त लगावै, बोली–

मेरे कौरे तें ननदुल उझके, भाभी एकु पोटुआ मोकूँ।
मेरे लाला की माई है जा, भर पेट कैवकौ तोकूं।

मेरे कौरे तें सासुल उझकै, यहू एकु पोटुआ भोकूं।
मेरे लाला की नानी हैजा, भर पेट कैयकौ तोकूं।

इतनौ सुनिकें कौन चुप्प रह सकै। जच्चा पै डलियन छर्यरियन गारी परि निकरें। ढोलक की थाप दूनी है जाए। घिघुअन की छनछनाहट और झाँझन की झनझनाहट तें घर गूंजि उठै, तब गलौ फारि कें सब गामन लगैं-

सब लपु-लपु खाइ, छिनरिया की।
सासु कूं न पूछै ननद कूं न पूछै।
परी-परी इतराइ, परी-परी मुसकाइ, छिनरिया की।

नए जन्मे भतीजे की आँखिन में काजर आंजिबे कौ नेग बुआ मांगि रही है-

लैकें भतीजे कूं बैठी सहोदरी अब कछु देउ भौजाई।
सौ लाख गउअर सवा लाख भैंसियां तौ हम करें अँजाई।

इन नेगन में इतनौ जादा खरच देखिकें यहू घबराय जाए और अपने घर वारे ते बोलै है इन नेगन में तुम सबु घर मति लुटाए दीजौ। इन सब कामन्ने तुम मेरी मैया-भैना पै कराय लेउ तौ कछु ना दैनौ परैगौ-

घर में अकेली मैंया घरु न लुटाइ दीजौ।
सासु जो आवै सैंया द्वारे ते लौटाइ दीजौ।
सासु कौ नेगु मेरी मैया पै कराइ लीजौ।
ननदी जो आवें सैंया उनहू कूं लौटाइ दीजौ।
ननदी कौ नेगु मेरी भैंना पै कराइ लीजौ।

एक ओर गीत मे ननद ते वचन दैकेंऊ भाभी कठोर व्यवहार करै है। यु रिस ह्वैकें बोली-

भाजि भाजि यहाँ ते भाजि ननदिया।
छीनौ छिनार कौ घाघरौ
और छिनार की ओढ़नी ।

तब ही भैया आय जाए है और बाय सान्त करै है। एक और गीत में अपने भैया के बेटा ह्वैबे की खबर सुनिकें ननद बिना बुलाये ही आय जाए। मां-बाप और भैया तौ स्वागत करैं पर सोभर में ते भावज पूछै-

किन्नें ननद बुलाई
बिना बुलाये चौं आई
बड़ी बेसरमी करी।

जगमोहन लुगरा के गीतन में हू ननद-भाभी की नोकझोंक फिर सुलह सत्कार सुनाई देवै। छटी के दिना ननद भतीजे के लैं कुरता टोपी लावै। रुक्मिनी सुभद्रा के रूपक द्वारा बात चलाई जाए कि सुभद्रा नें रुक्मिनी कूं पुत्र ह्वैबे की भविष्यवानी करी तौ रुक्मिनी नें उन्हें जगमोहन सारी और लुगरा नाम कौ लंहगा दैबे कौ वचन दियौ पर बाद में यु मुकर जाए-

राजे ननद भावज दोऊ बैठिए
राजे रुक्मिनी नौ दस मास गरभ ते।
राजे ननदुल बात चलाइए

राजे जौ तिहारे होइ नंदलाल जगमोहन लुगरा दीजीए
लाली जे लुगरा ना देउँ कुमर जी के सोहिले।
लाली, लौटि वगदि घर जाउ, फिरि मति अइए।

तौ ननद दुखी होय। इत्ते में भैया आ जाए औरु वहू कूं छोड़िकें दूसरी लावे की धमकी दै उठै । तव भावज ननद कूं जगमोहन लुगरा पहिरावै। ननद तव खुस हैकें दूधन न्हाइवे और पूतन फलिवे कौ आसीर्वाद दै देय-

लाली पहरि ओढ़ि घर जाउ तौ मुख भरि आसीस जु दीजिए
भाभी! अमर रहै तिहारी चूरियाँ, अमर तिहारे वोछिया
भाभी! जीऔ तिहारे कुमर कन्हैया
कुमरु तिहारे चौक में, खेलै तिहारे आंगन में।

पारिवारिक सम्वन्धन की प्रगाढ़ भावनान कौ और पारस्परिक नेह कौ ऐकसौ ही चित्रन भौत से गीतन में भयौ है। इन गीतन में अनेक अन्तर्कथान कौऊ सुन्दर प्रयोग भयौ है। लोक में प्रचलित है कि सीता की ननद ने रावन सीता ते कौरे पै कढ़वाइ कें राम कूं दिखाय दियौ ताते क्रोधित हैकें राम नें सीता कूं निकारि दियौ-

ननदुल तेरौ जइयो नासु कै रावनु कौरे पै कढ़वायौ
भैयन कूं दिखराइ कै हमकूं वनोवासु दिलवायौ।

सीता जी ननद कूं शाप दै देय कि ननद 'टिटहरी' पंछी वनकें वन-वन में टिटियाति फिरैगी। अवहू व्रज की वैयरवानी टिटहरी की आवाज कूं असगुन की निसानी मानें और सुनिकें झट्ट धरती पै तीन पोत थुकथुकाय वोलै हैं ''रांड! टिटियाय रई है। निपूती जानें का करैगी?'' परित्यक्ता सीता के वन में लाल पैदा हॉय हैं। सीता घर वार की और सासु ननद की याद करकें कहै है-

सीता ठाड़ी पछिताय लाल वन में भए।
जो घर होती सासु हमारी चरुए देती धरवाय।
जो घर होती ननद हमारी सतिए देती धरवाय।

समय के संग-संग व्रज के लोक-गीतन के विषय औरु सरूप में ऊ परिवर्तन आयौ है। धीरे-धीरे परदा प्रथा कम हैवे लगी है। पर पुरानी चाल की परम्परावादी सासु कूं जि कहां भावै। अपनी वहू ते वू जरति भई कहै है-

वहू तोहि लग्यौ है जमाने कौ रंग
देखि तोहि जियरा जरि-जरि जाय।
उल्टौ पल्लौ तैंनें लै लीयौ
औरु घूंघट दियौ छिटकाइ।
नैंकहु ना सकुचावै सवसौं
हंसि-हंसि कें वतराय
विजली घर में तैंनें लै लई
नलहू लियौ लगवाइ ॥ वहू... ॥

उत्तर में नारी-जागरन की प्रतीक वहू नए रीति रिवाजन के अपनाइवे कूं उचित वतावै और प्रौढ़ा सास कूं ही पढ़ाइवे की वात वोलै है-

सासु! अब काहे कूं जोर जनाइ जमानों जाग्यो है।
अब तेरौ घुंघटा मोहि न भावै
घूंघटा में जी अकुलाय॥ जमानौ.. ॥
जो मैं पढ़ाऊ प्रौढ़न तांई
अंधियारौ भजि जाय॥ जमानौ.. ॥
बैल बेचि टैक्टर मगांवाऊँ
कूआ में ट्र बैल लगाऊं
लरिकनु लैंउ पढ़ाय।
जमानों जाग्यौ है।

जा तरह ब्रज लोक गीतन में सास-ननद कौ सरस वर्नन भयौ है।

-प्रोफेसर हिन्दी विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम वि. वि.
अलीगढ़, (उत्तर-प्रदेश)





ब्रज के लोकगीतन में देशभक्ति के संदर्भ

-डॉ. श्रीमती हर्षनन्दिनी भाटिया

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद ऊ देश-भक्ति के स्वर, चुनाव के समै सुनाई देवें। ब्रज नारियाँ ब्याह में बन्ना गाती जायँ और देशभक्ति के संदर्भ उभर कैं स्पष्ट दिखाई परैं-

गांधी पार्क में मोटर घुमाना हरियाले बन्ने।
झंडा तिरंगा लगाना।
वोट बैलों के बक्से में देना हरियाले बन्ने। झंडा तिरंगा....
पूछें तो दीपक दिखाना, हरियाले बन्ने, झंडा तिरंगा लगाना.........

देश भक्ति की सुधा-धारा के स्वर बिनके रोम-रोम ते निकलते भये प्रतीत होंय हैं।

जब-जब देश पै संकट के बादर घुमरे तौ देशभक्ति कौ स्वर गूंज उठौ। बंगला देस की लड़ाई के दिनान में रसिया के माध्यम ते चेतावनी दई-

चलैगी गोली सीमा पै, तुम रहियो वीर हुस्यार
दगाबाज छलिया वैरी बिह दुबकि लगावै घात।
समय ले रह्यौ तैयारी कूं करै मेल की बात ।
बिसके दांत सांप के तोरौ तब लीजौं बिसराम।
पानी आगै पारि बांधनौ यही सयानौ काम।
झूठे वाइदे करै जो वैरी वाकौ का विस्वास।

बंगला देस की आजादी कौ बरनन करते भये गाय उठें वीरन कौ बलिदान-

या बंगला की आजादी में ह्वै गये बहुतेरे बलिदान।
हँस-हँस वीरन नें जंग कीयौ।
दुसमन कौ हौसलौ तंग कीयौ।
गये छोड़ मैदान, या बंगला की आजादी में ह्वे गये बहुत बलिदान।

मातृभूमि, मातृभासा, अरु सबकैं ऊपर स्वदेसी बस्तुअन सौं प्रेम होनों चहिए-

जाकूँ अपनी मातृभूमि सौं, अन्तर्तम सौं प्यार नहीं।
कह देओ तुम लोगन कूं, जीबे कौ अधिकार नहीं।।

राष्ट्रीयता के संदर्भ में अरु देशप्रेम में होरी के रंगे ये हुरियार काई तरियां पीछें नांय दिखाई दें। शिवाजी अरु राणा प्रताप सौं लैकैं भगतसिंह अरु बाके बाद गांधी तक सबई नें देसप्रेम की होरी खेली हती। सबई नै तो सुतंत्रता पाइबे कै तँई त्याग-भावना की गागर मांहि संगठन कौ रंग उडेलौ है।

खेलौ री प्रेम की होरी।
रंग-संगठन की मिलि खेल्यौ, त्याग गगरी को री।
तीन रंग की लै पिचकारी, निर्भय ह्वै कै बढ़ौ अगारी।
देखौ अपनी अपनी बारी खूब करौ बरजोरी।

राणा शिवा सहज ही खेले, तन पै कष्ट अनेकन झेले।
खेले भगतसिंह जत प्यारे, राजगुरु सुखदेव सितारे।
बापू खेले हरि के आगे, हम देखत रह गये अभागे।
डटे रहे सब ममता त्यागी, प्रीत राष्ट्र सौं जोरी।

जा प्रकार होरी के गीत में देशप्रेम की भावना भर दई ऐं। या तरियां होरी के हुरियारन्नें देस कूं सुतंत्र कियौ। देश कूं नवीन दिसा दिखाई।

स्वतन्त्र हैवे के बाद देश कौ विकास कियौ गयौ। स्वतन्त्रता की लड़ाई में अनेक बलिदान किये। पं. जवाहरलाल और लाल बहादुर शास्त्री नें बड़ौ काम कियौ और बाद में भी प्रधान मंत्री के रूप में काम करते रहे। या तरै बिनकूं भी याद कियौ जाय-

मां कठिन मुसीबत झेल हिन्द लौ आजादी।
अत्याचार अंगरेजन कियौ बहुत जनता दई मार।
बड़े-बड़े वीरन चढ़ाय दिये फांसी बहु कुअन दीये डार।
करीयै अति बरबादी। मां कठिन......
सिगे महात्मा गांधी जी नें नारे दिये लगवाय।
भारत कूं आजाद करयौ दिये अंगरेज भजाय।
रोय रही शहजादी। मां कठिन........
पंडित जवाहर लाल नेहरू बन गये अब परधान।
हाथ तिरंगा झंडा लियौ, राजनीति में मान।
पहर तन पै खादी। मां कठिन..... .....
मंत्री लाल बहादुर जी नें कही खुले मैदान।
ईंट कौ जवाब मिलै पत्थर ते भगजा पाकिस्तान।
सीमा सेना लादी। मां कठिन........ ..

सरदार भगतसिंह के बलिदान कूं कबहूं कोऊ नांय भुलाय सकै। जिन शहीदन नें अपनी कुर्बानी दई बिनकूं कौन भुलाय सकै-

भूल न जईयो भारतवासी उन वीरन की कुर्बानी।
हँसते-हँसते प्रान गँवाये अमर रखौ मां कौ पानी।
जात-पात औ मजहब नाम पै आज मचाऔ हल्ला
धरम बचाऔ, शक्ति बढ़ाऔ, जगह-जगह पर है गिल्ला।

याकेबाद हरित क्रान्ति सौं देस में अन्न उत्पादन बढ़ायौ गयौ और स्वेत क्रांति से दूध खूब बढ़ौ-

ठड़ो क्रान्ति किशोरी।
खेलौ री इनसौं मिल जुरि करि कै होरी।
हरित क्रान्ति कौ हर से खेलौ-नव उपकरण बटोरो।
स्वेत क्रांति को दूधन खेलौ, बात करौ मत कोरी।

देश भक्ति के गीतन ते जिजीविसा कूं नयौ जोस मिलै। देश-प्रेम के इन गीतन तें शक्ति मिलै। स्वतन्त्रता के बाद सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक परिवर्तन दिखाई दैवे लगे ऐं। भविष्य में आसा है कि सामाजिक दायित्व के प्रति हमारी भाव और बढ़ैगौ और गहरौ होतौ जावेगौ तथा देसभक्ति के संदर्भ आगे खुलते जांयगे।

-भारती नगर, मैरिस रोड
अलीगढ़



ब्रज के लोकगीतन में हास्य-व्यंग्य

-श्री देवकीनन्दन कुम्हेरिया

हास-परिहास अरु व्यंग्य-बिनोद के बिना मानुस जीवन रूखौ-सूखौ अरु फीकौ-फीकौ सौ लगै है। जाकौ ध्यान रखिकेंई, हृदै में सरसता, मधुरिमा भरिबे के ताँईं, प्राचीन काल सों ई बिद्वानन नें अपने ग्रंथन में ठौर-ठौर हास्य-व्यंग्य की फुहार छोड़ी हैं। जाँकू जानिबे के ताँईं, आप परमभक्त अरु महाकवि संत तुलसी दास जी के भक्ति साहित्य कूँई देख लेऔ। तुलसीदासजी नें 'रामचरितमानस' जैसे महान धर्मग्रन्थ में 'केवट सम्बाद' के रूप में जहाँ हास्य-व्यंग्य की झलकी दिखाई हैं म्हाँई 'कवितावली' में बिन रिसी-मुनि तपसीन सौं ठिठोरी करी है जो श्रीरामजी के बन आइबे की सूचना पायकें दरसनन के ताँईं पुलकित है रहे हे। कवितावली कौ सवैया जा प्रकार ते है-

> बिंध के बासी उदासी तपोव्रत धारि महाबिनु नारि दुखारे।
> गौतम तीय तरी तुलसी सो कथा सुनि भे मुनिवृंद सुखारे।।
> ह्वै हैं सिला सब चन्द्रमुखी, परसे पद मंजुल कंज तिहारे।
> कीन्हि भली रघुनायक जू करुना करिके इतकू पग धारे।

ब्रज काव्य में तौ हास्य-व्यंग्य कूटि-कूटि कें भरौ भयौ है। महाकवि सूरदासजी नें अपने आराध्य भगवान श्रीनाथजी के ग्रीसम रितु के सिंगार कौ बरनन 'आज हरि है गए नंगम नंगा' कहिकें हास्य पद कौ गायन कियौ है। अष्ठछाप कवि गोविन्दस्वामी नें तौ हास्य व्यंग्य की तरंग में आइकें अपने इष्ट कूं 'खेलत में को काको गुसईंयां' अरु 'भाग गयौ कै पोत गंवार' पद रचना करिकें हास्य-व्यंग काव्य कूँ औरऊ बढ़ायौ है।

ब्रज के लोकजीवन में तौ हास्य व्यंग पोर-पोर में पूरी तरयाँ ते पुरौ भयौ है। बात-बात में तारी पीटकें हँसिबौ अरु बिना बातई व्यंग करिबौ तौ ब्रजवासीन कौ सहज सुभाव होय। ब्रज के लोकगीतन में हूं ब्रज की माँटी कौ जे प्रभाव देखौ जाय सकै। जनम ते लैकें मरन तक के संस्कार गीतन के संग बार त्यौहारन के गीतन में ऊँ हास्य-व्यंग भरपूर रूप सौं देख्यौ जाय सकै है। जाकी थोरी सी बानगी आपुके आनंद के ताँईं यहाँ प्रस्तुत करी जाय रही है।

जीवन कौ आरम्भ होय जनम ते और जनम लैतेई मानुस हास्य-व्यंग ते जुरिबे लगै। जनम के तीसरे कै फिर पाँचवे दिनाँ 'मड़रा पूजन' होय। वा दिनाँ जच्चा-बच्चा कूँ सुद्ध अस्नान कराए जाँऐ। नए-नए लत्ता-कपरा पहिराऐ जाएँ। संझा कूँ उछाह में भरी घर-बाहिर पास-परौस की महिला, इकठौरी हैकें मंगलगीत गामें और संस्कार गीतन के संग हास्य व्यंग के गीत गाइबे लगें तौ बिनकूँ सुनिकें सास-ननद, दौरानी-जिठानी का, खाट में परी जच्चाहू मनई मन मुस्काइबे लगै। ढोलक की गमक अरु मजीरान की खनक के संग महिलान के बोल फूट परें-

जच्चा तौ मेरी भोरी भारी रे।
पाँच कनस्तर आटौ खायै, सात कनस्तर घी के।
जच्चा तौ मेरी खायौ न जानें रे।
जच्चा तौ मेरी भोरी भारी रे॥ 1॥
पाँच मटुकिया पानी पीयै, दूध के मटका सात।
जच्चा तौ मेरी पीयौ न जानें रे।
जच्चा तौ मेरी भोरी भारी रे ॥ 2॥
साँप कूँ मार बगल में दाबै, बीछू मार गिहावै।
जच्चा तौ मेरी मच्छर सों डरपै रे।
जच्चा तौ मेरी भोरी भारी रे॥ 3॥
सास ननद कौ लंहगा फारै, आई गर्दन की फरिया।
जच्चा तौ मेरी लड़ियौ न जानें रे।
जच्चा तौ मेरी भोरी भारी रे॥ 4॥

नामकरन संस्कार के समैऊ ऐसेई हास्य व्यंग के गीत जच्चा के ताँई गाए जामें।

बालक जब तीन बरस कौ है जाए तो पाठशाला में पढ़िवे कूँ जावै। गनेस जी कूँ भोग धारकें लड्डू बाँटे जाएँ। घर में मंगलगीत गवैं। जा औसर पैऊ ब्रज गोपी अपने सुभाव के कारन टट्ठा(व्यंग) करिवे में नाँय चूकें। वे मिलि जुरिकें गाइवे लगें-

लाला तौ देखौ पढ़िवे जावै है।
बगल में पट्टी बस्ता लैके, रौब दिखावै है।
लाला तौ देखौ पढ़िवे जावै है।
तीन बरस भए-आ.ई.उ नाँ आखर आवै है।
कान पकरिकें धौल जमावै, बाप रिस्यावै है।
लाला तौ देखौ पढ़िवे जावै है।

पढ़ाई ते पीछें ब्याह कौ समै आवै। ब्याह बरात के रस रंग में तौ हास्य-व्यंग की तरंग अपने आपई उमड़ी करें हैं जो लोकगीतन में देखी जाय सकै। अगर जे कहें कै ब्याह के सिगरे संस्कारगीतई हास्य व्यंग सौं भरे भए होंय तौ झूंठ नाँय होगी। सगाई अरु लगन के समै जो खेल के गीत गाए जामें वो तौ सिगरे हास्य-व्यंग के ई गीत होंय। जो पुराने समैं तेई गमते चले आय रहे हैं। जाकी थोरी सी झाँकी आपुकूं आगें देखिवे कूँ मिलैगी। यहाँ तौ नेग-जोगन के कछु, परम्परा ते गमते आय रहे हास्य-व्यंग गीत प्रस्तुत करि रह्यौ ऊँ।

कछु साल पैले ताँई ब्याह में गिंदौरा(250 ग्राम खाँड की बड़ी टिकिया) बाँटिवे कौ चलन हौ, जो मँहगाई के कारन अब बंद सौ हैतौ जाय रह्यौ है। जामें बेटा बारे की ओर सौं महिला सज-धजिकें, गीत गामती भई, अपने ब्यौहारीन के द्वारे जामती हीं। वा समै वो उछाह में भरिकें हास्य के ऐसे-ऐसे गीत सुनामें हीं जिनें सुनिकें लोग खिलिर-खिलिर करिकें हँसे बिना नाँय रह पामते। विन गीतन की कछु लैन जा तरियाँ ते हैं-

मौहल्ला रंडुअन कौ न्यारौ रे, मौहल्ला रडुँअन कौ न्यारौ।
देखि पराई नारि मूँड़ पत्थर ते दै मारौ॥ 1॥
मटर पै अधर चलै चाकी रे, मटर पै अधर चलै चाकी।

लोग बड़े बदमास लुगाई घर-घर की साँची ॥ 2 ॥
सहर के सो गए हलवाई रे, सहर के सो गए हलवाई।
अबतौ मुखड़ा खोलि जलेबी लायौ हूँ प्यारी ॥ 3 ॥

गिंदोरा बाँटिबे जा ब्यौहारी के द्वारे पै जे महिला टोली जावै, बा घर की बड़ी-बूढ़ी, कै फिर अपनी बराबर की कूँ हास्य व्यंग में खरी खोटी सुनाइबौ जे अपनों अधिकार मानें हैं। जैसें-

च्यौं ठाड़िऐ ओट किवारन की? च्यौं ठाड़िऐ?
यार बुलाबै दौरी दौरी आबै,
खसम बुलाबै सिर धमकै। च्यौं ठाड़िऐ......

वे फिर तरंग में गाइबे लगें-

चम्पो ते चौखट चिपट जाऐ तौ?
ऐसौ मारूँ मंत्र, दारी टूट जाऐ तौ?
गुल गैंदा लगाय दै रे, छोरा माली के।

इनते मिलेजुले से ई हास्य-व्यंग के गीत, चाक पूजिबे के समैऊँ गाए जामें। चाक कौ पूजन ब्रह्मा कौ पूजन मान्यौ जाए। दूल्है दुल्हैन की मैया चाक कूँ पूजें, कुम्हार की पीठ पै हरदी कौ थापौ रक्खें, बाकी घरबारी(कुम्हारी) कूँ लहँगा-फरिया भेंट दैकें नेग पूरौ करें। ता पीछें बिनकूँ हास्य-व्यंग के गीत गामें। जे गीत ब्याह के सगुन माने जाऐं।

ब्याह के 'रतजगे'(रात कौ जागरन) में 'रजना' गीत गाए जाऐं। रजना में हास्य-व्यंगई होंय जो दोहान में अपनी अनूठी धुनि पै रात भर गबैं। जा की कछु कड़ी जा प्रकार सौं हैं-

आगरे की गैल में लम्बौ पेड़ खजूर।
वापै चढ़िकें देखती मेरौ बालम कितनी दूर॥ मर गई...
गैल भरतपुर बीच में, पर्‌यौ भुजंगी नाग।
खा लई होंती बच गई बा छैला के भाग॥ मर गई...
भरौ कुठीला मोंठ कौ, घर में चाकी नाँय।
गली-गली में डोलिबौ, मेरे बस की नाँय॥ मर गई...
खूँटी पै चरखा टंग्यौ, उर कातन की हूक।
देबर ते भाभीऊ लड़ै करै गजब के टूक।। मर गई...
भरी अँगीठी आँच की,धक धक करें अंगार।
मोधू के पालें परी, सौबै पाम पसार॥ मर गई....

जा रचना गीत में हर दोहा के पीछें -'मर गई मर गईरे रजना, पीरी परिगई रे रजना, मेरी जल्दी खबर सुधि लीजौ रे रजना। मेरी जल्दी खबर......।' जा टेक में हास-परिहास के संग महिलान कौ आनंद-उछाह देखिबे जोग होय।

हमारी लोक संस्कृति में छोटी ते छोटी चीज कूँ कितनों सम्मान दियौ जाऐ। जे ब्याह में घूरौ पूजिबे ते जानो जाऐ, घूरौ पूजिबे में 'हुल्लमार' हास्य गीत बड़ौ पुरानौ है। ढोलक मजीरा के संग जब रसोई के चीमटा, फूँकनी कूँ बाद्य यंत्र के रूप में बजामती भई महिला 'हुल्लमार' गामें तौ दूर-दूर तक पतौ परि जाए कै ब्याह बारे के घर घूरौ पुजि रह्यौ है। बे गामें-

'हुल्लमार रे सारे अक्खो कें द्वै-द्वै बहौरियां।
हुल्लमार! हुल्लमार रे जाकी इक गोरी इक कारियाँ।'

जे हुल्लमार कहा है जाकूँ कोई नाँय जानें
पर 'सावरी' मंत्र की तरियाँ जाकौ प्रभाव खूब होय।

ब्याह में बरात के आइबे ते लैकें बिदा हैबे तक लौ सिगरे संस्कार गीत हास्य-व्यंग के ई होंय जो न जानें कबते गबते चले आय रहे हैं। बरात द्वारे पै आई, दूल्है तोरन मारिकें चौकी पै ते उतरौ ई हो कै तबई बेटी वारेन की ओर सौं लुगाई ठट्ठा(व्यंग) करिकें गाइबे लगीं-

रंडी न लायौ नचाइबे कूँ, समधी के द्वार।
बाजौ न लायौ बजाइबे कूँ, समधी के द्वार।
नंगौई आयौ लजाइबे कूँ, समधी के द्वार।
अपनी भैनाँ न लायौ दिखाइबे कूँ, समधी के द्वार।

बेटा वारौ चाहै सब कछु लायौ होय, पर वाते का? बेटी वारे की लुगाइन कूँ तौ कछु कहनों है। एक गीत पूरौ भयौ कै दूसरौ छिड़ गयौ-

समधी न आयौ मेरी खातिर में, हम्बै खातिर मे,
जाके डेरा तौ लगाय देऔ पल्ली बाखर में।
दूल्है न आयौ मेरी खातिर में, हम्बै खातिर में ,
जाके डेरा तौ लगाय देऔ पल्ली बाखर में।

जाई तरियाँ ये सिगरी वस्तुन कौ नाम लै लै कें गामें अरु बे काई कूँ अपनी खातिर में नाँय लामें। जाई तरियाँ तौ बारौठी पै गयबे वारौ एक गीत होय-'कूर-कूर' जामेंऊँ समधी सौं छेड़छाड़ करी जाऐ।

मैंनें हाथी मँगायौ घोड़ा लायौ रे समधी।। सारे कूर कूर....
मैंनें गोरे बुलाए कारे आए रे समधी॥ सारे कूर कूर ......

जे कूर कूरऊ द्रोपदी के चीर की तरियाँ लम्बी हैती जाए। द्वारे पै ऐसे हास्य-व्यंग के अनेकन गीत गाए जामें, जिनकूँ सुनिकें बराती मगन है जामें।

वैसे गारी बहौत बुरी चीज मानी जाऐ। अगर काईके म्हौंड़े ते भूल-चूक मेंऊ काईके तांईं गारी निकर जाए तौ समझौ गारी दैबे वारे की खैर नाँए। पर ब्याह की गारी के तौ ठाठई कछु और होय। प्रीत की तौ रीतई न्यारी होय। जे गारी दई नाँय, गाई जाऐं। है परिवारनि कूँ प्रैम के धागे में पिरोमें। छत के अट्टा पै बैठी कोकिल कंठी जब सुमधुर धुनि ते गारी गामें तौ रस की बरसा सी होंन लगै। भोजन के तांईं पत्तर पै बैठे बराती, उचक-उचककें, बड़े चाय सौं बिनकौ आनंद लियौ करें। इन गारीन में काव्यकला, इतिहास अरु संस्कृति के संग हास्य-व्यंग कौ अनूठौ संगम देखिबे कूँ मिलै, जैसें-

मुकुट धर सामरे रे लाला है बारन कौ जाम।
एक बाप मथुरा बसै रे लाला दूजौ गोकुल गाम॥
पहिली मैया देवकी रे लाला कंस कैद दई डार।
दूजी माय जसोधरा रे लाला गोकुल की छछिरार॥
भैन तिहारी सहोदरा रे लाला अर्जुन संग सिधार।
भुआ तिहारी कुंती रे लाला क्वारी करन दियौ जाय।।
भाप तिहारी द्रोपदी रे लाला पाँच पुरुष इक नार।
मुकुट धर सामरे रे लाला है बारन कौ जाम॥

ऐसी प्रेम पगी गारी के संग तरंग में आयकें नारी फिर सीधम सट्ट सुनाइवे लग जाएं-

अट्टा ऊपर अट्टा समधी, ब्याह करै कै ठट्टा,
ड्यौड़ी वान लगाय दुँगी-सारे जायगौ कहाँ?
गडुआ ऊपर गडुआ समधी, जे गौने के लड़ुआ,
ड्यौड़ी वान लगाय दुँगी, सारे जायगौ कहाँ?
कलसा ऊपर कलसा समधी जे ऐं मेरे झलसा,
ड्यौड़ी वान लगाय दुँगी सारे जायगौ कहाँ?
बेला ऊपर बेला समधी, मती मचावै हेला,
ड्यौड़ीवान लगाय दुंगी, सारे जायगौ कहां?

जब इन प्रेम पगी गारीन सोंऊ गाइबे बारीन कौ पेट नाँय भरै तौ बे ततइया गीत सुनाइवे लग जाऐं। जे ततैया गीत बरातीन कूँ भोजन हजम करिबे में चूरन कौ सौ काम करैं। ततैया के बोल जा तरियाँ हैं-

अब नांऐं छूटै हमारौ ततैया॥ अब नांऐं छूटै........
कारौ नांऐं पीरौ नांऐं लाल ऐ ततैया॥ अब नांऐं छूटै.....
जा समधी की भैनें लग गये ततैया॥ अब नांऐं छूटै.....

और फिर जे गीतन के ततैया ऐसे लगें कै बे फिर बेटा वारे की मैया, भुआ, घरवारी तौ का दूल्है के बाप, बाबा, चाचा, ताऊ, तक काइऐ नाँय छोड़ें। बेटा बारे इन ततैयान के डंक सौं हाय-हाय करिबे की जगै हंसिकें हा....हा.... करिबे लगें।

जब बराती भोजन करिकें उठिबे लगें तबऊ हास्य व्यंग के गीत बिनकौ पीछौ नाँय छोड़ें। बइयर गाइबे लगें-

काहे उठि बैठे और लै लैंते,
पूरी लै लैंते कचौरी लै लैंते, अपनी मैया कौ दान करि दैंते।
काहे उठि बैठे और लै लैंते।
लड्डू लै लैंते इमरती लै लैंते; अपनी भुआ कौ दान करि दैंते।
काहे उठि बैठे और लै लैंते।

जा तरियाँ वे हरेक कड़ी में पकबानन कौ नाम लै लैंकें, बाके संग बेटा वारेन के घर की महिलान कौ दान करिबे कौ सुझाब दैं। जाके संगई बे दूल्है की दादी, मैया, ताई, चाचीन के ताँई अलग ते गीत गायौ करें-

गंगा कैसी बहै मोऐ देखिबे कौ चाव।
दूल्है की मैया न्हाबे चाली संग लिए लगबार,
धारा कैसी वहै मोऐ देखिबे कौ चाव।
जब दारी नें गोता लीने चिपट गए सब यार,
जब दारी ऐ भूख लगी तौ लड़ुआ लामें यार,
गंगा कैसी बहै मोऐ देखिबे कौ चाव।

जा तरियाँ ब्याह में एक ते एक ऊँचे अरु बढ़ि-चढ़िकें हास्य-व्यंग के गीत गाए जामें। इनमें सिरमौर होय है मंडप सोभा के समै गबवे वारे 'ललमुनिया गीत'। ललमुनियाँ में नाचिबे, गाइबे अरु वजाइबे कौ सिगरौ खजानौई, हास्य-व्यंग में एक

संग खोलिकें धर दियौ जाऐ। छत पै जमी ललमुनियाँ गाइवे वारीन के टोल में एक मुखिया होय, जो पुरषन कौ भेष धारन कर अपनी हास्य मुद्रा सों जा खेल कौ संचालन करै। मुखिया अपने म्होंकूँ हलके लत्ता ते ढँके राखै, जामें कालो-कालो कोऊ वाकूँ पहिचान नाँय सकै।

ललमुनियाँ में 'पहिलै लै.....लै परमेसुरी...मेरी खेलै भवानी', गीत गायौ जाऐ। साँची मानों जा गीत के संगई गाइवे वारी लुगाई पै भवानी सी चढ़ि बैठै। फिर तौ वे बराती कूँ ऐसी ऐसी कथा गाइकें सुनामें कै पूछौई मत? पुरष रूप धारी मुखिया गीत में पूछै-

> घ्यों समधी मैं बुड्ढौ ऊँ?

पीछें ते सिगरी बइयर मिलिकें गामें-

> कौन कहै तू बुड्ढौ ए?
> तेरी भैनाऐ लै जाऊँ बुड्ढौऊँ?
> कौन कहै तू बुड्ढौ ऐ?
> तेरी मैयाऐ लै जाऊँ बुड्ढौऊँ?
> कौन कहै तू बुड्ढौ ऐ?

जे ऐ ललमुनियाँ की खोचरी में ते सम्हरिकें निकारौ भयौ एक चामर कौ दानों। जाई सों अनुमान लगायौ जा सकै कै ललमुनियाँ में कैसे-कैसे हास्य-गीत गाऐ जाऐं। पर अब तौ एक दिनां के ब्याह में ललमुनियाँ बीतौ इतिहास बनिकें रह गयौ है।

इतकूँ बेटी वारे के यहाँ ब्याह के समै हास्य-व्यंग गीतन के रंगल-मंगल होंय तौ वितकूँ बेटा वारे के घर पुरषन के बरात में चले जाइवे के कारन 'खोइया' के नाम ते तिरियान कौ राज है जाए। खोइया सिगरौई हास्य-व्यंग के गीतन में होय। जामें बइयर पुरषन कौ भेस धारन करिकें हाथ में बलरामजी कौ अस्त्र 'मूसर' लैकें अनकही बातन कूँ ऊ गाय गायकें सुनामें और चाहै जाकूँ मूसर मार कौ परसादऊ चखाइदें।

ब्याह-बरात ते हटिकें बार-त्यौहारन के गीतन में ऊँ हास्य व्यंग के गीत अच्छी तरियाँ ते मिलि जाऐं। सावन में झूला पै गाइवे वारौ एक हास्यगीत जा तरियाँ ए-

> चाकी के नीचें धनियाँ बोयौ,
> हाँ सहेली धनियाँ बोयौ।
> धनियाँ मैंनें गैया खवायौ,
> हाँ सहेली गैया खवायौ।
> गैया नें मोकूँ दुद्धा दीनों,
> हाँ सहेली दुद्धा दीनों।
> दुद्धा की मैंनें खीर बनाई,
> हाँ सहेली खीर बनाई।
> खीर ते मैंनें बामन जिमायौ,
> हाँ सहेली बामन जिमायौ।
> बामन नें मोऐ दई असीष,
> बच्चा होयें नौ-दस-बीस।

जाई तरियाँ साँझी अरु टेसू के गीतन में ऊ हास्य-व्यंग पूरौ पूरौ मिलै है। साँझी कौ एक गीत देखौ-

भैया! भैया! कहाँ-कहाँ व्याहे ? ॥ पारे वरिया.. ॥
अलवर व्याहे, जैपुर व्याहे, दिल्ली सहरते लाए॥ पारेवरिया... ॥
भैया! भाभी कैसी आई?॥ पारेवरिया... ।
आँख चनासी म्हों वटुआ सौ घूँगट में घुर्रामें॥ पारेवरिया... ॥
भैया! भाभी का-का लाई?॥ पारेवरिया.... ॥
आठ विलैया नौ चकचूंदर, सोलह मूसे लाई॥ पारेवरिया... ॥
भैया! भाभी कितनौ खामें?॥ पारेवरिया... ॥
थारी भरिकें मठा महेरी सौ रोटी चर जामें॥ पारेवरिया... ॥

जा गीत में सोइवे कौ ऐसौ हास्य में वरनन है कि सुनिवे वारे खिलखिलाय परें। जाई तरियाँ 'टेसू' कौ गीत और दैखौ-

टेसू रे टेसू घंटार वजइयों,
दस नगरी दस गाँव वसइयों।
वस गए तीतर वस गए मोर,
वूढ़ी डुकरियाऐ लै गए चोर।
चोरन के घर खेती भई,
खाय डुकरिया मोटी भई।
मोटी हैकें दिल्ली गयी,
दिल्ली ते द्वै विल्ली लाई।
एक विल्ली कानी,
टेसूरा की नानी।

साँझी अरु टेसू गीत तेऊ अलग हटिकें अनेकन ऐसे हास्य गीत होंय जो व्रज मंडल में नित्तई गाए जाँए। इनमें ते एक गीत देखौ जाकूँ घर में गायकें छोटे वालकन कूँ प्रसन्न कियौ करें।

अटकन वटकन दही चटाके,
वरफूलो वंगाले।
मामा लायौ सात कटोरी, एक कटोरी फूट गई
मामा की वहू रूठ गई।
का वात पै रूठ गई?
दूध दही पै रूठ गई।
दूध दही मुकतेरौ,
दै दारी में चूरौ।

वार-त्यौहार अरु नेग जोगन के गीतन ते अलग 'खेल के गीत' और होंय जो परिवार में हैवे वारे उच्छवन में संस्कार गीतन के पीछें मनकूँ गुदगुदावे के ताँई गाये जाऐं । इन हास्य गीतन में व्रज के लोक जीवन कौ खुलौपन झलकै है। इनमें हंसोड़ी सुभाव की वहू अपनी खास सास सौं ऊ ठट्ठा करिवे में नाँय चूकें । इन हास्य गीतन कूँ कोऊ नाँय जानें कवते गवते चले आ रहे ऐं अरु आजऊ गाए जा रहे ऐं-

कजरा विकन कूँ आयौ रे, कजरा लै लै वुढ़िया
वहूवेटीन्नें पइसा कौ लीनों।

बुढ़िया नें रुपया खुलायौ रे। कजरा लै लै बुढ़िया..
बहु बेटिन नें डिबिया में राख्यौ,
बुढ़िया नें डिब्बा उठायौ रे। कजरा लै लै बुढ़िया.....
बहु बेटिन नें सलाई ते लगायौ,
बुढ़िया नें मूसर उठायौ रे। कजरा लै लै बुढ़िया......
बहु बेटिन नें दरपन में देखौ,
बुढ़िया नें घुइटौ घुलायौ रे। कजरा लै लै बुढ़िया......

दूसरौ गीत तौ जातेऊ करौ ए देखौ-

जे बुढ़िया हत्याखोर, मरै हत नाँऐं।
जे दूधऊ पीवै नाँऐं, और छाछहु पीवै नाँऐं।
जे रबड़ी माँगे रोज, मरै हत नाँऐं॥ जे बुढ़िया.....
जे दरिया खावै नाँऐं, जे रोटी खावै नाँऐं।
जे पूरी माँगे रोज, मरै हत नाँऐं ॥ जे बुढ़िया. ..
पट्टा पै बैठें नाँए, पीढ़ा पै बैठे नाँऐं।
जे पलका तोरै रोज, मरै हत नाँऐं॥ जे बुढ़िया. ...
जे मंदिर जावै नाँऐं, देवालय जावै नाँऐं।
जे रार मचावै रोज, मरै हत नाँऐं ॥ जे बुढ़िया... .

खेल कौ एक और गीत देखौ जाकी एक एक कड़ी में सिंगार के संग हास्य कूँ पिरोयौ गयौ ऐ-

राजा एक मझोली सोलह जने,
पामन मत जइयो एकउ जनों।
राजा एक धोयती सोलह जने,
नंगौ मत रहियौ एकऊ जनों।
राजा एक फुलकिया सोलह जने,
भूखौ मत रहियौ एकऊ जनों।
राजा एक खटोला सोलह जने,
धरती मत सोइयौ एकऊ जनों।
राजा एक रजाई सोलह जने,
जाड़े मत मरियौ एकऊ जनों।

ब्रज के लोक जीवन में तौ हास-परिहास के गीत जीव अर ब्रह्म की डरियाँ दोऊ आयुन में ऐसे रच-पच गये एँ कै मरिवे के पीछेंऊ जे पानी कौ पीछौ नाँय छोड़ें। ब्रजमंडल में बड़े बूढ़े की मृत्यु पै, बाके समधी के द्वारें, मदद्र मातौ रोवे-बिलाप करिवे नाँचतो-गामतो-बजामतो नाँच कुदन्ना करिवे कूँ आमें। जाके ताँईं वे दस बीस सहेलीन कूँ संग लैकें पूरी तैयारी ते आमें और गांम (कस्बा,सहर होय तौ गली मौहल्ला) में घुसतेई ढोलक की थाप पै जोर-जोर सौं गावे लगें-

पंछी बोलना, औ हमारो राम-राम।
आज सहर में को मरिगौ?
पंछी बोलना औ हमारी राम-राम।
आज सहर में लछमा कौ बाप मरौ,

जाई तरियाँ साँझी अरु टेसू के गीतन में ऊ हास्य-व्यंग पूरौ पूरौ मिलै है। साँझी कौ एक गीत देखौ-

भैया! भैया! कहाँ-कहाँ ब्याहे ? ॥ पारे बरिया.. ॥
अलवर ब्याहे, जैपुर ब्याहे, दिल्ली सहरते लाए॥ पारेबरिया... ॥
भैया! भाभी कैसी आई?॥ पारेबरिया... ।
आँख चनासी म्हों बटुआ सौ घूँगट में घुर्रामें॥ पारेबरिया... ॥
भैया! भाभी का-का लाई?॥ पारेबरिया.... ॥
आठ बिलैया नौ चकचूंदर, सोलह मूसे लाई॥ पारेबरिया... ॥
भैया! भाभी कितनौ खार्मे?॥ पारेबरिया... ॥
थारी भरिकें मठा महेरी सौ रोटी चर जामें॥ पारेबरिया... ॥

जा गीत में सोइबे कौ ऐसौ हास्य में बरनन है कि सुनिबे बारे खिलखिलाय परें। जाई तरियाँ 'टेसू' कौ गीत और दैखौ-

टेसू रे टेसू घंटार बजइयों,
दस नगरी दस गाँव बसइयों।
बस गए तीतर बस गए मोर,
बूढ़ी डुकरियाऐ लै गए चोर।
चोरन के घर खेती भई,
खाय डुकरिया मोटी भई।
मोटी हैकें दिल्ली गयी,
दिल्ली ते द्वै बिल्ली लाई।
एक बिल्ली कानी,
टेसूरा की नानी।

साँझी अरु टेसू गीत तेऊ अलग हटिकें अनेकन ऐसे हास्य गीत होंय जो ब्रज मंडल में नित्तई गाए जाँए। इनमें ते एक गीत देखौ जाकूँ घर में गायकें छोटे बालकन कूँ प्रसन्न कियौ करें।

अटकन वटकन दही चटाके,
बरफूलो बंगाले।
मामा लायौ सात कटोरी, एक कटोरी फूट गई
मामा की बहू रूठ गई।
का बात पै रूठ गई?
दूध दही पै रूठ गई।
दूध दही मुकतेरौ,
दै दारी में चूरौ।

वार-त्यौहार अरु नेग जोगन के गीतन ते अलग 'खेल के गीत' और होंय जो परिवार मैं हैवे बारे उच्छबन में संस्कार गीतन के पीछें मनकूँ गुदगुदाबे के ताँई गाये जाऐं । इन हास्य गीतन में ब्रज के लोक जीवन कौ खुलौपन झलकै है। इनमें हंसोड़ी सुभाव की वहू अपनी खास सास सौं ऊ ठट्ठा करिबे में नाँय चूकें । इन हास्य गीतन कूँ कोऊ नाँय जानें कबते गबते चले आ रहे ऐं अरु आजऊ गाए जा रहे ऐं-

कजरा बिकन कूँ आयौ रे, कजरा लै लै बुढ़िया
बहूबेटीन्नें पइसा कौ लीनों।

बुढ़िया नें [illegible] [illegible] रे। कजरा लै लै बुढ़िया...
बहु बेटिन नें [illegible] नें [illegible],
बुढ़िया नें [illegible] उठायौ रे। कजरा लै लै बुढ़िया.....
बहु बेटिन नें [illegible] दै [illegible],
बुढ़िया नें [illegible] उठायौ रे। कजरा लै लै बुढ़िया......
बहु बेटिन नें दरसन नें देखौ,
बुढ़िया नें [illegible] [illegible] रे। कजरा लै लै बुढ़िया......

दूसरौ गीत कौ [illegible] कछू ए देखौ-

जे बुढ़िया [illegible], मरै हत नाँऐं।
जे दूधऊ पीवै नाँऐं, और छाछहु पीवै नाँऐं।
जे [illegible] माँगै रोज, मरै हत नाँऐं॥ जे बुढ़िया.....
जे [illegible] खावै नाँऐं, जे रोटी खावै नाँऐं।
जे [illegible] माँगै रोज, मरै हत नाँऐं ॥ जे बुढ़िया......
पट्टा पै बैठै नाँऐं, पीढ़ा पै बैठे नाँऐं।
जे पलका टोरै रोज, मरै हत नाँऐं॥ जे बुढ़िया.....
जे मंदिर जावै नाँऐं, देवालय जावै नाँऐं।
जे घर नचावै रोज, मरै हत नाँऐं ॥ जे बुढ़िया.....

खेल कौ एक और गीत देखौ जाकी एक एक कड़ी में सिंगार के [illegible]

राजा एक मझोली सोलह जने,
पायन मत जइयौ एकउ जनौं।
राजा एक धोयती सोलह जने,
नंगी मत रहियौ एकऊ जनौं।
राजा एक फुलकिया सोलह [illegible]
भूखी मत रहियौ एकऊ [illegible]।
राजा एक खटोला [illegible]
धरती मत सोइयौ [illegible]
राजा एक रजाई [illegible]
जाड़े मत [illegible]

ब्रज के लोक जीवन में तौ हा[illegible]
मरिबे के पीछेंऊ जे पानी कौ पीछौ [illegible]
बिलाप करिबे नाँचती-गामती-[illegible]
है आमें और गांम (कम्या,म[illegible]

[illegible]

पंछी बोलना, औ हमारी राम-राम।
आज गांम में को मरिगौ?
पंछी बोलना, औ हमारी राम-राम।
आज गांम में रूपो कौ ससुर मरौ,
पंछी बोलना, औ हमारी राम-राम।

जाई तरियाँ मृतक सों सम्बन्ध जोड़िकें वाकौ नाम लै लैकें 'पंछी बोलना औ हमारी राम-राम' गाते भए द्वार पै आमें और म्हाँ हास्य-व्यंग के गीतन के संग अपनों नांचिवौ प्रारम्भ कर दें। जामें व्याह के समैं गाइवे वारी 'गारी' जादा होय। जासमै गविवे वारी गारी जा प्रकार है जो श्री कृस्न की 'चीरहरन लीला' सों जुरी भई ऐ-

दारी समधिन न्हायवे चाली संग लगे गिरधारी।
रंग वरसैगौ हाँ-हाँ राम रंग वरसैगौ॥
चीर उतार तीर पै धर दिऐ, जल में घुसी उघारी।
रंग वरसैगौ हाँ-हाँ राम रंग वरसैगौ॥
चीर चुराय किसन जी लै गए, जाय कदम पै वैठे।
रंग वरसैगौ हाँ-हाँ राम रंग वरसैगौ॥
चारों ओर निरख रहीं तिरिया, कोई दीख न पावै।
नाँय कोई पुरुस नाँय कोई वंदर कौने वादर फारे?
रंग वरसैगौ हाँ-हाँ राम रंग वरसैगौ॥
ताई समै वजाई वंसी देख रही जे तिरिया।
हमरौ चीर हमें देऔ लाला, जल में निपट उघारी।
रंग वरसैगौ हाँ-हाँ राम रंग वरसैगौ॥
चीर तिहारे जवई मिलिंगे, जलते आऔ प्यारी।
आपु हँसौ सव विरज हँसैगौ, ग्वाल हँसें दै तारी
रंग वरसैगौ हाँ-हाँ राम रंग वरसैगौ॥
दादी चाची न्हाइवे चालीं संग लगे गिरधारी।
रंग वरसैगौ हाँ-हाँ राम रंग वरसैगौ॥

वड़ौ-वूढ़ौ जितनी वड़ी आयु कौ मरै वाकूँ वितनेई घने हास्य गीत गाये जाँएं। जाके पीछें भाव जेएं कै भगवान सवकूँ लम्बी उमर दें जासों वे नाती पंती के आनंद देखिकें जाएं।

व्रज के लोकगीतन में हास्य-व्यंग इतनों भरौ परौऐ कै जाकूँ समैटकें इकठौरौ कियौ जाए तौ भारी पोथन्ना वनि जायगौ जे लोकगीत नाँय जानें कवते प्रैम की डोरी में वाँधिकें समाज कूँ जोरें भएं ऐं? समाज इनकौ रिनीऐ।

-वड़ा वाजार,
गोवर्धन (मथुरा)





ब्रज के कछु चटपटे लोकगीत

-श्री आनन्द वल्लभ शर्मा 'सरोज'

ब्रजभूमि सदैव सों नटखट कृष्ण कन्हैया की केलिथली रही है। या कृष्ण-कन्हैया की, जाके प्रत्येक क्रिया-कलाप में पल-पल चंचलता और छिन-छिन हास-परिहास, आमोद-प्रमोद और नाना प्रकार की जन-मन रंजनी क्रीड़ान कौ समावेस रह्यौ है। गिरि गोवरधन की तरहटी और जमना के कछारन के बीच गोरस कौ नित्य निरन्तर आस्वादन करवे वारे कान्हा नें कबहु दान, कबहु मान, कबहु चोरी, कबहु होरी, कबहु रास और कबहु विलास की नाना विध लीला रचकें ब्रज भूमि कों एक ऐसी रस धारा सों सिंचित कर दियौ जाते इहाँ के कण-कण में माखन जैसी मृदुता और मिसरी जैसी मधुरता मिल गई। मनमोहन की मोहिनी मूरत सदा सदा के तांई हर ब्रजवासी के उर अन्तर में पैठ गई। रमेश श्री कृष्ण की मादक अनुभूति सों अन्तर्गत ह्वैकें समस्त ब्रज मण्डल राममय है उठौ। ऐसी ब्रज की भाषा हू रूखी-सूखी चौं रहती। कन्हैया के [illegible] ते जुरिकें वामें हू अद्भुत माधुर्य कौ संचार भयौ और वो हू जन-जन कौ हिय हार बन बैठी।

अपनी सनातन परम्परा सों सरसते विहँसते ब्रज लोक जीवन नें अपनी ही प्राणदायिनी ब्रजभाषा में अपने हृदय की [illegible] भित्ति पै ऐसे-ऐसे जीवन्त और मनोरंजक शब्दचित्र अंकित करे हैं जो आज हू हर ब्रजवासी के मन मानस में गुदगुदी [illegible] वाहि सदा रसविभोर बनाएं भए हैं। मात्र ब्रज वासिन कौ ही नहीं अपितु हर रसिक हृदय कौं [illegible] निहित है। इनमें ते कछुक शब्दचित्र यहाँ पाठकन के सम्मुख रखवौ हमारौ अभीष्ट है।

ब्रज में 'रसियान' की और 'छैलान' की कमी न पहले रही न आज है। जो कहूँ फागुन कौ [illegible] कहनों ही कहा। फिर तौ गिलोय कौं नीम चढ़ते देर नाँय लगै। फागुन तौ मानों उमंग और [illegible] विसेषतः होरी के मिस ठिठोली और छेड़-छाड़ करवे कूं ही आवै। या मनें बूढ़ेन नें हू [illegible] हटकन देखवे लायक होय है। उनको अटपटी बानी ते फूटे राग-अनुराग के [illegible] काहू की अहं आहत है उठै और प्रतिक्रिया स्वरूप वोहू हटसावे-हटावे [illegible] और हू मुखर ह्वैकें जि कहवे कू विवस है उठै कै:-

> बरसाने की गुजरिया-कमर [illegible]
> बरसाने की गूजर [illegible]
> हँस-हँस के [illegible]

कहूँ गोरी की पतरी कमर पै [illegible]

> 'गोरी [illegible]

रसिया हर पल मानों या के [illegible]

तौ वो स्पष्ट कहवे में नाँय चूकै-

ढर गई ज्वानी पर गई सलवट लोग करें बकवाद

अब पहले जैसी रौनक नांय रही-

गयौ मिसरी कौ स्वाद-रह्यौ गुड़धानी कौ, गोरी चलै......

या मिसरी और गुड़धानी के स्वाद कौ अन्तर रसिक जन ही पहचान सकैं हैं। 'रस की बात रसिक ही जानें-रस कूं कूर कहा पहचानें।'

कैसी अनूठी उपमा है और कैसे अनूठे प्रतीक। छैला कूं गोरी के कजरारे नयनन में घटा उठती नजर आय रही है-

गोरी तेरे नैना कारी घटा।
घर के बलम की रबड़ी न भावै-यारन कौ पी गई खट्टौ मठा......

और हू-

छम-छम पूजन चली हनुमान कौं
तेल की मिठाई हनुमान पै चढ़ाई
घी की मिठाई काऊ ज्वान कौं....

हद है गयी सैतानी की। गोरी के पातिव्रत्य कूं चुनौती। तब ही तौ बुऊ मुखर होयगी। बाध्य होयगी कछु न कछु बोलवे कूँ। चुलबुलाहट चहियैं रसिया कूं तौ गोरी के बोलन की। चौं न बु गुड़-मिसरी, मठा-महेरी की चर्चा करकें गोरी के हृदय-प्रदेस में रस घोरवे की चेष्टा करै। कबहु-कबहु तौ वो काहू नई गुजरिया के तौ सूधौ दरवज्जै पै ही जाय पौहोंचै और नि:संकोच कहवे लगै-

खातिर करलै नई गुजरिया रसिया ठाड़ौ तेरे द्वार

अरी, ओ! देख जि रसिया तेरे द्वारे बेर बेर नाँय आयवे वारौ। जल्दी ते एक काम कर डार-

हिरदय की चौकी कर हेली-नेह कौ चन्दन चरच नवेली।
पुतरिन पलंग बिछाय पलक के करलै बन्द किवार.........

ऐसे दिवाने कूं जब वाकी अपनी ही गोरी भली भाँति मजा चखायवे कूं तत्पर है जाय तौ जिही रंग रंगीलौ मस्त मौला रसिया अपनी मित्र मण्डली के मध्य अपनी ही रामकहानी निसंक हैकें सुनायवे में नाँय चूकै-

मारौ-मारौ मेरे यार मोय घरवारी नें मारौ

मित्र पूछैं कै बात का भई तौ कहवे लगै कै-

मैनें कही तू दार-भात कर वाने चून निकारौ मेरे यार.....
याही बात पै भई है लड़ाई-कछु नाँय दोस हमारौ मेरे यार...

फिर का भयौ-

ओढ़ चुनरिया पीहर कूं चल दई
घर कौ लगाय गयी तारौ मेरे यार......

अब तौ बिचारे के पास रोयबे के सिवाय और कोई चारौ नाँय। रोयतौ हूँ सिसकी भर-भर कै-

गोरी चली पीहरवा बलम सिसकी दै-दै रोवै
तालन पै रोवै-तलैयन पै रोवै-घाटन पै दै दै मूड़ फोरै....

बिचारौ माथौ फोरबे कूं बिबस। का कहने या आकर्षन और ऐसी अनन्यता के। और जि चूनरी ब्रज की [illegible] तौ गोरी नें जैसें ही ओढ़ी नाँय कै समझ लेउ अब यु नाँय रुकबे वारी। कहूं न कहूं घूम दैबे कूं [illegible] है। [illegible] के मुख ते सुनौ-

अरे मैं तौ ओढ़ चुनरिया जाऊँगी मेले में

रसिया नें पूछो, चौं? चौं कै-

नाँय मानें मेरौ मनुआँ मैं तौ गोवरधन कूं जाऊँगी
और पांच आना की पाव जलेबी बैठ सड़क पै खाऊँगी

हाँ, जी सड़क पै बैठे चाहे चौखण्डी पै ब्रज में तौ 'सबै भूमि गोपाल की यामें अटक कहा' [illegible]। अस्तु गोरी जब जिद करबे लगी तौ रसिया हास-परिहास की सृष्टि करतौ भयौ वाकूं [illegible] है [illegible]-

मेला कूं मत जाय मेरी प्यारी बड़े-बड़े 'ददुआ' आवें
सात पाँच मिलकें तोय गोरी संग उठाय लै जावें

जानें कितने रसिक छैला म्हाँ घूम फिर रहे होंयगे। तेरौ हरन कर लियौ तौ? [illegible]। अब भला ऐसे अनुरागी रसिया पै गोरी प्रतिपल अपनौ प्रेम-घट न उँड़ेलती रहै तौ फिर प्रेम की [illegible]। [illegible] है कै ब्रजबाल हू अपने प्रियतम कूं प्रतिक्षण प्रसन्न राखबे की चेष्टा में निमग्न रहै है। [illegible] वाकूं बड़ौ पश्चाताप होय है और यु भविष्य में प्रन करै है कै-

मेरी पौरी परि गयौ बलम [illegible] अब न [illegible]
भूरी भैंस लाई पीहरते भर भर [illegible]।

हाँ, गोधन गैया, भैंस ही तौ ब्रजवासिन कौ सबते बड़ौ धन है। [illegible]। '[illegible] बाबा के घर घर माखन होय।' याही माखन कूं खाय खाय कें [illegible] हृष्ट-पुष्ट [illegible]। [illegible] हू अपने पीहरते भूरी भैंस लैकें आई है। [illegible]। [illegible]-देवर कौ नातौऊ बड़ौ अनूठौए। या आत्मीय सम्बन्ध कूं [illegible]-

रेल बनी भौजाई इंजन बन गयौ [illegible]

जि रेल गंगा घाट तक जाय पौहोंची है। भाभी-देवर दोनों [illegible]।

घाट नारै खाम्यो देवर गंगा कैसें [illegible]

तौ फिर विचार होय कै चलौ गंगा पार चलैं [illegible]। [illegible] तैयार है-

[illegible]

जिही सिपहिया कबहू गोरी कूं लांगुरिया के रूप में दृष्टिगोचर होय है तौ वाकूँ दूर वटवृक्ष के नीचे ते टेर लगावै-

चरखी चल रही बर के नीचे रस पीजा लांगुरिया

निस्चै ही ये रस भरौ आमंत्रण गांडे(गन्ना) कौ रस पियायवे के मिस प्रेम-रस कौ पान करायवे हेतु दियौ गयौ है।

कहाँ तक वरनन कियौ जाय। ब्रज लोकगीतकारन नें गूढ़ गहन प्रेम के, पवित्र प्रीति-रीति के ऐसे-ऐसे मनमोहक शब्द-चित्र सहज सरल रूप ते अपनी अपनी भाव भूमि पै अंकित किये हैं, जिनकूँ सुन सुन कैं हृदय उत्फुल्ल है उठै और ब्रज वासिन की विनोदप्रियता, उनकी मस्ती, उनकी हासोल्लासमय जीवनचर्या मूर्तिमान हैकें प्रत्येक सुधीजन के रोम-रोम कूं पुलकित करती भई ये कहवे कूं विवस कर देय है कि-

'ब्रज भूमि मोहिनी मैं जानी'

-जे-जी-ई-45/III,कौंसिलर कालौनी,
पोर्ट ब्लेयर (अण्डमान द्वीप समूह)





ब्रजभाषा कौ एकु मनोरंजक लोकगीत

-श्री हीरालाल शर्मा 'सरोज'

आजकल्ल तौ मनोरंजन के एक नांय सैकरान साधन-स्रोत बनि गये हैं। आकासवानी अर दूरदर्शन सगते अधिक लोकप्रिय साधन बनि गए हैं जन साधारन के। इनमें जुरि गए हैं-आडियो, वीडियो, टू-इन-वन, थ्री-इन-वन, और न जानें कहा कहा। अब तौ कवि सम्मेलन जैसे साधन गामन माँऊ पाँव पसारिये लगे हैं। पर या जुग की कल्पना करौ जब सिगरौ भारत घोर गरीबी, अज्ञान के अंधेरे अर पिछुरेपन में आकण्ठ डूबौ भयौ हो। वा समै लोक कौ विसेस रूप ते ग्रामीन छेत्र मांहि मनोरंजन कौ कोई साधन हतो तौ बूओ-ढोला अर आल्हा। होरी के औसर पै रसिया अर धमार,अर कबऊ-कभार नौंटंको अर छोटे-मोटे नाटक-छटे चौमासे। लोक मनोरंजन के काजैं भूखौ मरतौ, मर्‌यौ जीमतौ।

भौत पुरानौ किस्सा है। जब रेल चलीई चली। एक बाबा रेल में बैठकें गयौ अर द्वै दिना मैं गंगा जी नहायकें बगद्‌यायौ। गाम के सग निवासीन कैं बड़ौ अचम्भौ भयौ कै गंगा जी जाये और बगद के आये में तौ महीनान लग जाते, जा बाबा पै ऐसौ कौन-सौ जादू आ गयौ कै दो दिना मांहि ई जि गंगा जी नहा आयौ। बिन दिनान में रेल जन साधारन की पौंच ते भौत दूरई। बाके बिसै में जानिबे की गाम के लोग-लुगाईन की जिज्ञासा भौत-भारी बढ़िबे लगी। एक भये नयेले रेख उठान छोराए गंगा न्हाये को भूत सवार हैगौ अर यू बाबा के ढौरे जाकें बोल्यौ-

> बताय दै बाबा, कैसे बरन की गाड़ी रेल।
> बताय दै बाबा, कैसे बरन की गाड़ी रेल॥

बाबा नें बांकू ब्याब दियौ-

> बाबा कही, सुनौ मेरे बेटा फक-फक धुंआ देवै है।
> चलै पवन ते तेज रंग कारे-कारे कौ होवै है॥
> अट्टेसन ते छूट जाय दम गंगा जी पै लेवै है।
> एक दिना में गंगा नभाय दे ऐसौ कुदरती बाकौ खेल।
> बताय दै बाबा कैसे बरन की गाड़ी रेल॥
> सुन बूढ़े की बात रंग फिर गंगा कौ चढ़ि आयौ ।
> नौजवान भोरौ किसान घर भऊ ते जाय बतरायौ ।
> सेर कौ अंगा एक गठरिया बाँध मौंठ की लै आयौ ।
> बू अट्टेसन पै जाय तुरत बाबू ते न्यौं बतरायौ ।
> तू दै दै मोकूं टिकट, गंगा कौ रंग मोय चढ़ि आयौ ।
> तू लै लै मेरी दार-मौंठ मैं छाँट-फटक कें लायौ ।

आज मोइ गंगा जी नभाय दै, खूव मिलैगौ मेल।
बताय दै वावा कैसे वरन की गाड़ी रेल॥

बुकिंग वावू कूँ वा किसान की वातै सुनकै भौत क्रोध आयौ। ठीक ऊ औ, कोई नाज के वदले में टिकट थोरेई मिल्यौ करै। पर फिर वावू किसान के भोरेपनै समझ गयौ अरु वानैं किसान कूँ समझायौ कै वाय टिकट लैवे के काजैं का करनौ चहिए। किसान नैं वूई कर्‌यौ और टिकट ऐसैं लई-

सुनि कैं किसान की वात भौत वावू फिर न्यौंओ रिसियानौ।
का दियौ तोहि मैंनें करज गठरिया वाँध मौंठ मेरे ढिंग आनौ।
याइ वनिया कैं दै वेच फेर वू वावूजी नैं समझानौ।
वू वनिया कैं दई वेच रुपय्या सवा टिकट कौ पकरानौ।
गंगाजी के सुनौ रंग में वेझर बिकी है अधेल।
वता दै वावा कैसे वरन की गाड़ी रेल॥

टिकट तौ वाय मिलि गई, पर विचारौ वू किसान कहा जानैं कै गाड़ी कैसी होय, कहाँ ठाड़ी होय, कैसें वामैं वैठ्‌यौ जाय और वा टिकट कौ वू कहा करै। वा टिकट वावू नैं भोरे किसान कूँ सव कछु संछेप मांहि न्यों समझाय दियौ-

सुन लै रे भोरे किसान इन वैंचन पै वैठौ रहियौ।
जव आवै गाड़ी रेल सवारी वापैइ तुम कर लइयौ।
कोई कहै उतर परि गाड़ी ते तौ ज्वाव साफ न्यौं दै दीऔ।
पूरौ चारज भरि दियौ, टिकट मुँह के तौ सामई कर दीऔ।
देखत-देखत वाट रेल की, है गयौ वू नफसेल।
वताय दै वावा कैसे वरन की गाड़ी रेल॥

वात न्यौं भई कै रेलगाड़ी घण्टान लेट है गई। अचानक प्लेटफार्म पै कारे रंग कौ सूट पहिनैं भयौ अरु सिगार फूंकतौ भयौ ऐनकधारी अट्टेसन मास्टर प्लेटफार्म के किनारे किनारे टहलवे लग्यौ। अनपढ़ भोरे किसान कूं ऐसौ भरम भयौ कै कछू कहिवे की नाँय-

गाड़ी लेट भई वावूजी पलट रहे अपने नैना।
कारे रंग के सूट-वूट सिगरेट लगी मुंह पर ऐना।
भोरे किसान नें वू देख्यौ तौ वानैं समझी रेल खरी।
अंगा सोटा समगाय लिए, वावू पै सवारी जाय करी।
गंगा जी कौ भूत मूड़ पै, लख्यौ ना मेल-कुमेल।
वताय दै वावा कैसे वरन की गाड़ी रेल॥

जोंई वा किसान नैं अट्टेसन मास्टर की सवारी करी, त्योंई वू झल्लाय कैं पर्‌यौ। वड़ी भारी धमकी दैवे लग्यौ। ऊल जलूलऊ वोल्यौ, परि किसान कहाँ उतरिवे वारौ। वाकूँ तौ पैलेंई सग समझाय दियौ हत्यौ वुकिंग के वावू नैं। सो आगे कौ वानक कछू ऐसौ वन्यौ कै, न कवहू देख्यौ और न सुन्यौ।

अट्टेसन मास्टर किल्लायौ-

उल्लू क पट्ठे उतरि वेगि नहिं परवाय दुंगौ हाथ कड़ी।
पूरौ चारज भर दियौ, टिकट मुंह के तौ सामई तुरत करी।

फिर कमकैं लोनौ पकरि, सवारी तान दई औरउ अवरी।
बाबू जी घुटमन गिरे लैन पै तऊ न उतर्‌यौ बेसबरी।
ऐसौ कौतुक कर्‌यौ कै बाकौ मार निकास्यौ तेल।
बताय दै बाबा कैसे बरन की गाड़ी रेल॥

फागुन मास ब्रजमण्डल कौ सबते अधिक महत्वपूर्ण महीना ए। अमरई कौ बगुराबौ, कोकिला कौ कूँजबौ अर बातावरन में मादकता कौ विलास रसियन अरु गोरीन के मन माँहि उचंग अरु उमंग भर देय। फिर काहै चंग, मृदंग अरु झाँझ, झनझना उठें और ढफ अरु बम्ब (नगारे) बमक उठैं। ब्रज में समारोहन कौ धूम मच जाय। नगारेन के संग ब्रज गोप रसिया गामें और गोरी नाचें, भरि-भरि फिरकैंया। एक प्रतियोगिता कौ माहौल बनि जाय। रात-रात भर नाच-गान में निकस जाए। एक बेर की बातै कै ऐसेई सई सांझ ते अखाड़ौ जम गयौ। या नाच-गान के दंगल में गोरीन नैं एक मिसकुट बनाई कै आज बाय कपु है जाय, रसियन कूं पानी पियानौं है, पाठ सिखानौं है कि ब्रजबालान ते ये ऊपर नाँयें। दंगल जम गयौ। नगारे पै थाप परिबे लगी डंकान की। रसिया गयबे लगे और इतमें गोरी बीच मैदान मांहि आकें झरट्टा सरपट्टा भरिबे लगी। रसिया गाबे अरु नगारे बजाबे बारे बारी-बारी सौं बदलते गये अरु इतमें गोरी ऊ एक के अनन्तर दूसरी मैदान में उतरती रही। कोई पार्टी हटिबे कौ नाम नाँय लै रही। प्रात: के आठ नौ बजे कौ समै हैगौ। नगारे पै चोट मारत-मारत रसियन के हाथ ज्वाब दै गए। पर इज्जत कौ प्रस्न नगारौ बजाबे को सामर्थ कौ ना रह्‌यौ, अरु खेतन पै काम-काज कौ टैम हैबौ बड़ौ बनाय बन्यौ। तबई एक अधेड़ बोल्यौ, भैय्याओ, अब मेरौ रसिया होगौ। सब तैयार। अधेड़ रसिया नैं ऊँची अवाज लगाई और रसिया के बोल न्यौं निकस परे-

अरे टर जा यहां ते मानस खानी।
सई साँझ के रसिया ठाड़े,
इन्नैं अन्न मिल्यौ नाँय पानी
टर जा यहां ते मानस खानी।

इन बोलन नैं सुनिकें मैदान के बीच में भरपूरौ नांच करती भई गोरी बाहर कूं बुदबुदाती भई भाग गई। रसिया तौ या स्थिती कूं तैयारई ठाड़े। सबनैं जोर ते हल्ला मचायौ, हार गई, हार गई.......भाग गई...... अर बे झट्ट-पट्ट चौपदऐ(नगारे कूं) उठाय कैं घर भाजे।

जान बची अरु लाखों पाये।

आज कल्ल जमानौ तेजी सौं करवट लै रह्‌यौ है। कोई समौ हौ जब पढ़े-लिखे सौ-सौ कोसन तौंनूं ढूंढबे ते नाँय मिलते हते। पर अब जुग पलट्‌यौई नाँय पर उल्टौऊ होत जा रह्‌यौ है। नारी चेतना अरु नारी समानता कौ नारौ दिन दूनौ रात चौगुनौ उठतौ जा रह्‌यौ है। एक ब्रजबाला की आधुनिक प्रिया कॉलिज पढ़िबे जाते समै अपने पति कूं जा तरियाँ ते समझाती भई है-

जाऊँ जाऊँगी बलम कॉलेज,
तू चौकस रहियौ बंगला पै।
क्रीम-पाउडर बीत गये हैं, बिनैं मोल मैं लाऊँगी।
सखी-सहेलिन संग आज मैं, स्यात सिनेमा जाऊँगी।
आके खाऊँ बलम फुलकिया
तू करतौ रहियौ चकला पै
जाऊँ जाऊँगी..............

रिक्शा में जाते भए दो सवारिन की वीच वजार में ऐसी टक्कर भई कै दोनों उछरकें रिक्शा में ते वीच वजार में ऐसे गिरे कै कितऊ कूँ थैला, कितऊ कूँ अटैची अरु कितऊ कूँ झण्डा-झोरी। ऊपर ते लहू-लुहान और है गये विचारे। ऐसी चोट खाई कै सूधौ अस्पताल जानौ पर्यौ। सहानुभूति दिखाइवे वारे तौ कम हॉय पर ऐसे में हँसिवे वारे अरु तमाशगीर वहौत इकट्टे है जाँय। भीर में ते काऊ नें सुर अलाप्यौ-

दुनियाँ देखै वीच वजरिया।
घुटमन परि गए लांगुरिया।
कपड़ा फाटे माल विखर गौ,
टूटी है पांसुरिया।

या तरियाँ सौं जो कहूँ लोकगीतन कौ संग्रह कर्यौ जाय, खोज करी जाय, तौ विनमें ऐसौ-ऐसौ मनोरंजन अरुहास्य-व्यंग्य मिल सकै जो नगरीय गीतन माँइ वाँस डारे ते ऊ नाँय मिल सकै।

-पुरोहित मौहल्ला, भरतपुर (राज.)





ब्रज लोकगीत और ब्यौपार

-श्री राम गोपाल शर्मा 'गोपाल भैया'

ब्रज लोकगीत ब्रज-वसुन्धरा की मांटी की सांस्कृतिक विरासत है। याकी भीनी-भीनी मधुर गन्ध नें जनजीवन के अमिट रंगन कूँ प्रसारित व प्रकाशित कियौ है। ब्रजभाषा की अनेक विधा और ब्रज लोकगीतन कौ अपार वर्गीकरन याके विपुल भण्डार कौ साक्षी है। संस्कार गीत, रितु, पर्व, उत्सव गीत, सामयिक गीत, ब्रज मण्डल कौ महत्व दर्शाते रहे हैं।

रससिद्ध कवि श्री हरिहर गुरुजी हाथरसी नें महत्व पै प्रकाश डारते भए कही हो-वेद शास्त्र के मंत्र तौ हर अनुष्ठान पै एकसेई उच्चारित होयें हैं पर ब्रज लोकगीत घर में हैवे वारे उत्सव व अनुष्ठान कूँ घर तेई स्पष्ट बताय देय है कि घर में गयवे वारे जच्चा, सोहले, बालक के जन्म कूँ, घोड़ी-बन्ना, वर पक्ष के विवाह कूँ और ऊपर ते यो लाड़ो बोल्यौ मरेंगो जहर विष खाय बारौठी हैवे कूँ इंगित करै। लोकजीवन के चार पदारथन में धनोपार्जन कौ दूसरौ स्थान है। अत: ब्रज प्रान्तर के गाम-घोपन में फेरी वारे मधुर कंठ सौं अपनी वस्तु के बेचवे कौ प्रचार करैं झुनझुना, बांसुरी, भौंपू, ढोलक, आदि बजाय बजाय कै मनगढ़न्त गीत बनायकें गावे और खरीददारन कौ चित्त आकर्षित करैं। यह परम्परा आज सौं नहीं द्वापरकाल सौं प्रचलित भई मानी जात है।

श्री श्याम सुन्दर श्री कृष्ण अपनी प्रियतमा रासरासेश्वरी श्री श्यामा जू कौ सानिध्य पाइवे कूँ कबहू मनिहारिन बनें, कबहूँ लिलिहारिन, कबहू फूल बेचन हारी बनें। एक प्रसंग वार्ता विक्रेता (श्री श्याम सुन्दर) एवं क्रेता (श्री श्यामा जू) कौ या प्रकार श्री सूरदास जी नें कही है-

सुन्दर तेल फुलेल उबटनौं, अतर सुगंध मिलाई
जोइ जोइ रुचै सो लेवहु श्याम बेर भई मो आई।

देरी के कारन कूँ नकारत भए किशोरी जी कहें-

बेर-बेर तू जिन कह मालिन, द्यौ माल उधार,
हीरा लाल मणि मानिक, भूषन बसन बनारसी।

श्री कृष्ण श्याम सखी के रूप में अपनी गरता बतात भए कहैं-

बड़े घरन की मालिन मैं हूं, धन की रुचि है नांय
हम सौदागर प्रेमरतन के, और कछु न सुहाय।

श्री किशोरी जी अहंकारी बातन सौं खीज कें उपालम्भ करें-

फूल-फूल की बेचन हारी।
कहा अधिक इतराइ
लेउ लेउ कह फिरत गलिन में,
हमसे करत बड़ाय।

सामिग्री की सुन्दरता और शुद्धता के कारन वह स्थान प्रसिद्ध व्है जात है। या ब्रज लोकगीत में गोरी अपने प्रियतम सौं जयपुर की छपी लंहगा-चूनर लाबे की कामना करै-

पिया जैपुर शहर तुम जइयौं।
मांते लंहगा चूनर लइयौं।
चोली सीसा टँकी हो भारी।
चमकै गोरे बदन पै कारी।

हाथरस की तगड़ी लाइबे के तांई तौ भूसा, बैल, खेत, बालक और स्वयं पिया के बिकबाइबे की बात चलावै-

मैं गई हाथरस मण्डी,
वहां एक जनी पै देखी।
मेरौ बहुत दिना ते जिया ललचाय,
तगड़ी सौने की देउ मंगवाय।

ब्रज लोक गीतन में आगरे कौ घाघरौ दिबाइ दै रसिया। मथुरा के पेड़ा, खुरचन, बंगाली मिठाई, फिरोजाबाद की चूड़ी-चूडौ तौ हाथी दाँत कौ, बरेली कौ काजर, करौली की गागर आदि नित्य प्रति प्रयोग की बस्तुन पै अनेक गीत सुनाई परैं।

आधुनिक काल के सामान विक्रेता गीत गाय-गायकें कैसौ मन मोहत हैं याके कछु उदाहरन नीचे दिये जात हैं।

ब्रज में मसालेदार चना-चिरवा बेचबे कौ प्रचलन है। अपनी बस्तु की बिशेषता बतात भयौ कहै-

मेरा चना मसाले बाला।
इसको घर ले जाना लाला।
चना जोर गरम बाबू।
मैं लायौ चना जोर गरम।
चना मैरौ हनुमान नैं खायौ।
लंका में जाय दुर्ग ढहायौ।
सीता कूँ खोज कें लायौ।
सबते ज्यादा राम कूँ भायौ।
जो कोई पुड़िया लेता जाए।
तापै दुलहिन बलि-बलि जाए।
फिर-फिर यार-बार ले जाए॥ चना जोर....

ब्यौपारी छोटौ होय या बड़ौ एक साइन बोर्ड अपनी दुकान पै जरूर टाँग राखै-

आज नगद कल उधार।
परसौं मुफ़्त मिलेगा यार॥

गर्मी में सुबह ही सुबह, सर्दी में दुपहरी में ठेल पै कबाड़ी सुमधुर आवाज लगावैं-

लोहा टीन टप्परवाला
डिब्बे रद्दी अखबार वाला

सब्जी मंडी में प्राय: पूनौं कूं बन्दी राखी जावै। चौदस वारे दिना गलौ फाड़-फाड़ कें गीत गावैं-

कल है मेरे भैय्या पूनौं।
लै जइयौ साग तू दूनौं।

बरसात के दिनन में जामुन वारे कौ मनमोहक गीत कौन कूं रिझावे की सामर्थ नाँय राखै-

कारे कारे नौन में हिलाए।
देवर भाभी कूं खिलाए।
जमुना बाग ते हैं आए।
हरियल तोतन नें गिराए।
अबई बीन बीन के लाए।
कारे कारे नौन में हिलाए।

बर्तनन पै कलई टाँके लगावे वारे हूं गीत गावे में पीछे नांहि रहैं-

पीतल के बर्तनो पर
कलई ई ई करालो।
टूटे फूटे बर्तनों पर
टांका लगवा आ आ लो।

ब्रज क्षेत्र में कोई भी फेरी लगावे वारौ बिना अलाप के अपने सामान कौ प्रचार कर ही नाँ सकै। ब्रज लोकगीतन कौ माध्यम बनायकें अपनी बिक्री बढ़ावे कौ माध्यम बनाय राखौ है। सावन के महीना में मल्हार की तर्जन पै, फागुन में फाग रसिया की तर्ज पै तुक मिलाय मिलाय कें गलिन में जात फिरैं और चार पैसा कमावैं हैं।

ब्रज माधुरी में रचे पचे ब्रजवासी अपने जीवन के हर पहलू कूं गायकें गुनगुनायकें गुजार देय हैं। गीत अपने लय कूं आप ही मुखरित करैं। ब्रजवासी बालक कबड्डी में 'ओय कबड्डी आला, लाला नें तीतर पाला' गायकें खेल जीत जावैं। पटशाला जाइवे वारे बालक गिन्ती पहाड़े गाइ-गाइ कें याद कर लेत हैं। अंग्रेजी तक कूं गेय पदन में ढाल कें याद कर लेवैं हैं और तौ और तांगे वारौ वृन्दावन सवारी लै जाइवे वारौ कैसौ गीत गाइ रह्यौ है-

दो रुपया सवारी।
वो हल्की होय या भारी।
चाहे ओछा हो या सारी।
यो गोरी होय या कारी।

या प्रकार सौं ब्रजवासी मस्ती भरौ जीवन जीवत भए श्री राधा-कृष्ण की अनुरागी भूमि पै 'पुनरपि जन्म: पुनरपि मरण:' की कामना करत भए लालित्य भरे दिनन की याद मैं भोर की मधुरिमा, मध्यान्ह की रमणीयता, सन्ध्या के शान्तिमय वातावरण में आनन्द प्राप्त करत रहैं।

-9/218, राजी गली
आगरा (उ.प्र.)





हीरो-एक विसेस रितुगीत

-श्री मोहन स्वरूप भाटिया

'हीरो' ब्रज कौ एक विसेस रितु लोकगीत है, जो भादों कृस्न आठैं सौं कातिक शुक्ल पड़वा तानूं गायौ जाय है। गोबिन्द गोपाल की या पावन भूमि में जब ग्वालिया संझा समै अपने पसुन कूँ चराकैं लौटैं तब बातावरन कूँ गुंजा दैवे बारी उतार चढ़ाव लेती भई धुनि में 'हीरो' कौ सहज माधुर्य प्रस्फुटित हैबे लगै है। दीवारी और विसेसत: गोवर्धन पूजा के समै तौ 'हीरो' के मधुर सुर ब्रजभूमि कूँ रससिक्त ही कर देमें हैं।

'हीरो' दोहा के समान ई होय है किन्तु गावे की शैली दोहान सौं अलग होय है। हीरो में भगवान श्री कृस्न और राधिका की छवि, बिनकी लीलान, ब्रजभूमि की सोभा, गोचारन, लोक-रीति की उक्तिन आदि कौ विवेचन रहै है। यहां पै 'हीरो' के कछु विविध उदाहरन प्रस्तुत करे जा रहे हैं।

एक 'हीरो' में भगवान श्री कृस्न की छवि कौ चित्रन या तरियाँ करौ गयौ है कै वे गोवर्धन के शिखर पै ठाड़े हैं। वहां सरसराती पौन चल रही है, जासौं बिनकौ पीताम्बर फहर-फहर फहर रह्यौ है-

अरे गिरवर रे के तेरी शिखर पै औरु ठाड़ौ नन्दकिशोर।
अरे व्यारि में रे चलते फरहरें औरु पीताम्बर के छोर॥

गिरिराज पर्वत के शिखर सौं सांवरे सलौने श्री कृस्न नैं अपनी मुरलिया पै ऐसी मधुर तान छेड़ी कै वाय सुनकैं महल में वैठी राधारानी और वन में विचरते मोर विमुग्ध है उठे-

अरे वन्सी ऐ बजाइ कान्हा सामरे, औरु गिरवर पहिली रे ओर।
अरे महलन रे के मोही रानी राधिका, औरु जंगल मोहे रे मोर॥

गिरि-गोवर्धन के पर्वत सिखर सौं उतरकैं सलौने श्याम 'साँकरी खोर' मांहि जा पहुँचे जहाँ विन्नैं दूध दही बेचबे जा रही ब्रज गोपिकान की मटुकिया फोर डारीं और बिनके हार तोड़कै ठाड़े-ठाड़े हंसबे लगे-

अरे नंदगाम की रे सामरी औरु गयी सांकरी रे खोरि।
अरे मटुकी रे फोरी लकुट ते औरु हँस्यौ हार कूँ तोरि॥

या तरियां उत्पात मचाते भए नटखट नंदकिशोर राधारानी के पास आए। राधिका जी माखन निकार रही ही। माखन श्री कृस्न कूँ इतेक प्रिय हो कै वे गोपीन सौं लूट-लूट और घरन में छींका पै सौं चुरा चुराकै खा जायौ करै हे। फिर या समै यासौं अधिक सौभाग्य का होय। बस बू राधाजी सौं लैकैं खूब माखन खाबे लगे। जब बिनकौ मन भर गयौ तौ 'बंशीबट' पै जाकें मोर और यंदरन कूँ खवावे लगे-

अरे दही रे बिलोवै रानी राधिका और कान्हा माखन रे खाइ।
अरे और रे खवावै गोपा मंडल और बंसीवट पै रे जाइ॥

पौराणिक साहित्य में भलेई राधा-कृष्ण के ब्याह कौ बर्नन नांय भयौ होय किन्तु लोकसाहित्य राधा-कृष्ण के बिवाह कौ साखी है। एक 'होरे' में बर्नन है कै वृषभानु जी के द्वारे श्री कृष्ण कौ बिवाह रचायौ जा रह्यौ है! श्री कृष्ण दूल्हा बने हैं और राधिका जी दुलहन बनी भई हैं-

अरे ब्याहु रच्यौ है रे श्री कृष्ण कौ और बिरखभान के रे द्वार।
अरे दुलहनि रे बनी ए रानी राधिका और दूल्हे रे नंद कुमार॥

बालपने में बलराम होंते भएऊ श्री कृष्ण के सुभाव में बाल सुलभ सरलता ही। एक 'होरे' में वे मात जसोदा सौं कह रहे हैं कै-मैया, मोय एक कारौ कम्मर दैदै, एक सफेद सी गाय ला दै और मधुर स्वरन बारी एक बंसी दिवा दै जासौं बरसों गिरि के पै दिन खेलबे जाबे चाहत है मोय-

अरे कारौ रे लै दै मैया कामरो और धौरी लै दै रे गाइ।
अरे बंसी रे लै दै मैया बाजनो जाइ चरांगौ बनि रे जाइ॥

भगवान श्री कृष्ण की अनन्य प्रियतमा वृंदावन बिहारिनी राधिका की केलि-स्थली वृन्दावन के वृच्छन की मर्म-व्यथा कूँ भला कौन जान सकै है? आजऊ वृन्दावन के वृच्छन की डाल-डाल और पात-पात सौं 'राधे-राधे' के सुर गूँजें हैं। 'होरे' में प्रस्तुत अलौकिक अनुभूति कौ यह एक उदाहरन है-

अरे वृन्दावन के रे बिरछा कौ और मरमु न जानें रे कोय।
अरे डार-डार और पात पै ए प्यारे राधेई राधे रे होय॥

कार्तिक मास के है प्रमुख उत्सवन कौ ऊ 'होरे' में बर्नन भयौ है। दीवारी भारत कौ प्रमुख पर्व है किंतु जि आश्चर्य कौ विषै है कै अन्य लोकगीतन में दीवारी कौ चित्रन प्रायः नांय भयौ है। एक 'होरे' में दीवारी के दिन अरु रात्रि कूँ अत्यन्त महत्वपूर्न बतायौ गयौ है-

दिवारी रे प्यारे दिन बड़ौ और मावस बड़ी रे राति।
पहले रे जन्मौ प्यारे ब्रज के और फिर गूजर के रे द्वार॥

एक अन्य 'होरे' में दिवारी की रात कूँ 'मानसी गंगा' में सौं लघु लालन के अपने भाजन में दूध भरबे कौ चित्रन है। दिवारी पै मानसी गंगा में भक्त जन दूध चढ़ावें हैं। यासौं मानसी गंगा के दूध सौं भरी होबे की कल्पना करी गई है-

मानसी रे के गंगा दूध की और भरी भरी रहवि दिन रे राति।
लालन रे के दूना भरी लिए और स्यौ दिनमनि रे राति॥

'होरे' कौ सबसौं अधिक संग गोवर्धन पूजन के संगै जुरै है।

दिवारी के दूसरे दिन कार्तिक शुक्ल पड़वा कूँ ब्रज में 'गोवर्धन' की पूजा करी जाय है। घर के आंगन में मानवाकार आकृति के 'गोवर्धन' बनाए जाय हैं और रात कूँ बाकी प्रदक्षिना (परकम्मा) करते भये बाकी टूंडी में दूध चढ़ायौ जाय है। या औसर पै 'होरे' गाये जाबे कौ विशेष [illegible]। एक 'होरो' में गोवर्धन पूजन कौ दृश्य चित्रित है-

गोवर्धन रे मांसू [illegible] तो ते बड़ौ न [illegible]
टेरे ऊपर रे घ्यौ [illegible] दही हिलोरे रे [illegible]

मानसी गंगा कूँ स्वर्ग कौ प्रवेस द्वार ऊ बतायौ गयौ है। जहाँ भगवान के दर्सन होंय हैं-

मानसी गंगा रे दूध की औरु गिरिवर से परवान।
सिड्डी लागी रे वैकुण्ठ की जहां आइ मिलें रे भगवान॥

ब्रजभूमि कौ वर्नन करते भए एक 'हीरो' में वृन्दावन, मथुरा, बरसाना तथा नन्दगाम कूँ पावन स्थान बतायौ गयौ है-

अरे ब्रज चौरासी रे कोस में औरु चार गाम निजधाम।
अरे वृदांवन रे मधुपुरी औरु बरसानों रे नंदगाम॥

'हीरो' में नीति और लोक रीति कौ पक्ष ऊ प्रबलता के संग प्रस्तुत भयौ है। एक 'हीरो' में वर्नन है कै गांडर(एक तरियाँ की घास) तौ झील में अच्छी लगै है, मोर सरस की डार पै, कन्या अपनी ससुराल में और पशु घर के द्वार पै ई सुशोभित लगै है।

गांडर सोहै रे झील में औरु मोर सरस की रे डार।
बेटी तो सोहै रे सासुरे प्यारे गोधन घर के द्वार॥

एक अन्य 'हीरो' में अभीष्ट काम की सिद्धि के लये इष्ट देवता कूँ मनाकैं गुरु कौ नाम स्मरन करबे कौ निर्देश करौ गयौ है-

अरे पहले रे कौनु मनाइए औरु कौन कौ लीजे रे नाम।
अरे पहले रे रामु मनाइए औरु गुरु कौ लीजे रे नाम॥

-ज्ञानदीप ,डैम्पियर नगर,
मथुरा (उत्तर प्रदेश)





ब्रज कौ लोक-महाकाव्य- ढोला

-डॉ. श्याम सनेही लाल शर्मा

सबरे ब्रज-मंडल में प्राप्त लोक-साहित्य में ब्रज लोक-जीवन और ब्रज लोक संस्कृति कौ सच्चौ संवाहक ब्रज कौ लोक महाकाव्य 'ढोला' है। आजु तें लगभग दोसौ पचास बरस पैले 'ब्रजलाल मदारी' नें ब्रज में 'ढोला' कौ बीज बपन कर्यौ। 'मदारी' मथुरा जनपद में 'लोहवन' गाम कौ रहिबेवारौ हतो। 'मदारी' नगर कोट वारी देवी कौ भगतउ हतो। वानें कैऊ बेर नगर कोट की जात्रा करी। एक बेर नगर कोट की जात्रा के समै वानें वाई कथा कूँ आधार बनाइकें और नई विधि तें 'ढोला' कूँ कथिकै गाइबौ आरम्भ कर्यौ। 'मदारी' के 'ढोला' गाइवे की सैली इतनी सरस हती कि वाई सैली कौ सहारौ लैकें मथुरा जिले में ई 'रायसिंह के नगरा' के रहिबेवारे लोक-कवि 'गणपति' नें 'नल अरु दमयन्ती' के पौराणिक आख्यान कूँ कथ्यौ और गायौ। 'गणपति' नें कैऊ मैदाननु की सर्जना करी। यु कल्पनासील कवि हतो। वाके बाद निरन्तर 'ढोला' हमें मिलै हैं। एक महाकाव्य के ताँई जैसी विसदता, व्यापकता और विविधता की आवश्यकता परै है, वैसीई व्यापकता और विविधता 'ढोला' में मिलै है।

ढोला की वस्तु संयोजना:

ब्रज के 'ढोला' की सबरी कथा 'नल अरु दमयन्ती' के जीवन सौं सम्बन्ध रखै है। कथा के तीनि भाग करे गये हैं [1]-पैले भाग में मुख्य रूप तें मंझा कौ देस निकारौ, नल कौ जनमु, बनियनु के हयाँ नल कौ पालन-पोषनु, भौमासुर दैत्य कौ बध और वाकी अपसरा बिटिया ते नल कौ ब्याह, बाप(पिरथम) और पूत (नल) कौ पुनर्मिलन, 'बघिलागढ़' के राजा 'फूलसिंह पंजाबी' के संग 'नल' कौ युद्ध और चंदनबन के दैत्यन कूँ परास्त करिकें वन ते चन्दनकाष्ट लाइवे की घटना कौ बरनन है। 'ढोला' की कथा के पूरबभाग में जिन प्रसंगन की संयोजना भई है उनकौ उल्लेख 'नल' के जीवन तें सम्बन्ध रखिबेवारे काऊ प्रामानिक ग्रंथ में नाँहि मिलै। जामूँ जे प्रसंग लोक-मानस-प्रतिभा-प्रसूत ई लगै हैं, जिनकौ आधार परम्परागत प्राप्त अभिप्राय और लोक-विस्वास में देख्यौ जाइ सकै है।

'ढोला' की कथा के मध्य भाग की घटना कौ आधार महाभारत-पुराणादि ग्रंथनु में प्राप्त नलाख्यान है। परि लोक कविगन नें उन ग्रंथनु में प्राप्त नल कथा में ऊ कैऊ परिवर्तन करे हैं। मध्य-भाग में मुख्यरूप ते-दमयन्ती के ब्याह कौ 'टीका' लैकें 'हंस' इन्द्रपुरी जाय है। मारग में प्रचंड आँधी के आइ जायवे ते आहत हैकैं 'नल' के उद्यान में गिरि परै है। सवेरे सिकार के ताँई निकरे नल कूँ हंसु आहत दसा में मिलै है-जि प्रसंग पूरौ लौकिक नयौ और मुग्ध है। दूसरे प्रसंगन में हंस कौ उपचार, नल कूँ टीका चढ़ानौ, नल कौ दमयन्ती ते ब्याह कौ निस्चय करनौ। मोहिनी-मारन, नल-निष्कासन, इन्द्र और नल में सामान्य मानवीय स्पर्धा है। इन्द्र और नल में युद्ध, नल-दमयन्ती-परिणय, मंझा मात कौ प्रमुख है जो सामंत अपने अपमान के प्रतिकार

1- ब्रज क्षेत्र में प्रचलित [illegible] का सांस्कृतिक और सामाजिक अध्ययन; [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] है।

इन्द्र, सनीचर कौ नल पै कोपु, नल कौ जुआ में सवरौ वैभव हारि जाइवौ, नरवर-त्याग, नल-औंखा, नल-दमयन्ती-विछोह और पुनर्मिलन की घटनाऊ महत्तुपूरन हैं।

'ढोला' की कथा के उत्तर भाग की सवरी घटना और प्रसंग राजस्थान की प्रेम-कथा 'ढोला-मारू' पै आधारित है, किन्तु ढोला मारू की प्रेम कहानी ऊ ब्रज में एक नए रूप में सामने आई है। पैली वात तौ जिहै, कि ढोला-मारू की प्रेम-कथा ब्रज के ढोला कौ एकु अंसभर है। यू ब्रज के 'ढोला' में एक प्रासंगिक घटना के रूप में दिखाई देइ है। वाकौ अपनौ कोई स्वतन्त्र अस्तित्व ब्रज के 'ढोला' में नहीं है। दूसरी वात जिहै कि 'ढोला-मारू' प्रेम-कथा हती, ब्रज में यू प्रेम-कथा कम साहस-कथा ज्यादा है गई है। जाके कारनें कैऊ नए मैदानन (अध्यायन) की सर्जना लोक-कविजनन नें करि लई है, जिनमें मुख्य रूप ते दरवाजौ, जीनमुलक, कंठी मिसुर आदि हैं। जा तरैं ब्रज कौ सवरौ 'ढोला' भौत विसाल आकार कौ है गयौ है। 'ढोला' की सवरी कथा चालीस मैदानन में वाँटी गई है, जो जातरैं हैं-

1. नल-पुरान। जाकोऊ कथा पाँच भागन में है-वंसावली, मंझा कौ देस निकारौ, नल कौ जनम, मोतिनी कौ व्याह और पुनर्मिलन। 2. कपिलागढ़, 3. चन्दनवन, 4. दमन्ती कौ व्याहु, 5. अंजमगढ़, 6. इन्दरवाद, 7. नल-औंखा, 8. गोहदपुर, 9. मान नगर, 10. वीरनगर, 11. दूसरौ व्याह, 12. भँवरतालु, 13. दीपकराग, 14. फ़रदवाग, 15. नल-वुधसार, 16. घोड़ा खोलना, 17. भालनगर, 18. लखियावन, 19. ढोला कौ व्याह, 20. भौसमपुर, 21. वंगमगढ़, 22. रेवा कौ व्याह, 23. कौंमरू 24. अजयनगर, 25. वंगाला, 26. जवरनगढ़, 27. दन्तभवन, 28. पिंगुल-विराई, 29. सुँआ सँदेसौ, 30. लाखा मिसुर, 31. ढोला पिंगुल गवन, 32. वाग कौ, 33. दरवाजा, 34. कंठी मिसुर, 35. जीनमुलक, 36. पथर सिला, 37. अमरकोट, 38. नरवर का ताल, 39. चन्दरपाल का व्याहु, 40. नल कौ सन्यास।

'ढोला' की प्रवन्धात्मकता:

'ढोला' की विसालाकार सवरी कथा चरित नायक नल के जीवन-सूत्र ते सुगुम्फित है। जिन अनेक घटनानु तें 'ढोला' कौ कथानक निर्मित भयौ है, उनकूँ परस्पर सम्वद्ध करिवे वारौ 'नल' कौ अपनौ जीवन है। कथा- प्रवाह अनेक घटनान ते होतौभयौ निरन्तर चल्यौ है। इतिवृत्तात्मकता जा लोक-महाकाव्य की रसात्मकता में सहायक वनिकैं आई है। 'ढोला' में प्रकथनपूरन सानुवन्धकथा मिलै है, ज्यौं कि लोक-गायकनु नें जामें-

> लाओ नल को देउँ तुम्हें कथा सुनाइ।
> पाँचौ ततु मिलाइ स्वामी नें कायागढ़ की नींव जमाइ॥-2
> विरम मुहूरत आखेट करन निरप एक दिना धायौ।-3
> माफु होइ सव खता, कहूँ मति जथा चरित्र वखानी।
> इतनें महलनु सुख नींद सोइ रई रानी॥-4

इन और ऐसीई पंक्तियनु में प्रकथन सैली कूँ महत्तु दयौ गयौ है।

'ढोला' की कथा में प्रासंगिक घटनानु कौ वाहुल्य है। सवरी प्रासंगिक घटनाएं पूरी तौर ते कथा के विकास और नायक के चरित्र कूँ गरिमामय वनाइवे में सहायक भई हैं। लोक-गायकन कौ पूरौ ध्यान नल के चरित्र-विकास की ओरई अधिक रह्यौ है, जाईते भौमासुर दैत्य, फूलसिंह पंजावी, इन्द्र, तूरिम दैत्य आदि के संग युद्ध की योजना करी गई है। खल नायकन की असत्प्रवृत्तियनु पै नायक की विजय दिखाइकैं नायक के चरित्र कूँ गौरवमय दिव्यता तें मंडित कर्यौ गयौ है। प्रमुख प्रासंगिक

2- नल पुराण; पृ-46, ले. पं. गयाप्रसाद शर्मा
3- वही, पृ.-43
4- दमयन्ती कौ व्याहु (हस्तलिखित सौं)

घटनानु में 'भंगिन की कथा' कौ उल्लेख परजा को निर्भीकता कूँ दिखाइवे के लएँ भयौ है, संगई जि प्रसंग 'पिरथम' कूँ निरपत्यता कौ आभास कराइवे मेंउँ सहायक सिद्ध भयौ है।5- दच्छिनपुर के सेठन को कथा असहायावस्था में नल कूँ सहारौ दैवे के तांई औरु सैसय मेंई याके चरित्र की महत्ता दिखाइवे के तांई समायोजित करी गई है।6- भौमासुर दैत्य औरु नल-मोतिनी के ब्याह की कथा कौ मुख्य उद्देश्य नल कौ पराकरम प्रदर्शन औरु मानव -अपसरा-सम्बन्ध कूँ दिखाइवे के लएँ है।7- ऐसीई न जानें कितनी घटनाएं हैं, जिनकौ उल्लेख 'ढोला' में मिलै है। इन सबरी घटनान कूँ एक क्रमते 'ढोला' में प्रस्तुत कर्यौ गयौ है। वे सब मुख्य-कथा के अंग रूप में आई हैं।

'ढोला' में लोक-गायकन नें ऐसे रसात्मक वरननऊ अपनाएँ हैं, जिनसौं रसोद्‌बोधन में पूरी सहायता मिलौ है। नरवर कौ किलौ, युद्ध, जात्रा, बाग-बगीचा, सौन्दर्य आदि के बरनन में बिबिध वस्तुअन की योजना करत भये लोक-गायकनु नें अपने काव्य-कौसल कौ परिचय दयौ है।'अजय नगर' कै मैदान में मां की अमराई, सरोवर, नगर औरु किले के बरनन में वस्तुवरननगत रसात्मकता देखी जाइ सकै है-

1. गढ़ कोट्ट बनौ ररकैमा।
लाखा बुर्ज बनौ परवत पै जिअ कछु परवत पै नांहैं।
तेरे गढ़ के नफे कँगूरा जाकै यार नफे नाहैं॥
तेरौ किलौ गिरिवर सम ऊँचौ, आमति बियारि रूरेमा॥ 8

2. बर पीपर आम कदम्ब खिरै सेमरि जो खिली बागन में अकेली।
महकत तार खजूरन में फल गूलर जामुन नीम चमेली।
खट्टा-मिट्ठा सेव इमोरी, चकोतरा अंगूर डार नींबुन तें पीरी।
लखै नारियल दाख सुपारी किसमिस सीरी।
नरवर वारौ लखै बागु सब लखै अमीरी॥ 9

फूलौ न अंग समाइ, रम्य बाग के बीच में एकु तालु नजरि परि जाइ।
जल में खिलि रहे कमल भँमर ऊपर गुँजारैं,
ताल में मंदिर बनि रहे गोल।
सिंगमरमर के बने कँगूरा झुकि रई सुनहरी जिनपै झोल॥ 10

ऐसे ई अनेकानेक रसात्मक बरनन 'ढोला' में मिलें हैं।इन वस्तुवरनन की रसात्मकता में लोक-गायकन की भावुकता कौऊ अच्छौ परिचय मिलि जावै है। मंझा कौ देस-निकासौ औरु हिंसक जन्तुअन तें भरे निरजन बन में नल के जनम के प्रसंग में-11 मोतिनी कौ पिरान त्याग औरु नल के विलाप के प्रसंग में-12 नल-औखा के बरनन में -13और नल घोड़ा के मिलन-14 प्रसंग में लोक-गायकनु की मार्मिक अभिव्यक्ति मिलैं हैं।'ढोला' कौ सौन्दर्य-वर्णन परम्परागत है।

5- नल पुराण, पृ -48-49, 6-वही पृ.-70-72, 7-वही पृ -2-5

8- अजयनगर (हस्तलिखित सौं)

9- वही।

10- वही।

11- नल पुराण, पृ. 56-67, 12- दमयन्ती कौ ब्याहु (हस्तलिखित सौं)

13- नल-औखा (हस्तलिखित सौं) 14- घोड़ा खेलना (हस्तलिखित सौं)

'ढोला' की सबते बड़ी विसेसता जि है कि जामें कथा सूत्रन कूँ ऐसे क्रमबद्ध रूप में सुगुम्फित करयौ गयौ है, कि कथा कहूँ ते ऊ टूटी नाईं। रसात्मक और भावात्मक स्थलन की प्रधानता होते भयै कथा-प्रवाह कहूँ अवरुद्ध नाईं है पायौ अपितु रसात्मक बरनन कथा कूँ गतिसील करिवे और सहृदयजन की रागात्मक वृत्ति कूँ उभारिवे में सहायक है कै आए हैं। 'दमयन्ती' के सौन्दर्य-बरनन नें न केवल बाय पाइवे की लालसा जगाई, अपितु वाकी प्रेम-भावना कूँऊ पक्कौ करयौ है।-15 'लाखियावन' की यती के बरनन नें नल के मारग की कठिनाई कूँ ई निरूपित नाईं करयौ अपितु वाके प्रयत्नपक्ष कूँऊ पुस्ट करयौ है।-16 जा तरियाँ सबी वस्तुबरनन मुख्य कथा ते पूरी तरियाँ जुरे हैं और मुख्य कथा कूँ सरस बनाइवे में सहायक भये हैं।

'ढोला' में कार्य की दृष्टि तेंऊ एकरूपता पाई जावै है। जितनौ बड़ौ काजु 'रामचरितमानस' में 'रावन बधु' कौ है, उतनौई बड़ौ काजु 'ढोला' में 'नल की कीरति कौ बिस्तार' है। जा 'कारज' की प्राप्ति के ताईं नल के सबरे प्रयत्न हैं अरु अंत में बू सबरी विघ्न बाधान पै विजय पावतौ भयौ अपने उद्देश्य वे पाइ लेइ है। जाके अतिरिक्त जा कारज कौ प्रभाव नैतिक, सामाजिक अरु धार्मिक ऊ है। जाई प्रभाव कूँ दिखाइवे के लिये 'ढोला' की सबरी घटना नियोजित करी गई हैं। सबरी कथा कौ अनुसीलन अरु परीक्छन करिवे के बाद जि तथ्य स्पस्ट है जाय है कि नल कूँ दयौ गयौ नागानिया कौ सरापु-17 फल की दृष्टि ते जा कथा कौ बीजु है जो क्रमते दमयन्ती ब्याह अरु मोतिनी कौ नल कूँ दयौ गयौ सरापु-18 के रूप में अंकुरित भयौ है अरु धीरे-धीरे एक छोटे बिरछ के रूप में विकसित है गयौ है। नल कौ औखा समाति अरु फिरिते राज्य प्राप्ति तक आनत आनत या बीज कौ पूरौ पूरौ बिकास है जाय है। बाद में कथा 'कारज' की ओर उन्मुख है जाय है अरु नरवर कौ राजु मानक मैदान में नल कूँ फल की प्राप्ति है जाय है। जा तरियाँ कारज संकलन के माध्यम ते 'ढोला' की सबरी कथा एक प्रमुख फल की ओर उन्मुख दिखाई देय है।

ऊपर के विवेचन ते जि तथ्य स्पस्ट है जाय है कि ब्रजकौ "ढोला" एक प्रबन्ध काव्य है अरु यामें महाकाव्य के सबरे गुन पाये जाय हैं।

-हिन्दी विभाग, कुसुमबाई जैन कन्या महाविद्यालय,
भिण्ड (म. प्र.)



15- दमयन्ती कौ ब्याहु (हस्तलिखित प्रति) 16- लाखियावन (हस्तलिखित प्रति)

17- 'तुम है कुमर [illegible] । [illegible] कें मों [illegible] बेटा। मैं [illegible] कौ हेटौ। बुध के [illegible] बेटा। [illegible] ।'-नल पुरान, पृ. 15

18- '[illegible] । [illegible] ।'-दमयन्ती कौ ब्याहु (हस्तलिखित प्रति)

ब्रज लोकगीत : संस्कृति अरु इतिहास

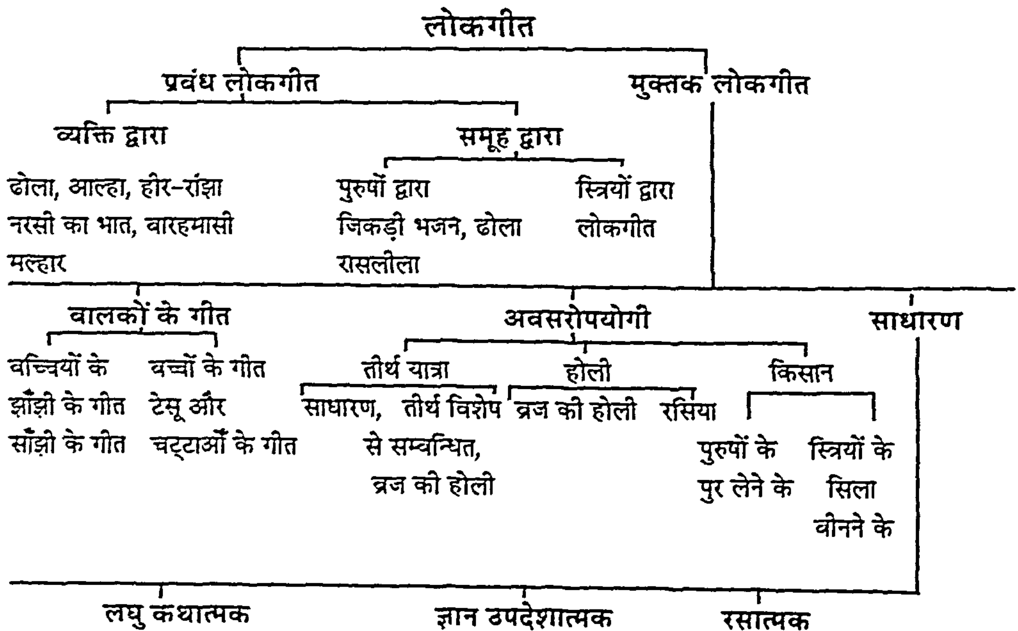
-डॉ. राधेश्याम शर्मा

जनमानस की संवेदना कूँ व्यक्त करिबे कौ सशक्त माध्यम है लोकगीत। जाकी सबसौं बड़ी विसेसता जि है कै सब्द संरचना सौं ज्यादा लय (Tone) कौ महात्तम ज्यादा होय। (1) लोकगीतन के गायक कौ जासौं मनोविनोद हू है जाय। 'लोकगीत' सब्द के तीन अर्थ है सकैं-लोक माँहि प्रचलित गीत, लोक निर्मित गीत अरु लोक विसयक गीत। परि यहाँ पै 'लोक-गीत' सब्द कौ अर्थ लोक विसयक गीत सौं लैबौ ठीक नाँय। जहाँ तलक लोक माँहि प्रचलित गीतन के अर्थ कौ सम्बन्ध है-ऐसे गीतन के द्वै भेद माने जाइ सकैं। अस्थायी रूप सौं प्रचलित अरु स्थायी रूप सौं प्रचलित गीत। अस्थायी रूप ते प्रचलित गीत लोकगीतन की परिभासा मैं नाँय आमें। स्थायी रूप ते प्रचलित गीत लोकगीत माने जाइ सकें। परि तुलसी, सूर अरु कबीर आदि कवीन के भजन स्थायी रूप सौं प्रचलित हैं परि वेऊ 'लोकगीत' नाँय है सकैं। लोकगीत तौ गीतन कौ ऐसौ प्रकार है कै जाय ऐसे व्यक्ति सौं नाँय जोड़ौ जाय सकै जाकी मेधा लोकमानस सौं नाँय जुड़ी होय। साँची बात तौ जि है कै लोकगीतन माँहि रचयिता कौ व्यक्तित्व नाँय होय। जा व्यक्तित्वहीन रचना माँहि सिगरे लोक (समाज) कौ व्यक्तित्व ध्वनित होय अरु लोग वाय अपनी चीज मानिबे लगैं। जि मौखिक परम्परा माँहि आ जावै फिर वामें समै-समै पै परिवर्तन होयौ करैं। जा बारे में लोक साहित्य के मर्मग्य डॉ. सत्येन्द्र नैं लिखौ है-'वह गीत' जो लोक मानस की अभिव्यक्ति होय अथवा जामें लोक-मानसाभास होय तौ बाय लोकगीत मानि सकैं, (2) प्रो. सिजविक नैं लोकगीतन के बारे में लिखौ है-"It is older than literature, older than alphabet. It is lore and belongs to the illeterate." (3) अर्थात लोकगीत तौ वर्णमाला अरु साहित्य सौं ज्यादा पुरानौ है। जि तौ लोक की चीज है अरु समाज विसेस के बिना पढ़े-लिखे लोगन की थाती मानी जावै।

कछु लोकगीतन माँहि लोकवार्ता के तत्त्वन कौ समावेस होतु है, जिनसौं लोकमानस अपने मनोरंजन कौ उपकरन जुटावत है। जाके संग-संग इन लोकगीतन माँहि लोक संस्कृति के तरै-तरै के चरनऊ मिलि जावैं। कछु लोकगीतन माँहि ऐतिहासिक प्रसंगऊ मिलि जात हैं।

जि कहिवे की जरूरत नाँय कै लोकगीत एक आँचर विसेस की थाती मानी जावैं। यहाँ पै हम व्रज आँचर के लोकगीतन तक अपनौ अध्ययन समैटें हैं। 'व्रज' नामु कैसैं पड़ौ है जा पै कछू विचारु करिवौ जरूरी है। संस्कृत में 'व्रज धातु' कौ प्रयोग 'चलिवे' के अर्थ के रूप में होय। जि प्रदेश लीलावतार अरु रसिक सिरोमनि श्री कृष्ण कौ विचरन क्षेत्र हैवे के कारन ज्यादा गतिसील, स्पन्दनसील अरु रौनक वारौ है। यासौं जि आकरसन कौ केन्द्र वनि कैं रहि गयौ है। अत: 'व्रज' अर्थात् चल् वा क्षेत्र कूँ कहौ जाय जो श्री कृष्ण की लीला भूमि है। याही सौं जा क्षेत्र कौ नामु 'व्रज' परि गयौ। डॉ. जय किशन खण्डेलवाल कौ मानिवौ है कै 'व्रज' सव्द कौ प्रयोग गायनि के चरागाह के लिए होवै। श्री कृष्ण कौ गायनि के लिए वहौत प्रेम हौ। श्री कृष्ण जा क्षेत्र माँहि गाय चराइवौ करते वा क्षेत्र कूँ 'व्रज' मानौ जावै।

व्रज लोक साहित्य व्रज लोकगीतन सौं समृद्ध है जामैं विवाद की कोई गुंजाइस नाँय। या कारन व्रज लोकगीतन कौ वर्गीकरन करिवौ कठिन है परि पाठकन कौं ध्यान माँहि रखिकैं वर्गीकरन यहाँ दियौ जाय रह्यौ है। (4)



ऊपरि लिखित वर्गीकरन के अलावा लोकगीतन कौ वर्गीकरन जा तरियौं हू करौ जाय सकै-

लोकगीत (5)

लोक-कला	लोकोपासना	लोक-साहित्य	लोक नाट्य
चौक, भित्तिचित्र, मेंहदी, ललमनिया, होली, टेसू एवं झाँझी, साँझी।	देवी-देवता, बूढ़ौ बाबू, जाहरपीर, अऊत, प्रेत, शीतला देवी, पथवारी के गीत	जिकड़ी,भजन, रसिया, आल्हा, ढोला, मल्हार, होली, बारहमासा, लावनी, जन्म, विवाह और अन्य संस्कारन सौं सम्बन्धित गीत	नौटंकी, स्वांग, रासलीला एवं कठपुतली आदि

श्री भास्कर रामचन्द्र भालेराव नैं लोकगीतन कौ वर्गीकरन वा समै करौ हौ जब वे गीत संकलन करि रहे हे-

लोकगीत

संस्कार विषयक	माहवारी गीत	सामाजिक-ऐतिहासिक
पुत्र जन्म, सोहर, चरुवा, चौक, साध, कौंधनी बांधवे के, मुण्डन, यज्ञोपवीत, टीका, विवाह, द्विरागमन, अन्न-प्राशन, पलने, पत्तल बांधने, समधी-समधिन को गाली, भरनी, मेले के गीत, जन्म-गोठ के गीत	बारहमासा, नौरता, रामनौमी, सावन हिण्डोला, साँझी, झाँझी, कृष्ण-जन्माष्टमी, करवा चौथ, महालक्ष्मी, नौ दुर्गा, गणगौर, कार्तिक-माघ स्नान के गीत, होली, श्रावणी तीज	ढोला, बाबू के गीत, हीरामन, जाहरपीर, गोरा-बादल, राम और केवट आदि के गीत

ब्रज लोकगीतन के इन वर्गीकरनन माँहि डॉ. सत्येन्द्र कौ वर्गीकरन सबसौं अच्छौ वैज्ञानिक मानौ जाय। (6)डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ऊ जा वर्गीकरन सौं सहमत हैं। (7) फिरिऊ, लोकगीतन कौ वर्गीकरन वस्तु, रूप, प्रकृति, लिंग, उपयोगिता, क्षेत्र अरु जातिन के आधार पै करौ जाय सकै। काव्य-रूप के हिसाब सौं लोकगीत-साहित्य कूँ द्वै भागन माँहि बाँटि सकैं-कथा प्रधान अरु विचार प्रधान। दूसरी तरियाँ इनकूँ प्रबंध अरु मुक्तक लोकगीत मानि सकैं। पहले प्रकार के लोकगीतन कौ उपजीव्य तौ पुरान अरु इतिहास रहौ है तथा दूसरे प्रकार के गीत काऊ घटना या विचार विसेस कूँ लैकैं आवैं। जि मानि सकैं कै जेई लोकगीत संस्कृति कूँ अपने संग लैकैं चलैं, जीवित राखैं। इन ब्रज लोकगीतन माँहि ब्रज के मानवन की आदिम मनोवृत्तियाँ, भावनाएँ, हर्स-उल्लास, सोक-विवाह, प्रेम-ईर्सा, भय-आसंका, घृना-ग्लानि, अचरज अरु विसमय, भक्ति-निवृत्ति आदि भाव बड़े सरल अरु रागात्मक रूप में प्रकासित हैवौ करैं हैं।

अब जि देखिवौ जरूरी है कै ब्रज के इन लोकगीतन माँहि इतिहास अरु संस्कृति कहाँ तलक प्रतिफलित भई है। यहाँ संस्कृति कौ मतलब लोक संस्कृति सौं ई मानौ जाय। चूँकि लोक संस्कृति अरु

अभिजात्य संस्कृति सदैव भिन्न होय। (8) डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर' नैं संस्कृति कूँ जीवन जीवे कौ एक तरीका मानौ है। (9) समाज विसेस के संस्कार, रीति रिवाज, लोक-विश्वास, व्रत, त्यौहार, मेले, सकुन-अपसकुन, जादू-टौना, भूत-प्रेतन के प्रति आस्था, देवी-देवतान के प्रति अटूट विस्वास आदि के ताने-बानेन सौं वा समाज की संस्कृति निर्मित होय। ब्रज लोकगीतन माँहि उपर्युक्त संस्कृति के सबई तत्त्व भरे पड़े हैं। जि तौ कहि चुके हैं कै लोकगीतन कौ वर्गीकरन करिबे के अनेक आधार हैं अरु ब्रज लोक साहित्य खूब सम्पन्न है। तरै-तरै के वर्गीकरनन के आधार पै लोकगीत अरु वाके भेद, उपभेदन के आधार पै अलग-अलग उदाहरन दैवौ जगह की कमी के कारन मुनासिव नाँय समझौ अरु संस्कृति के तत्व अरु वाते सम्बन्धित लोकगीतन कौ दैवौ उचित लगौ है। कछु गीत तौ भौतु लम्बे हैं। बिनमें ते कछु अंसु ई दियौ गयौ है।

भारत माँहि सोलह संस्कारन सौं जीवन कौं संस्कारित करिबे कौ आदर्सु अरु आदेस रह्यौ है। जामें कछू संदेह नाँय कै गीत संस्कार के प्रधान अंग हैं। बिनमें ते प्रमुख संस्कार हैं-जनम, विवाह अरु मौत। जब जातक जननी गर्भ में आवतु है तब जि गीत गायौ जाय-

पहलौ महीना जब लागिये, वाकौ फूलु गयौ फल लागिए।
ए बाई दूजौ महीना जब लागिये, राजे तीजौ महीना जब लागिये।
वाकौ खीर खांड मन आइए।
ए बाई पंचयौ महीना जब लागिए, ए वाकूँ कोल के आम मंगाइए।

तत्पश्चात् सोभर, छठी, चरुये धराई अरु साँतिये आदि के लोकगीत नारी गावैं। जच्चा के गीत कौ जि निदर्सन देखिवे लाइक है-

चार चरस पानी के पीए, नौ बोतल सरबत की पी गई'
जच्चा मेरी पीनौं न जानै री।

इतनौ ई नाँय, लापसी, पालनौ, काजल, नारंगफल अरु जनम के सातवें दिना ननद जब जातक के काजैं कुर्त्ता-टोपी लावै तौ एक गीतु गायौ जावै-जगमोहन लुगरा। बाकी कछु पंक्ति एं-

''लाली! बगदौ बगदि घर आउ, जगमोहन लुगरा पहरिए।
लाली पहरि ओढ़ि घर जाउ, तौ मुख भरि असीसउ दीजिए।
भाभी अमरु रहैं तिहारी चूरियाँ अमरु तिहारे बीछिया,
भाभी! जीऔ तिहारे कुमरु कन्हैया।''

जाई तरियाँ विवाह संस्कार सौं सम्बन्धित अनेक लोकगीत ब्रज लोक नारीन सौं सुनिबे कूँ मिलैं। सगाई, पीली-चिट्ठी, लगुन, भात-न्यौतने, हरदहात, रतजगा, तेल, बरनी-बरना ते सम्बन्धित गीत गाये

जावैं। कंगन तौ वर-वधू दौनूँन के हातनि में बाँधौ जावै। कंगन में का-का होवै, जि देखिवे लायक ए-

कम्बर कौ लयौ टूँकु, छानि कौ फूँसु, गिरारे कौ रेतु, अन्न की भुसी, नीम के पत्ता।
रँग्यौ कारौ लत्ता, लोह की कील, भयौ मन ढकना, बान्ध्यौ कुमर के कंकना॥

याई तरियाँ घूरौ पूजन, अछूतौ, बूढ़े बाबू के गीत गाए जावैं। बूढ़ौ बाबू सायद हनुमान कौ प्रतीक ए। लोकगीत की जे पंक्ति देखिवे लायक हैं-

न्यों मति जानें रे स्वामी अन्न अछूतौ, अन्नु सुरैहरी विढ़ारियै।
न्यों मति जानै रे स्वामी पानी अछूतौ, पानी कीरनु विढ़ारियै।

भातु सम्बन्धी जि लोकगीत पढ़िबे लाइक ए जामैं भातु नौतिबे के समै बहिन कहि रई ए-

तेरौ भरोसौ बड़ौ भारी रे मैया के जाये
अपने जीजा कौं कपड़ा तौ लैयौ भैया,
बहना कौं लैयौ कंचन सारी, रे मैया के जाये।

भात लैकें आए भतैया के सुआगत में गविवे वारौ गीत-

रिमझिम वरसत मेह कै मेरे भीजत आमें रे भातई।
ए मेरे छोटे से बन्ना कौ ब्याहु कै वहना नैना भरि कै रे कह रही।
बारौठी अरु बरात के भोजन के समैं 'गारी' गायी जाँय-
गोरे बुलाये कारे आये री बिल्ली, परि कूंइ-कूंइ।
काए कूँ आयौ लजाइबे कूँ सरदारों के द्वार, जिमीदारों के द्वार।

भोजन के समै-

ल्हौरी-ल्हौरी समधिन डोलै पहरि हाथ में चूड़ौ।
हौलैं-हौलैं जैंऔ बराती, फिर परसूंगी चूरौ, जुगति सौं जैंऔ जी।
बहू कौ नचाइवौ, दई देवता कौ सिरानौ, दई-देवता पूजिवे के ऊ लोकगीत गाये जावैं।

मौत के समै गाये जावे वारे गीत ब्रज माँहि नाँय मिलैं अर्थात् मौत संस्कार के गीत नाँय मिलैं। ब्रह्मा और चीन की सीमा पै भचौना गांव में जरूर ये गीत गाये जावैं चौंकि म्हाँपै नर-नारी मानव के जनम पै रोवें कै एक सुद्ध आत्मा यहाँ आयकें फँस गयी अरु बाकी मौत पै प्रसन्न हैकें गीत गावैं जि सोचकें कै बाकौ उद्धार है गयौ। (10) बचे भये तेरह संस्कारन के ऊ गीत गाये जावैं।

सगुन-अपसगुन के हिसाव सौं पानी ते भरौ बासन लैकें सुहागिन कौ आनौ, दही-दूध लैकें आनौ, हरे पेड़ पै सौनचिड़ी कौ चहकिवौ, दायीं ओर गाय आदि कौ आनौ, बछड़ा कूँ दूध पिलावति भई गाय,

जे सब सुभ सगुन माने जावैं। साँप कौ रस्ता काटिवौ, विधवा कौ रीते घड़ा लैकैं निकसिवौ, तेल लैकैं तेली कौ निकसिवौ आदि सब अपसगुन माने जावैं-

अब न्यां सुनि लेउ अरज हमारी, सर्प देवता नैं काटी है अगारी,
विधवा नारि अगारी ते आई, रीते बासन धरि कैं लाई,
सगुन-सगुन पर डारत डेली, तीन कोस पै मिलि गयौ तेली।
मानों मौत सीस पर खेली।

भूत-प्रेत सौं छुटकारौ पाइवे के लिएं थाली बजाई जाय अरु बाके संग गीत गाये जाँय। 'भरनी' गाइकैं साँप कौ विस उतारौ जावै। चारित्रिक आदर्स के हिसाब सौं ब्रज लोकगीतन माँहि विस्वास-घात करिवौ जघन्य अपराध मानौ जाय-

पाँच विसे हारै जो पंच कह्यौ टारै, दस विसे हारै जो प्यासी गाइ बिडारै।
पन्द्रह विसे हारै ज़ो होत कन्याऐ मारै, बीसों विसे हारै जो विस्वासु दैकैं मारै॥

देवी-देवतान ते सम्बन्धित गीतन में देवी की आराधना माँहि लांगुरिया गायौ जाय अरु देवी की स्तुति माँहि जि गीतु गायौ जावै-

आदि की भमानी तेरौ ग्रंथन में परिमाण,
जानि कें अग्यान मोहि हिरदै में दीजौ ग्यान।
ब्रह्मा विस्नु सहसफन कालिका धरत ध्यान,
नाम सरूप संवारौ, तैंनैं सब दिन ते
पन पारौ भगत कौ री।

मेलेन पै गविवे वारे गीतन माँहि जग विख्यात गीतउ ए-

पाँच रुपैया दै दै रे बालम मैं मेला कूँ जाउंगी।
पाँचाना की पाउ जलेबी बैठि सड़क पै खाउंगी।
मेले में मत जाइ मेरी प्यारी बड़े गजब है जाइंगे।
मेला में तौ जुरैं रण्डवा, अधर उठाइ लै जाइंगे।

उपरि लिखित विवेचन सौं जि तौ साफ जाहिर है कै ब्रज लोकसंस्कृति के वाहक जे गीत मुक्तक परम्परा के गीत एं। ब्रज लोकसंस्कृति ते संबंधित औरु निरे गीत यहाँ दै सकैं परि विस्तार भय के कारन ब्रज लोकसंस्कृति विसयक विवेचन कूँ यहीं विराम दै रहे एं।

ब्रज लोकगीतन माँहि अब हम इतिहास खोजिबे की कोसिस करि रहे एं। जि साफ करिबौ जरूरी

है कै पौरानिक कथा इतिहास नाँय है सकैं परि जनमानस सौं इतनी निकटता ते जुड़ि गई हैं कै इतिहास ते ऊ जादा सच लगैं। पौरानिक कथान कूँ लोक गीतन माँहि ऐतिहासिक कथान के रूप में देखौ जावै। प्रबन्ध गीत अरु नाट्य गीतन के जरिए पौरानिक अरु ऐतिहासिक वृतान्तन कूँ ब्रज प्रदेस माँहि प्रकास मिलौ ए। प्रबन्ध गीत तौ व्यक्ति विसेस या समूह गावै परि नाट्य गीत तौ एकु ई मानुस मंच पै प्रस्तुत करै। नाट्य गीतन कौ जन मानस पै जादा प्रभाव पड़ै। ब्रज के प्रबंध गीतन माँहि आल्हा, ढोला, बारहमासी, जिकड़ी, भजन अरु पँवारा आदि कूँ सम्मिलित करि सकैं। इन गीतन माँहि कोई न कोई कहानी होय। सबसौं पैलें हम आल्हा गीत पै बात करिंगे। जा गीत कौ नाम महोबा के निवासी आल्हा के नाम पै पर्‌यौ है। जि गीत वीरकाव्य की कोटि माँहि आवै। आल्हा-ऊदल की वीरता जा गीत माँहि गायी जावै।

आल्हा लोकगीत इतनौ चर्चित है गयौ है कै वीरता कौ बखान न हैवे पै ऊ जाइ आल्हा छंद माँहि गिनौ जाइ। युद्ध कौ विवरन 'आल्हा' छंद माँहि देखिवे लायक है-

चारिन मारै चारि टाप ते, पाँचए मुख तें जाइ चबाइ।
छटये पै तेग चलै आल्हा की, सातयौ मरै धैधकाखाइ।
बोले आल्हा जब ललकारे लाला सुन लै कान लगाइ।
बड़े लड़ैया महोबे बारे, जिनकी मार सहो ना जाइ।।

'आल्हा-ऊदल' के पराक्रम कौ वर्नन हैवे के कारन जाकौ नामु 'आल्ह खण्ड' पर्‌यौ ए। कविवर जगनिक नैं . 1173 ई. के आसपास आल्हा छंद माँहि 'आल्ह खण्ड' लिख्यौ ए, जाकी खूब चर्चा ए। जा बारे में डॉ. योगेन्द्र प्रतापसिंह के विचार जानिवे लायक एं-" जानैं (आल्ह खण्ड) नैं जनता की सोवती भई भावनान कूँ सदैव गौरव ते गरब ते सजीव राखौ ए। आल्ह खण्ड जन समूह की निधि ए।" (11) आल्हा के बाद आवै 'ढोला' प्रबन्ध गीत। 'ढोला' प्रबन्ध गीत कौ वितान भौतु विसाल ए। चिकाड़े, ढोलक अरु मंजीरनु आदि वाद्य यंत्रन पै गावे जावे वारे जा गीत माँहि इतनी कथा हैं कै लगातार पन्द्रह दिनन तक राति में गाइबे पैऊ जाकौ अन्तु नाँय। गाइबे वारौ मुखिया चिकाड़ा बजावतु ए, वाके सहायता करवैया सुरैया कहौ जात है। एक पहरी खतम हैवे पै गवैया थोरौ सौ सुस्तावै अरु [illegible] कूँ चुटकले आदि सुनावै जासौं बिनकौ रस-परिवर्तन है जाइ। नित्त की कथा सुनाइवे कूँ 'मैदान' कहौ जात ब्रज प्रदेस के अलावा पूरे उत्तर प्रदेस माँहि जा प्रबंध लोकगीत में नरवर के राजा नल, ढोला-मारू नल-दमयन्ती अरु रघुवंशीय नल की कथान कूँ गूँथिकैं ऐसौ गायौ जावै कै वार्मैं कोई [illegible] जार्मैं तुकन कौ मोहु जादा ए। जब राजा नल अपनी ननसाल अजैनगर पौंहचौ [illegible] कौ वर्नन जा तरियाँ करैं-

वाग में उठि रही है सुगन्ध कुमरु परसन्द जी ऐसो लागो म्हैरि, केरा पै पका घैरि।
भूख सवु भाजी, जानें करी ए वाग की सैल कुँवरु भयौ राजी।
ताल कौ मोती वरनों नीर, मारै महक उठै खसवोई ए जाकौ सीतल भयौ रे सरीर।

ढोला गीत गवैया वीच-वीच में कवित्त, दोहा आदि छन्दन कौ प्रयोग करैं। जा तरियाँ जा प्रवन्ध गीत माँहि अनेक छंद है सकैं। उदाहरन कूँ एक छंद कवित्त ए-

गोरे-गोरे अंग पै गुमान प्यारे च्यौं करै, रंग तौ पता लौं जाकौ यों ही उड़ि जाइगौ।
धुँआ से हाड़ गोड़ जरत में न लागै देर, नदी के किनारे पेडु कवजू ठहराइगौ।
कंचन सौ सरीर जामें लोह की न लागी कील मोह की नदी में बैठि कव जू इतराइगौ।
कहैं पंडित मुरलीधर गन्दौ ई वह्यौ रे जाइ, ज्वानी के मांस यै कोई कूकरा न खाइयौ॥

'ढोला' पै विचारु करिवे के वाद अव वारहमासी पै विचारु करिवौ जरूरी ए। नाम सौं ई साफ ए कै कथा कूँ वारह महीनान में वाँटिकैं गायौ जाइ। जामें ध्रुव की कथा तौ पौरानिक ए। ध्रुव की तपस्या की कथा कूँ वारहमासी कौ माध्यम वनाइ कैं प्रस्तुत करौ गयौ है। भादौं महीना कौ चित्रन देखिवे लायक है-

महलन करति विलाप ध्रुव की रोवै महतारी (टेक)
भादों रैनि अँधेरी छाई कैसें धीर धरूँ
मोइ दीखै वेटा के विरह में विन ही मौत मरूँ
दरस तू दै मोकूँ छैया,
ऐसें तड़पै मात तेरी, ज्यों विन वछरा गैया,
लगी लौ हृदय में भारी। महलन......
पूस मास जाड़ौ अति भारी वस्त्र न तन माँही
कैसें सोमतु होइगौ मेरौ वेटा वन माँही
नहीं कछु ओढ़नु कूँ लीयौ
करि-करि पिछली याद लाल मेरौ यों ही चल दीयौ
सौत नें करि दीन्ही ख्वारी,
महलन.......

जि वात पैंलें कहि आये हैं कै लोकगीतन माँहि कथ्य सौं लय, धुनि जादा महत्ता राखैं। वारहमासी अपने आपु ई छंद ए, काऊ कथ्य कूँ लैकैं काहू माह के उल्लेख विना चलि सकै। उदाहरन के तौर पै ढोला लोकगीत माँहि नल की नानी अपने जीवन की व्यथा नल के प्रति जा तरियाँ प्रस्तुत करि रही है-

'पँवारे' लोकगीत पै विचारु जरूरी ए। 'पँवारा' ब्रज में मुहावरे के रूप में झगरौ-झंझट के लियें काम में आवै अरु युद्ध कौ परिणाम मानौ जावै। कथा चाहें भलेंई ऐतिहासिक न होय परि वामें कथावस्तु कौ विन्दु ऐतिहासिक जरूरी ए। ब्रज लोकगीतन में 'जगदेव कौ पँवारौ' मिलै। 'रासमाला' के आधार पै जगदेव मालवा के राजा उदयादित्य (1059-87) के सपूत ए। धारा नगरी सौं घरेलू झंझटन के कारन वाहिर चले गये और जिय मानौ जाय कै वे गुजरात के राजा जैसिंह के यहाँ नौकरी करिवे लगे। 18 वरस तक नौकरी करिकें जव वे वापस आये तव विननैं अपनौ पराक्रम दिखायौ। (12) जाई तरियाँ 'होमपाल के पँवारे' कौ उल्लेख मिलै। 'अमर सिंह' कौ ऊ पँवारौ मिलै। अमरसिंह में पहलैं सारदा माँ कूँ स्मरन करौ जाय, फिर उस्ताद की वन्दना करी जाय, ताके वाद पंचपीर अरु सव औलियान कूँ मस्तक झुकायौ जाय। फिर वाद में गाथाकार जि कहै-

'अमरसिंह' नें कियौ पँवारौ, कहौ तौ गाइ सुनाऊँ,
अरु आगे कहै-
कहाँ ते उत्पन्न भई, कहाँ ते भई लड़ाई
दीव सहर उत्पन्न भई, आगरे ते भई लड़ाई। (13)

अव हम नाट्यगीतन माँहि इतिहास अरु पुरान कूँ खोजिवे की कोसिस करिंगे। नाट्य-गीत कछु मानसन के समुदाय द्वारा प्रस्तुत हाँय। वाय मण्डली कहें। अव 'रास मण्डली' सव्द तौ कृष्ण-कन्हैया सम्बन्धी रास तेई सम्वन्धित मानौ जाय। जासौं इन नाट्य मंडलीन कूँ 'स्वाँग मण्डली' कहौ जाय। 'स्वाँग मण्डली' में वाजा, नक्काड़ा, ढोलक आदि कौ प्रयोग करौ जाय। संस्कृत में जिय मानों जाइ कै 'काव्येषु नाटकं रम्यम्' परि नाटकनि में देखिवौ और सुनिवौ दोनों मिलै। नाट्य गीतन माँहि अभिनय, गीत, संवाद सव कछू मिलैं जासौं जनता माँहि जादा मनोरंजन होय। मँहगाई के जमाने में मंडली के दस-पन्द्रह कलाकारन कूँ भोजन कराइवौ मुस्किल होय। सिनेमा, टेलिविजन आदि नैं सस्तौ मनोरंजन दैवौ सुरू करि दयौ हैं यासौं अव नाट्यगीत प्रस्तुत करिवेवारी मंडली एकाध ई दिखाई दे। जामें स्त्रीन कौ अभिनय पुरुष करें। आज ते 30-40 वरस पहलैं नाट्यगीत कछू आदमीन की जीविका कौ साधन वनि गयौ ओ। सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र, भक्त प्रवर मोरध्वज, सत्यवान-सावित्री, भक्त पूरनमल आदि पौरानिक वृतान्तन कूँ इन नाट्य गीतन में लियौ जाय। दर्सकनु के सामई वड़े अच्छे तरीका सौं रखौ जाय। वीच-वीच में हँसी-मजाक की वात ऊ है जाय। जो हँसी ठट्ठा करै वाय कहैं 'मनसुखा'। भक्त अम्वरीश, प्रतापी अभिमन्यु औरु ऐतिहासिक नाट्य गीतन में 'अमर सिंह राठौड़' वूँदी नरेश सम्वन्धी नाट्यगीत प्रसिद्ध है। 'अमरसिंह राठौड़' की कछू पंक्ति देखिवे लायक हैं-

चौं तरफा से तौ लगी गढ़ वूंदी में आगि।
चाकर कौं व्याही गई, अरु फूटे मेरे भागि॥
फूटे मेरे भागि डसै वावुल कौं विसियर कारौ।

ह परै बीजुरी वामन पै मरियौ नाई बजमारौ।
री वो वामन नाईजी जिनन मेरी करी सगाई जी,
सुख कौ रह्यौ न सहारौ,
कौन जनम कौ पाप उदै भयौ। हे जगदीश हमारौ।

जा गीत मैं अनेक छन्दन कौ प्रयोग मिलै-लावनी, दोहा अरु कवित आदि।'सत्य हरिश्चन्द्र' नाट्य-
त की कछूक पंक्ति यहाँ दैवौ जरूरी ए। जामैं राजा हरिश्चन्द्र कौ चरित बड़े उदात्त ढंग सौं प्रस्तुत
कयौ ए। संझा कूँ माली राजा कूँ सूचना देतु ए कै एक जंगली सूअर नैं राजसी बगीचा उजार दयौ ए।
जब वाय रोकिवे की कोसिस करी तौ बानैं माली कूँ ऊ घायल कर दीनौ। खुद राजा सौं अपनी रच्छ
के लिएं कहि रह्यौ ए। वा समै कौ राजा हरिश्चन्द्र कौ जि संवाद देखिवे लायक है-

आनि हुआ संध्या समै अरु जा माली निज धाम।
इस दम जीव सताना अरु महापाप का काम।।
महापाप का काम रोकि रखना गुस्सा भारी को।
वक्त साम के नहीं सताऊँ किसी जीवधारी को।
कि हनि दूँ एक बान से जी
न जिन्दा छोडूँ जान से जी
जो इतना कर न दिखाऊँ,
मुझको है सौगन्ध कि बेटा अपनी माँ का नाऊँ।

अपने सपूत रोहित की लास कूँ लैकैं रानी तारामती मसान पहुँचति ए, वहाँ पै कालू के नौकर के
भेस में राजा हरिश्चन्द्र खुद ई पहरौ दै रहे एं कै कोई बिना आधौ कफ्फन दिये लास कूँ नाँय जराय जाय
कालू के नौकर नैं अपनी खुद की पत्नी अरु मरे भये पूत कूँ अच्छी तरै देखि लियौ परि अपने कर्तव
कौ पालन करत भयौ बानैं आधौ कफ्फन मांगौ। परि आधौ कफ्फन दैवे पै तौ रोहित अधनंगौ है जात
वा वक्त रानी अपने पति के सामई विलापु करति भई कहि रही है-

रानी-बेटे की सूरत को निरख करि प्यार सौं पुचकार लो।
छोनां पिरोना लाल की सूरत को आज निहार लो।
पहला तौ बिछुड़ा मिल गया अरु अब नहीं है मिलन का,
उठ अन्न-जल जग से गया पीतम तुम्हारे ललन का।
राजा- जब तक मैं रहा राजा, तब तक हे सुकुमारि।
रोहित मेरा लाल था, तू अर्धांगिनि नारि।
अब मैं बाप न यह बेटा न तू नारि है हरिश्चन्द्र की।
...से बिकते ही गईं बातें सकल सम्बन्ध की।

विस्तार भय के कारन जि चर्चा यहीं समाप्त करि रहे हैं। इतनौं निवेदन है कै ब्रज के लोकगीतन माँहि संस्कृति अरु इतिहास भरौ पड़ौ ए। विसै तौ इतनौ व्यापक है कै पूरौ सोध प्रबन्ध लिखौ जाय सकै। हौं ऐसौ दावा नाँय करि रह्यौ कै विसै के संग पूरौ न्याव करि सकौ हूँ। गागर माँहि सागर भरिबे की मोमें सम्बाई नाँय।

संदर्भ-.

1. Kenneth Richmond-Poetry and the people-In all folk songs it is a common thing to find that the words are inferior to the tunes and because of this it is often stated that it was the tune which mattered most.
2. डॉ. सत्येन्द्र-लोक साहित्य विज्ञान, पृ.-390
3. ढोला मारू रा दूहा (प्राक्कथन)-नरोत्तम स्वामी
4. डॉ. सत्येन्द्र-लोक साहित्य विज्ञान, पृ-404
5. डॉ. भगवान सहाय पचौरी-ब्रज साहित्य का मूल्यांकन, पृ.-276
6. डॉ. सत्येन्द्र-ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन, पृ.-400-404
7. डॉ. सत्येन्द्र-ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन, पृ.-399
8. डॉ. भगवान सहाय पचौरी-ब्रज साहित्य का मूल्यांकन, पृ.-277
9. डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर'-संस्कृति के चार अध्याय, पृ.-159
10. डॉ. सत्येन्द्र-ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन, पृ.-106
11. हिन्दी साहित्य कोश भाग-2. पृ.-33-34
12. डॉ. सत्येन्द्र-ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन, पृ.-313-14
13. डॉ. सत्येन्द्र-ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन, पृ.-313-14

-राजकीय महाविद्यालय, करौली (राजस्थान)



ब्रजभाषा लोकगीत परम्परा-आन्ध्रवासीन में

-डॉ. राकेश तैलंग

भारतीय संस्कृति कौ मूल आग्रह कह्यौ जाय सकै है वो समाहारमूलक व्यौहार जो देश, जाति, भाषा की सीमान कौ ध्यान न दैकैं बिनमें छिपी अच्छी-अच्छी बातन सौं अपने रूप कौ श्रृंगार करबौ चाहै।

कछू ऐसी ही घटना घटी आज ते लगभग 900 बरस पहलैं जब दक्षिण के आन्ध्र प्रान्त सौं शुद्धाद्वैत दर्शन के आचार्य वल्लभाचार्य कौ प्रत्यावर्तन भयौ उत्तर भारत में ब्रज की ओर। दक्षिण की एक पूरी की पूरी शास्त्रीय परम्परा जामें जीवन के हर मंगल-अमंगल पक्ष कूँ ईश्वरीय अनुग्रह के रूप में शिरोधार्य करबे की बात निहित ही, दक्षिण के सुदूर अंचलन में व्याप्त कैई प्रकार के रीति-रिवाज, खान-पान, भाषा कौ ओज और रहवे, पहनवे, ओढ़वे के अलावा मनुष्य जीवन के सिगरे संस्कारन सौं मनुष्य कूँ संस्कारित करबे वारी सुगन्ध व्याप्त ही अरु एक मैनरिज्म, शास्त्रोक्त विधि, संस्कृत जीवन के आगैं पीछैं लोकजीवन की परोक्ष झलक के बहाने अपनी मूल जातीयता, उत्स सौं जुड़े रहवे की ललक ही- सब कछू ब्रज में आ गयौ।

दक्षिण सौं आई विद्योपजीव या ब्राह्मण समाज की परम्परा नैं अपनी जातीय परम्परा की रक्षा के लिए कोऊ संगठनात्मक प्रयास तौ नहीं करे लेकिन द्वै प्रकार की जीवन शैली में दक्षिण और ब्रज कौ मिलौ-जुलौ एक मीठौ सौ व्यौहार बिनकी एक विशेष पहचान बनी-गोस्वामी वर्ग की आचार्य परम्परा जो पुष्टिमार्गीय पीठन के अधिष्ठाता बने और बिनही के संग-संग अपनो स्वतंत्र वृत्ति सौं गृहस्थ जीवन बितावे वारे दूसरे वे लोग जो आर्थिक दृष्टि सौं यहाँ-वहाँ जीवन की आवश्यकतान कूँ पूरी करबे के ताँईं भागते रहे।

ये दोनों ही प्रकार के जातिवर्ग अपने परिवार-कुटुम्ब में दक्षिण की परम्परा लैकैं ब्रज आए जहाँ

ब्रज की आनन्द उल्लास प्रिय संस्कृति के रंग, वहाँ की उत्सवप्रियता जीवन कूँ एक मनोरथ के रूप में जीवे की इच्छा इनकी संस्कृति में रच बस गई। ये ही सब फिर औरंगजेब के समय माँहि श्रीनाथजी, द्वारकाधीशजी, मथुराधीशजी के स्वरूपन के संग 16वीं सदी के उत्तरार्द्ध में आकें मेवाड़ में बसे। तब यों कहें कि दक्षिण में ब्रज कौ जो पुट मिलौ वामें मेवाड़ की परम्परान कौ हू थोरौ-थोरौ समावेस हैवौ अनिवार्य बनौ।

आज गोस्वामी जी के आचार्य परिवार समेत तैलंग भट्ट वर्ग के अनेक परिवार मथुरा, कामाँ, जयपुर, बीकानेर, चौपासनी, नाथद्वारा, काँकरौली में बसे भए हैं। वे अपने आप कूँ ब्रज के कहवे में गौरव कौ अनुभव करें, राजस्थान कूँ वे जनम और करमभूमि दोनों मानें और इनमें कहूँ गहरे में दक्षिण भारत के रीति व्यौहार हू बीज बने बिखरे परे हैं जिनकी खबर विनें हू नाँय। इन तीनूँ संस्कृतिन के रंग सौं रँगे भए हैं, इनके परिवारन में समय-समय पै बहू-बेटिन द्वारा गावे जावे वारे ब्रजगीत।

ये गीत मुख्यत: ब्रजराज कृष्ण के जीवन प्रसंगन कूँ अपने पारिवारिक प्रसंग में लावे की भावना सौं जुरे हैं। बालक के जनम के बाद छटी के दिन दूध खाजा के बीच जब लाला कृष्ण के जनम की बधाई बटें तौ 'बिरज कौ कान्हा अपने घर आयौ, मंगल छायौ' की अभिव्यक्ति होइ। आज हू इन शुभ गीतन कूँ इन परिवारन में 'चानन के गीत' (जैसौ कि कह्यौ गयौ है या शब्द कौ मूल 'चरणु' है जो तेलगु में आनन्द या शुभ अवसर कूँ इंगित करै है) कह्यौ जाय।

ब्याह-जनेऊ में कृष्ण यजुर्वेद पद्धति के ठेठ मंत्रोक्त परम्परा के सिगरे रिवाजन के संग-संग ब्रजभाव कौ आनन्द अनुभव कियौ जा सकै है-बन्ना-बन्नी वारे गीतन में। इन गीतन में जहाँ एक ओर बन्ना-बन्नी के फूलन के ऐसे श्रृंगार कौ वर्नन है जो दक्षिण भारत की विवाह सज्जा कूँ आँखन के आगें लाय दे है, वहाँ इनके बीच विशुद्ध लोक शैली में बन्ना और बन्नी के बीच आँखिन के कोरन सौं एक दूसरे कूँ सन्देस निवेदन करवे कौ हू बड़ौ बारीक वर्नन होय है-'बन्नी मेरी मिश्री की डली, निहारै बन्ना बाकूँ खड़ौ खड़ौ, बन्ना मेरौ रहै वेली की घड़ी, निहारै बन्नी खड़ी खड़ी।' इन पंक्तियन में 'वेली की घड़ी' शब्द खबर नहीं का है। लगै ऐसौ है कै वेली शब्द वेलिनाडु शब्द कौ अपभ्रष्ट रूप है जो दक्षि...त्य इन परिवारन कौ मूल उद्गम देश है। आन्ध्र में 'वेलि' ब्राह्मण के वा समुदाय कूँ कहैं जो वेदपाठी हैं और नाडु कौ मतलब है, देश।

इन ब्याह प्रस्तावन में अलग -अलग प्रसंगन पै छोटे गणेश स्थापना, बड़े गणेश, वृद्धि पठौनी, नागवल्ली (विदा), समध मिलाई, मधु पर्क आदि नामन सौं विवाह की शुभकामना भाव सौं जुरे भए गीत गाइवे की परम्परा है जाके व्यापक अनुशीलन की जरूरत है।

समय के संग ये गीत फिल्मी तर्जन पै 'आगरे का ताजमहल लस्कर का किला' जैसे हल्के-फुल्के

गीतन के रूप में परिणत है रहे हैं। वीडीओ रील की चकाचौंध में विवाह, छठी, गंगा पूजा, चरूआ आदि गीत धीरे-धीरे फिल्मी गीतन के संग मिक्स हौते जा रहे हैं। फिरि हू कबहूँ-कबहूँ जब ये गीत कानन में पड़ें तौ इनकौ ऑरिजिन ढूँढ़वे की इच्छा है जाय। शब्द नैं कितनी लम्बी यात्रा तय करी है- दक्षिण सौं ब्रज और ब्रज सौं राजस्थान, शुद्धाद्वैत दर्शन कौ स्वरूप ब्रज में जा भोग, राग और श्रृंगार सौं वलयित करवे कौ काम कियौ तैलंग भट्ट विट्ठलनाथजी नैं वो ही आज या जाति के हर कर्म में कहूँ न कहूँ रचौ बसौ है। या रचावट बसावट में अब कितनौ दक्षिण रहौ, कितनौ ब्रज और कितनौ राजस्थानी- ये तौ सुधी शोधकर्त्तान के सोचिवे कौ काम है।

-प्रधानाचार्य

राजकीय सीनियर माध्यमिक विद्यालय, राजसमंद, (राजस्थान)



मेवाड़ माँहि गविवे वारे ब्रज लोकगीत

-श्री दुर्गाशंकर यादव 'मधु'

या मेवाड़ भूमि आड़ावल की गोद में, जहाँ श्रीकृष्ण लीला के तीरथ राय सागर की पाल पै, प्रभु द्वारकाधीश, काँकरोली अरु श्रीनाथजी नाथद्वारा विराजमान हैं, ऐसे व्रजधाम आँचल में वल्लभ सम्प्रदाय की महर ते, लीला धाम के नित नये उत्सव होयौ करें, जिनकौ भक्तजन दर्शन कर अपनौ जीवन सफल वनावें।

धर्म रक्षार्थ अरु औरंगजेव के आतंक ते वचवे की खातिर उत्तर प्रदेस व्रजभूमि के गोकुल, मथुरा, वृंदावन आदि गाँवन ते अनेकानेक आयवे वारी जातिन में, कछू रूपन में या मेवाड़ आँचल में यादव समाज के वहुतेक नरनारी हू वसे भये हैं जिनकी व्रज भाषा की ही खास पहचान है।

आज हू इनके परिवार समाज में प्रभु श्रीकृष्ण के मुखारविंद तैं वोली जावे वारी भाषा ही अमरता लिये भए हैं।

या समाज में व्याह-काज तीज-त्यौहारन में व्रजभाषा ही सिरमौर है।

व्याह में गणपति वंदना या तरियाँ सौं है-

महाराज गजानन आजइयो
मेरे मंगलाचार करा जइयो। महा.....

यही नहीं पहलें जव तीन्-तीन दिना तक वरात वेटीवारे के यहाँ ठहरती तव श्रीकृष्ण लीला कौ प्रसंग रुकमणि मंगल गायकें कलाकारन ते विवाह जैसे मांगलिक काम कूँ सफल मानते-जाकौ उदाहरण, मेरौ आँखन देख्यौ अरु कानन सुन्यों प्रसंग या तरियाँ सौं है-

शिशुपाल की वरात अपने पूरे ठाठ-पाट ते रुकमणि जी ए व्याहवे आय गई है-पर रुकमणिजी की

लौ तौ प्रभु श्रीकृष्ण वर के ताँई लग रही है। महलन में विप्र बुलाय कैं पाती लिख रही है-

बोली मंदरी बानी पाती लिख रही रुकमन रानी,
विप्र महलन में बुलाए जी
सिंह की सिकार प्रभु स्यार कैसें लिये जाय,
नहीं आओगे तौ मरूँगी जहर खाय।
देवकी के लाल तुम बिन रुकमन तजत है प्राण,
जसोदा के लाल, तुम बिन रुकमन तजत है प्राण॥

या तरियाँ सौं पूरी लीला गाई जावै औरु सरस्वती के भात की पातल कलाकारन कूँ दैकैं अपनौ काज सफल करतें।

ब्याह ते पहलें लड़की कौ पिता जब वर ढूँढवे ताईं जावै वो भाव या गीत की पंक्ति ते मिलै-

वर ढूंढन वाके बाबुल चाले
मामल पै छाय गई उदासी बरनी कूँ वर कैसे मिलेंगे।
बरनी मेरी गेंदा-चमेली बरनी कूँ वर कैसे मिलेंगे....

याही तरिया सौं, लरिका के ब्याह में बरना गायौ जाय वौ या तरियाँ सौं है-

बरना के सासरे ते चिट्ठी जो आई-2
बाँचो-बाँचो गिरधर लाल चिट्ठी सासरे ते आई
बरना के सासरे ते मेंहदी जो आई-2
राचो-राचो गिरधर लाल मेंहदी सासरे ते आई।

बइयर बानी बरना-बरनी लम्बी टेर ते झोरी दै-दै कै गायबे लगैं हैं। देव पूजन में धरती के देवता भोमिया कौ गीत हू गायौ जाय औरु धूप लगै, जैसें-

भोमिया तो सौवे महलन में वाय कौन जगावै जाय
ऐसौ बलधारी जोधा लाड़लौ जी-2
कै तौ जगावै वाकी गोरी जालम दे
कै जगावै वाकी माय।।
ऐसौ बलधारी....

बरात आयवे के पहलें भैया कौ मान रखवे खातिर बहना मायरो पहरै वाय भात बोलैं। वे भात के गीत या तरियाँ सौं हैं जैसें-

मेरे लछमन बीर भात घनेरौ लइयो
मेरे श्रवन बीर भात घनेरौ लइयो॥

–

मत बरसै इन्दर लाल मेरौ रतन भतईया भींजै

–

भैया लै-लै रस की झनकार।
राजा की रोरी मेरौ भातइया।
भैया पहलें बड़े ससुर पहराय,
ससुर के संग सास पहराय।। राजा....

समय के फेर ते काऊ कारन भैया ना आ सकै या देर ते पहुँचै तौ ससुराल पक्ष के बहन ते तानाकसी करें। वा भाव कौ एक गीत जैसें-

बहुअल तेरौ ऐसौ नकीलो बीर,
भात क्यों ना लैकें आयौ री।
गोरी तेरौ ऐसौ नकीलो बीर।
भात क्यों ना लैकें आयौरी।
जी! मेरे बाबुल गये परदेस
मायल की सरदा नाँय जी
जी! मेरौ बीरा थानेदार
भावज की चलता नाँय जी॥ तेरौ.....

ऐसें ही आरती उतारें लड़का या लड़की की शादी में, वाय ब्रजभाषा में झारे झमके बोलें-

झारे झमकेन बरसैगौ मेह
झमकारे ना मांगर बाजने
वाकी भुआ करेंगी, आरती
तुम बैठौ लाड़ लड़ेऊ चौक......

बरात कूँ जिमावे बखत जौनार गाई जाय, जामें लड़की बारे की तरफ सौं विनम्रता कौ भाव जगै, औरु भारत की गौरव-गाथा की झलकी सुनवे कूँ मिलै जैसें-

...आ जनक दईए जौनार,
...जन आए हमारे द्वार।
...रीबी मेरी हरे-हरे लाचारी मेरी सहाय करियो।

...शादी के राग रंग बहुतेरे हैं। रात जागरण में लम्बे-लम्बे गीत व प्रभाती, साँझ लड़ी समय-समय ...ाई जाँय। जामें प्राकृतिक वरनन समायौ भयौ है अरु प्रकृति के आनंद के संग ही जीवन कौ आनंद ...भ होय। ऐसें ही बेटी की विदाई करते समय गीत गायौ जाए-जाकौ भाव या तरियाँ सौं है-जा विरियाँ ...रह कौ वातावरन है जाए-

बाबुल अब की घड़ी मोय राखिले
मायल अब की घड़ी मोय राखिले।
धीयर नौ रे महीना राखी पेट में
धीयर अब मोपै राखी न जाय
दूल्है असवार बराती ठाड़े खेत में
लाड़ो अब मोपै राखी न जाय।

राम-राम के गीत ते बरात कूँ विदा करौ जाय-जैसें-

साजन राम-राम ते हेत हमें कछु चइए हूँ नाँय
एक पाँव दो पाँव समदी राम राम।

ब्याह में गारी गाई जाय जाकौ गीत या प्रकार सौं है। इन मीठी गारिन कौ कोई बुरौ ना मान सकै-

ये हरि ते गावैं गारी री जनकपुर की नारी,
इन गारिन कौ बुरौ मत मानो, कोई सास कोऊ सारी री
जनकपुर की नारी.......

या तरह सौं ब्याह के औरु गीत गाए जाएँ, जाकी छोटी-मोटी किताब बन सकै। थोड़े में खास... खास बानगी ही लई गई है।

या तरियाँ सौं विवाह इत्यादि के सांस्कृतिक कामन के अलावा ऊ बारह महीना तक के तीज-त्यौह... के मौके-मौके पै भाव भरे गीत गाए जायें। जैसें दीपावली पूजन पै, गोवर्धन पूजा करते समय पूज... गीत गायौ जाय-

गोर्धन जी के खेत में हो काना,
गाय चरावै नंदलाल।
मेरौ मन हर लियो हो,

कानां नटवर नंद किसोर।
काहे की तेरी बाँसुरी हो,
काना काए के मौंचंग।
हरे बाँस की बाँसुरी हो,
राधे रूपे के मौंचंग॥
मेरौ मन हर लियो हो काना........

श्रावन महीना आवे के पहलें, नीम की निबौरी पकवे लगें तब गीत गायौ जाय-

पकी नीम की निबौरी
सावन बेगो अइयो रे॥

–

पिया साड़ी छपवाय दै मूँगे मोल की,
जापै अगल-बगल दादुर मोर,
घूँघट पै माना गूजरी॥

–

अंबुआ की डार पकर, गोरीधन क्यूँ खड़ी,
का तेरौ पीयर दूर कहा घर सास लड़ी।
ना मेरौ पीयर दूर ना रे घर सास लड़ी,
मेरे पिया गये परदेस अंदेसे में खड़ी॥

या तरियाँ सौं पावस ऋतु में या हरियाले खुशहाल वातावरण में अनेकानेक गीत गाये जाँय।

नव रात्रि के मौके पै माता जी के गीत गाये जाँय, लाँगुर हूँ गावैं जैसें-

ऊँचे भवन पै मैया बैठी जालम दे।
जिन नैं मेरे कारज सारे हो माय।
दूध कौ दूध मैया पानी कौ पानी,
बोलत अमृत बानी हो माय॥

याही तरह सौं लाँगुर कितेकऊ तरियाँ सौं गायौ जाय-भाव विह्वल हैकैं बइयर बानी नाचती हू जाँय औरु गावैं जैसें-

कैसें आयौ महल जनाने में बताय दै लाँगुरिया
मेरे ससुर की जुड़ै कचहरी

वहीं बुलाय लूँगी तोय
हाथ हथकड़ी पामन बेड़ी
मजा चखाय दूँगी तोय॥ कैसें.....

गत लोग नवरात्रि में माता जी कौ जागरण करैं तब सब देवतान कूँ सुमरैं। पीरजी कूँ याद करें जैसें-

बाबा मेरौ मेंड़ी बैठ्यौ, मुजरौ लेय,
पीर मेरौ मेंड़ी बैठ्यौ, मुजरौ लेय,
कित्ती कोस तेरे दिल्ली आगरे, कित्ती कोस अजमेर।। बाबा .....
साठ कोस तेरे दिल्ली आगरे, अस्सी कोस अजमेर॥ बाबा......
साम्प्रदाइकता कौ मेल मिलाप ऐसे गीतन ते जाहिर होय।

याही तरियाँ सौं भरपूर मधु मास में फागुन में रसिया गाये जाँय-

राजा चलौ ना बिरज में होरी ए,
कै मन घोरी कस्तूरी, कै मन घोरी गुलाल,
नौ मन घोरी कस्तूरी, दस मन भई गुलाल।
मैं रसिया नैं रंग में बोरी रे।। राजा.......

फागुन के मौके पै अनेकानेक श्रृंगार अरु रसिया गाये जाँय जैसें-

आज बिरज में होरी रे रसिया
होरी रे रसिया बरजोरी रे रसिया।
कौन-गाँव के कुँवर कन्हैया।
कौन गाँव राधा गोरी रे रसिया।। आज.....

विली काजर सारें, वा काजर कौ गीत, जैसें......

मेरी अँगिया के बीच, रतन डिबिया रे-2
ढोला के दै तो चटक सुरमा सारूँ रसिया
सारूँ रसिया रे घुटाऊँ रसिया-ढोला.....

याही तरियाँ स्थानीय वातावरण कौ ऊ प्रभाव कितनेन पै परै -

मेरे सलुआ के बीच पीयर घहरो रे
हट मत करियो री ननदिया पीयर तेरौ री
मेरे सागर को पार झाँकी मंदिर की-2
ठंडी आवै ढोला लहर समन्दर की।

याही तरह सौं विरछन के महत्व कौ गीत युवती गावैं जैसें-

वारे रसिया अंगना में, लीमरली लगाय दीज्यो
या लीमरली की शोभा जब लागै
याकी गहरी-गहरी छैंया होय। बारे रसिया......
ब्रज भाषा में युवक प्रौढ़ भजन गार्मे, जैसें-
भंवरा बन के मजा उड़ाय लै,
गेंदा बड़ौ हजारी फूल॥
बड़ौ हजारी फूल, गेंदा

—

करनी कर पार उतर जायगौ, करनीकर.......
आकासन तक, सीढ़ी बनी है, सिढ़ियन-सिढ़ियन चढ़ जायगौ, करनीकर..........

भजन

मेरे सतगुरु दइए बताय
दलाली दल्लालन की
हीरा पर्यौ बजार में रे रेतन में लुढ़काय,
मूरख ठोकर दै गए रे,कोऊ चातुर नैं लियौ है उठाय।। दलाली............

—

बारे जोबना तेरे रहे ते मेरौ मान दगा मत दीज्यो।
तू है तौ गोरी लगै सुहानी, रसवन्ती मनुहार॥ दगा.......

प्रभाती कौ गीत-

उठौ हो सुहागल नारी झार डारौ अँगना
झार डारौ अँगना बुहार डारौ अँगना।
पथ के पथिक चालैं पंछी चालैं चुगना॥

या तरियाँ सौं ब्रज भाषा लोक संस्कृति के जीवन में समायी भई है औरु ये ब्रजराज के रास कं तरियाँ सौं ही अमरता प्राप्त करै है।

-काँकरोली (राजस्थान)

☐

ख्याल-लोकगीत : एक झलक

-डा. डी.एल. शर्मा

ईसा ते कोई एक हजारवें साल के पाछैं तुर्की-भाषी तुर्कन नैं भारत हिया पंच-नद-प्रदेश पै अपनौ अधिकार स्थापित कर लीनौ। उननें छः सात सौ सालन तक राज करते-करते खुद अपने आपकूं और संगई अपनी भाषा अरु संस्कृति कूं भारतीय संस्कृति एवं भाषान के संग या प्रकार सौं मिश्रित कर दीनौं कै कहूँ-कहूँ तौ बिनकौं अलग-अलग पहचानवौ हू कठिन है जाय।

गजनी, गौर और मुसलमान बादशाह अरु भारत में मुगल सासन की नींम डारबे बारे बाबर की भाषा तुर्की ही हती। इस्लाम धरम और ईरानी सभ्यता के प्रभाव के कारन उत्तर भारत में मुसलमानी साहित्य की भाषा फारसी है गई और धरम की भाषा अरबी रही। इन दोनूँ भाषान के शब्दन नैं हिन्दी-साहित्य के महल कौ निरमान करबे में बड़ौ ही महत्वपूर्ण काम कीनौ। हमारे साहित्य के संगई जे हमारे जन-जीवन मेंऊ रमि रहे हैं और हिरदे के भावन कूँ व्यक्त करबे के काजैं काम में आवैं। इनई शब्दन में ते अरबी भाषा कौ एक शब्द है-''ख्याल।''

'ख्याल' अनेक रूपन में हमारे सामईं आवै है। ख्याल आवैं, जावैं, चलै, जमै, बिगड़ै, बनै, उतरै, रहै और न जानै कौन-कौन रूपन में हमकूं दीखै। या ख्याल कौ लगाव भाव, बिचार, मनोवृत्ति, स्मृति आदि ते मानौ जाय जो काऊ मनोवैज्ञानिक की विवेचना कौ विषय होय। इहाँ तौ हम लोकगीतन के रूप में प्रचलित ख्याल की झलक प्रस्तुत करिंगे।

लोकगीतन के विवेचन और न्यारी-न्यारी छाँट करिबे के काजैं बड़े-बड़े अधिकारी विद्वानन नैं अपने श्रम और शक्ति कौ खूब उपयोग कीनौ है। बिनमें डॉ. सत्येन्द्र, श्री रामनरेश त्रिपाठी, डॉ. श्याम परमार, डॉ. कृष्ण बल्देव उपाध्याय, श्री सूर्यकरण पारीक आदि के नाम लिये जा सकैं। इहाँ हम डॉ. सत्येन्द्र की लोकगीतन कौं दई भयी परिभाषा ते पूरी तरियाँ सहमत हैं जाके अनुसार-

"लोकगीत वह गीत है जो लोक मानस की अभिव्यक्ति हो अथवा जिसमें लोकमानसाभास भी हो।"

'ख्याल' लोकगीत कूँ डॉ. सत्येन्द्र नैं ग्रामीण मुक्तक लोकगीतन में रसिया, होरी आदि के संग तथा साधारन लोकगीतन में नागरिक ख्याल, स्वाँग के संग राख्यौ है। हमारौ अभिप्राय यहाँ पै खासतौर ते ग्रामीण मुक्तक लोकगीतन सौं ही हतै, जो राजस्थान के करौली, भरतपुर, हिण्डौन, दौसा आदि ठौरन के ओर-पास के गामन में अरु कहूँ-कहूँ कस्बान तक में गाये जामैं। इनकूँ ख्याल (हेला) के नाम तेऊ पुकारौ जाय।

'ख्याल' की 'तुर्रा' और 'कलंगी' दो न्यारी न्यारी शैली होंय, जिनमें शिव कूँ मानवे वारे ख्यालबाज 'तुर्रा' शैली कूँ और शक्ति कूँ मानवे वारे ख्यालवाज 'कलंगी' शैली कूँ अपनावें। ये 'ख्याल' करौली आँचर में खासतौर ते प्रचलित हतैं। इनकौ वाद्य 'ढफ' होय। जवकि और स्थानन पै 'ख्यालन' कौ वाद्य 'नगाड़ौ' (ब्रजभाषा-भाषी जायै बम्ब कहैं) होय। डॉ. सत्येन्द्र नैं ख्यालन के काजैं वाद्य ढफ, वेला अरु हारमोनियम मानौ है। परि हमारे विवेच्य ख्यालन में मुख्य वाद्य नगाड़ौ है। संभव होय कै वर्गीकरन करिवे के बखत डा. साहव की निगाहन में या आँचर के ये 'ख्याल' नाँय आये होंय कै बिननैं 'ख्यालन' कूँ तुर्रा, कलंगी या काऊ और सीमा तक सीमित कर दीनौं होय। इहाँ हमारौ तुर्रा और कलंगी की और शैलीन ते कोऊ प्रयोजन नाँय।

ऊमनैं 'ख्याल' के संग 'हेला' शब्द कौ उल्लेख कीनौ। 'हेला' संस्कृत कौ तत्सम शब्द है, जाकौ सम्बन्ध नायक ते मिलन के समै नायिका की विनोद-सूचक क्रीड़ा की मुद्रा ते अथवा हाव-भावन के एक प्रकार ते है। या दृष्टि ते 'ख्याल' लोकगीतन में प्रेम-क्रीड़ा या श्रृंगार कौ प्राधान्य रहनौ चहिए। किन्तु ऐसौ नाँय होय। फिर जो जनता अरबी फारसी के प्रभाव ते संस्कृत कूँ भूलती जाय रही होय वाकूँ अरबी शब्द 'ख्याल' के संग संस्कृत के 'हेला' शब्द कौ जोरिवौ जँचै नाँय। तवई तौ या हेला कौ सम्बन्ध बोलचाल की भाषा में "हल्ला" चल निकसौ। हल्ला कौ अर्थ होय हाँक-पुकार या शोरगुल। साँची पूछौ तौ जिही अरथ इन गीतन की विशेषता कौ द्योतक है। या कारन ते ई इन्हें 'हेला' के 'ख्याल' कौ नाम दीनौं, क्योंकि इनके गायबे में एड़ी चोटीन कौ पसीना एक है जाय और इनकूँ चिल्लाइ कैं ही गायौ जाय। धीरें-धीरें याके सरूप मेंऊ परिवर्तन है रह्यौ है।

लोकगीतन में टेक, तोड़, भरती, मोड़ आदि कौ प्रमुख स्थान होय। 'ख्याल' हू इनते ही पूर्णता कूँ प्राप्त करै। 'ख्याल' कौ जनम कब भयौ, याकी परम्परा कब ते चालू भई या विषै में कछू नाँय कहौ जा सकै। हाँ, पिछली कैई सदीन ते इनकूँ जन-मानस कूँ आनन्द-सागर में डुबायबे कौ श्रेय दियौ जा सकै। यदि हम 'ख्याल' शब्द कूँ गौर सौं देखें तौ याकौ प्रचलन मुसलमानन के भारत में आयबे के पाछैं ही भयौ होगौ। ऐसौ अनुमान होय कै 'ख्याल' लोकगीतन कौ विशेष प्रचार बादशाह अकबर के

काल में मुगलन की भाषा अरु बिनकी संस्कृति के भारतीय जन-मानस में एकमेक है जावे के ही भयौ होयगौ।

'ख्याल' कौ खिलाड़ी नगाड़े कौ बादन करतौ भयौ जब अपनी मीठी-मीठी बानी ते वायु मण्डल गुंजाय रहौ होय, ता समय सुनवैयान कौ मन, मोरन की नाँई नाचिबे लग जाय और वेऊ वा गवैया के संग-संग अपनौ सुर मिलायबे कूँ उत्कंठित है जाँय। इन गीतन के गायबे ते पहलेंई चारों दिसान कौ वातावरन बड़ौ मनमोहक है जाय। सुनवैया आनन्द सौं झूम उठें। फिर रह-रह कैं वू वातावरन कबहूँ शान्त है जाय तौ कबहूँ उत्तेजना भरौ बन जाय। ऐसौ लगै मानौ मद की सरिता लहराय रही होय और अपनौ पूरौ प्रभाव दिखाय रही होय।

इन लोकगीतन ते भारत के जन-जन के हिरदे माँहि समाये भये, संगीत, साहित्य और कलान सौं गहरी अरु विशिष्ट अभिरुचि कौ पतौ चलै है। वह बिना पूँछ-सींग के पशु की भाँति साहित्य, कला अरु संगीत ते विहीन नाँय जैसौ कि कछू सयाने और चतुर लोग गामवारेन कूँ समझवे की भूल करौ करैं।

इन लोकगीतन की विषयवस्तु महाभारत, रामायण अरु न्यारी-न्यारी पुराण कथान सौं लई जाय। भारत कौ लोकमानस अति प्राचीन काल तेई इन परम पावन ग्रन्थ-सागरन में ते अपने गीतन की कथनी ढूँढ़तौ भयौ अपने भाव और भाषा के परिधान पहरामतौ रह्यौ है। इन गीतन के माध्यम ते करुण, शृंगार, वीर और शांत आदि अनेक रसन की सृष्टि भई है पर करुण रस की धारा ही अधिक प्रबल रूप ते प्रवाहित भयी है। जे गीत गज, द्रौपदी, सरवन कुमार आदि की आर्त-पुकार ते भरे हैं। याही कारन ते इनकूँ लोकभाषा में ''करुना के गीत'' कहौ जाय।

गज-मोक्ष की कथा और गज की करुन पुकार एक अति प्रसिद्ध प्रसंग मानौ जाय। या प्रसंग के बेर-बेर बरनन करिबे ते भक्तन के हिये में सान्त्वना अरु आशा कौ संचार होय अरु अपनौ-उद्धार की प्रेरना कूँ बड़ौ सहारौ मिलै। गज-मोक्ष कूँ कथवे वारे एक ख्याल की नीचे लिखी पंक्ति देखवे हैं-

ए गज टेरत-टेरत हारी जी सुन म्हारी
पधारो क्यों ना गिरधारी।
तिलभर सूँड़ रही जल ऊपर
टेक-तिल भर सूँड़ ....
संकट पड़ रह्यौ भारी.........

महाभारत युद्ध के बीच ई एक पक्षी टिटहरी (लोकभाषा में टीटोड़ी या भारई) के अन्ड की कथा लोक-गायक या तर्रियाँ ते गावै-

ए तुम बिन कौन तौ हरैगौ रे, विपति विहारी
टेक–ए विपति विहारी.........
भारई करै पुकार, करुना सुन जो कृष्ण मुरारी
मेरे बच्चान के प्रान, अब तौ आन बचा भगवान
देजौ टीटोड़ी पै ध्यान मैं तौ कह हारी।

पक्षी की करुन पुकार कूँ लोकगीतकार नैं कितेक सरलता, सहृदयता अरु मार्मिकता ते व्यक्त कीनौ है। जा प्रकार सौं लड़ाई में लगे कौरव–पाण्डवन की सेनान के बीच में बिना धनी–धोरी पड़े अन्डान की रक्षा भगवान नैं करी ताकौ स्मरन करकैं लोक कवि कछु औरहू भगतन की कथान कौ बरनन करतौ भयौ तुलसी अरु सूर के सुर में सुर मिलातौ भयौ कहै है–

तुमनें ही तौ उबारे गजराज, जल डूबत अरजी कर दई।
तुमनें द्रौपदी लज्या राखी, सब जग दै रह्यौ याकी साखी॥
बाहु दुशासन की थाकी, सारी बढ़ी भारी।
वस्त्र रूप धरि लियौ श्री कृष्ण मुरारी॥

अनेक ख्यालन में महाभारत ते पांडवन की जुआ में हारबे की, अज्ञातवास की अरु युद्ध ते जुड़ी अन्य अनेक कथान कूँ ग्रहन कियौ गयौ है। याही प्रकार सौं रामायन ते सरवन कुमार, राम–वन गमन, विश्वामित्र यज्ञ, केवट, शबरी, सुग्रीव, अशोक वाटिका–विध्वंस, अहिल्या कौ उद्धार आदि अनेक प्रसंगन कूँ लियौ गयौ है। विस्तार भय ते बिन सबन की चरचा करिबौ संभव नाँय।

रसराज श्रृंगार कूँ इन लोकगीतन में उचित स्थान मिलौ है। श्रृंगार के दोनूँ पक्ष संयोग अरु वियोगन की झाँकी इन ख्यालन में देखबे के काजैं मिलै। इनमें सीधे–साँचे नायक–नायिकान के संयोग–वियोगन के मन हरबे वारे बरनन के संगई–संग, उषा–अनिरुद्ध, गोपी–कृष्ण, पूरनमल–फूलनदे आदि प्रेम–कथान में संयोग के संग वियोग कौ अधिक निखरौ रूप देखौ जा सकै। ऊषा–अनिरुद्ध की प्रसिद्ध प्रेम–कथा तौ पहलेंई सूफ़ी कविन नैं लिख दई हती। वाही भाव–धारा कूँ ख्यालन में देखकैं ऐसौ लगै कै इन ख्यालबाजन की दृष्टि बड़ी दूर–दूर ते कथानक ढूँढ़ कैं लावै।

श्रृंगार की एक मधुरिम झाँकी वा गीत में दीखै है जामैं एक प्रिया अपने प्रियतम सौं अभिसार करनौ चाहवै पर वाके सोवे की ठौर अरु वाके बीच परिवार के लोग सोय रहे हैं, तौ वू विचारी विवस है जाय। संगई चंदा कौ प्रकास चारौं दिसान में बिखर रह्यौ है जिहू बड़ी बाधा हतै। कहूँ अँधेरौ होतौ तौ अटारी चढ़िकैं चली जाती। जा कारन वू अपनी वा विषम स्थिति कौ बरनन या प्रकार सौं करै है–

ए चन्दा छिप क्यों न जावैरे, कारी सी बदरिया में?

...र में सखी कहवै-

चन्दा देखि कैं छिपैगौ री, आली अर्घ दैलै आँगन में।

यहाँ सखी नैं चन्दा के छिपवे कौ उपाय अर्घ दैवौ बताकैं बड़ी बढ़िया युक्ति बताई कै चन्दा लज्जित कैं छिप जायगौ। नायिका कौ सौन्दर्य चन्दा कूँ हीन बना देय ऐसी काव्य-रूढ़ि प्रचलित है, याकौ प्रयोग श्री मैथिलीशरण गुप्त नैं 'पञ्चवटी' काव्य में सीता-सौन्दर्य-बरनन में या प्रकार ते कीनौ है-

'वह मुख देख पांडु सा पड़कर,
गया चन्द्र पश्चिम की ओर।'

याही ख्याल में आगे चलकैं काव्यन में प्रसिद्ध उपमानन के माध्यम ते यौवन-बसन्त ते भरी बा... नवोढ़ा नायिका के रूप-सौन्दर्य की छटा या प्रकार सौं बिखेरी गई है-

रथ-पथ छदनन पै सवार, करते विहँस भ्रमर गुंजार
झुक-झुक परत लता औ डार, तोसौं लिपटन में।

-

नाभी मरस निहार, सप्तऋषि कामातुर तारागन में।

-

चोटी नागिनयान, छटा पै हरपै विद्युत मन में।

'ख्यालन' में वीर-रस कौ परिपाक हू भली-भाँति भयौ है। महाभारत के अनेकन युद्ध-प्रसंग... आल्हा-ऊदल आदि कौ कथानक ओज-गुण ते भरौ भयौ है, जामैं भाव प्रमुख होय और शब्द गौ... है जाँय। जब श्रृंगार पै वीरता की जीत दिखाई जाय तौ गीत औरहू सुन्दर बन जाय। उदाहरन के ... एक आपसी संबाद ते युक्त 'ख्याल' दैखौ जा सकै जामैं एक वीर की प्रेयसी अपने पति कूँ अपने यौ... बसंत ते भरी पूरी शरीर-वाटिका कौ लालच दिखायकैं युद्ध में जावे ते रोकवौ चाहै पर वीर पति... भूमि जावौ ही सही समझै-

स्त्री-

पहले जोवन जंग मचाऔ, पीछे दरबार में जाऔ।
अब मोहि हँसि कै कंठ लगाऔ, जाऔ परभात में।
जाऔ परभात में............(टेक)
ऋतु पै पके हैं नींबू, नारंगी, अनार

मत जाऔ! मानों कहन आधी रात है।
अरे हे रे! जोवन लहर-लहर लहराय, लूटौ सेजन पै
सेजन पै........................(टेक)

वीर पुरुष-

अब तौ सुन ले मेरी प्यारी, क्यों करती है मेरी ख्वारी
तू है रजपूतों की नारी, डरपौ रे अब दिल में।
पहले बादशाह को मारूँ, फिर मुगलन कूँ पकरि पछारूँ
पीछे सेज तेरी पग धारूँ, नारी, हे! सुन प्यारी!

ख्यालन में अन्य साहित्यिक प्रवृत्ति हू पाई जाँय। खुसरो अरु कबीर जैसी बूझ पहेली, या कहमुकरी बड़ी चकित करिवे वारी हैं। खेलबे की चौपड़ कूँ लक्ष्य करकैं बाकूँ एक अनौखी नारी कौ स्वरूप प्रदान करकैं एक रहस्य ते भरी अटपटी पहेली सी बनाकैं कही है-

एक नारि हमनें जो देखी, मुख से बोलै सीस बिना।
टूँड़ी तीन बनी कन्या के सोलह सीस बिचारी के।
एक-एक मुख में नौ-नौ जिह्वा पुरुष नहीं बा नारी के।

पौराणिक प्रसंगन कूँ लैकैं अनेक रहस्यन भरे गीत लिखे गये हैं, जिन में निरगुन-पन्थीन की जिज्ञासा प्रकट भयी है। आदिशक्ति सृष्टि के सृजन कौ केन्द्र-बिन्दु हतै अरु सगरौ संसार वाही कौ रूप प्रसार हतै। नीचे एक 'ख्याल' में जी बिचार या भाव कूँ प्रकट करै-

अरे हे रे, चतुर नारि कैसी बनि आई।
अरे, धरती कौ यानैं कियौ घाँघरौ, अम्बर फरिया पहर्याई।
शेष नाग कौ नाड़ौ कीन्यौ, इन्दर बिछुआ पहर्याई।
अजी ए, अजी हो ....(टेक)
अरे, महादेव कौ सुरमा सार्यौ ब्रह्मा बैंदी दै लाई
मैं तोय पूछूँ सुघर खिलारी, चतुर नारि कहाँ ते आई?

या प्रकार ते सैकड़ान प्रश्न ख्यालबाजन नें पुरानन में ते लिए जो बिनकी रहस्यमय प्रवृत्ति कूँ बतावैं। ख्यालन में ऋतु-बरनन, नगर बरनन अरु समसामयिक प्रसंगन मैंऊ घनी मात्रा में लोकगीत मिलैं हैं।

'ख्याल' लोकगीतन में लोकभाषा कौ ही प्रयोग भयौ है। इन गीतन में बहुतेरे शब्द और क्रिया ठेठ बोलचाल की भाषा के लीने हैं जैसें-दीजौ, याकौ, चक्काबू (चक्रव्यूह) भयौ, समन्दर, तिरलोकी,

रभात, सेज, जमुना आदि। इनमें तद्‌भव शब्द जादा हैं। बोलबे की सुविधा के कार्जे संयुक्त शब्द तोड़-मरोड़ कैं काम में लीने हैं। प्राय: दन्त्य 'स' कौ प्रयोग होय। भाषा में प्रसाद, माधुर्य अरु ओज गुण मिलैं।

साहित्य अरु लोकशैली के अनेक छन्द ख्यालन में मिलैं। अनेक अलंकार स्वाभाविक रूप मैं आ गये हैं।

संक्षेप में कहैं तौ ख्यालन कौ ख्याल हम सबन के ख्यालन में रमि जायगौ अरु नयी कली सौं निकस कै साहित्यवाटिका कूँ सुरभित करैगौ।

-प्राचार्य
उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान
गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर



घर में सुंदर नारि बलम तोहि परनारी भावै

–श्री मोहन स्वरूप भाटिया

ब्रज भूमि में काऊ गाँम या नगर माँहिं हैकें निकसि जाऔ। संयोग सौं कहूँ कुआ पूजन है रह्यौ होय या ब्याह–बरौंद, बैयरवानी लुचाय लुचाय कैं या गीत कूँ गामती मिलिंगी– 'घर में सुन्दर नारि बलम तोहि परनारी भावै'। जि गीत न तौ राधाकृष्ण की लीलान सौं संबंधित है, न जि देवी–देवतान की स्तुति है। या गीत में सम्पन्न हैवे वारे उत्सव के अनुरूप भाव हू नाँय।

या गीत की तौ लीला ही विचित्र है। जि गीत अपने अन्तर माँहिं न जानैं कौन–कौन सी व्यथा–कथान कूँ सँजोए भए है। पतौ नहीं यामैं इतिहास कौ कौन सौ पन्ना बिना पढ़े रह गयौ है। न जानैं कौन से युग कौ स्वर मुखरित हैकें मौन पड़ौ है? पतौ नहीं या गीत में नारी की कौनसी अन्तर्भावना उमड़–घुमड़ रही है, या मानव प्रकृति कौ एक सदा–सदा कौ सत्य चुनौती दै रह्यौ है? नृतत्व विज्ञान के तांई जहाँ या गीत में कैई अंसन में एक अनुत्तरित सवाल है वहां भावुक और संवेदनशील मनन के ताँई रस की सृष्टि होय और चंचल–चपल उच्छृंखल मनन में उत्तेजना की विचार सृष्टि।

गीत कौ अपनौ साहित्यिक वैभव हू है। प्रतीक सौं प्रारम्भ भयौ है जि गीत। पहली पंक्ति है–

चिड़ी तोय चामरिया भावै।
घर में सुन्दर नारि बलम तोहि परनारी भावै॥

चिरैया कूँ चाँवर अच्छे लगनौ स्वाभाविक है। पर, घर में सुन्दर नारि होय तौ पति कूँ दूसरी स्त्री अच्छी लगनौ का स्वाभाविक है? स्वाभाविक नाँय होय तौऊ जि अस्वाभाविकता जहाँ एक ओर पुरुष वृत्ति की परिचायक है, वहाँ दूसरी ओर यामें युग–युग सौं कुंठित नारी कौ करुण क्रन्दन हू है। महापंडित राहुल सांकृत्यायन नैं मेरे टेप रिकार्डर पै जि गीत सुनौ तौ एक संग कह उठे, "इस गीत की केवल एक

उसके रचयिता ने एक बहुत बड़ा सूत्र दे दिया है। एक प्रश्न दे दिया है, उत्तर के लिए, एक [illegible] दे दी है, समाधान के लिए। "

पूरौ गीत याही तरियाँ की दो-दो पंकिन में गुँथकैं माला बनतौ चलौ जाय। प्रतीक कौ सहारौ लैकैं [illegible] की अगली पंक्तीन में मान्सन द्वारा महिलान के प्रति करे जावे वारे अत्याचारन कौ [illegible] और [illegible] पूरौ पुरुष जाति के झूठे और नारि जाति के सच्चे हैवे की बात कितने कम सब्दन में कितनी सफलता [illegible] कही है-

मटर पै अधर चलै चाकी, मटर पै अधर चलै चाकी।
लोग बड़े बदमास, लुगाई घर-घर की साँची॥

मटर के दानेन पै चक्की चलवे की बात कहकैं यह बात कही है कै जैसें मटर के दाने पिस जाँय ऐसैं ही नारी मान्स के अत्याचारन सौं पिसै। लोग बहुत बुरे होंय जब कै लुगाई साँच बोलै, साँचे आचरण करैं।

पति-पीड़ा सौं पीड़ित नारी की वेदना अगली पंक्तीन में देखौ-

हर्यौ नगीना आरसी सो कोई उँगरी में दुख देइ।
ऐसे के पालैं परी सो कोई हँसै न उत्तर देइ॥

जाकौ मतलब है जैसैं हरौ नगीना आरसी में जड़ौ भयौ उँगरिया कूँ कष्ट दे [illegible] ही पति पीड़ा देत। ऐसे अरसिक पति के संग निर्वाह कैसें होय जो न हँसै और पूछवे पै न कोऊ उत्तर देइ।

छै छल्ला छै आरसी सो कोई छल्लन भरी परात।
इक छल्ला के कारनें सो मैंने छोड़े माई बाप॥

यामें पति के संग जीवन बितावे की बात कही है। पीहर में तौ छै छल्ला, छै आरसी और छल्लन [illegible] परात भरी भई यानी आभूषनन कौ ढेर हौ पर पति के एक छल्ला के लाँई पति के संग [illegible] बितावे कूँ माई-बाप तक छोड़ दिए।

या दरियाँ गीत की इन दो पंक्तीन में पति के प्रति अगाध प्रेम [illegible] है। [illegible] सर्वस्व न्यौछावर करवे [illegible] जब अपने पति कूँ [illegible] उतनी महत्व है, स्वाभाविक है। [illegible] [illegible] नारि क्यों [illegible] मन की [illegible] विश्लेषन करवे की [illegible]

चिह्न उनके बिना उत्तर खड़ी रहैंगी। जो हो, सो हो, पर आजहू ब्रज के गिरारेन में, घरन में ब्रज वनितान को जि चुनौती भरी स्वर गूंज रह्यौ है-

घर में सुन्दर नारि बलम तोहि परनारी भावै।

-ज्ञानदीप
डेम्पियर नगर, मथुरा।



ब्रज कौ झूलना साहित्य

-श्री गोपाल प्रसाद मुद्गल

बरसत है रस माधुरी, ब्रज अंचल के मांहिं।
याही सौं या धरा पै, ब्रज सौ दूसर नांहिं।
ब्रज सौ दूसर नांहिं, गीत गावत नर नारी।
लोकगीत मन हरत, लगत मिसरी सी गारी।
सुनि रसियन की तान, सबन के तन-मन हरसत।
साज बाज बिन अजहु, झूलना में रस बरसत॥

झूलना में रस बरसै। झूलना मीठौ लगै। बिना साज बाज के हू झूलना मन हरले। झूलना सुनिवे कूँ लोग खिंचे चले आवैं। मन ते आवैं। झूलनान के बीच रात-रात रहैं। झूलनान में एकम एक है जावैं।

झूलना गायक बड़े उतार-चढ़ाव ते गावैं। गामते-गामते वे मीठे-मीठे झोटा से दैं। श्रोतान्नैं अपनी मीठी-मीठी गायकी सौं झोटा दै दैकें झुला से दैं। याही सौं या छन्द कौ नाम झूलना परौ है।

श्री रामनारायण अग्रवाल कौ माननौ है कै यह छन्द पिंगल के त्रोटक छन्द के निकट है। पर, झूलना के अन्त्यानुप्रास की छटा में जो सुन्दरता है बु त्रोटक छन्द में नाँय मिलै। या गायकी के प्रारम्भ में एजो और अन्त में जी हू लगायकैं गावैं।

झूलना गायकी यों तौ अन्तरप्रान्तीय विधा रही है फिरऊ ब्रजप्रदेश में याकी तूती सबके सिर पै चढ़कैं बोली है। झूलना की भापा, अलंकार और कलात्मक गुम्फन सदा गौरव सौं मंडित रह्यौ है। याही सौं याकूँ साहित्यिक विधा कौ गौरव मिलौ है।

झूलना छंद के कई रंगत और रूप होंय। याके प्रत्येक चरण में अन्त्यानुप्रास एकई पंक्ति में जोड़े

जुड़िबे सौं या छन्द कौ सौन्दर्य औरहु बढ़ जाय।

झूलनाकारन कौ कहनौ है कै 250 बरस पहलैं या गायकी की बड़ी धूम ही। सन् 1940 तक यह गायकी चलती रही। पहलैं झूलनान के अखाड़े हौते। ब्रज के गाँव-गाँव में झूलना गाए जाते। खुर्जा, हाथरस, कामां, डीग, भरतपुर, मथुरा, कोसी, होडल, बंचारी, आगरा, सौंख तौ या समै झूलनान के गढ़ हे। इन ठौरन पै झूलना दंगल याही तरियाँ हौते जैसें रसिया और भजन-चिकड़ान के दंगल हौंय।

या छन्द के साहित्य नैं इतनी लोकप्रियता पाई कै हाथरस के स्वांग कलाकार राय मुरलीधर जी नैं या छन्द कौ प्रयोग अपने स्वाँगन में बहुतायत सौं कियौ। वा समै बहरतवील कौ पतौ नाहीं। बहरतवील के आते ही स्वांगन नैं तौ झूलना छन्दन नैं अपने हाथ-पाँव समेट लिए।

स्वांगन में झूलना छन्द कौ प्रयोग उस्ताद इन्दरमन जी नैं कियौ। इन्दरमन पं. नथाराम गौड़ के दादागुरु हे। इन्दरमनजी कूँ पं. नथाराम गौड़ के गुरु चिरंजीलाल लैकैं आए। यहाँ बिनैं झूलनान के स्वांग रचे। उस्ताद इन्दरमनजी पढ़े लिखे नाँए। वे बोलते जाते और बिनके चेला उतारते जाते। इन्दरमनजी हाथरस ज्यादा दिन नहीं रहे। वे चिरंजीलाल कूँ आसीस दैकैं चले गए। झूलना लेखन कौ सुर मंदौ परि गयौ। या तरियाँ या साहित्य कौ सृजन कम है गयौ।

हाँ, स्वांगन में झूलनान कौ प्रयोग दो तरियाँ सौं लाभदायक रह्यौ। एक तौ कथानकन की सोभा बढ़ी। दूसरे कथानकन कूँ आगैं बढ़ाबे की एक कलात्मक विधा हाथ लगी। इन झूलनान में ब्रज कौ प्राकृतिक सौन्दर्य, सामाजिक रीति-रिवाज, आमोद-प्रमोद, रहन-सहन, पौराणिक आख्यान और ब्रज रज सौं लैकैं स्थानस्थान की ललित लीलान कौ समावेस प्रमुख रूप सौं रह्यौ। इनमें जैसौ कलात्मक स्वरूप दिखाई दै वैसौ अन्यत्र दुर्लभ है। दो चार दिना पहलैं भाई भगवानदास बघेल झूलना गायक कामां वारेन सौं बातचीत में एक झूलना हाथ लगौ। झूलना में अनुप्रास की छटा और कलात्मकता देखौ-

आलू, अलौचा, अंजीर, अदरक, अखरोट, अरबी अमरूद खाओ।
आड़ू, आमड़े, अनार अन्नास, अंगूर अच्छे अकल लड़ाओ।
अनी-अनी की अलग-अलग दर, आला आचार्य अमरस बनाओ।
अगर अदा अपनी आन रखो, अठंग ऐते अमल में लाओ।

या झूलना में 'अठंग' शब्द अमल में लाबे की कही है। यानी हर पंक्ति में आठ बेर 'अ' वर्न के आ जाइबे की बात बताई है। झूलना लिखिबे के ताईं एक पद्धति, रीति और रचना-प्रक्रिया के दर्सन करए हैं।

कामां में स्व. गोपाल प्रसाद पुजारी झूलनान के बारे में बतायौ करै हे कै सन् 1940 के आसपास तक झूलनान के दंगल हौते रहे पर अब तौ खतम से है गए हैं। बिनैं पुराने दिनान के किस्सा सुनाए।

कबहू-कबहू बरातन में जनवासे में ही झूलना शुरू है जाते। दंगल रुप जाते। हल्ला मच जातौ। दूर-दूर ते झूलनाकार बस्तान नैं लैकें आ जमते। जब तक दंगल नहीं सुरझतौ तब तानूं बरात बिदा नहीं हौंती।

झूलना साहित्य के रचयिता स्व. श्री पन्नीलाल जी के सहित्य कौ अवलोकन करबे कौ औसर मिलौ। पहलैं दंगलन में अपनौ परिचय दैंते। बिनके झूलना में बिनकौ परिचै देखौ-

बरसाने नंद गाँव के निकट कामवन धाम।
तहाँ दास की झोंपड़ी, मुरसद सालगराम।
मुरसद सालगराम, के सागिर्द हैं लड़ाके सभी,
सामलिया सुखनंदन करते कविताई का काम हैं।
लाला चिरंजीलालजी दिमाग ते निकारें चाल,
बिनकी रंगत सुनकें, नुगरे चक्कर खांय तमाम हैं।
जुगल गुपाल पन्नालाल हैं इष्ट मित्र,
हरफन में हुशियार, नुकता चीनी में सरनाम हैं।
द्विज परसादी लाल जय गोपाल राधेश्याम कहैं,
जनता को जय हिन्द, सब गुनियों को राम-राम है।

बड़ी विनम्रता सौं बात शुरू हौंती पर ठन जाती तौ यहाँ तक कह बैठते-

मिसरी कौ ढेला हूँ नहीं, पी जाय जिसको घोल जी।
जितने खिलाड़ी हैं जमा, सब खेल लो दिल खोल जी।

झूलना साहित्य में राधाकृष्ण विषयक झूलनान की अधिकता दिखाई परै। नंद के आंगन में आनंद की झाँकी देखौ-

नंदराय के द्वार, बंदी बोलैं जै-जैकार,
ताजा मालन के भंडार पूरी भंडारी कूँ मालकी.
गोपी लाईं चाव, नाचैं दिखा हाव अरु भाव,
बाजे बजत अनूप घोर संखन की अरु घड़ियाल की।
कंसा कूँ ना चैन, चिंता रहवै है दिन रैन,
लीनी पूतना बुलाय, दहसत गालिब काल कराल की।
पन्नी है परसंद, भजौ सभी जै गोविंद
भए नंद के आनंद, बोलौ जै कन्हैया लाल की।।

स्व. श्री पन्नीलाल कौ 'राधाबाग' एक अद्भुत रचना है जामें स्यामसुन्दर मालिन कौ रूप धरकें

बरसाने राधाबाग जानैं। मालिन के रूप में स्यामसुन्दर कौ सिंगार देखौ-

शैर-

ब्रज में नित नई लीला करैं भगवान मुरारी हैं
दंत धावन धरौ मिस्सी, सुगन्धी केस डारी है।
उबटना मलकैं तन धोया, किए असनान पुन उज्वल।
आइना सामने धरकर, माँग मोहन संवारी है।

झूलना-

मोहन रचिपचि माँग सँवारी, चोटी गुह लई पटिया पारी,
घिस मलियागिर अंग लगायौ, फरजी तिल कपोल दरसायौ।
चरनन में दै आड़ महावर, म्हेंदी रचा लई दोऊ कर,
जवाहरात के डिब्बा खोले, कंचन जेवर जड़े अमोले।
धारन सीसफूल कर लीनौ, हिंगुर माँग मध्य भर लीनौ,
चौतौ फगुआ चमक सितारे, चन्द्रानन में ललित मरोर है।
श्रवन झुमका काँटे वारी, बिन्दी भाल लाल उनहारी,
नासा में बेसर झलकारी, झोखा लै रह्यौ कोर हजारी।
गल बैजंती माल छिपाऊ, हँसुली हार हमेल जड़ाऊ,
चम्पकली जौमाला पहरी, हिरदै भूषण की छवि गहरी।
टिस्सी, तिमनी, सीतारामी, झुक हियरा कूँ देय सलामी,
दोउ दृग अंजन रेख सिंगारे, चितवत ही चित लेते चोर हैं।
बनमाली डाली लई, बनमाली की नारि।
चाली राधा बाग को, फूल लैन सरकार।।

झूलना साहित्य सिंगार तकई सीमित नाँय रह्यौ। स्यामास्याम की ही चरचा नाएं। यामें आधुनिक समस्यान कौ हू जिकर है। वर्गभेद की झाँकी देखौ-

किसी को कुछ भी न दे सुनाई, किसी को टैलीफून मिलै।
किसी को मिलती नहीं फितूरी, किसी को रेशम ऊन मिलै।
किसी को मिलती हलुआ पूरी, किसी को माँगा चून मिलै।
किसी को मिलता कलंक टीका, किसी को यशी प्रसून मिलै।

ब्रज के उत्सव, पर्व, त्यौहारन कौ बरनन झूलनान में खूब मिलैं। जीवन के सुख-दुख, हर्ष-विषाद

और आकर्षण के ताने-बाने झूलनान में भरे परे हैं। भाव पक्ष के संग कला पक्ष कौ हू संयोग अद्भुत है। रचना की मधुराई अरु अलंकारन की छटा कौ रूप.देखौ,नगन कौ एक रूप निहारौ-

कल कल कलक कलक कह कह, कलश कनक कर धरत अचक।
कट कर कटक कसक कस कस कर, कटक कटक कर करत लचक।

या तरियाँ झूलना साहित्य में भाव पक्ष और कला पक्ष कौ सुन्दर समन्वय दिखाई दे। झूलना के ऐसे महत्वपूर्ण साहित्य कौ पुस्तक रूपन में प्रकाशन कम है पायौ है। यही सोच कौ विषय है। जो झूलना साहित्य जन-जन के हृदय कौ कंठहार हौ, अब अंतिम सांस गिन रह्यौ है। जरूरत है ऐसे अमोल झूलना साहित्य के संरक्षण की।

-पांडेय मौहल्ला, डीग
(भरतपुर)

☐

रसियान की सृष्टि और लोककथा दृष्टि

- श्री गोपाल प्रसाद मुद्‌गल

रसिया होरी कौ प्रमुख लोकगीत है। डा. धीरेन्द्र वर्मा नैं या लोकगीत के बारे में लिखौ है, ''संगीतज्ञों की धारणा के अनुसार रसिया ध्रुपद घराने की चीज है। रसिया ब्रज के लोकगीतों में अपने वैशिष्ट्य के कारण प्रसिद्ध और प्रिय है, जो सभी अवसरों पर अपना प्रभाव डालने की क्षमता रखता है। रसिया को ध्रुपद शैली का लोक प्रचलित, शास्त्रीय संस्कार कहा जा सकता है।''

हिन्दुस्तानी संगीत जो देव ब्रजभाषा और स्वामी हरिदास सौं प्राप्त भयौ, बाकौ छेत्र बहुत कछू रसिया के लोक और शास्त्रीय दोनों स्वरूपन कौ है। आइने-अकबरी में जा ध्रुपद कौ बरनन है वह स्यात रसिया सौं सम्बन्धित हौ।

रसिया गायिकी कौ प्रचलन कब भयौ? याके बारे में पक्कौ पतौ नाएँ। विद्वानन कौ विचार है कै 16 वीं सदी में भक्ति संगीत याकी पृष्ठ भूमि रही है। मंदिरन में भक्तिपरक पद गाए जावै हे। बिन भावन कूँ रसिया गायिकी में लै लियौ गयौ। श्री रामनारायण अग्रवाल कौ कहनौ है कै आजहु नंदगांव और बरसाने में अप्टछाप के कविन के पद रसिया के रूप में गाए जावैं हैं। हमारे लोकगायकन नैं बिन पदन की परम्परागत धुनन कूँ बदल कैं रसिया की धुनन में ढाल लियौ। उदाहरण कूँ सूरदास कौ एक पद है, '' मैया मोरी मैं नहीं माखन खायौ।'' या पद कूँ हमारे लोकगायकन नैं रसिया की धुन में ढाल कैं यों गायौ है- '' अरी मैं नहीं माखन खायौ, सो मैया मोरी मैं नहीं माखन खायौ।''

श्री रामनारायण के कथनानुसार भक्त कविन के पद लोक धुनन में ढले, और रसिया गायिकी प्रारम्भ भई। इनसौं पहलैं कोऊ रसिया नाँय मिलै। बिन्नैं बतायौ है कै रसिया कौ उदय भक्त कविन की बानी सौं 16वीं सदी के पूर्वार्ध्द में भयौ। गोस्वामी विट्‌ठलनाथजी नैं सम्वत 1602 में अप्टछाप की स्थापना करी। अष्टछाप की मूल गायिकी ध्रुपद की परम्परा सौं उद्‌भूत ही। वाही कूँ लोकधुन सौं जोड़ कैं नाद

प्रधान की ठौर शब्द प्रधान बनाकैं यह विशिष्ट परम्परा पनपी। यासौं यह साफ है जाय कै रसिया गायिकी परम्परा ध्रुवपद गायिकी सौं ही निकसी। ब्रज संगीत की लोकधारा कौ एक सतत प्रवहमान रसमय प्रवाह है।

रसिया गायिकी कौ उद्‌गम नंदगांव-बरसाने कूँ मानौं जाय। नन्दगांव और बरसाने में हू पहल कहाँ भई याकौं निरनय परम्परा सौं कियौ जाय सकै। आजहू फागुन सुदी नौमी कूँ नंदगांव में छैल छबीले रसिया पहल करैं। बिनकौ उत्तर बरसाने वारे दैं। बरसाने की लठामार होरी पै नंदगांव वारेन कौ पहलौ पड़ाव प्रिया कुंड पै होय। वहीं सौं बिनके रसियान कौ रंग बरसवौ प्रारम्भ होय। बिनकौ सबसौं पहलौ रसिया है-

" रसिया आयौ तेरे द्वार खबर करियौ"

नंदगांव वारे पीरी पिछौरी धार कैं तिलक छापे लगाय कैं आजहु श्रीजी के मंदिर की ओर लम्बे-लम्बे हाथ करकैं अलाप भरैं-

" दरसन दै तनिक अटा में ते दरसन दै"

बरसानेवारे, जवाब में रसिया ही कहैं। यौं तरियौं नंदगांव और बरसाने रसिया गायिकी के उद्‌गम हैं। आसपास के गांव हू रसिया गायिकी सौं अछूते नाँय रहे। रसिया गायिकी परम्परा संकेत, गाजीपुर, कमई, करहला, गोवरधन, कामां, डीग, हौंती, भरतपुर पहुँची। भरतपुर सौं यह धारा हाथरस गई। हाथरस में लल्लू भजना के अखाड़े-गायक आजहु गावैं हैं-

" लल्लू भजना रसिया लाए जमुना पार ते"

या बात की पुष्टि खिच्चू आटेवारे नैं एक इन्टरव्यू में मोय बताई, " क्वार के दसहरा में भरतपुर में राजा की सवारी निकसै ही। वामैं सब जाति के भाँड़ इकट्ठे हौते। वे गोल बनाय कैं रसिया गाते।" खिच्चू आटेवारे नैं भरतपुर के कछू रसियान की बानगी दई। एक रसिया के बोल यौं दिए-

" कदम तरे आ जइयो कटीले काजरवारी"

हाथरस के पास अलीगढ़ माँहि रसियान की खूब धूम मची। यहाँ रसियान के अखाड़े बन गए। रसियान के दंगल हैवे लगे। यहाँ रसिया तासो, हारमोनियम, शहनाई और नफीरी के संग गाइवे वारे युवकन कूँ लहँगा-फरिया पहराय कैं नचावे लगे। यहाँ सौं यह परिपाटी कासगंज पहुंची। यहाँ के रसियान में कासगंजी बहर दिखाई दई।

रसिया गायिकी धीरैं-धीरैं अनेकन धुनन में चल पड़ी। कछु खास-खास रंगत या तरियौं हैं-कर्नगढ़ा रंगत, जिकड़ी रंगत, सौकड़िया रंगत, रंगत हैंकरा आदि। नई नई रंगतन में बिसै हू नए-नए भरबे लगे। लोकजीवन कौ स्यातई कोई बिसै रह्यौ होय जो रसिया में नहीं समायौ होय।

लोक कथान कूँ रसियान में प्रमुख स्थान मिलौ। प्रारम्भ में रसियान में राधाकृष्ण की लीलान कूँ समाहित करौ गयौ। कृष्ण के जन्म सौं ही बाल लीला प्रारम्भ भई।" श्री कृष्ण चन्द्र भगवान, लियौ जनम जेल दरम्यान, सो गए पहरिन वारे ज्वान, तारे टूट गए" जैसे रसिया कथा कूँ लैकैं चल पड़े। श्री कृष्ण की माटी लीला कौ रसिया खूब प्रसिद्ध है–

जसोदा सुन माई, तेरे लाला नैं ब्रजरज खाई
जसोदा सुन माई॥
इतनी सी माटी कौ डेलौ,
तुरत स्याम नैं मुख में मेलौ,
जानैं गटक-गटक गटकाई, जसोदा सुन माई........
चौं लाला तैनैं खाई माटी,
माखन कूँ कबहूँ नाँय नाटी,
जसुदा धमकावै लै साँटी,
याहे नैंक सरम नाँय आई, जसोदा सुन माई.........

याकौ उत्तर जो स्याम नैं दियौ, वाकूँ रसिया में यों पिरोयौ गयौ है–

मारै मत मइया वचन भरवाय लै
सौंह गंगा की खवाय लै, चाहे जमुना की खवाय लै।

या तरियाँ सवाल-जवावन में रसिया में कथानक आगैं बढ़ै। याही तरियाँ गौचारन लीला, नागनाथ लीला, दान लीला, माखन लीला, चीरहरन लीला, वंशी लीला, आरसी लीला, चन्द्रावलि लीला, सुनारी लीला, रंगरेजन लीला, मालिन लीला, जोगिन लीला आदि के कथानक रसियान में भरे पड़े हैं। लिलहारी लीला तौ आजहू सबन के होठन पै नाचै–

श्री राधा सौं मिलन कौ, कीयौ कृष्ण विचार।
वंसी मुकुट छिपाय कैं, धरौ रूप लिलहार॥
बन गए नन्दलाल लिलहार, लीला गुदवाय लेऔ प्यारी।
लहँगा पहर ओढ़ि सिर सारी,
अँगिया पहरी जापै जड़ी किनारी,
सीस पै सीस फूल बैना, लगाय लियौ काजर दोऊ नैना
पहर लियौ नख-सिख सौं गहना,
नख-सिख गहनौ पहर कैं, कर सोलह सिंगार।
बलिहारी नँद नंद की, बन गए नर सौं नारि॥

बन गए नर सौं नारि, कि झोली कंधा पै डारी। बन गए..........
धरी कन्था झोली गठरी।
गैल बरसाने की पकरी।
महल वृषभान चले आए, नहीं पहचान कोऊ पाए,
स्याम मन में अति हरसाए
महल श्री वृषभान के, दई आवाज लगाय।
नंदगाम लिलहार मैं, कोऊ लीला लेहु गुदाय॥
लीला लेहु गुदाय, अरी मैं हूँ गोदन हारी॥ बन गए...............
राधिका सुन लिलहारिन बैन।
लगी ललिता सौं ऐसे कहन।
बुलाऔ लिलहारिन कूँ जाय, यापै लीला लऊँ गुदवाय।
बिसाखा लाई तुरत बुलाय,
लिलहारिन कौ रूप लख, श्री वृषभानु कुमारि।
हँस हँस कैं कहवे लगी, सु लई पास बैठारि।
लीला मो तन गोद सुघड़, कैसी गोदन हारी॥ बन गए...........
सीस पै लिख दै श्री गिरधारी जी।
माथे पै लिख मदन मुरारी जी।
दृगन में लिख दै दीनदयाल, नासिका पै लिख दै नंदलाल।
कपोलन पै लिख कृष्ण गुपाल,
श्रवनन पै लिख साँवरौ, अधरन आनंद कंद।
ठोड़ी पै ठाकुर लिखौ, गल में गोकुल चंद॥
छाती पै लिख छैल, दोऊ बाहन पै लिखौ बिहारी॥ बन गए..........
हाथन पै हलधरजू कौ भैया जी।.
अंगुरिन पै आनंद करैया जी
पेट पै लिख दै परमानंद, नाभि पै लिख दै तू नदनंद,
जाँघ पै लिख दै जै गोविंद,
घोंटून पै घनस्याम लिख, पिंडरिन पै प्रतिपाल।
चरनन में चितचोर लिखौ जगपति जै गोपाल।
रोम-रोम में लिखौ रमापति, राधा बनवारी॥ ....बन गए
लीला गोद प्रेम रस आयौजी।

तन मन कौ सब होस भुलायौजी।
खबर झोली झन्डा की नाँय, धरन पै चरन नांय ठहरांय
सखी सब देखत ही रह जाँय।
देखत सखी सब रह गईं, झगड़ौ निरख के फन्द कौ।
बीसौं बिसें दीखें सखी, छलिया ये ढोटा नंद कौ।
आँगिया में वंसी छिप रही, राधे नैं लई निहार कैं।
हे प्यारे, हे प्यारी कही भेंटे हैं भुजा पसार कैं।
'घासीराम' जुगल जोड़ी पै, वार-वार वलिहारी ।
बन गए नंदलाल लिलहार, लीला गुदवा लेऔ प्यारी॥

श्री कृष्ण की लिलहारी लीला कौ कथानक रसिया के विविध छन्दन में जा खूबी के संग गुँथौ है, वू लोककथा कौ एक उदाहरन है। याही तरियाँ अनेक लीलान के कथानक रसियान में भरे भए हैं। यहाँ कछु रसियान के बोल दिये जा रहे हैं। दान लीला रसिया या तरियाँ है-

इकली चेरी वन में आय स्याम तैनें कैसी टानी रे।
स्याम मोहि वृन्दावन जानौं, लौटि कैं वरसाने आनौ
मेरी करजोरे की मानौं
जौ कहुँ होय अवार, लड़ै घर नंद जिठानी रे॥ इकली.........
दान दधि कौ तू दैजा मोय, जवई ग्वालिन जावन दऊँ तोय।
नहीं तकरार वहुत सी होय,
जो तू नाहीं करै, होय तेरी ऐंचातानी रे॥ इकली........

ग्वालिन नैं मुकतेरी मना करी। कंस राजा के पास पुकार करवे की धौंस दिखाई । कृष्ण नैं कंस कौ सर्वनाश करवे कौ खुलौ ऐलान करौ। कन्हैया नैं अपने ग्वाल वाल वुला लिए। ग्वालिन लौट कैं खिसियानी सी चली गई। रसिया में भरे भए भावन कूँ सब समझैं। कंस कूँ कमजोर करवे के काजैं सिगरी घेरावंदी ही।

एक और कथानक चीर हरन लीला कौ है। कछु सखी नगन हैकैं जमुना में नहा रहीं। विनकूँ समझायवे के ताँई कन्हैया नैं कहा कियौ, एक रसिया में देखौ-

कोई लै गयौ चीर हमारे, जुलम कर डारे।
अपने-अपने वस्त्र खोलि कैं पारन पै हम धर दीने
सब गोपिन नें जुर मिलिकैं, धँस जमुना में गोता लीने
उछरत चीर लखे नहीं गोपी जमुना तीर किनारे। जुलम.....
देखत चारों ओर गोपिका, कोई नजर नहीं आयौ।

होकर नगिन खड़ीं जमुना में, निज मन सोच बहुत छायौ।
नहिं कोउ मनुज नहीं कोऊ बंदर, कौनें बादर फारे।। जुलम.......

कथानक या तरियाँ प्रारम्भ होय। श्री कृष्ण कदंब पै बैठे दिखाई दैं। बिन्नैं बंसी बजाई। उराहने-तुराहने भए। कृष्ण नैं चीर नहीं दिए। गोपीन नैं कंस सौं सिकायत करबे की कही। कृष्ण नैं कही- कंस जैसे मैंनें कितेक संहार दिए। सिगरी गोपीन कूँ पाठ पढ़ा दियौ कै नगन हैकैं स्नान करिवौ ठीक नाँए।

याही तरियाँ कृष्ण विसयक कथानक रसियान माँहि पिरोए भए हैं। कृष्ण विसयक रसियान की तरियाँ राम विसयक रसियाऊ गाए जाएँ। वानगी के रूप में एक उदाहरन देखौ-

बताय दै लक्ष्मण भैया, तेंरैं कहाँ लग्यौ है तीर।
मेघनाद नैं तीर चलायौ, सो तेरे तन तीर समायौ,
तनमन कौ सब होस गँवायौ, व्याकुल भयौ सरीर॥ बताय......
अवधपुरी मैं कैसैं जाऊँ, पूछै माता कहा बताऊँ,
रोय-रोय वन में रुदन मचाऊँ, वहै दृगन ते नीर॥ बताय........
एक तौ संग ते सीता छूटी, तो विन भ्रात भुजा मेरी टूटी,
नाँय वगदे हनुमत लै बूँटी, का विधि धारूँ धीर॥ बताय......
इतने में श्री हनुमत आए, द्रोणागिरि संजीवन लाए,
लखनलाल के प्राण बचाए, भेटे दोनों वीर॥ बताय......
मूर्छा ते जब लक्ष्मण जागे, जै जै कार करन सुर लागे,
'घासीराम' सकल दुख भागे, सज गए सब रणधीर॥ बताय......

रसियान माँहि औरहु कथा लिखी भई हैं। कृष्ण सुदामा मित्रता, सत्य हरिश्चन्द्र, मोरध्वज आदि। मोरध्वज लीला उदाहरन के रूप में दई जाय रही है-

अर्जुन और कृष्ण मुरारी, तपसी कौ भेष लियौ धारी।
दो संत बने हैं आला, सिर जटा गले में माला।
कमंडल हाथ बगल मृगछाला, संग में केहर मतवाला,
झड़-गए भूप के धाम, कह्यौ सियराम, भूख हमैं लागी।
हम सुने मोरध्वज भूप, भक्त बड़भागी
दरवारी ते कही, खवर राजा ते करौ हमारी।। तपसी......
सुन टेर चलौ दरवान, बोल्यौ राजा ते बानी।
दो सन्त खड़े निरवानी, संग में केहर अगवानी।
झड़-चलौ आप सरकार छोड़ दरवार, याद तुम्हें करते।

तुम चलकैं दर्सन करौ, संत हैं रमते।

सुनिकैं आतुर चल्यौ, आप राजा नैं अरज गुजारी। तपसी.....

सुन भूप हृदय हरसायौ, महलन ते दौड़ौ आयौ

आसन जल्दी बिछवायौ, फिर ऐसे वचन सुनायौ।

झड़-जो कछु होय दरकार, करूँ सत्कार, आप फरमाऔ।

जो इच्छा के अनुसार, कहौ सोइ पाऔ।

केहर कूँ भोजन मँगवाऊँ, इच्छा होय तिहारी॥ तपसी......

क्षुधा नैं हमें सतायौ, दिन तीन अन्न नहीं खायौ

केहर नैं अति दुख पायौ, बिन आहार ये घबरायौ

झड़-चीरौ रतनकुमार, करौ दो फार, सिंह जब पावै।

रानी ते पूछौ जाय, क्यों देर लगावै।

हम हैं रमते राम, हमें जानौ है बहुत अगारी। तपसी......

सुन भूप महल में आए, रानी कूँ वचन सुनाए।

दो संत द्वार पै आए, तिन ऐसे वचन सुनाए।

झड़-चीरौ राजकुमार, करौ दो फार, सिंह जब पावै।

सुत चीरत में इक आँसू, गिरन न पावै।

धर्म तिहारे साथ, सोच तुम मन में लेऔ विचारी। तपसी......

अपनौ मन करकैं गाढ़ौ, कियौ बीच कुँवर कूँ ठाड़ौ।

रानी राजा लियौ आरौ, सुत कर दियौ न्यारौ-न्यारौ।

झड़-चीरौ राजकुमार, करौ दो फार, हियौ जब फाटौ।

रानी इक आँसू गिरौ, डटौ नहीं डाटौ।

बैठे आसन मार, संत रानी की दसा निहारी1। तपसी......

सुन राजा वचन हमारौ, इक फार सिंह कूँ डारौ।

दूजे कूँ आप सम्हारौ, ढक देऔ रहै न ठचारौ।

झड़-धरौ महल में जाय, कहूँ समझाय, बात सुन लीजै।

अब पत्तर लाऔ पाँच कै पंगत कीजै।

धर ठाकुर जी कौ भोग, फेर भोजन की करौ तैयारी।। तपसी......

मेरे सन्देह यही है, राजा कर जोर कही है।

स्वामी कहौ सही-सही है, पाँचई पत्तर किसकी है?

झड़-कुँवर महल रहयौ सोय, नींद में होय कै हेला मारौ।

ाँविई पतर पै आवै कुँवर तिहारौ।
भूप दई आवाज महल ते आयौ कुँवर हजारी॥ तपसी......
धन-धन प्रभुभाग हमारे, महलन में आप पधारे।
भए लोचन सफल हमारे, नारायन नैन निहारे।
ड़-गोवरधन शुभ धाम, 'घासीराम' नाम है मेरौ।
तुम जानौ वड़ौ बजार, मुहल्ल खेरौ।
रखी भूप की लाज, कि भैया राधेश्याम विहारी। तपसी........

या ढब सौं समाज में प्रचलित पौराणिक, धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि कथानकन के रसिया प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। रसिया छंद की सीमा तौ हत नाँए। पर हर रसिया की कथा जीवन के एक प्रसंग सौं जुड़ी होय। अब तक काऊ खंड काव्य या प्रबन्ध काव्य की कथा रसिया कौ विसै नाँय रह्यौ। हम यों हू कह सकँ कै रसिया लोकगीत में काऊ खंडकाव्य या प्रबन्ध काव्य नाँय लिखौ गयौ। याही सौं रसिया संग्रह मुक्तक काव्य की श्रेणी में आवै है। हर रसिया अपने में स्वतंत्र है। काऊ रसिया कूँ काहू क्रम में रख सकँ। हाँ कालक्रम में घटी घटनान के आधार पै रचे भए रसियान कौ क्रम रखौ जाय सकै।

अंत में रसिया छन्द की महिमा कौ बरनन प्रस्तुत करौ जाय रह्यौ है। श्री छेदालाल 'छेद' नैं रसिया की महिमा यों गाई है-

तान जाकी मस्तानी, रसिया रसिकन कौ प्रान।
बजै-कहरवा जब ढोलक पै, सारंगी सरसाइ।
मींड गमक वंसी कौ सुर मिलि, आर-पार है जाइ।। तान......
मीठी-मीठी धुनि सुनि-सुनि कैं, हिय में उठत हिलोर।
लगै ध्यान हरि के चरनन में, है जाइ भाव विभोर॥ तान.......
बरबस पाँय उठैं नाचन कूँ, मनुआ मानैं नाँय।
कूदि-कूदि कैं भरैं उछट्टा, दुल्लर है-है जाँय॥ तान......
और गीत सब गीतरी है रसिया गीत महान।
जैसे गोला तोप कौ होइ, करत जात मैदान।
जो कहुँ रसिया गीत कौ रे, गायक रसिया होइ।
श्रोता हू रसिया मिलै, तौ जाइ भाव में भोइ।। तान........
ब्रह्मानंद सहोदर रस कौ, वेदन जानैं भेद।
धन्नि सुही है जो जा रस कूँ छकि-छकि पीयें 'छेद'।।

मिसरी सौं हू अधिक मीठे कथा भरे रसिया रस की गागरिया हैं। जो या रस-गागरी कौ पान करै वू तृप्त है जाय। दूरदर्सन के जमाने में हू रसिया अपनी महत्ता रखें। रसियान के दंगल होंय। श्रोता रात-रात भर रसियान कौ रसास्वादन करें। हाथरस, मथुरा, आगरा, गोवरधन, डीग, नगर, कामां, भरतपुर आदि ठौरन पै आजहु इनकौ अलवेलौ रंग उभर कें अलगई दिखाई परै। मित्र मंडली तरुण समाज समिति भरतपुर और ब्रजकला केन्द्र मथुरा या विद्या कूँ जीवन्त बनाए रखबे के ताँई जी जान सौं जुटे भए हैं। परम्परागत वेसभूसा, साजवाज और प्रस्तुती सौं दूरदर्सन कूँ चुनौती दैंते भए उपलब्धि बटोर रहे हैं।

-पांडेय मौहल्ला
डीग, भरतपुर (राजस्थान)



लोकगीत

कछु संकलित लोकगीत

—संकलनकर्त्ता—डॉ. गेंदालाल शर्मा

चरुए कौ गीत

राजा उठीऔ कमरिया में पीर तौ मेरी अरज सुनै
राजा उठीऔ कमरिया में पीर तौ दाई कूँ बुलाइ लेउ जी।
अम्मा हमारे महल कछु सोरु तौ तुमकूँ बुलाइऐ
बेटा बहुअरि नैं बोले मोसूँ बोल सो मैं नहीं आऊँगी
धन अम्मा सूँ बोले तुमनें बोल सो वे नहीं आमेंगी
राजा पकरूँगी छानियाँ बड़ेरिया की पाटी
तौ ऐसे जनमिंगे नंदलाल तमासौ देखन आमेंगी।
राजा उठीऔ............

—

भामरिया मेरी परि गईं

ए भामरिया मेरी परि गईं रे मैना लटधारी के संग
लटधारी के संग मैना बहरूपिया के संग।
माथे इनके तिलक चन्दमा लट में बहि रही गंग
एक हाथ तिरसूल बिराजै दूजे में डमरू बाजै
ए भामरिया मेरी.....

काऊ के सजि गये-ढोलक मजीरा काऊ की बजि रही झाँझ
मेरे संकर कौ बाजै डमरू सब पंचन के माँझ
ए मानरिया मेरी........
काऊ के सजि रहे रथा—मंझोली काऊ की सजीए तुरंग
मेरे बलन कौ सजौ नादिया उड़े पवन के संग
ए मानरिया मेरी........
ओर पास जोनें आक धतूरा बीच में बोइ दई भंग
सब कोई पीवें सुलफा गांजा हम पीवें दोऊ भंग
ए मानरिया मेरी...

—

छोरा की लगुन चढ़वे कौ गीत

रघुनन्दन फूले न समांइ, लगुन आई हरे—हरे लगुन, आई मेरे अँगना
बाबा सजि गए, ताऊ सजि गए, सजि गई सबरी बरात
रघुनन्दन तौ ऐसे सजि गए, जैसे सिरी भगवान
लगुन आई हरे हरे.......
चाचा सजि गए, बाबुल सजि गए, सजि गई सबरी बरात
रघुनन्दन तौ ऐसे सजि गए, जैसे सिरी भगवान
लगुन आई हरे हरे........
भैया सजि गए, जीजा सजि गए, सजि गई सबरी बरात
रघुनन्दन तौ ऐसे सजि गए जैसे सिरी भगवान
लगुन आई हरे हरे........
फूफा सजि गए, मौसा सजि गए, सजि गई सबरी बरात
रघुनन्दन तौ ऐसे सजि गए जैसे सिरी भगवान
लगुन आई हरे हरे........

—

भात पहरते समय कौ गीत

पहली सेली तौ चमकै बीर की रे
आये सासुलिया के बीर। मोतिन जड़ि लइयौ रे भैया चूँदरी रे

खोलूँ तौ हीरा मोती झरि परैं रे
ओढ़ति लागै जग जोति। मोतिन जड़ि लइयौ रे भैया चूँदरी रे
दूजी सेली तौ चमकै वीर की रे
आये जिठनियाँ के वीर। मोतिन जड़ि लइयौ रे भैया चूँदरी रे
खोलूँ तौ हीरा मोती झरि परैं रे
ओढति लागै जग जोति। मोतिन जड़ि लइयौ रे भैया चूँदरी रे
तीजी सेली.......
आये दौरनियाँ के वीर। मोतिन जड़ि लइयौ रे भैया चूँदरी रे
खोलूँ तौ हीरा मोती झरि परैं रे
ओढ़ति लागै जग जोति। मोतिन जड़ि लइयौ रे भैया चूँदरी रे

—

दौहनियाँ

एक हरीऔ चना की दार ऊपर दौहनियाँ
बाबा हरि गुन गाइ सकारे की दौहनियाँ
त्यारे रोग घोग बहि जांय सकारे की दौहनियाँ
ब्याऊ करौ लाला जाइ सकारे की दौहनियाँ
ताऊ हरि गुन गाइ सकारे की दौहनियाँ
ब्याऊ करौ लाला जाइ सकारे की दौहनियाँ
एक हरीऔ चना...........
चाचा हरि गुन गाइ सकारे की दौहनियाँ
त्यारे रोग घोग बहि जांय सकारे की दौहनियाँ
ब्याऊ करौ लाला जाइ सकारे की दौहनियाँ
एक हरीऔ चना.............

—

विवाह लोकगीत : हाथरस क्षेत्र

–संकलनकर्त्ता– डॉ. सतीश चतुर्वेदी 'शाकुंतल'

ऐसे बोल मति बोलै
कुआ तेरौ ठंडौ पानी–ठंडौ पानी

रे सासु रानी ऐसे बोल मति बोलै
अभी तौ मेरौ पीहरु भारी, पीहरु भारी
रे कुआ तेरौ.....
जिठानी रानी ऐसे बोल मति बोलै
अभी तौ मेरौ न्यारौ साजौ न्यारौ साजौ
रे कुआ तेरौ.....
दौरानी रानी ऐसे बोल मति बोलै
अभी तौ मेरे देवर बस में, देवर बस में
रे कुआ तेरौ.....
ननद रानी ऐसे बोल मति बोलै
अभी तौ मेरौ भैया क्वारौ, भैया क्वारौ
रे कुआ तेरौ.....
सौति रानी ऐसे बोल मति बोलै
अभी तौ मेरौ जीजा रँडुआ, जीजा रँडुआ।

—

राजी हैकें कहि देउ (मथुरा क्षेत्र)

राजा राजी हैकें कहि देउ तौ घर करि लेउँ डलिया।
गोरी, को लावै मोकूँ रोटी–बेला, को लावै दरिया?
गोरी, पकरि हात में जेबरा को प्यावै बधिया?
राजा तुमई लाऔ रोटी–बेला, तुम लइयों दरिया।
राजा, पकरि हात में जेबरा, तुम प्यइयों बधिया।
गोरी, नाले पार मेरी ज्वार कौन टारैगौ हरिया?
राजा, राँधि मेंड़ पै कोंमरी तुम टारौ हरिया।
राजा, सामन झूलन जाऊँ, कै लाऊँ पचरँग फरिया।
गोरी, मारूँ लात झुलाइ देउँ, सामन करवाइ देऊँ डलिया।
राजा, धोकौ दै जाऊँ सफा निकरि जाऊँ, करि जाऊँगी रँडुआ।
राजा, राजी हैकें कहि देउ तौ घर करि लेउँ डलिया।

—

नृत्य गीत (मुरसान क्षेत्र)

मेरे दिल कूँ तोड़ मेरे से बोलै क्यों ना रे?
सबके बालम घर सोमें, घर सोवै क्यों ना रे?
भैनि, मेरौ एकु कह्यौ करि दीयौ,
भैनि, जाकूँ थारी में खीरि सिरइयौ,
भैनि, जाकूँ चम्मच कोई मति दीयौ,
खाइगौ सप्प ई सप्प कै चम्मच माँगे क्यों ना रे?
सबके बालम........
भैनि, मेरौ एकु कह्यौ करि दीयौ
भैनि, जाकी चौरे में खाटै बिछइयौ
भैनि, जाकूँ बिस्तर कोई मति दीयौ
सोइगौ पाँइ सकोडि कै बिस्तर माँगे क्यों ना रे?
सबके बालम........
भैनि, मेरौ एकु कह्यौ करि दीयौ
भैनि, जापै खाई में हलु चलवइयौ
भैनि, जाकूँ रोटी कोई मति दीयौ
जोतौ बारै बीघा रोटी माँगे क्यों ना रे?
सबके बालम...... .
भैनि, मेरौ एकु कह्यौ करि दीयौ
भैनि, जाइ पीहर कूँ भिजवइयौ
भैनि जाकूँ पैसा कोई मति दीयौ
प्हौंचौ कोस पचास कै पैसा माँगे क्यों ना रे?
सबके बालम........

—

न पैरूँ कारी बेलि कौ लेहँगा रे –2
लड़ै सासुलि लड़ै ससुरा रे–2
लड़ै राजा फटै छाती रे
जौ होते मेरे पंख उड़ि जाती रे
फटै धरती समाइ जाती रे, न पैरूँ.... .
लड़ै जेठा लड़ै जिठनी रे –2
लडै राजा फटै छाती रे

जौ होते मेरे पंख उड़ि जाती रे, न पैरूँ....
लड़ै देवर लड़ै द्यौरानी रे –2
लड़ै राजा फटै छाती रे
जौ होते मेरे पंख उड़ि जाती रे, न पैरूँ......
लड़ै ननदी लड़ै ननदेऊ रे –2
- लड़ै राजा फटै छाती रे
जौ होते मेरे पंख उड़ि जाती रे, न पैरूँ.....

—

(हाथरस क्षेत्र)

दो–दो नारी कोई मति राखियो दो नारिन की है ख्वारी
एक नें लै लए बाग बगीचा
एक नें लै लई फुलवारी। दो दो नारी......
एक नें ले लए तए चीमटा
एक नें लै लई द्वै थारी। दो–दो.......
एक तौ सोवै अट्टा ऊपर
एक देति आँगन गारी। दो–दो नारी.....
बारै बरस पीछें आए चकरी सें
बोलि रई ऊपर वारी। दो–दो नारी.....
धरिकें नसैनी चढ़वे लागौ
खेंचि रई नीचे वारी। दो–दो नारी....
बो का तेरी लगै लुगाई
नैं का लागूँ महतारी। दो–दो नारी......

—

(औसर विवाह)

झूँटु नाँइ बोल्तई
झूँटु नाँइ बोल्तई झूँट की ऐ आनि
पोखरिया की पारि पै एकु मेंढ़क चाबै पान। झूँटु ....

चारि मन के चारि पाए, आठ मन की खाट
चौंसटि मन कौ गूदरा, बत्तीस मन कौ जाट। झूँटु ....
एक दिना की बात रे, बन मे आयौ ऊँटु
चेंटी के तन पास रे, पीसन लाग्यौ ऊँटु। झूँटु ....
चेंटी चढ़ी पहाड़ पै रे, नौ मन बजनु लदाइ।
हाती–घोड़ा लए बगल में, ऊँट लिए लटकाइ। झूँटु ....
चेंटी मरी पहाड़ पै रे खेचन कूँ गए चार,
सौ जोड़ी जूता बने औरु चप्पलि बनी हजार। झूँटु ....
बोदी जाति बरात की रे बिना ब्यारि बर्राइ,
बारै मन के घूँघरा इक मुरगी बाँधें जाइ। झूँटु ....
गधा चलौ ससुरारि कूँ रे पैरि गले में पायौ,
सबरे बालक जों कहें जि फूफा बड़े दिना में आयौ। झूँटु .....
कुतिया चली बजार कूँ रे पैरि गले में ईंट,
सबरे बनियाँ जों उठि बोले, खद्दर लेगी कै छींट। झूँटु .....

—

मै तौ मरि गई हकीम जी तारा बाबू चंद। –2
हकीम जी नें कह दिया कै दारि फुलकिया खाना,
मैं तो खाइ गई हकीम जी, आलू गोभी बंद।
मैं मरि गई..........
हकीम जी नें कह दिया कै गरम पानी पीना,
मैं तौ पी गई हकीमजी, सोड़ा वाटर बंद।
मैं मरि गई..........
हकीम जी नें कह दिया तुम छत्ति ऊपर सोना
मैं तौ सोइ गई हकीमजी, कोठे भीतर बंद।
मैं मरि गई..........
हकीमजी नें कह दिया तुम अकेली ही सोना,
मैं तो सोइ गई हकीमजी, लै बालम कूँ संग।
मैं मरि गई..........

—

(कासगंज क्षेत्र)

सिर दूखे की दवा बतइयौ हकीम जी
जीती रहूँ तौ गुन मानूँ।
सोंने की थरिया में भोजन परोसे
अपनेईं हात जिमइयौ हकीमजी, जीती रहूँ तौ गुन माँनू।
आले कौ लोटा सिवाले कौ पानी
अपनेई हात पिबइयौ हकीम जी, जीती रहूँ तौ गुन मानूँ।
पान पचासी के बीड़े लगाए
अपने ई हात चबइयौ हकीम जी जीती रहूँ तौ गुन मानूँ।
चंदा की चाँदनी में चौपड़ बिछाई
अपने ई हात खिलइयौ हकीम जी जीती रहूँ तौ गुन मानूँ।
फूलों की सेज मोती झल्लरि कौ तकिया
अपनेई जौरें सुवइयौ हकीमजी, जीती रहूँ तौ गुन मानूँ ।

—

संगई चलुंगी

सिपाई महाराज, संगई चलुंगी,
दरोगा महाराज, संगई चलुंगी।
सो गोरी, तेरे माथे पै बिंदिया चमकनी
उजिरिया राति, नहीं ले चलूँगा। सिपाई.....
सो गोरी, तेरे नैनों में कारा काजल
अँधिरिया राति, नहीं ले चलूँगा। सिपाई....
सो गोरी तेरे पाँहिनि में बजने बिछुआ
गलिनु में रँडुआ, नहीं ले चलूँगा। सिपाई....
सो गोरी, तेरी ऊँची–नीची धोती
गलिनु में कीच, नहीं ले चलूँगा। सिपाई....
सो गोरी, तेरी गोदी में छोटा सा ललुआ,
भूड़ पै भूत , नहीं ले चलूँगा। सिपाई.....

—

(मथुरा क्षेत्र)

सावन कौ गीत
लहरि लहरि सरसों करै कै आई रितु सामन की।
आए जी मैया जाए वीर, कै आई रितु सामन की।
सासुलि पूछन हम गए कै आई रितु सामन की।
कहौ तौ पीहर जाँइ, सामन झूलि आँइ
मैया से मिलि आँइ, सहेली मिलि जाँइ,
कै आई रितु सामन की।
हमें कहा पूछौ री ए बहू, कै आई रितु सामन की,
अपनी जिठाँनी ऐं पूछौ कै आई रितु सामन की,
कहौ तौ पीहर जाऊँ......
हमें कहा पूछौ री मेरी ए छोटीजी कै आई रितु सामन की,
अपनी दौरानी ऐ पूछौ कै आई रितु सामन की,
कहौ तो पीहर जाऊँ.....
हमें कहा पूछौ री मेरी ऐ जिठानी कै आई रितु सामन की,
अपनी ननदिया ऐ पूछौ कै आई रितु सामन की,
मेरी ननदुलि ऐ दीदी जी आई रितु सामन की,
कहौ तो पीहर जाऊँ.....
हम कहा जानें मेरी ऐ भाभीजी कै आई रितु सामन की,
अपनी सासुलिया ऐ पूछौ कै आई रितु सामन की
मेरी सासुलि ऐ माताजी, आई रितु सामन की,
कहौ तो पीहर जाऊँ.....
जितनों कोठी में नाजु कै आई रितु सामन की
जाइ पीसि धरि जाउ, मैया से मिलि आउ,
सामन झूलि आउ, सहेली मिलि आउ कै आई रितु सामन की
जितनौ कुआ में पानी कै आई रितु सामन की
सबरे ऐ घर भरि जाउ कै आई रितु सामन की,
जितने पीपर पै पात कै आई रितु सामन की.
इतनी पोइ धरि जाउ कै आई रितु सामन की,
जाऔ बिरन घर आपने कै 'आई रितु सामन की,
मरेऊँ न मिलनों होइ कै आई रितु सामन की।

—

196

(सिकन्दराबाद अलीगढ़ क्षेत्र)

चन्की तर मैंनें धनियों बोयौ, हाँ सहेली धनियों बोयौ
धनिये नें दो किल्ला फूटे, हाँ सहेली...
किल्ला मैंनें गाय चराई, हाँ सहेली...
गाय नें मोकूँ दुद्धा दीनों, हाँ सहेली...
दुद्धा की मैंनें खीरि पकाई, हाँ सहेली...
खीरि मैंनें भैया ऐ जिमाई, हाँ सहेली...
भैया नें मोइ रुपिया दीन्हों, हाँ सहेली...
रुपिया की मैंनें चुनरी ओढ़ी, हाँ सहेली...
चुनरी ओढ़ि मैं पनियाँ कूँ गई, हाँ सहेली...
पनियाँ भरत मेरें काँटौ लाग्यौ, हाँ सहेली...
काँटौ मैंनें दाऊ पै निकरवायौ, हाँ सहेली...
दाऊ नें मेरें खून निकारौ, हाँ सहेली...
खून मैंनें चुनरी तें पोंछौ, हाँ सहेली...
चुनरी मैंनें धोबी के डारी, हाँ सहेली...
धोबी नें मेरी चीर-चीर करि दई, हाँ सहेली...
चीर-चीर मैंनें दर्जी कें डारी, हाँ सहेली...
दर्जी नें मेरे गुड़िया-गुड्ड़ा सींये, हाँ सहेली...
गुड़िया-गुड्ड़ा आरे में रख दए, हाँ सहेली...
आरे ए मैं कुआ पै सिराइबे गई, हाँ सहेली...
कुआँ नें मोइ डिबिया पाई, हाँ सहेली...
डिबिया में मोइ रुपिया पायौ, हाँ सहेली...
रुपिया की मैंने चूड़ी पहरी, हाँ सहेली...
चूड़ी मैंनें सासु ऐ दिखाई, हाँ सहेली...
सासु मेरी नें बुरी बताई, हाँ सहेली...
चूड़ी मेरी चटकै, सासु मेरी मटकै।

—द्वारा श्री हरचरन शिवहरे
हनुमान कालोनी, गुना (म.प्र.)

विविध लोकगीत

–संकलनकर्त्ता – श्री हरीशचन्द्र शर्मा 'हरि

सखि री अनपढ़ कूँ ब्याह दई जिन्दी रहूँ कि मर जाऊँ
जेठ मेरौ है गयौ एम.ए. पास, देवर मेरौ है गयै बी.ए. पास
अरी यू तौ गूँठा टेका–जिन्दी रहूँ कि मर जाऊँ.....
जेठ मेरौ ऑफिस कूँ जावै, देवर मेरौ दफ्तर कूँ जावै
अरी यू तौ हर पै जावै, जिन्दी रहूँ कि मर जाऊँ.....
जेठ मेरौ है गयौ थानेदार, देवर मेरौ बनि गयौ तहसीलदार
अरी यू तौ मुँह कौ देखा, जिन्दी रहूँ कि मर जाऊँ.......
जेठ मेरौ लावै पाँच हजार, देवर की इतरावति नारि
सखि यू तौ जेब टटोरा, जिन्दी रहूँ कि मर जाऊँ......
साक्षर करि रही है सरकार, केन्द्र पै पहुँच छोड़ हर फार
देख तोय पढ़ि जाय छोरा, जिन्दी रहूँ कि मर जाऊँ....

–

मैं तो चली पीहर कूँ
मैं तो चली रे पीहर कूँ बलम हिचकी दैकें रोवै
बागन में रोवै बगीचन में रोवै
पेड़न ते मार सिर रोवै–बलम हिचकी दैकें रोवै......
तालन पै रोवै तलइयन पै रोवै
घाटन सौं मार सिर रोवै–बलम हिचकी दैकें रोवै.....
कूँअन पै रोवै तलाबन पै रोवै
बाबरी में मार सिर रोवै–बलम हिचकी दैकें रोवै.....
महलन में रोवै मकानन में रोवै
सेजन पै मार सिर रोवै–बलम हिचकी दैकें रोवै.....
गैलों में रोवै गिरारिन में रोवै
पारन सौं मार सिर रोवै–बलम हिचकी दैकें रोवै....

–

ननद फुलगेंदिया

ननद फुलगेंदिया कौन भरैगौ पानी
सास मेरी रानी सुसर मेरे राजा
बलम म्हारे भोलुआ बेई भरिंगे पानी। ननद फुलगेंदिया....
जेठ मेरे राजा जिठनी मेरी रानी
बलम म्हारे भोलुआ बेई भरिंगे पानी। ननद फुलगेंदिया....
देवर मेरे राजा, दौरानी मेरी रानी
बलम म्हारे भोलुआ बेई भरिंगे पानी। ननद फुलगेंदिया....

—

सास तेरे बोलन पै

बाबाजिन हैकें निकरि जाऊँगी सास तेरे बोलन पै
हाय वैरागन हैकें निकरि जाऊँगी सास तेरे बोलन पै
यों मत जानें सासुल नंगी चली जाऊँगी
तेरे बेटा पै चूनर मँगाय लऊँगी। सास तेरे बोलन पै.....
यों मत जानें सासुल भूखी चली जाऊँगी
तेरे बेटा पै रबड़ी मंगा लऊँगी। सास तेरे बोलन पै.....
यों मत जानें सासुल घरै छोड़ि जाऊँगी
अपने हिस्सा कैं तारौ लगाय जाऊँगी। सास तेरे बोलन पै.....
यों मत जानें सासुल इकली चली जाऊंगी
तेरे बेटाय संग में लै जाऊँगी। सास तेरे बोलन पै.....

—

मोय न्यारे कौ चाव

मोय न्यारे कौ चाव सकारें न्यारी है जाऊँगी
सास नाँय लउँगी सुसर नाँय लउँगी
डुकरियाय लै लउँगी जाय हाल राम लै जाय
मोय न्यारे कौ चाव.......

गाय नाँय लउँगी, भैंस नाँय लउँगी
बकरिया लै लउँगी जाकौ हाल काम है जाय
मोय न्यारे कौ चाव.......
देवर नाँय लउँगी जेठ नाँय लउँगी
ननदियाय लै लउँगी जाय आय ननदेऊ लै जाय
मोय न्यारे कौ चाव.....

—

चंद्रकली कौ हार

चन्द्रकली कौ हार सखी री बहना
ऊँची अटरिया लाल किवरिया री बहना
चढ़ौ ना उतरौ जाय सखी री बहना
आगें ते देवर चढ़ि गये री बहना
डारि जुलफन तेल सखी री बहना
पीछे से भाभी चढ़ि गई री बहना
करि सोलह सिंगार सखी री बहना
देवर भाभी सोय रहे री बहना
घर छतियन पै हाथ सखी री बहना
पीछे से राजा जी चढ़ि गये री बहना
धरि कंधे पै कटार सखी री बहना
पहली कटार घूँघटे पै मारी री बहना
घूँघट में लइयै फिराय सखी री बहना
दूजी कटारी छतियों पै मारी री मैना
हाथन पैं लइयै फिराय सखी री मैना
तीजी कटारी कनिया पै मारी री मैना
तीजी में तजे हैं पिरान सखी री मैना
घर घर रोटी पानी तौ है रहे मैना
रंडुआ के कटोरे में चून सखी री मैना
घर घर चौका लगि रहे री मैना
रंडुआ के चूल्हे में राख सखी री मैना

घर घर बालक खेल रहे री बहना
रंडुआ कौ सूनौ घरबार सखी री बहना
घर घर सेज बिछ रही री बहना
रंडुआ की गिरारे में खाट सखी री भैना
चन्द्रकली कौ हार सखि री भैना.....

—

मोय राजा मिले

अरी दुःख कौन ते कहूँ मेरी मइया, मोय राजा मिले जरैया
पाँच बरस की मैं मेरी मइया ढाई बरस के संइयाँ। दुःख कौन....
नभा धुवा मैंनें सेज सुवाए अरी वाय लै गई सौत बिलैया। दुःख कौन....
सास बिचारी उनैं ढूँढ़न चाली अरी बे तौ कहूँ न पाए छइया। दुःख कौन....
सुसर बिचारौ खोजन चालौ–झट बोले सोन चिरैया। दुःख कौन....
मैं अलबेली उनैं ढूँढ़न चाली अरी वे तौ बिल ते झाँकें सइयाँ। दुःख कौन...
बिल ते काढ़ि कैं घर में लाई, लिपटाये लाल रजइया। दुःख कौन....

—

भात

राजा दशरथ की नारि कौसल्या भात नौंतवे आई, रंग बरसैगौ
लाख कौ टीका लइयौ मेरे भइया सवा लाख की लरियां, रंग बरसैगौ
इतनौ होय भैया मेरे घर अइयौ मत मेरी हँसी करइयौ, रंग बरसैगौ
लाख कौ कांटौ लइयौ मेरे भइया सवा लाख की नथुली, रंग बरसैगौ
इतनौ होय भैया मेरे घर अइयौ मत मेरी हँसी करइयौ, रंग बरसैगौ
लाख के कुण्डल लइयौ मेरे भइया सवा लाख के झाले, रंग बरसैगौ
इतनौ होय भैया मेरे घर अइयौ मत मेरी हँसी करइयौ, रंग बरसैगौ
लाख कौ मैंडिल लइयौ मेरे भइया सवा लाख कौ हरवा, रंग बरसैगौ
इतनौ होय भैया मेरे घर अइयौ मत मेरी हँसी करइयौ, रंग बरसैगौ
लाख के दस्ते लइयौ मेरे भइया सवा लाख की चुरियाँ, रंग बरसैगौ
इतनौ होय भैया मेरे घर अइयौ मत मेरी हँसी करइयौ, रंग बरसैगौ

लाख के बिछुआ लइयौ मेरे भइया सवा लाख की तगड़ी, रंग बरसैगौ
इतनौ होय भैया मेरे घर अइयौ मत मेरी हँसी करइयौ, रंग बरसैगौ

—

माई डीयर पीहर चाली

माई डीयर पीहर चाली जानैं आवैगी कै नाँय
मैं तौ हरवा लायौ टीका लायौ पहरैगी कै नाँय
मैं तौ पहरूंगी तौ बड़े शौक ते आयवे वारी नाऊँ
भैया तेरौ जीजा रोवै मेरौ चलिवौ हत नाँय
माई डीयर पीहर.......
मै तौ चुरियाँ लायौ घड़ियाँ लायौ पहरैगी कै नाँय
मैं तौ पहरूंगी तौ बड़े शौक ते आयवे वारी नाऊँ
भैया तेरौ जीजा रोवै मेरौ चलिवौ हत नाँय
माई डीयर पीहर.......
मैं तौ पायल लायौ बिछुआ लायौ पहरैगी कै नाँय
मै तौ पहरूंगी तौ बड़े शौक ते आयवे वारी नाऊँ
भैया तेरौ जीजा रोवै मेरौ चलिवौ हत नाँय
माई डीयर पीहर.......

—

ऊपर रेडियो कौ तार

ऊपर रेडियो कौ तार नीचैं चाय पानी।
पिया हमकूँ ना लाये सिंगार दानी॥
हमनें कहा था पिया किलपें ले आना।
बिंदिया लै आये उनकी महरबानी॥ ऊपर रेडियो......
हमनें कहा था पिया टीका ले आना।
नथुली लै आये उनकी महरबानी॥ ऊपर रेडियो.......
हमनें कहा था पिया झाले ले आना।
पैण्डिल लै आये उनकी महरबानी॥ ऊपर रेडियो......
हमनें कहा था पिया दस्ते ले आना

चुरियाँ लै आये उनकी महरबानी ॥ ऊपर रेडियो......
हमनें कहा था पिया तगड़ी ले आना।
गुच्छा लै आये उनकी महरबानी ॥ ऊपर रेडियो......
हमनें कहा था पिया पायल ले आना
बिछुआ लै आये उनकी महरबानी ॥ ऊपर रेडियो......

ऐसे बादर फारे

तेरे नैन बने कजरारे, जिननैं ऐसे बादर फारे, मेरी जान कूँ ।
मैं तौ कर दऊँगौ निछावर, अपने प्रान कूँ ।
तेरी चाल बड़ी मस्तानी
लचका लैवै मस्त जवानी
मुख पै चंदा की छवि चमकै
दम–दम माथे बिंदिया दमकै
शुभ पहचान कूँ, मैं तौ कर.........
बरसै अधरन पै मधु लाली
गालन पै लटकैं लट काली
छतिया नारंगी मतबाली
पी लूँगौ, यौवन की प्याली
गाऊँ गान कूँ, मैं तौ कर.......
तेरी सुन्दर नरम कलाई
मनुआ देखिकैं ले अँगड़ाई
मधुरिम अलबेली तरुनाई
मानों उतर चाँदनी आई
जीवन दान कूँ, मैं तौ कर..........
तेरौ आँचल पवन हिलावै
मेरे उर कौ ताप बढ़ावै
क्षण–क्षण दूनौ नशौ चढ़ावै
सीने लगजा च्यों शरमावै
मेरी मान तू मैं तौ कर..........

झाँकि रह्यौ

झाँकि रह्यौ री मेरौ साजन सलौनौ
फोरि डारौ री मेरे कमरा कौ कौनौ
पिया हमारे पेमदी जी कोई देखत मन ललचाय
हँसि-हँसि कैं सौतन बतियावै फूल झरैं मुसकाय
हो हो रे दिन रात लखत है-झाँकि रह्यौ......
सौत बिजुरिया ऐसी चमकी चमकत देह जराय
दै-दै ताने भीत चिराऊं मन ही मन मुसकाय
हो हो रे नाय चैन परत है-झाँकि रह्यौ.....
काहे तू लरिवे कूँ आई काहे करै पटक पछार
हाथ पकरि कै मैं नाँय लाऊँ रोकिलै तू तौ छिनार
हो हो रे तो पै नाँय रुकत है-झाँकि रह्यौ.....
भीतई घर भीतर समझायौ हार गई समझाय
नैंकऊ नाँय समझ में बैठै पल-पल आँख दिखाय
हो हो रे रैन जरत है-झाँकि रह्यौ........

–होली गेट नगर, जिला–भरतपु

—

लोकगीतकारन के रचे नये लोकगीत

सात लोकगीत

ब्रज में बास करिंगे

– श्री राधागोविन्द पाठ

ब्रज में बास करिंगे चलौ राधा रटिंगे।
पिछले पाप छटिंगे चलौ राधा रटिंगे॥
तीन लोक ते मथुरा न्यारी, जनम लियौ तहाँ कृष्ण मुरारी।
ता रज सीस धरिंगे, चलौ राधा रटिंगे॥
नन्द भवन अचरज गोकुल में, शिव विरंचि से मोहे पल में।

ग्वालन सँग विचरिंगे, चलौ राधा रटिंगे॥
ऊखल बन्धन रमन बिहारी, चिन्ता हरन श्री हलधारी।
खीर कुण्ड परसिंगे, चलौ राधा रटिंगे॥
जै–जै गिरवर जै गिरधारी, मानसी गंगा दान बिहारी।
परिकम्मा कर लिंगे, चलौ राधा रटिंगे॥
धन–धन नंद गाम बरसानौ, मन हरसानौ सुख सरसानौ।
बन उपबन विहरिंगे, चलौ राधा रटिंगे॥
वृन्दावन की कुंज गलिन में, कान्हा रास रचै गोपिन में,।
बाँके बिहारी मिलिंगे, चलौ राधा रटिंगे॥
विरज भूमि की महिमा भारी, संत दरस मुद मंगलकारी।
जीवन सुफल करिंगे, चलौ राधा रटिंगे॥

—

थोरौ-थोरौ तौ पढ़ौ

काका मेरी बात मानों, थोरौ–थोरौ तौ पढ़ौ।
तिखने लौं पहुँचौगे, सीढ़ी पहिली तौ चढ़ौ॥
सबते साँचौ बिद्या कौ धन, सकल कलेसन काटै।
चोर न जाकूँ चोर सकै, कोई भाई बन्धु न बाँटै॥
नीकी सीख कूँ सिखामें, काहे जिद पै अड़ौ
काका बात मेरी मानों.....
साठ बरस की चम्पो दादी, दसकत करिबे लागी,
पोंपा चाचा रम्मो भूआ चिट्ठी पढ़ै सटाकी॥
दुनियाँ गई अगारी, तुम हू आगे कूँ बढ़ौ।
काका बात मेरी मानों....
धीरें–धीरें चलै खरा ते कछुआ जाय अगारी,
चेंटी चलै पहाड़ै नाखैं करतब की बलिहारी॥
देहरी कूँ नाँखौ घरते बाहिरे कढ़ौ।
काका बात मेरी मानों.......
विद्या ही सबकौ अमोल धन, नर होवै चाहि नारी।
बिना पढ़े कोऊ बात न पूछै, रोज–रोज की ख्वारी॥

विद्या कौ फल चाखौ, कोरी गिल्ली च्यौं गढ़ौ।
काका मेरी यात मानौ......

—

मल्हार

कीर्ति पताका कयहु न झुकि सकै जी
ऐजी कोई भारत पूत महान
फाँसी के तखता पै हँसि–हँसि चढ़ि गये जी।
जननी ते यढ़ि भारत जननी, वे धन्य भये करकें करनी
जुग–जुग गूँजै सुजस शहीद कौ जी
ऐ जी कोई अनगिन भये यलिदान॥ फाँसी.....
वा डायर की मनमानी ते, जलियां की करुन कहानी ते
ऊधम पहुँचौऐ लन्दन जायके जी
ऐजी यम फैंक्यौ ऐ दै ऐलान॥ फाँसी......
लक्ष्मी याई झाँसी रानी, मरदानी कहुँ केहि नाँय जानी
प्रान निछावर देश पै करि गई जी
ऐजी कोई साक्षी है सकल जहान॥ फाँसी .....
ताँत्या टोपे मंगल पाण्डे, कितनेन्नें सीस कफन याँधे
सावर तिलक गुरू सुख गोखले जी,
ऐजी कोई शेखर भगत सुजान॥ फाँसी......
नर नाहर सुभाष की तरियाँ जे देश यन्यौ ए जिनकौ रिनियाँ
झुकि–झुकि जिनकूँ जग यंदन करै जी
ऐजी रिपु दल हू करत सनमान॥ फाँसी के........

—

स्कूटर

सारी जिन्दगी गई है येकार, मोरे यालमा कयहुं न यैठी स्कूटर पै।
देखी न कमाई की पाई, गंगा जमुना तक नाँय न्हाई।
घर में यैठे ही गुजारे त्यौहार, मोरे यालमा॥ कयहु न.........

कल्लो कौ खसम लै रोज फिरै, मेरौ मनुआ दिन रात जरै,
अब बेगि करौ जी इकरार, मोरे बालमा॥ कबहु न ....
अपने घर की मत फिकर करौ, जर मरे परौसी खूब जरौ,
जोरूँ हाथ दीजौ मन की निकार, मोरे बालमा॥ कबहु न.....
चटनी ते रोटी खाइ लिंगे, पर स्कूटर बिन नाँय रहिंगे
पीं.पीं. बोलैगौ उड़ैगौ धूँआधार, मोरे बालमा॥ कबहु न ......
छोरी छोरन संग नाँय लिंगे, गटपट बोलिंगे डोलिंगे
दुनिया ठोकैगी सलाम, सरकार, मोरे बालमा॥ कबहु न......
च्यौं चुप्प भये बोलौ मुखते, अपने हू दिन बीते सुखते
करौ मन में न सोच बिचार, मोरे बालमा॥ कबहु न.....
जादा मत सोचौ लै आऔ, तुम हू काहू ते कम नाऔ।
पीछें बैठूँ घड़ी बाँध पल्लौ डार, मोरे बालमा॥ कबहु न........

—

बनाइ दई मैं तौ रेलगाड़ी

लम्बौ परिवार बढ़ाइ—बनाइ दई मैं तौ रेलगाड़ी।
पिया ब्रेक न सिगनल होय कहाँ हुई है ठाड़ी॥
उत्पादन कर तैंने साँची महनत कौ फल पायौ।
कौसलता कौ लै प्रमाण दुनिया में नाम कमायौ॥
जे सनमुख आई खाड़ी॥ लम्बौ........
डिब्बा चाल चलै मनमानी द्वार क़िवरिया खोलैं।
अँधियारे में भिड़ैं मुसाफिर तू तू मैं मैं बोलैं।
अराजकता बाढ़ी॥ लम्बौ.......
प्यार न लखे बहिन भैय्या में विपदा नें घर घेरौ।
कहाँ गई भैय्या की ममता चारौं ओर अँधेरौ॥
बचइयौ देवी पथवारी॥ लम्बौ......
झटिका में दुर्घटना घटि जाय ढूँढ़े टूक न पावै।
करनी कौ फल मिलै मिनट में दुनिया दोष लगावै॥
पी राखी होइगी ताड़ी॥ लम्बौ......
सोचौ समझौ रे भैय्या कछु ऐसौ करौ दिखाऔ।

दृढ़ संकल्प उठाऔ जिम्मेदारी सबहि निभाऔ॥
कहे रानी हाड़ी॥ लम्यौ.....

—

झींगुर बैठि गयौ बकुचा पै

झींगुर बैठि गयौ बकुचा पै डूबी–डूबी रही सही।
डूबी रही सही कै बिगरी–बिगरी रही सही॥
काहू नें पौधा रोप्यौ अरु कोऊ रह्यौ फल खाय।
ऐसौ पूत कमाल है गयौ खाइ और घुर्राय॥
करुई तापै नीम चढ़ गई कैसी कैसी बेलि बई
झींगुर बैठि गयौ.....
होय अजूबौ खेल घोदुआ गाम में घुसतौ आवै।
कुत्ता पूँछ दयामत डोलै कोऊ नाँय घुर्रावै॥
पल्लै परि गई जुलम गुजरि गये दैय्या उलटी धार बही
झींगुर बैठि गयौ......
कछू न करौ दया तुम हमपै हम अपनौ हक लिंगे
तुमनें प्रान बचाये अब हम तुमकूँ ही धक्का दिंगे
दूध पियावै ताहि डसें हम अपनी सच्चुल जात यही॥
झींगुर बैठि गयौ.......
दोऊ आँखिन पै धरी ठीकुरी लाज कहाँ कहु कैसी।
हमते बड़ौ न कोऊ जा खन सबकी ऐसी तैसी॥
गैल बिगारै आँख नटेरै घोबिनिया दिल्ली बन गई
झींगुर बैठि गयौ......

—

धरती के गोपाल

धनि–धनि धरती के गोपाल, गोप गामन के बसिया।
जै–जै–जै किसान भगवान हाथ हर खुरपी हँसिया
बाग–बगीचा मेंड़–मेंड़ पै बहै सुगन्ध समीर।

पनघट दूध दही झलकामें पीयौ सुधा रस नीर॥
तिक तिक हाँकै बैल खेत में छेड़ै रसिया
धनि–धनि धरती के गोपाल.......
रोज टपाटप खून पसीना माटी बीच बहावै।
बैलन के संग जुतै बैल सौ अपनौं धरम निभावै॥
बनी रहै मेरी डूँड़ी गैय्या बूढ़ी बधिया॥
धनि धनि धरती के गोपाल.....
फूटे घर टूटी छानन में मिलजुल करें बसेरौ।
दुख ते बीतै रात वीर की सुख ते होय सबेरौ॥
बोझ मूँड़ पै चलै ठाठ ते लैकें लठिया
धनि–धनि धरती के गोपाल.....
मलहारन की धुनि ते गूँजैं गली और चौपार।
गोरी झूम चलै ठसका ते लम्बौ घूँघट मार॥
छैल छबीलौ फबै देह पै लहँगा फरिया
धनि–धनि धरती के गोपाल........

–विवेकालय, बल्देव, जिला–मथुरा

—

तीनि अलबेले लोकगीत

– श्रीमती माधुरी शास्त्री

माखन कौ लुटैया

चोर–चोर आयौ देखौ, माखन कौ लुटैया रे।
चोर–चोर आयौ देखौ, किसन कन्हैया रे।
बासंती प्रसूनन के चोर लीन्हें रंग सारे,
कहां तौ फिरै पीताम्बर कौ पहरैया रे।
मोरन के पंख मोर मुकुट पै सजैया रे,
मुस्कान चोर लीन्ही काहू नव परणीता की॥
गोपिन कौ चित्त चोरयौ राधे की ओट बैठि

ऐसौ ठगराज मोहन, लुक्यौ बैठ्यौ ओट गैयन की।
गोपिन के वस्त्र चोरे देखौ या ढिटैया नैं,
जमुन जल कौ रंग चोर्‌यौ, कालिया नथैया नैं।
दुनियाँ कौ चित्त चोर, हियरा में लुकानौ बैठ्यौ,
ऐसें जैसें ताते दूध में मलैया रे॥
चोर-चोर आयौ देखौ, बंसी कौ बजैया रे
रास कौ रचैया रे, दधि माखन कौ लुटैया रे।

—

नटखट स्याम

मन लै चल मोहि गुपाल के गाम
देखन चाहत इन आँखिन तें
वेणु बजावत नटखट स्याम।
कैसें जसुमति दही बिलोवति
कैसें माखन चाखत है स्याम
कौनसी गोरी के भाग जगावत
कैसी मटकी फोरत है स्याम।
कैसे उरझाकर वो राखत
कैसें मारत प्रीति के बान
हर गोपिन के मन माँहि मोहन
कैसें प्रीति निभावत राम।
कौनसे मधुवन रास रचावत
वेणु अलापत कैसी तान
देखन चाहत 'माधुरी' मूरत
और राधे कौ मनोहर मान।
छोड़न चाहूँ या जग बंधन
रहिबौ चाहूँ नंद के धाम
मन लै चल मोहि गुपाल के गाम॥

—

सासू

काऊ दिन देख लऊँगी सासू
तैनें बहुत सतायौ मोय।
हाँ तैनें बहुत खिजायौ मोय,
तैनें बहुत रुवायौ मोय। काऊ.....
दिन–दिन भर मोसौं चाकी चलवाई
खावन दियौ नांहि कौर। काऊ दिन.....
लै रसरी मोहि कुइयाँ भेजौ
संग कपड़न की पोट।
धोवत–धोवत सांस उखर गई
मैं है गई बेहोस। काऊ दिन......
बारी उमर मोहे ब्याह कें लाई
गज भर घूंघट और।
तपती धूप ढोरन संग भेजी
खुद सोई जवार्यां ओट। काऊ दिन....
बात–बात मोहे गुलचा मारै
ऊपर से धक्का धोर
अबतौ तेरी एक सुनूँ ना
बहुत सता चुकी मोय। काऊ दिन.....

–सी–8, पृथ्वीराज रोड, सी–स्कीम, जयपुर

—

होरी के द्वै लोकगीत

–श्रीमती विनोदकुमारी 'किरन'

अबके बरस भई जो होरी

अबके बरस भई जो होरी
याकी तौ कछु कही ना जाय।

सुसर लगै देवर होरी में
काहू की यहां पेस ना खाय॥
रंग गुलाल अबीर उड़ायौ
नैनन मारी तिरछी मार।
तक-तक कै मारी पिचकारी
कमर लचक गई यार हजार॥
रसिया ठाड़ौ कौ ठाड़ौ रह गयौ
गोरी नैं गागर दीन्ही डार॥
कारौ पीरौ है गयौ रसिया गोरी दूर खड़ी हरसाय॥
अबके बरस........
अबकै दाव लग्यौ रसिया कौ
घर लीन्हीं बरसाने नार।
रंग गुलाल अबीर मल्यौ
और गालन गुलचा दीन्हें चार॥
रंग की कमोरी हाथ में लै लई
केसर गागर दीन्ही डार
गोरी के हाथ की हरी हरी चुड़ियाँ रसिया नैं दीन्हीं मुरकाय॥
अबके बरस.........
गोरी के माथे कौ बैना भीज्यौ
गालन बह रही रंग की धार।
काजर बेंदी लाली मिस्सी
काहू की ना रही दरकार॥
लहँगा भीज्यौ चूनर भीजी
चोली की कछू कही ना जाय।
गोरी आँखिन में सरमाय रही रसिया दूर खड़ौ मुस्काय॥
अबके बरस.........

—

या होरी की अजब बहार

होरी तौ हर बरस भई पर या होरी की अजब बहार
परकैं तौ वानें साँकर दै लई

अबकैं खोले झंझन किवार।
या होरी की अजब बहार॥
दस मन तौ मैंनें केसर घोरी
नौ मन लियौ अबीर गुलाल।
पिछले बरस वो कोठे में छिप गई
अबकैं चढ़ी अटरिया नार।
या होरी की अजब बहार.....
पंचरंगी चूनर में सज रही
नथनी में जड़ रहे हीरा लाल।
नैंनन परे गुलाबी डोरा
रूप रह्यौ वाकौ झलका मार।
या होरी की अजब बहार.......
टोली में ते निकस कैं रसिया
पहौंचि गयौ गोरी के द्वार।
हिलमिल कैं फिरि होरी खेली
रंग की परी तगड़ी बौछार।
होरी तौ मैनें बरसन खेली
या होरी के रंग हजार॥
या होरी की अजब बहार.......

—द्वारा डॉ. एस.एल. शर्मा
मारू मन्दिर के सामने वाली गली में, सीकर (राजस्थान)

—

द्वै लोकगीत

—श्री चैतन्य शास्त्री

प्रेम कौ हिण्डोलनौ

पावन देस मेरौ प्रेम कौ हिण्डोलनौ।
केसरिया चूनरिया पै, हिमगिरि सी बादरिया पै,

रिमझिम–रिमझिम, घूँघट सौ खोलनौ ॥ पावन.....
कास्मीर सी याला याकी देवदार सी चोटी जी,
गेहूँ, चना, बाजरा, मक्की घर–घर खवती रोटी जी
भोरे–भोरे जन–मन सारे इज्जत धरैं कसौटी जी
जग कूँ पढ़ायौ भैया या प्रेम ते बोलनौ
पावन देस मेरौ प्रेम को हिण्डौलनौ..॥ 1 ॥
गंगा जमना की धारा, देवन की भूमी जू
राम और श्याम जू के चरनन कौं चूमी जू
संत और तपसिन की श्रद्धा–ज्ञानी धूनी जू
करम कूँ सिखायौ यानैं ताखरी पै तोलनौ
पावन देस मेरौ प्रेम को हिण्डोलनौ.....॥ 2 ॥
गौतम गाँधी कौ त्याग, भाग महावीर कौ
महाराना, बोस, भगत कौ राम शिवा वीर कौ
लक्ष्मी, दुर्गा, पद्मिनी सौ द्रोपदी के चीर सौ
याके कण–कण कौ भैया मोल अनमौलनौ ॥
पावन देस मेरौ प्रेम को हिण्डोलनौ..........॥ 3 ॥
ज्ञान कौ समन्दर काशी विस्वनाथ साम जू
श्रद्धा की फुलवारी सौ बन्यौ अवध रामजू
प्रेम की मल्हारन कौ विन्दावन गाम जू
होरी में स्याम रंग राधे पै उँडेलनौ ॥
पावन देस मेरौ प्रेम कौ हिण्डोलनौ.......॥ 4 ॥

—

हिम्मत नाँय हारी

रमलो तौ राम–राम बेजा दुखियारी
कबहूँ मिलै रोटी कबहूँ तरकारी,
याई राह बीत गई उमरिया उधारी ॥ रमलो....
बारी ही भोरी भारी खेली जब आँगना
ऊधम करयौ और पैसा दादा ते माँगना।
पढ़बे की बात सुनै तौ खेतन पै भाजनौ

अँखियन में कजरा सो मग्गड़पन आँजनों।
मैया की लाड़िली वो करती नाँय कान जी
याई राह बालपन में खेलि गुजारी ॥ 1 ॥ रमलो.....
जीवन की देहरी वाकूँ पूरी नाँय लाँघनी
लँहगा फरिया चुन्नी नित्त अम्मा ते माँगनी।
मैया करि आयो सगाई जमना के पार जी
कह–कह घर लाली दादा है गई हुसियार जी
सातों फेरन की बातें रमलो कहा जानती
याई राह देहरी ते ह्वै गई नियारी ॥ 2 ॥ रमलो.....
गृस्ती की चाकी चाली छोरीऊ छोरीजी,
आठन के ऊपर एक पायौ वर जोरी जी।
बालन नाँय कान धान कौ कछू नाँय करतौ जी,
बीरी चिलमैं पी पी कै दिन कारे करतौ जी।
मजदूरी करती रमलो, बच्चन कूँ पारती
हड्डिन कूँ कूट–कूट वा जीमती बिचारी ॥ 3 ॥ रमलो.....
करमन की खोट नाँय जानै, भागन कूँ कोसै जी,
क्षण–क्षण फिरऊ गिरवी हो, राम के भरोसे जी।
मन में वू सोचै निसदिन, दो अक्षर पढ़ लेती,
अनजाने अनचाहे सुख सौं फिर लड़ लेती।
चिन्ता में डूबै उतरै, खुद गलती मानै जी,
याई राह संकट पर हिम्मत नाँय हारी ॥ 4 ॥ रमलो.......

–रामदल व्यायामशाला
कृषि उपज मंडी, भीलवाड़ा–1

—

धूम जैपुर में मचाय आई

–श्री छुट्टन खां 'साहिल'

ऐसौ करिकैं गई मैं सिंगार, धूम जैपुर में मचाइ आई।
बड़ी चौपड़ पै घुंघटा उघार, सजन संग फोटू खिंचाइ आई ॥
जौहरी देखि के हंसन लागे, गोरे रूप कूँ परखन लागे

मेला सौ याजार में जुरिगौ टी.वी. पै मयौ परचार
फिलम की सी शूटिंग कराइ आई॥ ऐसौ करिकें......
चूनर, चोली पहन घाघरौ, जानै मैं देखी मयौ यावरौ
रसिया करन लगे रस यतियाँ, टम्पू में हैकें सवार
मुछैलन कूँ गूँठौ दिखाइ आई॥ ऐसौ करिकें गई.....
शहर गुलायी देखौ याँकौ, हरकोऊ मेरे मन में झांकौ
मायके में सखियन सौं कहूँगी, नैनन में कजरा कूँ डारि
मैं लोगन कै चूनौ लगाइ आई॥ ऐसौ करिकें.......
संइयाँ जानें कितकूँ सटकगौ, गलता पै मेरौ पाँव रपट गौ
दइया, मइया करन लागी मैं, एक छैला नैं लई पुचकार
पतौ वाकूँ घर कौ यताइ आई॥ ऐसौ करिकें.....
कोऊ कहै मोए चम्पा चमेली कोऊ नारि कहै अलयेली
चन्द्रमुखी कवियन नैं लिखि दई 'साहिल' नैं लिख दई कटार
रपट थाने में लिखाइ आई॥ ऐसौं करिकें गई.....

—मंडी याजार, कामां (भरतपुर)

—

जमाने के चार लोकगीत

—श्री वेदप्रकाश शर्मा 'वेदल

मैं तौ करूँगी पढ़ाई अपने नाम कूँ

प्यारी है रह्यौ भारी हेला, लग रह्यौ साक्षरता कौ मेला अपने काम कूँ।
मैं तौ करूँगी पढ़ाई, अपने नाम कूँ॥
दुनियाँ दे रही है जैकारौ,
पढ़िवे आय गयौ हरवारौ।
मैंनें सिगरौ काम संवारौ।
मोते कहन लगौ घरवारौ, चोखे काम कूं।
मत जइयौ तू सकारे, अपने गांव कूँ॥ मैं तौ करूँगी पढ़ाई, अपने नाम कूँ॥
पोथी पढ–पढ़ यने पटवारी,
उनकी इतरावैं घरवारी

पढ़िकैं इज्जत होय हमारी,
पीछे क्यों राखिंगी नारी, अपने पांव कूँ ॥ मैं तौ करूँगी पढ़ाई, अपने नाम कूँ ॥
औडर आय गयौ सरकारी।
अनपढ़ नाँय रहिंगे नर–नारी।
जड़ता की जंजीरें कट रहीं,
पोथी चौपारन पै बँट रहीं, सिगरे गांव कूँ ॥ मैं तौ करूँगी पढ़ाई, अपने नाम कूँ ॥
जब जनता कौ हियरा जागै।
डंकल पूंछ दबायकैं भागै
सिगरे मिट जाँएगे घोटाले।
नेतन के होंगे मुंह काले, पद के नाम कूँ ॥ मैं तौ करूंगी पढ़ाई, अपने नाम कूँ ॥

—

दिल्ली तू बनी महान

दिल्ली तू बनी महान, पल रही है खून हमारे ते।
तेरी रग–रग में छल छायौ है।
ऊपर ते डंकल आयौ है॥
मांथे पै करज बढ़ायौ है।
भारत कौ सीस झुकायौ है॥
तैनें नैंक न करी संभार, पल रही है खून हमारे ते॥ 1 ॥
नेता सग मौज उड़ावत हैं।
कुर्सी पै पैर जमावत हैं॥
हर्षद जैसे पल जावत हैं।
जो बैंकन कूँ लुटवावत हैं॥
तेरौ नांय कोई एतबार, पल रही है खून हमारे ते॥ 2 ॥
है भूख गरीबी बेकारी।
करतूत करीं तैनें कारी।
जनता पिस रही है बेचारी।
पग–पग पै बढ़ रही लाचारी॥
कर रहियै बंटाधार, पल रही है खून हमारे ते॥ 3 ॥
कालौ धन तैनें जोरौ है।

दल-दल मै शासन चोरी है॥
अपराध करावै तू भारी।
जल रही है केसर की क्यारी॥
तोपै भरी ना एक दरार, पल रही है खून हमारे से॥ 4 ॥

—

घूँस सौं का डरनौ

कुर्सी पै जम मौज उड़ावैं, खून रहे हैं चूस।
घूँस सौं का डरनौ॥
धन की महिमा ऐसी बढ़ गई, होय दफ्तर में पूँछ।
घूँस सौं का डरनौ॥
चमचा अपनौ काम बनावैं, उनकौं भारी छूट
छूट कौ का कहनौ॥
छीना झपटी, सीना जोरी, मच रही चहुँ दिशि लूट।
लूट कौ का कहनौ॥
फाइल दब गई, देह पजर गई, बिन नोटन की चोट।
चोट कौ का कहनौ॥
भूखे मर रहे, होठ चिपक रहे, हम पै मची कहा खोट।
खोट कौ का कहनौ॥
अफसर माँगे, बाबू माँगे लै चन्दन की ओट।
ओट कौ का कहनौ॥
प्रजातंत्र में, लोकतन्त्र में, सबहूँ लगा रहे वोट।
वोट कौ का कहनौ॥
घूँस कौ [illegible] मन में [illegible] [illegible] [illegible] रहे [illegible]।
[illegible] कौ का कहनौ॥
चोर-चोर मौसेरे भाई, [illegible] [illegible] में [illegible]।
[illegible] कौ का कहनौ॥
हर दफ्तर की हर टेबिल पै, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] कौ का कहनौ॥

तेरी देखै बाट मुरारी

राधा वंशीवट पै आय जइयौ, तेरी देखै बाट मुरारी।
तेरी देखै बाट मुरारी.......
सुनलै री वृषभानु दुलारी।
तू मोकूं प्राणन ते प्यारी॥
तो बिन चैन कहाँ मैं पाऊँ।
जैसे–तैसे रैन विताऊँ॥
वंशी के बोलन पै राधा, नाच दिखायवे आय जइयौ।
तेरी देखै बाट मुरारी......
तेरी छवि ते मन हरषावै।
काहे तू मोकूँ तरसावै॥
तो बिन माखन कौन खवावै।
बाँसुरिया हू विरहा गावै॥
तेरी मेरी ´ ेरी मिल जाय, माखन मोय खवाय जइयौ।
तेरी देखै बाट मुरारी........
जो राधा तेरी सखियाँ पूछैं।
तोते काऊ दिना जो रूठें॥
उलटी सीधी ब ा बनावैं।
मोतें लड़वे कूँ उकसावैं।
बिनकूँ सींग बतायकै राधा, मेरी पीर मिटाय जइयौ।
तेरी देखै बाट मुरारी........
कुंजन में हम रास रचावैं।
इक दूजे कूँ गले लगावैं॥
नहीं करूंगी तेरी चोरी।
राधा गोरी तू है भोरी॥
मेरी प्राणन प्यारी, अपने मीठे बोल सुनाय जइयौ।
तेरी देखै बाट मुरारी........

–प्रधानाध्यापक
रा.मा.वि. गुलपाड़ा वाया सीकरी (भरतपुर)

द्वै लोकगीत

—श्री सर्वोत्तम त्रिवेदी 'लघु'

नाज ते सब्जी मत लइयो

सब्जी मति लइयो, चमेली, सब्जी मति लइयो।
वेचिवे वारौ वेईमान, नाज ते सब्जी मति लइयो॥
मोटे छलना ते छानैगौ।
आधौ करिकैं ही मानैगौ।
अपनी ही अपनी तानैगौ।
फटकैगौ फिर, तोल में कम तोलै वेईमान।
आधौ भाव लगायगौ, तू ये हू तौ जान॥
पाँच रुपा में, एक रुपा की सब्जी मति लइयो।
वेचिवे वारौ वेईमान, नाज ते सब्जी मति लइयो॥
सब्जी मति........
सब्जी भाव लगावै दूनौ।
मावस की कर देयगौ पूनौ।
वासी देय, लगावै चूनौ।
मारैगौ फिर तोल में, भरै न वाकौ पेट।
खून चूस सीधेन कौ, वननौ च्हावै सेठ॥
याकौ मोटौ पेट, भूलकैं सब्जी मति लइयो।
वेचिवे वारौ वेईमान, नाज ते सब्जी मति लइयो॥
सब्जी मति.......

—

ज्यौं चंदन में गंध रमै

ज्यौं चंदा सँग रहै चाँदनी, तैसेही चिमटि रहूंगी रे।
ज्यौं सूरज सँग रहै रोसनी, तैसेही सिमटि रहूंगी रे॥
मेरे प्यार सागर, साजन! मैं सरिता वन जाऊँगी।

तेरी देखै बाट मुरारी

राधा वंशीवट पै आय जइयौ, तेरी देखै बाट मुरारी।
तेरी देखै बाट मुरारी.......
सुनलै री वृषभानु दुलारी।
तू मोकूं प्राणन ते प्यारी॥
तो बिन चैन कहाँ मैं पाऊँ।
जैसे–तैसे रैन बिताऊँ॥
वंशी के बोलन पै राधा, नाच दिखायवे आय जइयौ।
तेरी देखै बाट मुरारी......
तेरी छवि ते मन हरषावै।
काहे तू मोकूँ तरसावै॥
तो बिन माखन कौन खबावै।
बाँसुरिया हू बिरहा गावै॥
तेरी मेरी ˉ ेरी मिल जाय, माखन मोय खबाय जइयौ।
तेरी देखै बाट मुरारी........
जो राधा तेरी सखियाँ पूछैं।
तोते काऊ दिना जो रूठैं॥
उलटी सीधी ब। । बनावैं।
मोते लड़वे कूँ उकसावैं।
विनकूँ सींग बतायकै राधा, मेरी पीर मिटाय जइयौ।
तेरी दैखै बाट मुरारी........
कुंन्जन में हम रास रचावैं।
इक दूजे कूँ गले लगावैं॥
नहीं करूंगौ तेरी चोरी।
राधा गोरी तू है भोरी॥
मेरी प्राणन प्यारी, अपने मीठे बोल सुनाय जइयौ।
तेरी देखै बाट मुरारी........

—प्रधानाध्यापक
रा.मा.वि. गुलपाड़ा वाया मीकरी (भरतपुर)

विना पंख उड़ रहे हवा मैं भूल जगत आधार॥ बुरौ है.......
गन्दौ भयौ चरित्र देश कौ पनपौ देह व्यौपार।
आदर्शन कूँ भूल सभी नैं वेशर्मी लई धार॥ बुरौ है.........
भूले प्रीत अतीत रीत अब हर घर के नर नार।
'कमलसिंह' अब का विधि होवै जीवन नैय्या पार॥ बुरौ है......

—

होरी में

रसिया नैं लूट लियौ सबरस, होरी में

छल करकैं छलिया नै पकरी।
कीनी मोसौं खूब मसखरी।
कहती रह गई मैं बस बस, होरी में।
रसिया नैं.......
भर कैं लायौ रंग बोरी में।
रंग डारी मैं रंग रोरी में।
पिचकारी मारी कस–कस होरी मैं।
रसिया नें,........
हली चली ना ऐसी कर दई।
या होरी मैं लाजन मर गई।
ढीली कर दीनी नस–नस, होरी में।
रसिया नैं.....
छोड़ी ना ओढ़ी निठुराई।
'कमल' बहुत मैंनें हा हा खाई।
लूट लियौ जोवन हँस–हँस होरी में।
रसिया नैं लूट लियौ सब रस.........

—

मोहन नैं आय आँख मीची टोरी में

पहल–पहल मैं ब्याही आई।
रीति रिवाज जान ना पाई।

सरम सौं नजर करी नीची होरी में। मोहन........
छलिया नैं कीनी हुश्यारी
छुपके सौं रंग में रंग डारी।
कौरी मैं भर कैं भीची, होरी में। मोहन नैं....
मीठी–मीठी बात बनाई।
चाल समझ याकी ना पाई।
खवाय दई मौकूं लीची, होरी में। मोहन नै......
रंग कीच भई मेरे अंगना।
टूट गिरौ झरपट में कंगना
कर गह कीच बीच होरी में। मोहन नैं.........
बड़ी अनौखी ब्रज की होरी।
'कमल' करी पूरन बर जोरी।
सहज सहज करकैं सींची, होरी में। मोहन नैं......
मोहन नैं आय आँख......

—

दरस कराय ला लांगुरिया

मेलौ लग रहौ देवी मइया पै दिखायला लांगुरियां।
दिखायला लांगुरिया दरस कराय ला लांगुरिया॥
जग जननी देवी मइया की महिमा अगम अपार।
आदि न अन्त अनन्त है रे सदां सुक्ख कौ सार॥
मेलौ लग रहौ......
अष्टभुजा धारी मैय्या कौ देव करैं गुनगान।
संकट हरनी मंगल करनी देय साँचौ वरदान॥
मेलौ लग रहौ.......
ऊँचे गिर पै मन्दिर प्यारौ लाल ध्वजा लहराय।
सोने के सिंहासन राजत मैय्या सिंह सजाय॥
मेलौ लग रहौ......
दूर–दूर सौं आँय भक्त गण होंवै भीड़ अपार।
घन्टन की घनघोर होत नित गूँजै जै–जै कार॥

मेलौ लग रहौ......
'कमल' सदा सुख दैवे वारी जग जीवन आधार।
भक्तन के संकट टारन कूँ धारौ ये अवतार॥
मेलौ लग रहौ..........

—

परे हैं हिंडोला

बागन में छायौ सावन, परे हैं हिंडोला।
गौरा के संग में झूलैं झूला पै भोला॥
घेर घुमेर नभ मैं उमड़ैं घटाऐं।
इन्द धनुष अपनी बिखेरै छटाऐं।
नाँचै है धरनी अम्बर गावै छन्द रोला॥
गौरा के संग......
सहज–सहज सखियाँ झोटा लगावैं।
मधुर मल्हार गायकै नाँच दिखावैं।
झाँकी कूँ लख कैं मनुआ लेवै हिचकोला॥
गौरा के संग......
अमुआ की डारी कारी कोयलिया बोलै।
पपिहा की पी पी मन में मिसरी सी घोलै।
पुरवाई खुशबू लावै भर भर कै झोला॥
गौरा के संग....
बरसावै बदरी कारी रिमझिम बुंदरिया।
झूलत में उड़ उड़ जावै गोरा की चुंदरिया।
'कमल' फूल सौं होय कोमल दर्शन सौं चोला॥
गौरा के संग में झूलै झूला पै भोला........

—कन्हैया पान भन्डार, कामां

—

चार लोकगीत

—डॉ. राम प्रकाश 'सुमन

प्रीति कौ रंग बरसै

प्रीति कौ रंग बरसै, सब रहियौ रे हुसियार।
प्रीति कौ हरे–हरे फाग कौ रंग बरसै॥
फागुन आयो रे मन भावन, अंगन भरी उमंग।
भरि–भरि तान चंग संग नाचें, मदन करत लाचार॥
प्रीति कौ..........
हरौ अबीर उड़ि रह्यौ नभ में, पीरौ लाल गुलाल।
तकि कंचुकि पिचकारी मारें, नेह भरे हुरियार॥
प्रीति कौ...........
लाल–लाल टेसू फूले हैं, सेमल हुइ रहे लाल।
बन–बागन में कोइल कूकति, हिए जगावत मार॥
प्रीति कौ............
बागन में अमवा बौराए, इत रसिया बौराए।
बौराए रसिया ना आए, घेरि रहे हुरियार॥
प्रीति कौ.............
जिय तरसै मन तड़फै भारी, उमरि रही ना बारी।
कैसें मन में धरूँ धीर में, फूलि रही कचनार॥
प्रीति कौ..............
कली–कली पै भँमरा डोलें, रस लोलुप मदमाते।
तितली "सुमन" सुमन पै डोलै, खूब लुटावै प्यार॥
प्रीति कौ........

—

भली मनैगी फाग

संदेसौ आइ गयौ रे, मेरी भली मनैगी फाग।
सदेसौ हरे–हरे सदेसौ आइ गयौ..............

पिय आवत संदेश पाइ कैं, हिय में अति हुलसानी।
छम-छम पग पायल याजत हैं, मधुर होत झनकार॥
संदेसौ आइ गयौ...........
बिधुरे-बिधुरे केस सँवारति, रचि-रचि माँग बनावै।
बीच माँग सिन्दूर लगावै, बेंदी रचत लिलार॥
संदेसौ आइ गयौ............
मधुर मिलन की सोचि-सोचि कैं, तन-मन फूलौ भारी।
कंचुकि के बंधन सब टूटे, जाग गयौ तन मार॥
संदेसौ आइ गयौ.............
"सुमन" सहेली सब बूझति हैं, कछू सँदेसौ आयौ।
हँसि मुसकाय कहत सैनन सौं, कल आवैं भरतार॥
सँदेसा आइ गयौ.............

—

एकता की होरी

सब गले मिलौ हरसाय, एकता की होरी।
राष्ट्रीय त्यौहार हमारौ, सिग भारत में होरी।
जन-जन सब जन गले मिलत ही, भेद-भाव मिटि जाय॥
एकता की होरी.........
हिन्दू-मुस्लिम सिख ईसाई सभी यहाँ है भाई।
भाईचारौ इत होरी में, और अधिक बढ़ि जाय॥
एकता की होरी..........
सिक्ख और हिन्दुन में झगरा, दोनन कौं दुखदाई।
हिल मिल कैं सब रहौ परस्पर होरी [illegible]॥
एकता की होरी.........
हिन्दू-मुस्लिम कबहुँ [illegible]
मिल-जुल के [illegible]
एकता की [illegible]
आजु [illegible]

सब देसन सौं करौ मित्रता "सुमन" सँदेसा पाय॥
एकता की होरी...........

—

सपरी

नाँहि अब हम पै जोग सधैगौ ऊधौ, कैसैं सपरी?
इक मन गयौ स्याम संग ऊधौ, मथुरा जबै पधारे।
दुसरौ मन मोपै है नांहीं, ध्यान धरें कहु का रे॥
कैसैं आराधें निरगुनियाँ.............कैसैं सपरी॥
जाऔ ऊधौ लौटि मधुपुरी, ऐसौ जतन विचारौ।
काहू विधि लै लाऔ मन कौ, साधें जोग तिहारौ॥
सब कौ मन ही है मोहनियाँ.....कैसैं सपरी॥
आँखें मूँदि ध्यान में बैठे, कछू न हमकौं दीखै।
कारे–कारे अंधकार में, स्याम–स्याम ही दीखै॥
लागी निर्गुन नाहिं लगनियाँ......कैसैं सपरी॥
कैसैं साधें जोग तिहारौ, कैसें भसम लगावें।
गोरे कोमल अंग हमारे, नंगी क्यों हुइ जावें॥
शरम में मरि हैं सबै गुजरिया.........कैसैं सपरी॥
हम सुकुमार जोग के लायक, तुम ही तनिक विचारौ।
लाज सरम तुमनें सब खोई, गयौ विवेक तिहारौ॥
तुमरी जोग पै लगनियाँ..........कैसैं सपरी॥
जोग पंथ तलवार–धार है, हम कैसैं चलि पैइ हैं।
शुक सनकादि ऋषि सब भूले, अबला कैसैं जैइ हैं॥
नांहिं है हम पै कोउ जतनियाँ..........कैसें सपरी॥
निराकार अज अलख अगोचर, मेरे मन नहिं भावै।
जाकौ रूप रंग बपु नाहीं, ताकौं कैसैं ध्यावै॥
साँची है सबको हैरनियाँ.........कैसैं सपरी॥
ऊधौ! निर्गुन ब्रह्म तिहारौ, तुम ही मन में ध्याऔ।
सगुन ब्रह्म वह स्याम सलौनौ, मथुरा ते लै आऔ॥

हम तौ सब हैं यहाँ सगुनियाँ........कैसैं सपरी॥
चित-वृत्ति को रोकि सकैं ना, जोग कठिन है थारौ।
'सुमन' साँच हम कहैं झूठ ना, ऐसी मतौ हमारौ॥
लागी स्याम पै लगनियाँ..........कैसैं सपरी॥

—[illegible]

—

तीन लोकगीत

— श्री [illegible]

तू काहे रही घबराय

नारि मेरी पढ़ये ते तू काहे रही घबराय।
अनपढ़ जन कौ नाँय जमानौ, रयौ तोय बतराय।
मानव कौ कल्यान जगत में, ज्ञान बिना है नाँय॥ नारि मेरी___।
बिना पढ़े की बड़ी मुसीबत, दुविधा में पर जाय।
जैसैं आँधौ मूसौ घर में, भरभेरी सी खाय॥ नारि मेरी___।
परै जरूरत जब रुपियन की, झट उधार लै आय।
हौंय ब्याज के आठ परंतु, तू अस्सी दै आय॥ नारि मेरी___।
ह से हिन्दू, म से मुस्लिम, ए से एक बनाय।
ग गंगा, ज जमुना मैया, हियरा में लहराँय॥ नारि मेरी___।
प परिवार नियोजन बोलैं, भ से भारत माय।
स से साक्षरता अपनावैं, जनम सफल है [illegible]। नारि मेरी___।

—

बाजै, ढोलक, [illegible]

बाजैं ढोलक चंग बंसुरिया, कैसी [illegible]
डल्ला की बहू नैं इक जायौ, सुघर [illegible]
मनोकामना पूरन है गयी, है गये [illegible]।

खुल गई नागन की किवरिया, कैसी जनकैं
बाजैं ढोलक..........................॥
नामकरन जब भयौ लाल कौ, लखन धरौ है नाम।
अपरम्पार खुशी है मन में, छलक रहे हैं जाम॥
सिगरी भीगी है चुंदरिया, कैसी जनकैं।
बाजैं ढोलक..........................॥
लखन लाल की दादी बत्तो, बाबा हीरालाल।
बाँट रहे खुश हैकैं भर-भर, ये लडुअन के थाल॥
पुलकित है रही आज नगरिया, कैसी जनकैं।
बाजैं ढोलक..........................॥
कुआ पूजन होय साँझ कूँ, सबके थिरकैं पाम।
रामकिशन बाजे वारिन कूँ, लुटा रयौ है दाम॥
लैकैं रुपियन की पुटरिया, कैसी जनकैं।
बाजैं ढोलक..........................॥
पार परोसिन झूम-झूम कैं, जच्चा रहीं गवाय।
सावित्री नानी तौ देखौ, फूली माँय समाय॥
पहरें डोलै लहँगा फरिया, कैसी जनकैं।
बाजैं ढोलक..........................॥
कमला बहन, बुआ रमकल्ली, मंद-मंद मुस्काय।
मीठी-मीठी बोलैं बानी, मन में मोद मनाँय
बजानें ये तौ बेला थरिया, कैसी जनकैं।
बाजैं ढोलक..........................॥
चाचा मेताराम अरु भैया, मोहन यूँ बतराय
समझ ना आवै यार हमारे, का छोड़ैं का खाय।।
धरकैं बैठे हैं, छबरिया कैसी जनकैं
बाजैं ढोलक..........................॥
नाची अबर हवा में उड़ती, काऊ गिदानैं नाँय।
सबते कहती डोलै दुनियाँ, मेरी जेब के माँय॥
जाकी तिरछी है नजरिया, कैसी जनकैं।
बाजैं ढोलक..........................॥

मोहनी ताई सबते न्यारी, बन गई छम्मक छल्लो।
अँगरेजी में बोलै सबते, माई डियर हल्लो।।
होवै सुबह शाम दुपरिया, कैसी जमकैं।
बाजैं ढोलक..........................॥
'ब्रजवासी' कवि एक मनौती, प्रभु सौं सदा मनाय।
ऐसी सुंदर और शुभघड़ी, हर काऊ कैं आय।।
सुख ते कट जावै उमरिया, कैसी जमकैं।
बाजैं ढोलक..........................॥

—

बस गई मनुवा में ब्रज होरी रे

बस गई बस गई रे, मनवा में ब्रज की ये होरी रे॥
मोहन अकेलौ, सखियन नें घेरौ।
कर–कर तोरी रे॥ मनवा में ....॥
केशर मली, रंग छक–छक डारै
भर–भर कमोरी रे॥ मनवा में.........................॥
ग्वारिन बनायौ कन्हैया कूं सबनैं,
कर बरजोरी रे॥ मनवा में............................॥
मन में सिहावै दै–दै कैं तारी,
हँस–हँस किशोरी रे॥ मनवा में......................॥
रूप बिगार कहै, पुनि अइयो,
खेलन होरी रे॥ मनवा में............................॥
'ब्रजवासी' पा दरस, धन्य कर
जीवन झोरी रे॥ मनवा में.......................... .॥

–कामां (भरतपुर)

—

अपने घर कौ खावैं पहरैं, तौ भर जावै गागरिया

–पं. रमेशचन्द्र भट्ट 'चन्द्रेश'

भाभी– हमकूँ माल विदेसी मन भावन लै अइयो देवरिया।
लइयो देवरिया, हाट कूँ जइयो देवरिया।

खुल गई भागन की किबरिया, कैसी जमकैं
बाजैं ढोलक..........................॥
नामकरन जब भयौ लाल कौ, लखन परौ है नाम।
अपरम्पार खुशी है मन में, छलक रहे हैं जाम॥
सिगरी भीगी है चुंदरिया, कैसी जमकैं।
बाजैं ढोलक..........................॥
लखन लाल की दादी बत्तो, बाबा हीरालाल।
बाँट रहे खुश हैकैं भर–भर, ये लडुअन के थाल॥
पुलकित है रही आज नगरिया, कैसी जमकैं।
बाजैं ढोलक..........................॥
कुआ पूजन होय साँझ कूँ, सबके थिरकैं पाम।
रामकिशन बाजे बारिन कूँ, लुटा रयौ है दाम॥
लैकैं रुपियन की पुटरिया, कैसी जमकैं।
बाजैं ढोलक..........................॥
पार परौसिन झूम–झूम कैं, जच्चा रहीं गबाय।
सावित्री भाभी तौ देखौ, फूली नाँय समाय॥
पहरें डोलै लहँगा फरिया, कैसी जमकैं।
बाजैं ढोलक..........................॥
कमला बहन, भुआ रमकल्ली, मंद–मंद मुस्काय।
मीठी–मीठी बोलैं बानी, मन में मोद मनाँय
बजामें ये तौ बेला थरिया, कैसी जमकैं।
बाजैं ढोलक..........................॥
चाचा नेताराम अरु भैया, मोहन यूँ बतराय
समझ ना आबै यार हमारे, का छोड़ैं का खाय।।
धरकैं बैठे हैं, छबरिया कैसी जमकैं
बाजैं ढोलक..........................॥
भाबी अधर हवा में उड़ती, काऊ गिदानैं नाँय।
सबते कहती डोलै दुनियाँ, मेरी जेब के माँय॥
जाकी तिरछी है नजरिया, कैसी जमकैं।
बाजैं ढालक..........................॥

मोहनी ताई सबते न्यारी, बन गई छम्मक छल्लो।
अँगरेजी में बोले सबते, माई डियर हल्लो।।
होवै सुबह शाम दुपरिया, कैसी जमकैं।
बाजैं ढोलक...........................॥
'ब्रजवासी' कवि एक मनौती, प्रभु सौं सदा मनाय।
ऐसी सुंदर और शुभघड़ी, हर काऊ कैं आय।।
सुख ते कट जावै उमरिया, कैसी जमकैं।
बाजैं ढोलक...........................॥

—

बस गई मनुवा में ब्रज होरी रे

बस गई बस गई रे, मनवा में ब्रज की ये होरी रे॥
मोहन अकेलौ, सखियन नें घेरौ।
कर–कर तोरी रे॥ मनवा में ....॥
केशर मली, रंग छक–छक डारै
भर–भर कमोरी रे॥ मनवा में.......................॥
ग्वारिन बनायौ कन्हैया कूं सबनै,
कर बरजोरी रे॥ मनवा मे..........................॥
मन में सिहावै दै–दै कै तारी,
हँस–हँस किशोरी रे॥ मनवा में.....................॥
रूप बिगार कहैं, पुनि अइयो,
खेलन होरी रे॥ मनवा में...........................॥
'ब्रजवासी' पा दरस, धन्य कर
जीवन झोरी रे॥ मनवा में..........................॥

—कामां (भरतपुर)

—

अपने घर कौ खावैं पहरैं, तौ भर जावै गागरिया

—पं. रमेशचन्द भट्ट 'चन्देश'

भाभी– हमकूं माल विदेसी मन भावन लै अइयो देवरिया।
लइयो देवरिया, हाट कूं जइयो देवरिया।

देवर– घर में माल विदेसी कवहु भूल नहिं लाऊँ यावरिया।
लाऊँ यावरिया, कवहु नहीं लाऊँ यावरिया।

भाभी– पार परौसन साड़ी पहरैं, अँगरेजी फैसन की।
क्रीम पाउडर पोत–पोत, लावैं व्यूटि लेसन की।
माल विदेसी लाकैं सान वढ़इयो देवरिया।
हमकूँ माल विदेसी मन भावन लै अइयो देवरिया।

देवर- अरी यावरी माल विदेसी, पैसा जावै भारी।
पैसा जाय देस सौं याहर, जीवन की है ख्वारी।
वढ़ै देस पै कर्ज, कर्ज ते टूटै कामरिया।
घर में माल विदेसी कयहु भूल नहिं लाऊँ बावरिया।

भाभी– संग सहेली जुर मिल हमकूँ ताने दैं मुँह जोर।
यात–यात पै सींग दिखावैं ललचावत मन मोर।
ऐसी मेरी वेकदरी अय ना करवइयो देवरिया।
हमकूँ माल विदेसी मन भावन लै अइयो देवरिया॥

देवर– कारौ आँखर भैंस वरावर तू का जानै नारि।
पाँयन आप कुल्हाड़ी मारै, करै न सोच विचारि।
अपने घर कौ खावैं पहरैं तौ भर जावै गागरिया।
घर में माल विदेसी कयहु भूल नहिं लाऊँ यावरिया

–नीमघटा मौहल्ला
डीग, (भरतपुर)

—

मैं बालम वाय लुंगी

–डॉ. सत्येदव आजाद

जो हो महलों वारा, मैं वालम वाय लुंगी।
वी.ए. नाँय लुंगी, मैं एम.ए. नाँय लुंगी।
हाँSSS नाँय लुंगी, नाँय लुंगी
मैं वालम वॉय लुंगी, जो होय पैसा वारौ॥

मैं देवर वारौ नाँय लुंगी, जैठौ वारौ नाँय लुंगी।
हाँSSS नाँय लुंगी, नाँय लुंगी।
मैं वालम वाय लुंगी, जो होय घरउ अकेलौ।
कारौ–कारौ नाँय लुंगी, मैं गोरौऊ नाँय लुंगी।
हाँSSS नाँय लुंगी नाँय लुंगी
मै वालम वाय लुंगी, जो होय भोरौ भारौ॥
मेरठ वारौ नाँय लुंगी, नखलउआ नाँय लुंगी।
हाँSSS नाँय लुंगी, नाँय लुंगी
मैं वालम वाय लुंगी जो होय विरज कौ वारौ॥

–23/3, अर्जुनपुरा डीग गेट, मथुरा

—

तीन लोकगीत

– श्री छज्जूराम पाराशर

या देस की दसा सुधारौ

थोरौ–थोरौ देऔ सहारौ या देस की दसा सुधारौ।
आज अशिक्षा हमें हटानी, साक्षर सवहि वनाने हैं,
नन्हें मुन्ने वच्चा संग इस्कूलन में भिजवाने हैं,
ग्यान कौ सूरज चमकि उठै, भाजै अग्यान अँधारौ॥ या देस.॥
जनसंख्या पै करैं नियंत्रन, स्वस्थ हौंय सग नर नारी,
कठिन परिश्रम करैं खेत में, खूब वढ़ै पैदावारी,
हटै गरीवी खुसहाली होय, जिही हमारौ नारौ॥ या देस.॥
वाल विवाह दहेज प्रथा अरु नसा वन्द.करवानौ है,
रिस्वत खोरी चोर वजारी भ्रष्टाचार भगानौ है,
रोटी कपड़ा मकान दैकें सवकौ करैं गुजारौ॥ या देस.॥
उग्रवाद आतंकवाद नैं, करी देस की वरवादी,
भाई–भाई कौ खून वह रहौ, खतरा में है आजादी,
कासमीर, पंजाव अयोध्या, वनैं न मल्ल अखारौ॥ या देस.॥

देवर– घर में माल विदेसी कबहु भूल नहिं लाऊँ बाबरिया।
लाऊँ बाबरिया, कबहु नहीं लाऊँ बाबरिया।

भाभी– पार परौसन साड़ी पहरैं, अँगरेजी फैसन की।
क्रीम पाउडर पोत–पोत, लावैं ब्यूटि लेसन की।
माल विदेसी लाकैं सान बढ़इयो देवरिया।
हमकूँ माल विदेसी मन भावन लै अइयो देवरिया।

देवर– अरी बावरी माल विदेसी, पैसा जावै भारी।
पैसा जाय देस सौं बाहर, जीवन की है ख्वारी।
बढ़ै देस पै कर्ज़, कर्ज ते टूटै कामरिया।
घर में माल विदेसी कबहु भूल नहिं लाऊँ बाबरिया।

भाभी– संग सहेली जुर मिल हमकूँ ताने दैं मुँह जोर।
बात–बात पै सींग दिखावैं ललचावत मन मोर।
ऐसी मेरी बेकदरी अब ना करवइयो देवरिया।
हमकूँ माल विदेसी मन भावन लै अइयो देवरिया॥

देवर– कारौ आँखर भैंस बराबर तू का जानै नारि।
पाँयन आप कुल्हाड़ी मारै, करै न सोच विचारि।
अपने घर कौ खावैं पहरैं तौ भर जावै गागरिया।
घर में माल विदेसी कषहु भूल नहिं लाऊँ बाबरिया

–नीमघटा मौहल्ला
डीग, (भरतपुर)

—

मैं बालम वाय लुंगी

–डॉ. सत्येदव आजाद

जो हो महलों वारा, मैं बालम वाय लुंगी।
बी.ए. नाँय लुंगी, मैं एम.ए. नाँय लुंगी।
हाँऽऽऽ नाँय लुंगी, नाँय लुंगी
मैं बालम वॉय लुंगी, जो होय पैसा वारौ॥

मैं देवर वारौ नाँय लुंगी, जैठौ वारौ नाँय लुंगी।
हाँSSS नाँय लुंगी, नाँय लुंगी।
मै वालम वाय लुंगी, जो होय घरउ अकेलौ।
कारौ–कारौ नाँय लुंगी, मैं गोरौऊ नाँय लुंगी।
हाँSSS नाँय लुंगी नाँय लुंगी
मै वालम वाय लुंगी, जो होय मोरौ भारौ॥
मेरठ वारौ नाँय लुंगी, नखलउआ नाँय लुंगी।
हाँSSS नाँय लुंगी, नाँय लुंगी
मै वालम वाय लुंगी जो होय विरज कौ वारौ॥

–23/3, अर्जुनपुरा डीग गेट, मथुरा

–

तीन लोकगीत

– श्री छज्जूराम पाराशर

या देस की दसा सुधारौ

थोरौ–थोरौ देऔ सहारौ या देस की दसा सुधारौ।
आज अशिक्षा हमें हटानी, साक्षर सवहि वनाने हैं,
नन्हें मुन्ने वच्चा संग इस्कूलन में भिजवाने हैं,
ग्यान कौ सूरज चमकि उठै, भाजै अग्यान अँधारौ॥ या देस.॥
जनसंख्या पै करै नियंत्रन, स्वस्थ हौंय सग नर नारी,
कठिन परिश्रम करैं खेत में, खूब वढ़ै पैदावारी,
हटै गरीवी खुसहाली होय, जिही हमारौ नारौ॥ या देस.॥
वाल विवाह दहेज प्रथा अरु नसा वन्द.करवानौ है,
रिस्वत खोरी चोर वजारी भ्रष्टाचार भगानौ है,
रोटी कपड़ा मकान दैकैं सवकौ करैं गुजारौ॥ या देस.॥
उग्रवाद आतंकवाद नैं, करी देस की वरवादी,
भाई–भाई कौ खून वह रहौ, खतरा में है आजादी,
कासमीर, पंजाव अयोध्या, वनैं न मल्ल अखारौ ॥ या देस.॥

हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई, सग आपस में प्यार करैं,
जाति धर्म अरु सम्प्रदाय पै, बिना बात हम नाँय लरैं,
करैं आपसी झगरेन कौ हम, मिल जुल कैं निबटारौ ॥ या देस.॥
आन–बान अरु शान देस की, हरगिज ना घटने पावै,
अमर तिरंगौ सकल विश्व में, सगते ऊंचौ लहरावै,
भारत रहै अखण्ड सदा नाँय होय कबहू बटवारौ ॥ या देस.॥

—

फागुन की होरी

ग्वालन के संग सखी सामरौ गुपाल,
मारै पिचकारी अरु गेरत गुलाल॥
नांही करी मान्यौ नहिं, सखी सग सान दई,
रंग पिचकारी भरि श्याम तानि–तानि दई,
गोरी–गोरी गोपिन के रंग डारे गाल॥ मारै पिचकारी..॥
खेल सखि फाग रहीं, भीजि–भीजि भाग रहीं,
सामरे कौ संग सबइ जनम–जनम माँग रहीं,
झूम उठैं कामिनी नचाबै नंदलाल ॥ मारै पिचकारी...॥
राधे झकझोर दई, केसर में बोर दई,
मल्यौ है अबीर गात, माला हू तोर दई,
परस पाय प्रीतम कौ है गई निहाल ॥ मारै पिचकारी...॥
बाजै ढप ढोल चंग, झांझ नफीरी मृदंग,
अम्बर भयौ है लाल, देख सुर भये दंग,
नाच रही गोपी गीत गावैं ग्वाल बाल ॥ मारै पिचकारी..॥
सराबोर हैं बसन, रंग बिरंगौ बदन,
देह की न सुधि राधे प्रीति में भई मगन,
कहै सग कान्हा कैसौ करै री कमाल॥ मारै पिचकारी..॥

—

मेरौ भारत देस महान

मेरौ भारत देस महान, खेत जहाँ हरे भरे, खेत जहाँ हरे भरे॥
सुजला सुफला सस्य स्यामला, हरित पीत परिधान,

सागर चरन पखारै जाके, हिमगिरि मुकट समान,
धवल सिंगार करै, मेरौ भारत देस महान, खेत जहाँ हरे भरे॥
राम कृष्ण गौतम गाँधी की जे है पावन धरनी,
गंगा जमुना में न्हायये ते, पार होय वैतरनी,
अधम न तेऊ अधम तरे, मेरौ भारत देस महान्, खेत जहाँ हरे भरे॥
सदा रह्यौ सोने की चिरिया, रिसी मुनिन की खान
सत्य अहिंसा दया धरम कौ, दियौ विस्व कूँ ग्यान,
सकल सिद्धान्त खरे, मेरौ भारत देस महान, खेत जहाँ हरे भरे॥
रामायण गुरुग्रंथ बाइबिल गीता और कुरान,.
सर्वधर्म सम भाव सबहि कौ, करैं सदा कल्यान,
रहैं हिल मिल सगरे, मेरौ भारत देस महान, खेत जहाँ हरे भरे॥
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई सब हैं एक समान,
हम सबकौ है एक तिरंगा जैसौ अमर निसान,
सदा नभ में फहरे, मेरौ भारत देस महान, खेत जहाँ हरे भरे॥

–देहली गेट, कामां

—

रसीले लोकगीत

–श्रीमती ऊषा शर्मा

करेजा में लाग रही

करेजा में लाग रही, मेरौ जिया जानै।
सुनौ री सखि राजा तौ गये नौकरिया,
मैं धीरें–धीरें रोय रही ,मेरौ जिया जानैं।
सुनौ री सखि राजा नैं भेजी एक पाती,
मैं धीरें–धीरें बाँच रही, मेरौ जिया जानैं।
सुनौ री सखि राजा नैं भेजी एक साड़ी,
मैं धीरे–धीरे काछ रही, मैरौ जिया जानैं।
सुनौ री सखि राजा तौ लाये सौतनिया
मैं धीरे–धीरे झाँक रही, मेरौ जिया जानैं।

—

सैण्डिल तेरी चाल

सैण्डिल तेरी चाल चलूँ कैसैं धरती तोपै पैर धरूँ कैसैं
सुसर बिके जब मैं हौंती हँसि–हँसि कैं नोट गिनाय देती
सास बिकी जब मैं हौंती रोय–रोय कैं रुदन मचाय देती
सैंडिल तेरी........
जेठ बिके जब मैं हौंती हँसि–हँसि कैं नोट गिनाय देती
जिठानी बिकी जब मैं हौंती रोय–रोय कैं रुदन मचाय देती
सैंडिल तेरी.......
देवर बिके जब मैं हौंती हँसि–हँसि कैं नोट गिनाय देती
दौरानी बिकी जब मैं हौंती रोय–रोय कैं रुदन मचाय देती
सैंडिल तेरी.......

—

पसली कौ दरद

पसली कौ दरद मरी मइया, कनिया कौ दरद मरी मइया
मैं मरी मैं मरी मैं मरी मइया, कनिया कौ....
अपनी कौ सुसर बुलाय दउँगी ओ नहीं ओ नहीं ओ नहीं मइया
अपनी कौ जेठ बुलाय दउँगी ओ नहीं ओ नहीं ओ नहीं मइया
अपनी कौ देवर बुलाय दउँगी ओ नहीं ओ नहीं ओ नहीं मइया
अपनी कौ बलम बुलाय दउँगी ओ नहीं ओ नहीं ओ नहीं मइया
कनिया कौ दरद गयौ मइया, पसली कौ दरद गयौ मइया, पसली कौ....

—

पायलिया बजनी

पायलिया बजनी मंगादो पिया
मइया के बोल गोरी कैसे लगें
सासुल के बोल राजा ऐसे लगैं
जैसे कडवी कचरिया खिला दई पिया–पायलिया.....

भाभी कें बोल गोरी कैसे लगैं
जिठानी के बोल राजा ऐसे लगैं
जैसें चूल्हे में लकड़ी जराय दई पिया–पायलिया.....
छोटी के बोल गोरी कैसे लगैं
दौरानी के बोल राजा ऐसे लगैं
जैसें कपड़े कैंची चलाय दई पिया–पायलिया.....
मैना के बोल गोरी कैसे लगैं
नंदुल के बोल राजा ऐसे लगै
जैसें आंगन में घोड़ी नचाय दई पिया–पायलिया....
मेरे भी बोल गोरी कैसे लगें
जैसे चम्मच सौं रबड़ी खवाय दई पिया–पायलिया.....

—

इस पान फूल में बास नहीं

इस पान फूल में बास नहीं परदेशी पिया तेरी आस नहीं,
मैं लिख–लिख भेजूं साड़ी में, तुम आओगे कौनसी गाड़ी में
गोरी काहेकू भेजौ साड़ी में, मैं आऊँगौ मारुती गाड़ी में
इस पान फूल.......
मैं लिख–लिख भेजूँ नगीना में, तुम आओगे कौनसे महीना में
गोरी काहे कूँ भेजौ नगीना में, मैं आऊँगौ मई के महीना में
इस पान फूल ......
मैं लिख–लिख भेजूं जलेबी में, तुम आओगे कौनसी हवेली में
गोरी काहे कूँ भेजौ जलेबी में, हम आइंगे तुम्हारी हवेली में
इस पान फूल......
मैं लिख लिख भेजूं पतिया में, तुम आओगे कौनसी रतिया में
गोरी काहे कूँ भेजौ पतिया में, हम आईंगे पूनम की रतिया में
इस पान फूल.......

—

बिनु बालम नाँय कदर लुगाई की

हो हो हों हो शरण शहनाई की,
बिनु बालम नाँय कदर लुगाई की।
सिर के ऊपर सिरका अरु उसके ऊपर साईं का,
दो मिनटों में चाल को बदलै क्या विश्वास लुगाई का॥
हो हो ......
छन कन–कन के तीन घूघरा मेल सौं मेल मिलाय दऊँगी।
जो मोते सासुल लड़ै लड़ाई टूकन कूँ तरसाय दऊँगी॥
हो हो ....
छन कन–कन के तीन घूघरा मेल सौं मेल मिलाय दऊँगी।
जो मोते ससुरा लड़ै लड़ाई आंचन कूँ तरसाय दऊँगी॥
हो हो ....
छन कन–कन के तीन घूघरा मेल सौं मेल मिलाय दऊँगी।
जो मोते जेठजी रहै प्यार सौं भूरी भैंस बंधाय दऊँगी॥
हो हो........
छन कन–कन के तीन घूघरा मेल सौं मेल मिलाय दऊँगी।
जो मोते देवर रहै प्यार सौं छोटी भैन दिवाय दऊँगी॥
हो हो.......

—

हमारे राजा हमकूँ बतामें

हमारे राजा हमकूँ बतामें चन्दा चाँदनी ।
हमारे राजा हमकूँ बतामें लीला गोदनी ।
ससुर हमारे मालिन के नौकर, सास हमारी फुलवा तोड़नी
हमारे राजा हमकूँ ....
जेठ हमारे धोबिन के नौकर, जिठानी हमारी कपड़ा धोमनी
हमारे राजा हमकूँ........
देवर हमारे भरभूँजा के नौकर, दौरानी हमारी भार झौंकनी
हमारे राजा हमकूं.......
नंदेऊ हमारे भंगिन के नौकर, ननद हमारी गैल झारनी

हमारे राजा हमकूँ.....
वलम हमारे सरकारी नौकर, मैं तौ वैठी पलंग मौज मारनी
हमारे राजा हमकूँ.......

—

मैंनें मना करी बालम ते

मैनें मना करी वालम ते सड़क पै मत खेलौ सट्टा ।
सासऊ वेची सुसरऊ वेचौ वनवाय लियौ अट्टा ।
चढ़ अट्टा पै पितंग उड़ावै उल्लू कौ पट्टा ।
मैनें मना करी वालम ते......
जेठऊ वेचौ जिठानिऊ वेची वनवाय लियौ अट्टा ।
चढ़ अट्टा पै नैन चलावै उल्लू कौ पट्टा ।
देवर वेचौ दौरानिऊ वेची वनवाय लियौ अट्टा ।
चढ़ अट्टा पै भाभीयै छेड़ि फोरि रह्यौ ठट्टा॥

—होली गेट, सुन्द्रावली रोड, नगर (भरतपुर)

—

तीन लोकगीत

—श्री भूरीलाल

लाटरी

वहना ठगवे कूँ नर—नार चली भारत में लाटरी॥ टेक॥
चार सखी वैठी वतरामें अपने—अपने दुक्ख सुनामें
पहली कहै वात सुन दारी, पति नें वेचे लोटा थारी
फिर लायौ टिकट खरीद परी घर टूटी खाट री॥ वहना....
दूजी कहै जुलम पति कीयौ, टिकट खरीदी घर मर दीयौ
कवहु नाय लाटरी आई, ओढ़न कूँ घर नाँय रजाई
फिर वालक जाड़े मरें सखी हम ओढ़ें टाट री॥ वहना......
तीजी कहै फटौ जाय हीयौ, भैंस वेच दई करजा कीयौ

बिनु बालम नाँय कदर लुगाई के

हो हो हों हो शरण शहनाई की,
बिनु बालम नाँय कदर लुगाई की।
सिर के ऊपर सिरका अरु उसके ऊपर साईं का,
दो मिनटों में चाल को बदलै क्या विश्वास लुगाई का॥
हो हो ......
छन कन–कन के तीन घूघरा मेल सौं मेल मिलाय दऊँगी।
जो मोते सासुल लड़ै लड़ाई टूकन कूँ तरसाय दऊँगी॥
हो हो ....
छन कन–कन के तीन घूघरा मेल सौं मेल मिलाय दऊँगी।
जो मोते ससुरा लड़ै लड़ाई आंचन कूँ तरसाय दऊँगी॥
हो हो ....
छन कन–कन के तीन घूघरा मेल सौं मेल मिलाय दऊँगी।
जो मोते जेठजी रहै प्यार सौं भूरी भैंस बंधाय दऊँगी॥
हो हो........
छन कन–कन के तीन घूघरा मेल सौं मेल मिलाय दऊँगी।
जो मोते देवर रहै प्यार सौं छोटी भैन दिवाय दऊँगी॥
हो हो.......

—

हमारे राजा हमकूँ बतामें

हमारे राजा हमकूँ बतामें चन्दा चाँदनी ।
हमारे राजा हमकूँ बतामें लीला गोदनी ।
ससुर हमारे मालिन के नौकर, सास हमारी फुलवा तोड़नी
हमारे राजा हमकूँ ....
जेठ हमारे धोबिन के नौकर, जिठानी हमारी कपड़ा धोमनी
हमारे राजा हमकूँ........
देवर हमारे भरभूँजा के नौकर, दौरानी हमारी भार झौंकनी
हमारे राजा हमकूं.......
नंदेऊ हमारे भंगिन के नौकर, ननद हमारी गैल झारनी

कान्हा की सुन कै बानी, ब्रज वासिन के मनमानी
पूआ पकवान मिठाई, सब छकड़न में भरवाई
ब्रजबाला गावैं राग अधिक अनुराग चलैं हरखाई
श्री गोवर्धन गिरिराज पहुँच गये जाई....।
दरस परस हित नर नारिन अति मन में मोद मनायौ॥ ब्रज में.....
इक रूप चतुर्भुज धारौ, दूजौ श्री नन्द दुलारौ
कहैं दरसन करौ अघाई, गिरिराज पधारे आई
निज कर सौं भोग लगाय, चरन लिपटाय हर्ष अति सारौ
परिक्रम्मा रहे लगाय बोल जैकारौ।
'भूरीलाल' गिरिराज सरन में अति आनन्द मनायौ॥ ब्रज में.....

—

दधि चाखन दे मोय

मटकिया कोरी सी दधि चाखन दे मोय,
रोज गुजरिया तू आवै है सिर पै गागर भारी
ताजा-ताजा गोरस लावै टिक रही नजर हमारी
ग्वालनी छोरी सी, मैं सनझाँऊ तोय॥ मटकिया....
माखन कौ दै दान आज तू मतना देर लगावै
जो तू नाँहीं करै मनझलै फिर पीछैं पछतावै
बात है थोरी सी, पुन्न तेरौ अति होय। मटकिया.....
कहन हमारी पै सुन गोरी ध्यान नहीं जो लावै
सारौ दही छीन कै तेरौ ग्वाल बाल खा जावै
मचै फिर होरी सी, दोस न दीजौ मोय। मटकिया.....
तू तौ लाला नन्द राय कौ नित प्रति धूम मचावै
करै अनीती सखियन के संग लूट-लूट दधि खावै
करै बर जोरी सी, सरम न आवै तोय॥ मटकिया...
अकड़-तकड़ में तुरत श्याम नें सिर सौं मटकी झनटी
कहते भूरीलाल छीन लई झट माखन की चमटी
लूट लई भोरी सी, ठाड़ी ठाड़ी रोय॥ मटकिया....

—भूरे पेंटरमैन, मोहल्ला घटीकान
मुनिया बुर्ज के पास, कामां (भरतपुर)

छोरी कहै बात सुन मम्मी, भारत की सरकार निकम्मी
फिर पापा कूँ समझाय दियौ, घर सारौ काट री। बहना......
चौथी कहै पिया जुलम गुजारे, थार परात बेच दिये सारे
मोसूँ कहै गहाय दै हँसली, नाहीं करत तोर दई पसली
फिर दियौ बिगार लाटरी नें सब घर कौ ठाट री॥ बहना......
सांसद और बिधायक दोऊ, नेंक न बोलैं मुख सौं कोऊ
जनता में कंगाली आई, इनकौ ना कोऊ बने सहाई
फिर कहते भूरीलाल परी सासन कूँ चाट री॥ बहना.......

—

-श्री गिर्राज पूजा-

श्री गोवर्धन गिर्राज की, महिमा अपरम्पार
सात दीप नौ खण्ड में, होवत जय जयकार॥
श्याम ब्रज बासिन ज्ञान करायौ, ब्रज माँहि गिर्राज पुजायौ,
इन्दर पूजा अति भारी, सब हरसामें नर नारी।
यो बोलें कृष्ण मुरारी, अब कहाँ कूँ करी त्यारी,
ब्रजबासी कहैं गुपाल, सुनौं सब हाल इन्द्र की पूजा।
या ब्रज में इन्द्र समान देव नहीं दूजा॥
इन्दर पूजा हित सुनों लाल ये सब सामान सजायौ। ब्रज में....
यों बोले कुँवर कन्हाई, चौं तुम्हरी मति बौराई
कब इन्दर दरस दिखाये कब सनमुख भोग लगाये।
सुरपति जग पालन हार कहैं नर नार इन्द्र करतारा।
बिन इन्द्र नहीं बरसै जग में जल धारा
हो जाय इन्द्र नाराज समझ फिर ब्रज पै संकट छायौ॥ ब्रज में.....
सुरपति कहा करै तुम्हारौ, जब जगत पिता रखवारौ
कहा इन्दर करै सहाई, जब कोप करें रघुराई
सब जुर मिल आज समाज, चलौ गिर्राज ध्यान उर लाऔ
वहां प्रेम सहित दरशन कर भोग लगाऔ
गिर्राज धनी है दीन बन्धु भक्तन कौ कष्ट मिटायौ। ब्रज में.......

कान्हा की सुन कैं बानी, ब्रज बासिन के मनमानी
पूआ पकवान मिठाई, सब छकड़न में भरवाई
ब्रजबाला गामैं राग अधिक अनुराग चलैं हरसाई
श्री गोवर्धन गिर्राज पहुँच गये जाई.....।
दरस परस हित नर नारिन अति मन में मोद मनायौ॥ ब्रज में......
इक रूप चतुर्भुज धारौ, दूजौ श्री नन्द दुलारौ
कहै दरसन करौ अघाई, गिर्राज पधारे आई
निज कर सौं भोग लगाय, चरण लिपटाय हर्ष अति सारौ
परिक्रम्मा रहे लगाय बोल जैकारौ।
'भूरीलाल' गिर्राज शरण में अति आनन्द मनायौ॥ ब्रज में......

—

दधि चाखन दै मोय

मटकिया कोरी सी दधि चाखन दै मोय,
रोज गुजरिया तू आवै है सिर पै गागर भारी
ताजा—ताजा गोरस लावै टिक रही नजर हमारी
ग्वालनी छोरी सी, मैं समझाँऊ तोय॥ मटकिया.....
माखन कौ दै दान आज तू मतना देर लगावै
जो तू नाँहीं करै रामझलै फिर पीछैं पछतावै
बात है थोरी सी, पुन्न तेरौ अति होय। मटकिया......
कहन हमारी पै सुन गोरी ध्यान नहीं जो लावै
सारौ दही छीन कै तेरौ ग्वाल बाल खा जावै
मचै फिर होरी सी, दोष न दीजौ मोय। मटकिया......
तू तौ लाला नन्द राय कौ नित प्रति धूम मचावै
करै अनीती सखियन के संग लूट—लूट दधि खावै
करै बर जोरी सी, सरम न आवै तोय॥ मटकिया....
अकड़—तकड़ में तुरत श्याम नें सिर सौं मटकी झपटी
कहते भूरीलाल छीन लई झट माखन की चपटी
लूट लई मोरी सी, ठाड़ी ठाड़ी रोय॥ मटकिया.....

—पूर्व चेयरमैन, मोहल्ला खटीकान
भुमिया बुर्ज के पास, कामां (भरतपुर)

साँवरिया सौं (चार लोकगीत)

— श्रीब्रजबिहारी शर्मा 'सुरीला'

कान्हा रे कान्हा

कान्हा रे कान्हा कान्हा फिर मुरली बजाना।
कुंजों में ब्रज गोपियन संग फिर रास रचाना॥
चोर–चोर माखन ब्रज बचपन लूट–लूट दही खायौ,
चूँनर खींच फोर नित गागार दिन–दिन हमें सतायौ।
जसुदा कूँ जब दियौ उल्हानौ सींग दिखा भग जाना॥
कान्हा रे कान्हा......
एक बार ब्रज कालीदह पै गेंद कौ खेल रचायौ,
मारी टोल गेंद गई दह में तू गेंदहि संग धायौ।
नाग नाथ काली के फन पै वंशी मधुर बजाना॥
कान्हा रे कान्हा...........
गोवर्धन पुजवाय इन्द्र कौ ब्रज में मान घटायौ,
ब्रज पै कोप इन्द्र तब कीयौ भारी जल बरसायौ।
त्राहि–त्रहि ब्रज मची गोवर्धन नख पै तेरा उठाना॥
कान्हा रे कान्हा.....
ब्रज में लुक–छुप खेल–कामवन जब घनश्याम रचायौ,
ऐसे लुके विकल भये ढूँढत गिरि चढ़ दरश करायौ।
बंशी बजा लोक तिहु मोहे गिरि पद चिह्न बनाना॥
कान्हा रे कान्हा..........
बचपन ब्रजरज लोट–पोट छुप श्याम 'सुरीले' खाई,
हरि मुख में इक दिन माटी लख माँ जसुदा रिसियाई।
माँ कूँ मुख तिहु लोक दिखाकर मन्द–मन्द मुस्काना
कान्हा रे कान्हा..........

ऐसी बजाई बंसी

कान्हा, ऐसी बजाई वंशी तान कैं, तान कैं, तान कैं।
सुधि–बुध विसराई नाच उठा मन मोरा॥

नाचै प्रेम दिवानी जोगिन साँवरे, साँवरे, साँवरे।
तेरो रंग ऐसौ चित पै चढ्यौ चितचोरा॥
कान्हा, पनघट पहुंची धर गागर शीश पै, शीश पै, शीश पै
नभ घन गरजै, बरसै, दमकै दिजुरी घनघोरा॥
कान्हा कुँजों में डोलूँ तोहे ढूँढती, ढूँढती, ढूँढती।
म्हारौ बिधग्यौ करीलौ में कोमल तन गोरा॥
कान्हा, आकै उचा जा भारी गागरी, गागरी, गागरी
ठाड़ी यमुना पै भीजूँ तिहारे करूँ निहोरा॥

—

अरज करैं ब्रजनारी

ऊधौ, अरज करैं ब्रजनारी,
काहे निष्ठुर बने मनमोहन,
ब्रज नगरी तज डारी।
माखन चोर लूँट दही खायौ,
गागर फोर बहु भाँति सतायौ।
तबहु दई ना गारी॥
राधे व्यथित पड़ी महलन में,
विरहाकुल की विरहानल में।
देह जरै रतनारी॥
विरहन बन ब्रज की सुकुमारी,
कुंजन खोजत फिरत बिहारी।
जोगिन बन मतवारी॥
चंचल, चपल, चतुर चन्द्रावल,
भूल गई चितचोरी छलबल।
जोहत बाट तिहारी॥
टौना जानें कुब्जा कहा कीन्हों,
सौतिन हरि वश में कर लीन्हों।
बैरिन भई हमारी॥

होरी में करी बरजोरी

वारे सांवरिया, होरी में करी जो मोते बरजोरी।
तौ तेरी कर–कर डारूँगी तोर, वारे सांवरिया॥
फोर गागर अकेली छेड़ौ पनघट पै।
तौ गारी दै कैं मचाय दऊँ शोर, वारे सांवरिया॥
रंग डार जो बिगारौ लहँगा पीहर कौ।
तौ बोलूँ कबहुं न नन्द किशोर, वारे सांवरिया॥
फारी चूँनर जड़ी जो कोरी पचरंगी।
तौ फार कामरी बंसुरिया दूँ तोर, वारे सांवरिया॥
चोली फारी जो मरोर बइया अनमोली।
तौ खाय जहर मरूँगी, चितचोर, वारे सँावरिया॥
गाल मलौ जो गुलाल डार गलवइयाँ।
तौ गुलचा दै दै कैं नचाऊँ बरजोर, वारे सांवरिया॥
मुख, दृगन भरौ जो कुँमकुँम रोरी।
तौ कोड़ा मारूँगी 'सुरीले' पुरजोर, वारे सांवरिया॥

—चौक मोहल्ला, कामां (भरतपुर)

—

ब्रज दर्सन

— श्री भूरी सिंह राना

दर दिवार दर्पण भये, जित देखूं तित तोइ ।
कांकर पाथर ठीकरी, भये आरसी मोइ ॥
एकई नांक नकेल डारि दई अबकैं ढीट लबार ।
ऐसेई कहुं दो चारि जने तो फिरि जीवो दुसवार ॥ एकई.......
रहूं बेबसी में मन मारें चित्त कुचित्त हमारौ,
गैल गिरौ चाबी कौ गुच्छा पीछें खोलो तारौ
जब तक मैं बाहिर ते आई खपरा डारे द्वार। एकई.......
खुसुर–पुसुर सुनि भजी सार में बिनैं बुलाइकैं लाई

लदर पदर भजि गये सखा भये कबरी ओर कन्हाई
छापौ दयौ घेरि लये मैंनें पकरे भुजा पसार। एकई........
हत प्रभ सी रह गई राना में बड़ी बेर पहचाने
लीले परि गये मारत–मारत मेरे हाथ पिराने
ऊबर निकरि सको ना मैं तो चोर जानि रही मार। एकई.....
बुद्धी भ्रष्ट करि दई मेरी डारो माया जाल
बुरी बनी अनजाने देखो मन में बहुत मलाल
जर्री वर्री दै रहे तबते भैंसनि चढ़ौ बुखार। एकई.....

—

आजु गई दधि बेचन गुईयां नजरि परौ नंदलाल ।
आंखि परी किरकिरी न निकरी भई हाल बेहाल ॥
दिशा भूल है गई लाड़ो में मटुकी धरी उतार
हरि आये अपने निवारण ढिंग देखि भये लाचार
झाड़ा फूंकी करी विविध विधि भई निरमल तत्काल। आज........
आजु ऐन ढिंग ते देखे मैं मन्द–मन्द मुसुकाते
कैसौ सुन्दर रूप सलोनो आंखि न पलक सुहाते
जिनि देखे वे बोलि सके ना मन में रह्यौ मलाल। आज.....
मनकी तो मैं जानि गई परि वे कहते सकुचात
में हाँ ना कछु कहि न सकी विष धरु ढीट खिजात
हाथु न रोकि सकी राना लै भजे अछूतौ लाल। आज....

—

आजु सखी सपने में मैंने पकरे नन्द किशोर –
भागे चपल चितइ मेरे तन–चंचल माखन चोर ॥
उचिटी नींद मेरी चिंता में जागी तीनि पहर में,
अचक–पचक घर आये नटखट मुरली कमरि में
मेरी झपकति आवति नींद तबई कूकर भोंकौ सौं जोर ॥ आज सखी....
हाल भुलाइत उठि देखी मैं पहलें दही दहेंड़ी
परछाई सी लगी मोइ वे चढ़ि रहे श्याम नसेंड़ी

चार पांच चढ़ि गये डंडा तब गह्यौ काछनी छोर ॥ आज सखी...
वे ऊपर सोइ रहे अटा में लौटि परे सुनि खांसी,
पकरी भुजा सम्हरिकैं मैंनैं लगति बात सब सांची,
मैया ढिंग लै जाइ रही तब खुली आँखि भयौ भोर ॥ आज सखी......

—



लोकसाहित्य माँहिं कथा

-डॉ. राधेश्याम अग्रवाल

सदैव सौं साहित्य की द्वै धारा समानान्तर रूप सौं प्रवाहित होंती रही हैं- 1. अभिजात वर्गीय साहित्य अरु 2. लोकसाहित्य। लोक कौ महासागर अनंत दूरी तानूँ फैलौ लहरातौ रहै है, जाकी सीमा के दर्सन करवे में चर्म-चक्षुअन की सक्ति असफल है जाय है। केवल दिखाई पड़ै है तौ मात्र क्षितिज, जहाँ सागर-तट अरु आकाश मिले दिखाई पड़ें हैं। लोक अपार है, अनंत है। लोक सौं यदि तादात्म्य करनौ होय तौ लोक-महासागर को लोक-लहर बनकैं ई लोक-सागर के अन्त:स्थल के रहस्यन कौ उद्घाटन है सकै है।

लोक के संदर्भ मे डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल कौ मत है कै लोक हमारे जीवन कौ महासमुद्र है। वामें भूत, भविष्य, वर्तमान सबई कछू संचित रहै है। अर्वाचीन मानव के तई लोक सर्वोच्च प्रजापति है। लोक, लोक की धात्री सर्वभूत माता पृथ्वी अरु लोक कौ व्यक्त रूप मानव जेई हमारे नये जीवन कौ अध्यात्म शास्त्र है। याकौ कल्याण हमारी मुक्ति कौ द्वार अरु निर्मान कौ नवीन रूप है। लोक, पृथ्वी, मानव याई त्रिलोकी में जीवन कौ कल्याण रूप है। (1)

अत: जि कह सकैं हैं कै लोकसहित्य लोकजीवन कौ साहित्य है। लोकजीवन याकी आधारशिला है। लोक-साहित्य लोक द्वारा ई नि:सृत होय है।

अभिजात वर्गीय साहित्य की भाँति ही लोकसहित्य मेंऊ सबई विधान में रचना उपलब्ध होंय हैं। पद्य,गद्य, गीत, श्रव्य, दृश्य, काव्य, नाटक, कहानी, रूपक, निबंध सबई कछू लोकसाहित्य में विद्यमान हैं। सच कह्यौ जाय तौ लोकमानस सौं प्रेरना प्राप्त करकैं ही अभिजातीय साहित्य-रचनाकार अपनी रचना कूँ जनम दै पावैं हैं।

कथा सब्द 'कथ्' धातु सौं निष्पन्न है। कथ् अर्थात कहनौ। जब सौं मानव नैं भाषा सीखी होयगी तबई सौं कहानी कहनौऊ सीखौ होयगौ। मानव-समूह आपस में चर्चा करतौ होयगौ अरु अपने परिवेश या घटित घटनान कूँ अभिव्यक्ति प्रदान करतौ ई होयगौ। अपने बालक सौं या रहस्यमय संसार की प्रकृति की, जीव जन्तुन

(1) सम्मेलन पत्रिका : लोक संस्कृति अंक-20/1 पृ. 65

की, मानव के व्यौहार की, चर्चा करतौ ही होयगौ। मानव के पास उपलब्ध मन अरु मानस बाय मौन तौ रहन ही नाँय दै सकैं। जब वाके ढिंग भाषा नाँय रही तौऊ वानें संकेतन के माध्यम सौं अपने विचारन की अभिव्यक्ति करी हायेगी। आजऊ बालक जब तानूँ बोलवौ नाँय सीख पावै, बू संकेत अथवा ध्वनीन सौं ही अपने विचारन की अभिव्यक्ति करै है। अत: मानव वंश में कहबे की सहज नैसर्गिक वृत्ति है। विभिन्न वृत्तन कौ प्रस्तुतीकरन कथा के सरूप कूँ निर्धारित करै है। अत: विवरन कौ प्रस्तुतीकरन कथा अथवा कहानी कौ अनिवार्य तत्व है। याई के कारन कहानी आख्यायिका ऊ कही जाय है। काऊ विवरन के प्रस्तुतीकरन द्वारा मानव बाके परिनामन सौंऊ अवगत करानौ चाहै है। यासौं परिनाम सूचित करबे बारे विवरन या शिक्षाप्रद विवरन कूँ कथा या कहानी कह्यौ जाय है।

लोक प्रचलित कथा कूँ लोककथा कह्यौ जाय है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार जे कथा मौखिक परंपरा द्वारा निरंतर रूप सौं एक पीढ़ी द्वारा दूसरी पीढ़ी कूँ प्राप्त होंती रहै है। डॉ. धीरेन्द्र वर्मा संपादित हिन्दी साहित्य कोश भाग-1 में उल्लेख है कै लोक में प्रचलित अरु परंपरा सौं चली आवे वारी मूलत: मौखिक रूप में प्रचलित कथा लोककथा कहलावै है। (पृ. 137)। डॉ. नगेन्द्र नैं लोकगाथा या लोककथा कूँ मिथक कौई एक रूप मानौ है।

डॉ. नगेन्द्र कौ मत है कै लोक-गाथा या लोक-कथा के पात्र मानवीय होय हैं। खासकर नायक तौ मानवीय होय है जाय अति प्राकृत प्राणीन के विरोध कौ सामनौ करनौ पड़ै है। लोककथा के पात्रन कौ नाम नाँय होय ।ए वाकी घटना निस्चित स्थान के बजाय कहूँ भी घटित है सकै है। लोककथा शुद्ध कपोल कथा होय है अरु वाकौ अपने सौं कोई उद्देश्य नाँय होय। लोककथा सदैव सुखांत होय है चौंकै बाकौ मूल उद्देश्य मनोरंजन होय है।

लोककथान द्वारा मानव समाज के आचार-विचार, प्रेम, मैत्री, वीरता, शत्रुता, रीति-रिवाज, धार्मिक विस्वास,परंपरा, रहन-सहन, सुख,दु:ख, जीवन दर्सन, इतिहास, चरित्र, नायक, प्रतिनायकन आदि की सुंदर झाँकी मिल जाय है। वास्तव में जे कथा मानव जीवन के संवेगन की वृहद् मंजूषा है, जामें हमारे अतीत कौ इतिहास, जीवन मूल्य अरु संस्कृति समाहित हैं।

लोककथान के बीज वैदिक साहित्य में मिल जांय हैं। जैसैं पुरूरवा अरु उर्वशी अथवा यम-यमी की कथा वेदन के उपरान्त पौरानिक वाङ्मय में कथान कौ भंडार है। महाभारत अरु रामायन लोककथान के विसाल कोष हैं।

लोककथा सौं लोकगाथा-

संस्कृत साहित्य मेंऊ कथा-साहित्य कौ विकास हौंतौ रह्यौ। संस्कृत की कथाधारा अपभ्रंस अरु पाली भाषा के छेत्र मेंऊ प्रविष्ट है गई। अपभ्रंस में गुणाढ्य नैं वृहत्कथा की रचना करी अरु पाली में जातक कथान की रचना भई। जातक कथा भगवान बुद्ध के विभिन्न जनमन की कथान कौ वर्नन करै है। प्रत्येक जातक कथा के पाँच भाग हौंय हैं-

1. पच्चुप्पनवत्थु-जो घटना भगवान बुद्ध के काल में घटी हो, बाकौ वर्नन वर्तमान काल की घटना या कथा-पच्चुप्पनवत्थु कहावै है। 2. अतीतवत्थु- भगवान बुद्ध वाई घटना सौं काऊ पूर्व जनम को कथा बतावैं हैं जि अतीतवत्थु है। 3. गाथा-अतीत गाथा के पाछैं गाथा आमें हैं। जे जातक के प्राचीनतम अंश हैं अरु वास्तव मे जेई गाथा हैं। गाथान में धर्म कौ उपदेस कियौ गयौ है। याके पाछैं जातक में 4. वैय्याकरन या अत्थवण्णन आमें है। यामें गाथान की व्याख्या अरु वाकौ सब्दार्थ होय है। 5. समोधान-यामें अतीतवत्थु के पात्रन कौ बुद्ध के जीवनकाल के पात्रन के संग संबंध मिलायौ जाय है यथा-वा समै शिकार खेलवे वारौ शिकारी देवदत्त अरु मृग तौ मैं ही हौ।

इन जातक कथान कौ परवर्ती संस्कृत साहित्य के कथा-साहित्य पै गहरौ प्रभाव पड़ौ अरु बामें कथा मे सौं कथा निकारबे की प्रनाली कौ सूत्रपात भयौ। या कथा-साहित्य कौ विकास संस्कृत साहित्य सौं गुजरतौ भयौ प्राकृत अरु अपभ्रंस साहित्य में पहुँचौ। प्राकृत-अपभ्रंस कथा साहित्य में पौरानिक कथा तथा महाभारत की कथा सौं संबंधित अनेक कथा मिलैं हैं, जिनमें प्रबंध अरु मुक्तक के रूप में रची गयी गाथा-सप्तशती बड़ी ख्यात रचना रही है। प्रबंध काव्य तौ साहित्य के अन्तर्गत समाविष्ट किए जावैं हैं। परि, मुक्तक काव्य गाथा सप्तशती आदि जनता की वस्तु ही तथा जाई कूँ गेय बनाकैं अरु यामें अन्यान्य दन्तकथान कूँ जोड़कैं यासौं अपनौ मनोरंजन कियौ जातौ हौ। जैन धर्मावलम्बी, नाथ अरु सिद्ध सम्प्रदाय वारे अपने संप्रदाय के प्रचार के लिएउ इनकौ उपयोग करै हे। जन सामान्य द्वारा प्रस्तुत जे वर्नन ही लोकगाथा कहे जान लगे। या तरियाँ लोककथा सौंई लोकगाथा विकसित भई।

लोककथा सिच्छा कौ महत्वपूर्ण साधन है। प्रत्येक लोककथा सौं कोऊ न कोऊ सिच्छा अवस्य मिलै है, जद्यपि बासौ मनोरंजनऊ होंय है। समाज द्वारा भूतकाल में संचित अनुभवन कूँ वर्तमान पीढ़ी कूँ लोक कथान के माध्यम सौं प्रदान कर्‌यौ जाय है। पंचतंत्रकार कौ दावा है कै बिनको कथान कौ अध्ययन करबे वारौ व्यक्ति इन्द्र सौंऊ पराभूत नाँय है सकै।

लोककथान के सुनबे सौं बच्चान में पस्न करबे की योग्यता, ग्यान के प्रति जिग्यासा-वृत्ति बढ़ै है। बच्चा भयमुक्त, साहसी बनैं हैं। बचपन में ई बिनके कच्चे मन पै लोककथान के माध्यम सौं जमे संस्कार वाके जीवन कौ निधि बन जाँय हैं।

लोककथान नैं भारतीय जनमानस पै एकाधिकार कर राख्यौ है। संजा कूँ दियौ जरते ही बच्चा दादी या नानी सौं कहानी कहवे कौ हठ करबे लगैं हैं। जे कहानी विभिन्न तरियाँ की होय हैं। तीज-त्यौहारन पै बैयर जो कहानी कहैं हैं, वे बिनके अनुष्ठान कौ ई एक भाग होंय हैं अरु कहानी के अंत में कामना करैं हैं कै 'जैसौ वाकौ सँवारौ, ऐसौ ही सबन कूँ सँवारियौ।' याके अतिरिक्त मुख्य रूप सौं लोककथा, धार्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक, भूत-प्रेत, जादू टोना, ठगी धूर्तता, परी संबंधी, या हँसी-मजाक की , पशु-पच्छी संबंधी, पराक्रम-साहस, नीति-उपदेस या कल्पना-प्रसूत होंय हैं।

कथान कौ कोश अपार है। हमारे समग्र साहित्य कौ आधार कथा ई है। जे कथा भारत में ई नाँय अपितु समस्त विस्व में परिवेसगत परिवर्तनन के संग व्याप्त हैं।

-100/5, धीया मण्डी, मथुरा (उ.प्र.)

लोककथा कौ जनम, वाकौ स्वरूप अरु महत्व

-डॉ. राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी

अवनि और अंबर के बीच जब कबऊ कोऊ घटना घटी, तबई एक नई लोककथा बन गई। आसमान माँहिं बिजुरिया चमकी और मन में सवाल उठौ। डार पै चिरैया चहकी और आँखन में अनुराग जगौ। अँधेरौ भयौ और मन में संका उठ खड़ी भई। साँप निकस्यौ, सेर दहाड़ौ, फूल खिलौ और भूकम्प आ गयौ। छोटी ते छोटी और बड़ी ते बड़ी घटना अनेक घटीं और लगातर घटती रहीं, पर ऐसौ कबहू नहीं भयौ कै कोऊ घटना लोककथा की बात न बनी होय। साँची बात तौ यह है कै कालपुरुष खुद समाज के चित्त में घटना के रूप में लोककथा के बीज बोवै है।

एक कान ते दूसरे कान में, एक मुख सौं दूसरे मुख में और एक मन सौं दूसरे मन में गूँजती भई लोककथा निरंतर बहती रही है। याकौ प्रवाह थमै नाँहें, कबहू थकै नाँहें, कबहू रुकै नाँहें। हाँ समय के संग लोककथा अपनौ कायाकल्प करती रहै। याही सौं लोककथा न कबहू बूढ़ी होय, न बुसै है।

लोककथा कोरी कथा नाँहें वह एक पूरी मनोवैज्ञानिक प्रणाली है। एक साधारन सी दिखाई दैबे वारी कथा कौ स्रोत लोकमानस के वा अतल गर्भ में होय जहाँ मानव मात्र के जीवन कौ लय होय। लोककथा जीवन कौ महासागर है। जामें भूत, भविस्य और वर्तमान तीनोंन कौ अंतर्भाव निहित होय।

लोककथा में व्यथा है, चिन्ता है, प्रमोद है और प्रसन्नता है। लोककथा में स्मृति है, भावना है, कल्पना है और संवेदना है। लोककथा में सौने की परी है और आसमान में उड़वे बारौ घोड़ा है। सपने कौ देस और सौने कौ महल है। पारसमणि और मोतीन कौ पेड़ है। लोककथान में दौरानी-जिठानी की होड़ है। सौत कौ डाह है, भाभी की तोख है और मैया की ममता है। लोककथान में खूँटी हार निगल जावै है। धूर की चुटकी सौं महल बन जावै है। लोककथा में कौआ पीहर जायकैं माँ कूँ बेटी की करुन व्यथा और कथा सुनावै है। तोता देवर बनकैं सतीत्व की रक्षा करै है और सौने कौ हंस राजकुमार कूँ पीठ पै बैठाय कैं सात समंदर पार लै जावै है।

लोककथा के पास ऐसी भाषा है कै चिरैया और चिरौंटा, चैंटी और हाथी, स्याँप और मेंढ़क, धरती और पर्वत, नदी और सागर सबन ते बात है जाएँ। लोककथा में यह लोक भी है और वह लोक हू है। करील के

नीचैं बाँबी में हैकै वह पाताल लोक तक चली जावै है। उड़न खटोला पै बैठकैं इन्द्रलोक में चली जावै है। लोककथा में न जानैं कितेक लोक हैं। इतेक लोक नहीं हौंते तौ वे लोककथा में कैसैं हौंते? लोककथा की आन है-'स्वदेशो भुवनत्रयम्'। तीनों लोक ही लोककथा के स्वदेस हैं। कोऊ ऐसौ है ही नाँय, जासौं जनम जनमान्तरन की पहचान नहीं होय।

धरती-आकास के बीच ऐसौ का है जो लोककथा में नहीं आयौ होय? जीवन कौ ऐसौ कौन सौ भेद है जापै लोककथा चुप्पी साध बैठी होय?

लोककथा मे कथा कौ इतेक महत्व नाँय जितेक लोक कौ है। याही सौं लोककथा के अध्ययन में समीक्षा-शास्त्र सौं तनिक सी हू सहायता नाँहिं मिलै। समीक्षाशास्त्र सौं लोककथा कूँ समझवौ ऐसौ ही है जैसैं लकड़िया सौं गाय कौ थन छूकैं दूध दुहवे कौ प्रयास करवौ।

लोककथा लोकजीवन की कथ्यात्मक अभिव्यक्ति नाँहै वह तौ लोकजीवन की प्रक्रिया है। वह तोख देय है, चेतावनी देय है, मंगलकामना करै है और जीवन के ताँईं प्रयोजनमय है। लोककथा व्यक्ति कौ समाजीकरण करै है, सामाजिक व्यवहार में समरसता पैदा करै है और मानवीय सम्बन्धन कूँ बुनै है। लकड़हारौ है तौ लकड़हारौ ही सही, पर जाकूँ मन नैं एक बेर पति के रूप में वरण कर लियौ तौ वह जीवन भर कूँ पति है गयौ। सावित्री की जि लोककथा नहीं हौंती तौ भारतवर्ष में दाम्पत्य की नींव इतेक गहरी कैसैं हौंती। याही कौ फल निकसौ कै सावित्री के तेज के सामईं यमराज कूँ विवस हैकैं अपने संविधान मौंहिं सुधार करनौ परौ। सत्यवान की मौत जिन पैरन सौं आई बिन पैरन सौं ही वापिस लौट गई।

इतिहास की अँधेरी सुरंगन के बीच मानव-जीवन की चलती-बढ़ती एक लम्बी यात्रा है। लोककथा में जीवन-सक्ति नहीं हौंती तौ मनुष्य न जानैं कबकौ बाकौ संग छोड़ चुकौ हौंतौ। पर, इतिहास गवाह है कै जब-जब सबल नैं निरबल कूँ दबायौ, तब-तब लोककथा निरबल कौ बल बनकैं खड़ी है गई। बुढ़िया के ताँईं राजा कौ हुकम हौ कै आज तेरे बेटा की बलि चढ़ाई जाइगी। अगर लोककथा नहीं हौंती तौ बुढ़िया कौ बेटा दहकते अँगारेन में ते कैसैं जिन्दौ निकस आतौ और राजा के सामईं चुनौती बनकैं कैसैं ठाड़ौ है जातौ? अगर कथा नहीं हौंती तौ निरास चिरैया कूँ कौआ ते बाकौ छीनौ भयौ मोती कैसैं बापिस मिलतौ? यदि लोककथा नहीं हौंती तौ पक्षपात करवे वारे पंचन कूँ कौन धिक्कारतौ? लोककथा नहीं हौंती तौ जिठानी की देह मौंहिं दुर्गन्ध कैसैं हौंती और दुर्गन्ध नहीं हौंती तौ जिठानी सौने की हँसुलिया कूँ बाँट कैं चौं देती।

चिन्ता और व्यथा के क्षणन में जब कोई अपनौ नहीं मिलौ तौ चन्दा नैं अपनी व्यथा लोककथा कूँ सुनाई। लोककथा के सिवाय यह बात कौन कूँ मालुम ही कै रानी के हाथ कूँ तकिया की तरियाँ लगाय कैं राजा सो रहौ हौ। रानी कौ हाथ दूखवे लगौ तौ बानैं अपनौ हाथ हटा लियौ। राजा की नींद टूट गई। फल निकसौ रानी कूँ घर सौं निकास दियौ।

लोककथा कौ मन गौरा पार्वती के समान है। काऊ कौ दुख देखौ तौ पानी पीवौ भूल गयी। शिवजी नैं कही-अरी गौरा ई तौ विधि कौ विधान है। पर, गौरा पार्वती नहीं मानी, कह्यू सही नाथ, जब तक याकौ दुख दूर नहीं होयगौ तब लौं मैं जल ग्रहन नहीं करूँगो।

साँची बात है, करुणा, लोक मंगल, न्याय-नीति और समाज-चेतना लोककथा के अलावा और कहाँ मिलैगी? लोककथा कौ अमृत तत्व है, वाकौ शिव-भाव। 'भगवान नैं जैसैं याके दुख दूर करे वैसैं ही सबके दुख दूर हौंय। जैसैं याकूँ सुखी करौ वैसैंई सबकूँ सुखी करै।' लोककथा मंगल-भावना सौं भरी रहै। लोककथा जहाँ हू रहै, घर और आँगन दिव्य भावन सौं भर जाए।

जब अनीति और अत्याचार बढ़ गए, जब एक कौ एक पै ते विस्वास हट गयौ, जब जनता आतंकित है गई, जब धरती पै भार बढ़ गयौ तब धरती अकुलाई और गैया कौ रूप धरकैं, देवतान के संग, विष्णु भगवान के पास गई। भगवान ते गुहार करी। तबई आकासवानी भई कै हे देवताऔ! डरौ मत। मैं धरती कौ भार उतारवे के ताँई जल्दी ही अवतार धारन करूँगौ।

ई कथा आपकूँ झूठी लगै तौ सौ बार लगै। पर का याते बड़ौ कोऊ सच है सकै जो युग-युग सौं लोकमानस कूँ हिम्मत बँधातौ आयौ है। संबल बनकैं जन-जन कूँ आसावान बनातौ आयौ है। यदि बुद्धि में यह बात नहीं आ सकी कै धरती गैया कैसैं बन गई और कैसैं विष्णु भगवान के पास पहुँच गई तौ यह बुद्धि की सीमा है। मानी, बुद्धि बहुत कछू है पर सब कछू नाँहैं। लोककथा कौ सत्य बौद्धिक सत्य सौं बढ़कैं है, बहुत व्यापक है। लोककथा नैं ही तौ सुनायौ हौ कै जब मना करबे पै हू आदम नैं बुद्धि कौ फल खा लियौ तौ वह सयानौ है गयौ। बाके मन में मैं और तू कौ भाव पैदा है गयौ। बस वाई खन बू सुरग सौं गिर गयौ और आजहू बाकी संतान मृत्युलोक की पीड़ा भोग रही है।

जो मानस कल्पना के सत्य कूँ नहीं समझैं, का वे बता सकैं कै भवन बनावे वारे के मन में अगर कल्पना नहीं कौंधी हौंती तौ का भवन बन सकै हौ? विधाता हू कूँ संसार की रचना के ताँईं कल्पना कौ सहारौ लैनौ परौ हौ। 'सूर्याच्चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्।'

लोककथा की कल्पना करवे वारौ मानस वही है जो हमारी तरियाँ सोचै है, हमारी तरियाँ चिन्ता करै है। ये कल्पना बाही मनुष्य की है जामें हमारे ही समान रति, रक्षा, आराम, प्रभुता, गौरव, होड़, जिज्ञासा, भूख, नींद, संग्रह आदि की मूल प्रवृत्ति हैं। जो विपदान सौं घिरौ है और हमारी ही तरियाँ संघर्ष कर रह्यौ है।

लोककथा सार्वभौम है। यह नैंकहु अचरज की बात नाँहैं कै अलग-अलग संस्कृतीन के छिलकान कूँ उतारकैं देखैं तौ संसार के सिगरे देसन की कहानीन में एक ही रस है। लोककथा की चेतना संसार-चेतना है। अगर ऐसौ नहीं हौंतौ तौ लोककथा-विज्ञानीन कूँ संसार के सबई देसन की कहानीन में एक जैसे मोटिफ कैसैं मिल जाँते?

इतिहास लोककथा में मानव के उदय और विकास की कहानी खोजै है तौ समाजशास्त्र परिवार की संरचना और मूल्यन कौ अध्ययन करै है। परिवेश-विज्ञान लोककथान माँहि प्रवृत्ति और परिवेश के द्वन्द्व की गूंज सुनै है तौ मनोविज्ञान लोककथा के अचेतन अन्तराल में उतर जाय है। बहौत दिनान की बात नाँहैं, फ्रायड और युंग के अनुयायीन सौं पूछी ही कै लोककथा स्वप्न है कै मुक्त मन की स्वैर कल्पना है? लोककथा अतृप्त वासना

की तृप्ति है कै सैक्स ऊर्जा कौ विस्फोट है? कहबे की जरूरत नाएं कै लोककथान के अध्ययन नें ही मनोवैज्ञानिकन कूँ इडीपस ग्रन्थि और इलेक्ट्रा ग्रन्थि की अवधारणा प्रदान करी। लोकतंत्र में लोक की सत्ता और सत्ता के ताँईं लोक की प्रक्रिया कूँ समझवौ कितेक महत्वपूर्ण है, यह बतावे की जरूरत नाँहैं, पर या प्रक्रिया कूँ लोककथा के सिवाय और कौन बता सकैगौ? या प्रक्रिया कूँ समझावे के ताँईं आज एक नए लोक-विज्ञान की अपेक्षा है।

-269/3, इंसार, पानीपत (हरियाणा)

-

'लोककथा' में जितनौ महत्वपूर्न पद 'कथा' है, वासौं हू अधिक है 'लोक।' ऐसी कथा जाकूँ लोग कहैं हैं, और लोग सुनैं हैं, लोककथा है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर, प्रेमचन्द, मोपांसा, गोर्की आदि द्वारा रचित कथा-कहानी लोककथा नाँय, चौंकै वहाँ बिन लेखकन के जीवन्त व्यक्तित्व, बिनकी कलात्मक विशेषता, रुचि, व्यंग-विनोद, साहित्य-सौष्ठव अरु न जानैं कितेक अन्य तत्व झलकैं ही नाँय, झाँकैं हैं पीछे ते। बिनके विचार, आदर्श अरु सामयिक मूल्य-मान्यता आदि सबई तौ इन कहानीन में प्रतिबिम्बित हतैं। सच तौ जि है कै जिही झाँकी अरु झलक, विशिष्टता अरु प्रतिबिम्ब, इन कहानीन कौ सब कछू है। लोककथा में 'व्यक्ति' नहीं, न वाके द्वारा देख्यौ गयौ समाज, इतेक साफ दिखाई परै है जितनौ लोक-मानस, लोक-संस्कृति, लोक-रुचि अथवा लोक-स्वीकृती झलकैं हैं। लोककथा कौ सर्वस्व है लोक स्वयं।

-डॉ. हरद्वारीलाल शर्मा

(लोकवार्ता-विज्ञान खण्ड एक, पृष्ठ 314-15)

लोककथा : स्वरूप और सीमा

-डॉ॰श्याम सनेही लाल शर्मा

लोक-मानस नैं जिन कलान कौ सृजन अपनी प्रतिभा के बल ते कर्‌यौ है बिनमें कहानी कहिबे की कला बहुत प्राचीन समै ते ई चली आय रही है। लेखन-कला की खोजऊ नाँय भई बाऊ ते हजारन बरस पहलैं तेई लोकमानस अपनी वैचित्र्यपूर्न अनुभूतीन कूँ कथा के रूप में कहिबे लग्यौ हौ और इन कथान के माध्यम ते अपने अपरिपक्व जीवन -दरसन की अभिव्यक्ति करबे लग्यौ हौ। सही बात जि है कै जो अपनी वस्तु -संयोजना औरु कथन की कलात्मक सैली के कारन एक अलग ई साहित्यिक सौन्दर्य पाइ लेत है, लोकवार्ता के विद्यार्थी जा तरियाँ की कहानीन कूँ लोककथा कहैं हैं।

एकई अभिप्राय औरु कथानक पै आश्रित लोककथा देसकाल औरु संस्कृति के प्रभाव ते भिन्न-भिन्न रूपन में देखी जाँय हैं। एकई अभिप्राय की इन सबरी कथान कौ मूल स्रोत है सकै है एकई होइ, फिरऊ भिन्न सांस्कृतिक परिस्थितीन के कारन बिनके रूपन में अनिवार्य रूप ते अनेक परिवर्तन ह्वै जात हैं। सतत परिवर्तन में रहिबे पै हू लोककथा जब तब अतीत कूँ अपने आवरन में जीवित रखैं हैं। जा संबंध में 'श्री श्यामाचरण दुबे नैं लिख्यौ है कि हमें यादि रखनौ चहिए कै लोककथा घुमन्तू स्वभाव की होय हैं औरु अनेक संस्कृतीन कौ प्रभाव बहुत कछू बिनके स्वरूप कूँ उनके मूलरूप ते इतनौ ज्यादा बदल देय है कै सामाजिक स्थिति के चित्रन के रूप में बिनकी प्रामाणिकता विश्वसनीय नांहिं रहि जाति है। (1) एक अन्य स्थल पै बिन्नैं लिख्यौ है कै कथा प्रकास की किरनन के समान होय है। सर्वस्वीकृत सामाजिक नियमन तथा बंधनन के प्रति समुदाय की मौन मानसिक प्रक्रिया बहुधा लोककथान के माध्यम ते प्रकट होंती रहै है। (2)

लोककथान के बीज

लोक कहानीन कौ बीज वेद, उपनिषद औरु पुरानन में मिलिबे बारे आख्यानन में देखौ जाइ सकै है। 'ऋग्वेद' में 'शुनःशेप ' कौ प्रसिद्ध आख्यान मिलै है। (3) पं. सूर्यकरण पारीक नैं अपनी 'राजस्थानी न्नातां

1. मानव और संस्कृति, पृष्ठ 180
2. वही, पृष्ठ 182
3. ऋग्वेद, 1/24/30.

' नामक पुस्तक में 'पाबू जी री बात ' प्रकाशित करी है। (1) जा बात में अप्सरा औरु मानव के प्रेम को चर्चा है। वृ बात 'पुरुरवा' और 'उर्वशी ' की प्रेम-कथा कौ बदलौ रूपई लगै है।'पुरूरवा' और 'उर्वशी ' की प्रेम-कथा प्रसिध्द ऊ है औरु बहुत पैलें तें ई चलौ आइ रह्यौ है।'ऋग्वेद ' (2) *और शतपथ ब्राह्मण (3) मेंऊ जा* प्रेम- कथा कौ प्रसंग आयौ है।'विष्णु पुराण' में जि कथा विस्तार ते कही गई है। ब्रज के ढोला में जो 'नल और अप्सरा 'मोतिनी' को प्रेम प्रसंग मिलै है, बाकौ मूलऊ जेई कथा रह्यौ है। (4) अथवा जि कही जाइ सकै *है कै वेद में जो 'पुरूरवा-उर्वशी' कौ आख्यान है, वू आख्यान काऊ लोक-प्रचलित कहानी कौ ई साहित्यिक* रूप है। लोककथा में अप्सरा औरु मानव के प्रेम की बात अनेक रूपन में देखी जाय है। एक सीधी सी बात जि है कै काऊ राच्छस,दैत्य, दानव अथवा काऊ अन्य मानवेतर प्रानी के अधीन कोई अप्सरा होय है। बाकौ निवास काऊ जल ते घिरौ वन खंड, कोई सरोबर अथवा ऐसौई कोई स्थान होत है। राच्छस के प्रान बाके सरीर में नाँय होत, वे कहूँ अन्यत्र होत हैं। संयोगवश कोई राजकुमार बा स्थान पै पहुँचै है औरु बा अप्सरा के रूप पै मोहित ह्वै जात है। अप्सरा ऊ वा राजकुमार कूँ चाहवे लगै है। अप्सरा के सहयोग ते राजकुमार राच्छस कूँ मारिबे में सफल होत है औरु अप्सरा के संग विवाह करै है। जि एक सामान्य सौ इतिवृत्त है। यत्किंचित परिवर्तन के कारन जाके कई रूप है जाँय हैं। कबहु-कबहु तो अप्सरा ओरु मानव कौ प्रेम कछु बातन के अनुबध पै हाँय है। अनुबंध के भग हैबे प (जो नायक के द्वारा ई जादातर भग होय है)अप्सरा, मानव कूँ छोडि कैं चली जाय है। लोकजीवन में बड़ी गहराई तक पैठे ऐसे अभिप्रायन की कथा संसार भर में मिलै हैं। हमारे कहिबे को सार जि है के अप्सरा ओरु मानव के प्रेम की कथा लोकमन ते पैदा भई है। लोकजीवन ते बू साहित्य में *विविध रूपन में आय गई है। बैसें हू 'लोक' बहुत व्यापक सज्ञा है। जो कछू साहित्य में है, बू लोक में है,* परि जो लोक में है बू सब साहित्य में है जि संभव ई नई है।

'ऋग्वेद' में ई 'अपाला-आत्रेयी' (5) तथा 'च्यवन-सुकन्या' (6) कौऊ कथा आई है। राजस्थानी समाज में शुन:शेप' को उपाख्यान अबऊ कैई रूपन में कहो सुनौ जात हैं। (7) जि कथा 'ऐतरेय ब्राह्मण' (8) में ऊ मिलै है। 'शाट्यायन ब्राह्मण' में रिसि 'वृश' कौ आख्यान आयौ है। (9) उपनिषद् ग्रथनु मेंऊ कैऊ कथा आई हैं। 'कठोपनिषद' (10) में 'नचिकेता' की कथा औरु 'केनोपनिषद्' (11) में 'अग्नि' औरु 'यज्ञ' की कथा है। लोक-जीवन में पुरान तल बहुत अधिक रचौ-बसौ है। पुरानन की अनेक कथा लोक में विविध रूपान्तरन के संग प्रचलित हैं, जिनमैं मुख्य हैं-' महाराज रघु, राजा नल आदि। जामें कोई सदेह ई नई है कै *पुरानन में जो आख्यान और उपाख्यान मिलैं हैं, बिनकौ मूल ऊ लोकजीवन में ही व्याप्त रह्यौ है।*

संस्कृत साहित्य में लोक-कथा लिखिबे कौ पैलौ प्रयास आंध्र के विद्वान गुणाढ्य नैं ईसवीं पैलहू सदी के पहलें ई कर्यौ हतौ। पैसाची भाषा में लिखी गुणाढ्य की 'बृहत्कथा' कौ मूलरूप तौ अब मिलै नाँय किन्तु संस्कृत

---

(1) लोकसाहित्य की सांस्कृतिक परम्परा (ले. मनोहर शर्मा), पृ. 17-18. (2) ऋग्वेद, 10/15
(3) शतपथ ब्राह्मण, 9/1 (4) ढोला नल पुराण (दृष्टव्य) (5) ऋग्वेद, 8/9/1. (6) वही, 10/39/4.
(7) लोक साहित्य की सांस्कृतिक परम्परा, 29-34. (8) ऐतरेय ब्राह्मण, 7/3 (9) शाट्यायन ब्राह्मण, 5/2 (10) कठोपनिषद 1/4. (11) केनोपनिषद, 3/13 एवं 3/14 . 1

में लिखी 'वृहत्कथा मंजरी' औरु 'कथा सरित्सागर' में बाके प्रमान मिल जांय हैं। जाके बाद दूसरौ ग्रंथ 'पंचतंत्र' है। आचार्य विष्णु शर्मा नैं पाँच भागन में जाकौ निर्मान कर्यौ है। इन ग्रंथन के अतिरिक्त 'हितोपदेस' 'बैताल पचीसी', 'सिंहासन बत्तीसी', 'सुकसप्तति', 'माधवानल कथा', 'पुरुस-परीच्छा', 'जातकमाला' आदि ग्रंथऊ मिलैं हैं। हिन्दी में तौ बहुत से ग्रन्थ लिखे गये हैं।

लोककथान कौ महत्व

लोककथान कौ मानव-जीवन में व्यापक प्रभाव दैखौ जाय है। विदेसी विद्वान मिल्ट्रेड आर्चन नैं एक स्थल पै संथाल की लोककथान के संबंध में अपने विचार जा तरियाँ प्रकट करे हैं-जे कथा केवल मनोरंजन तकई सीमित नाँहिं हतीं, अपितु जन-जीवन में आत्म-विस्वास की भावना ऊ जगावैं हैं, बामें सक्ति देवैं हैं औरु जीवन में हैवे वारे संघर्स तथा विपत्तीन में स्थिर बने रहिबे की सक्ति कूँ जनम देय हैं। (1) जर्मन विद्वान बेनियो तौ जेऊ मानत हैं कै "भारत ई लोककथान की उद्‌गम भूमि है। वहाँ की लोककथा जहाँ मनोरंजन करैं हैं, वहाँ वे सत्य तत्तुन कौ निरूपन करिबे कौ प्रयासऊ करैं हैं जिनमें कर्त्तव्य औरु सेवा की सीख मिलि जाय है औरु आसा कौ प्रकासऊ प्राप्त होत है। जा तरियाँ लोककथा लोकसंस्कृति कूँ बाके अतीत सौं जोड़े रखैं हैं। वे सिच्छा के माध्यम कौ काम करैं हैं औरु जा तरियाँ वे समुदाय की सांस्कृतिक परम्परा कूँ सतत बनाए रखिबे में सहायता देत हैं।" (2)

लोककथान के भेद :

लोक कथान कौ वर्गीकरन अनेक तरियाँ ते कर्यौ गयौ है। (3) पहले के आचार्यन नैं कथा साहित्य कूँ-कथा औरु आख्यायिका-इन द्वै वर्गन में बाँटौ हतौ। 'आनन्दवर्धन' नैं कथा के तीन भेद माने- 1. परिकथा, 2. सकल कथा और 3. खंड कथा। 'हरिभद्राचार्य' के मत में कथा के चारि भेद हैं- 1. अर्थ कथा, 2. काम कथा, 3. धर्म कथा औरु 4. संकीर्ण कथा।

बंगला लोकसाहित्य के विद्वान डॉ. दिनेशचन्द्र सेन नैं लोककथान कौ विभाजन जा तरियाँ कर्यौ है- 1. रूप कथा, 2. हास्य कथा, 3. व्रत कथा, 4. गीत कथा। (4) डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय नैं कथा में वर्णित विसय

---

(1) 'ये कथाएं केवल मनोरंजन तक ही सीमित नहीं है, अपितु जन-मानस में आत्म-विश्वास की भावना जागृत करती हैं, उनमें शक्ति प्रदान करती हैं और जीवन में संघर्ष तथा आपदाओं में स्थिर रहने की शक्ति को भी जन्म देती हैं।'- भारत की प्रतिनिधि लोककथाएं-सं. जयप्रकाश भारती, पृष्ठ-9, 'चिन्तन के सूत्र' से उद्‌धृत।

(2) 'भारत ही लोककथाओं की उद्‌गम भूमि है। वहाँ की लोककथाएं जहाँ मनोरंजन करतीं हैं, वहाँ वे जीवन में सत्य तत्वों का निरूपण करने का प्रयास करती हैं, जिनमें कर्त्तव्य और सेवा की सीख भी मिलती है और आशा का प्रकाश भी मिलता है।' वही, पृष्ठ-10

(3) हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास, पृ.-113

(4) फॉक लिटरेचर ऑव बंगला-डॉ. सेन

के आधार पै लोक कथान कूँ जा तरियाँ बाँटौ है - 1. नीति कथा, 2. व्रत कथा, 3. प्रेम कथा, 4. मनोरंजन कथा, 5. दंत कथा तथा 6. पौराणिक कथा। (1) डॉ. सत्येन्द्र नैं स्थूल रूप तैं लोककथान के आठ भेद करि दिए हैं- 1 गाथा, 2. पसु पच्छी संबंधी अथवा पंचतंत्रीय, 3. परीन की कहानी, 4. विक्रम की कहानी, 5. बुझौवल सबंधी, 6. निरीक्षणकारी कहानी, 7. साधु-पीरन को कहानी औरु 8 कारन निर्दशक कहानी। (2)

लोकसाहित्य के विद्वान आचार्यन नैं लोककथान कौ जो वर्गीकरन प्रस्तुत कर्यौ है, वू समग्र रूप ते लोककहानीन की परिधि कूँ संकेतित नाहिं करत ओरु न वाके सरूप अथवा वामें बरनित विषय की विविधता कूँ ई समेटि पावै हे। कहानीन के सरूप औरु वामें बरनित विसय के ताँई निम्नलिखित बर्गीकरन उचित औरु दूसरेन ते अच्छौ कहौ जाइ सकैं है-

1. काल्पनिक कहानी-अप्सरा, परी आदि ते संबंधित कहानी, प्रेम कहानी आदि।
2 बिसेस औसरन की कहानी-जैसैं, करबा चौथ, स्याहू आदि।
3. चमत्कार प्रदर्सक कहानी
4 धरम के महत्त कूँ बताइबे बारी कहानी-व्रत कथा
5. उपदेस दैवे वारी कहानी
6. लोक विस्बास कूँ प्रगट करिबे वारी कहानी
7. मानवेतर ततुन ते संबंधित कहानी
8. जाति बिसेस सौं संबंधित कहानी
9. समस्यामूलक कहानी
10. मनोरंजन करिबे वारी कहानी आदि।

लोककथान कौ जि वर्गीकरन ऊ स्थूल ई है। भेद औरु उपभेदन ते अनेक उपर्वग बनि सकैं हैं।

सार :

लोककथान के जा विवेचन ते जिअ बात रेखांकित होति है कै विचारवान औरु चिन्तनसील मानव के मन नैं बहुत पैलें ते ई जीवन की सच्चाई ते अलग विचित्रता ते भरे संसार की रचना करी है औरु तबई ते लोककहानीन कौ जनम है गयौ है। लोककथान की सैली कलात्मक होबै है। देस, काल तथा संस्कृति के प्रभाव ते इनके रूप अलग-अलग ह्वै जात हैं। जि संभव है कै इनकौ मूलरूप एकई रह्यौ होय। लोककथा जब-जब अपने भीतर अतीत कूँ जीवंत रखैं हैं इनके बीच प्राचीन भारतीय साहित्य में देखिबै कूँ मिलि जात हैं।

-प्राध्यापक-हिन्दी विभाग,
कुसुमबाई जैन महाविद्यालय, भिण्ड-477001 (म.प्र.)

(1) लोक साहित्य की भूमिका, पृ.-129

(2) ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन, पृ.-74

ब्रज लोककथा - एक झलक

-डॉ. सरोजनी कुलश्रेष्ठ

महर्षि बाल्मीकि के 'मा निषाद' वारे श्लोक कौ जब तक शुभारंभ नाँय है पायौ हौ तब तक बोलिबे-चालिबे में कथा-कहानीन कौई प्रचार रह्यौ होयगौ चौं कै कथा कहिबे की प्रवृत्ति मानुस की आदिम प्रकृति है। हम वेदन कूँ अपौरुसेय मानैं हैं तौ वामें लिखी और कही गई कथा कहानीन कौ बीज पुरानन में पल्लवित भयौ और बाईसौं जि कथा कहिबे की परंपरा अबई तक चली आय रही है। लोकजीवन में जो लोककथा प्रचलित रहीं शुद्ध साहित्य में वे ई कछू सुधार और फेर बदल करकैं लिपि बद्ध कर दई जाँय। लोककथा तौ श्रुति परम्परा सौं ही जानी जाँय।

पौराणिक कथान कौ अपार विस्तार भयौ। एक-एक प्रसंग कूँ लैकैं उलट-पलट कैं अनेक कथान कौ प्रचार लोककथान में भयौ। वेदन में जिन देवतान कौ विसेस महत्व मानौ गयौ, बिनकी कथा बड़ी ई रस लैलैकैं कही गयीं। सूर्य देवता, वरुण देवता, इन्द्र देवता और उपेन्द्र अर्थात् विष्णु आदि देवतान नैं मुख्य स्थान पायौ। ब्रज की एक लोककथा में 'वरन विन्दाक' की कहानी कही जाय। जि कहानी कार्तिक स्नान के औसर पै कही गई कथान में ते एक है। बरन तौ वरुण के ताँईं प्रयोग कियौ गयौ है, विन्दाक कूँ वृन्दारक या वृन्दादेवी अर्थात् तुलसी मानि लेंहि। कथा कछू जा तरियाँ सौं कही गयी है-एक राजा की बेटी फूलन सौं तुलसी पूजा करौ करैई परि बु 'बिन्दाक' की कहानी नाँय सुनौ करैई। वरन अर्थात् वरुण नैं एक दिना राजा की बेटी के पाँयन कौ स्पर्श कर दियौ तौ वा दिना फूलन सौं पूरी न तुल पाई और अपनी इच्छानुसार तुलसी की पूजा हू न कर पाई। वानैं वरुण सौं विनती करी तौ बिन्नैं प्रायश्चित बतायौ। वा राजा की बेटी नैं प्रायश्चित पूरौ कियौ और वरदान पायौ। ऐसैं ई सूर्य देवता लोक कथान में प्रवेस पाय गये। ता पाछैं और देवताऊ कथान में अपनी बात कहिबे-सुनिबे लगे। शंकर, लक्ष्मी, पारवती, सरस्वती, कुबेर और दत्तात्रेय आदि देवताऊ कथान के लोकप्रिय नायक-नायिका बनि गये। जे पौराणिक, धार्मिक और नीति कथा धीरैं-धीरैं जनमानस में ऐसी प्रवेस करि गई कै आज तक चली आय रही हैं। वर्ष भर में जिन देवतान की पूजा होय बिनकी कथा हू कही जाय। त्यौहारन की कथा ब्रज के जन-जीवन कौ अभिन्न अंग बनि गई हैं। शिवरात्रि के औसर पै बहेलिया की कथा, नाग पंचमी पै एक नारी के भैया के रूप में नाग की कथा, अनन्त चतुर्दशी पै अनन्त भगवान की कथा, अशोक षष्टी ब्रत (वैसाख नवरात्रि)

के औसर पै कही गई एक ऋषि द्वारा पालित कन्या की कथा, गाज बोज की कथा, गुरु पूर्णिमा की कथा इनके अतिरिक्त रविवार, गुरुवार आदि वारन की कथा, सावित्री बट पूजन पै कही जायबे वारी सावित्री पतिव्रता की प्रसिद्ध कथा अरु रक्षा बन्धन पै कही जाइबे वारी श्रवण कुमार की कथा सबई हमारी कथा कहिबे और सुनिबे की आदिम प्रवृत्ति की अभिव्यक्ति कही जाय सकैं हैं। सकट चौथ की गणेश कथा कौ कैसौ रूप बनि गयो है जा बातै हम सबई ब्रजबासी भली प्रकार जानें हैं। करवा चौथ एक सामाजिक त्यौहार है पर याकूँ हू धर्मिक रूप दै दियौ गयौ है। एक सुहागिन नारी पहली करवा चौथ पै बरती रही। भैया वाय भूखौ न देखि सक्यौ तो वानें चालनी में जलतौ भयौ दियौ धरि कैं पेड़ की झिरी में ते दिखाय दियौ। भैन नैं जानी कै चन्दा उगि आयो और वा बिच री नैं अरघ दैकैं भोजन करिबे की तैयारी कर लई। पहलौ ई कौर मौंह में दैवे लगी तो वामें मरी माखी निकरि आई। वानैं बू फेंकि दियौ। दूसरौ कौर उठायौ तौ वामे बार निकरि आयो। जाई समय वाके पति की मृत्यु कौ समाचार आय गयौ। बाके बाद कथा लम्बी चलै। बा नारी कूँ अधक परिश्रम करनौ पड़ा तब कहूँ बाके पतिब्रत नें प्यारे पति के प्रान दुबारा पाये। जा कथा कूँ सुनिकें छोटी-छोटी विवाहित छोरी ऊ करवा चौथ के दिना मौंह में पानी की बूंद ऊ नाँहिं गेरें। इन कथान कौ ऐसो ई प्रभाव होय। ऐसें ई अहोई आठें की कथा हू कही जाय। जि ब्रत पुत्रवती नारिन के करिबे कौ है। ऐसें ई दिवारी की हू एक कथा कही जाय। जामें एक नारी की सूझ-बूझ सौं लक्ष्मी जी वाके घर मे सदा के लिये बसि जाँय। वाने राजा सौं वचन भरवायौ कै दिवारी के दीपक, कै तौ राजा के महल में जरिंगे और कै वाके अपने घर मे और पूरे नगर में या राति कूँ अंधेरौ ही व्याप्त रहैगौ। जा चतुराई के कारण लक्ष्मी जी भाजी दौड़ी बा गृह-वधू के घर मे ई आय गई। जब तक वानें लक्ष्मी जी सौं अपने घर में सदा रहिवे कौ वचन नहीं भरवायौ, वानें बिनकै आगमन के ताँई किवार ई नाँय खोलीं। ऐसी ई एक कथा दौज पै कही जाय। जब घर की बैयर आँगन मे चौक पूरिकैं, मोंतियौ काढ़ि कै, हल्दी रूई लगाय कैंजा कथाए कहैं तौ इकलौते भैया के ताँई भैन कौ त्याग म्हाँ बैठी सबई नारिन की आँखिन सौं आँसू बरसाइबे लगै। ब्रज की जे कथा सबन कूँ बड़ी-बड़ी बात सिखामें। अपनी ब्रज संस्कृति मे डूबी जे सबई कथा हम सबके ताँईं अनुकरणीय बन जाँय। इनमें कथा के सबई तत्व विद्यमान रहें। कथानक तौ रहै ही है। कथोपकथन ऐसे कै चरित्र-चित्रण कूँ एक रंग दै दें। देशकाल तौ इनमे पुरातन कथान कौ होय है। वैसें न जानें कब सौं इन्नें कहत-सुनत चले आये हैं पर इनकौ रूप लगभग पहलौ ई जैसौ है। हाँ भाषा के कारण और स्थान परिवर्तन के कारण इनकौ रूप थोड़ौ सौ बदलि गयौ है। शैली की दृष्टि सौं 'एक राजाऔ' ते बहुत सी कथा आरंभ होंय और कथोपकथन दैंते भये सूधी सपाट शैली में जे कही जाँय। उद्देश्य तौ इनकौ जीवन की विसंगतीन कौ परिस्कार करिबौ है ई है।

· जीवन में जो आनन्द कौ आविर्भाव करै वाई कूँ 'कथा' कहैं। ब्रज जीवन की सस्कृति अन्य संस्कृतीन सौं कछू अनौखी है या कारण यहाँ आनन्द पाइवे कौ ढंग हू कछू अनौखौ ई है। शरद ऋतु के आगमन पै जैसें सरोवर आदि जलाशय स्वच्छ है जाँय हैं ऐसें ही कथा श्रवण ते सबके हृदय स्वच्छ और आनंदित है जाँय। इन कथान में गामन की चौपाल पै बैठिकैं कही जाइबे वारी हास्य कथान कौ ऊ महत्व कम नाँय। सास और जमाई के बीच में खीचरी में घी की हास्य कथा बाकौ एक उदाहरण है। कोरिन के ऊपर हास्य कथा प्रचलित हैं। ऐसैं ई एक जाति के लोग दूसरी जाति की हँसी उड़ावैं तौ बिनईं हास्य कथान कूँ दुहराय दैवैं। अब जि प्रवृति कम

है गई है। कछू कथान में बीच-बीच में पद्य कौ ऊ प्रयोग होय याते कथा कौ प्रभाव गहरौ है जाय।

लोककथा औंर लोकगीतन कौ कछू ऐसौ जादू है कै जे प्रकारान्तर सौं सबई भाषान में पाये जाँय। इनकौ अध्ययन कियौ जाय तौ बड़े ही मनोरंजक तथ्य सामई आय सकैं। हम तौ कथा की बात का करैं। ब्रज की लोककथा अपने परिवेश में व्यापक है। वर्ष भर के त्यौहारन में, सामाजिक सम्मेलनन में कथा की व्याप्ति सहज सिद्ध है। इन लोककथान के अध्ययन करिबे औरु बिन्नैं श्रेणीबद्ध करिबे कौ काम करनौ चइए। जि हम सब ब्रजवासीन कौ कर्तव्य है।

-सरोजनिलयम् , डैम्पियर नगर
मथुरा, (उ.प्र.)

हरेक संस्कृति अनेक उपायन सौं समष्टि-जीवन कूँ मजबूत करै है; प्रकार न्यारे है सकैं हैं, परि इनकौ मूल-आकार व्यापक अरु सार्वभौम है। लोककथा अनेकन प्रकारन में सौं एक समर्थ प्रकार है जो अपनी भाषात्मक अभिव्यक्ति के द्वारा, कहकैं-सुनाइकैं, मन माँहि आशा अरु मंगल कौ संचार करै है। मंगल मन की मूल भावना है। आशा वाकौ स्रोत है।

–डॉ. हरद्वारीलाल शर्मा
(लोकवार्ता-विज्ञान खण्ड एक, पृष्ठ 534)

लोककथा कौ एक रूप-धर्मगाथा

-डॉ. त्रिभुवन चतुर्वेदी

लोककथा के तीन भेद माने गए हैं- लोककहानी, आख्यान और मिथक। लोककहानी काल्पनिक होय। याकौ मुख्य उद्देस्य जन-जन कौ मनोरंजन करनौ है। पर हमारे देस माँहिं लोककहानी, लोकशिक्षण और नैतिक उपदेसन की दृष्टि सौं हू कही सुनी जाएँ।

आख्यान काऊ महापुरुष, इतिहास पुरुष या काऊ ऐतिहासिक घटना कौ काव्य युक्त दीरघ वरनन होय है। याके मूल में ऐतिहासिक घटना रहै। याही सौं याकूँ कबहू-कबहू विकृत इतिहास हू कहैं हैं।

'मिथक' के ताँईं डॉ. सत्येन्द्र नैं धर्मगाथा सब्द कूँ गढ़ौ है। फादर कामिल बुल्के याकूँ पुराण कथा कहैं हैं। अंग्रेजी में 'मिथ' सब्द कौ अर्थ है मन गढ़न्त। हिन्दी वारे विद्वान या मिथ के ताँईं 'मिथक' शब्द कौ प्रयोग करबे लगे हैं। मिथक की परिभाषा अब तक विवादास्पद है। अँग्रेजी लोकसाहित्य के विद्वान किंबाल यंग नैं लिखौ है कै मिथक ऐसी कथा है जामें अति प्राकृत पात्र और घटनान कौ बरनन होय या ऐसे पात्रन सौं प्रभावित प्राकृत पात्रन और घटनान कौ बरनन होय। बैसैं तौ दूसरे लोगन कूँ जि कल्पना लगै है पर जिन समाजन में जे कहे और सुने जाएँ वे बिनकूँ सच मानैं हैं।

मिथक और आख्यान दौनौं ही बिना पैर विसवास करवे वारे समाजन में सच माने जाएँ। बैसैं इन दौनौंन में एक अंतर होय-आख्यान लम्बौ बरनन होय। बाकौ सत्य भौतिक होय। मिथक आधि भौतिक तत्व पै आधारित होय। पृथ्वीराज रासो एक लम्बौ आख्यान है जब कै प्रलय के पाछैं मनु और श्रद्धा सौं सृष्टि कौ जनम एक मिथक है।

प्राचीन काल में देवता, दानव और बिनकी चमत्कारपूर्ण शक्तीन के मिथक हू प्रचलित रहे। यह बात जरूर है कै विज्ञान नैं मिथकन कौ विकास कम कर दियौ है पर हमारे समय में ही संसार में साम्यवाद की अवश्यंभावी विजय या हिटलर नैं जर्मन जाति के आर्य रक्त की श्रेष्ठता कौ मिथक चलायौ।

पच्छिमी साहित्य में आख्यान और मिथकन के अध्ययन के ताँईं अनेक मतवाद विकसित भए हैं। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक फ्रायड और जुंग नैं मिथक कूँ मानव के मन की अवचेतन प्रक्रियान कूँ समझिबे कौ महत्व

साधन मानों है। अगर इन दोउन के विश्लेषण में भिन्नता लगै तौहू वे इनकौं मानव मन के अवचेतन के प्रतीकात्मक वरनन मानकैं बिनकौ व्याख्या करैं हैं। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक ब्रिल नैं बाइबिल नें लिखी आदम और हौबा की मिथक की व्याख्या करते भए लिखौ है कै मानवता के प्रारम्भ में सब सुतंत्र और बेफिकर हे। जैसैं ही यौन भावना कौ सर्प आयौ, दुनिया बदल गई। वे आगैं लिखैं हैं कै अपने सैसव काल में हर एक बालक स्वर्ग में रहै है। पर, जैसैं ही बाकूँ यौन भावनान कौ ज्ञान हैवे लगै वैसैं ही बू सुरग सौं गिर जावै है।'[1]

महाभारत की जि कथा प्रचलित है कै कुन्ती के कान सौं कर्ण कौ जनम भयौ या पौन नैं बहकैं अंजना कौ गर्भाधान कर दियौ। ईसाई धर्म माँहि जि मानौं जावै है कै पवित्र आत्मा नैं साँस के माध्यम सौं मेरी के कान में प्रवेस करौ और ईसा कौ जनम भयौ। पच्छिमी मनोवैज्ञानिक जि मानैं हैं कै कान योनि कौ प्रतीक है और स्वाँस वीर्य कौ प्रतीक है। 'शतपथ ब्राह्मण' में लिखौ है कै प्रजापति के मुख की साँसन सौं मनुष्य जाति की रचना भई।

आजकल मिथकन की व्याख्या करबे की परम्परा चल परी है। पच्छिम में अनेक मतवाद विकसित भए हैं जिनमें मनोवैज्ञानिक और समाज-वैज्ञानिक मतवाद प्रमुख हैं। हमारे यहाँ एक कथा है कै भगवान कृष्ण नैं हजार फन वारे काली नाग कूँ नाथौ। याकी आध्यात्मिक व्याख्या जे करी जाय है कै मनुष्य कौ मन हजार मुखन कौ है याकी दो सक्ति या पत्नी हैं-स्मृति और कल्पना। इनके माध्यम सौं जे निरंतर विष-वमन करौ करै है और जीव कूँ भव-सागर सौं निकसन नाँय दे। जब जीव याकौ दमन करले तब कहूँ आनंद की बाँसुरी बजा सकै।

भगवान स्यामसुन्दर नैं अपनो छिंगुली उँगरिया पै गोवरधन पर्वत उठाय लियौ। याकी समाजशास्त्रीय व्याख्या यों करी जाय है कै भगवान नैं ब्रजवासीन कूँ आकास के देवतान की पूजा की ठौर गोवरधन के आसपास बाढ़-नियंत्रण की विधि बतायकैं बिनकूँ प्रलयंकारी बाढ़ सौं बचाय लियौ। बिनकूँ वन-पूजा और वन-संरक्षण कौ महत्व समझायौ। यही तौ ग्वालन के गोधन के रक्षण कौ आधार हो। या तरियाँ समाज-वैज्ञानिक मिथक कूँ सामाजिक आवस्यकतान सौं पैदा भई मानैं हैं। मनोवैज्ञानिक बाकौं मानवमन की आंतरिक जरूरतन सौं पैदा भई मानैं हैं।

आजकल अधिकतर आलोचक और विद्वान लोककहानी, आख्यान और मिथक कूँ कल्पना की क्रीड़ा और दिवास्वप्न की अभिव्यक्ति मानैं हैं। वे इन तीनोंन में साफ-साफ भेद करैं हैं। जि सही है कै मिथक और लोक कहानी की सामग्री समान सी होय। पर, सामान्य लोककहानी (परी कथा) कौ स्वरूप आत्मनिष्ठ होय। बाकौ जनम मानव मन की दमित इच्छान की काल्पनिक परितृप्ति या वास्तविक जीवन की कमीन की काल्पनिक पूर्ति ते होय। वह व्यक्ति और बाके वातावरण के द्वन्द्व सौं उपजै, जब मिथक या धर्मगाथा माँहिं नायक कोई मान्स एक तरियाँ सौं सारौ समाज अथवा समूह होय और बाके नायक की विजय प्राकृतिक ताकतन पै सामाजिक ताकतन की विजय मानी जाय। ऋग्वेद कौ एक मिथक है-वृत्र (मेघ) ऊषा कौ हरण करै और इन्द्र (विद्युत) अगिन की सहायता सौं वृत्र कौ वध करै और ऊषा कौ उद्धार करै। राम-रावन कौ युद्ध आख्यान है। गांव-गांव में गायौ जावे वारौ आल्हा हू आख्यान है।

---

(1) बेसिक प्रिंसीपल आफ साइको एनालिसिस, पृ. 63।

लोककथा लोकजीवन सौं अभिन्न होय। दूसरे शब्दन में लोकजीवन की खुली और दबी भई इच्छान, बिनकी आकांक्षान, बाकौ संघर्ष, बाकी हार और जीत कौ चित्रण होय। पच्छिमी साहित्य माँहि आलोचकन और समीक्षकन नैं लोकजीवन कूँ समझवे, बा प्रदेस की संस्कृति के विकास कूँ जानिवे के ताँई लोककथा के मनोवैज्ञानिक या समाजवैज्ञानिक विश्लेषण की अनेक विधि विकसित करी हैं। सोवियत रूस में तौ लोककथा कहानी (फोक लोर) कूँ समाजवादी विचार के प्रचार-प्रसार और परिपुष्ट करवे के काजैं, प्रयोग करौ गयौ है।

ब्रज साहित्य तौ लोककथान कौ सागर है। ब्रज के मूल नायक भगवान श्री कृष्ण कौ जीवन तौ जन-जन के गान कौ, प्रेरना कौ आधार रह्यौ है। याही सौं आज जरूरी है गयौ है कै विद्वान, साहित्य के या क्षेत्र पै हू निगाह डारैं तौ ब्रज साहित्य और संस्कृति के माध्यम सौं भारतीय संस्कृति के विकास कूँ समझिवे में काफी मदद मिलैगी। याके ताँईं विश्वविद्यालयन के विद्वान, आचार्यगन, मनोविश्लेषक और समाजशास्त्रीय विश्लेषण माँहि निष्णात व्यक्ति आगैं आवैं और ब्रज भारती के भंडार कूँ समृद्ध करवे कौ उपाय करैं, तौ अधिक उचित रहैगौ।

-161, विद्युत नगर बी,
अजमेर रोड, जयपुर-302029

-

अंग्रेजी माँहि Myth है, जाकौ हिन्दी पर्याय मिथक हैं। मैं यासौं सहमत हूँ। याकूँ स्वीकार करनौ चहिऐ। यामें कठिनाई जि आइ गई है कै अंग्रेजी अरु हिन्दी दोनूँन में ही अर्थ-विकृती के कारन याकौ तात्पर्य कोऊ कल्पित, मनगढ़न्त, अजूबे की बात है गयौ है। विश्व की मिथकन में दिव्य,भव्य अरु अलौकिक तत्वन कूँ कथा के रूप में धुनौ-बुनौ गयौ है। मेरे विचार सौं यदि मिथक=देवकथा मान लियौ जाय तौ स्थिरता व स्पष्टता कौ लाभ है सकै है।

-डॉ. हरद्वारीलाल शर्मा
(लोकवार्ता-विज्ञान खण्ड एक-पृष्ठ 362)

कोई विन्नैं सुनिवौ ई चाहै। लोककथा तौ कंठानुकंठ यात्रा करवे वारी रही हैं। इनकौ लिखित रूप नाँय मिलै है। लेकिन आज ऐसौ समै आय गयौ है कै इनकूँ लिखिकैं सुरक्षित कियौ ज़ानौ भौत आवस्यक है गयौ है। सहरन में वैठे भए अनेक साहित्यकार अरु साहित्यिक संस्था लोकसाहित्य कौ रोनौ तौ रोमें हैं परि ठोस काम करतौ कोई नाँय दिखाई देइ। लोककथान कौ संग्रह बड़ौ कठिन काम है परि असंभव कतई नाँय है। ब्रजभाषा अकादमी की सार्थकता तवई होयगी जव लोककथान कौ विसाल संग्रह करवावै। जा काजैं थोरी सी तकनीकी की जरूरत है। टेप रिकार्डर सौं लोककथान कौ संग्रह करकैं तव विनकूँ लिखौ जाय तवई सही रूप सामने आ सकैगौ। डॉ. सत्येन्द्र जी नैं ब्रज के लोकसाहित्य पै भौत काम कर्‌यौ है। योजनावद्ध तरीका सौं जा कार्य कूँ करौ जाय तवई लोकसाहित्य कूँ वचायौ जाय सकैगौ। अवई हाल कौ उदाहरन है। एक धन कुवेर नैं होली गेट (मथुरा) की सजावट में पचास लाख रुपैया फूँकि डारे। विनकूँ जो ब्रज संस्कृति सौं सच्चे अरथन में थोरौ हू लगाव होय तौ जाकौ दसवौं हिस्सा हू अगर खरच करि देय तौ ब्रज के लोकसाहित्य कौ अच्छौ खासौ संग्रह कियौ जाय सकै है। इन पंक्तीन के लेखक नैंऊ लोकसाहित्य पै शोध कर्‌यौ है। वा समै सौं कछू ऐसौ प्रभावित भयौ है कै लोकसाहित्य के अभाव में साहित्य सूनौ-सूनौ लगै है।

-केन्द्रीय विद्यालय, मथुरा कैंट, मथुरा (उ.प्र.)

लोककथान के मूल में, अवस्य ही, लोकमानस की ऊर्जा है जो सभ्यता के आदिकाल सौं लैकैं आज तानूँ 'नित नयी' रचना करती-करती थकी नाँय, 'गाथा' नाँय भई, और 'नित नये' रूपन में युगवोध कूँ युग की विडम्वनान, असंगतीन अरु विसंगतीन, विसंवाद अरु अंतर्विरोधन, विनोद अरु वेदनान कूँ-प्रस्तुत करै है, ऐसी सरल, मार्मिक वाग्धारा में-मौखिक-कै कहवे और सुनिवे वारे कूँ रस कौ अनुभव होय है और वू भीतर तानूँ 'छू ' जावै है।

–डॉ. हरद्वारीलाल शर्मा

(लोकवार्ता-विज्ञान खण्ड एक, पृष्ठ 386)

ब्रज लोककथा : आधुनिक भावबोध

- श्री भगवान दास मकरन्द

ब्रज लोककथान सौं आसय ब्रज लोक जीवन में सामान्यतया प्रचलित उन कथान सौं लगायौ जावै है, जो अपने गर्भ में समाज के पुरातन विस्वास, मूल्य अरु मान्यतान कूँ धारन करैं हैं। इनकौ कहूँ लिखित साहित्य मिलनौ दुर्लभ है। इनकौ सहज प्रस्फुटन समै-समै पै अपनौ विसेस महत्व राखै है। लोककथा वे हैं जो बड़े ही सहज भाव सौं समाज कूँ अपनौ शिक्षाप्रद सन्देस दै जाँय। लोककथा वे हैं जो आजऊ हमारी आँखिन के सामईं बरसन पहले के जीवन कौ साकार चित्रन प्रस्तुत करवे में समर्थ हैं। लोककथा वे हैं जो मानव कूँ पुरातन समाज अरु आज की सभ्यता के तुलनात्मक अध्ययन करवे कूँ पृष्ठ-भूमि उपलब्ध करावैं। लोककथा वे हैं जो आजऊ प्राचीन धार्मिक विस्वासन कौ डंका पीटैं। लोककथा वे हैं जो समाज कूँ पग-पग पै दैनिक जीवन कौ समाजशास्त्र उपलब्ध करावैं।

चाहै फुरसत के छिनन में अलावन के सहारे वैठे भये, हुक्का गुड़गुड़ामते भये बूढ़े-बड़ेन के संग उठते भये हूँकारे होंय, चाय दादी-नानी के चारौं ओर वैठे भये बच्चान के मन बहलावे कूँ सुनाई गई कथान कौ अनंत सागर होय। चाहै त्यौहारन पै लिपे आँगन में चौक पूर कै चारौं ओर वैठी भई चामर हाथ में लिए भई बैयरन की दई देवतान की कहानी होंय। सब ठौरन पै जे कछू न कछू नैतिक आदर्श प्रस्तुत करती देखी जा सकैं हैं।

जा बात कूँ अनेक उदाहरनन सौं नाँय समझायौ जा सकै है ताकूँ जे कथा मनुष्य के अन्तःस्थल तक पैठ करावे में समर्थ पाई जावैं। आज कै जा आपा-धापी के युग में हू जे कथा आधुनिक भावबोध के धरातल पै सटीक वैठैं। जे कथा आज हू समसामयिकता लिए भये पाई जावैं। आजहू इन्नें सुनिकैं ऐसी लगै कै जे कथा कह तौ आज की ही बात रही हैं। पर जिनकौ कहवे कौ अन्दाज अलग है। आज की या भौतिकवादी सभ्यता में हूँ जे महत्व भरी कही जाय सकैं।

आज जब चहुँ ओर पंचायत राज की बात चल रही है। सब जगह याई बात पै जोर दियौ जा रह्यौ है कै ग्रामीनन कूँ अपने छोटे-मोटे विवादन कूँ स्थानीय स्तर पै पंचायत के माध्यम सौं ही निपटानौ श्रेयस्कर है। या सत्ता के विकेन्द्रीकरन की जि बात नई नाँय। पंचायत कूँ अधिकाधिक अधिकार दैवे की बात हमारी सरकार तौ आज कर रई है परन्तु पंचायत कौ महत्व कितने सहज भाव सौं या लोककथा में दिखायौ गयौ है, देखौ-

एक समै शिव अरु पारवती या मृत्युलोक में भ्रनन कर रहे हते। घूमते-घूमते वे दोनूँ जब एक गाँव के पास पहुँचे तौ शिवजी नैं पंचायत भवन कूँ देखकैं वाके चौंतरा पै ढोक लगा दई। पार्वती जी बोलीं जि आप कहा कर रहे हौ? पूरौ संसार आपकूँ विश्वम्भर कहकैं माथौ नवावै अरु आप या चौतरा कूँ सिर नवाय रहे हौ। शिवजी कहवे लगे जि कोई साधारण चौंतरा नाँय। यहाँ पै पंच परमेसुर बैठकैं न्याव करैं। जि स्थान बड़ौ ही पवित्र मानौ जावै।

पर पारवती जी जा बात कूँ मानवे वारी कब हीं। वे बोलीं भोला भण्डारी तिहारी बात मोय नाँय जँची। या गाँव के साधारन से अनपढ़ आदमी परमेसुर कैसैं माने जा सकैं? अरु या स्थान सौं कहा मतलब है? पाँच आदमी तौ कहूँ भी बैठ कैं न्याव कर सकैं। मोकूँ तौ या बात कौ प्रमान दिखाऔ तब मैं तिहारी बातै मान सकूँ।

शिवजी बोले लै तोकूँ प्रमान ही दिखाऊँ। तुरत ही शिवजी नैं देखौ कै एक किसान सामईं बारे खेत में हर जोत रह्यौ। जेठ की दुपैरी ही, पसीनान में बू तर है रह्यौ। बेर-बेर में ई थोरी देर कूँ रुक जातौ अरु अपनी घरवारी के ताँईं गैल पै लम्बी-लम्बी निगाह फैंक लैंतौ। पर, वाकूँ अपनी धनियारन रोटी लैकैं आमती भई दिखाई नाँय दई। स्यात बू भूख अरु प्यास के मारैं व्याकुल हौ। शिवजी नैं वा किसान कौ रूप धारन कर लियौ अरु जा पहुँचे वाके घर। बाकी वैयर ते बोले आज तू मोकूँ रोटी लैकैं कैसैं नाँय आई, इतेक देर लगाय दई? वानैं अपनी मजबूरी बताई और तुरत ही शिवजी वा हारी के रूप में बने भये रोटी खायवे बैठ गए।

जब घनी देर है गई तौ बू खेत वारौ असली हारी सोचवे लगौ आज बू कैसैं नाँय आई रोटी पानी लैकैं? वानैं एक हाथ में पैंनिया सम्हारी और रिस के मारें लाल-तातौ भयौ चल दियौ घर कूँ। बुरबुरामत जाय रह्यौ लपकौ-लपकौ सौ। आज याई की खबर लैनी है। वानैं जाय कैं किवारन में धक्का दियौ तौ देख कैं हक्कौ-बक्कौ रह गयौ। वहाँ तौ वाई जैसौ एक और आदमी पहले ते ई बैठौ रोटी जैं रह्यौ। अब तौ दौनौंन में झगरौ हैवे लग गयौ। गाँव के लोग जुर गए पर कोऊ नाँय पहचान सकौ कै यामें असली मवासी कौन है। निरनय भयौ कै पंचायत जुरनी चइयै।

फिर कहा हौ जा पहुँचे लोग बाई पंचायत घर पै, जा अद्‌भुत फैसले ऐ सुनवे के काजैं। पांच पंच चुन लिए अरु हैबे लगौ न्याव। पंचन नैं कही भाई ऐसौ करौ कुम्हार कैं ते एक घरिया अरु वाकौ ढक्कन मँगवाऔ। एक उलायतौ सौ छोरा लपक कैं कुम्हार कैं ते घरिया अरु ढक्कन लै आयौ। पंचन नैं घरिया बीच चौतरा पै धर दई और कहबे लगे कै जौनसौ हारी जा घरिया में घुस जावैगौ बू ही असली मवासी मानौं जावैगौ। जापै नाँय घुसौ जावैगौ बू नकली है। शिवजी नैं सोची मैं यामें ते दस बेर घुस जाँऊ, जि मेरे काजैं कहा बड़ी बात है। बू दूसरौ मवासी सोचवे लगौ, भई मोपै तौ नाँय घुसौ जाय सात जनम में हू या घरिया में।

शिवजी नैं अक्क करी न धक्क अरु घुस बैठे घरिया में। पंचन्नैं झट्टई ढक्कन वाके मौहड़े पै ढक दियौ और कहवे लगे जि अलाय-बलाय है, जाय जराइंगे। जाऔ छोराऔ ऊपरा लै आऔ। उलावते से छोरा झट्ट ऊपरा लै आए। अब तौ पारबती जी बुढ़िया के बेस में वहाँ आईं और बिनती करवे लगीं कै जा घरियाय मोकूँ दै देऔ। लोग-बाग कहबे लगे, बुढ़िया तेरौ दिमाक चौं खराब है रह्यौ है। बड़ी मुस्किलन ते जाते पीछौ छूटौ

है अरु तू अब जाय अपने संग राखनौ चाहे। जा अलाय-बलाय कौ तू कहा करैगी, जाय तौ जर जान दै। तब पारबती जी अपने मूल रूप में प्रकट भईं और बिन्नैं सबरी बात बताई तब जाकैं शिवजी बा घरिया ते मुक्त भये अरु पारबती जी कूँ जि बात माननी परी कि पंच वास्तव में परमेसुर के अवतार होंय।

आज यदि हल्के-पतरे झगड़े गाँमन में ही न्याव सौं निपटा दिये जाँय तौ सरकार की बहौत तगड़ी समस्या हल है जावै। पर जरूरत जा बात की है कै वे पंच अपने आपकूँ परमेसुर मानकैं ईमानदारी सौं दूध कौ दूध अरु पानी कौ पानी करैं और न्याव करवे बारे बिनके न्याव में परमेसुर कौ भाव देखें। तबई हमारी जि समस्या हल है सकै। आज फिर सौं पंचथड़ी कौ महत्व स्थापित है सकै है।

आज हर एक मानस इतेक अन्तर्मुखी है गयौ है कै बू अपने भले के अलावा और दूसरे के हित की बात सोचई नाँय सकै। आज निस्वार्थ सेवा की बात बड़ी अनकटौंटी सी लगै। कितेकऊ ढिंढोरा पीटौ पर हरेक बात में मानस अपनौ स्वारथ पहलैं टटौरै। दया भावना कौ स्थान तौ समझौ वाके हृदय में है ई नाँय। दया हू बू तबई करैगौ जब बामें कछू स्वारथ निहित होतौ पायौ जाबैगौ।

ब्रज लोककथान कौ जुड़ाव कहूँ न कहूँ धार्मिक परिप्रेक्ष्य ते जुड़ौ भयौ अवस्य पायौ जाबै। इनमें कहूँ न कहूँ दई देवतान की झलक अवस्य मिल जाबैगी। बा पुरातन समै में मानव मूल्यन कौ निर्धारन तर्क के आधार पै कम अरु धार्मिक विस्वास अरु श्रद्धा के आधार पै ज्यादा मानौ जाबै हौ। जि बात नाँई कै बा युग में मानव तर्कहीन प्रानी हौ। बा समै में समाज के प्रत्येक अंग अरु क्रियाकलापन में धर्म की इतनी गहरी पैठ ही कै काऊ क्षेत्र में धरम कूँ पृथक करकैं नाँय देखौ जाय सकै हौ। बा समै के सुधारकन नैं हू याई कारण मानव आदर्श अरु मूल्यन कूँ मानव के मस्तिस्क पै गहरी छाप अंकित करवे के काजैं तर्क के बजाय बिनकूँ धार्मिक आधार दै दियौ। बा धर्म के संग बँधकैं जे कथा इतिहास की अमर थाती हौंती चली गईं।

आज सब ठौर आपसी प्रेम, सौहार्द अरु सहयोग की बात की परमावस्यकता है। चाहै परिवार के छोटे से स्तर पै देख लेऔ चाहै राष्ट्र अरु संसार के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पै। सिगरी जगह आपसी प्रेम अरु अपनत्व की भावना जरूर हौनी चइयै। जब तक आपस में मेलजोल नाँय होयगौ तब तक कोऊ कार्य सफल नाँय है सकै। आज संयुक्त राष्ट्र संघ, मानवाधिकार संगठन, समाज सेवी संस्था अरु कितेक ई संगठन, सर्वाधिक पारस्परिक सहयोग की आवस्यकतान पै बल दै रहे हैं। जि सहयोग की बात नई नाँय। ब्रज लोककथान में याकौ साकार रूप देखौ जा सकै। एक लोककथा कौ उदाहरन लैं-

एक सेठजी हे। बिनके पास इतेक धन-सम्पत्ति अरु जायदाद हती कै बाकौ कोऊ ओर छोर नाँऔं। बाके सात बेटा हे। सातों बेटा न्यारे-न्यारे धन्धेन में लगे भये लक्ष्मी की प्राप्ति करै हे। यानी यौं कहौ कै बिनके परिवार पै लक्ष्मी मैया की पूरी किरपा हती। सिगरे भैया पूरे प्रेम भाव सौं घर में रहते। एक दिना का भयौ कै सेठजी के सुपने में लक्ष्मी जी आईं अरु सेठजी ते कहवे लगीं कै सेठ मैं अब तेरे घर ते जानौं चाह रही हूँ। सेठ जी के होस गुम है गए। वे बोले मैया मोपै कहा भूल भई है जो तू जानौ चाह रही है। मोय छमा करौ।

लछमी मैया बोली, कछू भूल नाँय भई। यों समझ कै तेरे यहाँ रहवे कौ मेरौ समै पूरौ है गयौ। अब मैं कहूँ और जाऊँगी। हाँ एक वात जरूर है तू कछू माँगनौ चाहै तौ माँग लै, मैं तोय तीन दिना की मोहलत दै रही हूँ। तीन दिना में तू अपने पूरे कुनवा ते वतराय लै । जो तोय माँगनौं होय बू माँग लै। वाय दैकैं मैं चली जाऊँगी। सेठ नें हामी भर दई। वा रात सेठ कूँ नींद नहीं आई। सकारैं उठते ही सव घरैयान नैं देखौ कै सेठजी खटपाटी लैकैं पर गए। कारन पूछौ तौ मालुम परौ कै बू चीज सोचनी है जो लछमी जी ते माँगनी है। कोऊ वोलौ 100-200 मकान माँग लेऔ। उनकौ भारौ आवैगौ वाई ते गुजारौ चलौ करैगौ। सेठ नैं सोची जव लछमी ई चली जावैगी तौ भारौ कहाँ ते आवैगौ। काऊ नें एक मन सौनौ माँगवे की बात कही। काऊ नैं खेत माँगवे की बात कही। कोऊ रुपैयान की वात कर रह्यौ। कोऊ कह रह्यौ कै लछ्मी जी ते एक हजार घोड़ा माँग लेऔ। कोऊ जागीर की कह रह्यौ और कोऊ सौने के महल की।

पर सेठ की समझ में एकऊ वात नाँय आई। बू सोचवे लग्यौ कै जव लछमी जी ही नाँय रहिंगी तौ जि सव चीज कहा करिंगी। छोटी ई छोटी वहू डरपती सी अपनी सास ते बोली कै सुसर जी कूँ एक चीज मैं हू वतानौं चाहूँ यदि मेरी वात मान लैं तौ। सास वाय सेठजी के पास लै गई। वहू घूँघट में ते सास कूँ सम्वोधित करकैं वोली कै माताजी सुसरजीन ते कह देऔ कै लछमी जी ते ई माँगें कै हमारे परिवार के सदस्यन में जितेक प्रेम भाव आज है वाते आठ गुनौ प्रेम भाव है जावै। सेठ के दिमाग में बू वात वैठ गई कै यदि प्रेम भाव रह्यौ तौ हम दुर्दिन में हू अपनौ समै चोखी तरियाँ निकार लिंगे। एक कमावैगौ तौऊ सव मिलजुल कैं नैया पार लगाय लिंगे। वानैं बू वात मान लई।

दूसरे दिना रात में लछमी जी फिर आईं। सेठ जी नैं कही जौ तुम अव जावे कौ पूरौ ही मानस वना चुकी हौ तौ हे लछमी जी हमैं जि वरदान देऔ कै हमारे परिवार में आज जितेक मेल जोल व प्रेमभाव है वासौं आठ गुनौ प्रेम भाव है जावै। या अनौखे वरदान कूँ सुनकैं लछमी जी दंग रह गईं। वोलीं सेठ एक वातै वता कै जहाँ प्रेम भाव रहैगौ वहाँ ते मैं कैसें जा सकूँ। अरे प्रेम भाव जहाँ रहै वहीं तौ मैं रहूँ। सेठ तू दूसरौ वरदान माँग जाते मैं तेरे घर ते जा सकूँ। सेठ वोलौ ना मैं तौ जाई वरदानैं माँगुंगौ और या तरियाँ प्रेम भाव अरु सहयोग के आगैं लछमी जी कूँ झुकनौ परौ।

एक दूसरी लोककथा में पतिव्रता नारी की महत्ता दिखाई गई है। एक राजा कहै कै-

'कै सोवै राजा कौ पूत।

कै सोवै जोगी अवधूत।

कै सोवै जंगल कौ स्याँप।

कै सोवै जाके माई न वाप।'

वा राजा की एक वेटी कूँ याही लोककथा में सिध्द करकैं वतावै कै ये चारौं नाँय सोइ सकैं। केवल बू

ही सोइ सकै जाकी नार पतिव्रता होय। यदि राजा कौ पूत सोयगौ तौ बू राजनीति कैसैं सीखैगौ, जोगी सोवैगौ तौ अपनौ परलोक कैसैं सुधारैगौ, जंगल कौ स्यॉंप सोवैगौ तौ जान कूँ खोय देगौ, अरु जाके मैया-बाप नाँय बू सोवैगौ तौ भूखौ मर जावैगौ।

ऐसी ही न जानैं कितेक लोककथान में अनेक शिक्षाप्रद बात कही गई हैं जो आज हू सटीक कही जा सकैं हैं। जा सन्देस कूँ बड़े-बड़े ग्रंथ अरु विद्वान नाँय समझाय सकैं बाई ज्ञान कूँ जे लोककथा कब दै जाएँ मालुम ई नाँय परै। इनकौ ज्ञान-सम्प्रेषन अनौपचारिक स्थिति में पायौ जावै है। इनकौ प्रत्यक्ष श्रवन ठेठ ब्रज के गाँमन में पायौ जा सकै है।

आज मानस भौतिकवादी सभ्यता अरु कलियुग के प्रभाव के कारन पशुन सौं हू बदतर है गयौ है। बू समाज के नैतिक आदर्सन कूँ भुलामतौ जा रह्यौ है। जे लोककथा समै-समै पै बाकूँ सचेत कर सकैं। पर या आपाधापी के युग में युवान कौ मन इन लोककथान में नाँय लगै। बे तौ चोली के पीछे का है बाय ढूँढ़बे में अपने समै कूँ बरबाद कर रहे हैं।

आज या प्राचीन अमूल्य विरासत के संरक्षण अरु संवर्धन की सर्वत्र परमावास्यकता है। आज आवस्यकता है समाज कूँ इनकौ महत्व बताबे की। आज की जरूरत है समाज कूँ इन लोककथान सौं वा ज्ञान कूँ ग्रहण करबे की जो जीवन कूँ सुखमय बना सकै अरु दुबारा या धरा पै राम-राज्य की संकल्पना कूँ साकार कर सकै है। ब्रज क्षेत्र में ये कथा धीरैं-धीरैं लोप हौंती जा रही हैं। इनके लिखित संग्रह की आवस्यकता है। छात्र-छात्रान के पाठ्यक्रमन में हू इन लोककथान कौ समावेश जरूरी हैं। मैंनें अपने विद्यालय में छोटे-छोटे बालकन कूँ इन लोकथान सौं ज्ञान दैवे कौ अनुपम प्रयोग कियौ है। और बू बहुत सफल रह्यौ है। ब्रज लोककथान कौ सागर अनन्त है अरु प्रत्येक कथा अपनौ एक अलग विसेस महत्व राखै है। आवस्यकता है बाकूँ देखबे के दृस्टिकोन की, सीखवे के दृस्टिकोन की।

-कीर्तनियाँ निवास, गोविन्द मौहल्ला
कामां, भरतपुर, (राज.)

लछमी मैया बोली, कछू भूल नाँय भई। यों समझ कै तेरे यहाँ रहवे कौ मेरौ समै पूरौ है गयौ। अब मैं कहूँ और जाऊँगी। हाँ एक बात जरूर है तू कछू माँगनौ चाहै तौ माँग लै, मैं तोय तीन दिना की मोहलत दै रही हूँ। तीन दिना में तू अपने पूरे कुनवा ते वतराय लै । जो तोय माँगनौं होय बू माँग लै। बाय दैकें मैं चली जाऊँगी। सेठ नें हामी भर दई। वा रात सेठ कूँ नींद नहीं आई। सकारैं उठते ही सब घरैयान नैं देखौ कै सेठजी खटपाटी लैंकें पर गए। कारन पूछौ तौ मालुम परौ कै बू चीज सोचनी है जो लछमी जी ते माँगनी है। कोऊ बोलौ 100-200 मकान माँग लेऔ। उनकौ भारौ आवैगौ बाई ते गुजारौ चलौ करैगौ। सेठ नैं सोची जब लछमी ई चली जावैगी तौ भारौ कहाँ ते आवैगौ। काऊ नें एक मन सौनौ माँगवे की बात कही। काऊ नैं खेत माँगवे की बात कही। कोऊ रुपैयान की बात कर रह्यौ। कोऊ कह रह्यौ कै लछ्मी जी ते एक हजार घोड़ा माँग लेऔ। कोऊ जागीर की कह रह्यौ और कोऊ सौने के महल की।

पर सेठ की समझ में एकऊ बात नाँय आई। बू सोचवे लग्यौ कै जब लछमी जी ही नाँय रहिंगी तौ जि सब चीज कहा करिंगी। छोटी ई छोटी बहू डरपती सी अपनी सास ते बोली कै सुसर जी कूँ एक चीज मैं हू बतानौं चाहूँ यदि मेरी बात मान लैं तौ। सास बाय सेठजी के पास लै गई। बहू घूँघट में ते सास कूँ सम्बोधित करकें बोली कै माताजी सुसरजीन ते कह देऔ कै लछमी जी ते ई माँगैं कै हमारे परिवार के सदस्यन में जितेक प्रेम भाव आज है बाते आठ गुनौ प्रेम भाव है जावै। सेठ के दिमाग में बू बात बैठ गई कै यदि प्रेम भाव रह्यौ तौ हम दुर्दिन में हू अपनौ समै चोखी तरियाँ निकार लिंगे। एक कमावैगौ तौऊ सब मिलजुल कैं नैया पार लगाय लिंगे। वानैं बू बात मान लई।

दूसरे दिना रात में लछमी जी फिर आईं। सेठ जी नैं कही जौ तुम अब जावे कौ पूरौ ही मानस बना चुकी हौ तौ हे लछमी जी हमैं जि वरदान देऔ कै हमारे परिवार में आज जितेक मेल जोल व प्रेमभाव है बासौं आठ गुनौ प्रेम भाव है जावै। या अनौखे वरदान कूँ सुनकैं लछमी जी दंग रह गईं। बोलीं सेठ एक बातै बता कै जहाँ प्रेम भाव रहैगौ वहाँ ते मैं कैसें जा सकूँ। अरे प्रेम भाव जहाँ रहै वहीं तौ मैं रहूँ। सेठ तू दूसरौ वरदान माँग जाते मैं तेरे घर ते जा सकूँ। सेठ बोलौ ना मैं तौ जाई वरदानैं माँगुंगौ और या तरियाँ प्रेम भाव अरु सहयोग के आगैं लछमी जी कूँ झुकनौ परौ।

एक दूसरी लोककथा में पतिव्रता नारी की महत्ता दिखाई गई है। एक राजा कहै कै-

'कै सोवै राजा कौ पूत।

कै सोवै जोगी अवधूत।

कै सोवै जंगल कौ स्याँप।

कै सोवै जाके माई न बाप।'

वा राजा की एक वेटी कूँ याही लोककथा में सिध्द करकैं बतावै कै ये चारौं नाँय सोइ सकैं। केवल बू

ही सोइ सकै जाकी नार पतिव्रता होय। यदि राजा कौ पूत सोयगौ तौ वू राजनीति कैसैं सीखैगौ, जोगी सोवैगौ तौ अपनौ परलोक कैसैं सुधारैगौ, जंगल कौ स्याँप सोबैगौ तौ जान कूँ खोय देगौ, अरु जाके मैया-बाप नाँय बू सोवैगौ तौ भूखौ मर जावैगौ।

ऐसी ही न जानैं कितेक लोककथान में अनेक शिक्षाप्रद बात कही गई हैं जो आज हू सटीक कही जा सकें हैं। जा सन्देस कूँ बड़े-बड़े ग्रंथ अरु विद्वान नाँय समझाय सकें बाई ज्ञान कूँ जे लोककथा कब दै जाएँ मालुम ई नाँय परै। इनकौ ज्ञान-सम्प्रेषन अनौपचारिक स्थिति में पायौ जावै है। इनकौ प्रत्यक्ष श्रवन ठेठ ब्रज के गाँमन में पायौ जा सकै है।

आज मानस भौतिकवादी सभ्यता अरु कलियुग के प्रभाव के कारन पशुन सौं हू बदतर है गयौ है। बू समाज के नैतिक आदर्सन कूँ भुलामतौ जा रह्यौ है। जे लोककथा समै-समै पै बाकूँ सचेत कर सकैं। पर या आपाधापी के युग में युवान कौ मन इन लोककथान में नाँय लगै। बे तौ चोली के पीछे का है बाय ढूँढ़बे में अपने समै कूँ बरबाद कर रहे हैं।

आज या प्राचीन अमूल्य विरासत के संरक्षण अरु संवर्धन की सर्वत्र परमावास्यकता है। आज आवस्यकता है समाज कूँ इनकौ महत्व बतावे की। आज की जरूरत है समाज कूँ इन लोककथान सौं वा ज्ञान कूँ ग्रहण करबे की जो जीवन कूँ सुखमय बना सकै अरु दुबारा या धरा पै राम-राज्य की संकल्पना कूँ साकार कर सकै है। ब्रज क्षेत्र में ये कथा धीरैं-धीरैं लोप हौंती जा रही हैं। इनके लिखित संग्रह की आवस्यकता है। छात्र-छात्रान के पाठ्यक्रमन में हू इन लोककथान कौ समावेश जरूरी हैं। मैंनैं अपने विद्यालय में छोटे-छोटे बालकन कूँ इन लोकथान सौं ज्ञान दैवे कौ अनुपम प्रयोग कियौ है। और बू बहुत सफल रह्यौ है। ब्रज लोककथान कौ सागर अनन्त है अरु प्रत्येक कथा अपनौ एक अलग विसेस महत्व राखै है। आवस्यकता है बाकूँ देखबे के दृस्टिकोन की, सीखवे के दृस्टिकोन की।

-कीर्तनियाँ निवास, गोविन्द मौहल्ला
कामां, भरतपुर, (राज.)

ब्रज के पर्वन की लोककथा

-श्रीमती चन्द्रकला शर्मा

ब्रज में पर्व अरु उत्सवन की धूम सी मची रहै है। ब्रज के पर्वन के विसै में ई कहावत प्रसिद्ध है- 'सात वार नौ त्यौहार।' या लियें ब्रज में हरेक दिना पर्व अरु उत्सवन के रूप में मनायौ जाय है। काऊ-काऊ दिना तौ ऐसीऊ होय है कै एक दिन माँहिं दो-दो पर्व मनाये जावैं। इन पर्वन की ब्रज में अलग-अलग रोचक अरु लोक कल्यानकारी कथा हैं। इन कथान माँहि अन्त में लोक कल्यान की कामना हू करी जाय। इन कथान के अन्त में कह्यौ जाय है कै 'जैसें याकौ कल्यान भयौ वैसें ही सबकौ कल्यान होय।'

भारत माँहि रितुन के छः चक्र हौंय। ब्रज माँहिं वाई रितु चक्रन कें अनुसार पर्व अरु उत्सवन कौ क्रम सुव्यवस्थित रूप ते चलतौ रहै है। रितुन माँहिं मनाये जावे वारे हरेक पर्व की अलग-अलग कथा हैं, जिनकूँ वैयरवानी एक ठौर वैठकैं पर्व के दिना वड़ी भक्ति भावना ते आपस में सुनायौ करैं हैं। एक प्रमुख वैयर पर्व की कथा कूँ कहै है अरु दूसरी वैयरवानी अपने हाथ माँहिं चावल लैंकैं वा कथा ए ध्यान ते सुनैं हैं। कथा के अन्त में चावल धरती में गिराय कैं सबके कल्यान की कामना करैं हैं। अलग-अलग रितुन के पर्वन की कथा कछु या तरियाँ सौं हैं-

बरसा रितु के पर्वन की ब्रज लोककथा

वरसा रितु माँहिं अनेकन पर्वन की धूम मची रहै है। या रितु में मुख्य रूप ते नाग पंचमी, पुत्रदा एकादसी, रक्षावन्धन, जन्माठैं, वच्छवारस, हरितालिका तीज, गणेश चतुर्थी, रिसी पंचमी आदि पर्व हैं।

नाग पाँचैं :

श्रावण शुक्ल पाँचैं कूँ नाग पंचमी मनाई जाय है। या दिना नागन की पूजा करी जाय है। पाँचैं के दिना वैयरवानी अपने घर के द्वार के दोनों वगल माँहिं नागन के चित्र वनायकैं पूजा करैं हैं।

कथा :

काऊ ब्राह्मन के सात वेटान की सात वहू हीं। छः वहू तौ अपने भइयान के संग पीहर चली गईं पर सातवीं वहू के कोई भैया नाऔ। या कारन वू पीहर नाँय जाय सकी। वा विचारी नैं भौत दुखी हैकैं धरती कूँ धारन

करिवे वारे शेषनाग कूँ भैया के रूप में याद कियौ। याद करते ई शेषनाग जी ब्राह्मन कौ रूप बनाय कैं वाके पास आये अरु वाय लिवा कैं लै गये। नैंक दूर चलिकैं वे अपने असली रूप में आय गये अरु बाय अपने फन पै बैठार कें नाग लोक लैकें चले गये। वहाँ वू बड़े आनन्द सौं रहवे लगी। वाई समै शेषनाग के कुल मौंहिं भौत से बच्चान नें जनम लियौ। जब बच्चा इत उत घूमवे लगे तौ नागिन नें बा सातवीं बहू कूँ पीतर को एक दीयौ दै दियौ अरु बाते कही के याके उजारे ते तुम अँधेरे मे ऊ देखि सकौ हौ। एक दिना अचानक बाके हात ते बू दीयौ घूमते भये नागन के बच्चान पै गिरि गयौ जाते बिन सबकी पूँछ नैंकु नैंकु जर गई। जा घटना के थोरे दिना पीछें वू अपने ससुराल भेज दई। अगले सामन बू बहू दीवार पै नाग देवता कौ चित्र बनाय कैं वाकी विधि सौं पूजा करिकैं बाकी मंगल कामना करिबे लगी। बाई समै बे नाग बच्चा अपनी पूँछ काटिवे वारी बहू कूँ मारिवे अरु बदलौ लैवे कूँ बा ठौरी आय गए। पर बा बहुए अपनी ही पूजा करिते देखि कैं वे सब खुस है गए अरु बिनकौ गुस्सा ठंडौ है गयौ। फिर बिन नाग बच्चान नैं वा सातवीं बहू के हात ते दूध पियौ अरु चामर खाए। फिर बिननैं साँपन ते निडर हैवे कौ वरदान दियौ अरु बहुमूल्य मणीन की मालाऊ भेट दई। ईहू कही कै जो कोई बइयर सामन के सुकल पक्ष की पाँचैं कूँ हमकूँ भैया के रूप मौंहि पूजैगी बाकी हम हमेशा रच्छा करते रहिंगे।

राखी कौ पर्व :

ई पर्व सामन की पूनौ कूँ मनायौ जाय है। या दिना भैना भैया के हाथ में राखी बाँध्यौ करै है अरु भैया ते कहै है कै हे भैया, मेरी सब तरियाँ ते रच्छा करियौ।

कथा :

एक बेर भगवान कृष्ण के हाथ मौंहिं चोट लगि गई अरु खून बहवे लगि परौ। बा समै ई देखिकैं द्रोपदी नैं अपनी धोती कौ छोर फाड़ि कैं भैया के हाथ मौंहिं बाँध दियौ। यांई बंधन कौ ऋन मानि कैं श्री कृष्ण नैं, दु:शासन नैं जब द्रोपदी कौ चीर खेंचों तब, चीर बढ़ाय कैं बाकी लज्जा राखी।

रच्छा बंधन की दूसरी कथा पौराणिक है। एक बेर सुरन अरु असुरन के बीच ग्यारह वर्ष तानूँ संग्राम भयौ। या संग्राम में इन्द्र हार गयौ अरु अमरावती मौंहिं जाय कैं छिप गयौ। ताके पस्वात विजयी दैत्यराज नैं घोसित करि दियौ कै इन्द्र बाकी सभा में नाँय आय सकै। दैत्यराज नैं वेद पठन-पाठन, उत्सव, धर्मकर्म सबरे समाप्त करि दिए। धरम के नास होते ही देवतान कौ बल घटिवे लगि गयौ। तब बृहस्पति के पास जाय कैं इन्द्र नैं कही कै मैं असुरन ते युद्ध करनौ चाहूँ। वृहस्पति नैं पहलैं तौ नांहीं करी पर जब इन्द्र नहीं मानौं तौ बाके हठ अरु उत्साह कूँ देखि कैं बिन्नैं सामन की पूनौ कूँ सबेरैई बाकौ रच्छा-विधान सम्पन्न कियौ। इन्द्राणी नैं ब्राह्मण अरु पुरोहितन ते स्वस्तिवाचन करायकैं इन्द्र के दाँए हाथ मौंहि रच्छा की पोटली बाँधि दीनी। वा रच्छा की पोटली के बल पै इन्द्र नैं असुरन पै विजय प्राप्त करी।

पुत्रदा एकादसी:

सामन शुक्ल पक्ष ग्यारस कूँ पुत्र-प्राप्ति के तांईं भगवान विष्नु कौ व्रत कियौ जाय है। रात कूँ भगवान की मूर्ति के पास सोयौ जाय।

बनाई जाय है। वाके पाछैं चौदह गाँठ लगाय कैं हर्दी के रँगे कच्चे डोरा रखिकैं गन्ध, चामर, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य ते पूजन कियौ जाय। वाके बाद अनन्त देव कौ ध्यान करिकैं सुद्ध अनंत कूँ अपनी दाईं बाँह माँहिं धारन कियौ जाय है।

कथा :

प्राचीन काल माँहिं सुमन्त नाम के ब्राह्मण की सुसीला नाम की कन्या ही। वाकौ ब्याह कौंटिल्य रिसी ते करि दियौ। कौंटिल्य रिसी जब सुसीला कूँ लैकैं आश्रम कूँ जाय रहे हे तौ मारग माँहिं वानैं कछु बैयरवानी काऊ देवता की पूजा करती भई देखीं। तब बिन्नैं वाकूँ अनन्त ब्रत की महिमा बताई। या महिमा कूँ जानिकैं सुसीला नैंऊ ब्रत कौ अनुष्ठान कियौ अरु चौदह गाँठ वारौ डोरा अपने हाथ में बाँधि लियौ। चौदह गाँठ वारे अनन्त कूँ सुसीला के हाथ माँहिं बँधौ देखिकैं कौंटिल्य रिसी नैं वाय तोरिकैं आग माँहिं डार दियौ। या कारन अनन्त भगवान बिनते रूठि गए अरु बिनके सुख धन-दौलत सबरे नष्ट है गए। जब सुसीला नैं अनन्त भगवान के अपमान करिबे की याद दिवाई तौ कौंटिल्य रिसी कूँ भौत पछतावौ भयौ अरु बन कूँ चले गए। बन माँहिं घूमते-घूमते वे एक दिना धरती पै गिर पड़े। तब अनन्त भगवान नैं बिनकूँ दरसन दिए अरु बिनकौ अपमान करिबे के कारन कष्ट भोगिबे की बात बताई। अनन्त भगवान नैं बिनते चौदह वर्ष तानूँ अनुष्ठान करिबे के लिये कह्यौ तब बिन्नैं अनुष्ठान कियौ, तौ वे धन-धान्य ते सम्पन्न है गये।

दसैरा :

ई पर्व आस्विन शुक्ल पच्छ दसमी कूँ मनायौ जाय है। या दिना भगवान राम नैं रावण पै चढ़ाई करिकैं विजय प्राप्त करी ही।

कथा :

एक बेर पारबती नैं सिवजी सौं दसैरा कौ फल पूछौ तौ बिन्नैं बतायौ कैं दसैरा के दिना सांयकाल कूँ तारौ निकरै वा समय 'विजय' नाम कौ काल होय है। या काल माँहिं श्री राम नैं लंका पै चढ़ाई करी ही। या दिना विजय काल माँहिं राजा कूँ अपनौ दल बल सजायकैं छौंकरा के पेड़ कौ पूजन करनौ चहिए। चौंकै छौंकरा के पेड़ नैं अर्जुन के हथियारन की रच्छा करी ही। या दिना राजा पूर्व दिसा में अपने राज्य की सीमा ते बाहर जायकैं शत्रु की मूर्ति बनायकैं वाकी छाती में बाण लगावै, ब्राह्मणन की पूजा करै, अपनी सेना अरु अस्त्र-शस्त्रन कौ निरीक्षण करै अरु फिर अपने महल कूँ लौटि आवै। या क्रिया ते वाकी हमेसा शत्रु पै विजय होय है।

सरद पूनिंमा :

ई पर्व आस्विन सुक्ल पूनिंमा कूँ मनायौ जाय है। या दिना खीर बनाई जाय है अरु चाँदनी में भगवान कौ भोग लगायौ जाय है।

कथा :

एक सेठ कैं द्वै लड़की हीं। एक लड़की आश्विन सुक्ल पूनिंमा कौ पूरौ ब्रत कियौ करै ही। दूसरी लड़की

अधूरौ व्रत करै ही। दूसरी लड़की के अधूरे व्रत करिवे के कारन वाकी संतान मर जायौ करैं हीं। पंडितन ते याकौ कारन जानिकैं बू या व्रत कूँ पूरौ करिवे लग गई। फिर हू वाकौ बेटा मरि गयौ तब वृ मरे भये बेटा कूँ पीढ़ा पै छोड़ि कैं छोटी बहिन कूँ बुलाय कैं लै आई। तब वाकी साडी ते छिम जावे पै वृ लड़का जिन्दा है गयौ। तब ते ई या व्रत कौ महत्व बढ़ि गयौ।

दिवारी :

ई पर्व कातिक महीना की मावस कूँ मनायौ जाय है। या दिना लछमी जी की पूजा धूमधाम ते करी जाय ।

कथा :

एक साहूकार की बेटी पींपल के पेड़ में नित्य पानी दियौ करै ही। पींपल के पेड़ में ते लछमी जी निकरतीं अरु चली जातीं। एक दिना लछमी जी नैं साहूकार की छोरी ते कही कै तू मेरी सहेली बनि जा। वृ लछमी जी की सहेली बनि गई। तब एक दिना लछमी जी नैं वाकूँ अपने घर पै भोजन करिबे कूँ बुलायौ। जब वृ भोजन करिबे गई तौ लछमी जी नैं सौने की चौकी पै बैठाय कैं वाकूँ जिमायौ अरु साल दुसाला दिए। याके बाद लछमी जी नैं कही कै मैं हू तेरे घर माँहिं जीमबे कूँ आऊँगी। तौ साहूकार की छोरी नैं लछमी जी कूँ अपने घर पै बुलाय लियौ। घर जाकैं साहूकार की छोरी बाप ते गुस्सा हैकैं बैठि गई। जब साहूकार नैं कही कै लछमी जी तौ जीमबे आय रही हैं और तू रूसी बैठी है तौ छोरी नैं कही कै हमारे घर माँहिं तौ कछू ही नाँय। काय ते लछमीजी कूँ जिमाऊँ। तौ साहूकार नैं कही कै जो कछु हमारे पास है बाई ते विनकौ सत्कार करि दिंगे। बाई समय एक चील नौलखा हार साहूकार के घर पटक गई। साहूकार की छोरी नैं बाई की सौने की चौकी बनवाय कैं बड़े आदर ते लछमी जी की खातिर करी। बाते लछमी माता प्रसन्न है गई अरु साहूकार कैं खूब धन-दौलत है गई। जैसैं लछमी जी साहूकार कूँ टूटी बैसैंई सबकूँ धन-दौलत दे। दिवारी कूँ रामचन्द जी लंका विजय करिकैं अयोध्या आये तौ याई मावस कूँ बिनकौ राजतिलक भयौ या खुसी में दीपक जोरे जाँय अरु दिवारी कौ त्यौहार मनायौ जाय है।

भैया दौज :

ई त्यौहार कातिक के शुक्ल पच्छ की दौज कूँ मनायौ जाय है। या दिना भैया अरु बहन संग-सग यमुना में नहामें अरु तिलक लगवाकैं बाके घर भोजन करैं हैं। या लिये याकूँ 'यम द्वितीयाऊ' कहैं हैं।

कथा :

सूरज भगवान कैं संज्ञा नाम की बैयर ही। बाकैं यमराज नाम कौ बेटा हौ अरु जमुना नाम की बेटी ही। संज्ञा सूरज की किरनन नैं सहन नाँय करिबे के कारन छाया नाम के ध्रुव प्रदेस माँहिं रहिवे लगि गई। बाकें अस्वनी कुमार अरु सनीचर नाम की संतान भई। छाया यम तथा जमुना ते विमाता कौ सौ व्यवहार करिवे लगि परी।

याते दुखी हैकें जमुना गोलोक में चली आई। एक दिना यमराज कूँ अपनी बहन की याद आय गई अरु गोलोक माँहिं मथुरा के विश्राम घाट में जमुना ते भेंट भई। अपने भैया कूँ देखि कें जमुना भौत खुस भई। बानें अपने भैया कौ स्वागत-सत्कार करौ अरु बाकूँ भोजन करवायौ तौ यम बाते भौत खुस भयौ। तब यम नें बाते बरदान माँगिवे के ताँईं कही तौ बानें बरदान माँगौ कै जो भैया दौज के दिना भोजन करिकैं मथुरा में विश्राम घाट पै अपनी बहन के संग जमुना में नहावैगौ बू यमलोक कूँ नहीं जायगौ। बू सीधौ बैकुण्ठ कूँ जायगौ। बाई दिना ते भैया दौज कौ त्यौहर मनायौ जाय है।

बसंत ऋतु के पर्वन की ब्रज लोककथा

सकट चौथ :

बंसत रितु माघ के महीना तेई मानी जाय है। या त्यौहार कौ ब्रत माह की कृष्ण पच्छ की चौथ कूँ कियौ जाय है। बैयरबानी रात कूँ चन्दा कूँ अर्घ दैकें अरु गणेश जी की पूजा करिकैं प्रसाद लैकें भोजन करैं हैं।

कथा :

एक बेर संकर भगवान के सामईं बिनके पुत्र गणेश जी अरु कार्तिकेय जी बैठे हे। बा समय देवता लोग अपने संकट कूँ लैकें बिनके पास आए। तब शंकर जी नें गणेश अरु कार्तिकेयजी ते बिनके कष्ट के निवारण के ताँईं कही। तब कार्तिकेय जी अपने कूँ भौत समरथ और वीर बताइवे लगे अरु कष्ट कूँ दूर करिवे के ताँईं अपनी वीरता कौ बखान करिवे लगे। तब गणेश जी नें कही कै मैं बिनाई सेनापति बने अरु बिना लड़ाई के ई देवतान कौ संकट दूर करि सकूँ। या बातै सुनिकैं संकर जी नें कही कै जो पूरी पृथ्वी कौ चक्कर लगाय कैं पहलें आय जायगौ बू ही कष्ट दूर करिवे के ताँईं समरथ समझौ जाबैगौ। या बातै सुनिकैं कार्तिकेय जी अपने वाहन मोर पै सबार हैकें पृथ्वी कौ चक्कर लगायबे चलि दिए। गणेश जी अपने माता-पिता की सात बेर परकम्मा लगायकें वहीं पै बैठ गए। जब कार्तिकेय जी परकम्मा लगायकें आये तौ गणेश जी कूँ बिन्नें पहलें ही बा जगह पै बैठौ देखौ। गणेश जी नें माता-पिता माँहिं सिगरे तीर्थ बताए। तब सिगरे देवतान नें गणेश जी की बुद्धि की प्रसंसा करी अरु संकरजी नें बिनकूँ बरदान दियौ कै हे गणेशजी तुम्हारी संसार में सबते पहलें पूजा करी जायगी अरु या दिना ब्रत रखिवे ते सिगरे संकट दूर है जाइंगे।

बसंत पांचें :

ई पर्व माघ शुक्ल पांचें कूँ मनायौ जाय है। या दिना ऋतुराज बसंत कौ आगमन मानौं जाय है।

कथा :

भगवान विष्णु की आज्ञा ते ब्रह्माजी नें सृष्टि रची। पर बिनकूँ सिगरे संसार माँहिं निर्जनता दिखाई दई। याकूँ देखिकैं ब्रह्माजी नें उदासी दूरि करिवे के ताँईं कमंडल में ते पानी छिड़कौ। बाते एक शक्ति पैदा भई जाके दो हाथ हे। वह वीणा बजा रही और दो हाथन में पुस्तक अरु माला ही। या देवी ते ब्रह्माजी नें संसार की उदासी दूर करिवे के ताँईं वीणा बजावे कूँ कह्यौ तौ सरस्वती नें वीणा के मीठे स्वर ते सिगरे जीवन कूँ बाणी दै दई। ई देवी विद्या अरु बुद्धि की दैवे वारी ही। या ताँईं बसंत पंचमी के दिना सरस्वती पूजा करी जाय है।

गणगौर :

ई पर्व चैत्र शुक्ल तृतीया कूँ मनायौ जाय है। या दिना सुहागन लुगाई व्रत रखैं अरु शिवजी अरु पारवती की पूजा करैं हैं।

कथा :

एक समै शंकर अरु पारवती पृथ्वी पै भ्रमण करि रहे हे। जब वे एक गाँम माँहि पहुँचे तो गाँम के लोग लुगाईन नैं मालुम पड़ी तौ धनवान लुगाई अच्छे भोजन पूजा करिवे के ताँईं बनायवे लगीं। या मारैं बिन्नैं देर है गई। दूसरी ओर निर्धन लुगाईन नैं बाई समै थार मे हरदी, चामर अरु जल लैकैं शिव पारबती की पूजा करी तौ पारवती नैं खुस हैकै बिन लुगाईन के ऊपर सुहाग की हरदी छिड़क दयी अरु बिनकूँ आसीर्वाद दियौ। याते पीछैं धनी लुगाई सोलह श्रृंगार करिकैं, छप्पन भोग सौंने के थार में सजायकैं पूजा करिवे कूँ आई। बिन कूँ पारबती जी नैं अँगुरिया चीर कैं रक्त कूँ उनके ऊपर छिड़क दियौ अरु पति सेवा करिवे कौ बरदान दियौ। पारवती की अँगुरी कौ जैसौ रक्त जाके ऊपर पडौ बू वैसे ही सौभाग्यवती भई। फिर पारवती नैं बालू के महादेव बनायकैं पूजन कियौ अरु बालू के दो कण लैकैं बाकौ परसाद ग्रहण कियौ तौ शिवजी नैं प्रकट हैकैं वरदान दियौ कै आज के दिना जो लुगाई मेरौ पूजन करैगी वाके पति चिंरजीव रहिंगे अरु बिनकूँ मोक्ष मिलैगौ।

ग्रीष्म ऋतु के पर्वन की ब्रज लोककथा

ग्रीष्म रितु के पर्वन माँहिं मुख्य रूप ते गंगादसैरा अरु निर्जला एकादसी होंय हैं।

गंगा दसैरा :

ई पर्व ज्येष्ठ सुदी दसमीं कूँ मनायौ जाय है। या दिना देबनदी गंगा कौ अवतरण पृथ्वी पै मानौ जाय है।

कथा :

प्राचीन समै माँहिं अयोध्या में सगर नाम के राजा हे। बिनकैं दो रानी हीं। बिनकी सुमति नाम की एक रानी के साठ हजार पुत्र हे। एक बेर राजा सगर नैं अश्वमेध यज्ञ कियौ तौ राजा नैं यज्ञ पूरौ करिबे के लिए एक घोड़ा छोड़ौ हौ। इन्द्र नैं यज्ञ भंग करिबे के लिए घोड़ा चुराय कैं कपिल मुनि के आश्रम में बाँधि दियौ। राजा सगर नैं घोड़ा ढूँढ़िबे के ताँईं अपने साठ हजार पुत्रन कूँ भेजौ। बे बाकूँ खोजते भए कपिल मुनि के आश्रम में पहुँच गए। तब समाधि भंग भई तौ कपिल मुनि नैं बिन पुत्रन कूँ अपनी क्रोधाग्नि ते भस्म करि दियौ। राजा सगर की पहली रानी कौ बेटा अंशुमान जब बिन्नैं खोजतौ भयौ कपिल मुनि के आश्रम में पहुंचौ तौ गरुड़जी नैं बिन साठ हजार पुत्रन के भस्म हैबे कौ वृतान्त बाकूँ सुनायौ। महाराज सगर की मृत्यु के पश्चात अंशुमान अरु फिर बिनके पुत्र दिलीप नैं गंगाजी कूँ पृथ्वी पै लाबे के ताँईं जीवन भर घोर तपस्या करी। तौऊ बे याकूँ पृथ्वी पै नाँय ला सके। अन्त में दिलीप के बेटा भागीरथ नैं गोकर्ण तीर्थ पै जायकैं कठोर तपस्या करी। तपस्या करते-करते भौत समय ब्रीत जाबे पै ब्रह्माजी प्रसन्न भए अरु बिन्नैं गंगाजी कूँ पृथ्वी पै लै जाबे कौ वरदान दै दियौ। गंगाजी के बेग कूँ डाटिबे के ताँईं भागीरथ नैं पैर के एक अँगूठा पै खड़े हैकैं तपस्या करी तौ शिवजी प्रसन्न भए अरु गंगाजी कूँ डाटिबे के ताँईं अपनी जटा फैला दई। जटान में आते ई गंगाजी बामें बिलीन है गईं। भागीरथ नैं फिर शंकर जी की प्रार्थना करी तौ बिन्नैं गंगाजी कूँ बिन्दुसार सरोवर में छोड़ दियौ। बा समय गंगाजी सात धारान में बहवे लग गईं। आगैं भागीरथ रथ पै चलि रहे हे अरु गंगाजी की सातवीं धारा पीछैं-पीछैं आय रही ही। बीच में ऋषि

ऋह कौ आश्रम पड़ौ तौ विन्नैं अपनी तपस्या माँहिं विघ्न समझि कैं गंगा कूँ पी लियौ। वाके पश्चात देवतान नैं प्रार्थन करी तौ फिर वू विन्नैं अपनी जाँघ ते निकार दई। तबते गंगाजी कौ नाम जाह्नवी पड़ि गयौ। तब जाह्नवी नैं कपिल मुनि के आश्रम में जायकैं सगर के साठ हजार पुत्रन के भस्मावशेष कूँ तारिकैं विनकूँ मुक्त करि दियौ।

निर्जला एकादसी :

ई पर्व ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की एकादसी कूँ मनायौ जाय है। या दिना व्रत में जल नाँय पियौ जाय।

कथा :

एक समै की बात है कै भीमसेन जी नैं व्यास जी ते पूछी कै बिना व्रत किए ही एकादसी के व्रत कौ फल मिल जाय ऐसी कोई युक्ति बताय देऔ। तब विन्नैं व्रत करिवौ जरूरी बतायौ। तब भीमसेन जी नैं अपनी भूख के कारण फिर व्यास जी सौं प्रार्थना करी कै कोऊ ऐसौ व्रत आप बताऔ जासौं मेरौ कल्याण है जाय। तब वे बोले कै हे भीमसेन तुम ज्येष्ठ की एकादसी कौ निर्जल व्रत करौ। वाते तिहारे पाप दूर है जाइंगे। व्यासजी के कहवे ते भीमसेन नैं साहस सौं ई व्रत कियौ तौ वे चेतनाहीन है गए। तब पांडवन नैं गंगाजल, तुलसी, चरनामृत कौ परसाद दियौ तौ वे वाय लैकैं स्वस्थ है गए अरु तबही ते वे पापमुक्त है गए।

या प्रकार ते व्रज माँहिं हर पर्व पै लोककथा कही जाय है। ये लोककथा प्राचीन पुराण अरु भागवत तथा लोक कहानीन ते लई गई हैं। इन व्रज लोककथान ते भारतीय पुराणन कौ अच्छौ ज्ञान बिना पढ़ी लिखी लुगाईन कूँ है जाय। ये व्रज लोककथा इतनी रोचक हैं कै व्रज की लुगाई इन्नैं धार्मिक भाव ते ओत-प्रोत हैकैं सुनैं अरु भक्ति रस के संग धार्मिक फल प्राप्त करिवे की ऊ कामना करैं हैं। ई फल प्राप्ति की कामना वे केवल अपने ही ताँईं नाँय करैं बल्कि सिगरी मानव जाति के कल्याण के लिये करैं हैं। इन पर्वन के कारण व्रज की लुगाइन में भक्ति-भावना अरु पर्व कौ आनन्द नित प्रति समायौ रहै। हर दिना त्यौहार सौ लगौ रहै। व्रज की लोककथा अरु पर्वन के आनन्द के कारण व्रजवासीन के जीवन के सम्बन्ध में यही कहनौ उचित है-

"ई तौ न्यारौ है व्रजधाम, यहाँ की न्यारी हैं व्रजनार।
यहाँ पै होमें न्यारे पर्व, जिनकी कथा में मंगलाचार॥"

-'विनायक', 408, बरकत नगर
टोंक फाटक, जयपुर

-

करवा चौथ, अखय तीज, वट-पूजा, हरितालिका, अहोई, संकटचौथ, होलिका-पूजन, लक्ष्मी-पूजन, नरका चतुर्दशी, नाग-पंचमी, दुर्गाष्टमी, शीतला सप्तमी, यम-द्वितीया आदि व्रत और उत्सव हैं जिनके संग कहानी जुरी भई हैं, अरु इन कहानीन के संग जुरे भए हैं हिन्दू-जाति के अनेक विस्वास, भय, आसा, संछेप में, समूची जातीय मनीषा अरु समष्टि मानस!

-डॉ. हरद्वारीलाल शर्मा
(लोकवार्त विज्ञान खण्ड एक, पृष्ठ 394)

लोककथान में गणेश

-श्रीमती माधुरी शास्त्री

लोककथान कौ साहित्य-जगत मे अपनौ एक विसिष्ट स्थान है। इन धरोहरन सौं जहाँ हमें पुरातन संस्कृति कौ बोध होय है बाई जगै इनमें कछू ऐसे विकट पहलू या पच्छऊ अनायास सामई आ जाएँ हैं जो मध्यकालीन होते भए ऊ आधुनिक काल की परिस्थितीन सौं साम्य रखें हैं। लोककथान में जहां धार्मिक भावना जोड़ी गई हैं म्हीं सामाजिक परिवेश के संग-संग पारिवारिक पच्छन (पहलुअन) पै बिना कछू साफ दर्साये, भाँत कछू कह दियौ जाय है। उदाहरन के तौर पै व्यक्ति कौ व्यक्ति सौं रिस्तौ, आपस की संवेदना, मानवीयता, देरानी कौ जिठानी सौं संबंध, भैया कौ बहन सौं प्यार अरु कर्त्तव्य, पति की पत्नी सौं आत्मीयता आदि-आदि। यहाँ मैं अन्य कथान पै नाँय जाकें अग्रपूज्य बालक गणेश की बाल चपलतान सौं प्रारंभ करूँ हूँ। जे सिगरी कथा थोड़े से हेर फेर सौं सिगरे भारत में व्याप्त हैं और इनकौ पारायन हर धार्मिक त्यौहारन पै, सौभाग्य के त्यौहारन पै महिलान के द्वारा महिलान के समक्ष होंतौ रहे है। एक लोककथा या तरियाँ सौं है-

बालक गणेश काऊ गांम की गली-गलीन में भटक रहे हैं। बिनके हाथ में चामर की चुटको है अरु एक हाथ में मात्र चम्मच भर दूध। वे अपने दोनूँ हाथन की चीज प्रत्येक महिला कूँ दिखावैं हैं और बिनसौं अनुरोध करैं हैं कै मैया याकी खीर बनाय दै। सबई बिन वस्तुन की अल्पमात्रा कूँ देखकें बिनकी हँसी उड़ावैं हैं अरु उपेक्षा करकें भगाय दें। बालक बिनके हँसबे पै ध्यान नाँय दे अरु आगे बढ़ जाय। चलते-चलते एक घर के द्वारे पै एक बुढ़िया माई कूँ बैठ्यौ देखकें ठिठक जाय है अरु बासौं हू, अनुरोध करै है कै 'दादी माँ, मोकूँ भूख लग रही है, देख मैं संग में चामर अरु दूधऊ लायौ हूँ, तू खीर बना दै।'

बुढ़िया अपने लिये दादी माँ कौ सम्बोधन सुनकें स्वर्ग के सुख जैसौ अनुभव करै है। ऊपर सौं इतेक भोरे, सुंदर, गोल-मटोल गोरे से बालक के मुख सौं, जाकौ अभई-अभई एक दूध कौ दांत गिर्यौ ही है। वा बालक के मोहित रूप में बुढ़िया माँजी बँध कें रह जाय है। बाकौ मन रखवे के ताँईं कह देय है कै 'चल बेटा, मैं खीर बनाय दऊँ अरु तू पेट भरकें जैं।' बुढ़िया बच्चा कौ हाथ पकरकें भीतर कोठरी मे लै जाय है अरु एक कथरी (गूदड़ी) बिछाकें बासौं बैठ जावे की कहै है। बालक बैठ जाय है फिर बासौ बाकौ नाम पूछै तौ वू बतावै है 'माँ मेरौ नाम गणेश है। हाँ माँ, तू खीर बना मैं तेरे या गांम कूँ जीमबे कौ नौंतौ दै आऊँ।' बुढ़िया बालक की बात सुन सहम कै चुटकी भर चामर अरु चम्मच भर दूध माँऊ देखै है फिर बालक के कथन पै हँसकें कहै है-'हाँ-हाँ बेटा जा और सबन नैं नौंत आ।' बालक नैं चलते-चलते कही 'दादी माँ तेरे पास सबन्नौ बड़ी कढ़ाई होय तौ वामें ई खीर बनइयो।' बुढ़िया बच्चा कौ मन रखबे के ताँईं बड़ी कढ़ाई चूल्हे पै चढ़ाय दै'

खीर बनै है। सिगरौ गांम खावे के ताँईं उमड़ परै है। कोऊ तौ सिर्फ देखवे के ताँईं, कोऊ हँसी उड़ावे के ताँईं, कोऊ भोरे भाव सौं आवै है अरु पेट भरकैं, डकार लेंतै भए चले जाँय। फिरऊ खीर घटवे कौ नाम नाँय ले अरु बढ़ती ई चली जाय। सिगरे गांम वारे चमत्कृत हैकैं बुढ़िया की जै जैकार करैं हैं। परि बुढ़िया तौ स्वयं ई जा चमत्कार सौं स्तब्ध वैठी है। कथा लंवी है जासौं सिर्फ याकौ सार लिख दियौ है परि याके अंदर जो भावना है, जो दर्सन है वाकूं लिखवौ अत्यन्त जरूरी सौ लग्यौ।

वृद्धावस्था में व्यक्ति की कैसी दयनीय स्थिति आ जाय है। उम्र के अनुभवन की सलवटन सौं शरीर भर उठै है। हाथ पांम जवाव दै जाँय हैं, सिगरी इन्द्री शिथिल पर जावैं हैं। सिगरौ संसार सुंदरता कौ पूजक मानौ गयौ है फेर घर पै एक असुंदर, असक्त कूँ कोऊ वरदास्त नाँय कर पावै है। वाकूं अवांछित तत्व मानकैं एक कौने में पड़े रहवे कौ आदेश मिल जाय है। आजकल तौ वृद्धन कूँ आश्रम में छोड़ आवैं हैं।

जव चारौं ओर सौं उपेक्षा के प्रहार हैवे लगैं तौ वू प्राणी जग सौं, घर सौं कटकै एक उत्साहहीन जीवन जीवे कूँ विवश है उठै है। जेई वृद्धावस्था सम्वन्धन कौ सम्वन्ध के प्रति सच्चाई कौ वोध करावै है। लेकिन सिगरे सम्वन्ध अंत में झूठे ही सावित होंय हैं।

लेकिन एक से दमघोंटू माहौल (एकाकी) में वृद्ध रहें हू तौ कव ताँनू? निर्वल नि:सहाय के पास कामन की ऊ कमी है जाय है। ऐसे में वू अपने कूँ व्यस्त रखवे के ताँईं अपनौ ई तरीका ढूँढ़तौ रहै है। अरु वू व्यस्तता है दुनियाँ के कदमन की आहट सुननौ। कहूँ पै जा, आ नहीं सकै पर अपने घर की देहरी पै वैठकैं आते जातेन सौं रामा सामा तौ कर सकै है। वासौं कोई वोलै चाहै ना वोलै पर वू तौ सवननैं जानैं कै जि कौन की वहुरिया हैं, जि कौन कौ वेटा है और जि कौन कौ पोता। वूढ़े मस्तिष्क में सिगरी उमर के अनुभवन कौ खजानौ भरौ रहै।

ऐसौऊ लोगन सौं सुनवे में आवै है कै वृद्धावस्था में व्यक्ति वचपन जैसौ व्यौहार करवे लग जाय है। जिन वेटा पोतान कूँ वू अँगुरिया पकर कैं चलवौ सिखावै है विनई वेटा पोतान के कंधा कौ सहारौ चाहवे की ललक धीरें-धीरें जर्जर हैतौ शरीर प्राप्त करनौ चाहै है परि........इंसान की सिगरी इच्छा भगवान कव पूरी करै है? वह मन में सोचै है अगर सिगरेन कूँ मैंनें सुखी वनाय दियौ तौ वू मोकूँ विल्कुल ही भूल जायगौ। मेरौ सहारौ पकरवे वारेन की मैं सहायता करूँ हूँ। दीन की करुण पुकार पै मैं दौरौ चलौ जाऊँ हूँ। पर मोकूँ कोऊ सच्चे मन सौं पुकारै तौ सई।

ऐसे सन्नाटे भरे एकाकीपन में अगर कोई छोटी सी खुसी द्वार पै आ जाय है तौ वृद्ध व्यक्ति वाई कूँ अपनौ अहोभाग्य मान ले है। जैसौ कि या लोककथा की नायिका वुढ़िया के संग भयौ। वह वस एक छोटे से संवोधन सौं पिघल गई। वू संवोधन हो 'दादी माँ'। याके अलावा वृद्धावस्था में आते ही चाहे वह नर हो या नारी वाल मनोविज्ञान कौ कुसल ग्याता है जाय है। वच्चान के कोमल मन कूँ कहूँ ठेस ना लग जाय, याकौ विनकूँ भौत ध्यान रहै है। विनकी छोटी-वड़ी सवई समस्यान की पूर्ति करवे हेतु सतत् प्रयत्न में जुट जाँय हैं, चाहे पास में छदाम नाँय होय, चाहे सरीर में ताकत ना होय। जव सिगरे सहारे छूट जावैं, खुसी दूर है जावैं अरु लोग-वाग पास वैठवौ अरु विठायवौ (वृद्ध कूँ) अपनी शान के खिलाफ समझवे लग जावैं तव वच्चान सौं ई मन लगै है। विनकौ संग पायकैं वूढ़े ठेरेन कूँ आत्म-संतुष्टि है जाय है।

जे लोककथा बिन धार्मिक कथान के क्रम में आवै है जामें काऊ देव शक्ति पै अटूट विस्वास कूँ समस्त सिद्धीन कौ आधार बतायौ जाय है। अगर श्रध्दा है, भाव है, भावना है तौ एक कन मेऊ मन जैसो बरकत है जाय है। जे कथा एक माँऊँ तौ गनेश जी के अलौकिक वरदान और चमत्कार कूँ प्रकट करै है दूजी ओर जेऊ प्रमानित करै है कै बुढ़िया के अटूट प्रेम अरु विस्वास के कारन नैंक सी चीजऊ अक्षय है गई। स्यात कहूँ छिप्यौ यामे जेऊ सकेत मिलै है कै असहाय अरु वृद्ध व्यक्तिऊ आस्था अरु विस्वास के सहारे बड़ौ काम करकैं दिखाय सकैं हैं। गनेश के बालक होवे पै अलौकिक सिद्धिदायक होवे कौ संकेत यामें स्पष्ट है ही।

दूसरी लोककथाऊ गनेस सौं संबंधित है। बू या तरियाँ सौं है कै एक बड़े शहर में एक बड़ौ व्यौपारी रुजगार करै हो। बाकें चार बहुरिया हीं। व्यापारी पति अरु पत्नी दोऊ गनेस के भक्त हे। विनके घर में ई गनेस कौ सिद्ध मंदिर हौ। सेठ कूँ तौ कम फुर्सत मिलै ही परि सेठानी नियम सौं सेवा पूजा करै ही।

एक बेर ब्यौपार के सिलसिले मे सेठजी कूँ दूसरे सहर जानौ पर्‌यौ। सेठानी कौ मायकौ (पीहर) ऊ बाई सहर में हौ सो बाकी ऊ इच्छा भई कै मैंऊ मैया-बाप सौं मिल आऊँ। परि भगवान गजानन जी कौ ध्यान आते ई बू मन मसोस कैं रह गई। लेकिन बानैं आखिरी उपाय करनौ चाहौ। सिगरी बहुअन कूँ बुलाय कैं पूछौ-'बेटीऔ, तुम लोग अगर ठाकुर कौ ख्याल रख लेऔ तौ मैंऊ थोड़े से दिना मैया सौं मिल आऊँ।' तीनों बड़ी बहून नैं कछू न कछू बहानौ बना दियौ। बची आखिरी सबसौं छोटी। बू थोड़ी अबोध अरु चंचल ही। लपक कैं बोली, "सासू माँ! आप जाऔ, मैं आपकौ सिगरौ मंदिर, भगवान सबन कूँ सँभार लऊँगी।" बहू की बात सुन सेठानी खुस है गई अरु मन ही मन आसीस दैंती भई पीहर कूँ चली गई।

सास-ससुर के जाते ही बु बहू भक्ति भाव सौं गनेस जी की सेवा-पूजा करबे लग गई। अबई कछू दिना ही भये कै गनेस जी बा बहू की सुन्दरता अरु भोरेपन पै रीझ गए। जब बू सिगरौ काम निपटा कैं माथौ टेकवे लगती तौ गनेस जी प्यार सौं बाकैं चिकोटी भर लैंते। ऐसौ क्रम हफ्ता द्वै हफ्ता तानूँ चलतौ रह्यौ। रोज-रोज की नौंचा नौंची सौं बहू नाराज है गई। बानैं गनेस जी कूँ उठायौ अरु पिछवाड़े खिड़की सौं फेंक दियौ।

गनेस जी वा स्थान सौं हटते ही सेठजी कूँ व्यौपार में बड़ौ नुकसान हैबे लग गयौ। कलकत्ता वारे जहाज पानी में डूब गये। वे उदास से सेठानी के पास आ गए अरु सिगरे समाचार कह सुनाए। सेठानी समझ गई कै 'जरूर छोटी नैं पूजा में कछू गड़बड़ कीनी होयगी, नहीं तौ..... ! बच्ची है बाय डाँटौऊ तौ नाँय जा सकै है' दोनूँ बैठकैं विचार-विमर्स करबे लग गए। तबई सेठानी कौ मातृत्व जाग उठ्यौ। बू घबराई सी बोली-'सेठ जी, बहुरिया कहूँ बीमार तौ नाँय पर गई। काम सौं सबेरे-सबेरे नहानौ, धोनौ, मंदिर के पात्रन कूँ माँजनौ, धोनौ, मंदिर की साफ-सफाई, भगवान कूँ स्नान, वस्त्राभूसन धारण करानौ इन सिगरे कामन में द्वै तीन घंटा तौ लग ही जामें हैं। बहू थक जाती होयगी, मानौ चाय ना मानौं मैं तौ कहूँ हूँ कै मुनीम जी कूँ सिगरौ काम सँभराकैं अपन वापिस चलैं। मोय तौ बच्चान की चिन्ता है रही है।'

बहू की बीमारी की बात दिमाग में आते ई दोऊ जने विचलित है उठे। घर की अव्यवस्था की बात नैं बिनकूँ लौट जाबे कूँ उकसा दियौ। घर आयकैं सबन कूँ राजी-खुसी देखकैं बिनकूँ सौंति मिलो। नहा धोकैं सेठानी नैं जब दर्सनन कूँ ठाकुर द्वारे के किबार खोले तौ धक् सौं रह गई।......जे का, मूर्ति कहाँ गई? बू लगभग चीख

खीर बनैं है। सिगरौ गांम खावे के ताँईं उमड़ परै है। कोऊ तौ सिर्फ देखवे के ताँईं, कोऊ हँसी उड़ावे के ताँईं, कोऊ भोरे भाव सौं आवैं है अरु पेट भरकैं, डकार लैंतें भए चले जाँय। फिरऊ खीर घटवे कौ नाम नाँय ले अरु वढ़ती ई चली जाय। सिगरे गांम वारे चमत्कृत हैकैं बुढ़िया की जै जैकार करैं हैं। परि बुढ़िया तौ स्वयं ई जा चमत्कार सौं स्तव्ध वैठी है। कथा लंबी है जासौं सिर्फ याकौ सार लिख दियौ है परि याके अंदर जो भावना हैं, जो दर्सन है वाकूँ लिखवौ अत्यन्त जरूरी सौ लग्यौ।

वृद्धावस्था में व्यक्ति की कैसी दयनीय स्थिति आ जाय है। उम्र के अनुभवन की सलवटन सौं शरीर भर उठै है। हाथ पांम जवाव दै जाँय हैं, सिगरी इन्द्री शिथिल पर जावैं हैं। सिगरौ संसार सुंदरता कौ पूजक मानौ गयौ है फेर घर पै एक असुंदर, असक्त कूँ कोऊ बरदास्त नाँय कर पावै है। बाकूँ अवांछित तत्व मानकैं एक कौने में पड़े रहवे कौ आदेश मिल जाय है। आजकल तौ वृद्धन कूँ आश्रम में छोड़ आवैं हैं।

जव चारौं ओर सौं उपेक्षा के प्रहार हैवे लगैं तौ बू प्राणी जग सौं, घर सौं कटकैं एक उत्साहहीन जीवन जीवे कूँ विवश है उठै है। जेई वृद्धावस्था सम्बन्धन कौ सम्बन्ध के प्रति सच्चाई कौ बोध करावै है। लेकिन सिगरे सम्बन्ध अंत में झूठे ही साबित होंय हैं।

लेकिन एक से दमघोंटू माहौल (एकाकी) में वृद्ध रहें हू तौ कब ताँनू? निर्बल नि:सहाय के पास कामन की ऊ कमी है जाय है। ऐसे में बू अपने कूँ व्यस्त रखवे के ताँईं अपनौ ई तरीका ढूँढ़तौ रहै है। अरु बू व्यस्तता है दुनियाँ के कदमन की आहट सुननौ। कहूँ पै जा, आ नहीं सकै पर अपने घर की देहरी पै बैठकैं आते जातेन सौं रामा सामा तौ कर सकै है। वासौं कोई बोलै चाहै ना बोलै पर बू तौ सबननैं जानैं कै जि कौन की बहुरिया है, जि कौन कौ वेटा है और जि कौन कौ पोता। बूढ़े मस्तिष्क में सिगरी उमर के अनुभवन कौ खजानौ भरौ रहै।

ऐसौऊ लोगन सौं सुनबे में आवै है कै वृद्धावस्था में व्यक्ति बचपन जैसौ व्यौहार करबे लग जाय है। जिन वेटा पोतान कूँ बू अँगुरिया पकर कैं चलवौ सिखाबै है बिनई बेटा पोतान के कंधा कौ सहारौ चाहबे की ललक धीरें-धीरें जर्जर हैतौ शरीर प्राप्त करनौ चाहै है परि........इंसान की सिगरी इच्छा भगवान कब पूरी करै है? वह मन में सोचै है अगर सिगरेन कूँ मैंनें सुखी बनाय दियौ तौ बू मोकूँ बिल्कुल ही भूल जायगौ। मेरौ सहारौ पकरवे वारेन की मैं सहायता करूँ हूँ। दीन की करुण पुकार पै मैं दौरौ चलौ जाऊँ हूँ। पर मोकूँ कोऊ सच्चे मन सौं पुकारै तौ सई।

ऐसे सन्नाटे भरे एकाकीपन में अगर कोई छोटी सी खुसी द्वार पै आ जाय है तौ वृद्ध व्यक्ति बाई कूँ अपनौ अहोभाग्य मान ले है। जैसौ कि या लोककथा की नायिका बुढ़िया के संग भयौ। वह बस एक छोटे से संबोधन सौं पिघल गई। बू संवोधन हो 'दादी माँ'। याके अलावा वृद्धावस्था में आते ही चाहे वह नर हो या नारी बाल मनोविज्ञान कौ कुसल ग्याता है जाय है। बच्चान के कोमल मन कूँ कहूँ ठेस ना लग जाय, याकौ बिनकूँ भौत ध्यान रहै है। विनकी छोटी-बड़ी सवई समस्यान की पूर्ति करबे हेतु सतत् प्रयत्न में जुट जाँय हैं, चाहे पास में छदाम नाँय होय, चाहे सरीर में ताकत ना होय। जब सिगरे सहारे छूट जावैं, खुसी दूर है जावैं अरु लोग-बाग पास वैठवौ अरु बिठायवौ (वृद्ध कूँ) अपनी शान के खिलाफ समझवे लग जावैं तव बच्चान सौं ई मन लगै हैं। विनकौ संग पायकैं बूढ़े ठेरेन कूँ आत्म-संतुष्टि है जाय है।

जे लोककथा बिन धार्मिक कथान के क्रम में आवै है जामें काऊ देव शक्ति पै अटूट विस्वास कूँ समस्त सिद्धीन कौ आधार बतायौ जाय है। अगर श्रध्दा है, भाव है, भावना है तौ एक कन मेऊ मन जैसी बरकत है जाय है। जे कथा एक माँऊँ तौ गनेश जी के अलौकिक वरदान और चमत्कार कूँ प्रकट करै है दूजी ओर जेऊ प्रमानित करै है कै बुढ़िया के अटूट प्रेम अरु विस्वास के कारन नैंक सी चीजऊ अक्षय है गई। स्यात कहूँ छिप्यौ यामें जेऊ संकेत मिलै है कै असहाय अरु वृद्ध व्यक्तिऊ आस्था अरु विस्वास के सहारे बड़ौ काम करकें दिखाय सकैं हैं। गनेश के बालक होबे पै अलौकिक सिद्धिदायक होवे कौ संकेत यामें स्पष्ट है ही।

दूसरी लोककथाऊ गनेस सौं संबंधित है। बू या तरियाँ सौं है कै एक बड़े शहर में एक बड़ौ व्यौपारी रुजगार करै हो। वाकें चार बहुरिया हीं। व्यापारी पति अरु पत्नी दोऊ गनेस के भक्त हे। बिनके घर में ई गनेस कौ सिद्ध मंदिर हौ। सेठ कूँ तौ कम फुर्सत मिलै ही परि सेठानी नियम सौं सेवा पूजा करै ही।

एक बेर ब्यौपार के सिलसिले मे सेठजी कूँ दूसरे सहर जानौ पर्‌यौ। सेठानी कौ मायकौ (पीहर) ऊ बाई सहर मे हौ सो बाकी ऊ इच्छा भई कै मैंऊ मैया-बाप सौं मिल आऊँ। परि भगवान गजानन जी कौ ध्यान आते ई बू मन मसोस कैं रह गई। लेकिन बानैं आखिरी उपाय करनौ चाहौ। सिगरी बहुअन कूँ बुलाय कैं पूछौ-'बेटीऔ, तुम लोग अगर ठाकुर कौ ख्याल रख लेऔ तौ मैंऊ थोड़े से दिना मैया सौं मिल आऊँ।' तीनों बड़ी बहून नैं कछू न कछू बहानौ बना दियौ। बची आखिरी सबसौं छोटी। बू थोड़ी अबोध अरु चंचल ही। लपक कैं बोली, ''सासू माँ! आप जाऔ, मैं आपकौ सिगरौ मंदिर, भगवान सबन कूँ सँभार लऊँगी।'' बहू की बात सुन सेठानी खुस है गई अरु मन ही मन आसीस दैंती भई पीहर कूँ चली गई।

सास-ससुर के जाते ही बु बहू भक्ति भाव सौं गनेस जी की सेवा-पूजा करबे लग गई। अबई कछू दिना ही भये कै गनेस जी बा बहू की सुन्दरता अरु भोरेपन पै रीझ गए। जब बू सिगरौ काम निपटा कैं माथौ टेकबे लगती तौ गनेस जी प्यार सौं बाकें चिकोटी भर लैंते। ऐसौ क्रम हफ्ता द्वै हफ्ता तानूँ चलतौ रह्‌यौ। रोज-रोज की नौंचा नौंची सौं बहू नाराज है गई। बानैं गनेस जी कूँ उठायौ अरु पिछवाड़े खिड़की सौं फेंक दियौ।

गनेस जी वा स्थान सौं हटते ही सेठजी कूँ व्यौपार में बड़ौ नुकसान हैबे लग गयौ। कलकत्ता वारे जहाज पानी मे डूब गये। वे उदास से सेठानी के पास आ गए अरु सिगरे समाचार कह सुनाए। सेठानी समझ गई कै 'जरूर छोटी नैं पूजा में कछू गड़बड़ कीनी होयगी, नहीं तौ..... ! बच्ची है बाय डाँटौऊ तौ नाँय जा सकै है' दोनूँ बैठकैं विचार-विमर्स करबे लग गए। तबई सेठानी कौ मातृत्व जाग उठ्‌यौ। बू घबराई सी बोली-'सेठ जी, बहुरिया कहूँ बीमार तौ नाँय पर गई। काम सौं सबेरे-सबेरे नहानौ, धोनौ, मंदिर के पात्रन कूँ माँजनौ, धोनौ, मंदिर की साफ-सफाई, भगवान कूँ स्नान, वस्त्राभूसन धारण करानौ इन सिगरे कामन में द्वै तीन घंटा तौ लग ही जामें हैं। बहू थक जाती होयगी, मानौं चाय ना मानौं मैं तौ कहूँ हूँ कै मुनीम जी कूँ सिगरौ काम सँभराकैं अपन वापिस चलैं। मोय तौ बच्चान की चिन्ता है रही है।'

बहू की बीमारी की बात दिमाग में आते ई दोऊ जने विचलित है उठे। घर की अव्यवस्था की बात नैं बिनकूँ लौट जाबे कूँ उकसा दियौ। घर आयकैं सबन कूँ राजी-खुसी देखकैं बिनकूँ साँति मिली। नहा धोकैं सेठानी नैं जब दर्सनन कूँ ठाकुर द्वारे के किबार खोले तौ धक् सौं रह गई।......जे का, मूर्ति कहाँ गई? बू लगभग चीख

परी। छोटी वहू आई अरु बोली-'बाज आई मैं तौ आपके भगवान सौं। आते जाते मेरे चिकोटी भरते रहे अरु मैं लाज अरु आपके डर के मारैं काऊ सौं कछू नाँय कह सकी। जे देखौ, जगै-जगै नील के निसान अब ताँई परे हैं।' कहकैं बहू अपनी सजल कटोरी सी आँखिन कूँ पौंछवे लगी।

वहू की बात सुनकैं सेठ-सेठानी हक्के-बक्के से रह गए। हम इतेक दिना सौं श्रद्धाभाव सौं सेवा करते चले आ रहे हैं अरु चार दिना बहू नैं सेवा कर लीनी तौ बापै इत्ते टूट परे गनेसजी। धन्य है प्रभु तू अरु तेरी लीला! ....फिर आस्वस्त भये तब बोले- 'अरी लक्ष्मी जे तौ बता कहाँ पै फैंक आई तू मूर्ति कूँ?' बहू नैं म्हौं बिचकाते भए कही-''और कहां ....पिछवाड़े पड़े हुंगे। रोय रहे हुंगे भूखे-प्यासे अपनी करतूत पै।''

सेठ-सेठानी नौकर-चाकरन समेत पिछवाड़े गए। खोज खबर लीनी। ढूँढ़ा ढाँढ़ी मची परि गनेस जी तौ मिले नई। सेठानी नैं रोवौ सुरू कर दियौ। इतेक में काऊ कौ ध्यान पेड़ पै चलौ गयौ। गनेस जी की गेंदा के फूलन वारी माला डारी में उरझ कैं रह गई ही अरु वासौं सधी भई प्रतिमा डारी पै ऐसैं विराजमान है रही जैसैं काऊ नैं जानबूझकैं वा जगै बिनकूँ स्थापित कर दीनौ होय। सेठ-सेठानी सपरिवार या कौतुक कूँ देखकैं आश्चर्य चकति रह गये। वे मन ही मन डरे भये हते कै कहूँ भगवान कूड़े के ढेर पै नाँय मिलैं।

सबई लोग गनेस जी कूँ श्रद्धापूर्वक भीतर लावे की कोसिस करबे लगे परि वे तौ डार सौं ही चिपक गए अरु जे ई कहैं जाँय कै जब तेरी, मोकूँ फेंकबे वारी बहू, आकें लै जायेगी तबई मैं भीतर जाऊँगौ, नहीं तौ अब तौ यहीं रहूँगौ। बहू कूँ काऊ तरियाँ सौं मनायौ गयौ तब वो डरती-डरती सी गई अरु डाँट कै बोली ''चुपचाप चलौ, वरना तेरे हाथ पाम बाँधकैं तोकूँ लै जाऊँगी।'' गनेस जी हँसे अरु बोले -'तौसौं तौ मैं हाथ पैर बँधवावे कूँऊ तैयार हूँ।' कहते भये बिन्नैं ज्योंही चोंटी भरबे कूँ हाथ बढ़ायौ बहू नैं वा हाथ कूँ कसकै पकर लियौ। गनेस जी के मंदिर में विराजते ई सेठ कूँ व्यौपार में फायदौ होबै लग गयौ। रुकौ भयौ धन लौट आयौ। डूबे खोये जहाज वापस निकस आए।

जा कहानी में जहाँ गनेस जी की महिमा कौ विसद वर्नन हैं वहीं सेठानी के मातृत्व कौऊ दिग्दर्सन करायौ गयौ है। घर के मुखिया कूँ जा तरियाँ सौं खुद की जाई बेटी सौं प्रेम होवै है वा तरियाँ सौं पराई जाई सौंऊ रखनौ चइयै। कह्यौऊ गयौ है-

''मुखिया मुख सौ चाहिये, खान-पान कौ एक।
पालै पोसै सकल अंग, तुलसी सहित विवेक॥''

सेठानी की जगै अगर कोऊ और सास होंती तौ बू घर पै पैर रखते ई पैलैं तौ बहू कूँ बुरी तरियाँ सौं डांटती-डपटती। तरै-तरै सौं कोसती, ताने देंती। परि ऐसौ नाँय भयौ। बहू ऊ अपनी नाँय सही परि है तौ बू हू काऊ न काऊ की बेटी। यदि बाकी गलतीन कूँ माफ कर दियौ जाय तौ घर बिगरबे सौं बच जाय है। जब बड़े औदार्य बरतैं हैं तबई छोटेन कूँ सिच्छा मिलै है। यदि बाके संग भेदभाव कर्यौ जाय, परायौ समझ्यौ जाय, अपमानित कर्यौ जाय, तौ बूऊ प्रतिदान में वैसौ ही देवै। तुलसीदास जी नैं सीता की सासन कौ वर्नन या तरियाँ कियौ है-'नयन पुतरि करि प्रीति बढ़ाई, राखेउ प्रान जानकिहि लाई।' जा तरियाँ इंसान कूँ अपनी आँख प्रिय होय हैं अरु बू बिनकूँ स्वस्थ सुखी रखवे कौ प्रयास करै है। बाई तरियाँ घर की लक्ष्मी कौ ऊ ध्यान रखनौ चइए।

गनेस जी की तीसरी लोककथा या तरियाँ है–काऊ राजा की राजकुमारी में एक भौत बड़ौ ऐब हो। बू सब भाँति की कहानीन कूँ सुनती परि जब कोऊ गनेस जी की कथा कहबौ सुरू करतौ बू फौरन ही वा जगै सौं चली जाती। दूसरी बात, बाकी जे खासियत ही कै बाकी नजाकत की बजै सौं रोज बाकूँ फूलन सौं तोलौ जातौ। कबऊ भी एक फूल न बढ़तौ न एक फूल घटतौ, राजकुमारी छरहरे बदन की ही।

गनेस जी नैं जब अपनौ अपमान होतौ देख्यौ तौ मन ही मन नाराज ह्वै गए। सोचौ याकूँ मैं सबक सिखायकैं दम लऊँगौ। सो बिन्नैं मानव रूप धारन कर महल में प्रवेस करनौ चाह्यौ। परि वहाँ तौ जबर्दस्त पहरौ हो। हवा तानूँ बिना दरबार की आग्या के प्रवेस नाँय कर पाती। अब तौ वे बड़े अचरज में परि गये। तबई म्हाँ सौं कैई मालिन फूलन के टोकरा लै लैकैं महल में जाती दिखीं। गनेस जी नैं तत्काल अपनौ रूप बदल कैं भौंरा कौ रूप धारन कर लीयौ अरु जा छुपे एक टोकरा में।

राजा-रानी आर्कें ठाड़े भये। राजकुमारी तराजू के एक पल्ला में बैठ गई। ज्योंही तराजू में बू बैठी गनेस जी बाके जूड़ा में बैठ गये। राजकुमारी तुली तौ फूलन कौ पलड़ा ऊँचौ है गयौ अरु राजकुमारी बारौ पलड़ा जमीन सौं चिपक गयौ। राजा-रानी नैं मालन कूँ डाट्यौ कै तुम फूल कम लाई हौ। वे डरती-डरती बोलीं-'नाँय अन्नदाता! हमसौं ऐसी गलती नाँय है सकै। हम आज ही थोरई लाई हैं, हमकूँ तौ फूल लामते बीसन बरस है गये।

इतकूँ राजकुमारी कूँ गनेस जी के प्रभाव सौं दिन दूनी रात चौगुनी भूख लगबे लग गई। बू दिन पै दिन मोटी हैबे लग गई। अब वासौं चलौ फिर्‌यौ नाँय जातौ। एक दिना बू पलंग पै सोय रही ही कै गनेस जी सुंदर राजकुमार कौ रूप बनार्कें बाके सामई प्रगट है गये। कछू ऐसौ चक्कर चलायौ कै राजकुमारी मोहित है गई। बिन दौनौन में प्रीति बढ़ गई। राजकुमारी रात कूँ बाके संग हँसती बतराती। एक दिना काऊ दासी नैं राजकुमारी के कमरा में झाँक कैं देख्यौ तौ दंग रह गई। जाय कैं राजा-रानी कूँ सूचना दई कै इतेक चौकसी के पाछैंऊ राजकुमारी के महल में कोई नौजवान घुस आयौ।

राजा-रानी दौरे आये। राजकुमारी कौ कमरा खुलवायौ। ज्यौंही वे भीतर घुसे गनेस जी भौंरा बनकैं राजकुमारी के जूड़ा की वेणी में घुस गए। राजा-रानी ढूंढ़-ढाँढ़ कैं बापिस लौट गये। फिर एक दिना काऊ दासी नैं खबर दीनी कै महाराज राजकुमारी माँ बनबे वारी है। रानी नैं राजवैद्य सौं परीच्छा करवाई तौ बात साँची निकसी। यापै राजा राजकुमारी पै भौत कुपित भयौ अरु डरा धमकार्कें बा नौजवान कौ अतौ पतौ पूछबे लगे। परि राजकुमारी तौ अनभिज्ञ ही। जानैं ही नांहीं कै कौन कहाँ सौं आवै है और का करै है। बाय तौ नौजवान कौ ऐसौ नसा है जातौ कि बाकूँ दीन दुनियाँ की सोधी ना रहती।

राजा-रानी भौत दुखी है गए। सोचबे लग गए कै मैंनें तौ चौकसी करवाई ही फिरऊ ना जानैं कहाँ सौं भूत-प्रेत आ गयौ और मोकूँ तथा मेरी नादान छोरी कूँ कलंकित कर दियौ। अगर मोय मिल जाय तौ मैं बाकौ सर धड़ सौं अलग कर दऊँगौ, संग में राजकुमारी कौऊ।

याई सोच विचार में राजा कूँ नींद आ गई। विनकूँ गनेस जी नैं सपनौ दियौ कै तुम्हारी छोरी मेरौ भौत अपमान करै ही। जब भी कोऊ मेरी कहानी कहतौ बू उठकैं चल दैती। और सब तरियाँ की कहानी बड़े चाव सौं सुनती। मैंनें ही याकौ घंमड दूर करौ है।

राजा गनेस जी के चरनन में पड़ गयौ। महाराज मैं वाके माँऊ सौं क्षमा माँगू हूँ। वाकौ अपराध तौ है ही गयौ परि अब वू कलंकित कौ जीवन कैसें जीवैगी। वासौं व्याह कौन करैगौ?

गनेस जी नें कही–अगर तेरे राज्य में कोऊ व्रत, कथा, भागवत होय तौ सबसौं पैलें मेरौ स्मरन कर्‌यौ जायगौ तौ सिगरे संकट मिट जाइंगे। राजकुमारी ऊ वहाँ ठाड़ी सुन रही ही। वू गनेस जी के चरनन में गिर गई अरु क्षमा माँगवे लग गई। गनेस जी नें वाकूँ माफ कर दियौ अरु वाकूँ पैलें जैसौ ही कोमल, नाजुक, पतरौ दुबरौ बनाय दियौ। वू राजकुमारी जब तानूँ जीई गनेस जी की भक्ति भाव सौं पूजा अर्चना करती रही।

या तरियाँ सौं देख्यौ जाय तौ हमारे प्रत्येक त्यौहार अरु पर्व की लोककथान में कछू न कछू गूढ़ अर्थऊ छुप्यौ रहै है। हमारे भारतीय समाज में गनेस की अनेक कथा हैं, त्यौहार चाहै जौन सौ होय पर वा पर्व की कथा कहवे सौं पैलें विनायक की कथा सुनवे की अति प्राचीन परंपरा रही है। मौखिक कथा पुरानन की कथान सौं बहुत भिन्न हौंय हैं अरु भिन्नता सौं मनोरंजक ऊ लगैं हैं।

–सी–8, मंजु निकुंज,
पृथ्वीराज रोड, सी–स्कीम, जयपुर–1

श्री गणेश बोले शिव शंकर ते एक बेर
पूज्य श्री पिताजी मोकूँ चौथ च्यौं बनाई है।
याहि सब शास्त्रकार रिक्ता तिथि मानत हैं,
यामें तौ शुभ कर्म करिबे की मनाई है।
चौथ चन्द्रमा जो कहूँ भूल ते दिखाई देय,
मिथ्या कलंक लगै ये शास्त्रन्नें बताई है।
और सब देवतान कौं भली तिथि बाँटीं तौ,
मेरे ही बट में जिय रिक्ता चौथ आई है?

–

बोले शिव शंकर प्रिय गणेश ध्यान दैकैं,
सुन चौथ की प्रशंसा वेद रिचा गाई है।
साधू सुभावन में परोपकार भाव होय,
स्वयं सुख भोगिवे की लालसा न पाई है।
देव लै हर्षे नन्दा, भद्रा, जया, पूर्णा तिथिन,
रिक्ता रोमती फिरै मेरौ को तौ सहाई है।
चौंदस लई मैंनें नौमी देवी उमा नैं लई,
यासौं गणेश तेरे बट में चौथ आई है।

पं. वृन्दावनविहारी मिश्र 'विन्दु'
श्री भागवत कुंज, प्रताप बाजार, वृन्दावन (मथुरा)

कामवन की दोइ लोकदेवी

-श्री सर्वोत्तम त्रिवेदी 'लघु'

जैसें कै हरेक गाम अरु सहर के जन-समूहन की श्रद्धा के केन्द्र और पूज्य, कछु लोक दई देवता होंय वैसें ही कामवन (यानै कामां) के हू लोक दई देवता हैं। लोक दई देवता हतैं तौ उनते संबंधित लोककथा हू हतैं।

काऊ लोककथा कौ प्रचलन कब ते, च्यौं और कैसें भयौ हौ याकौ पतौ नाँय लगै पर इतनौ निश्चित है कै लोककथा, समै की धारा के संग-संग, लोक(मतलब लोगन) के द्वारा संसोधित, परिवर्द्धित और परिवर्तित हू हौंती रहैं हैं।

भरतपुर जिले के कामाँ क्षेत्र में सेढ़मैया, साँचौली देवी, केदारनाथ, आदिबद्री, मनसाचामड़ और कालिका मैया, जाहरवीर बाबा, बूढ़ौ बाबू आदि बहौत सारे लोक दई देवता हैं। इनकी अलग-अलग औसरन पै पूजा करी जाय है, और इनके थानन पै मेले हू लगैं हैं।

या लेख में दोइ देवीन के बारे में कछू विचार हैं।

कामाँ के उत्तरी कौने पै सेढ़ मैया कौ थान है। यामें सेढ़ अर्थात् सीतला माता की करीब पौने दो फीट ऊँची मूर्ति है। यह श्याम वर्ण की पाषाण मूर्ति बड़ी ही भव्य है। याके वक्ष में लम्बौ तिरछौ चिह्न है। ऐसौ लगै है कि यह तलवार है और कै फिर तलवार मारिबे ते बनौ भयौ चिह्न है।

सीतला माता कौ वाहन गधा मान्यौ जाय है। पर या श्रीविग्रह में गधा की आकृति तौ नाँय है।

गीता प्रेस गोरखपुर ते प्रकासित 'कल्याण' के शक्ति-उपासना अंक में, पृष्ठ 489 पै प्रकाशित 'नवदुर्गा प्रकीर्तिता:' लेख माँहिं स्व. आचार्य श्री मधुकर जी शास्त्री नैं नवदुर्गान में ते 'सप्तम् कालरात्रीति' कहिकैं, सातवीं देवी कौ नाम 'कालरात्रि' बतायौ है।

इनकौ अन्धकार की नाँईं हरौ कालौ रंग बतामते भए आगैं इनकैं तीन आँख, गोल गोल होमैं, ऊपर उठे भए हाथ में चमकती तरवारि और खैरे हाथ में जलती मसाल होवे कौ बरनन कियौ है। इनकी सवारी गधा बताई गई है।

या बरनन ते लगै है कै ये सीतला माता, नवदुर्गान में ते सातनीं कालरात्रि ही हैं।

साधना एन्क्लेव, नई दिल्ली ते प्रकासित श्री रामजी लाल शास्त्री द्वारा सम्पादित पुस्तक 'जीवन सुधा' में पृष्ठ 408-409 पै 'सीतलाष्टक स्तोत्र' छप्यौ है। स्कंद पुराण में ते उपलब्ध या स्तोत्र में माँ सीतला की वन्दना या तरियाँ कीनी है-

'वन्देऽहं शीतलां देवीं रासभस्थां दिगम्बराम्॥ 1/2 ॥ और

'विस्फोटक भयं घोरं क्षिप्रं तस्य प्रणश्यति॥ 3॥

या तरियाँ या गर्दभवाहिनी सीतला माता कूँ फोड़ा-फुन्सी, चेचक-खसरा, आदि कूँ नष्ट करिवे वारी बतायौ गयौ है। या ही स्तोत्र में आगैं या देवी कूँ बुखार-ताव और चेचक में भए मवाद-दुर्गन्ध ते मुक्ति दैवे वारी हू कह्यौ गयौ हैं।

यहाँ के सीतला माता पुजारी वंस में ते वयोवृद्ध श्री खैमचन्द जी के अनुसार ये श्रीविग्रह(मूर्ति) दो हजार बरस पहलैं तव कौ ही है जब यहाँ के राज महलन कौ निर्मान भयौ हो। 65 वर्षीय पुजारी के कंठ में यहां के राजवंस कौ इतिहास ऐसै बसौ भयौ है कै जैसैं कविन के मुख में सरस्वती बसी रहै है।

बिनके अनुसार यहां के राजा जयपाल (जो छौंकर हे) के वंसज ई फिर लोधा भए। बिननें ते ई ये स्वयम् हैं। इन्नैं खुद नैं सेढ़ कौ मठ गिरवे पै दुबारा बनवायवे के ताँईं जब खुदाई कराई ही तौ, तब मलवा में बड़ी सुन्दर मूर्ति मिली हो। वे मूर्ति, इन्नैं तब मठ में ही जड़वाय दीनी ही पर कालान्तर में ये चोरी है गई हैं।

इनके भतीजे हरीश (जो पूर्व नगरपालिकाध्यक्ष श्री ब्रजकिशोर लोधा के बेटा हैं।) नैं बतायौ कि जब वू करीब तीन बरस कौ हो, तब देवी के यहाँ एक पटिया (चौंका) के नीचैं दब गयौ हो। पास में खड़ी वाकी दादी में इतनी दम ना ही कै वाऐ निकासि लैंती पटिया के नीचे ते। पर तब वहां नीले घाघरे और नीली ही फरिया वारी काऊ औरत नैं वाए निकासौ हो जो बाकी दादी कूँ हू निगाह नाँय परी। जन-विस्वास है कै वू 'सेढ़ मैया' ई हती।

यहाँ गामन में तौ होरी के बाद सातें कूँ, कै फिर सोमवार कूँ ही सेढ़ै पूजि लेनें हैं पर कामाँ में तौ आठैं कूँ ही पूजैं हैं और जो कहूँ वा दिना मंगलवार परि जाय तौ फिर तौ नौवें दिना ही पूजी जाय है। याही दिना ह्यां मेलौ हू जुरै है।

कैसैं पूजैं हैं यायै? तौ याके ताँईं एक दिना पहलैं ही चामर, कढ़ी, बिना भुने भए दलिया की बनाई राबड़ी, कै घाट की (जौकी) महेरी, और मीठौ कंसार (घूली/दलिया), अरु पुआ-पकौड़ी, पूड़ी-बैंगन कौ साग बनाय लें। फिर या बासी भोजन (बासौड़ा) ते सेढ़ मैया कौ पूजन कियौ जावै। हरदी घोरकैं वाकौ तिलक लगामैं। चना की दाल भिजो कै बाकौ देवी कूँ भोग लगामैं। बची खुची कूँ गधान कूँ डारें। म्हाँपै खड़े भए धोबी और कुम्हार भइया इन गधान कूँ तौ देवी कौ घोड़ा बतामें हैं। हरिजन भाई मुर्गा के पंख ते, बच्चान पै हवा करैं और ताकौ नेग हू लैंनें। माता-बहन अपने छोटे-छोटे बच्चान पै मर्गा जरूर छुड़बामें। दन्तकथा है कि याते सेढ़ मैया प्रसन्न रहवै।

सेढ़ मैया की पूजा के बाद, माँ-बहन देवी ते प्रार्थना करेँ हैं कै "बिनके बच्चान कूँ चेचक-खसरा औरु फोड़ा-फुन्सीन ते बचइयो, मैया।" फिर पास के ही, सीतला कुण्ड में ते खुद आचमन करेँ औरु बच्चान नैं करामें। खुद नहामें और बच्चान नैं न्हबामें। फिर म्हाँई बने चौंतरान पै बैठिकैं एक लोक-कथाए कहमें। पं. बालाराम जी की धर्म पत्नी श्रीमती भगमान देई जी और माननीया अशर्फी जी कटारा के अनुसार वह लोककथा कछू या तरियाँ कही जावै है-

एक बुढ़िया ही। वाकैं एक बहू ही। एक दिना सबन के मूड़ माथे धुवे। बुढ़िया नैं बहू ते कही कै नैंकु मेरे मूँड़ के जूआँ देखि दै। बहू को तौ खावे में नीयत लग रही ही नौ वानैं तौ यों ही मूड़ उलटि-पलटि कैं धर दीनौं। कछू देखौं, कछू नाँय देखौं और कह दीनी कि कछू नाँय तिहारे माथे में।

डोकरी *बोली बहू ते कै बहू-बहू! सेढ़ मैया नैं मोते कही कै "चैत कौ महीना लगि गौ। मैं तौ पजरी ही* जाऊँ। तुम सब मोय ठंडे ते ही न्हवाऔ, और सीरौ बासौ ही जिमाऔ।" फिर बुढ़िया नैं सपने की बात सिगरे गाम में घर-घर जायकैं कही पर काऊ नैं साँची नाँय मानी।

कोऊ *साँची न मानै तौ न मानै, पर बा डोकरी की बहून नैं तौ सातें कूँ ही सीरौ बासौ तैयार कियौ।* करते-करते रात है गई। सकारें आठैं कूँ पूज्यौ। डोकरी पूजिवे गई तौ देखैं कहा हैं कि सिगरे गाम में तौ आगि लग गई। पर वा डोकरी कौ घर बचिगौ।

गामकेन नैं पूछी कै, "चौं री डोकरी, तैनैं ई कहा टौना-टोटका कियौ कै तेरौ घर तौ बचिगौ?"

डोकरी बोली-"मैंनैं तौ कछू ना करौ। चामर राँधे, महेरी राँधी। पूआ-पूरी करे। अठावरी(भोग) बनायकैं सेढ़ पूजी ताई ते बचिगौ।"

तब फिर तौ सिगरे गाम में डौंड़ी पिटी कि दरिया-महेरी राँधि कैं सेढ़ मैयाए पूजौ। तब सबन्नैं दरिया महेरी, चामर, कढ़ी, हलुआ-पूरी करिकैं देवी पूजी। तब फिर सबन के खेतन में खूब अन्न-धन भयौ। सब आनंद है गए। सो जय हो सेढ़ मैया-जैसें उनकूँ अन्न-धन दीनौं तैसेंई सब कूँ दीजौ और सबन की रक्षा कीजौ।

सही बात ई है कै, "सेढ़ मैया कौ तौ औंधौ पंथ है। बच्चान कैं माता निकसि आवै। बच्चान कैं चिल् बाइ लगाय दे। (बच्चा चिल्लायवे लगि जाँय) तब फिर कन्या, बुढ़िया, बासौरे के दिना जिमामें। बिनकूँ बासी-सीरे चामर, कढ़ी, दरिया, महेरी और हलुआ-पूरी खबामें तब कहीं ठीक होमें बच्चा।"

मा. अशर्फी कटारा जी 81 वर्षीया हैं। *बिन्नैं जि कथा अपनी मैया ते हू सुनी ही बचपन में। श्री* घीसाराम शर्मा की पत्नी श्रीमती हीरादेवी नैं जे ई कथा नागौर (राजस्थान) में हू सुनी ही।

बुढ़ियाते सीतकाल के अंत में, जब बेर-बेर कबू ठंड तौ कबू गर्मी परै है, खायवे पीबे, ओढ़िबे-पहरिबे कौ बिसेस ध्यान दिबायवे वारौ है जे सीतला पूजन कौ त्यौहार। नए संवत्सर में नीम की पाती और मिसरी खायबे कौ हू कारन, रक्त विकार ते बचिबे और गर्मी ते बचिबे कौ साधन करबौ ही है।

साँचोली देवी हू कामाँ के उत्तर में ही है। पर है कच्चे रस्ता ते 13 किलोमीटर दूरि और सड़क के रस्ता ते तौ 25 किलोमीटर ते हू दूरि है। यहां पै आजकल धवल संगमरमर की तीन मूर्ति विराजमान हैं। इनमें मध्य में मुख्य देवी 'साँचोली देवी' है। इनकी दाहिनी ओर ज्वाला देवी और मुख्य प्रतिमा के बाँई तरफ लाँगुरिया है। पहलें यहां श्याम-पाषाण की तीन, ऐसी ही प्रतिमा हीं। बिनकूँ जीर्ण-शीर्ण हैबे के कारन गोवर्धन की मानसी गंगा में पधराय दियौ गयौ। और आज तौ य्हाँ मथुरा के काऊ सेठ के द्वारा बनवायौ गयौ 72 फीट ऊँचौ भव्य मन्दिर दर्शनीय है।

पर पहलैं वारी प्रतिमा कहाँ ते आंईं? जा संबंध में दन्त कथा है कि काऊ मेव भैया की, याई जंगल में भैंस खुल गई। भैंस खुल गई मतलब कि चोरी है गई। अब वू जंगल में बाए ढूँढ़िवे कूँ निकस्यौ तौ बाऐ ढूँढ़ते-ढूँढ़ते रात है गई पर बाय न मिली भैंस। फिर आगै वाऐ भैंस दिखाई परी। भैंस के सींग एक हींस में अटकि रहे हे। चाँदनी रात। भैंस में पीछे ते लठिया मारीं। एक दो नाँय घनी मारीं पर भैंस न सुरझी। समझ्यौ कि हींस में चोर बैठे हैं और बिन्नैं बाके सींग पकरि राखे हैं।

जोस ते हींस में लठिया मारी तौ लगौ कि जानौ लठिया पत्थर में लगी है। वह डर गयौ। समझ्यौ कै भूत-प्रेत है। गाम में जाय कैं कही तौ 4-6 लोग संग लगि परे। दिन हू निकसि आयौ तबलौं। देख्यौ कि हींस में कारे रंग की तीन मूर्ति पड़ी हैं पत्थर की। वे भैंस कूँ लै आए। पर जब सुपनौं दियौ काऊ कूँ देवी नैं कै मेरी पूजा पाराशर ब्राह्मन ते करवाऔ तौ फिर हिण्डौन बयाना ते एक परिवार ऐसौ बुलाय कैं देवी की पूजा की व्यवस्था करी गई। मठ बनवायौ गयौ। फिर काऊ बनजारे नैं बड़ौ मठ बनवायौ। पहले मठ के चित्र तौ उपलब्ध हैं पर मूर्तीन के नाँय। अब मथुरा के एक सेठ नैं गुलाबी पत्थर ते नयौ भवन बनबायौ है। ह्याँ चैत सुदी सातें कूँ भारी मेलौ जुरै है।

श्री छज्जूराम पाराशर अध्यापक नैं देवी के प्रकट हैबे की उक्त कथा के संग ही नीचें लिखी पुरानी लोक-कथा यों सुनाई-

''साँचोली गाम में जहाँ आज मंदिर है, वहाँ पै बहुत पहलैं, कोऊ द्वापर के अंत में, नंदगाम ते ह्यां तानूँ बहौत गहरौ बन हौ। कन्हैया जी सखान के संग गाय चरायौ करै हे। सखी पीलून के फल पीचू खायवे आयौ करैं हीं, गोबर हू बीन लै जायौ करैं हीं।

कृष्ण नैं एक दिना बिन कूँ बतायौ कि जा बनी में एक देवी है जो सबकी मनोकामना [illegible]। सखीन नैं बाकी बात पै बिस्वास कर लियौ। सखी तौ कृष्ण कूँ पायवे की इच्छा करती ही हीं। बि[illegible] या देवी के दर्सन करिकैं, मनोकामना क्यों नायँ पूरी करबा लें। सो वे कृष्ण के संग व्हाँ पै[illegible]

बिन सखीन में चन्द्राबलि सखी हू ही। साँची बात तौ जि है कै चन्द्रावलि कूँ छलिबे के [illegible] नैं जे कौतक कियौ हौ। सखी बनी में गईं पर ब्हाँ पै कोऊ देवी न देवता। हौंतौ तौई तौ मिलतौ गयौ। औरु वे गैल हू भूलि गईं। बिनते अब गैल हू नहीं फूटी। चिल्लायवे लगीं कै ''अरे कियौ? और आपस में कहिवे लगीं कि ई तौ -झूठौरी-झूठौरी।''

दिन छिपवे कूँ आयौ पर गैल कौ तौ कहूँ अतौ पतौ हू नाँऔ। तबई व्हाँ कृष्ण एक हींस में देवी कौ रूप बनाय कैं बैठि गयौ और वहाँ ते चिल्लायौ देवी की सी अबाज में कि-"सखियौ! मैं य्हाँ हूँ।" सखि अवाज माऊँ गई तौ वहाँ पै तौ साक्षात देवी विराजमान। देवी कौ रंग कारौ कट्ट। सो अब तौ सखी सब कछु भूलिकें, झूठौरी, झूठौरी न कहिकें 'साँचौरी, साँचौरी, कन्हैया साँचौरी' ऐसें कहिकें प्रसन्नता ते नाचिबे लगीं। कालान्तर में यह नाम साँचोली है गयौ। वहाँ दर्सन कूँ सब चालीं ताते हू साँचोली देवी नाम है गयौ। काली ताते कृष्ण ही देवी बने ताते हू कृष्णा और चन्द्रावल देवी हू याके नाम हैं।

-कुटी मौहल्ल, कामाँ, भरतपुर (राज.)

-

आज कौ मानव कहा विस्वास के बिना मात्र विचार के सहारे सम्पूर्ण रूप में जी सकै है? 'विस्वास' अरु श्रद्धा दोनूँ ही मानव-मन के मौलिक व्यौपार हैं जिनके अभाव में विचार हू पंगु है जायगौ। यदि विस्वास अमर है तौ लोक-कथा अथवा लोक-प्रथा हू अमिट, अजर अरु अमर है।

-डॉ. हरद्वारीलाल शर्मा

(लोकवार्ता-विज्ञान, खण्ड एक, पृष्ठ 320)

अनन्त भगवान की कथा

-श्री हरीशचन्द्र शर्मा 'हरि'

एक समै की बात है कि एक औरत और एक वाकौ मरद हतौ। औरत अनन्त भगवान कौ व्रत रखिवौ करैई। एक दिना वाकौ धनी खेतन में काम करिवे कूँ चलौ गयौ तौ वाकी पत्नी एक परौसन कैं आँच लैवे कूँ चली गई तौ वानैं देखी कै वे सिगरी अनन्त भगवान कौ व्रत रह रही हैं तौ वाय एकदम ध्यान आयौ कि मोय हू अनन्त भगवान कौ व्रत करनौ है। तौ घर आयकैं सिगरे घर की सफाई करिकैं रोट पकायकैं वाके ऊपर बूरे के संग अनन्त भगवान कौ पूजन करिवे लगी। इतने में ई वाकौ पति खेत ते लौट आयौ अरु अपनी पत्नी सौं लड़िवे लगि परौ अरु कहिवे लगौ कि तैंनैं आज रोटीन कूँ इतनी देर च्यौं लगाय दई। वाकी पत्नी बोली कै मैं आज अनन्त भगवान कौ व्रत रही हूँ। मैं पूजन करिवे लग परी। यापै वाके पति नैं गुस्सा में आयकैं अनन्त भगवान चूल्हे में झौंक दिये तौ अनन्त भगवान सिगरे जरि गये। अनन्त भगवान नैं रूठ कैं वाकूँ कोढ़ी कलंकी करि दियौ। सिगरी दुनिया कहिवे लगी कि ई तौ अनन्त भगवान नैं तोपै कोप कियौ है जबलौं तू अनन्त भगवान कूँ नाँय मनावैगौ तबलौं तेरौ जि दुःख कबहूँ दूर नाँय होयगौ। इतनी सुनिकैं बू अनन्त भगवान के दर्शन करिवे कूँ चलि दियौ। मारग में वाय एक कंजूस बनिया पायौ जाकी पीठ पै सौने-चाँदी के द्वै बोरा लटक रहे हे। बू बोलौ भइया सौनौ लैजा। वानैं कही मोय सौनौ नाँय चइयै मैं तौ अनन्त भगवान के दर्शन करिवे के ताँई जाय रह्यौ हूँ। बनिया बौल्यौ कि मेरीऊ भगवान ते पूछिकैं अइयौ कि इन बोरान कूँ लदते-लदते मोय मुद्दत गुजर गई पर जिननें कोऊ लेवै नाँय। बू बोलौ जरूर पूछिकैं आऊँगौ।

आगे वाकूँ एक ऊँटनी मिली जाकी पीठ पै चाकी धरी रहवैई। ऊँटनी नैं कही भैया चाकी लैजा। वानैं कही मैं चाकी नाँय लऊ मैं तौ अनन्त भगवान के दर्शन करिवे जाय रह्यौ हूँ। ऊँटनी बोली भगवान ते मेरी पूछिकैं अइयौ कि मैं या बोझ ते कबलौं मुक्त हूँगी? वानैं कही मैं जरूर पूछिकैं आऊँगौ।

और आगैं चलिकैं वाय द्वै नदिया मिलीं जिनकौ पानी आपस में ई जाय रह्यौ हो। जिनमें ना कोई न्हावै ना धोवै अरु नाँय कोऊ पीवे के ताँई काम में लैंतौ हौ। नदी बोली भैया हमारीऊ भगवान ते पूछिकैं अइयौ कि हमनैं ऐसौ कहा पाप कियौ जो सिगरे हमसौं घृणा करैं। वानैं कही जरूर पूछिकैं आऊँगौ।

या तरियाँ बू भगवान के दरबार में जाय पहुँचौ। वहाँ जायकैं भगवान के चरणन में गिर परौ। भगवान बोले

कैं अब तू मोते कहा चाहै तैंनें तौ मैं सिगरौई जराय दियौ। बू भगवान ते भारी गिड़गिड़ायौ तौ भगवान नैं वाकूँ क्षमा करि दियौ अरु अपनी छिंगुली अँगुरिया कूँ काटिकैं वाकैं छौंटा दै दिये तौ बू पहलौ जैसौई है गयौ। चलते समय वानैं बनिया, ऊँटनी अरु नदीन की व्यथा कूँ सुनायौ तौ भगवान नैं कही कि बनिया भौत कंजूस हौ। कोऊ दान-पुन्न नाँय करैऔ जाते वाके धनैं कोऊ नाँय लेय वू स्वयं ही धन कूँ लदिकैं डोलैगौ। ऊँटनी काऊ कूँ अपनी चाकी ते नाँय पीसन देई। कोई आवैऔ तौ कीला मानीन कूँ निकारि कैं धरि देई। याऊ कूँ बोझा ढोनों परैगौ। और जे नदिया हतकाईं वे आपस में दौरानी जिठानी हतीं। ये आपस मेंई श्राद्धन मेंऊ एक दूसरे कैं भोजन करिबौ करेंई काऊ दूसरे कूँ नाँय भोजन करामेई या कारण इनकौ पानी एक दूसरे मेंई जाय रह्यौ है। इनकूँ जी पाप लगि रह्यौ है। वानैं भगवान ते इनकूँ छुटकारौ दिवायवे की अनुनय-विनय करी तौ भगवान राजी है गये। वे कहिवे लगे कि बनिया के बोरा में ते एक फाँस सौनै की लै लीजौ तौ वाकौ सौनौ चलौ जावैगौ। चाकी के एक कौनें कूँ फोर लीजौ तौ वाकूँ कोऊ लै जावैगौ अरु नदी में ते एक घूँट पानी पी लीजौ तौ सिगरेई वाके जल कूँ पीवे, न्हावे, धोवे लगि जामिंगे। बू भगवान कूँ प्रणाम करिकैं वहां ते चलौ और वानैं भगवान के कहे अनुसार ही सिगरेन कौ उद्धार कियौ। वास्तव में ईश्वर की माया कौ आज तक काऊ नैं ई पार नाँय पायौ है।

-होली गेट, नगर, (भरतपुर)

-

देवता संस्कृति के संग चलैं है, वे संस्कृति की उपज हैं। आखेटक सस्कृति के देव प्राकृतिक अरु भयानक होवें हैं। रौद्र रूप में (रुद्र) बिनकी कल्पना सहज ही। ता पाछैं जब खेती-पशुपालन कौ स्थिर ग्राम-जीवन प्रारंभ भयौ तौ वाके देवता हू बदलि गये। . . गामन के बसिवे पै सामूहिक जीवन आरंभ भयौ; आपसी लैन-दैन, सनेह-सम्बन्ध घनिष्ट हैबे लगे। कछू लोग सांस्कृतिक कामन में लगि गये। तब जरूरत भई नैतिक मान्यतान की अरु वा समै नैतिक पवित्रता के देव कृपालु, विज्ञानघन, सत्य अरु धर्म के रच्छक देवतान कौ अवतार भयौ।

-डॉ. हरद्वारीलाल शर्मा

(लोकवार्ता-विज्ञान खण्ड एक, पृष्ठ 417)

अनन्त भगवान की कथा

-श्री हरीशचन्द्र शर्मा 'हरि'

एक समै की बात है कि एक औरत और एक बाकौ मरद हतौ। औरत अनन्त भगवान कौ व्रत रखिवौ करैई। एक दिना वाकौ धनी खेतन में काम करिवे कूँ चलौ गयौ तौ बाकी पत्नी एक परौसन कैं आँच लैवे कूँ चली गई तौ वानैं देखी कै वे सिगरी अनन्त भगवान कौ व्रत रह रही हैं तौ बाय एकदम ध्यान आयौ कि मोय हू अनन्त भगवान कौ व्रत करनौ है। तौ घर आयकैं सिगरे घर की सफाई करिकैं रोट पकायकैं बाके ऊपर बूरे के संग अनन्त भगवान कौ पूजन करिवे लगी। इतने में ई बाकौ पति खेत ते लौट आयौ अरु अपनी पत्नी सौं लड़िवे लगि परौ अरु कहिवे लगौ कि तैंनें आज रोटीन कूँ इतनी देर च्यौं लगाय दई। वाकी पत्नी बोली कै मैं आज अनन्त भगवान कौ व्रत रही हूँ। मैं पूजन करिवे लग परी। यापै बाके पति नैं गुस्सा में आयकैं अनन्त भगवान चूल्हे में झौंक दिये तौ अनन्त भगवान सिगरे जरि गये। अनन्त भगवान नैं रूठ कैं वाकूँ कोढ़ी कलंकी करि दियौ। सिगरी दुनिया कहिवे लगी कि ई तौ अनन्त भगवान नैं तोपै कोप कियौ है जबलौं तू अनन्त भगवान कूँ नाँय मनावैगौ तबलौं तेरौ जि दुःख कबहूँ दूर नाँय होयगौ। इतनी सुनिकैं बू अनन्त भगवान के दर्शन करिबे कूँ चलि दियौ। मारग में वाय एक कंजूस बनिया पायौ जाकी पीठ पै सौने-चाँदी के द्वै बोरा लटक रहे हे। बू बोलौ भइया सौनौ लैजा। वानैं कही मोय सौनौ नाँय चइयै मैं तौ अनन्त भगवान के दर्शन करिबे के ताँईं जाय रह्यौ हूँ। बनिया बौल्यौ कि मेरीऊ भगवान ते पूछिकैं अइयौं कि इन बोरान कूँ लदते-लदते मोय मुद्दत गुजर गई पर जिननें कोऊ लेवै नाँय। बू बोलौ जरूर पूछिकैं आऊँगौ।

आगे बाकूँ एक ऊँटनी मिली जाकी पीठ पै चाकी धरी रहवैई। ऊँटनी नैं कही भैया चाकी लैजा। बानैं कही मैं चाकी नाँय लऊ मैं तौ अनन्त भगवान के दर्शन करिवे जाय रह्यौ हूँ। ऊँटनी बोली भगवान ते मेरी पूछिकैं अइयौ कि मैं या वोझ ते कबलौं मुक्त हूँगी? बानैं कही मैं जरूर पूछिकैं आऊँगौ।

और आगैं चलिकैं बाय द्वै नदिया मिलीं जिनकौ पानी आपस में ई जाय रह्यौ हो। जिनमें ना कोई न्हावै ना धोवै अरु नाँय कोऊ पीवे के ताँईं काम में लैंतौ हौ। नदी बोली भैया हमारीऊ भगवान ते पूछिकैं अइयौ कि हमनैं ऐसौ कहा पाप कियौ जो सिगरे हमसौं घृणा करैं। बानैं कही जरूर पूछिकैं आऊँगौ।

या तरियाँ बू भगवान के दरबार में जाय पहुँचौ। वहाँ जायकैं भगवान के चरणन में गिर परौ। भगवान बोले

कैं अब तू मोते कहा चाहै तैंनैं तौ मैं गिरगिट जगय दियौ। वृ भगवान ते भारी गिड़गिड़ायौ तौ भगवान नैं वाकूँ क्षमा करि दियौ अरु अपनी छिंगुली अँगुरिया कूँ काटिकैं वाकैं छींटा दै दियें तौ वृ पहली जैसौई है गयौ। चलते समय वानैं बनिया, ऊँटनी अरु नदीन की व्यथा कूँ सुनायौ तौ भगवान नैं कही कि बनिया भौत कंजूस हो। कोऊ दान-पुन नाँय करौ जाते वाके धनैं कोऊ नाँय लेय वृ स्वयं ही धन कूँ लादिकै डोलैगौ। ऊँटनी काऊ कूँ अपनी चाकी ते नाँय पीसन देई। कोई आवैऔ तौ कीला मानीन कूँ निकारि कैं धरि देई। याऊ कूँ बोझा ढोनौं परैगौ। और जे नदिया हतकाई वे आपस में दौरानी जिठानी हती। वे आपस मेंई आदान मेंऊ एक दूसरे कैं भोजन करायौ करैई काऊ दूसरे कूँ नाँय भोजन करामेंई या कारन इनकौ पानी एक दूसरे मेंई जाय रह्यौ है। इनकूँ जो पाप लाग रह्यौ है। वानैं भगवान ते इनकूँ छुटकारौ दिवायवे कौ अनुनय-विनय करी तौ भगवान राजी है गये। वे कहिवे लगे कि बनिया के बोरा में ते एक फाँस सोने की लै लीजो तौ वाकौ सोनो चल्यौ जायगौ। चाकी के एक कौने कूँ फोर लीजो तौ वाकूँ कोऊ लै जावैगौ अरु नदी में ते एक बूँद पानी पी लीजो तौ मिलाई वाके जल कूँ पीवैं, न्हावें, धोवें लगि जामिंगे। वृ भगवान कूँ प्रनाम करिकैं वहां ते चल्यौ और वाने भगवान के कहे अनुसार ही सबन कौ उद्धार कियौ। वास्तव में ईश्वर की माया कौं आज तक काऊ नैं हू पार नाँय पायौ है।

-[illegible], (भरतपुर)

-

देवता संस्कृति के संग चलैं हैं, वे संस्कृति की उपज हैं। आर्येतर संस्कृति के देव प्राकृतिक अरु भयजन्य होवें हैं। [illegible] (रुद्र) जिनकौ [illegible]। [illegible] ___ [illegible] देव, [illegible] होवे लगे। [illegible] कौ [illegible] वैदिक [illegible] के देव [illegible]

-डॉ. [illegible]

([illegible], पृ. 417)

भैयादौज की कथा

-श्रीमती उषा शर्मा

एक समै की वात है एक औरत कैं एकई बेटा हौ। बू ग्वारिया हौ। महीना के अंत में बू घर-घर ग्वारई लैबे के ताँई गयौ तौ सबनैं बाते मना कर दई - ''आज तोकूँ हम ग्वारई नाँय दिंगी। आज तौ हम कहानी सुनि रही हैं।'' बू बिनते कहिबे लगौ, ''बहिनौ तुम कौन की कहानी सुनि रही हौ?'' बिन्नें कही कै आज भैया दौज है, आज के दिना भैन भैयान कैं तिलक करैं। इतनी सुनिकैं बू अपने घरकूँ आय गयौ और अपनी मैया ते बोलौ, ''मैया हमारैं कोई बहिन नाँय का?'' मैया नैं कही, ''हतै बेटा एक बावरी सी बहिन है, (इशारौ करिकैं) इतकूँ रहै।'' बेटा वाई दिसा कौ सूँत बनाय कैं चलि दियौ। थोड़ी ही देर में बू बहिन के पास पहुँच गयौ। वाकी बहन चरखा कात रही, भैया खड़ौ रहौ । पर भैन मिलिवे नाँय उठी, च्यौंकै सूत कौ तार टूटौ पर्‌यौ हौ। भैया नैं सोची मैया नैं कही वूई बात भई। जि भैन बावरी ही है। इतनी सोचिकैं भैया उलटौ ही चल दीन्हौं। थोरी देर में भैन कौ तार जुर गयौ। भैन भैया ते भग कैं मिली। भैया नैं कही, ''भैन मैं जबते ठाड़ौ तबते च्यौं नाँय मिली मोते?'' भैन कहिबे लगी, ''भैया जबते चरखा कौ तार टूटौ पर्‌यौ, जब तक चरखा कौ तार नाँय जुरै तौलौं नाँय मिलौ करैं।'' इतेक कहिकैं भैन खुशी के मारें अपनी परौसिन के पास गई। कहिवे लगी ''भैन मेरौ वीरन आयौ है। ऐसे प्यारे भैया कूँ कहा मेहमानी करिवौ करैं। '' परौसिन बोली, ''भैन, घी में तौ चामर राँध दै और तेल कौ चौंका दै दै।'' वानैं जैसैं परौसिन नैं कही बैसौंई कर्‌यौ। अब ना तौ चाँमरई रँधैं अरु ना चौकाई सूखै। फिर भगी-भगी परौसिन के पास गई। बाते बोली ''भैन तैंनैं मोकूँ कहा बताय दियौ।'''' अरी भैन मैंनैं तौ तोते मजाक करी, पानी में तौ भैन चामरन नैं राँध और गोबर-पानी कौ चौंका दै। ऐसे प्यारे भैया कूँ तौ ऐसी ई खातिर करिबौ करैं। ''दूसरे दिना भैया कहिबै लगौ कै भैन मैं चलूँ तौ भैन नैं सकारैं जल्दी ही चाकी ते चून पीस कैं चार रोटी करि दई और भैया कूँ बाँध दई। भैया बिन रोटीन नैं लैकैं चलि दीन्हौ। बाके बच्चा सोयकैं जगे। मैया तैंनैं मामा की कहा खातिर करी हमकूँ भी दै। बू खटौटी कूँ हटायकैं बच्चान कूँ दैवे लगी। वानैं देखी कै रोटी नीली पड़ गई है। चाकी में एक साँपिन पिस गई। बू घबरा गई। रोवे चिल्लायवे लगी। वानैं दूध चौका में छोड़ौ। पूत पालने में छोड़ौ। रोती बिलखती भागी-भागी भैया कौ पीछौ करिवे लगी और सगरे गैलारेन ते पूछिबे लगी कै ''काऊनैं मेरौ भैया देख्यौ है का?'' एक बोलौ अरी भैन देखौ तौ है बू बा पेड़ के नीचैं सो रह्यौ है। फिर पूछिबे लगी कै भैया वानैं रोटी तौ नाँय खाई। इतेक में ही वू वहाँ पहुँच गई, वहाँ देखौ तौ भैया तौ सोयौ भयौ हो। चील-कौआ रोटीन में चोंच दै दैकैं मरि रहे। वानैं भैया कूँ जाय जगायौ। बू कहिबे लगौ ''अरी भैन, मैं तेरौ कहा

लै आयौ जो तू मेरे पीछें भगी आई है?'' फिर बोली कै भैया मैं तौ तेरे संग चलूँगी। वानैं कही ''भैन तू कहा करैगी? मैं तौ अकेलौई चलौ जाऊँगौ।'' पर भैन नाँय मानी। वू चलि दीन्ही। आगें चली तौ वाके भैया कूँ प्यास लगी। वू बोली कै मैं तोकू वीरन पानी लाऊँ। वाकूँ एक मकान दीखौ। वहाँ पै वू पानी लैवे कूँ चली गई। वहाँ पै इकलौती के पूत की सिला गडि रही। वू बोली कै ''भैया जि तुम कहा करि रहेहौ?'' ''अरी भैन तू जा, तोय इन बातन ते कहा मतलब। ई इकलौती के पूत की सिला गड़ रई है।'' वू बोली कै भैन की और भैया की गारी नाँय लगी करै, तौ वहीं ते गारी दैवे लगी कै तू मरि जइयौ रे, तू कटि जइयौ रे, फुक जइयौ रे। इतेक में ही वाकौ घर आय गयौ तौ मैया ते बोली, ''लै राँड़ तेरे बेटा कूँ लै आई।'' मैया बोली बेटा मैंनैं तोते मना करी तू वहाँ मत जा, या बावरी कूँ घर च्यौं लै आयौ? थोरे दिना पीछें वाकी सगाई आय गई तौ वू कहिवे लगी लै राँड़ याकी सगाई लै लै। वाके भैया की सगाई है गई। कछु दिना पीछें वाकौ ब्याह भयौ तौ बोली बरात के संग मैंऊँ जाऊँगी। बरात चली तौ रस्ता में कहिबे लगी बरातै यहाँ हैकैं मत निकारौ बर (बड़ कौ पेड़) टूटैगौ। बराती कहिवे लगे कै बावरी और कानून लगाती चलि रही है तौ बूढ़े-बड़े कहिबे लगे कै याकी बात मान लेऔ और बरातै दूसरे रस्ता ते लै चलौ। जैसैंही बरात वहाँ ते निकरी वैसैंई बर टूटि गयौ। वाकौ पत्ता वानैं रख लियौ।

बरात बेटी के दरबज्जे पै पहुँची तौ बोली कै बरात कूँ दरबज्जे पै ते मत लेऔ। पीछें ते लाऔ, दरबज्जौ टूटैगौ। बरात पीछें ते गई तौ आगे कौ दरबज्जौ टूट गयौ। भैन नैं वाकौ ईंट अपने पास धर लई। आगें दूल्है फेरान पै बैठ्यौ तौ दूल्है नैं जूता उतार दिये तौ बिनमें एक साँप आयकें बैठ गयौ, या बीच बावरी भैन सोय गई। थोरी सी ही देर में बावरी जग गई। बानें जूता फटकारिबे कौ लग्गा लगायौ। बामैं साँप निकर्‌यौ। वा दिना ते फेरान पै जूतान नैं पहरिकैं नाई बैठिबे लग गए। वहाँ पैऊ वानै भैया कूँ बचायौ। बरात घर आ गई। सेड़ चौरा पुजवाय दिए। बेटा-बहू सोबे कूँ भेजे तौ बावरी बोली कै मैं तौ इनके बीच में सोऊँगी। झट वू बीच में सो गई। थोरी सी ही देर में वू गहरी नींद में सोय गई। तौ सबन नैं कही कै बावरी कूँ सो जान देऔ याकूँ जगाऔ मत, नहीं फिर कछू न कछू पागलपन दैवे लगैगी। थोरी देर पीछें भैया-भाभीऊ सोय गए, फिर एक कारौ नाग आयौ और वाके भैया कूँ डस लियौ। फिर वू बावरी जगाई कै अरी तेरे भैया कैं ई कहा है गयौ। वू भगी-भगी अपनी परौसिन धोबिन के पास गई जाकौ वू चौका-बर्तन करिबौ करैई। बाते कही भैन मेरे भैया कूँ जिवा। मैंनैं आज केई दिना कूँ भायेली बनाई। धोबिन बोली- अरी भैन तैंनैं तौ मैं बहुत ठगी। धोबिन नैं अपनी छिंगुली अँगुरिया काट कैं नाँई छींटा दै दिए। भैया हरे-हरे, करिकैं खडौ है गयौ। भैया नैं औरन कूँ विदा करिवे कूँ तौ पाट पटम्बर मँगाये, बावरी कूँ छींट छेवर मँगाई, तौ सबन के तौ है गये छींट छेवर और वाके है गये पाट पटम्बर। फिर बावरी विदा करी। ताँगे में बैठा दई तौ पीछे कूँ म्हौं करिकैं बैठ गई, तौ सिगरे रूख वाके संग चल दिए तौ वाकी मैया बोली ''बेटी आगे कूँ म्हौं करिकैं बैठ जाते ये पीहर के रूख म्हाँ रह जामें। तबई ते सेहरा में सुई टाँकिबौ करैं हैं, तबई बेटा कूँ ब्याहबे कूँ भेजौ करैं हैं। या तरीका ते बावरी नैं भैया की सहायता करी।

-होलीगेट, सुन्दरावली रोड, नगर, (भरतपुर)

सौन चिरैया

-डॉ. परमानन्द शास्त्री

बहौत दिनान की बात है। विदिसा नगरी में एक राजा राज करै हौ। वाकूँ चिरैयान कौ गाइवौ बड़ौ नीकौ लगत हौ। ताई सौं, वानैं भौत सी चिरैया पालि रखीं हतीं। विनकौ गानौ सुनत-सुनत सोवतौ अरु गानौई सुनत-सुनत जागतौ। एक दिनाँ वाकी सभा में एक साधु महात्मा पधारे। राजा नैं सत्कार कियौ। महात्मा नैं असीस दई। बातन ई बातन मैं साधु कूँ राजा के सौक कौ पतौ चल्यौ तौ वानैं कही कै राजा! जबलौं तेरे झौरें सौन चिरैया नाँय तबलौं पंछीन कौ जे झमेलौ कछु ना हतै। राजा नैं अचम्भे में भरिकै कही कै महाराज! का वाके पंख सौने के हतैं। साधु बोल्यौ कै पंख तौ सुनहरे हतैंई परि वाकौ गाइवौऊ गजब कौ हतै। वाके सामई तेरी जे सिगरी की सिगरी चिरैया है कौड़ी कौऊ नाँय। राजा कूँ जि सनक चढ़ि गई, पगलाय गयौ सौन चिरैया के लिएं। सभा में घोसना कर दई 'जो कोऊ सौन चिरैया लाइ कैं देइगौ भारी इनाम पावैगौ'। साधु महात्मा सौं पूछी कि बू चिरैया मिलैगी कहाँ? तौ विननैं कही कैं जि तौ मोऊ कूँ नाँय मालूम। हौं तौ अपने गुरु सौं सुनत भयौ। अब भलौ सुनी सुनाई बात पै को जावै। कोऊ बावरौ ई ऐसौ करि सकै है। सो दरबारिन में सौं काऊ नैं हामी नाहिं भरी।

वा राजा के तीनि लरिका हते। वानैं तीनौंन कूँ बुलायकैं कही कै अबतौ तुमई कूँ कछु करिबौ परैगौ। सौन चिरैया के बिना मोय तौ चैन परै नाँय अरु तुमन मैं सौं जो कोऊ लाय देगौ, आधौ राजपाट वाय मैं अपने जीवनकाल मेंई दै दऊँगौ। जब तक वो मोय मिलैगी नाँय, जि समुझि लेउ,हौं अंजल-पानी ऊ नाँय करूँ। जि सुनिकैं राजकुमारन के पामन तले की धरती खिसकि गई। विननैं आपुस में मिलि-बैठिकैं अरु सिर जोरिकैं मतौ उपायौरु निच्चै भयौ कि दोनूँ जेठे कुमार तौ सौन चिरय्या कूँ खोजिवे कूँ निकसि परैं अरु छुटका भैय्या राजा के साथ रहिकैं धीर बँधातौ रहै। चलती बिरियाँ विननैं वासौं जे औंर कही कै महल की छत पै एक कटोरौ दूध भरि कैं रखि छोड़ै और वाय जब-तब देखतौऊ रहै। कबहुँ वा दूध कौ रँग लाल है जाय तौ जे समुझिकैं कि हम काहू मुसीबत में फंसि गये है, हमारी तलास में मदद के ताँई चलि परै। जि कहिकैं वे उत्तर की ओर निकसि गये।

बागन में, बनन में, रुखन के झुरमुटन में, घोंसलन अरु खोखरन-खकोड़रन में, झार-झंकारन में जहाँ-तहाँ ढूँढ़ि-ढूँढ़ि थकि जाँय तौ काहू पेड़ के नीचै रैन-बसेरौ करि लैं। सरित-सरोवन सौं जल पीकैं प्यास बुझा लेंय। भूख लगै तौ कंद-मूल-फल खाइ कैं काम चलामैं। या तरियाँ सोन चिरैया की तलास में अटकते-भटकते विन्नैं कैई दिना गुजर गये अरु थके माँदे वे एक नगर में पहौंचि कैं आराम के लियें सराय में रुके। कछु दिना

वहीं रुकि कैं तलासिवे कौ काम जारी रखिवे कौ मन बनायौ। पंछी-बजार में गए, औरें झौरें घूमिकैं देखौ। बहेलियाऊ सौन चिरैया कौ नाम सुनैं तौ या तौ हँसि दैंइ या मूँड हिलाय कैं हाथ नचाय कैं अरु मुँह बायकैं अचरज जताय दैंइ। एक दिनाँ ऐसौ भयौ कि वे थकान सौं चूर चूर होईकें ऐसे घोड़ा बेचिकैं सोए कि चोर रात में सारौ माल-मतौ चुरायकैं बिनकेई घोड़न पै बैठिकैं रफूचक्कर है गए, सकारे उठिकैं देखौ तौ सबकछु नदारत। है गई ना कोढ़ में खाज। खैर,सिकायत लैकैं सराय के मालिक पै पौंहँचे। बोऊ छँटौ भयौ बदमास निकस्यौ। सबकछू सुनिकैं वानैं कही कि जादै हुसियार मत बनौ, धोका दैवे कूँ हमई पाये हैं का? सिगरौ कौ सिगरौ माल-असबाब चुपचाप मित्रन के हाथन घर पहुँचाइ कैं हमसौं बसूलिबे कौं आए हौ। हमारौ किरायौरु खान-पान कौ खर्चौ नाँय दैवौ चाहौ का? ऐसैं अन्धेरगर्दी क्यौं हू नाँहि चलै। हम तुम्हैं ऐसें नाँहि छोड़िंगे। जब लगि हमारौ हिसाब नाँहि पुरै तबलौं दासता कौ पट्टौ पहिनौं अरु उऋन हैकैं जाऔ।

अपुनी दनादन लबारी मैं सराय मालिक नैं विनैं आगैं कछु कहिबे कौ अवसरऊ नाँहि दियौ। वो सुनौ तौ,सुनौ तौ,कहत रहौ अरु वानैं अपने मानसन तैं विनकौं पकरवाइ जकरवाइ कैं दासता कौ दाग विनके चूतरन पै गरम लोहे सौं लगवाय दियौ। इतै जे घटना घटी उतै वा करामाती कटोरा के दूध कौ रंग लाल है गयौ। छुटके राजकुमार नैं देखौ तौ बड़ी फिकिर भई। विचार कियौ कि जरूर हमारे भैय्या काहू विपत्ति में फंसि गए हैं, सो मदद कौं चलिबौ चइए अरु सौन चिरैया मिलि सकै तौ वाकी कोसिसऊ करनी चइए। जे निच्चै करिकैं अरु अन्दाजे सौं धन लैकें बोऊ तलास के लिंए चलि पर्‌यौ।

बड़े भैय्यान की तरियाँ बानैऊ भौतसे वन-उपवन खेत-खलिहान छानि मारे, परि कहूँ होय तौ सौन चिरैया मिलै। खाई-खड्डन में उतरतौ-चढ़तौ,आसा-निरासा के हिंडोला में झूलतौ अरु उल्लास-अवसाद के प्रवाहन में तैरतौ-डूबतौ वो आगैं ई आगैं चलतौ रह्‌यौ। कछुई भयौ पै बानैं मुरिकैं नाँहि देखौ। चलते-चलते बाकी राह में एक ऐसौ सघन वन आयौ जामैं सूरज की किरन ऊ नाँय बैसि सकै, हरियाली कौ जे आलम कि देखिवे वारे की आँखऊ हरी है जांय। फूलन की सतरंगी जगमग इन्द्रधनुषन की जाजम बुनै ही तौ खगन कौ कलरव कान में ऐसौ रस चुवावै कैं सात बाजन की मधुर संगत फीकी परि जाय। आसा भई कि स्यात् ह्याँ सौनचिरैया लखि परै, या फिरि बाके सुराग कौई कहूँ कछु बानग बन जाय। सोई बू खुसी-खुसी वा वन में बैसिकैं, ध्यान सौं इतउत खोजी नजर डारि-डारि कैं सौन चिरैया की टोह लैंतौ भयौ भीतरई भीतर वा वन को गहराई में उतरतौ चलौ गयौ अरु अन्त में एक बड़े जंगी बरगद के पेड़ के सामैं पहौंचि गयौ जाके तलैं एक भौत लम्बी स्वेत जटा-डाढ़ी-मूँछन वारे महात्मा समाधि में बैठे भये हते। सिर अरु नारि के सिवाय बिनकौ सिगरौ सरीर दिमकौरन के बीचैं धँस्यौ भयौ हौ, जटान में बरगद की लटकी भई जटा खुभ गईं हतीं अरु आस-पास घास उगि आई हती। राजकुमार नैं जतन सौं सबन की सफाई करी अरु सर्धा सौं हाथ जोरि, माथ नवाय कै बिनके सौंहई बैठि गयौ।

संजोग की बात, वाई दिनाँ महाराज नैं समाधि खोली। दृष्टि खुली तौ सीधी सामैं बैठे राजकुमार पै परी अरु बो तौ मानौं अमरित तैं न्हाइ गयौ। दृष्टि कहा आसीर्वादन की वन्दनवारि हती जो सफलता के स्वागत के ताँईं विन दोनूं के बीचैं बने द्वार पै दिव्यरूप में स्वत: आन बँधी ही। महात्मा कौ दाहिनौ हाथ धीरैं-धीरैं आसीस की ल्हौर में ठठौ, सीप की तरियाँ होठ खुले अरु मोती से सब्द झरे-'वत्स! कौन हौ, या निर्जन वन मे काहे

कूँ आए हौ?' राजकुमार कूँ लगी जानौं साँमई स्वयं विधाता विराजमान हैं और विनके मुखतें सरस्वती की धारा बहै है। वानैं सास्टांग प्रनाम करिकैं कही-'महाराज! हौं एक राजपुत्र हूँ अरु सौंन चिरैया की खोज में वनन में खाक छानियौ आ पर्यौ है। मेरे पिता नैं जब सौं वाके विसै में सुन्यौ है विनैं चैन नाँय। ऊ नांहिं मिलो तौ विनके प्रानहू की साँसनि है जाइगी, अन्न-जल छोड़िकैं वाईकी फिराक में बैठेएँ।'

मुनि एकदम गम्भीर है गये अरु बोले-'सौंन चिरैया! अरे वू का जंगलन में पैदा होइ, कोउ कागा गुरसल तौ हतै नाँय जो कहूँऊ काई रूख पै धरे घोंसला में मिल जायगी। लौटि जाहु बच्चा! तोय नाँय मिलि सकै।'

'बाबा! याकौ मतलबै कि आप वाके विसै में जानैएँ, मोय बताऔ तौ, जान दैकेंऊ मिलि सकै तौऊ हौं लै आऊँगौ।'

'बच्चा! जान दैवौ तौ सहलई है पै वाकौ लाइवौ असंभव है, अरु जान दै देठगे तौ लाठगे कैसैं?

'बाबा! जे उपायऊ आपई बतावैं, हौं तौ अब आपही की सरन हौं, जि कहिकैं राजकुमार मुनि के चरनन में परि गयौ।'

'उठौ बच्चा! तोर पितृभक्ति सौं मेरौ मन अति प्रसन्न भयौ। अबई बताऊँ हूँ कि सौंन चिरैया कहाँ हैं अरु साथई वाय पावे की जुगतिऊ। ध्यान दैकैं सुनौ। सौंन चिरैया अलकापुरी माँहि परीन की रानी के पास है अरु उहाँ आकास मारग सौंई पहौंचि सकैं हैं। पहौंचिवे की जुगति जि है कि इहाँ सौं उत्तर दिसा माँहि कोऊ कोसेक दूरि एक अति विसाल फटिक निर्मल जल वारौ सरोवर हतै। उहाँ आधी राति पाछैं भौतसी परियाँ न्हावे आवति हैं। न्हावे तें पहलैं अपने-अपने पंख किनारे पै रख दैं हैं। तुम जि करौ कि चुपचाप काऊ के पंखन की जोरी उठाइ कैं अरु अपनैं लगाइ कैं आन परीन के साथ उड़िकैं परीलोक पहौंचि जाऔ अरु आगैं अपुनी बुद्धि के जोर सौं जुगति भिराय कैं सौंन चिरैया लै आइबे कौ जतन करौ। उहाँ की तुम जानौ, ऊ सफलता तिहारी बुद्धि के आसरे है। इहाँ की हौं सम्हारि लऊँगौ।

अगले रोज राजकुमार नैं वैसौंई कियौ। जैसेंई वानैं पंख अपुने कमरबन्द में खौंसे वामैं अनोखी सकती आ गई। वाय खुद ऐसौ अजरज भयौ कि छनभर कूँ बिजूका की नाँई थम्ब ह्वै गयौ अरु दूसरे ई छिन खुसी सौं उछरि पर्यौ। बात जि भई कि वामें उड़िवे की सकती खुद-ब-खुद आय गई। परीन के संग उड़तौ-उड़तौ वोहू परीलोक जा पौंहचौ। विनके पाछैं-पाछैं उड़िवे के कारन कोऊ वाय देखि नाँहिं सकौ। परी लोक माँहि सिगरी परी तौ अपुनें घरन में घुसि गईं, परि वो कहाँ जावै। ऐसेई घूमतौ-घामतौ राजकुमार एक फटिक निर्मित महल के विसाल फाटक पै पौंहचि गयौ। रतनन की जगमगाहट सौं फाटक इन्द्रधनुष कूँ मात दै रह्यौ हौ, फसील कौ तौ कहिवौ ही कहा। नीलम की बनी भयी ही। पहलैं तौ वो आँख फारिकैं देखतौ रह्यौ फिरि हुसियारी सौं भीतर झाँकि मारी तौ कोऊ न लखि पर्यौ। जैसेंई वानैं आगैं कदम बढ़ायौ तैसई जानैं कहाँसौं धमकि कैं दरवानन नैं धरि लयौ। वो हक्का-बक्का सोचै कि जे आकास सौं टपके या फिरि धरती फारि कैं उग आए। सवालन कौ दूह कौ दूह विननैं वाके सौंह फैलाय दियौ-'को हौ, कितते आयौ, कैसन आयौ, चौं आयौ, को लायौ, काहू आन लोक के हौ आदि-आदि। परि वानैं निखालिस चुप्पी साध लई। भींत कौरे बौलैं पै वो नाँय बोलै। वानैं अनुमान लगायौ कि अब वे परी रानी के साँमुहिं वाय पेस करिंगे।

ऐसौई भयौ। वू पकरि कैं रानी के हजूर में लै जायौ गयौ। परी रानी नैं दूरई सौं कौतिग भरी निगाह डारिकैं जे मानव नवयुवक देखौ-सौम्य, सुन्दर अरु मनमोहक। परी लोक के वैभव की चकाचौंध वाके चखुन में झलकै ही, भुरायौ भयौ मन अपुनी उजराई अलग सौं वाके म्हों पै झिलमिल झिलमिल झलकाय रह्यौ हौ, इतै राजकुमार की छवि कौ जादू वाके सिर पै बोलौ उतै वोऊ राजकुमार कूँ अभिमन्त्रित करतौ भयौ सौ बोली-

'जे ऐसौ लोक है जहाँ मानव, अपुने पगन सौं नाँय पहौंचि सकै। काऊ मानुष की हिम्मत इहाँ आइवे की नाँहिं होइ। तुम इहाँ पहौंचे एहिसौं प्रगट भयौ कि तिहारे पुन्यन कौ प्रभाउ प्रबल है, कहौ, चौं आए हौ। 'राजकुमार नैं अपनौ मकसद लाग-लपेट बिना बताय दियौ तौ वो फिरि बोली-

सौन चिरैया हमारे परीलोक कौ खास पंछी है। मर्त्यलोक मैं वाकी वंसबेलि नाँहिं बढ़ि सकै। तुम पिता के भक्त हौ तिसपै मुनिऊ की किरपा तुमपै हते, *यासौं तुम मेरेऊ नेह-भाजन हौ। तुम्हारी याचना पूरीऊ करूँगी।* परि समुझि लेउ, सौन चिरैया दाना-दुनकौ नाँय चुगै, हंस की तरियाँ सच्चे मोती चुगै है। पानी नाँहि पीवै सोमरस कौ पान करै है। करि लेउगे इत्तौ इन्तजाम? राजकुमार नैं हामी भरी तौ वानैं फिरि कही कि एक औरऊ सर्त है-'जे कि तिहारे पिताकैं, जीवनकाल लौंई जे मर्त्यलोक में रहैगी विनकी आयु की समाप्ति के साथई पुनि इहाँ उड़ि आवैगी।' राजकुमार नैं जेऊ सर्त कबूल करि लई अरु सौन चिरैया लैकैं जैसे परी लोक गयौ हौ तैसेंई लौटि आयौ। प्रसन्नता वाके रोम-रोम सौं फूटी परै ही।

सौन चिरैया लैकैं राजकुमार मुनि के पास आयौ। मुनि बोले-'तिहारौ काम तौ बनि गयौ पर वा परी कौ तौ सब कछु बिगरि गयौ है जाके पंख तुमनैं उठाए हे। वो रोती कलपती भयी इहाँ आई ही। मैंनें बाकौं धीरज बँधायौ अरु बताय कि मेरे पास आजु एक सज्जन आइवे वारे हैं, बड़े गुनी हैं, तेरे पंख खोजिवे की कोऊ जुगति जरूर निकालि लैंहैं। तुम इन पंखन नैं कहूँ छिपाय देऔ अरु संझा में जब वो आवै तौ खोजिवे कौ अभिनय *करिकैं निकारि कैं दै दइयौ।'*

संझा में परी आई तौ राजकुमार नैं जेई कियौ, परी समुझी कि साँचई वानैं वाके पंख खोजि निकारे। बड़ी प्रसन्न भयी। नाँहि समुझि सकी कै जे तौ 'मियाँ की जूती मियाँ के सिर' बारी बात है गई या फिरि 'जिसकौ नेजा विसके द्वार' वारी। वानैं कृतग्यता मानी अरु राजकुमार कूँ एक बाँसुरी दैकैं बोली कि आजु सौं हौं तिहारी पक्की मित्र भई। जब कबहूँ मदद की जरूरति परै, आधी रात पैं याहि बजा दइयौ, मैं चली आऊँगी, परि बजइयौ ठीक आधी रात गएँ। राजकुमार नैं खुसी-खुसी ऊ उपहार लै लियौ। *भगवान जब देइ तौ छप्पर फारिकैं देइ।*

महात्मा सौं विदा की वेर विनके चरन छूकैं राजकुमार नैं याचना करी कि 'महाराज! आप मेरी मनोकामना पूरिबे बारे साच्छात् भगवान सिद्ध भये, आप की प्रार्थना-स्तुति करि सकूँ जे जोग्यता मोमैं नाँय। परि एक और लोभ नैं मन में जनम लै लियौ है। मेरे भैय्यन कौ हू कछु अतौ-पतौ अपुने जोगबल सौं बता देऔ तौ सकल कामनान की पूर्ति है जाय। वेऊ सौन चिरैया की तलास में निकसे हते। मेरौ विस्वास है कि बिनकें संग कछुक अनहौनी है गई है। मैं विनकी कैसें हू मदद करि सकूँ, महाराज! जे आसीर्वाद और दै सकौ तौ उद्धार ह्वै जाइ।

महात्मा के म्हों पै मुसकान की हलकी रेखा उभरीं अरु इत्तौई बोले कि 'बच्चा! तुम सही पथ पै जाइ रहे हौ, तुमकूँ कब कहा करिबौ है जे आपुही आपु अवसर परैं फुरित है जाइगौ। अब और कछू मत पूछौ अरु

अपुनी वापसी-जात्रा कौ सुभारंभ करौ। जि कहिकैं मुनि पुनि नैंन बन्द करिकैं समाधि खेंचि गए। राजकुमार नैं ऊ अपुनौ रस्ता पकर्यौ अरु सौन चिंरैया लैकें चलि दियौ।

जैसो कै विधि कौ विधान हतौ, वानैं अपुनौ जाइवे वारौ मारग छाँड़िकैं लौटिवे में दूसरौ पथ अपनायौ अरु चलतौ-चलतौ वाई सराय में संझा की विरियाँ जाय पौंहुचौ जहाँ वाके भैया दासता करिकैं मालिक कौ पैसा उतारि रहे हे। विनकी हालति देखिकैं अरु गाथा सुनिकै बड़ौ दुखी भयौ। राति मेंई सराय बारे कौ हिसाब करिकैं बिन कौं मुक्त करायौ, सौन चिंरैया मिलिवे कौ खुसी-खुसी किस्सौ सुनायौ अरु सकारें ई चलिवे कौ मन बनाइ कैं सिगरे भाई सोय गए। छुटकन कूँ तौ तुरन्त नींद आइ गई, परि दोनूँ बड़े भैय्यान के मन में पाप आइ गयौ। तासौं सोय नाँहि पाए अरु गुपचुप सलाह करिबे लगे।

'याके तौ भाग खुलि गए, सौन चिंरैया हाथ कहा लगी आधौ राज मिलि गयौ। बड़े हौंते हू हम देखत रहि जाइंगे। अभागे जु ठहरें, हमनैं तौ दुखई दुख झेलौ अरु याकी मौजई मौज है गई। तिसपै जे और विडम्बना है जाइगी कि जे राजधानी में हमारी दासताऊ कौ बखान करि सकै है। केती हेठी होइगी। समुझि नाहिँ परै का करैं।' बड़े नैं मझले कौ मन परखिवे कूँ कह्यौ।

मँझले नैं कही-'भैय्या। तिहारी चिन्ता उचितई है। हमारी तौ इज्जतई धूरि में मिलि जाइगी। याकौ म्हौं बन्द करिबे कौ कोऊ उपाय होय सकै है का? नाँय तौ हमारौ मरिबौई भलौ।'

जेठे कूँ मँझले के मन कौ सुराग मिल गयौ। अब वानैं खुलि कैं कही कि , मरैं हमारे दुस्मन। हम याकूँई ठिकानैं लगाइ दिंगे अरु सौन चिंरैयाय हथियाइ कैं जा कहिंगे कै हम लाए हैं। आधौ राज जो मिलैगौ बराबरि-बराबरि बाँटि लिंगे। एक पंथ दो काज। न रहैगौ बाँसु न बजैगी बाँसुरी। साँपहू मरि गयौ, लाठीऊ नाँय टूटी। जि दुर्मतौ उपाइकैं जे दोऊ सोय गये अरु जैसौ कि तै भयौ हौ, पौ फटिबे ते पहलैं ई घर जाइबे कौं निकसि गये।

राह चलतैं दुपहरिया है गई तौ एक जगह घनी छाँय वारे वृच्छन कौ झुरमुट अरु कुँआ देखिकैं सुस्ताइवे अरु खाइवे-पीवे कूँ रुके। बड़ेन नैं तौ गद्दारी करिबे की सोचई राखी ही। वा योजना कौ पूरिबे कौ वानग बनाइवौ विनकौ असली मतलब हौ। जेठेनैं गडुआ-डोर उठाए और पानी लाइवे कूँ कुआ की ओर चलौ, तबई छुटकने नैं लपकिकैं बाके हाथ सौं लै लये अरु कही कि 'बड़े भैयान की सेवा करिबौ मेरौ फर्ज है। मेरे रहतैं तुमकूँ पानी-फानी कौ काम नाँहि करनौ है। मोकूँ हुकम करौ, ऐसे सिगरे कामन की मेरी जुम्मेदारी।' जि कहिकैं बू कुआँ पै जाइ चढ्यौ। ज्योंई वानैं गडुआ डुबका कैं अरु झुकि कैं खींचिवौ चाहौ जेठे अरु मँझलेनैं कुँआ में धकियाइ दियौ अरु सौन चिंरैया कूँ अपुने कब्जे में करिकैं तुरन्त चलि परे। छुटकने नैं भौतेरी चीख-पुकार करी अपुने बचाइबे की, पै उहाँ को सुनैऔ।

वाकौ सौभाग्य हौ कि परी की दई बाँसुरिया वाके पटका में अबहू खौंसी भयी ही। परि, वाकौ उपयोग आधी रात ते पहलैं करिवे कौ कोऊ मतलब नाँय हतौ। तब लौं काऊ विध बाकूँ स्वयं कूँ अपुने आपकूँ बचानौ हौ। जि बात अच्छी हती कि कुँआ जादा चौरौ नाहिँ हतौ। सो राजकुमार नैं दोऊ ओर टाँग फैलाइ कै अड़ाइ दई अरु आधी राति लौं ऐसैंई खड़ौ रह्यौ-जाको राखै साइयाँ मारि सकै ना कोय। बाल ना बाँका है सकै जो जग वैरी होय।

आधी राति भयी तौ बानैं फरकि कैं बाँसुरिया बजाई अरु पलक झपकतेई वू परी झमकि कैं आइ ठाड़ी भयी। राजकुमार की जान में जान आयी। परीऊ हैरान कै जे कुआ में कैसैं आइ पर्‌यौ। राजकुमार नैं सिगरी विथा-कथा कहि सुनाई अरु जल्दी ई राजभवन पहौंचाइवै की कही। परी नैं परिहास कियौ-'पंख लगाइ कैं तुमऊ तौ उड़ि सकौऔ। तब चुराइ कैं उड़े तौ परीलोक जाइ पहौंचे। अब मैं उधार दऊँ तौ का अपुने घर लौंऊ नाँय उड़ि सकौ।' राजकुमार कूँ हँसी आइ गई। वानैंऊ परिहास कौ आगैं बढाइकैं कही-'मानसजात कैं पंखन कौ लगिवौ अरु वाकौ उड़िकैं चलिवौ ठीक नाँय। परी लोक की बात तौ कछु औरै हतै।' या तरियाँ हँसी-मजाक करते अरु बतियाते वे राजधानी पहौंचि गए। नगर फाटक पै वाय पहुँचाइ कै परी तौ लौटि गई अरु कुमार राजमहल कूँ चलौ गयौ।

राजानैं कुमार कूँ देखतेई पूछौ-'मिलि गई सौन चिरैया?' ऐसैंई राजकुमार नैं राजा कूँ देखतेई सूचना दई कि सौन चिरैया मिलि गई। सवाल अरु जवाब दुहूँ एक साथ! यानी दुँहुन के उछाह कौ आयाम राई-रत्ती एक। फिरि तौ राजानैं, 'कहाँ मिली, कैसैं मिली, कहाँ है, कैसी है, कैसौ गावै, या तरियाँ के ढेर सारे सवाल उछारि दिये। राजकुमार नैं इतनी ई कही कि भैय्या लाय रहेएं। बाकी सिगरी कहानी तौ मैं उन्हीं के सौंहे कहूँगौ। जे सुनिकैंई राजाकूँ याद आई कै वाके और द्वै पुत्र चिरैया की खोज में गए हे अरु वे काई विपत्ति में परि गए हैं जे ही बाकी सौन चिरैया की लगन!

वे दोनूँ राजकुमार जब आधौराज मिलिबे की संभावना सौं फूले ना समाते सौन चिरैया लैकैं राजा के पास पहौंचे तौ छोटे कुमार कूँ देखिकैं आँखि फटी की फटि रहि गईं। सिट्टी-पिट्टी गुम। काटौ तौ खून नाँय। हाथन के तोता ऐसे उड़े कि सौन चिरैया कौ पिंजराऊ छूटि कैं गिर पर्‌यौ। भगवान सौं मनाय रहेए कि धरती फटिजाइ तौ समाँ जाँइ। खिसकिबौ चाह्‌यौ तौ राजानैं बैठारि लये अरु विनसौंऊ वेई सवाल पूछे। तब छोटौ हुँकारौ 'जे कहा बता सकैं, हौं बताऊँगौ सौनचिरैया की बात अरु इनकी करतूति-दोऊ; जि कहिकैं वानैं सिगरौ किस्सौ कहि सुनायौ। राजा की हालत अजीब। एक पै नेह आवै तो दोन पै रिस। सौन चिरैया के पाबे कौ मजाई किरकिरौ है गयौ। परि न्याव तौ करिबौ हौई। वानैं छोटे कौं तौ आधौ राज दियौ और बड़ेन कौ प्रानदण्ड जो तबई अरु तहँई छोटे की सिपारिस पै देसनिकारौ करि दियौ गयौ।

जुगन सौं जि कहानी सुनते आवै हैं कि ता पाछैं दोऊ बाप-बेटा भौत दिनान लौं राज करत रहे। बाप चिरैयान कौ गानौ सुनतौ अरु बेहतर बेटा राज करतौ अरु जेऊ कि राजा के अन्तकाल के पाछैं सौन चिरैया परी लोक कूँई उड़ि गयी अरु तबसौं धरती पै कहानीन मैंई रहि गयी है।

-सिद्धार्थ सदन, राम मन्दिर मार्ग,
सिविल लाइन्स, अलीगढ़ (उ.प्र.)

बुँदेलौ राजा भातई

-श्रीमती सुमनांजलि चतुर्वेदी

''वहन चली ऐ वीर कैं और भले-भले सगुन विचार

भात जो नौतूँ अपने वीर कैं।''

कुंजो भैन भात नौतवे चली। वागन में पौंहँची तौ हरे वाग सूख गये। तलाबन पै पौंहँची तौ भरे तलाव सूख गये। गाँम की सीमा पै पौंहँची तौ हरी दूव सूख गयी। अपसगुन पै अपसगुन है रहे हैं। फिर ऊ कुंजो भैन चली चली जाय रही है। ''भेलीन वरध लदाय, भात जो नौतूँ अपने वीर कैं। ''

दौरानी-जिठानी तानों न मारतीं तौ कुंजो भैन ओरछा में पाँम न धरती। कुंजो के लियें तौ ओरछा वाई दिना सूनौ है गयौ हौ, जा दिना वड़े भैया जुझार नैं छोटे भैया हरदौल कूँ खीर पूरी में संखिया दिवायौ हौ।

रानी चम्पा नें कितनौ समझायौ-राजा, गंगा उठवाय लै। मेरौ चोला खिंचवाय लै। वेकसूर भैया कूँ मत मरवावै। मैं मर जाऊँगी तौ तोकूँ दूसरी रानी आय जायगी। फिर हरदौल सौ भैया तोकूँ कहाँ मिलैगौ?

हरदौल लछमन सौ देवर हौ। रानी चम्पा सीता सी भाभी ही। हरदौल नैं हमेसा भाभी कूँ मइया के रूप में देखी। और रानी चम्पा नैं देवर कूँ वेटा की तरियाँ मानौ। वेटा की तरियाँ लाड़ कियौ। या लाड़ कूँ देखते तौ दरवारीन के मन में विलैया लोटती। मौकौ पाय कैं काऊ दरवारी नैं राजा के कान भर दीने। और, राजा के मन में संदेह पैदा है गयौ।

रानी के सत की परीक्षा और राजा कौ हुकम। अखीर में रानी नैं देवर कूँ नौतौ भिजवायौ। और

'विस में ई सेकीं पूरी और विस में ई राँधी रस की खीर, राजा भातई रे।'

हरदौल जैंमे आयौ और भाभी की आँखिन में गंगा-जमना वहि चलीं। हरदौल नैं समझ लीनी कै खीर-पूरी में संखिया है। वानें मन में तौल कें देखौ। एक लँग अपनी जिन्दगी और दूसरी लँग भाभी कौ धरम। भाभी नैं रोय-रोय कैं परोसी और देवर नैं हँस-हँस कें खाय लीयौ। हरदौल नैं मर कैं देवर भाभी के प्रेम कूँ अमर कर दीनौ।

हरदौल के मरबे की खबर, जानैं सुनी वो बिलख उठौ। महलन में मुर्दनी छाय गयी। ओरछा और दतिया में हाहाकार मच गयौ। राजा बड़ौ अन्याई है, राजा बड़ौ कसाई है। भैन कुंजो पै खबर पौंहँचो तौ डकराती भयी आई और कोसती भयी चली गयी-हत्यारे तेरी देहरी पै पाँम नाँय धरूँगी।

बेटी कौ ब्याह। सासरे वारेन नैं भात नौंतबे की बात जानी। कुंजो के मन की बिथा न जानी। कुंजो भैन कूँ ओरछा जानौ परो।

कुंजो महलन के दरबज्जे पै पौंहँची तौ कुत्ता भूँस उठे। आँगन में पौंहँची तौ राजा जुझार मिलौ। राजा बोलौ-कुंजो, तेरी माँ कौ जायौ तौ हरदौल हो। वू तौ मर गयौ। महुआ के पेड़ पै प्रेत बनौ बैठौ है। बाई कूँ नौंतबे जा।

कुंजो नैं सुनी तौ करेजे के कौर-कौर है गये। कुंजो भैन भुआ जाए बीर कैं गयी। ताई जाए बीर कैं गयी। सबन्नैं एक ही ज्वाब दीनौं-हम तौ री अपनी के बीर हैं तू अपनी मैया कौ जायौ ढूँढ़ लै।

कुंजो मरघटन पै पौंहँची। छाती फारकैं महुआ के पेड ते लिपट गयी-ओ भैया हरदौल। जो तुम यहां बैठे होउ तौ अपनी भैन कौं बोल सुनाय देउ।

''भैया जो कहुँ हौ तुम बैठियो तौ भैना ए बोल सुनाउ,

भैया उतर बिरछ तें आइयो।''

''जीवतेन पै पथरा परे रे मरेन पै माँग्यौ ए भात,

राजा भातई रे। ''

भैया हरदौल महुआ के पेड़ पैते उतरकैं आयौ। बोल्यौ-भैना, तू ताई जाए भैया कैं जा। भूआ जाए बीर कैं जा। कुंजो रोयी- भैया, बिनैं तौ मैं उलटी बगदाय दीनी।

हरदौल बोल्यौ-भैना कब कौ री तेरें माँड़यौ और कब कौ छिक्यौ ऐ ब्याउ, राजा भातई रे।

कुंजो नैं ज्वाब दियौ- परवा दौज कौ रे माडयौ और तीज छिक्यौ है ब्याह, राजा भातई रे।

प्रेत भैया नैं बचन दीनौं-

'जाउ बहन घर आपने री और हम पहरायंगे भात, राजा भातई रे।

एक बचन हम माँगिहैं री महुआ पटा न चौकें डारं, राजा भातई रे।'

कुंजो दिलासा लैकैं सासरें बगदि आई।

इतकूँ हरदौल नैं ओरछा के नगरसेठ कूँ सपनौं दियौ कै मेरी भांजी कौ ब्याह है, सो भात कौ इन्तजाम कर।

दिना बीते और मांड़ये कौ अवसर आयौ। आँगन में जनी गीत गामन लगीं-

'बीरा मेरे लैओगी ढोल बजाय सोहिर

जो जग जानें मेरौ भातई।'

आँधी आई। मेह आयौ। ता पीछें बीरन आये, चार पहर बरसा भयी। हरदौल की आत्मा प्रकट भयी। बकुचा खुले। राजा हरदौल नैं सिगरे कुटुम परिवार कूँ कपड़ा पहराये। रुपैया बिखेरे। मेवा बिखेरीं और फूल बिखेरे।

कुंजो भैन नैं समझाय कैं कह दीनी ई कि चौक पै महुआ कौ पटा मत बिछइयो। फिर दौरानी-जिठानी नैं चिढ़ कैं नाऊ कौं इसारौ कर दीनौ, सो-

'नाऊ कौ छरतीसिया रे महुआ पटा बिछाइ, राजा भातई।'

जब सबनें भात पहर लीनौं। तब कुंजो भैन भैया ते मिलबे कूँ बढ़ी। जैसैंई बाँह पसारी तैसैंई भैया हरदौल महुआ के पटा में समाय गयौ-

'सरपट भये एं अलोप राजा भातई रे

एक अंदेसौ मेरे मन रह्यौ रे मिलती रे

जियरा हिलोर, राजा भातई रे।'

-269/3, इन्सार महाजन, पानीपत

मनुष्य की कथा-प्रवृत्ति कूँ, साँचमाँच, आजु नये क्षेत्र अरु क्षितिज मिलि गये हैं। और, फिर वुही अचंभे अरु आनंद कौ अनन्त रस-स्रोत खुलि गयौ है। याही सौं आधुनिकता की चमचमाहट के बीच कहानी जीवित है।

आज हू!

आज हू! कहानी जीवित है, चौंकि आदमी जीवित है।

-डॉ. हरद्वारी लाल शर्मा
(लोकवार्ता-विज्ञान खण्ड एक , पृष्ठ-384)

द्वै रोचक लोककथा

-श्रीमती मालती शर्मा

सुनि मेरी गुड़िया, सुनि मेरे गुड्डा....

एक नगर में दो बहिन हीं। बे दोऊ पंडित के जौरें पढ़िबे जाऔ करें ही। पंडित बड़ी बहिन ते तौ कैंहतौ- "आ भागमान जा भागमान।" छोटी ते कैंहतौ-"आ कम्बखत बैठि कम्बखत"।

छोटी छोरी ए जि बात बुरी लगै ही। कछू दिना वानैं सुनी फिर चिढ़िकैं बू पढ़िबे नहीं गई। पिता जी नैं न जाइबे कौ कारन पूछ्यौ बानैं सब बात बताइ दई।

दूसरे दिना पिताजी संग आए और पंडित ते पूछी- "आप जा छोरी ते ऐसें च्यों कहौ हौ ? "

पंडित नैं कही- "मैं ठीकई कहूँ, जे है ई कम्बखत जाके भाग में मुर्दौ लिख्यौ है, जाकी सादी एक मुर्दे ते होइगी।" राजा नैं कही-"ऐसैं कैसैं हम मुर्दे ते ब्याह दिंगे?" पंडित बोल्यौ-"तुम चाहै कछू करि लीजौ जाकूँ घर बरु मिलैगौई नाँय, मुर्दौ ई मिलैगौ।"

भयौ ऐसौई। बड़ी छोरी की सादी खूब अच्छे घर में है गई। बू अपने घर बार की भई। परि छोटी कूँ कहूँ घर बरु मिलौ ई नहीं। राजा ढूँढ़त-ढूँढ़त देखत-भारत भौतुई परेसान है गयौ।

तब एक दिना राजा जंगल में शिकार खेलिबे चल्यौ। बू छोरी बाके संग लग लई। अब राजा तौ जंगल में सिकार खेलिबे में सिकार के पीछैं भागिबे में लगि गयौ, जि छोरी जंगल में भटकि गई। भूखी-प्यासी भटकती-भटकती बाई जंगल में एक मढ़ी पै पहुँची। एक बाबा वहाँ बैठ्यौ हो। छोरी नैं कही-"बाबा मोय पानी प्याऔ, बहुत प्यासी हूँ।" बाबा बोल्यौ-"बच्चा! तू यहाँ कैसैं?" छोरी नैं सब बात बताई। बाबा नैं बाय पानी प्यायौ और सात कोठरीन की तारी दैकें बोल्यौ-"बच्चा! सब चीज हैं, बनाइ खालै। "

छोरी नैं कोठरी खोलीं तौ काऊ में कछू काऊ में कछू ऐसैं करिकैं वाय गेंहूँ, चामर, सक्कर, दारि , घी, तेल, गेंहनौं, कपड़ा, पलंग, पीढ़ा सब कछू मिल्यौ। सातवीं कोठरी जब खोली तौ या कोठरी में एक राजा कौ कुमर सोय रह्यौ हो। वाके ऊपर दूब उगी भई ही ।

छोरी नैं मन में कही, "जिही मेरौ भाग है, सो मोइ मिलि गयौ।"

अब वू रोज वा जमी दूबऐ उखार्यौ करै, माखी बिडार्यौ करै। ऐसें करते भये बाइ बहुत महीना है गए। सबरी दूब उखरि गई। नैंक दूब माथे के जौरें रहि गई कै एक कंजरिया भीख माँगिबे आई। बोली ''भीख डारि दै।''

छोरी बोली, ''मैं तौ यहाँ ते उठी नाऊँ, न खान-पान न नहान तू जौ इतनी दूब उखारै तौ मैं नैंक नहाइ आऊँ। तब तोय भीख दुंगी।''छोरी नहाइबे कौं चली गई। कंजरिया नैं द्वै चारि ई दूब उखारी कै वू राजा कौ कुमर काऔ ''हरे-हरे'' करिकें उठि बैठौ।

छोरी नहाइकैं आई। देखिकैं बड़ी दुखी भई-''अरे भगमान जि कहा भई? मैंनें इतने दिना सेवा करी तब कछू न भयौ, नैंक नहाइबे गई कि जि उठि पर्यौ।''

सबु देखि भारि कैं सोच समझिकैं वू भीख डारिबौ तौ भूलि गई चुपचापु घर के काम करबे लगी। कंजरिया है गई रानी, बू है गई बाँदी। अब वू कामकाज तौ सब करै परि बड़ी दुखी रह्यौ करै। राजा कौ कुमरु सब देखतौ। वानें रानी ते कही कै रानी! कहा बात है जि बाँदी बड़ी दुखी सी रहै। पूछौ तौ सही जाते कहा बात है? अब वृ तौ सबरौ हाल जानै ही, बोली ''ऐसौई सुभाव है याकौ।''

एक दिना राजा बजार जाइ रहे। बिन्नैं बाँदी ते पूछी-''बाँदी हम बजार जाइ रहे हैं कछू मँगामनौ होय तौ बताऔ? तुम्हारे ताँईं कहा लै आवें?''

बाँदी बड़ी लम्बी उसाँस भरिकैं बोली, ''कहा मँगाऊँ? कहा लाऔगे? नाँय, मोय कछू नाँय चहिये।''

राजा बोल्यौ, ''अरे तुम बताऔ तौ सही, वू ही लै आमिंगे।'' बाँदी कछू सोचिकैं बोली ''नाँय मानौ तौ मेरे ताँईं एक झुनझुन गुड़िया और गुड्डा लै अइयौं।''

राजा नैं वाय गुड्डा-गुड़िया लाय दिये। अब वू बाँदी जब चरखा कात्यौ करै ही कै कछू बीनिबे चुनिबे कौ काम करै ही तौ गुड्डा-गुड़िया कूँ जौरें धरि लैंती अरु गायौ करै ही-

''सुनि मेरी गुड़िया सुनि मेरे गुड्डा,

सुनौ हमारौ दुक्ख।

बारै महीना मुर्दा सेयौ,

तौऊ न पायौ सुक्ख।''

राजा जि सुन्यौ करै हौ। वाय बाँदी कौ जि गीत सुन सुनिकैं बड़ी बेचैनी सी हैबे लगी। वानें रानी ते कही रानी! नैंक पूछौ तौ सही जे बाँदी कहा गायौ करै है? कहा मतलब है जाकौ?''

रानी नैं''पूछूँगी पूछूँगी''कहिकैं बात टालमटूल करि दई। राजा नैं बाते फिरि कही तौ वू गुस्सा हैकैं बोली-

''तुमई पूछि लेउ न, कहा कह्यौ करै है।''

राजा नैं पूछी, ''बाँदी! चरखा कातती भई जि तुम कहा गायौ करौ हौ? कहा मतलब है जाकौ?''

बाँदी बोली, "कछू नाँय ऐसें ई अपने पेट की बात [illegible]?"

राजा हठ परि गयौ, बोल्यौ, "तुमें बतानौई परैगौ।"

राजा नें जब बेर-बेर पूछी तब बाने सबरौ किस्सा बतायौ, "ऐसें ऐसें मैं राजा की बेटी हूँ। [illegible] बिछुरिकैं जंगल में भटकती भई मैं यहाँ मढ़ी में आई। बाबाजी नें मोइ [illegible] दई। [illegible] खोलीं। घर की साफ सफाई करी, तुम पै जमी भई दूब उखारी, [illegible], मैं नहाइबे गई, कै इतने में तुम जी उठे।"

सबरी बात सुनिकैं राजा नें वाय मैहलन की पटरानी बनायौ। यु [illegible]। [illegible] पंडित की कही बात साँची है गई।

ओ रे भइया ! पाँचौं अम्मा के........

एक राजा कैं सात रानी हीं। छै रानिन कैं तौ संतान होनी नाहीं, एक कैं होनी। [illegible] वाके बच्चा हौंतो तौ वाकी आँखिन पै [illegible] कहा भयौहै जे ईंट, पत्थर भये हैं। [illegible]।

ऐसें ही वाकें पाँच बच्चा भये, एक [illegible] दिये।

सातवीं रानी नैं फूल तोरे तौ झट्ट चार्यौ भइया पाँचवीं भैनि, मइया की गोद में आइकैं बैठि गए।

जे चमत्कार देखिकैं सब जने अचरज में रहि गए। भौंत खुसीऊ भई कै राजा कूँ पाँच संतान मिलि गईं। राजा बच्चान कूँ नहवाय धुवायकैं, बाजे गाजे ते, धूम धड़ाके ते मैहलन में लायौ। खूब खुसी मनाई। रोसनी भई। नौंकर-चाकरन कूँ इनाम बाँटे।

बिन छैऔं हत्यारी रानीन कूँ फाँसी दई गई, छैऔं मरि गईं। सातवीं रानी औंर राजा मैहलन में राजपाट करते आनंद ते रहिबे लगे।

-25/2, "पाखर",
बम्बई पूना मार्ग, पूना (महाराष्ट्र)-411003

चमत्कार अरु लोकोत्तरता इन पुरा-कथान के सशक्त तत्व हैं, चौंकै लोक-मानस अपनी सीमान कूँ पार करिबे के काजैं उत्सुक होइ है, जो 'साधारण', 'लौकिक' में बाकूँ संभव नाँय।

-डॉ. हरद्वारीलाल शर्मा

(लोकवार्ता-विज्ञान, खण्ड एक, पृष्ठ 470)

बहू होइ तौ ऐसी होइ

श्री गोपालप्रसाद मुद्गल

हरभेजी भरे पूरे परिवार की बेटी ही। मैया-बाप भले हे। बिनकौ रहन-सहन सादा हौ। तौर-तरीका अच्छे हे। बड़े लोग कहौ करैं, जिनके तौर-तरीका अच्छे होंय, बिनके घर के छोरा-छोरी अच्छे होंय। मैया-बाप कौ हरभेजी पै पूरौ असर परौ। अपने मैया-बाप कूँ बडे बूढ़ेन की सेवा करती देखती। बिनके खावे-पीवे कौ ध्यान रखती देखती। जैसौ कछू देखै ही बैसौ ही सीख रही। मैया-बाप के गुन अपने आप हरभेजी में आते चले गए।

समय निकसतौ गयौ। हरभेजी सयानी भई। बाकौ बाप वर दूँढ़वे निकसौ। चोखौ वर मिलतौ तौ घर नाँय मिल पातौ। घर मिलतौ तो वर नाँय मिल पातौ। काफी दौड-धूप करी। एड़ी चोटी कौ पसीना एक कर दियौ। तब कहूँ जायकैं हरभेजी के अनुरूप घर वर मिल पाए। हरभेजी के मैया-बाप अमीर तौ हत नाएं। गुजरान करै हे। जैसैं तैसैं गाडी चल रही। बिन्नैं ल्लै दैकैं हरभेजी के हाथ पीरे कर दिए।

हरभेजी के बिदा के समय वही भयौ जो छोरी की बिदाई पै होय। घर वारे हिलकी भर-भर कैं रोए। सगे-सम्बन्धी पास-पड़ौस सबन की आँखन मे आँसू भर आए। हरभेजी की मैया नैं अपनी फरिया के कौने में सब आँसू बाँधकैं रोमते-रोमते इतेक कही "बेटी एक बात कौ ध्यान रखियौ, घर कौ नाम रोटी करै कै बेटी"

हरभेजी 'अरी मैया, अरी मैया' करती भई अपने सासरे कूँ बिदा भई। सासरे में सास नैं सौन-सगुन विचार कैं हरभेजी घर में लई। सब नेग जोग भए। सास कौ, ससुर कौ खूब प्यार मिलौ। दो-चार दिना पीछैं हरभेजी पीहर बुला लई। कछू दिना पीछैं फिर बू सासरे चली गई। धीरैं-धीरैं बू सासरे की है गई। सासरे में रम गई। सासरौ बाकूँ नयौ नहीं रह्यौ।

सासरे में बाकी सास कम्पूरी ही। बाकी दादी सास कौ नाम हौ भूरी। भूरी दादी अस्सी के आस-पास होगी। बाकी एक आँख बनी। बड़ी आसरतू सी रहै ही। एक-एक घूँट पानी कूँ तरसै ही। खाट पै बैठी-बैठी पानी कूँ हल्ला मचाती रहै ही। हरभेजी कूँ पायकैं भूरी नैं चैन की साँस लई। भूरी अवाज देती तौ हरभेजी दौड़ कैं जाती। पानी पिवाती। पेसाव कराती। जो भूरी दादी कहती बू सब कछू करती। भूरी कूँ हरभेजी कौ बड़ौ सहारौ मिल गयौ। हरभेजी दो टहोका कर दैंती तौ भूरी ढेरन आसीस दैंती। हरभेजी फूली ना समाती। रोम-रोम खिल जातौ। यों भूरी कूँ हरभेजी कौ घर में आइबौ बरदान सिद्ध भयौ।

हरभेजी कूँ घर में सब कछू अच्छौ लगतौ पर एक बात बड़ी पीड़ा पहुँचावै ही। हरभेजी की सास कम्पूरी, भूरी दादी कूँ हमेसा बात-बात पै झिड़कती रहै ही। भूरी के बोल कम्पूरी कूँ नैंकऊ नाँय सुहावै हे। वू मोटी-झोटी रोटी दैंती पर झुँझलाती भई दैंती। भोजन हू वू टूटे खीपरान में दैंती।

खानौं बनते ही हरभेजी कूँ अवाज दैंती और खीपरा में रोटी दैकैं कहती, ''जा भूरी कूँ रोटी खवा आ'' हरभेजी चुपचाप सिर झुकाय कैं सास के हुकम कौ पालन करै ही। खीपरा में रोटी देखते ही हरभेजी कौ रोम-रोम रो उठतौ पर बड़ेन की बात काटबे कौ वाकौ सुभाव नाँहौं। वानैं घर में ऐसौ देखौ नाँहौं।

हरभेजी सोचती, भूरी दादी की बदौलत जि घर, घर है। हरभेजी घर की मुखिया हैं। सिरमौर है। घर की सब कछू हैं। हरभेजी नहीं हौंती तौ न तौ कम्पूरी सास हौंती और न घर में कोऊ और हौंतौ। हरभेजी कूँ भूरी दादी की दसा देख कैं पीड़ा हौंती पर सास सौं कहवे में डर लगतौ। लड़ाई-झगड़े कौ डर हौ। वू मन मार कैं रह जावै ही। पर, हमेसा ई सोचती रहती कै कोऊ तरकीब निकासी जाए जासौं भूरी दादी कूँ खीपरा की जगह काँसी की थारी में रोटी दई जाएं। हरभेजी सोचती रही। सोचती रही। वाए एक तरकीब सूझी। वाकी इच्छा ही कै साँप मरै न लाठी टूटै।

हरभेजी नैं एक काम करनौ सुरू करौ। वू भूरी दादी कूँ भोजन कराती और फिर खीपरान कूँ धो-धोय कैं धरती जाती। कम्पूरी की निगाह एक दिना खीपरान की ओर गई। वू बोली, चौं बहू ई का कर रही है। इन खीपरान कूँ चौं धोय धोय कैं धर रही है? घर में चौं दिलद्दर इकट्ठौ कर रही हैं?

हरभेजी धीरैं सौं बोली, ''सासूजी याए दिलद्दर कैसैं बता रही हौ? ये तौ मेरे बड़े काम के हैं।''

कम्पूरी नैं कही, ''ये भला का काम के हैं? ये कौन से सौने के तार हैं?''

''सासूजी मोकूँ तौ ये सौने के तारन ते हू बढ़कैं हैं'' हरभेजी नैं कही।

''सौने के तार सौं बढ़कैं कैसैं हैं? ये दो कौड़ी के हू नाँहैं।'' कम्पूरी कड़क कैं बोली।

''सासूजी तुम्हें पतौ नाँहै ये मेरे बड़े काम के हैं। जब तुम बूढ़ी हुँगी, तब मोकूँ हूँ तौ खीपरान की जरूरत होयगी। ई तौ अच्छी बात है कै तुम्हैं रोजाना नए खीपरा मिल जाएं। पर, मोकूँ नहीं मिले तौ मैं कहाँ सौं लाऊँगी। मैं इनमें ही आराम सौं तुम्हैं दै देऔ करूँगी।''

या बात ए सुनते ही कम्पूरी सन्न रह गई। काटौ तौ खून नहीं। ऐसी सुट्ट खैंच गई मानौं स्यौंप सूँघ गयौ होय। वाकूँ आगामी जीवन की तस्वीर साफ दिखाई परवे लग गई। वा रात कम्पूरी कूँ नींद नहीं आई। खीपरा आँखन के सामई दिखाई दैवे लगे। रात भर कम्पूरी करवट बदलती रही। अपनी करनी पै पछताती रही।

सवेरौ हौंते ही कम्पूरी नैं बढ़िया भोजन बनायौ। काँसी की थारी में भोजन परोसौ। हरभेजी कूँ आवाज दई, बहू लै अपनी दादी सास कूँ भोजन करा आ। हरभेजी चौका में गई। काँसी की थारी में भोजन देखकैं मन ई मन बोली-आज सूरज कैसैं पच्छिम मैं उगौ है।

काँसी की थारी भूरी दादी कूँ दई तौ भूरी दादी हू अचम्भे में आ गई । यानैं पूछी बहू आज मेरे हाथन में काँसी की थारी कैसें है ? बहू नैं अपनी तरकीब बताई तौ सास की आँखन सौं खुशी के आँसू ढरक परे और होठन सौं निकस परौ-

''बहू होइ तौ ऐसी होइ।''

-पांडेय मौहल्ला
डीग (भरतपुर)

सामाजिक परिस्थिति हू लोककथान के विषय बनैं हैं। जहाँ सास इनके माध्यम सौं बहून कूँ खूब फबती सुनामती रही हैं तौ आजु की बहू हू सासून कूँ छकाइबे मे पीछे नाँय रहीं। मनोरंजन के काजैं 'शिक्षा तत्व' अरु 'नीति तत्व' के संग कहानी-तत्व कौ सुन्दर सामंजस्य इनमें देख्यौ जाइ सकै है ।

एक लुहार की

-डॉ. श्याम सुन्दर सुमन

दो लँगोटिया यार हे-एक लुहार, दूजौ सुनार। एक दिना लुहार आयौ सुनार के घर। सुनार नैं लुहार की खूब आवभगत करी। पूरी, पूआ, खीर वनवाए। सौने की थारी में परोस कैं लुहार के सामीं धर दीये। लुहार बहुत खुस भयौ। सवते ज्यादा खुसी वाकूँ सौने की थारी देख कैं भई। वाकी नीयत में फरक आय गयौ। वू सोचवे लगौ कै जव मेरौ यार सुनार सोय जाइगौ, तौ मैं जा सौने की थारी कूँ चुराय कें लै जाउँगौ।

सुनार हू जा वात कूँ समझ गयौ और वू सौने की थारी कूँ वचाइवे की सोचवे लगौ।

रात कूँ लुहार के उढ़ैया-विछैया वाहर-आँगन में विछाय दिए गए।

सुनार नैं अपनी खाट के ऊपर, सौने की थारी पानी भरिकैं छींके पै लटकाय दई और सोचवे लगौ कै लुहार थारी कूँ उतारैगौ तौ थारी में भरौ पानी मेरे ऊपर गिरैगौ और मैं जग जाऊँगौ। जि विचारते-विचारते सुनार सोय गयौ।

आधी रात कूँ लुहार उठौ और वानैं ढूँढ़ा खखोरी सुरू कर दई। तवई वाकी नजर छींके पै धरी भई पानी भरी सौने की थारी पै जाय पहुँची। वू सुनार की चालाकी जान गयौ। वू कुरता उतार कैं धीरें-धीरें थारी में धरवे लगौ। जव कुरता नैं सिगरौ पानी सोख लियौ तौ सौने की थारी कूँ उतार कैं वन की ओर भाज लियौ और एक पोखर में थारी दाव कैं फिर अपनी खाट पै आय सोयौ।

धौंताय जव सुनार जगौ, तौ छींके पै थारी न देखकैं वू जान गयौ कै लुहार थारी कूँ चुराय कैं कहूँ धर आयौ है। वानैं लुहार माँऊ देखौ तौ वू अपनी खाट पै सोमतौ पायौ। पर लुहार के पाँयन में घोंटून तानूँ पोखर की माँटी चिपकी देख कैं वू जान गयौ कै लुहार थारी कूँ घने पानी की माँटी में दाव आयौ है।

सुनार पोखर में जायकैं सौने की थारी कूँ निकार लायौ और माँज-धोय कैं वानैं वू धर दई।

धौंताय जव लुहार सोय कैं उठौ तौ दाँतुन कुल्ला करकैं, नहाय धोयकैं सुनार के चौका में आय कैं वैठ गयौ।

सुनार नैं वाई सौने की थारी में घ्यौ-वूरौ और पूरी-पूआ परोस कैं लुहार के साँमई धर दिए।

लुहार बोल्यौ 'यार तेरे घर सौने की थारी कितेक हैं?' सुनार बोल्यौ, "जा थारी में तैनें रात कूँ भोजन करौ हौ, बुई तौ जे थारी है।"

जि सुनकैं लुहार की समझ मे सब आय गयौ कै सुनार पोखर में ते थारी निकार लायौ है। बू मन में कहबे लगौ, "कबहू तौ मुरगी टीले पै आवैगी ही। सौ सुनार कौ,तौ एक लुहार कौ हू होय है" और बू घ्यौ-बूरौ खाइबे लगौ।

धौपर कूँ लुहार नैं सुनार ते कही दौनौं यार मिलकैं सुनरख गाम मे चलैं और धन्धौ कर लामैं। सुनार नैं पूछी कै साफ-साफ बता जि सुनरख गाम है तौ बिन्दावन के ढिंग ई ना, जामें किसन कौ सखा मनसुखा वास करतौ हौ? लुहार हामी भर कैं कहबे लगौ, "हम्बै बुई है, पर वा गाम मे एक ठाकुर मर गयौ है। कल्ल बाकौ कारज है। तोय तौ मैं मरघट में गाढ़ जाऊँगौ और मैं महाजन बनकैं कारज में जाऊँगो और कहुंगौ कै ठाकुर पै मेरे दस हजार रुपैया हते, सो दै देउ और मेरी बात पै भरोसौ नाँय होय तौ मरघट मे चलौ, मरे भये ठाकुर की आतमा कह देय कै बू मेरौ करजदार है तौ मेरे रुपैया मोय दै दीजौ। जब गाम बारे मरघट में आयकैं पूछैं तौ तू ठाकुर की आतमा बन कैं बोल परियौ कै मैंनें दस हजार रुपैया महाजन ते उधार लीने हे। फिर रुपैया मिलबे के पीछैं आधे तेरे और आधे मेरे।"

सुनार राजी है गयौ। लुहार नैं गाम में जाइकैं ऐसैं ई कही। ठाकुर के घर बारे, गाम बारेन समेत मरघट में आये। एक नैं पूछी, "दद्दू का तुम जा महाजन के करजदार हौ?"

मरघट मे दबौ भयौ सुनार बोलौ, "हम्बै। मैंनें जा महाजन ते दस हजार रुपैया लीने हते।"

सुनी तो सिग जने छम्म रह गए। और घर जाइकैं ठाकुर के बेटा नैं लुहार कूँ दस हजार रुपैया गिन दीने, जिन्नैं लैकैं लुहार सीधौ अपने घर जाय पहुँचौ।

सुनार लुहार की चाल समझ गयौ। मुर्दघटा में ते निकरकैं बू हू सीधौ लुहार के घर जाय पहुँचौ।

लुहार नैं लुहारिन कूँ पहलैं ई समुझाय दीनौं हो,सो सुनार कूँ देखकैं वह रोइबे लगी कै तुम्हारौ यार रात कूँ ई सुरग सिधार गयौ है।

सुनार कूँ सब खबर हती कै लुहार, लुहारिन दौनों मिलकैं नाटक कर रहे हैं, सो बू बोलौ, "तौ भाभी, गाम बारे तौ सिग खेत-क्यारन में गये हैं ला यार कूँ मैं ई मुर्दघटा में फूँक आऊँ।"

सो बू लुहार के दोनौ पाँयन में रस्सी बाँध कैं बाकूँ कढ़ेरतौ भयौ मुर्दघटा माऊँ लै चलौ। बानैं बाकूँ इत-बित कूँ खूब कढ़ेरौ। पर लुहार नैंकहु नाँय बकरौ कै दस हजार रुपैया कहाँ हैं। हार कै बानैं लुहार कूँ मुर्दघटा में लायकैं पटक दियौ और खुद रस्सी कूँ पकरकैं एक झारी के पीछैं बैठ गयौ कै भागैगौ तौ रस्सी हलैगी और मैं बाय पकर लूँगौ।

जब रात के बारह बजे तौ चार चोर चुराये भये माल कौ बँटवारौ करबे मुर्दघटा पै आये। बिन में एक बो-

''अब जा माल कौ बटवारौ चारौंन में बराबर-बराबर कर डारौ।''

जि सुनकैं लुहार बोल परौ, ''चारौंन में चौं, मैं पाँचमौं हू तौ मसान बैठौ हूँ।''

जि सुन कैं माल कूँ महीं छोरि कैं चारों चोर भाज गए कै मसान या भूत आय गयौ।

झारी के पीछैं दुबकौ भयौ सुनार हू डर के मारैं थर-थर काँपवे लगौ। बू हू अपने घर भाज गयौ।

अब लुहार नैं रस्सी ते पाँय खोले और सिग माल कूँ लैकैं घर आय गयौ और बोलौ कै सौ सुनार की तौ एक लुहार की हू होय है।

-मुख्य निदेशक, अ.भा. सहित्यकार अभिनन्दन समिति
544, विहारीपुरा, मथुरा (उ.प्र.)

लोककथा के जीवन्त रूपन में द्वै विधा स्पष्ट हैं-एक, वे रूप जो लोकमानस की स्मृति हैं; दो, वे जो व्वाकी, सद्य: सर्जना हैं। लोकोक्ती, मुहावरे, दृष्टान्त आदि न जानें कब ते म्हौं-दर म्हौं-grapevine-विधि ते आज तक चले आई रहे हैं, और इतेक घिसावट के बावजूद आज तानूँ वे खरे टकसाली सिक्का के रूप में चालू हैं। विनकी चमक,चुभन की शक्ति अरु चोट अबहू शेष है, चमत्कार अक्षुण्ण है।

- डॉ. हरद्वारीलाल शर्मा
(लोकवार्ता-विज्ञान खण्ड एक, पृष्ठ 516)

एक मसखरा

-डॉ. [illegible]

एक गाम में एक मसखरा रह्यौ करतौ। नाम तौ वाकौ हो गुपाल, [illegible]
गाम वारेन नैं वाकौ नाम रखि दियौ-मसखरा। अब तौ छोटी होय या बड़ौ सब [illegible]
फिर तौ मसखरा हू अपने असली नाम कूँ भूलि गयौ कै वाकौ असली नाम गुपाल हतौ। [illegible]
गाम वारेन ते हँसी-मजाक करतौ रहतौ। एक दिना मसखरा नैं अपनी [illegible] ते कही, "[illegible]
मेरे ताँई एक छबरिया(टोकरी) पुआ बनाइ दै।" वाकी अम्मा नैं पूछी-"[illegible]
करैगौ?" मसखरा नैं कही-"बसि तू बनाय दै मैं चाहे कछू करूँ।" [illegible]
सो वानैं एक छबरिया भरिकैं पुआ बनाइ दिए। मसखरा छबरिया [illegible] पुआनैं लैकैं [illegible] और
वे पुआ बँबूरिया के पेड़ के काँटन पै टाँग दए। और गाम में [illegible]
बँबूरिया पै पुआ आ गए हैं। गाम वारे अपनी अपनी काम-[illegible] पुआ [illegible]
देखौ कै बँबूरिया पै कछु पुआ तौ टँगि रहे हैं। [illegible]
मसखरा नैं खुद टाँगे हैं और हमकूँ परेसान करिबे के ताँई [illegible] है।

गाम वारेन्नैं सोची कै जि मसखरा हम सबन कूँ बड़ौ [illegible]
और वाकी अम्मा वाकी सबई [illegible]
डारौ जातै वाकूँ न बचन पै रोटी मिलिंगी और न [illegible]
कौ बूढ़ी [illegible] कूँ मारि डारौ।

[illegible]

''ठहरि तौ सही, आज पकरिवे में आयौ है रोजीना तू ई मेरी वारी ऐ खाय जात है। आज तोय वताय दऊँगौ।'' वानैं आव देखौ न ताव, एक लठिया खेंचि कैं वा ल्हास में मारि दई। ल्हास लठिया लगत ई गिरि परी। इतनी देर में वारी में ते निकसि कैं मसखरा आयौ और वारी वारे ते वोल्यौ ''तैनें मेरी अम्मा कूँ मारि डारौ निर्दयी। वानैं तेरौ एकाध तरवूजौ खाइऊ लयो हतौ तौ तू मोपै ते पइसा लै लैंतौ परि तैनें तौ मेरी मइया जान ते ही मार डारी। मेरी तौ अकेली ही मइया ही। वता अव मोय रोटी कौन करिकैं खवावैगौ। मैं तौ अव पुलिस में रपट करूँगौ।'' खेत वारौ पुलिस कौ नाम सुनिकैं घवराय गयौ और मसखरा ते वोल्यौ ''भइया मोय माफ करि दै मोय कहा सल ही कै तेरी अम्मा एक ही लठिया में मरि जाइगी। भइया तोइ वस्स रोटिन की ही तौ परेसानी है। तेरी जा परेशानी ए मैं मिटाय देत हूँ।'' ''कैसें मिटाय देगौ?'' मसखरा नैं पूछी तौ खेत वारे नैं कही, ''मैं तेरौ व्याहु अपनी छोरी ते करि दउँगौ और तू जा अपनी ल्हास ऐ लै जा। अंधे ऐ कहा चहिए? द्वै आँख। मसखरा नैं अपनी महतारी वहीं जराइ दई। और वारी वारे की छोरी ते व्याहु करिकैं अपने गाम वापस आय गयौ। गाम वारे वड़े अचरज में परि गए कै मसखरा तौ द्वै दिना में अपनौ व्याहु हू करि लायौ। गाम वारे वोले, ''भइया मसखरा तू तौ अपनी अम्मा की ल्हास लै गयौ हौ और ल्हास के वदले तू नई वहू कैसें लै आयौ।

तौ मसखरा वोल्यौ, ''फलाने गाम में वूढ़ी औरतन ते नई छोरी वदली जात हैं।'' गाम वारेन में कछु रँडुआ हू हे और कछु विना व्याहे हे। उन्नैं नई छोरी के लालच में अपनी-अपनी महतारी मार डारीं और विन की ल्हासन नैं लैकैं मसखरा के वताए भए गाम में पहुँचे और वा गाम जाइकैं हल्ला मचाय दयौ। ''वूढ़ी औरतन ते नई छोरी वदलि देउ।'' गाम वारे जि सुनि कैं हँसि परे और वे पागल समझि कैं मारि कैं भगाय दये। अव तौ मसखरा के गाम वारे मसखरा ते वड़े गुस्सा भए और गुस्सा में आय कैं वाकी झौंपरी जराय डारी। मसखरा फिर परेसान। कहा करै। अव तौ वाय रहिवे कूँ हू घरु नाँय रह्यौ। वू चुपचाप छप्पर की राख वैलगाड़ी में भरिकैं शहर में वेचिवे चलि दियौ। राख वानैं कपड़ा ते ढकि दई ही। मसखरा ए रस्ता में एक सेठ-सेठानी मिले। सेठानी पैदल चलते-चलते थक गई ही तौ सेठजी नैं गाड़ीवारे मसखरा ते कही 'भइया गाड़ीवारे हमारी सेठानी नैंक सहर तक वैठाय लै चलि।'' मसखरा नैं कही सेठजी तुम हू वैठि चलौ परि मेरी गाड़ी में खाँड़ भरी भई है अगर तुम्हारी हवा ते मेरी खाँड़ कौ रंग खराव है गयौ तौ मैं नई खाँड़ लै लुंगौ।'' सेठ हू थके भए हे सो वोले ''खाँड़ तौ खाँड़ ही रहैगी चलि तू वैठारि लै चल।'' दोनूँ जने मसखरा की गाड़ी में वैठि गए। जव सहर आयौ तौ सेठजी वोले भइया हमें यहीं उतारि दै हमें यहीं तक आनौ हौ। दोनों जने उतरि गए तौ मसखरा वोल्यौ, ''सेठजी नैंक मोय अपनी खाँड़ देखि लैन देउ।'' और कपड़ा उघारि कैं वोल्यौ, ''सेठजी देखि लेउ मेरी खाँड़ कौ तौ रंग ही वदल गयौ। मैं तौ अव हल्ला मचावत हूँ।'' सेठजी डरि गये वोले ''भले आदमी हल्ला चौं मचाय रह्यौ है तोय खाँड़ ई चहिए ना। चलि तोय अपनी दुकान पै ते नई खाँड़ भरवाय देतूँ।'' मसखरा गाड़ी में खाँड़ भरिकैं अपने गाम वापस आयौ तौ गाम वारे फिर अचरज में परि गए कै जि गाड़ी में भरि कैं तौ अपने छप्पर की राख लै गयौ हो और सहर ते खाँड भरि लायौ। मसखरा नैं गामवारेन कूँ वतायौ ''फलाने सहर में छप्परन की राख के वदले खाँड़ मिलत है।'' गाम वारे फिरि वाकी वातन में आय गए और एक दूसरे के छप्परन में आँच लगाइ कैं वाकी राख गाड़ीन में भरि कैं सहर कूँ लै चलि दए। सहर में आये कै उन्नैं हल्ला मचायौ ''राख ते खाँड़ वदलि देउ।''

सहर वारेन्नें बिनकूँ पागल समझि कैं थाने में बंद कराय दियौ। वे बड़ी मुश्किल सौं छूटि कैं गाम वापस आए। अब तौ बिन्नें मसखरा पै तगड़ी गुस्सा आय गई। बिन्नें मसखरा कूँ पकरि कैं एक बोरी में बंद करि दियौ और गंगाजी में डारिबे चलि दिए। गंगाजी दूरि हतीं। बिनकूँ रस्ता मे प्यास लगी। एक ग्वारिया पौंहे चराय रहौ हो। वहीं बा पैते लोटा-डोरि लैकें वे कुआं पै पानी पीवे गए। बोरी में बंद मसखरा ए वहीं छोड़ि गए हते। कुआं कछू दूरि हतौ। ग्वारियन नैं देखौ कै बोरी में कछु कुलबुलाय रह्यौ है। ग्वारिया बोरी के नजीक आए और बोले, ''यामें तू कौन है रे?'' बोरी मे ते मसखरा बोल्यौ, ''भइयाऔ मैं एक आदमी हूँ जि मेरे संग के मोय पकरि कैं लै जाय रहे हैं।'' ग्वारिया बोले, ''काहे कूँ तोय पकरि कैं लै जाय रहे हैं ? कहा तू चोर उच्चका है?'' मसखरा बोल्यौ, ''भइया जि बात नाँय, मेरौ एक ब्याहु है चुकौ है जि मेरौ दूसरौ ब्याहु करिबे जबरदस्ती लै जाय रहे हैं। मैं दूसरौ ब्याहु नाँय करनौ चाहत हूँ।'' ग्वारियन में एक अधेड़ु आदमी हो बाकौ ब्याहु नांही भयौ तौ छूटते ई बोल्यौ, ''तौ बोरी बारे भइया ऐसौ करि तू मोय बोरी में बंद करि दै और तू मेरे पौहेन (पशुन) कूँ लै जा। तेरे बट कौ मैं ब्याहु करि लउँगौ।'' मसखरा बोरी में ते निकास लियौ और ग्वारिया खुद बा बोरी में बंद है गयौ। मसखरा बा ग्वारिया के पौहे लैकें गाम आय गयौ। बितकूँ गाम वारे वे आदमी पानी पीकें बोरी ऐ उठाय कैं चलि दिए और गंगाजी में डारि आए, ''चलौ मसखरा ते कलेस कटौ।'' जैसेंई वे गाम में वापस आए तौ बिनके अचरज कौ ठिकानौ नाँय रह्यौ कै मसखरा तौ बिनते पहलैं ही आय कैं भैंसन कौ दूध निकारि रह्यौ है। गाम वारेन नैं सोची कै या मसखरा पै कछु मंतर आवै है जाते उन्नैं मसखरा कूँ परेसान करिबौ छोड़ि दियौ और मसखरा नैं गाम बारेन कूँ।

-कार्यक्रम अधिकारी
आकाशवाणी, मथुरा (उ.प्र.)

नार के आगैं भूत भागै

-श्रीमती सुशीला 'शील'

एक बेर की बात है। एक ज्वान-जवान सन्थाल कौ ब्याह भयौ। सन्थाल ज्वान बहुतई प्रसन्न हौ कै सुन्दर सलौनी सी बहुरिया मिली अब जीवन अच्छी तरियाँ चलैगौ। पै कछू दिनान पाछैं वाय पतौ चलौ कै जि बहुरिया तौ बहुतई कामचोर है। चौंकै वू घर कौ कछू काम-काज नाँय करती। पूरे दिना बैठी रहती या सोमती रहती। बिचारौ सन्थाल ज्वान जब खेतन कौ सिगरौ काज करिकैं थकौंहारौ घर लौटतौ तौ घर में रोटी-पानी कछु नाँय पानतौ। नाथौं फोरि कैं वू घनोऊ दूर ते पानी लानतौ जाते वाके थके-हारे पामन में और ऊ पीरा बढ़ जाती। तौऊ बिचारौ घर आयकैं अपने चामर राँधतौ। आखिर पेट तौ बुरी चीज बनाई है ऊपर वारे नैं। सो भरनौ तौ हतौ ई है। पर वू ज्यादा दुखी तौ तब हौतौ जब वाकी कामचोर बहुरिया वाके रँधे चामरन मेंते ज्यादा खाय जाती और वो भूखौ सोइ जातौ।

ऐसेंई धीरौ बहुत समै निकसौ। जब पानी मूँड़ ऊपर बहन लगौ तौ सन्थाल ज्वान नैं जि बात पंचायत में कही कै "मेरी बहुरिया काम-काज के नाम तौ तींक नाँय सरकावै पै खावै मोतेऊ जादा है। मोय तौ वापै ऊपरलौ चक्कर लगै। भैया तुम मेरी कछू मदद करौ। या तरियाँ वाके ऊपर कौ प्रेत हमें जीवन नाँय देगौ।"

सबन नैं मिलकैं विचार करौ और एक ओझा जो सबनते जादा प्रसिद्ध हतौ बुलवायौ। ओझा नैं सिगरी बात ध्यान ते सुनी अरु वा सन्थाल ज्वान के संग वाके घर गयौ। वाकी बहुरिया ते बात करी। कछू प्रश्न पूछे। कछू पानी-फानी फैंकौ अरु तुरन्त समझ गयौ कि जा लुगाई कै कछू ऊपरलौ चक्कर नाँय, जि तौ कामचोर है। जाय सबक सिखानौ ही परैगौ। पै वानैं प्रगट में तौ जेई कही- "अरे राम! जि बहुरिया तौ घनेऊ ऊपरले चक्कर ते परेसान है। पर चिन्ता की कोऊ बात नाँय, सब ठीक है जायगौ।"

"तौ मोय का करनौ परैगौ?" सन्थाल ज्वान नैं पूछी।

"कछू खास नाँय, जंगल में जायकैं दो फल लौकी के आकार वारे बड़े-बड़े होंय, तोरिकैं जंगल में ई रख अइयो। कछू और सामान मैं लाऊँगौ। कछू और जरूरत परैगी तौ जंगल मेंई मिल जायगी। कल भोर होते ही चलनौ है। अब मैं चलौ, कल केताँई तैयारी करनी है।" जि कह ओझा नैं अपने घर की राह पकर लई।

बिचारौ सन्थाल ज्वान ओझा कौ आदेस मानकैं जंगल में सिगरौ हिसाब बना आयौ।

भोर हौंतेई ओझा सन्थाल ज्वान के घर पहुँच गयौ, चार-छः तमासबीनन कूँ लैकैं। म्हाँ ते सन्थाल ज्वान और बाकी सुन्दर बहू सब जंगल माऊ गये। म्हाँ तैयारी तौ पहले ते ई हती। ओझा नें म्हाँ माटी के एक छोटे से टीले कूँ चौंतरा कौ आकार दिबाय कैं लिपाय दियौ। फिर लाल रंग ते चबूतरा के ऊपर कछू डरावनी सी आकृति काढ़ दई, बापै जंगली घास अरु लौकी जैसे बड़े-बड़े जंगली फल धरिकैं चामर पढ़े, अगरबत्ती जराई। फिर सन्थाल ज्वान की बहुरिया वा चौंतरा के ऊपर बैठाय दई अरु एक आदमी के कान में कछू कही।

थोड़ी सी देर पाछैं ई बू आदमी जाके कान में ओझा नैं कछू कही ही, एक डिब्बा में ते गोबर लैकैं आयौ। ओझा नें डिब्बा हाथ में लैकैं कही *"जामैं गऊ माता कौ पवित्र मूत्र अरु गोबर है। जाते जा बहुरिया कूँ स्नान* करनौ है, तब मेरौ मंत्र काम करैगौ। बड़ौई तगड़ौ चक्कर है।"

भलौ ओझा कूँ कौन चुनौती देय? सबनैं हाँ में हाँ मिलाय दई। पै बहुरिया की हालत बुरी है गयी। बास के मारें मरी, ऊपर ते घिन आवै। बिचारी कछू कच्ची परी,"अरे-अरे" ही करि पाई तौलौं तौ डिब्बा कौ कचरौ वाके ऊपर आ परौ। फिर वो सोचन लगी कै जे लोग जो करैं सो करते रहें मैं तौ मेहनत सौं बची। घर जायकैं नहाय लऊँगी। इतने में ओझा के मंत्रन की बुदबुदाहट शुरू है गयी। सब लोग दम साधकैं चुप्प खड़े है गये।

आँख बन्द करिकैं ध्यान सौं मंत्र पढ़ कैं ओझा नैं आँखन कूँ खोल्यौ, फिर वा लुगाई पैं चामर, पानी अरु लाल रंग फैंक्यौ। बु लुगाई जैसी की तैसी। ओझा मन ही मन हँसौ, प्रगट में सन्थाल ज्वान सौं बोल्यौ, "बहुरिया के गरे में जि दोऊ फल मोटी रस्सी ते बांध कैं लटकाय देउ, मूँड़ पै मटका धरौ ऊपर ते जि पूजा की घास। ऐसैंई तीन चक्कर लगवाने परिंगे, पिसाच ज्यादा ही डबल दीखै। परि मोपै ते कहाँ जायगौ।"

जैसी ओझा नैं कही वाही हालत में बहू कूँ तैयार कियौ गयौ। "बहू भारी फलन कूँ गरे में नाँय डरवाय रही" जब ओझा ते एक आदमी नैं कही तौ ओझा नैं "ठहर जा पिसाच! तू तौ कोड़ा खाय कैं ही मानैगौ।" एक कोड़ा कस कैं जमायौ। फिर तौ बहुरिया मार के डर ते चुपचाप सब आज्ञान कूँ मानती गई। आधे मन बोझ के संग वानैं गाँम के तीन चक्कर लगाये। गाँम में तौ तमासौ जुरि गयौ, हँसी-ठठ्ठान कौ सोर, बच्चान की कंकड़न की मार, उल्टी-सीधी अनेक तरियाँ की बात, व्यंग और सबते ज्यादा पीड़ा की बात कै वाकौ पति सब बातन में शामिल। पति की आँखन में न प्रेम, न सहानुभूति। बस हँसी। बाय बू दिना याद आयौ जब पति बाके लिएं मरौ ही जाय रह्यौ हतौ।

तीसरे चक्कर पै ओझा कछू कहतौ बाते पहलें ही बु हाथ जोरिकें बोली, "मैं तिहारी सब बातन में राजी। मोपै कछू भूत-पिशाच नाँय, मैं भली चंगी है गई।" बिचारी अँसुवान ते रोय कैं घर माऊँ भाजी। ओझा मन वांछित होती देख जुरी भीड़ कौं तितर-बितर कराय कैं सन्थाल ज्वान कूँ लैकैं बाके घर गयौ। बाकी बहू कूँ फिर चेतावनी दई, फिर दान-दक्षिणा लैकैं घर चल्यौ गयौ।

वा दिना कौ दिन, फिर नाँय सन्थाल पत्नी पै कैसौ ऊ ऊपरलौ चक्कर आयौ। वा दिना ते वो अपने शरीर जैसी ही मन की सुन्दर है गयी। हर काम में अपने पति कौ हाथ बँटावन वारी, मेहनती अरु मृदुभाषी। अब गाँम में बिनकौ जोड़ा आदर्श जोड़ा बनि गयौ।

-बी-362, ट्रांस यमुना कालौनी, आगरा-282006

बान वारे की बान ना जाए

-श्री लेखराम झा 'लखन'

सरदी के दिनान में अघाने पै वैठ कै लोगवाग वातचीत करौ करैं। न जानैं कब-कब की और कहाँ-कहाँ की वात उघर परैं हैं। कछू समझ में ही नाँहिं आवै। संग में कहानी किस्सा हू चल परैं। कवहु-कवहु लोक- कथा हू सुनवे में आवैं हैं। ऐसैं ही एक लोककथा सुनवे में आई , जो या तरियाँ है-

एक वेर की वात है कै एक टल्ली हौ। काम-धाम कछू करतौ नाँहौ। पेट भरवे के लाले रहते। पर, वाए या वात की तनिक हू परवाह नाँहीं। वस वाए तौ टल्ल सुनावे ते ही फुरसत नाँहीं। याही में वू मगन रहतौ। एक दिना वू अपनी घरवारी सौं वोलौ-तू मेरी टल्लन ते बहुत परेशान है। मैं कल्ल सहर जाऊँगौ और टल्लन नैं वहीं छोड़ि आऊँगौ। ऐसी वात टल्ली कैई वेर कह चुकौ हौ।

वू बहुत वातूनी हौ। काम कौ न काज कौ। ढाई सेर नाज कौ। फिर टल्ल सिरू कर दैंतौ। वाकी घरवारी वाकी कैई वेर टल्ल छोड़वे की सुन चुकी। कैई वेर कह चुकी इन टल्लन नैं गंगाजी में छोड़ आऔ जाते पिंड छूटै।

अवकी वेर टल्ली नैं पक्की कह दई कै अव तौ घर जवई लौटुंगौ जव टल्लन नैं शहर में छोड़ आऊँगौ। ऐसी कहकैं सवेरे-सवेरे दो रोटी अँगोछा में वाँध कैं टल्ली निकर परौ। कंधा पै डारि लिए लोटा-डोर। घरवारी नैं सोची चलौ अवकैं छोड़ आवै तौ अवकैं ही सही। टल्लन ते छुटकारौ तौ मिल जाइगौ।

संझा भई। टल्ली लौटिकैं घर आ गयौ। निढाल हैकैं पलका पै पर गयौ। घरवारी नैं पूछी छोड़ आए टल्लन नैं?

वू वोलौ ''हाँ ,छोड़ि तौ आए पर जव लौट रह्यौ तौ एक टल्ला पीछैं पर गयौ। मैंनैं बाते कही कै भैया मैं तौ टल्लन नैं छोड़िवे आयौ हूँ तोए संग कैसैं लै चलूं। पर टल्ला नैं मेरी एक न सुनी और पर गयौ मेरे पीछैं। मैं आगैं आगैं और टल्ला मेरे पीछैं-पीछैं। आखिर बाते पिंड छुड़ावे के ताँईं भाजतौ भाजतौ एक पेड़ पै चढ़ गयौ। मैं एक मोटी सी डार पै चिपक गयौ। मैंनैं देखी कै वू टल्ला ब्रिल्ला की नाँईं पेड़ पै चढ़वे की कोसिस करवे लगौ। वा समै टल्ला मोय भेड़िया सौ दिखाई परौ। मैं सुट्ट खैंच गयौ। टल्ला जब पेड़ पै चढ़ ना पायौ

तौ नीचैं ही ठाड़ौ हैकैं मेरी ओर मुँह उठायकैं ताकन लागौ कै काऊ तरियाँ में चूकूँ और नीचैं गिरूँ तौ बू मोपै सवार है जाए। या तरियाँ मेरौ बुरौ हाल है गयौ। फिर भला मौत ते कौन कूँ डर नाँहिं लगै। मैं घबरावे लगौ। *तबई मेरे कन्धा के लोटा-डोरन में ते डोर नीचैं लटक गई। बानैं हक्क करी ना धक्क मेरी डोर कूँ पकड़ कैं* चढ़वे लगौ। बू मेरी ओर आइबे लगौ और मैं थर-थर काँपवे लगौ। जब बू मोते एक बिलाँद रह गयौ तौ मैंनैं डोर ई छोड़ दई। फिर का हौ टल्ला गिरौ धड़ाम ते। बस या टल्ला कूँ मार-पछार कैं हाँफतौ-हाँफतौ भगौ चलौ *आ रह्यौ हूँ।*"

या टल्ल कूँ सुनिकैं घरवारी बोली-रहन दै या टल्ल ते तिहारी पहले की ही टल्ल चोखी हौं।

बू बिचारी चुपचाप यों कहकैं रह गई-

जैसी जाकी बान, जाय नहिं जीयते।
नीम न मीठौ होय, सिंचे गुड़ घीयते।।

-26/193, कोकिला कुटीर
न्यू कालोनी, रामगंज, अजमेर-30500

लोकवार्ता लोकमानस की सूधी अभिव्यक्ति है, चाहैं बू कबहूँ अनपढ़ अरु अनगढ़ ही च्यौं न होई! लोगन के रोइबे-गाइबे,नाच कूद, मौजमस्ती, नारे, व्यंग-विनोद, चुटकला अरु चुटकी, यहाँ तक कै बिनकी मस्त बकवास, फब्ती, अफवाह, गप्पशप्प, इन सबहीन में लोकमानस की झलकी मिलैं हैं, जिनकी अनदेखी बुही '*अन्धौ*' करि सकै है जो देखनौ ही नाँय चाहै।

-डा. हरद्वारीलाल शर्मा
(लोकवार्ता-विज्ञान खण्ड एक, पृष्ठ 70)

गंगा जी की मेंढुकी-गैया करिकें मान

-मास्टर हरभान सिंह

एक पोत की बात है। एक जाट गंगा जी नहाइबे कूँ गयौ। गंगा घाट पै पहौंचिकैं वानैं देख्यौ म्हाँ पंडा जी महाराज काऊ अपने जिजमान ते दान-दच्छिना के मामले में झगरि रहे हैं। या समै कौ लाभ उठाइबे के काजैं जाट घाट ते नैंक दूर उछीर देखिकैं नहाइबे लगि गयौ। ई मतौ वानैं या मारैं बनायौ कै नहाइवौ धोइवौ ऊ है जाइगौ अरु दान-दच्छिना ऊ की बचति है जाइगी। वाकौ ख्याल बनौ चुकटी की चुकटी और भाईन के दरसन वारौ डौर बनि जायगौ।

परि जाट जौजूं नहाइ-धोइ ऊ नाँय पायौ तौजूँ पंडा की नजरि वापै परि गई। पंडा देखत खैम भग्यौ भग्यौ वा जाट के जौंरें जाय पहुँचौ। या भागम भाग में पंडा की तिलक करिबे की चंदन की कटोरी पहली वारी ठौर पै ई धरी रहि गई। सो वानैं अपनी अकलि पै जोर दैकैं गंगाजी की रेती कौ तिलक जाट के माँथे पै लगाइ कैं आसीस बचन बोलि दयौ। संग की संग चंदन की ठौर पै रेती ते काम चलाइबे पै कहूँ जाट बुरौ न मानि जाय या मारैं पंडा नैं अपनी दूसरी तुरुप चाल खेली। या चाल में पंडा बोल्यौ-

''बिराहमन बचन परमान

गंगाजी की रेती चंदन करिकैं मान।''

पंडा की या कामचलाऊ चालाकी सौं जाट के पीते पजरि गये। वू तौ दान-दच्छिना बचाइबे के चक्कर में हौ। म्हाँ उलटौ चंदन लगिवे ऊ कौ संजोग न है पायौ। या मारैं वाऊ नैं अपनी अकलि में झटका दयौ। हौनहार की बात, वाऊ की बुद्धि काम करि गई। वू झट्ट ही गंगाजी में कूदि कैं एक मेंढ़की पकरि लायौ। वा मेंढुकी यैं अपनी हथेरेटी पै धरिकैं जाट नैं संकल्प बोलबे में नैंकहूँ देर न करी-

''जाट बचन परमान

गंगाजी की मेंढुकी- गैया करिकें मान।''

-महलखास, किला, भरतपुर

ब्रज लोकोक्ति : परिवेस-प्रभाव अरु स्वरूप-सौन्दर्य

—डॉ. गेंदालाल शर्मा

ब्रजाञ्चल सदा सौं अपने ऐतिहासिक गौरव, सामाजिक सदासयता, सांस्कृतिक संचेतना अरु स्वदेस- प्रेम सौं पूरित लोकप्रिय भावन की अभिव्यक्ति के तांईं सबसौं ज्यादा जानौ जाय है। ह्याँ के रस सिद्ध कवियन, भक्त प्रवर साधकन अरु संगीत गायकन नैं श्रुति अरु लोकमतन कौ अद्भुत समन्वय करिकैं लोकहित की महनीय कामना सौं अपनी जीवन पोसी बानी तें भौतई उपयोगी उद्गार व्यक्त करे हैं। इनसौं एक ओर तौ धार्मिक-सामाजिक सहदयता कौ विकास भयौ है अरु दूसरी ओर अनुभूत बिचारन सौं लोक कौ मारग-दरसन भयौ है। लोक जीवन सौं निकसे जे तथ्यानुभूत बिचार ई लोकोक्ति नाम रूप सौं समाज माँहिं आजु लौं प्रचलित हैं।

लोकोक्तीन कूँ लोकमानस की सत्यानुभूतीन कौ बाक्य-सूत्र कह्यौ जाय है। इनमें मानव के अबिकारी मन, सत्यानुसंधान लगन, दीर्घकालीन निरणीत ग्यान, अद्भुत परीक्षण प्रतिभा, सूक्ष्म निरीक्षण कौ कौसल, गागर माँहिं सागर भरिबे की कला, सब जगह समान प्रभाव अरु अरथ गाम्भीर्य आदि भौत सी विसेसतान कूँ देखौ जाइ सकै है।

लोकोक्तीन माँहिं जाति, धरम, सम्प्रदाय अरु क्षेत्र बिसेस की सीमा नाहिं रहै है। जे हमारे भावनामृत-सागर की अमर बिन्दु हैं। जे हजारों साल बीति जायबे पै ऊ आज लौं बाई तरै अपनौ प्रभाव बनाये भएँ हैं।

लोकोक्तीन कूँ दीरघकालीन अनुभव प्रसूत हैबे के कारन अनुभूत सत्य की पुत्री कह्यौ गयौ है। जे सर्वजनीन अरु सर्वसम्मत हैबे कौ प्रमान देवैं हैं। जे सर्वत्र सत्यवादी हैं। सुन्दर भावन की मंजूसिका हैं। ग्यान कौ अक्षय कोस हैं। इतिहास अरु समाज की तात्विक गाथा हैं। आर्यन की सभ्यता कौ सूरज हैं। कृसि संस्कृति की निर्देसिका हैं। जीवन-जगत कौ प्रभावी मंत्र हैं। अनुभव की पिटारी हैं। समय की कसौटी कौ सत्य हैं। किंकर्तव्य विमूढ़ कूँ मार्ग दरसक हैं। भटके कूँ प्रकास स्तम्भ हैं। अग्यानी कौ दृष्टि हैं। डूबते कौं तिनका कौ सहारौ हैं। विवेक की चूरामनि हैं। निश्चित तथ्योद्घोषक हैं। कर्म कौ बीज हैं। पथिक कूँ पाथेय हैं। श्रद्धा-विस्वास की पोसक हैं। आसा-उत्साह कौ स्रोत हैं। सबमौं ऊपर जे हमारे पूर्वजन की थाती हैं।

लोकोक्ति अनामी हैकैं ऊँ सबकी मानी जाय हैं। इनसौं हमारौ बिबिध प्रकार कौ ग्यान बरधन होइ है। जे जन-समुदाय के काजैं उपदेश, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृसि, पशु-पच्छी, प्रकृति, विधि-निसेध, रीति-रिवाज-नीति, टीका-टिप्पणी, अरु हास्य-व्यंग आदि बिसयन के भौत से तथ्य-प्रसंगन कूँ अपने परिवेश-प्रकारन माँहिं समेटे भई हैं। लोक-स्वर हैवे के कारन इनमें बुद्धि कौ कौसल अरु हिये की रागात्मकता गुँथी भई है।

लोकोक्तीन सौं सारगरभित, संक्षिप्त अरु प्रभावी रूप में परिस्थिति विसेस कौ भली भाँति अंकन होय है। जे रत्नगर्भा भूमि की तरह अपार-अक्षय ग्यान निधीन कौ स्रोत हैं। जे चिरपरिचित सम्पत्ति हैं। इनमें लोक मनकौ स्पन्दन और लोक जीवन् कौ सच्चौ-सहज रूप प्रगट होय है। जे अतीत की भूमि पै उगें हैं अरु बर्तमान माँहिं गतिसील हैकैं भविस्य की मंजिल पै लै जाँय हैं। इनकूँ हमारी पोसित परम्परान कौ, पुस्ट प्रथान कौ, अटूट आस्थान कौ, सामाजिक सुसम्बन्धन कौ अरु सरस सांस्कृतिक सन्दर्भन कौ लोक कोप मानौ जाइ सकै है। ब्रज लोकोक्तीन माँहिं लोकचेतना अरु जीवन दरसन कौ सम्यक स्वरूप प्रगट भयौ है।

ब्रज लोकोक्तीन माँहिं ग्यान, धर्म, रीति-नीति, उपदेश-शिक्षा अरु साहित्य-सौन्दर्य की बिबिध छटान के दरसन होंइ हैं।

विसय, क्षेत्र अरु व्यापकता की द्रष्टि सौं ब्रज-लोकोक्तीन के भौत से भेद करे जाइ सकैं हैं परि हम ब्रज लोकोक्तीन कूँ इन प्रमुख प्रकारन में विभाजित करि सकैं हैं-

1. **इतिहास अरु राजनीति परक**-इनमें इतिहास अरु राजनीति बिसयक अनुभवन कौ सौंदर्य व्यक्त भयौ है-

(क) न राजाऐ चैनु। न प्रजाऐ चैनु॥ (राजा अरु प्रजा सबई दुखी)

(ख) पढ़े फारसी बेचैं तेल। जे देखौ करमन कौ खेल।। (बेरोजगारी की समस्या आजुऊ वैसी है)

(ग) भागवानन के गधाऊ पँजीरी खात हैं (सरकारी सेवकन की मौज-मस्ती)

2. **समाजपरक**-समाज परक लोकोक्तीन माँहिं आपस के सम्बन्ध, औरत-मरद के ब्यवहारन कौ लेखा-जोखा मिलै है-

(क) ब्याहु नांहिं भयौ तौ का बरातऊ नाँइ करी (अनुभव तौ करौई है)

(ख) घौंटू पेट कूँ ई नवत हैं (अपनौ अपने कूँ ही पचतु है)

(ग) आठ जने नौ चूल्हा (बटौ भयौ परिवार)

(घ) गिरारे कौ पानी मुंडेर पै नाँइ चढ़त (नीच नीच ही रहत है)

(ङ) तारी दोऊ हाथन सौं बजति है (दोनौं पक्षन को कमी हैं)

(च) अपनौ कामु पट्टा करि, मोइ भोलुआ में पस्सि दै (स्वार्थी बात)

(छ) कुठौर काटी ससुर बाइगी (कठिन समस्या)

(ज) लट्ठ मारिबे तैं पानी नाहिं फटै (तकरार सौं काम नाहिं होत)(अभिन्न सम्बंध नाँहिं टूटैं)

(झ) तीर सौं छूट्यौ बान, मुंह सौं निकसी बात लौटति नाँहिं (सोच समझकैं बात करनी चहिये)

3. **स्वास्थ्य**-तातौ खाइ पटे में सोवै। ताकौ बैद्य पिछारे रोवै॥

4. **प्रकृति-बरसा अरु कृषि परक**-जा तरै की लोकोक्तीन मौंहिं प्रकृति, रितु, पशु-पक्षी, खेती-बारी सौं संबन्धित देखी-परखी सूचनान की प्राप्ति होय है। घाघ अरु भड्डरी की लोकोक्तीन मौंहिं तौ इन विसयन की भौत उपयोगी बात कही गई हैं-

(क) जब जेठ चलै पुरबाई। तब साबन धूल उड़ाई (सूखा परैगी)

(ख) करिया बादर जी डरपाबै। भूरौ बादर पानी लावै (भूरे बादर सौं पानी बरसत है)

(ग) चिरैया न्हाई धूर। तौ बरसै भरपूर।

(घ) हरियल खेती गाँभन गाइ। तब जानौ जब मुँह तक आइ॥ (मुश्किल सौं सफलता)

(ङ) असाढ़ मास जो घूमा कीन। ताकी खेती होवै हीन॥

(च) जब मकड़ी नैं तानौ जालौ। बीज चना कौ भरि-भरि डारौ॥

5. **पशु पच्छी**-

(1) हाथी के दाँत खाबे के औरु दिखाइबे के औरु। (कथनी करनी में अन्तर)

(2) कै हंसा मोती चुगै कै लंघन मरि जाइ।

(3) ताल तै तलइया गहरी। साँप तैं सपोरा जहरी।

(4) बगुला भगत। (ढौंगी आदमी)

(5) अपनी गली में कुत्ताऊ सेर।

6. **रीति-नीति, धर्म, शिक्षा-उपदेशपरक**-जा तरै की लोकोक्तीन सौं लोक की रीति-नीति, लोक- धर्म अरु आचार-व्यवहार की शिक्षा दैकैं लोगन कौ धर्म-कर्म सौं, परोपकार अरु नेक-नीयत सौं जीवन-यापन की उपदेशपरक शिक्षा दई गई है।

लोकोक्ति अनामी हैकैं ऊ सबकी मानी जाय हैं। इनसौं हमारौ विविध प्रकार कौ ग्यान बरधन होइ है। जे जन-समुदाय के काजैं उपदेश, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृसि, पशु-पच्छी, प्रकृति, विधि-निसेध, रीति-रिवाज-नीति, टीका-टिप्पणी, अरु हास्य-व्यंग आदि बिसयन के भौत से तथ्य-प्रसंगन कूँ अपने परिवेश-प्रकारन माँहिं समेटे भई हैं। लोक-स्वर हैवे के कारन इनमें बुद्धि कौ कौसल अरु हिये की रागात्मकता गुँथी भई है।

लोकोक्तीन सौं सारगरभित, संक्षिप्त अरु प्रभावी रूप में परिस्थिति विसेस कौ भली भाँति अंकन होय है। जे रत्नगर्भा भूमि की तरह अपार-अक्षय ग्यान निधीन कौ स्रोत हैं। जे चिरपरिचित सम्पत्ति हैं। इनमें लोक मनकौ स्पन्दन और लोक जीवन् कौ सच्चौ-सहज रूप प्रगट होय है। जे अतीत की भूमि पै उगें हैं अरु वर्तमान माँहिं गतिसील हैकें भविस्य की मंजिल पै लै जाँय हैं। इनकूँ हमारी पोसित परम्परान कौ, पुस्ट प्रधान कौ, अटूट आस्थान कौ, सामाजिक सुसम्बन्धन कौ अरु सरस सांस्कृतिक सन्दर्भन कौ लोक कोप मानौ जाइ सकै है। ब्रज लोकोक्तीन माँहिं लोकचेतना अरु जीवन दरसन कौ सम्यक स्वरूप प्रगट भयौ है।

ब्रज लोकोक्तीन माँहिं ग्यान, धर्म, रीति-नीति, उपदेश-शिक्षा अरु साहित्य-सौन्दर्य की बिबिध छटान के दरसन होंइ हैं।

विसय, क्षेत्र अरु व्यापकता की द्रष्टि सौं ब्रज-लोकोक्तीन के भौत से भेद करे जाइ सकैं हैं परि हम ब्रज लोकोक्तीन कूँ इन प्रमुख प्रकारन में विभाजित करि सकैं हैं-

1. **इतिहास अरु राजनीति परक**-इनमें इतिहास अरु राजनीति विसयक अनुभवन कौ सौंदर्य व्यक्त भयौ है-

(क) न राजाऐ चैनु। न प्रजाऐ चैनु॥ (राजा अरु प्रजा सबई दुखी)

(ख) पढ़ें फारसी वेचैं तेल। जे देखौ करमन कौ खेल।। (वेरोजगारी की समस्या आजुऊ वैसी है)

(ग) भागवानन के गधाऊ पँजीरी खात हैं (सरकारी सेवकन की मौज-मस्ती)

2. **समाजपरक**-समाज परक लोकोक्तीन माँहिं आपस के सम्बन्ध, औरत-मरद के व्यवहारन कौ लेखा-जोखा मिलै है-

(क) व्याहु नाँहिं भयौ तौ का वरातऊ नाँइ करी (अनुभव तौ करौई है)

(ख) घाँटू पेट कूँ ई नवत हैं (अपनौ अपने कूँ ही पचतु है)

(ग) आठ जने नौ चूल्हा (बटौ भयौ परिवार)

(घ) गिरारे कौ पानी मुंडेर पै नाँइ चढ़त (नीच नीच ही रहत है)

(ङ) तारी दोऊ हाथन सौं बजति है (दोनों पक्षन की कमी हैं)

(च) अपनौ कामु पट्टा करि, मोइ भोलुआ में पस्सि दै (स्वार्थी बात)

(छ) कुठौर काटी ससुर बाइगी (कठिन समस्या)

(ज) लट्ठ मारिबे तें पानी नाहिं फटै (तकरार सौं काम नाहिं होत)(अभिन्न सम्बंध नाँहिं टूटैं)

(झ) तीर सौं छूट्यौ बान, मुंह सौं निकसी बात लौटति नाँहिं (सोच समझकें बात करनी चहिये)

3. **स्वास्थ्य**-तातौ खाइ पटे में सोबै। ताकौ वैद्य पिछारे रोबै॥

4. **प्रकृति-बरसा अरु कृषि परक**-जा तरै की लोकोक्तीन माँहिं प्रकृति, रितु, पशु-पक्षी, खेती-बारी सौं संबन्धित देखी-परखी सूचनान की प्राप्ति होय है। घाघ अरु भड्डरी की लोकोक्तीन माँहिं तौ इन विसयन की भौत उपयोगी बात कही गई हैं-

(क) जब जेठ चलै पुरबाई। तब साबन धूल उड़ाई (सूखा परैगी)

(ख) करिया बादर जी डरपाबै। भूरौ बादर पानी लावै (भूरे बादर सौं पानी बरसत है)

(ग) चिरैया न्हाई धूर। तौ बरसै भरपूर।

(घ) हरियल खेती गाँभन गाइ। तब जानौ जब मुँह तक आइ॥ (मुश्किल सौं सफलता)

(ङ) असाढ़ मास जो घूमा कीन। ताकी खेती होबै हीन॥

(च) जब मकड़ी नैं तानौ जालौ। बीज चना कौ भरि-भरि डारौ॥

5. **पशु पच्छी**-

(1) हाथी के दाँत खांबे के औरु दिखाइबे के औरु। (कथनी करनी में अन्तर)

(2) कै हंसा मोती चुगै कै लंघन मरि जाइ।

(3) ताल तै तलइया गहरी। साँप तें सपोरा जहरी।

(4) बगुला भगत। (ढौंगी आदमी)

(5) अपनी गली में कुत्ताऊ सेर।

6. **रीति-नीति, धर्म, शिक्षा-उपदेशपरक**-जा तरै की लोकोक्तीन सौं लोक को रीति-नीति, लोक- धर्म अरु आचार-व्यवहार की शिक्षा दैकें लोगन कौ धर्म-कर्म सौ, परोपकार अरु नेक-नीयत सौं जीवन-यापन की उपदेशपरक शिक्षा दई गई है।

(क) गुरु-शिष्य-

(अ) गुरु कीजै जानि कैं। पानी पीजै छानि कैं।

(आ) लोभी गुरू लालची चेला। होइ नरक में ठेलम ठेला॥

(ख) कर्मपरक-

(अ) नेकी कर कुआँ में डारि।

(आ) करि भलौ। होइगौ भलौ।।

(इ) जैसी करनी। वैसी भरनी॥

(ई) छलनी में दुहौ। करम में टटोलौ॥

(उ) दौज कौ बाइनौ तीज कौं मिलैं।

(ऊ) जाकौ कामु वाई कूँ छाजै। औरु करै तौ डंडा बाजै॥

(ए) साँई के दरवार में बदले कहूँ न जाँइ। (करनी कौ फल)

(ग) नीति-उपदेश-

(अ) आये थे हरि भजन कौं ओटन लगे कपास (उद्देश्य सौं भटके)

(आ) जाकी उतरि गई लोई। वाकौ का करैगौ कोई (बेशर्म कौ कछु नाँय बिगड़ै)

(इ) जैसौ देसु। वैसौ भेसु॥ (मौके के अनुसार)

(ई) भगवान छप्पर फारि कैं देतुहै। (ईश्वर कृपा सौं सब संभव)

(घ) साहित्य-सौंदर्य-

ब्रज लोकोक्तीन माँहि काव्य-सौष्ठव पूरी तरै पायौ जाय है। ब्रजभूमि रसभूमि मानी जाय है। अत: ब्रज लोकोक्तीन माँहिं साहित्यिक सौन्दर्य अरु काव्य शास्त्रीय सौन्दर्य के निरे उदाहरन दये जाइ सकैं हैं। रस, अलंकार अरु काव्य-शक्तीन के थोरे से उदाहरन ही विस्तार-भय सौं दये जाइ रहे हैं-

(क) रस सौन्दर्य-

(अ) सिंगार रस-

कमजोर की लुगाई। पूरे गाँव की भौजाई॥

(आ) वीर रस-

जाकी लाठी। वाकी भैंस॥

मूँछन पै हाथ फेरिबौ।

(इ) हास्य व्यंग-

जाके पास न पैसा। वु भलमानस कैसा॥

(ई) भय बिनु होइ न प्रीति। (भयानक)

(ठ) शान्त-

जौ मन चंगा। तौ कठौती में गंगा।

करी करतार की सब होइ।

ı) अलंकार-

भौत से अलंकारन के बड़े मलूक उदाहरन इन लोकोक्तीन माँहिं पाये जाँय हैं। कतिपय ह्याँ प्रस्तुत हैं-

(अ) अनुप्रास-नई नाइन बाँस कौ नहन्ना।

तथा काटैगौ काऊ कौ। सीखैगौ नाऊ कौ॥

(आ) उपमा- मान कौ पान। हीरे के समान॥

क्रमालंकार- पर घर नाँचैं तीन जन कायथ, वैद्य, दलाल।

ı) काव्यशक्तीन कौ सौन्दर्य-ब्रज लोकोक्तीन माँहिं अभिधा, लक्षणा अरु व्यंजना काव्यशक्तीन के प्रयोगऊ बहुत उपलब्ध होंय हैं-

(अ) अभिधा-

भयौ साठी। बुद्धि नाठी॥

मानौ तौ देव नहीं तौ पत्थर।

(आ) लक्षणा-

ऊंची दुकान फीके पकवान।

डेढ़ ईंट की मस्जिद चिननौ।

(क) गुरु-शिष्य-

(अ) गुरु कीजै जानि कैं। पानी पीजै छानि कैं।

(आ) लोभी गुरू लालची चेला। होइ नरक में ठेलम ठेला॥

(ख) कर्मपरक-

(अ) नेकी कर कुआँ में डारि।

(आ) करि भलौ। होइगौ भलौ।।

(इ) जैसी करनी। वैसी भरनी॥

(ई) छलनी में दुहौ। करम में टटोलौ॥

(उ) दौज कौ बाइनौ तीज कौं मिलैं।

(ऊ) जाकौ कामु बाई कूँ छाजै। औरु करै तौ डंडा बाजै॥

(ए) साँई के दरबार में बदले कहूँ न जाँइ। (करनी कौ फल)

(ग) नीति-उपदेश-

(अ) आये थे हरि भजन कौं ओटन लगे कपास (उद्देश्य सौं भटके)

(आ) जाकी उतरि गई लोई। बाकौ का करैगौ कोई (बेशर्म कौ कछु नाँय बिगड़ै)

(इ) जैसौ देसु। वैसौ भेसु॥ (मौके के अनुसार)

(ई) भगवान छप्पर फारि कैं देतुहै। (ईश्वर कृपा सौं सब संभव)

(घ) साहित्य-सौंदर्य-

ब्रज लोकोक्तीन माँहि काव्य-सौष्ठव पूरी तरै पायौ जाय है। ब्रजभूमि रसभूमि मानी जाय है। अतः ब्रज लोकोक्तीन माँहिं साहित्यिक सौन्दर्य अरु काव्य शास्त्रीय सौन्दर्य के निरे उदाहरन दये जाइ सकैं हैं। रस, अलंकार अरु काव्य-शक्तीन के थोरे से उदाहरन ही विस्तार-भय सौं दये जाइ रहे हैं-

(क) रस सौन्दर्य-

(अ) सिंगार रस-

कमजोर की लुगाई। पूरे गाँव की भौजाई॥

(आ) वीर रस-

जाकी लाठी। वाकी भैंस॥

मूँछन पै हाथ फेरिबौ।

(इ) हास्य व्यंग-

जाके पास न पैसा। वु भलमानस कैसा॥

(ई) भय बिनु होइ न प्रीति। (भयानक)

(उ) शान्त-

· जौ मन चंगा। तौ कठौती में गंगा।

करी करतार की सब होइ।

(ख) अलंकार-

भौत से अलंकारन के बड़े मलूक उदाहरन इन लोकोक्तीन माँहिं पाये जाँय हैं। कतिपय ह
प्रस्तुत हैं-

(अ) अनुप्रास-नई नाइन बाँस कौ नहन्ना।

तथा काटैगौ काऊ कौ। सीखैगौ नाऊ कौ॥

(आ) उपमा- मान कौ पान। हीरे के समान॥

क्रमालंकार- पर घर नाँचैं तीन जन कायथ, बैद्य, दलाल।

(ग) काव्यशक्तीन कौ सौन्दर्य-ब्रज लोकोक्तीन माँहिं अभिधा, लक्षणा अरु व्यंजना काव्यशक्तीन के प्रयोगऊ बहुत उपलब्ध होंय हैं-

(अ) अभिधा-

भयौ साठी। बुद्धि नाठी॥

मानौ तौ देव नहीं तौ पत्थर।

(आ) लक्षणा-

ऊंची दुकान फीके पकवान।

डेढ़ ईंट की मस्जिद चिननौ।

(इ) व्यंजना-

क्वारी कन्या सहस वर।

जा तरै हम देखैं हैं कै ब्रज लोकोक्तीन कौ परिवेश बड़ौ व्यापक अरु प्रभावी है। प्रकार-विस्तार सौं ऊ जे असंख्य हैं। इनमें ब्रज प्रकृति, जन-जीवन, समाज, संस्कृति अरु साहित्य के बिबिध रूपात्मक सौन्दर्य के भरपूर दरसन होंइ हैं। जि समय की माँग है कै आज हम इनके महत्व कूँ समझें अरु इनकौ संचयन करिकैं इनकौ आश्रय लैकैं अपने जीवन कूँ अधिक सामाजिक अरु सार्थक बनावैं।

-सोमांचल, मैरिस रोड,
अलीगढ़ (उ.प्र.)-202001

लोकोक्तीन की विषयवस्तु विस्तृत होइ है। इनकी विषयवस्तु माँहि दृश्य अरु अदृश्य दोऊ लोक आमें हैं। मानुस, ईश्वर, अदृश्य शक्ती, जीवजन्तु, इतिहास अरु प्राकृतिक भूगोल- इन सिगरे विषयन पै लोकोक्तीन में लोक-स्वीकृत विचार, धारणा, निरीक्षण, अनुमान अरु निष्कर्ष संचित रहैं हैं।

-अज्ञात

लोकोक्ति : स्वरूप और प्रयोग

–डॉ. श्याम सनेही लाल शर्मा

लोकोक्ति : परिभासा अरु अरथ-

ऐसी 'उक्ति' जो लोक-मानस द्वारा गढ़ी जावै है अथवा काहू व्यक्ति बिसेस द्वारा रची जावै है अरु जो लोक-जीवन में प्रचलित अरु स्वीकृत है जावै है, 'लोकोक्ति' कही जाय है। जा कथन ते जि नहीं समझनौ चइए कि लोक-जीवन द्वारा व्यवहार में लाई जाइबे बारी हर उक्ति, लोकोक्ति है। 'लोकोक्ति' हम बाई कूँ कहि सकैं हैं, जो काहू तथ्य, भाव अथवा अद्‌भुत सत्य कूँ चमत्कारपूर्ण ढंग ते प्रगट करिबे में समरथ होइ।

लोकोक्ति कौई दूसरौ नाम 'कहावत' है। 'कहावत' कौ अरथ है- ऐसौ कथन जो भिन्न-भिन्न समै, स्थान अरु परिस्थिति में एकरूपता के बोध के कारन प्रयुक्त करौ जाय। लोकोक्ति व्यावहारिक जीवन की प्रयुक्ति है जाही तें जि लोकमानस के व्यावहारिक जीवन ते ई गढ़ी जाय है, यहीं पै प्रचलित होय है अरु हरेक व्यक्ति द्वारा प्रयोग संदर्भ की चेतना के संग यहीं ते सीखी जाय है।

लोकोक्ति औरु मुहावरौ-

लोकोक्ति अरु मुहावरेन में कछू समानता तौ होय है, परि कैई बातन में बहुत कछू अंतर ऊ होत है। मुहावरे भासिक इकाइयन के आकस्मिक संयोग ते निर्मित है जाइबे बारे ऐसे कथनबंध हैं, जो अभिव्यक्ति की गहनता के परिनाम होंय हैं। इनकी तुलना में लोकोक्ति काहू विचित्र/बिलच्छन संदर्भ कूँ चित्रित या अभिव्यक्त करिबे बारी ऐसी भासिक इकाई है, जो ग्यात-अग्यात परिस्थितीन में ग्यात-अग्यात व्यक्ती न के मुख तें पैदा होय है। अपने अभिव्यक्ति-सौन्दर्य के कारन दूसरे व्यक्तिन द्वारा प्रसंसित भाव ते अपनाइ लई जाय है औरु फिरि मौखिक परम्परा तें जन-जन के भासाई व्यवहार कौ अंग बनि जाय है।

लोकोक्ति की उत्पत्ति कौ एक औरु छेत्र साहित्य है। साहित्यकार काहू घटना कूँ रंग दैबे के ताँईं काव्यात्मक उक्ति रचि देय हैं। जैसैं-सूरदास नैं लिखि दयौ-'जैसैं उड़ि जहाज कौ पंच्छी फिरि जहाज पै आवै' औरु तुलसी नें लिख्यौ-'ढोल गंबार सूद्र पसु नारी। जे सब ताड़न के अधिकारी॥' आदि। पाछैं

(इ) व्यंजना–

क्वारी कन्या सहस वर।

जा तरै हम देखें हैं कै ब्रज लोकोक्तीन कौ परिवेश बड़ौ व्यापक अरु प्रभावी है। प्रकार–विस्तार सों ऊ जे असंख्य हैं। इनमें ब्रज प्रकृति, जन–जीवन, समाज, संस्कृति अरु साहित्य के बिविध रूपात्मक सौन्दर्य के भरपूर दरसन होंइ हैं। जि समय की माँग है कै आज हम इनके महत्व कूँ समझें अरु इनकौ संचयन करिकैं इनकौ आश्रय लैकैं अपने जीवन कूँ अधिक सामाजिक अरु सार्थक बनाबैं।

–सोमांचल, मैरिस रोड,
अलीगढ़ (उ.प्र.)-202001

लोकोक्तीन की विषयवस्तु विस्तृत होइ है। इनकी विषयवस्तु माँहि दृश्य अरु अदृश्य दोऊ लोक आमें हैं। मानुस, ईश्वर, अदृश्य शक्ती, जीवजन्तु, इतिहास अरु प्राकृतिक भूगोल- इन सिगरे विषयन पै लोकोक्तीन में लोक-स्वीकृत विचार, धारणा, निरीक्षण, अनुमान अरु निष्कर्ष संचित रहैं हैं।

–अज्ञात

लोकोक्ति : स्वरूप और प्रयोग

–डॉ. श्याम सनेही लाल शर्मा

लोकोक्ति : परिभासा अरु अरथ-

ऐसी 'उक्ति' जो लोक-मानस द्वारा गढ़ी जाबै है अथवा काहू व्यक्ति बिसेस द्वारा रची जाबै है अरु जो लोक-जीवन में प्रचलित अरु स्वीकृत है जाबै है, 'लोकोक्ति' कही जाय है। जा कथन ते जि नहीं समझनौ चइए कि लोक-जीवन द्वारा व्यवहार में लाई जाइबे बारी हर उक्ति, लोकोक्ति है। 'लोकोक्ति' हम बाई कूँ कहि सकैं हैं, जो काहू तथ्य, भाव अथवा अद्‌भुत सत्य कूँ चमत्कारपूर्ण ढंग ते प्रगट करिबे में समरथ होइ।

लोकोक्ति कौई दूसरौ नाम 'कहावत' है। 'कहावत' कौ अरथ है- ऐसौ कथन जो भिन्न-भिन्न समै, स्थान अरु परिस्थिति में एकरूपता के बोध के कारन प्रयुक्त करौ जाय। लोकोक्ति व्यावहारिक जीवन की प्रयुक्ति है जाही तें जि लोकमानस के व्यावहारिक जीवन ते ई गढ़ी जाय है, यहीं पै प्रचलित होय है अरु हरेक व्यक्ति द्वारा प्रयोग संदर्भ की चेतना के संग यहीं ते सीखी जाय है।

लोकोक्ति औरु मुहावरौ-

लोकोक्ति अरु मुहावरेन में कछू समानता तौ होय है, परि कैई बातन में बहुत कछू अंतर ऊ होत है। मुहावरे भासिक इकाइयन के आकस्मिक संयोग ते निर्मित है जाइबे बारे ऐसे कथनबंध हैं, जो अभिव्यक्ति की गहनता के परिनाम होंय हैं। इनकी तुलना में लोकोक्ति काहू विचित्र/विलच्छन संदर्भ कूँ चित्रित या अभिव्यक्त करिबे बारी ऐसी भासिक इकाई है, जो ग्यात-अग्यात परिस्थितीन में ग्यात-अग्यात व्यक्ती न के मुख तें पैदा होय है। अपने अभिव्यक्ति-सौन्दर्य के कारन दूसरे व्यक्तिन द्वारा प्रसंसित भाव ते अपनाइ लई जाय है औरु फिरि मौखिक परम्परा तें जन-जन के भासाई व्यवहार कौ अंग बनि जाय है।

लोकोक्ति की उत्पत्ति कौ एक औरु छेत्र साहित्य है। साहित्यकार काहू घटना कूँ रंग दैबे के ताँईं काव्यात्मक उक्ति रचि देय हैं। जैसैं-सूरदास नैं लिखि दयौ-'जैसैं उड़ि जहाज कौ पंच्छी फिरि जहाज पै आवै' औरु तुलसी नैं लिख्यौ-'ढोल गंवार सूद्र पसु नारी। जे सब ताड़न के अधिकारी॥' आदि। पाछैं

जे काव्यात्मक उक्ति अपने प्रयुक्ति संदर्भ ते मुक्त हैकें एक सार्वकालिक सत्य कूँ प्रगट करिवे के ताँई लोक-मानस द्वारा व्यवहृत होन लगै है औरु लोकोक्ति कौ रूप धारन करि लेय है।

मुहावरेन की तरह लोकोक्ति हू कथनवंध होय है। काहू वाक्य या वाक्यांस की ऐसी स्तव्धीकृत संरचना कूँ लोकोक्ति कहैं हैं, जाकौ अभिधार्थ समाप्त है चुकौ होय है औरु जाकौ अरथ काहू औरु कैसे हू प्रसंग में केवल लच्छना अरु व्यंजना ते ई प्रगट होय है। चूँकि जे स्तव्धीकृत संरचना होय है, अत: याकूँ कथनवंध मानौ जानौ चइए, जाके एकऊ संरचक कूँ वदलिवे पै अरथ की हानि हैवे की संभावना रहै है अथवा लोकोक्ति के वदल जाइवे की संभावना होय है।

मुहावरे औरु लोकोक्ति में एक विसेस अंतर क्रियापद की युति कौ है। मुहावरे में क्रियापद जरूरई होय है, परि लोकोक्ति में क्रियापद जरूरी नाँहि। जेई कारन है, कै मुहावरे स्वयं में वाक्य नाँहि हॉय, वल्कि वाक्य के घटक वनिकें आवैं हैं, जवकि लोकोक्ति अपने आप में पूरन होय हैं (भले ई जे क्रियापद ते मुक्त ई चौं ना होवैं) औरु एक स्वतंत्र वाक्य के रूप में प्रयुक्त है सकैं हैं।

लोकोक्तीन कौ वर्ग-विभाजन-

लोक-जीवन में प्रचलित लोकोक्तीन कौ वर्ग-विभाजन कैऊ नजरियन तें कर्यौ जाइ सकै है। ह्यां लय, स्रोत औरु संरचना के आधार पै लोकोक्तीन कूँ वर्गन में वाँटिवे कौ प्रयास है।

लय के आधार पै लोकोक्तीन के द्वै भेद करे जाइ सकैं हैं-

1. पद्यात्मक लोकोक्ति
2. गद्यात्मक लोकोक्ति

''घर कौ जोगी जोगना आन गाँम कौ सिद्ध'', ''अजव तेरी कुदरत अजव तेरौ खेल, छछूंदर के सिर पै चमेली कौ तेल'' जैसी लोकोक्ति पद्यात्मक ही हैं। जाइ तर कछू औरहू पद्यात्मक लोकोक्ति देखी जाइ सकैं हैं, जैसें-'अंग्रेजी राज, तन कूँ कपड़ा न पेट कूँ नाज', 'अंधा गुरु वहरा चेला, मांगैं हरड़, देवै वहेड़ा', 'गुरु सौं कपट मित्र ते चोरी, कै होइ निरधन कै होइ कोढ़ी', 'नौ दिन चले अढ़ाई कोस' आदि। नीचें कछू गद्यात्मक लोकोक्ति हू देखी जाइ सकैं हैं-

- मंगनी के वैल के दाँत नाँहि देखे जात।
- ओखली में सिर दयौ तौ मूसल ते का डरु।
- चलती कौ नाम गाड़ी।
- एक तौ करेला दूसरौ नीम चढ्यौ।
- एक तौ गिलोय दूसरे नीम चढ़ी।

इन लोकोक्तिन के अतिरिक्त साहित्यकारन और कवियन के बहुत से ऐसे नीतिपरक वाक्य अरु काव्यात्मक उक्ति हैं, जो लोकोक्ति के रूप में प्रचलित है गई हैं, इनमें ते ज्यादातर कौ प्रयोग लोकमानस करबे लग्यौ है जैसें-

सूरदास- सूरदास कारी कामरि पै चढ़ै न दूजौ रंग।

कबीर- मोल करौ तरवार कौ पड़ौ रहन देउ म्यान।

तुलसी- प्रभुता पाइ काइ मद नाहीं।
सठ सुधरहिं सतसंगति पाई।
पारस परसि कुधातु सुहाई॥

घाघ- बाछा बैल बहुरिया जोय, ना घर रहै न खेती होइ।

भड्डरी- जे दिन जेठ बहै पुरबाई, ते दिन सावन धूरि उड़ाई।

भारतेन्दु- तीन बुलाए तेरह आये।

मैथिलीशरण- अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।

सोम ठाकुर- कारे पै दूजौ न रंग चढ़ै तापै गोरी कौ रंग चढ्यौ हम देखौ।

जाई तरै 'गरीब की लुगाई, सब की भौजाई', 'अंधन में कानौ राजा', 'अंधेर नगरी चौपट राजा, टका सेर भाजी टका सेर खाजा' जैसी लोकोक्ति किंवा 'काव्यात्मक उक्ति' साहित्यकारन की ई दैंन हैं।

स्रोत के आधार पैऊ लोकोक्तिन कूँ द्वै भागन में विभाजित कर्‌यौ जाइ सकै है-

1. साहित्यिक लोकोक्ति

2. साहित्येतर लोकोक्ति

जा विभाजन में जो साहित्येतर लोकोक्ति हैं, वे तौ विसुद्ध लोक-मानस की दैंन हैं हीं, परि जो साहित्यकारन द्वारा काव्यात्मक उक्तिन के रूप में कही गई हैं, वेऊ जब लोक के द्वारा अपनाय लई जाँय हैं, तब लोकोक्ति ही बनि जाँय हैं। कैऊ बेर तौ लोक में प्रचलित उक्ति कूँ ई सहित्यकार अपनाइ लेत हैं। जि आदान-प्रदान तौ चलत ई रहै है। लोक तौ महासमुद्र है जामें सब कछु समाइ जाय है।

इन सबरी लोकोउक्तिन कूँ संरचना के नजरिया ते तीन भागन में बाँटि सकैं हैं-

1. संयुक्त वाक्यात्मक लोकोक्ति, जैसें-नाम बड़े और दरसन थोड़े।

2. मिश्र वाक्यात्मक लोकोक्ति जैसें-जो गरजत हैं, वे बरसत नाहिं।

3. सरल वाक्यात्मक लोकोक्ति जैसें-अंधे के हाथ बटेर।

जा सिगरे विवेचन कौ सार जि है कै लोकोक्ति मुहावरेन की ई तरियाँ एक तरह के कथनबंध हैं। इन कथनबंधन कूँ 'कहावत' ऊ कहौ जाय है। लोकोक्ति अथवा कहावत की रचना लोकमानस द्वारा होय है। कबहू कोऊ व्यक्ति विसेसऊ काऊ काव्यात्मक सरस उक्ति की रचना करै है औरु बू रचना लोक में प्रचलित तथा स्वीकृत है जाय है, तब लोकोक्ति ही बनि जाय है। वैसें हर उक्ति, लोकोक्ति नाहिं होय, परि काऊ तथ्य, भाव या विचित्र सत्य कूँ चमत्कारपूर्ण ढंग ते प्रगट करिबे में समरथ उक्ति, लोकोक्ति की कोटि में आइ जाय है। लोकोक्ति औरु मुहावरेन में समानता के संगे कछु बातन में अंतर है जैसें- मुहावरेन में क्रियापद जरूर होय है, परि लोकोक्ति में जि जरूरी नांहिं। लोकोक्ति के जा स्वरूप औरु प्रयोग विवेचन के पाछैं ब्रज क्षेत्र में प्रचलित प्रसिद्ध लोक महाकाव्य 'ढोला' में जहाँ तहाँ आई' बहु प्रयुक्त लोकोक्तीन कौ संकलन ह्याँ प्रस्तुत करिबौ उचित होइगौ।

'ढोला' में लोकोक्तीन कौ स्वरूप-

ब्रज में अत्यधिक प्रसिद्धि कूँ प्राप्त 'ढोला' लोक महाकाव्य में विविध प्रकार की लोकोक्तीन कौ प्रयोग देखौ जाय है। 'ढोला' में जिन लोकोक्तीन कौ प्रयोग बहुत अधिक भयौ है बिनकूँ विवेचित करिबे ते जि तथ्य स्पष्ट है जावैगौ कै लोकोक्ति एक ओर तौ सांसारिक तथ्यन कौ उद्घाटन करैं हैं औरु दूसरी ओर मानव-समाज में प्रचलित मान्यतान, दारसनिक विचारन, धारमिक सिद्धान्तन, व्यावहारिक पच्छन, नैतिक धारणान आदि कौ स्पष्टीकरन ऊ करैं हैं। इनके प्रयोग द्वारा 'ढोला' गायकन नैं अपनी बहुग्यता और उर्वर प्रतिभा कौ परिचयऊ दियौ है। इनमें ते कितनीऊ लोकोक्तीन में उपदेसप्रद सूक्ति बिद्यमान हैं और कितनीऊ लोकोक्ति भारतीय जन-जीवन में व्याप्त विविध मान्यतान की संकेतिका हैं। बिनमें ते कछू लोकोक्ति ह्यां दई जाइ रही हैं-

1. देर होति ईस्वर के घर में रहै न सदा अंधेर-ईश्वर के घर देर है, अंधेर नहीं।
2. पाप घड़ा जब पूरन है जाइ फूटत लगै न पल की देर-पाप कौ घड़ा भर जावे पै शीघ्र फूटै है।
3. विधि विपरीत चलै नहिं चारौ-भाग्य के विपरीत काऊ की नहीं चलै।
4. होनहार ना मिटै मिटाई-होनी कूँ कोई नहीं मिटा सकै।
5. काया माया स्त्री जग में काऊ की न भई।
6. जिय मानस तन जग में दुरलभ जाहि बार-बार नहिं पायौजी।
7. होनी है बलवान जगत होनी बस कीनौ-होनहार बलवान है, जगत बाई के बस में है।
8. करम लेख ना मिटै करौ चाहै लाखन चतुराई।
9. जग में जीवन तुच्छ।

10. दुख सुख की बनि रही सार-दुख और सुख समभाव सौं रहें हैं।
11. सौति बुरी है चून की अरु साझे कौ काम।
12. जा तन लागै सोई तन जानत को जानें पीर पराई।
13. कहैं सिवराम रुकत नाहैं कबहूँ घर कौ चोर बगल कौ छिनरा।
14. या फूटी लिलारी कौ कोउ नाहैं साथी।
15. बुरी लोभ की भीय-लोभ की लालसा बुरी है।
16. चंदन ते लिपटौ रहै बिस ना तजत भुजंग।
17. नीच पिरीति औरु गुर तिल भोजन, परतिअ गमन ओस कौ सेवन-आओ आओ करि टेरें चारि। मोकौं देखतई दें मारि॥

    (नीच व्यक्ति ते प्रेम, गुड़ औरु तिल कौ भोजन, पराई स्त्री के संग सहवास औरु ओस में सोनौ-जे चारों व्यक्ति कूँ मार डारैं हैं।)
18. लाख खुसामद रोजु करौ परि गँवारु पिटे बिन कबहूँ न मानें।
19. समै बदलबे में नहिं लगै जरा हू देर।
20. ईश्वर की लीला अजमत है।
21. ना देखी सुनी नर-नाहर की यारी।
22. दानी बचन कबहूँ नहिं हारै।
23. मुँह झूठे कौ काला।
24. सत्य का सदा बोलबाला।
25. प्रीति निबाहैं द्वै जने कै सायर कै सूर।

जे कछू उदाहरन हैं। '*ढोला*' में तौ औरऊ विविध तरै की लोकोक्तीन कौ प्रयोग भयौ है, जिनमें धरम-नीति, समाज-नीति और लोक-नीति के संग-संग व्यावहारिक ग्यान असीम मात्रा में पायौ जाय है। लेख के आरम्भ में लोकोक्ति के स्वरूप और प्रयोग कौ विवेचन कर्यौ गयौ है, या विवेचन कूँ पुष्ट करिबे के ताँईं ब्रज के '*ढोला*' में प्रयुक्त भई कछू लोकोक्ति ह्याँ दै दई गई हैं। आसा करूँ हूँ पाठक इनते जरूर लाभ प्राप्त करिगे।

-सहायक प्राध्यापक : हिन्दी विभाग
कुसुमाबाई जैन कन्या महाविद्यालय
भिण्ड-477001 (म.प्र.)

जा सिगरे विवेचन कौ सार जि है कै लोकोक्ति मुहावरेन की ई तरियाँ एक तरह के कथनबंध हैं। इन कथनबंधन कूँ 'कहावत' ऊ कहौ जाय है। लोकोक्ति अथवा कहावत की रचना लोकमानस द्वारा होय है। कबहू कोऊ व्यक्ति विसेसऊ काऊ काव्यात्मक सरस उक्ति की रचना करै है औरु बू रचना लोक में प्रचलित तथा स्वीकृत है जाय है, तब लोकोक्ति ही बनि जाय है। वैसैं हर उक्ति, लोकोक्ति नाहिं होय, परि काऊ तथ्य, भाव या विचित्र सत्य कूँ चमत्कारपूर्ण ढंग ते प्रगट करिबे में समरथ उक्ति, लोकोक्ति की कोटि में आइ जाय है। लोकोक्ति औरु मुहावरेन में समानता के संगे कछु बातन में अंतर है जैसैं- मुहावरेन में क्रियापद जरूर होय है, परि लोकोक्ति में जि जरूरी नांहिं। लोकोक्ति के जा स्वरूप औरु प्रयोग विवेचन के पाछैं ब्रज क्षेत्र में प्रचलित प्रसिद्ध लोक महाकाव्य 'ढोला' में जहाँ तहाँ आई' बहु प्रयुक्त लोकोक्तीन कौ संकलन ह्याँ प्रस्तुत करिबौ उचित होइगौ।

'ढोला' में लोकोक्तीन कौ स्वरूप-

ब्रज में अत्यधिक प्रसिद्धि कूँ प्राप्त 'ढोला' लोक महाकाव्य में विविध प्रकार की लोकोक्तीन प्रयोग देखौ जाय है। 'ढोला' में जिन लोकोक्तीन कौ प्रयोग बहुत अधिक भयौ है बिनकूँ विवेचित क ते जि तथ्य स्पष्ट है जावैगौ कै लोकोक्ति एक ओर तौ सांसारिक तथ्यन कौ उद्‌घाटन करैं हैं औरु द ओर मानव-समाज में प्रचलित मान्यतान, दारसनिक विचारन, धारमिक सिद्धान्तन, व्यावहारिक प नैतिक धारणान आदि कौ स्पष्टीकरन ऊ करैं हैं। इनके प्रयोग द्वारा 'ढोला' गायकन नैं अपनी व और उर्वर प्रतिभा कौ परिचयऊ दियौ है। इनमें ते कितनीऊ लोकोक्तीन में उपदेसप्रद सूक्ति कि हैं और कितनीऊ लोकोक्ति भारतीय जन-जीवन में व्याप्त विविध मान्यतान की संकेतिका हैं। कछू लोकोक्ति ह्यां दई जाइ रही हैं-

1. देर होति ईस्वर के घर में रहै न सदा अंधेर-ईश्वर के घर देर है, अंधेर नहीं।
2. पाप घड़ा जब पूरन है जाइ फूटत लगै न पल की देर-पाप कौ घड़ा भर जावे पै शी
3. विधि विपरीत चलै नहिं चारौ-भाग्य के विपरीत काऊ की नहीं चलै।
4. होनहार ना मिटै मिटाई-होनी कूँ कोई नहीं मिटा सकै।
5. काया माया स्त्री जग में काऊ की न भई।
6. जिय मानस तन जग में दुरलभ जाहि बार-बार नहिं पायौजी।
7. होनी है बलवान जगत होनी बस कीनौ-होनहार बलवान है, जगत वाई के
8. करम लेख ना मिटै करौ चाहे लाखन चतुराई।
9. जग में जीवन तुच्छ।

लोकोक्तीन कौ ब्रजभाषा में जब प्रयोग करैं तौ ऐसौ लगै कै इन प्रयोगन के काजैं जि भाषा ही सर्वाधिक अनुकूल भाषा है। ब्रजवासीन के मुखसौं लोकोक्तीन कौ प्रयोग सुनकैं जि मालुम हौ नाँय परै कै वे लोकोक्ति बोल रहे हैं।

ब्रज में प्रचलित कहावतन कूँ तीन वर्गन में रखौ जा सकै-

1. ऐसी लोकोक्ति जो प्रभावशाली हैं पर उनकौ प्रचलन अपेक्षाकृत कम है।
2. ऐसी बहु प्रचलित लोकोक्ति जो हर कहूँ सुनवे में आती रहैं।
3. ऐसी लोकोक्ति जो मूलत: हैं तौ ब्रज की पर खड़ीबोली हिन्दी (राष्ट्रभाषा) नैं उनकूँ ज्यौं कौ त्यौं अपना लियौ है। हिन्दीकरण कर लियौ है।

तीनौं प्रकार की लोकोक्तीन के उदाहरण प्रस्तुत हैं जद्यपि उनकी संख्या-सीमा नाँय है सकै। जि तौ गंगा के प्रवाह की लहर हैं, नई-नई लहर बनें और पहलेबारी आगे सरकती जाँय। जैसैं अलंकार आभूषणन की गिनती नाँय करी जा सकै बैसैं ही लोकोक्तीन की गिनती नाँय है सकै। नई-नई लोकोक्ति प्रचलन में आवैं और प्रचारित हैकैं अपने कुटुम्ब कबीले में सम्मिलित है जाँय।

लोकोक्तीन कौ सही और पूरौ अर्थ व्याख्या करकैं नाँय बतायौ जा सकै। वो तौ गूँगे कौ गुड़ है- जो खायै वो स्वाद जानैं। सन्दर्भ के अनुसार सही प्रयोग सौं ही लोकोक्ति कौ मूलभाव समझ में आ सकै। पर जा लेख में उद्धृत समस्त लोकोक्तीन कौ वाक्यन में प्रयोग करकैं प्रस्तुत करनौ विस्तारभय सौं सम्भव नाँय, जाही ते केन्द्रीय भाव पकड़ कैं लोकोक्तीन कौ अर्थ प्रकट करिबे कौ प्रयास कियौ गयौ है। जा प्रकार ब्रज में प्रचलित लोकोक्तीन कौ स्वरूप सामई अवस्य आ सकैगौ।

क. ऐसी लोकोक्ति जो प्रभावशाली हैं पर उनकौ प्रचलन अपेक्षाकृत कम है-

1. भली भई मेरी गागर फूटी, दधि बेचन ते छूटी (कार्य कौ मूल स्रोत सभाप्त है जावे सौं कार्य रुक जानौ)
2. घर में बैद और हाय मेरी मैया (समस्या कौ समाधान अपने पास है फिर हू आज्ञानवस कष्ट उठावै)
3. कछू तौ सैयां बाबरे कछू पी लीनी भंग (भोरेभारे आदमी कौ जल्दी सौं बहकावे में आ जावौ)
4. सबै बराती मेरे भैया, मैं दूल्है कौ ताऊ (मैं ही सब कछू हूँ कौ अहंकार रखिवे बारौ आदमी)
5. जैसी तेरी कौमरी वैसे मेरे गीत (जैसे कूँ तैसौ व्यवहार)
6. सूत न पौनी कोरिया ते लठमलठा (बिना आधार के ही कलह करनौ)

7. औरन वुढ़िया सीख दे अपनी गाँठ भीतरी ले (अपनौ भेद छिपानौ और दूसरेन कूँ उपदेस् दैनौ)

8. चुल्लू में उल्लू और लोटा में गरक (अत्यधिक प्रभावी नसा)

9. जैसे सैयां घर रहे तैसे गये विदेस (व्यक्ति कौ हर प्रकार सौं अनुपयोगी सावित हौनौं)

10. करमहीन खेती करै, वरध मरै कै ऊखा परै (दुर्भाग्य सौं पीड़ित होनौ)

11. ज्यौं ज्यौं भीजै कामरी त्यौं-त्यौं भारी होय (दोष वढ़ते जावें तौ व्यक्ति कौ उवरनौ असम्भव है जाय)

12. काजर की कोठरी में कैसौऊ सयानौ जाय एक लीक काजर की लागि है पै लागि है (वुराई के सम्पर्क में रहिवे वारौ व्यक्ति वुराई सौं काहू प्रकार सौं भी नाँय वच सकै)

13. पढ़े फारसी वेचैं तेल, जे देखौ कुदरत के खेल (साधनापूर्ण योग्यता प्राप्त करवे पै हूँ हीन काम में लगवे की विवसता)

14. मथुरा की वेटी अरु गोकुल की गाय, करम फूटैं तो कहीं और जाय (व्यक्ति अपनी लगन और साध्य कूँ विवस हैवे पै हू नाँय छोड़नौ चाहै)

ख. व्रज की बहु प्रचलित लोकोक्ति-

1. जरी तौ जरी पर सिकी हू खूव (भरपूर कस्ट उठावे के वाद वाँछित लाभ प्राप्त है जानौ)
2. मानौ तौ देव नाँय तौ पत्थर है (योग्य व्यक्ति कौ प्रभाव स्वीकार करौ तौ लाभ मिल सकै नाँय तौ सम्पर्क व्यर्थ है)
3. घर कौ जोगी जोगना आन गाम कौ सिद्ध (अपने आत्मीय जन की योग्यता कूँ नकारकैं कम योग्यता वारे अन्य व्यक्ति कूँ महत्व दैनौ)
4. वड़े मियाँ तौ वड़े मियाँ छोटे मियाँ सुभान अल्लाह (छोटेन द्वारा वड़ेन सौं हू वड़ी वात कहनी)
5. ताल खुदौ ही नाँय मगर कूद परे (काम पूरौ हैवे ते पहलें ही लाभ उठावे वारेन कौ आ धमकनौ)
6. कारे-कारे सभी वाप के सारे (एक व्यक्ति के दोष के आधार पै सभी लोगन कूँ दोषी मान लैनौ)
7. सावन के अंधे कूँ हरौ ही हरौ सूझै (एक वार सफलता पा जावे वारौ व्यक्ति हमेशा ही सफल होतौ रहनौ चाहै)
8. घौंटू पेट कूँ ही झुकैं (हर व्यक्ति अपने लोगन के हित कूँ ध्यान में रखकैं ही काम करै)

9. चौं अन्धौ नौतौ चौं दो जिमाऔ (अपनी दुर्बलता प्रकट करवे के बाद दूसरेन कूँ लाभ पहुँचावे कूँ विवस हौनौ परै)
10. ऐसे नाँय तेरे तिलसटे (दूसरेन कौ महत्त्व अस्वीकार कर दैनौ)
11. उठी पैंठ आठवे दिन लगै (लाभ कौ औसर चूक जावे पै फिर सौं मिलनौं कठिन है जाय)
12. गोद के कूँ छौंड़ि पेट के की आस करै (वर्तमान में मिलवे बारे लाभ की परवाह न करकैं भविस्य में मिलवे बारे की आसा करै।)
13. कन-कन जोरैं मनजुरै, बूंद-बूंद घट जाय (थोरौ थोरौ लाभ उठाते जावे सौं मन वांछित लाभ मिल जाय अरु छोटी मोटी हानि पै ध्यान न दैवे सौं वड़ी भारी हानि है जाय)
14. गये मियाँ मक्के कूँ (बनतौ बनतौ काज अचानक ही बिगर जावै)
15. बाबा सोवै जा घर में टाँग पसारै वा घर में (अपनी समस्यान में दूसरेन कूँ जबरदस्ती उलझानौ)
16. न बाबा आवै न घंटा बाजै (काम पूरौ करवे बारे की प्रतीक्षा में झुंझलानौ)
17. ओढ़ लई लोई कहा करैगौ कोई (निर्लज्ज व्यक्ति पै काहू कौ प्रभाव नाँ परै)
18. बन गयौ वृन्दावन (काम में सफलता प्राप्त है जानी)
19. लुट गयौ भरतपुर (कियौ गयौ काम अचानक मटियामेट है जानौ)

ग. व्रज में बहु प्रचलित ऐसी लोकोक्ति, राष्ट्रभाषा नैं जिनकौं हिन्दीकरण करकैं आत्मसात कर लियौ है-

1. जाकी लाठी वाकी भैंस (जामें ताकत होय वो आदमी अपनौ काम बना लेवै)
2. कौला की दलाली में कारे हाथ (दूसरेन के झंझट में परिवे सौं हानि जरूर होवै है)
3. न रहैगौ बाँस, न बजैगी बांसुरी (काम बनिवे कौ आधार ही मिट जावै तौ फिर काम नाँय है सकै)
4. ओखरी में मूँड़ दियौ तौ मूसरन ते कहा डर (काम पूरौ करवे कौ संकल्प लैवे के बाद बाधान ते नहीं डरनौ चइए)
5. दुविधा में दोऊ गये माया मिली न राम (ज्यादा सोच विचार में उलझवे ते काम में सफलता पावे कौ समय निकल ही जाय)
6. सात पाँच की लाकड़ी एक जने कौ बोझ (थोड़ौ थोड़ौ त्याग कियौ जावै तौ बड़े लाभ कौ काम है सकै)

7. विन माँगे मोती मिलैं माँगे मिलै न भीख (प्रयत्न करवे पै हू जो सफलता नाँय मिलै वो कवहूँ -कबहूँ अनायास ही मिल जावै है)
8. आधी छोड़ साझी कूँ धावै आधी रहै न साझी पावै (लालच करवे सौं आदमी कूँ पछतानौ ही पड़ै)
9. ऊधौ कौ लैनौ न माधौ कौ दैनौ (दूसरौ के झंझट ते अपने आपकूँ एकदम अलग रखनौ)
10. कहे ते कुम्हार गधा पै नाँय चढ़ै (खुशामदी व्यक्ति जल्दी सौं काम करबे कूँ राजी नाँय होय)
11. तीन लोक ते मथुरा न्यारी (अपनौ दृष्टिकोण सम्पूर्ण समूह सौं अलग रखनौ)
12. वाँबी में हाथ तू डार मन्तर मैं पढ़ूँ (अपनौ बचाव करते भये दूसरेन कूँ गलत काम करबे कूँ उकसानौ)
13. बोयौ बेड़ बबूर कौ·तौ आम कहाँ ते होय (गलत काम करबे के बाद अच्छौ परिणाम नाँय निकर सकै)
14. मन मन भावै मूड़ हलावै (मन में स्वीकार करबे की भावना रखते भये दिखावटी मनाही करनौ)
15. तू डार-डार मैं पात-पात (लोगन के बाधा डारबे पै हू अपनौ काम पूरौ करवे की ठान लैनौ)

एक बात और। ब्रज में नई-नई लोकोक्ति हू प्रचलन में आय रहीं हैं, जो धीरें-धीरें प्रचलित है रही हैं। बानगी कूँ द्वै लोकोक्ति प्रस्तुत हैं-

1. मुर्गा बाँग न दैं तौ कहा सूरज न निकरैगौ (व्यक्ति विसेस सहयोग न दे तौ कहा काम पूरौ न होयगौ)
2. खद्दर के नीचे रेसमी बनियान देखलो (आचरण और व्यवहार में भिन्नता रखवे वारौ व्यक्ति)

प्रचारित हौंते हौंते जाही प्रकार सौं नई-नई लोकोक्ति व्यवहार में आती जामिंगी और अपनी पार्टी कूँ मजबूत बनामिंगी।

-1/11, वल्लभसखा सदन,
पंडित निवास, बल्लागली, मथुरा (उ.प्र.)-281001

साहित्य, संभाषण अरु लोकोक्ति

–डॉ. नेमीचन्द श्रीमाल

एक कहावत के अनुसार लोकोक्ति (कहावत) कूँ लोकानुभव की दुहिता मानौं है। "The proverbs are the daughters of daily experiences." अरस्तू कौ हू यही मत है कै कहावत "तत्वज्ञान के खण्डरन में सौं चुनकें निकारौ गयौ टुकड़ा अरु बचौ भयौ अंस है।" वस्तुतः भासा की सम्प्रेषणीयता में लोकोक्तीन की धार ही वाकी मारक क्षमता है। डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी के अनुसार "काऊ भासा में बातचीत के तांईं या लिखवे के तांईं 'कहावतन' कूँ सार्थक अलंकार मानौं जाय है। इनकूँ हम भासा-सौन्दर्य कौ शैलीगत आवस्यक अंगऊ कह सकैं हैं।"

संस्कृत में लोकोक्ति या कहावत कौ रूप अति प्राचीन सिद्ध होय है। कहावत सब्द की व्युत्पत्ति कूँ विद्वान लोग भले ही कथा-वार्ता सौं जोड़ें, याकौ वर्तमान अर्थ 'कहावत' ही होय है। जीवन में व्यौहार में लाए गए प्राचीन काल के छोटे-छोटे कथनन कूँ हू कहावत कहौ जाय है।

साहित्य अरु संभाषण में कहावतन कौ महत्वपूर्ण स्थान है। डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी के अनुसार "भासा कौ नमकीनोपन या लावण्य यामें प्रयुक्त प्रवाद अरु कहावतन में छिपौ रहै है। कहावत प्राचीन सिक्कान की भाँति उपयोगी अरु बहुमूल्य होय हैं, जिनके आधार सौं भासा के इतिहास पै प्रभावसाली प्रकास परै है। कहावत दीर्घजीवन पै आधारित अनुभवन कौ परिणाम हैं जो अपने में परिस्थात कहानीन कूँ शताब्दीन तक कहती रहैं। याही सौं डिजोली इन्हें [illegible] फर्नीचर बतावै है जिन्हैं सताब्दी बीत जाबे पैऊ दीमक नाँय लगै है।

कहावत कथान के सूत्र रूप होंय हैं, लघु संस्करण अरु विस्तृत वर्णन के लघुन्यास होंय हैं।

अर्थविज्ञान की दृष्टि सौं लाघ्वीकरण (लोपीकृत [illegible]) कौ चरम उत्कर्ष कहावतन में लक्षित कियौ जाय सकै है। समय के साँचे में गलकें, ढलकें, [illegible] के समान [illegible] रह जाँय हैं, जिनमें इतनी प्रभा केन्द्रित है जाय है कै मूल कथा के [illegible] कूँ हू आलोकित कर दैं हैं। साँची बात तौ जि है कै कहावत [illegible] के तांईं उपस्थित कियौ गयौ प्रमाण है, मानौं भयौ आप्त वाक्य है। [illegible]

अर्थ-ग्रहण में हमारौ मन हिचकिचा रहौ होय तौ वायै काऊ अनुकूल कहावत सौं पुस्ट करकैं अधिक स्पष्ट अरु प्रभावशाली रूप में ग्रहण कियौ जा सकै है। काऊ तथ्य की प्रामाणिकता कूँ कहावत सौं वड़ौ और कोऊ प्रमाण नाँय होय।

सव जानैं कै "कहावती न्यायालय" में निर्णय होवे पै वाकी कहूँ कोई अपील नाँय होय है। कहावती न्यायालय कौ यह निर्णय अर्थ कूँ स्पष्टाभिव्यक्ति दैवेके ऊ अतिरिक्त प्रभावान्विति अरु संप्रेषणीयता कूँ ऊ प्रदान करै हैं। कहावतन ते होवे वारौ साधारणीकरण सीधौ मानव हृदय कूँ छूए। "वँधी वुहारी लाख की, विखरे पीछें खाक की" में एकता की जो वकालत करी है ऐसी काऊ और वाक्य ते इतेक प्रभावशाली नाँय है सकै। क्षणिकता, नश्वरता कूँ अभिव्यक्त करिवे के ताँईं "चार दिनन की चांदनी अरु फेर अंधेरी रात" कितेक सशक्त कहावत है।

"घर कौ भेदी लंका ढावै" कहावत नें रावण अरु विभीषण की चारित्रिक विशेषतान के संग पूरे प्रकरन कूँ साकार कर दियौ है।

संभाषण, लोकानुभव अरु साहित्यसृजन के ताँईं कहावत अरु मुहावरे भासा की स्थायी सम्पत्ति होंय हैं। वे प्रोक्ता कूँ ऊर्जा, श्रोता कूँ संवेदना अरु घटना कूँ आत्मीयता प्रदान करैं हैं। यामें कविन की वानी कौ हू महत्वपूर्ण योगदान रहै हैं। विनके कथन हू लोक जिह्वा कौ सहारौ लैकैं अमर है जाएँ। युगदृस्टा कविन के मर्मस्पर्सी कथन लोकोक्ति वन जाएँ। काव्य उक्ति लोकोक्ति में वदल जाएँ जैसैं-" अवला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आँचल में है दूध और आँखों में पानी।"

अंत में कछू ऐसी काव्य उक्ति दई जा रही हैं जिन्नें लोकोक्ति कौ रूप धारन कर लियौ है। ऐसी और हू काव्य उक्ति हैं जो जनमानस के हृदय-पटल पै छाई भई हैं और जन-जन कूँ प्रभावित करैं हैं। समय की राख में हू विनकी चमक वरकरार वनी भई है। अर्थ की गंभीरता, तीव्रता अरु संवेदनसीलता के संग विनकी सहज संप्रेषणीयता विन्नैं लोकोक्ति कौ रूप प्रदान करै है।

कछु काव्य उक्ति जो लोकोक्ति वन गई हैं-

1. भय विन होत न प्रीति गुसांई।

2. प्राण जाय पर वचन न जाई।

3. होइहि सोई जो राम रचि राखा।

4. छुद्र नदी भरि चलि उतराई।

5. पराधीन सपनेंहु सुख नाहीं।

6.वाजि पराए पानि पर तू पच्छीन न मारि।

7. अली कली ही सौं बंध्यौ आगे कौन हवाल।

8. महिमा घटी समुद्र की रावन बसौ परौस।

9. चन्दन विस व्यापै नहीं लिपटे रहत भुजंग।

10. होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

11. जो तोकूँ काँटा बुवै ताहि बोय तू फूल।

12. चार दिना की चाँदनी फेर अँधेरी रात।

13. जहाँ काम आवै सुई कहा करै तरवारि।

14. तेते पाँव पसारिए, जेती लम्बी सौर।

15. दुविधा में दोनों गए, माया मिली न राम।

16. विन माँगे मोती मिलैं, माँगे मिलै न भीख।

17. खाई खनै जो आन कूँ ताकौं कूप तयार।

18. आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास।

19. चन्दन की चुटकी भली, गाड़ी भरौ न काठ।

20. जिन ढूँढ़े तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ।

21. घर कौ जोगी जोगना, आन गाँव कौ सिद्ध।

इन काव्य उक्तीन की सूची कूँ काफी लम्बौ करौ जाय सकै। विस्तार सौं बचकैं यही कही जा सकै कै भाया और भासण, संवाद और साहित्य में कहावत अलंकार की भांति हैं जिनकी उपेक्षा नाँय करी जाय सकै। लच्छेदार सब्दावली कौ अपनौ प्रभाव होय। अपनौ महत्व होय। याकूँ लोकोक्ति ही उत्पन्न कर सकैं हैं।

-श्रीमाल अकादमी
9, सारस्वती नगर, आगरा रोड, दौसा-303303

लोकमानस की सूक्ष्म दृष्टि लोकोक्तीन में

—डा. विश्वनाथ याज्ञिक

लोकोक्ति सौं अभिप्राय-

लोकोक्ति (लोकोक्ति=लोक उक्ति) जनोक्ति है। लोककथन है। याकूँ मसल कहकैं हू जनायौ जाए। रोचकता सौं संयोजित हैकैं भावपोसण कौ ससक्त और प्रभावसाली माध्यम वनै है। जि प्रज्ञामयी, नुभव संपुष्टा, जनाभिव्यक्ति लोकज्ञानानुभूति की चारु मंजूसा है। वाकौ साधारणीकरण है। "कहावत" रूप में लोकोक्ति चमत्कृत ढंग सौं संक्षेप में अनुभवजन्य वात है, जाकूँ सूचक वाक्य की हू उपमा दई जाय सकै। अँग्रेजी साहित्य में या के पर्याय हैं-Maxim या Proverb. चैम्बर डिक्सनरी में Maxim की व्याख्या है- "A Saying Which Serves as a rule or guide. It is a witty saying or a proverb." Proverb के वारे में कहौ है- "A short familiar sentence expressing a well-known truth or moral lesson. It is a by word which gets widely spoken."

लोकोक्ति की खूवी-

लोकोक्ति वहुजन (समष्टि) सम्मत घनीभूत अनुभूतीन की सारभूत, रमणीय और मर्म स्पर्शिनी अभिव्यंजना है। यह समष्टि प्रज्ञा कौ समुच्चय है। यामें सव्द विन्यास की मनोरमता, भावाभिव्यक्ति की विसदता, संक्षिप्तता (समासत्व) की अवस्थिति, नीति कौ समाहित्व, क्षेमद सत्योद्‌घाटन अरु सच्ची पथ-प्रदर्सन-क्षमता रहै है। यासौं मानवीय जीवन कौ परिस्करण होय अरु उत्कृष्टीकरण सुसाध्य वनै है। लोकोक्ति में हृदय स्पर्शन कौ सामर्थ्य अरु जीवन के विविध क्षेत्रन में संचित ज्ञान, रोजमर्रा के व्यौहार माँहिं उपयोगी वातन कौ प्रस्तुतीकरण रहै है। याकी अपनी प्रभविष्णुता (अनूठौपन) चित्ताकर्षक रहै है। अपनी संरचनात्मक अरु वैचारिक सम्पन्नता के कारन लोकोक्ति में जो अभिव्यक्ति-सूक्ष्मता आ है वू याकूँ व्यापकता प्रदान करै है।

संस्कृत साहित्य में लोकोक्ति-

संस्कृत कौ नीति साहित्य विपुल मात्रा में है। सूक्ति अरु सुभासितन कौ अपार भंडार है। लोको

कौ अपनौ प्रभावी बाँकौपन मन पै एक चिरस्थायी प्रभाव छोड़ै है। ''सुलभाः पुरुषा राजन् सततं प्रिय वादिनः। अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः'' की वाल्मीकि रामायण की लोकोक्ति एक सास्वत सत्य कौ प्रतिपादन करै है। कुमार संभव कौ, ''एकोहिदोषो गुण-सन्निपाते, निमज्जतीन्द्रोः किरणेष्विवांकः।'' सर्वदा सुसंगत वाक्य है। किरातार्जुनीय की लोकोक्ति-''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।'' अरु सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदोपदम।'' लोकमानस में अविस्मरणीय है। ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमंते तत्र देवताः'' की मनुस्मृति की जनोक्ति आजहू निर्विवाद है।

लोकनाट्य, लोकगीत (संगीत) अरु लोककथान की भाँति लोकोक्ति अपनी लोकप्रियता सौं अप्रतिम बनी भई है। लोकसाहित्य में लोकजीवन की झाँकी मिलै है। मानव की अन्तरवृत्तीन कौ मौलिक रूप मुखरित होय है। यामें लोकहृदय की भावनान अरु लोकमानस की कल्पनान की पारदर्सिनी अभिव्यक्ति होय है जो सहज स्फूर्त अरु पूरी तरियाँ प्राकृतिक होय है। यह व्यक्ति की नहीं समाज की उपज है। यामें स्थानीय संस्कृति की, राष्ट्रीय आस्था की अरु सामाजिक चिन्तन को परछांइ रहै है। विनोबा भावे के अनुसार ''लोकसाहित्य लोकमानस कौ दर्पन है।'' श्री रामनरेश त्रिपाठी नैं ''कविता कौमुदी'' के लोकोक्ति खंड माँहि अपनौ अभिमत प्रकट करते भये कह्यौ है कै 'लोकोक्ति सर्वथा मौलिक है। यामें लोक प्रतिभा चित्रित होय है।'

हिन्दी साहित्य में लोकोक्ति-

लोकोक्तीन की सर्वजनीन विद्यमानता है। हिन्दी की सिगरी बोलीन में इनकौ अपनौ उल्लेखनीय अरु उत्कर्षक प्रभाव साफ झलकै। अपनी सादगी में जे अनुपम हैं। इनकौ अचूक वर्चस्व सर्वमान्य बनौ है। प्रदेस विसेस की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक विचारधारान, परंपरान, विस्वासन, आकांक्षान, जीवन के प्रति दृष्टिकोन अरु सांस्कृतिक ढाँचे की लोकोक्ति सम्यक अरु सक्षम परिचायक सिद्ध भई हैं। अपनी अभिधा अरु भव्य व्यंजना में इनकी लाक्षणिक आभाऊ प्रोजज्वल रही है। ई सर्वमान्य लोकरुचि की कसौटी है। इनमें देसकाल कौ बन्धन नाँय। इनके सूत्र मानव जीवन सौं मिले जुले हैं। प्राचीन परम्परा-स्नात लोकोक्ति मौखिक साहित्य के रूप में मुख्यतया 'स्रुत' रही हैं। इनकौ जनम मानव के सहज ग्यान सौं अनुयोजित जामें मनोरंजन, आदर्श-प्रतिपादन अरु मानवीयता के प्रकर्ष की भावनान कौ पुट रह्यौ है। ई ज्ञान विसेस है जो सहज, सरल और सुबोध रूप में सर्वसाधारन के ताँईं सुलभ बनौ है। आनंद के सतत प्रवाह में लोकोक्तीन की आत्मा बसी है। यह समष्टि बौद्धिकता कौ प्रतिरूप बनी हैं।

रहीम, तुलसी, बिहारी, ठाकुर, सूरदास आदि नैं लोकोक्तीन कौ घनौ सहारौ लैकैं अपने कथन (रचना) कौं लोकरंजक अरु जनग्राही बनाबे कौ सद्प्रयास करौ है।

नीति कौ प्रतिपादन लोकोक्तीन कौ स्वीकार्य विसै रह्यौ है। जो लोकोक्ति के माध्यम सौं अधिक

ग्रहणशील, अधिक प्रभावोत्पादक अरु अधिक स्थायित्व प्राप्त कर सकौ है। कछू उदाहरन प्रस्तुत हैं-

1. लग जाय तौ तीर; नहीं तौ तुक्का (संयोग बैठबे की आशा)

2. शौकीन वुढ़िया, चटाई कौ लहंगा। (अनावश्यक शौक की अति)

3. हाथ कंगन कौं आरसी का ? (प्रत्यक्षं किं प्रमाणम्)

4. विधि कौ लिखौ, को मेटनहार ? (प्रारब्ध अर्थात् भाग्य प्रधान है)

5. राम-राम जपना, पराया माल अपना (धोखे सौं पर धन हड़पनौ)

6. मरता क्या न करता (मजबूरी सव करावै है)

7. मन के हारे हार है मन के जीते जीत (साहस बनाए रखनौ चईए)

8. भरी जवानी माँझौ ढीलौ (यौवन में स्वास्थ्य कौ बिगड़नौ)

9. मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक (पहुँच कौ सीमित होनौ)

10. बावरे गाँव में ऊँट जानौ (अनूठी वस्तु कौ प्राकट्य)

11. बद अच्छा बदनाम बुरा (बदनाम होनौ खराब है)

12. पढ़े फारसी बेचैं तेल यह देखौ कुदरत कौ खेल (योग्य होवे पै निम्न कार्य की बाध्यता)

13. पाँचों उँगली घी में (लाभ ही लाभ होनौ)

14. निर्वल के वल राम (भगवान ही गरीब के रक्षक)

15. न रहैगौ वाँस न बजैगी बाँसुरी (झगड़े की जड़ समाप्त करनौ)

16. नाम बड़े और दर्शन छोटे।

17. धोवी कौ कुत्ता न घर कौ न घाट कौ।

18. दीवारों के भी कान होना।

19. दुविधा में दोनों गए, माया मिली न राम (एक संग कई कामन सौं भटकाव)

20. तीन लोक सौं मथुरा न्यारी (सवसौं अलग विचार)

21. गोद में छोरा, नगर में ढिंढोरा।

22. खरी मजूरी चोखा काम।

23. ऊधो के दैवे में, न माधो के लैबे में।

24. डूबते कूँ तिनके कौ सहारौ।

25. भैंस के आगें बीन बाजै, भैंस खड़ी पगुराय।

-69, आर्यनगर, लखनऊ-22600

लोकोक्ति लोकसाहित्य के बौध्दिक पक्ष कौ एक विशिष्ट रूप है। लोकोक्ति ऐसी अज्ञातनामा सूक्ति हैं जिनमें प्रज्ञा, नीति अरु व्यवहार की त्रिवेणी कौ संगम रहै है।

-डॉ. शशि शेखर तिवारी

लोक की अनुभव-सुता

– डॉ.जीवन सिंह

'व्रजशतदल' के सम्पादक जी नैं व्रज की लोकोक्तीन पै कोई अपनी वात लिख कैं भेजिवे की कही है। विनकी चिट्ठी नैं सोच में डार दियौ कै का लिखूँ। एक तौ मन माँहि आई कै कछू लोकोक्तीन कौ संग्रह करिकै विनकूँ एक लेख के सूत्र में वांधि कैं पिण्ड छुड़ाऊँ। पर मन नैं नाँय मानी। दिल नैं ऊ गवाही नाँय दई, हाँ चालाक वुद्धि नैं कछू जोर-जार कैं लिख दैवे की जरूर ठानी। पर मैंनैं देख्यौ है कै सिरजन के मामले में जौलौं हृदय और वुद्धि कौ मेल ना है जाय, तौलौं वात कछू वनै नाँय। या संदर्भ माँहि मोय कविवर विहारी की याद ह्वै आई है, जिननैं अपनी वात कही तौ अध्यात्म-प्रसंग में है, पर वाकौ प्रयोग लोकोक्ति यानी काऊ लोकसत्य के दृष्टांत की तरियाँऊ कियौ जा सकै है। विन्नैं कही है कै हमारौ मन एक घर की तरियाँ है, यामैं जव हम काऊ कूँ निमंत्रण दैकैं वुलामैं तौ सवसौं पहलैं या घर के वंद दरवज्जे खोलने परैं। पर ह्याँ तौ कपट-कपाट जुरे भए हैं, जिनमें झूंठ-साँच की साँकर लगि रही हैं अरु तृष्णा के वड़े-वड़े तारे लटक रहे हैं। फिर है काऊ की मजाल कै याके भीतर प्रवेस करि सकै? काऊ चोर-उचक्का, उठाईगीरा या डाकू की वात तौ कहूँ नाँय, कोई भलौ मानस तौ यामें घुसिवे की हिम्मत नाँय करि सकै। तौ विहारी नैं कही है-"तौ लगि या मन-सदन में, हरि आमैं केहि वाट। विकट जटे जौं लगु निपट, खुटैं न कपट-कपाट।" मेरे विचार सौं ह्याँ हरि नाम भगवान श्रीकृष्ण कौ है जरूर, पर वाकौ अर्थ-विस्तार इतनौ है कै ई एक प्रतिमान है लोकहित सौं जुरे भए व्यापक लोकसत्य कौ। जिई वात है कै कैसौई युग-परिवर्तन है जाय, याकी अरथ-भंगिमाऊ वाई तरियाँ अपने नए रूप में आ जाय। यामैं वुराई के विरुद्ध अच्छाई कौ ऐसौ सच्चिदानंद रूप छिप्यौ भयौ है कै याकी व्याख्या अनेक तरियाँ सौं करी जा सकै।

उदाहरण के ताँई हम आज के अपने जमाने कूँ ई देख लैं। हमारौ आज कौ अपनौ जमानौ लोकतंत्र कौ जमानौ है। ग्यान-विग्यान में पहलैं सौं वौहत आगैं वढ्यौ भयौ जमानौ है। सुख-सुविधान में ऊ पहले सौं इक्कीस ई ना, इकत्तीस है। आदमी के ढिंग दौलत वढ़ी है। चीजन के अम्वार लग रहे हैं। हर रोज नई ते नई चीज वजार में आ रही हैं। ऐसी-ऐसी सुविधा की चीज आ गई हैं कै जिनकूँ देखि कैं दाँतन तरे उँगरियां दवानी परैं। एक जमानौ हतौ, जव आदमी कूँ ना तौ माया ई मिलै ही अरु ना राम

ई। या बजह ते कहावत बनी-'दुविधा में दोऊ गए माया मिली ना राम।' पर आज के जमाने में माया खूब मिल रही है। माया के मामले में छप्पर फटि रहे हैं। आज कौ आदमी माया कूँ हाथ सौं ना जान दै रह्यौ। सिगरे प्रपंच ऊ माया के ताँईं ई कर रह्यौ है। बात तौ ह्याँ तक आ पौंहची है कै राम कौ उपयोगऊ, माया पाइबे के ताँईं करिबे लगि पर्‌यौ है। अब आदमी कूँ या मामले में कोई दुविधा ना रही है कै वाकूँ माया पानी है या मायापति राम कूँ। मायापति राम कूँ पाइकैं ऊ कहा करैगौ, यामें तौ कष्ट ई कष्ट हैं। बिनके संग अयोध्या कौ राज ना हतै। बिनके संग तौ बनवास की पीड़ा है। बिनके संग मोटर-गाड़ी कहाँ हैं? बिनके संग तौ कुस-कंटक हैं। पदयात्रा है। बिनके संग ऊँची-ऊँची भव्य कोठी-अट्टालिका, महल-प्रासाद कहाँ? बिनके संग तौ पर्णकुटी हैं। बिनके संग छप्पन भोग की बात तौ दूर, छोटे-मोटे पकवानन की गंध ऊ कहाँ? बिनके संग तौ कंदमूल फल हैं। वहाँ तौ ईंधन-पात अरु किरातन सौं मित्रता है। या दुनिया के ठाठ निराले हैं, पर बिनकूँ पाइबे कूँ आदमी कूँ अपनौ सुभाव बदलनौ परै। कष्ट की बात ई है कै बिनके मंदिर बनवाइबे की बात करिबे बारे तौ सुरसा के मुँह की तरियाँ बढ़े जा रहे हैं बल्कि और ज्यादा ठीक तरियाँ सौं कहूँ तौ मक्खी-मच्छरन की तरियाँ बढ़ते जा रहे हैं पर अपने सुभाव-संस्कार कूँ बदलतौ भयौ कोई नाँय दिखाई दै रह्यौ। जिई कारण है कै ऊपर कहे भये बिहारी के दोहा कौ अरथ आजऊ बारंबार मन माँहि बरसा के बादरन की तरियाँ उमड़-घुमड़ रह्यौ है।

पर उमड़न-घुमड़न की कै कौड़ी उठैं। ह्याँ तौ हालत ई है गई है कै जौलौं काऊ के खुद पामन माँहि बिवाई नाँय फटैं, तौलौं बाकू पराई पीर समझि ई नाँय परै। सिगरौ संसार तौ सुखिया है, खा ले पेट भरि कैं। सबेरे ते संझा तलक कछू न कछू ठूँसतौ ई रहै अरु सो ले। बस जिई दो काम रह गये हैं। कबीरदासजी नैं या दुनिया के रंग-ढंगन कूँ देखिकैं बौहत पहले ई कहि दई हती कै-'सुखिया सब संसार है, खाबै अरु सोवै। दुखिया दास कबीर है जागै अरु रोवै।' सच्च हू जिई है कै जो जागौ है बाई कूँ रोनौ पर्‌यौ है। मरनौ तौ समझदार कौ ई होबै। सोते भए लोगन नैं तौ अपने अंगा ई सेके हैं। बिनकूँ अपने सिबाय और काऊ ते कछू मतलब नाँय रह्यौ। बे तौ उलटे, फसल में खर्तुआ की तरियाँ उगि कैं [illegible] कूँ चौपट करि सकैं। हमारे ब्रज की सीमा सौं लगे भए मेवात में मीरासी गायौ करैं-

खेत बिगाड़ै खर्तुआ, सभा बिगाड़ै कूड़।
ब्याह बिगाड़ै लालची, कर दे केसर धूर॥

ये ऐसी बात हैं, जो आदमी नैं अपने अनुभव सौं कही हैं। [illegible]
सीधौ अनुभव-सुता बतायौ गयौ है। हमारी हिन्दी की [illegible]
ब्यौपारी, सिल्पी-कारीगरन नैं बनायौ है। बिनके कठोर [illegible]
सौं निकसे भये सत्य इन कहावतन कौ सिंगार हैं। [illegible]
देखौ अरु पंच-पंचायतन माँहि ज्ञानी अरु अनुभवहीन [illegible]

खर्तुआ' अरु 'सभा बिगारैं कूड़' जैसी बातन माँहि छिपी भई सचाई कूँ ना तौ रचि सकै अरु ना ही समझि सकै। ये कोरी कहावत नाँय हतैं बल्कि ये जीवन-क्रियान के बिम्ब हतैं। जो इन क्रियान के जितनौ नजदीक है ऊ उतनौ ई इनकौ आनंद लै सकै अरु इनके भीतर छिपे भए मरम तक पौंहच सकै। छल-परपंच सौं जुरे भए लोगन में ऐसी बात रचवे की ताकत कहाँ कै वे लोक के होठन पै विराजमान है जाँय।

कहावतन कौ चल्न बौहत पुरानौ है। एक दिना की बात है, मैं वाल्मीकि की 'रामायण' कौ पाठ करि रह्यौ हतौ। बाके अयोध्या कांड माँहि जब भरत जी अपने बड़े भैया श्रीराम कूँ मनाइकैं वापस अयोध्या कौ राज संभारवे की विनती करिवे चित्रकूट पै पौंहचे अरु बिन सौं बार-बार बिनै करते भये कहिवे लगे कै या जग में आप की बराबरी कौन करि सकै। ह्याँ तौ ऐसे लोगन की भरमार हतै, जो नैंक छींकऊ आ जामैं तौ पूरे घर-बार कूँ आसमान तक उठा लें, नैंक उँगरिया चिर जाय तौ समझौ कै परलै है गई। दूसरी ओर नैंक कछू मिल जाय तौ अकड़ के मारें अमचूर है जाँय। मूसे कूँ हरदी की गाँठ कहीं मिल जाय तौ वू खुद कूँ ई पंसारी समझ बैठै। या दुनिया कौ रिवाज तौ जिई है कै ह्याँ अधजल गगरी ई छलकै। या प्रसंग माँहि भरत जी के मुखारविंद सौं कहवाई गई कऊ तरियाँ की बातन माँहि पुरुषोत्तम राम के चरित्र कूँ प्रकासित करिवे वारी ई बात खास तरियाँ सौं मन कूँ भीतर तक भिगो गई-

यथा मृतस्तथा जीवन: यथासति तथा सति।
यस्यैष बुद्धिलाभ: स्यात् परितप्येत केन स:॥

अर्थात् जो मनुष्य सुख-दुख, जीवन-मृत्यु अरु चीजन के भाव-अभाव माँहि समरस अरु समबुद्धि है, जाकूँ ऐसी विवेकवारी बुद्धि मिल गई है, बाकूँ फिर संताप क्यों होयगौ? याई संदर्भ माँहि एक जगह भरत जी नैं अपने पिता दशरथ जी के बारे में, एक 'पुराश्रुति' यानी कहावत कौ सहारौ लैकैं अपने विचार कूँ पुष्ट कर्‌यौ है। बिननैं कही है-

अन्तकाले हि भूतानि मुह्यन्तीति पुरा श्रुति:।
राज्ञैवं कुर्वता लोके प्रत्यक्षा सा श्रुति: कृता।।

अर्थात् लोक माँहि ई बात प्रचलित है कै जब काऊ प्राणी कौ अन्तकाल आवै तौ बापै मोह सवार है जावै अर्थात् बाकी बुद्धि ई काम करनौ बंद कर दे। कहमें ऊ हैं-'विनाशकाले विपरीत बुद्धि:।' राजा नैं ऊ वैसौ ई काम करिकैं या लोकोक्ति कूँ ई प्रत्यच्छ कर दीन्हौ है।

अनेक तरियाँ के रंग-बिरंगे जीवनानुभवन सौं भरौ भयौ ऐसौ खजानौ हमारे आसपास इतनौ बिखरौ भयौ है कै समेटवे-सकेरवे वारे होंयँ तौ बासौं लोक के मनोविग्यान अरु सद्भावन कौ ब्यौरौ तैयार कर्‌यौ जाइ सकै। सच्ची बात तौ ई है कै कहावतन कौ सबसौं बड़ौ अरु पहलौ काम समाज माँहि व्यक्ति

अरु समाज, दोनूँ स्तरन पै फैली भई बुराईन कौ विरोध करिकैं अच्छाई की स्थापना करनौ है। देख्यौ जाय तौ कहावतन कौ काम आदमी कूँ सीख दैबौ है। पर सीख दैबे के बारे में एक बात की सावधानी रखिबे की बातऊ लोक माँहि कही जावै है-'*सीख वाकूँ दीजियै, जाकूँ सीख सुहाय। सीख न दीजै बाँदरा, घर बैया कौ जाय।*' पर लोक कौ तौ ई सुभाव है कै ऊ सब तरियाँ के झगरे-झंझटन माँहि हू अपनी सीख दैबे की आदत कूँ ना छोड़ै। जीवन इकहरी पगडंडी कौ नाम नाँय, ह्याँ तौ ना जानै कितेक तरियाँ के रस्तान कौ तानौ-बानौ पुरौ भयौ है। एक रस्ता दूसरे कूँ काटतौ भयौ ऊ अपनी जगह पै अपनौऊ कोऊ अरथ राखै। ना जानैं ह्याँ कितेक सत्यांसन कूँ ई पूरौ सत्य मानि कैं उरझते-सुरझते रहैं। जीवन के काऊ एक मोखे अरु झरोखे सौं जैसैं उजियारे कौ पूरौ सच निगाह ना परै, बाई तरियाँ हमारे जीवन कौ कोई एक पच्छ पूरौ जीवन नाँय बनि सकै। परेसानी की बात ई है कै ह्याँ हरेक कौ सच वाके झोला माँहि पर्‌यौ भयौ है। बौहत पुराने दरसनन की बात हमारे ह्याँ हैं। पूरी दुनिया सचाई कूँ खोजबे में लगी भई है। हमारी भासान कौ सिंगार कहावत ऊ काऊ छोटे से सच कूँ बताइकैं अपनौ काम बखूबी करती दिखाई परैं। ये कहावत ऊ कविवर बिहारी के दोहरान की तरियाँ 'नावक के तीर' हैं, जो देखिबे में भलै ई कितनी ई छोटी लगैं, पर घाव बौहत गहरौ करैं। अरु ई बातऊ बितेक सच है कै समै-समै की बात है-'जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि।' याकूँ लिखिबे में रहीम कौ ई अनुभव जरूर रहई कै बिननैं बड़े कहे जाबे बारे आदमीन के सांमई छोटेन की उपेच्छा हौती देखी। बे कबीस्वर हते, बिनकौ हिरदय समता के भावन सौं लबरेज हतौ। छोटे आदमीन की उपेच्छा बिन सौं नाँय देखी गई। बिन नैं बात सँभारी, अरु *दिखाबटी बड़ेन की पूजा करिबे बारी या दुनिया कूँ जीवन के एक बड़े सच सौं परिचित* करायौ। याई ते बिनकी बौहत-सी बात लोक की जिह्वा कौ सिंगार बन गई हैं।

-1/4, 'मुक्तिबोध'
आरावली विहार, अलवर-301001

-

लोकोक्ति अरु वाके प्रकार

–श्री सर्वोत्तम त्रिवेदी 'लघु'

लोकोक्ति कौ साधारन अर्थ है–'वह कथन (शब्द समूह अथवा वाक्य) जो सामान्य जन (लोक/जनता जनार्दन) सौं उचारौ गयौ है।' लोकोक्ति कौ पर्यायवाची शब्द है कहावत पर याकौ विसेस अर्थ है–''वह वाक्य जो काऊ विसेस औसर पै, विसेस परिस्थिति में, जनता जनार्दन के काऊ घटक (सदस्य) के म्हौं ते अनायास ही निकसि परै है अरु वह कथन जनता कूँ इतनौ प्यारौ लगै है कै जंनता के मौंह चढ़ि जाय है। वैसी ही स्थितीन में जनता कूँ वही वाक्य याद आय जाय है अरु वही वाक्य बेरि-बेरि फूटि निकसै है।''

लोकोक्ति लोक-प्रयोग पै ही आधारित होय है। ये वाच्यार्थ (साधारन अर्थ) ते कछु भिन्न अरु अनूठे ही अर्थ कौ वोध करावैं हैं। लोकोक्ति भासा कूँ पुष्ट करिवे कौ एक साधन है। याते भाषा रोचक तौ होय ही है परि चुस्त अरु सजीव हू है जाय है। यों लेखक इनकौ प्रयोग कम करैं हैं। पर जहॉ हू इनकौ प्रयोग है जाय तहाँ ही विचार और भाव प्रभावी है जाय है।

लोकोक्ति के संवंध में कछु लिखिवे जानिवे के ताँईं याके संग में वाग्धारा (मुहावरे) कौ अध्ययन करिवौ लाभदायक रहैगौ।

वाग्धारा (मुहावरे) वाक्यांश के ही रूप में मिलैं हैं पर लोकोक्तीन की (कहावतन की) उपलब्धि, अपवादै छोरिकैं, सामान्यतया पूर्ण वाक्य के रूप में ही होय है। हाँ, लोकोक्तीन (लोक+उक्तिन) में क्रिया अरु सहायक क्रिया होनौ कोऊ आवश्यक नाँय है।

वैसें कवहु-कवहु वाग्धारा अरु लोकोक्तीन में इतनौ हल्कौ अंतर होय है कै काऊ कूँ वो वाक्यांश के वाक्यांश वाग्धारा लगैं हैं तौ काऊ कूँ लोकोक्ति। श्री शिव प्रसाद अग्रवाल 'टेढ़ी खीर' कूँ मुहावरौ मानैं हैं पर डा. जगदीश प्रसाद कौशिक याकूँ लोकोक्ति कहैं हैं।

मुहावरेन कौ प्रयोग जहाँ स्वतंत्र रूप ते नाँय होय, वाक्यन के बीच में ही होय तहाँ लोकोक्तीन कौ प्रयोग स्वतंत्र रूप ते होय है, है सकै है।

मुहावरे कौ प्रयोग भाषा में जहाँ चमत्कार उत्पन्न करिबे के ताँईं होय है वहीं लोकोक्तीन कौ प्रयोग याके संग-संग काऊ बात, भाव अरु विचार के समर्थन के ताँईं हू होय है।

लोकोक्ति तौ जन साधारण के अनुभवन कौ निचोड़ ही होय है। संक्षिप्त रूप होय है। जि तौ गागर में भरौ भयौ सागर ही होय है। सिगरे उपनिषदन् कौ सार जैसें गीता है तैसें ही लोक में प्रचलित लोक-कथा, लम्बे अनुभव काऊ सामाजिक-राजनैतिक-सांस्कृतिक घटना कौ सार ही होय है लोकोक्ति। जैसें अधजल गगरी छलकत जाय और अकल बड़ी कै भैंस आदि।

लोकोक्ति, वाक्य कौ सुगठित, परिष्कृत, परिमार्जित रूप हू कह्यौ जाय सकै, जो घिस पिट कैं ऐसौ चीकनौ है जाय है, घट-बढ़ कैं ऐसौ अमर है जाय है कै वामें कछू छोड़नौ, वामें कछू जोड़नौ हू टेढ़ी खीर होय है। इनके लघु आकार में बहौत भाव भरौ होय है।

लोकोक्ति कैई प्रकार की है सकैं हैं जैसें-

1. क्रियान्त युक्त-जैसें आकास ते गिरौ खजूर में अटकौ अरु उलटौ चोर कोतवालै डाटै।

2. संज्ञारूप-अंधेन में कानौ राजा अरु एक म्यान में दो तलवार।

3. विसेसन रूपी-आँख कौ अंधौ गाँठ कौ पूरौ, आँख ते अंधौ नाम नैनसुख।

नीचें लोकोक्ति मात्र ही लिखि रहे हैं। इनकौ अर्थ तौ अपने आप ही स्पष्ट है-

1. जब गीदड़ की मौत आवै तब गाम माऊँ भाजै।

2. नौकरी के बारे में-'नौकरी न कीजै बन्दा, घास खोद खइये। और खोदैं आस पास आप दूर जइये॥'

3. कार्य के बारे में-'उत्तम खेती, मध्यम बान। निषिध चाकरी भीख निदान॥'

4. दिन की गति के संबंध में-'माह तिला-तिल बाढ़ै। फागुन में गोड़ा गाढ़ै॥'

5. दीपक के बारे में-'बाबा सोवै या घर में। पैर पसारै वा घर में॥'

6. कंजूसन के बारे में-'जोड़ि-जोड़ि मर जाइंगे। माल जंवाई खाइंगे॥'

7. गोला (नारियल) के बारे में-'कटोरे में कटोरा। बेटा बाप ते भी गोरा॥'

8. एक क्षेत्र विशेष के बारे में-'बैर भुसावर ब्यानौ। बाप ते बेटा स्यानौ॥'

9. तीन जड़ी बूटीन ते स्वर्ण (सौनौ) बनायवे की प्राचीन यौगिक क्रिया के सम्बन्ध में (साँच झूठि की भगमान जानै)-'साकाहूली, मौंफली, गूगरवारे केस। धूनी लगाय कैं रख दै पौया, मति भटकै परदेस॥'

-"चतुर्भुज-प्रासाद", कुटी मौहल्ला
कामां, भरतपुर-(राज.)

मानव सुभाव माँहि लोकोक्तियां

–डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ

मानव सुभाव कौ कछू पतौ नाँय। कब का सौचै, का करै अरु का कहै? आदिम मानुस ते आज तक कौ आभिजात्य मानुस तौ अपने स्वभाव के ताँई बहुत ज्यादा गतिशील रह्यौ है। जाई मारैं लोकजीवन माँहिं लोकाभिव्यक्ति कौ महत्व सदाँ ते ई गहरायौ रह्यौ है। लोकाभिव्यक्ति कौ बखानु तीन तरियाँ ते कियौ जाय सकै–

1. शरीर पोषिणी

2. मनस्तोषिणी

3. मनोमोदिनी

जामैं ते पहली शरीर पोषिणी अभिव्यक्ति व्यवसाय प्रधान होय है अरु बू आदमीन की आवस्यकतान की पूर्ति करिबे में सहयोगी होय है। भोजन–कपड़ा–शरण अरु भोग सम्बन्धी आवश्यकता ही शरीरपोसिणी बन जायौ करैं हैं। वैसें तौ मनस्तोषिणी अभिव्यक्ति कूँ ई आदिम मानस की तरियाँ व्यावसायिक अभिव्यक्ति ई मानी जावै है। परि अब तौ मनस्तोषिणी अभिव्यक्ति कौ सम्बन्ध लोकमानस के जौरै ई जादा दिखाई देय है। लोकमानस के विद्वानन नैं जि मान लियौ है कै आदमीन के मन माँहि आश्चर्य अरु भय कौ भाव सदाई रह्यौ करै है। पर, जाऊते अलग एक औरु भाव रति कौ हुऔ करै हैअरु जेई आगें चलिकैं उत्साह अरु वीरभाव कौ विस्तार मानसन माँहि करै है। आश्चर्य के मारें लोकमानस ईसुर अरु प्रकृति के अनजाने कामन कूँ देख्यौ करै अरु भय कौ निवारण करिबे के ताँई मानुस सदाँ ते ई अनुष्ठानिकन कूँ अपनायौ करै है। जामें टोटका, लोकनिधि, लोक विश्वास अरु रिचुअल्स काम में लाये जावें हैं।

तीसरी लोकाभिव्यक्ति मनोमोदिनी होय है जाकौ सीधौ सम्बन्ध मानसन की मोदवृत्ति सौं रहै है अरु जाकौ रूप वाणी रूप माँहिं देख्यौ जाय सकै। जामें गाइवौ, खेलवौ, वतकही, बुझौवल जैसी वाणीगत अभिव्यक्तिन कौ रूप मिलै है। कुल जमा वात इत्ती है कै मानुस के मनोभावन कौ निकास वाणी के जिन रूपन माँहि हुऔ करै अरु दूसरे कूँ बू पूरी तरियाँ सम्प्रेषित है जायौ करै वे ई मनोमोदिनी लोकाभिव्यक्ति माँहि गिनी जाय सकैं हैं। जाई मारैं गामन माँहि कहावतन कौ माहौल खूबई जमौ करतौ,

परि आजकालि पढ़े-लिखेन कौ जमानौ का आयौ है , लोक-व्यवहार पै कड़ाई गांठि लई है। कोऊ काऊ ए नाँय पूछै औरु न अपनी काहू सौं कहै, भलैंई अपने अन्दर ही अन्दर घुटियौ करै। लोकजीवन माँहि मानसन की जिन्दादिली बनी रहती अरु बात बात पै कहनावत अरु व्यंग करिबे माँहिं कोई चूक नाँय होंती। जाई काजैं लोकोक्तीन कौ विकास भयौ है। डॉ. सत्येन्द्र नैं ब्रज साहित्य कौ वैज्ञानिक अध्ययन करौ है अरु लोक साहित्य कूँ शोध कौ विषय बनाइकैं भौत बड़ौ काम कियौ है।

डॉ. सत्येन्द्र नैं लोकोक्तीन के कैई रूपन कौ उल्लेख करौ है-परसोकले, अनमिल्ले, गहगड्ड, ओलना। आगैं लोकोक्ति विज्ञान पै शोधकार्य डॉ. राजेन्द्र रंजन नैं कियौ है। जासौं जि भली तरियाँ प्रकट है जाय है कै वाणी सौं निकसी कहावतन माँहि लोकजीवन के बहुतेरे रंग बिखरे रहैं हैं। लोकोक्ति कौ अपनौ सार्थक रूप ई जा लोकोक्ति साहित्य को मान्यता दिला सकौ है।

लोकोक्ति लोकमानस की परम्परा कौ ऐसौ दाय है जामें जीवन कौ दीर्घकालीन चिन्तन अरु परम्परा कौ गहरौ तालमेल जा तरियाँ है गयौ है कै आभिजात्य स्तर पै बाकौ प्रतिमान नाँय मिल सकै। लोकजीवन कौ गहरायौ अनुभव अरु अनुभव की सार्थकता माँहि सादृश्य उद्धरण की परतीति नैं ई लोकोक्ति के गुण पाये हैं। जाई मारैं लोकोक्ति मानसन के स्वभाव कौ खुलासौ पल मेंई करि दैबे में आगैं रहौ है। लोकजीवन की सहजता और भलमनसई नैं कहिबेमेंऊ कोऊ कमी नाँय आमन दई सो गागर माँहि सागर कौ काम करि जात है। लोकसाहित्य मर्मज्ञ डॉ. सत्येन्द्र नैं हिन्दी साहित्य कोश, भाग-1 माँहि लोकोक्ति के विषय में जि साँच कह दियौ है कै-''लोकोक्ति अन्य लोक साहित्य सौं स्वभाव और प्रयोग में भिन्न होंय हैं। लोकोक्ति में....जीवन के सत्य बड़ी खूबी सौं प्रकट होय हैं। यह ग्रामीण जनता कौ नीतिशास्त्र है। लोकोक्ति मानवीज्ञान के घनीभूत रत्न हैं, जिन्हें बुद्धि और अनुभव की किरण फूटबेवारी ज्योति प्राप्त होय है।'' (पृ. 692)

लोकोक्ति मानुस-सुभाव की सफलतम सम्प्रेषण विधि या कम्यूनीकेशन तकनीक है। मानसन कौ जैसौ सोच, वैसौ कथन, बामैं रंच न चालाकी, अरु अनुभवहीनता, अगर कछू होत है तौ अपनी बात कूँ सुभाव के नाँईं कहिबे कौ अपनौंई ढंगु अरु शब्द चयन, बलाघात औरु अनुतान, इतौई नाँय, बामैं मिली होय है कहबइया की भंगिमा। मानुस सबतेई झूँठ बोल सकै है, पर अपने कूँ न झुँठा सकै अरु बहलाइ सकै है। सो जा तरियाँ अपने स्वभाव कौ सही बखान तबई करै है, जब बू अपनी बात कहिबे के ताँईं कहनाबत या लोकोक्ति कौ सहारौ लियौ करै। तबई जि कहिबे माँहि कोऊ टोटौ नाँइ हतौ कै मानसन की सांसारिक-व्यवहारपटुता अरु सुभाव कौ सीधौ निरूपण बाकी जीभ पै धरी कहाबतन माँहि होय है। जि बिन मानसन के मन की ऐसी उक्ति होय है जाके स्थान पै कोऊ दूसरौ कथन नाँय रखौ जाय सकै। लोकोक्ति कौ स्थानापन्न सब्द कोई आजतक नाँय है सकौ। जि तबई है सकत है जब बामें कथनवक्रता, गहरातौ अनुभव अरु उत्तराधिकृत लोकमानस के पूरे निर्वाह कौ टोटौ परि जाय।

लोकजीवन अरु लोकानुभवन में ऐसी कमताई कहूँ आज तक नजरि नाँय आई, जाई मारें लोकोक्ति तौ लोक की सबसौं ऊँची अरु भौत अच्छी उक्ति है।

ब्रजक्षेत्र की कछु लोकोक्तीन कौ संकलन या तरियाँ कियौ जाय सकै है-

1. टसक को मारी बहुअर खसम सौं कहै फूफाजी।
2. नंगी कहा पैन्हें तौ कहा निचोरै।
3. पेट लागी भूखा तौ का करैगी सूखा।
4. गरजतुए तौ बरसतु नाँय।
5. राँड़ के पाँय सुहागन लागै हैजा भैना मोसी।
6. आँखिन कौ आँधरौ रोशनी सौ निहाल भयौ।
7. ओसन प्यास बुझाय सकै का?
8. मोइ दैकैं छोरा, खोजिवे चली घेरेला।
9. काँनी के ब्याहकूँ सौ जोखम।
10. जाके हाथ लठिया बाय मिलै मठिया।
11. खबरि नाँय लत्ता की, बात करै कलकत्ता की।
12. सूप तौ सूप चलनीऊ खटकै।
13. नाम कौ नगाड़ौ जामें पोल ई पोल।
14. दुधारी गाय की सौ लात भली।
15. लात कौ न बात कौ, बासन है नाज कौ।
16. मुर्गिया तौ देशी, बोल बोलै बिलायती।
17. ताल की मछरिया, मगर करै दोसती।
18. नब्बै मूँसे खाय बिलौटी भगतिन बनी।
19. पूत के पाँव दिखैं पालने।
20. लूटि मारी बाखरि, हाथ लगौ चरखा।

21. दही खाय बिलइया, मार खाय कूकरा,।
22. खरी मजूरी चोखे दाम।
23. आपु भलेई जगु भलौ।
24. आगे नाथ न पीछे पगहा।
25. बूढ़ि गये दद्दू तौ कुनबऊ बच्चू।
26. जा हाथ राम-राम बा हाथ दाम।
27. काजर की कोठरी जाय घुसे धवलसींग।
28. पाँयनु कौ चमरौधा, काम करै सूधा।
29. निकरमा की लुगाई गांव की भौजाई।

-R-18, सुखाड़िया विश्वविद्यालय परिसर, उदयपुर-313 001

लोकोक्ति हमारे मानस माँहि विम्ब अरु अवधारणन की प्रतिष्ठा करै है। लोकोक्तीन के माध्यम सौं परम्परा के प्रवाह के संग अनेकन सांस्कृतिक तत्व मानव- मन माँहि चले आवें हैं। भलें ही ये तत्व अतीत की अवधारणान सौं सम्बन्धित होंइ तौऊ ये मानव के वर्तमान अरु भविष्य सम्बन्धी चिन्तन कूँ प्रभावित करैं हैं।

-सम्पादक

बातचीतन में लोकोक्तीन को महत्व

–डॉ. कैलाश चन्द्र भाटिया

वांतचीतन में लोकोक्तीन कौ भौत महत्त्व हतै। 'लोकोक्ति' (लोक+उक्ति) शब्द में ते हू जि निकस कैं आवै है कै 'लोक' में व्यक्ति विसेस अपनी बातन के मध्य जिन कथनन कूँ सूत्र रूप तें उल्लेख कर दे वाही कूँ 'लोकोक्ति' कहौ जाए। 'लोक्येतेऽसौ इति लोकः'–(वह जु दिखाई दे लोक है)। संस्कृत कौ शब्द हैवे के कारन जाकूँ परिभाषित कियौ गयौ है–

–लोककल्याणाय उक्ति लोकोक्तिः

–लोकप्रचलिता उक्ति लोकोक्तिः

जा प्रकार ते जाकौ अर्थ भयौ–

–लोककल्याण के तईं लोक प्रसिद्ध उक्ति

–लोक प्रचलित उक्ति

विसिस्ट उक्ति –

उक्ति काहू काल व स्थान तलक सीमित नाँय होय। ई तौ सार्वभौमिक अरु सार्वकालिक होय है। लोकोक्ति ते जो ज्ञान मिलै वू घनघोर अंधकार में प्रकास की किरन होय है। लोकबानी ईश्वरीय बानी कौ रूप लै ले। काऊ सत्य अरु उपयोगी विचार कूँ संक्षेप में कह दियौ जाए। संक्षिप्तता याकौ विसेस गुन वन जाए जामैं व्यापक फैली भई दृष्टि, समस्यान कौ निदान, अनुभवन की गंभीरता मिलै है। दूर के ढोल सुहावने, दुधारी गाय की लात हू भली, तू डार–डार मैं पात–पात लोकोक्तीन में गागर में सागर भर दियौ गयौ है। बातचीत में जा प्रकार की लोकोक्तीन के प्रयोग ते एक ओर चमत्कार आय जाए तौ दूसरी ओर वोलवे वारे कौ ऐसौ प्रभाव परै कै दूसरे की वोलती हू बंद है जाए। संक्षिप्त तौ होय पै सार न होय तौ वात जमै नाँय, प्रभाव उत्पन्न नाँय करै।

कवहू ऐसौ हू होय कै काऊ कविता की पंक्ति, छंद कौ हिस्सा सुना दियौ जाए। तुलसीदास की अनेक चौपाईन, सूरदास के पदन की पंक्तीन कूँ बातचीत में सटीक प्रयोग कर दियौ जाए।

सामाजिक जीवन कौ अनुभव ही लोकोक्तीन कौ आधार बनैं है। जा प्रकार ते कबहू अपनौ कथन अरु वाकी पुष्टि के तँईं बातचीत में लोकोक्ति कौ प्रयोग कर दियौ जाए है। भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रयत्न ते कोऊ न सुधरै, तौ वाही समै कह दियौ जाए-

कोयल होय न ऊजरी सौ मन साबुन लाय/लगाय।

जाते जि अरथ निकसै है कै विभिन्न प्रकार के असंख्य उपायन ते काऊ व्यक्ति कौ जन्मजात दोष बदलनौ संभव नाँय।

जाई प्रकार ते कोऊ महिला बड़ी-बड़ी बात करै। डींग हाँकै। हर काम में नुक्स निकारै अरु खुद ठीक काम न कर पावै, टालमटोल करती रहै। बहाने बनाय कैं काम कौं टालती रहै तौ जा बात कूँ समझ कैं बीच में हू वाकी बात काटकैं दूसरी महिला कौ जि कहबौ उचित समझौ गयौ-

नाच न जानैं आँगन टेढ़ौ।

जाए कष्ट होय, बू ही कष्ट कूँ समझ सकै, वाकौं कह्यौ जाए-

जाके पाँव न फटी बिवाई सो का जानै पीर पराई।

औसर के अनुसार अपने कूँ बदल लेइ तौ कह्यौ जाए-

जैसी बहै बयार पीठ तब तैसी दीजै।

लोक अनुभवन पै आधारित होयबे के कारन जामें प्राणवत्ता अधिक होय। बातचीतन में नीरसता कूँ मिटायबे के तईं, औसर के अनुकूल लोकोक्ति कौ प्रयोग अच्छौ समझौ जाए।

एक दोष के साथ दूसरौ दोष होय तो कह्यौ जाए-

एक तौ करेलौ दूसरौ नीम चढ़ौ।

काई बातै टालबे के ताँईं कह्यौ जाए-

न नौ मन तेल होयगौ न राधा नाचैगी।

जब अपनी प्रिय चीज अपने हू पास हतै पर ढूँढें जाँए तौ कह्यौ जाए-

बगल में छोरौ सहर में ढिंढोरौ।

भक्ति काल अरु रीति काल के साहित्य में लोकोक्तीन कौ भडार भर्‌यौ पर्‌यौ है। जयपुर के शिवसहाय दास नैं तौ 'लोकोक्ति-रस कौमुदी' नाम कौ ग्रंथ हू लिख डारौ। लोकोकीन में 'नायिका-भेद' हू लिख्यौ गयौ है। जवाहरमल कृत 'उपखान पचासा' कौ उल्लेख मि

सदीन पैलें 'सौ वातन की वात' (भागवत के दशमस्कंध उपखान) लिख्यौ जाके आधार पै पं. जवाहर लाल चतुर्वेदी नैं एक सौ एक लोकोक्तीन कौ संकलन पोद्दार अभिनन्दन ग्रंथ में प्रकासित कियौ है। जिनके ग्रंथ की कछु पंक्तिन कूँ देख्यौ जाय सकै-

घूँघट काहे देती, कहैं श्री कुमर कन्हाई।

चोरी ते हरि-पकरि, ग्वालि जसुमति पै ल्याई॥

देहि 'उराहनों' आइ, मात जू देति हमें दुख।

आइ गए तहँ नंद, सकुचि कैं फेरि रही मुख॥

मुख फेरै क्यों ग्वालिनी, कहै जसोमति चेति।

नाँचत निकसी तौ भली घूँघट काहे देति॥

वोलै निठुर पिया विन दोस, आपुहि तिय गहि वैठी रोस।

कहै पखानों जिहि गहि मौन, वैल न कूद्यौ कूदी कौन॥

-(जगतानंद)

डा. रमेश चन्द्र के अनुसार लोकोक्तन ते विलक्षण अर्थ (असामान्य) निकसत है। विन्नैं व्रजभाषा में प्रचलित कहावत-लोकोक्तीन कौ शोधपरक अध्ययन कीन्हौं।

जा प्रकार ते कह सकैं हैं कै लोकोक्तीन सूत्र वाक्य हतै, जामैं जीवन कौ सार्वभौम सत्य, सुख-दुख, जीवन-मरण, आचार-विचार, रीति-नीति, शकुन-अपशकुन, खेती-वारी, आहार-विहार, जीव-जन्तु, पशु-पक्षी आदि संवद्ध होय हैं। औसर के अनुकूल विनकौ प्रयोग लोक जीवन में होय है।

व्रजभाषा में लोकोक्तीन कूँ 'कहनावत' हू कहैं। याते मिलती-जुलती अरु गंभीरता लिये भए अन्य रूप हू हतै जामें कछु ये हैं-

- वोलना[1] (ओलना), औंठपाउ[2] (पाव)

---

1. कंठा, कठुला, कड़े, गरे में ढोलना।

   इतनों देइ करतार, तो फिर का वोलना॥

2. काने भैया, राम-राम, कै एई लड़ाई के औंठपाउ।

   गाम में तो आगि लागी, चलौ वुझामन ताहि॥

–अनमिला[3] (अनमिल बातन कौ मिलन)

–अचका[4] (अद्भुत बातन कूँ कहबौ)

–गहगड्ड[5] (सुखद भावनान कौ बरनन)

–भेरि[6]

–खुंस[7] (अवांछनीय बातन कौ कहबौ)

–(पं. जवाहरलाल चतुर्वेदी–ब्रजभाषा और साहित्य)

बिनके अलावा कहबे के अनूठे ढंग हू हतें जिनमें 'बतकोला' प्रमुख हतै। जापै तौ विस्तार ते हू अलग ते कोऊ विबरन दियौ जा सकै।

लोकोक्ति तौ ब्रज के पद-पद पै दिखाई दें। चाचा वृन्दावनदास कृत भ्रमरगीत तौ जा प्रकार की कहनावतन की खान है। सामान्य रूप ते कह्यौ जा सकै कै भ्रमरगीत के उद्धव के प्रसंग में ऐसौ औसर मिलै कै सहज हू में 'लोकोक्ति' कही जाए।

ब्रजभाषा के अपार साहित्य में ते लोकोक्तीन पै कैऊ सोध-कर्म है चुके हैं।

---

3. *भार-भुजामन हम गए, पल्ले बाँधी ऊन।*
   कुत्ता चरखा लै गयौ, मैं काए ते फटकौंगी चून॥
   (इनकूँ ही 'ढकोसला' हू कहैं हैं)
4. पीपर पैते उड़ी पतंग, जौ कछु लगि जाइ मेरे अंग।
   मैंनें दै दई बजर किवार, नहिं उड़ि जाती कोस हजार॥
5. सेत फूल हरियारी डांड़ी, औ मिरचन के ठट्ट।
   हम घोटें तुम पियौ मुसाफिर, फेरि मचै गहगड्ड॥
6. मुन्ना तें मिसरानी राजी, नित उठ खाइ जलेबी ताजी।
   रबड़ी औरु मंगावै दही, कै 'गड़ुआ' गढ़त भेरि ह्वै गई॥
7. एक तौ लंगड़ी घोड़ी, दूजें वामैं चाल जु थोड़ी।
   तीजें वाकौ फटि रह्यौ जीन, खुंस ऊपर खुंस तीन॥

कछू लोकोक्ति-

- कुआ कौ मेंड़का, करै सिंधु की बात। (कहै सिंधु की बात)
- कौड़ी नाँहीं गाँठ में करै ऊँट कौ मोल।
- कौड़ी नाँही गाँठ में चलें बाग की सैर।
- कुआ की माँटी कुआ ई में लगि जाए।
- आलस-नींद किसानें खोवै, चौरै खोवै खाँसी।
  टका-ब्याज बाबाजी ऐ खोबै, राँड़े खोवै हाँसी॥
- ओछे की प्रीति, झोल कौ तापनों। (फूँस कौ तापनों)
- ओछौ बास, कुल कौ नास।
- गधा ना कूदी, कूदी कौन।
  गधा न कूदौ, कूदी गोंन॥
- घी सँभारे रसोई, नाँम बहू कौ होय।
- घरु खीरु तौ बाहरु खीरु।
- चारि पैसा की हँड़िया तौ फूटी, परि कुत्ता की जाति पैहचाँनी गई।
- चौमाँसे के रिपटे कौ औरु राज के पिटे कौ डरु नाएं।
- जब ई मुड़िया नैं मूँड़ मुड़ायौ, तब ई परि गए ओरे।
- जाकी नारि सुलक्खिनी, जाके कोठी धाँनु।
- तेल तौ तिलीन में ते ई निकरै।
- धोबती के भीतरु सब नंगे।
- नंग बड़े परमेसुर ते।
- पूत के पाँम पालने में दीख जाँवें।
- राँड़, साँड़ अरु अन्ना भेंसा, बिगरि जाँइ तौ होवै कैसा।

-नन्दन, भारतीनगर, मैरिस रोड़
अलीगढ़-202001

उ.   पयोगी ब्रज लोकोक्ति

–डॉ. रामकृष्ण शर्मा

ब्रज की संस्कृति तौ एक अथाह-अनन्त अम्बुधि है, जाको गहराई में कोऊ डुबकी लगाय कें टटोरा मारै तौ भाँति-भाँति के रतन मुट्ठी में भरि-भरि कें लाय सकै, बिनसौं जीवन अरु जगत कौ भौत भलौ ऊ करि सकै, अरु सजाय-सँवारि कें सिंगार हू करि सकै। या महिमामयी संस्कृति में ब्रज जनन के चिन्तन-मनन अरु बिनकी तपस्या-भक्ति सौं निसृत इतेक अनुभव-रतन भरे परे हैं कै बिनसौं जीवन की कोऊ उलझन सुलझे बिना नाँय रह सकै। कैसीऊ लौकिक-अलौकिक, दैहिक, दैविक, भौतिक समस्या होय, बाकौ समाधान पलक झपकतेई मिल सकै। सबसौं बड़ी बिसेसता ई है कै ब्रज विभूतीन नें अपने अनुभव सूक्तीन के माध्यम सौं "गागर में सागर" भरि कें परोस दीने हैं- जो लोकमानस में ऐसे जमि गये हैं कै बिनकौ रूप "लोकोक्ति" बनिकें पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रचलित है गयौ है। इनके संग काऊ जन बिसेस कौ नाम नाँय जुर्यौ-अपितु ये तौ जन-जन के बिस्वास की सम्पत्ति बनि गई हैं। इनकौ क्षेत्र इतेक विस्तीर्ण है गयौ है कै काऊ व्यवसाय कूँ देख लेऔ-बू लोकोक्तीन सौं अछूतौ नाँय रह्यौ।

चिकित्सा-व्यवसायः

स्वास्थ्य मनुज कौ अमूल्य धन मान्यौ गयौ है। स्वास्थ्य के बिना लौकिक जीवन की नैया बीच धार में बूड़ि जाय। ब्रज की संस्कृति माँहि स्वास्थ्य कूँ भौत महत्व दीयौ गयौ है। स्वास्थ्य कौ सीधौ सम्बन्ध खाइबे-पीबे सौं होय। ब्रज में दूध-दही-माखन-मिश्री जैसे स्निग्ध, मधुर अरु परम पौस्टिक खाद्य पदार्थन कूँ इमरत बतायौ गयौ है। ब्रज में ई लोकोक्ति जन-जन की जुबान पै धरी रहै-

दही दूध तौ भाजी। और सब दगाबाजी॥

ब्रज भूमि के बुजरग आजहू चौपारन पै कह्यौ करैं-

माखन मिसुरी भोग। दूरि भगैगौ रोग॥

रोग अव्वल तौ होयगौ ई नाँय, परि है ऊ जाय तौ वाकी चिकित्सा हू खाइवे-पीवे सौं ई है जाय। चिकित्सा-व्यवसाय सौं जुरी भई कैऊ लोकोक्ति व्रज में प्रचलित हैं-जिनमें रिसी-मुनीन के अनुभवन सौं घरेलू नुस्खा बताये गए हैं। असाध्य रोगन सौं ऊ छूटिवे के जतन इन लोकोक्तीन माँहि मिल जाँय। देखौ -

सौंठ ढांरा पीपरि। इन्नैं खायकैं जी परि॥
चना चवैना खाय लै। पीरिया भ [illegible]॥
मानों मोरी सीख। पीरिया में ईख॥

चिकित्सा अरु आरोग्य सम्वन्धी कछू लोकोक्ति तौ पूरे दोहा, सोरठा अरु छन्दन माँहि जा तरियाँ सौं पिरोय दई हैं कै विन्नैं एक वेर सुनि कैं कोऊ भूल ही नाँय सकै। वे एक पीढ़ी सौं दूसरी पीढ़ी ताँनूँ मौखिक परंपरा सौं ई पहुँच जाँय। कछू उदाहरन देखौ -

'नीम की दाँतुन नित करै, नित उठि हर्रैं खाय।
गुरु कहै निज सिस्य सौं, ता ढिंग रोग न जाय॥'
'ताव में लंघन फोड़ा कौ वंधन नित कर नित कर नित कर।
कान में तिनका नाक में उँगली मत कर मत कर मत कर॥'

'रोज आँमरौ खावै। वैद कवहूँ नहीं आवै॥'
'पंच गव्य सौं न्हाय कैं, पंचामृत पी लेय।
विन माँगे सौ वर्स की उमरि विधाता देय।।'

शिक्षा सम्वन्धी लोकोक्तिः

व्रजभाषा माँहि स्वास्थ्य के संगई संग सिच्छा कूँ हू भौत महत्व दियौ गयौ है। ऐसी कैऊ लोकोक्ति जन सामान्य की वानी में मुखरित होयौ करैं जिनमें विना पढ़े कूँ कउआ अरु पढ़े कूँ हंस वतायौ गयौ है। जीवन सफल करिवे के ताँई पढ़िवे की जरूरत वताई गई है। वालक कूँ सिच्छा न दैकैं वाके जीवन कूँ नरक वनायवे वारे मैया-वापन की निन्दा हू करी गई है। इन लोकोक्तीन सौं ई पतौ चलै कै सामान्य जन हू जीवन में सिच्छा के महत्व कूँ समझैं अरु औरन कूँ समझावैं। ऐसी लोकोक्तीन के उदाहरन देखौ-

'पढ़े हंस मोती चुगैं, मानसरोवर बीच।
कुपढ़ काग मैलौ गहैं, चोंच बिगारैं कीच॥'

'मात पिता वैरी भये, जिन न पढ़ाये बाल।'

'बिना पढ़्यौ टाढ़त फिरै, बिना सींग कौ ढोर।'

'ऊँना माँसी धम्म, बाप पढ़े ना हम।'

'बिगरि गयौ जीवन अनमोल। मारै डंका बाजै ढोल॥'

विविध मानवीय अनुभव-

लोकजीवन माँहि लम्बे समै ताँनूँ अनुभव हौंते रहैं अरु बे कथन के रूप में चलि परैं। धीरैं-धीरैं वे काऊ रूढ़ अर्थ कूँ ग्रहण करि लैं। ये लोक-कंठ सौं विकसित हैकैं फेर भासा कौ अंलकार बनि जाँय। इनसौं लोक मानस कौ परचै मिलै अरु बात कौ वजन बढ़ि जाय। लोकोक्ति जीवन के काऊ अंग कूँ अछूतौ नाँय छोड़ैं। इनमें भाँति-भाँति के अनुभव-घट छलक्यौ करैं। ब्रज मंडल के बासी पौने छः हजार बरस सौं जीवन के करुये-मीठे घूँट पीते रहे हैं। बिन्नें कंस अरु कन्हैया, दोऊन के आचरन देखे हैं। याई कारन सौं जितेक लोकोक्ति ब्रजभासा में मिलैं हैं बितेक और कहूँ नाँय। किंवा ब्रजबानी की लोकोक्तीन कौ अनुवाद करिकैं और भासा सजी-सँवरी हैं। इनकौ मूल ब्रजबानी में ई दीखै। विविध जीवनानुभवन की झाँकी देखौ-

का बरसा जब कृसी सुखाने?

ते ते पाम पसारिये, जेती लांमी सौर।

जल में रहै, मगर सौं बैर।

जर जोरू जमीन जोर के।
जोर घट्यौ तौ और के॥

जो चाहै सुख जीव कौं तौ बोदू बनिकैं रह।

आँम के आँम गुठलीन के दाँम।

घर कौ भेदी लंका ढाबै।

वीरबल नैं कही, 'हुजूर एक बात तौ खरीद ही लेऔ। आजमाइश तौ है ई जायगी।'

बादशाह सलामत नैं एक लाख दैकैं एक लोकोक्ति खरीद लई। नेंक आगैं जायकैं याई लोकोक्ति नें दोऊन की जान बचाय दई। जानों, काई बू लोकोक्ति? नहीं जानौं तौ सुनौं -

आप बिछाऔ बिस्तरा, कूकर गेरौ गास।
लाठी लै जल में चलौ, जनि तिरिया बिसवास॥

ब्रजभासा की लोकोक्तीन पै जो कहूँ कोऊ गौर करिकैं इनकूँ ब्यौहार में लाय सकै तौ निहचै जानौ कै बाकूँ कहूँ कोऊ खतरा ई नाँय है सकै। बिसेस रूप सौं आज के जुग में इन लोकोक्तीन सौं मनुज कौ भौत भलौ है सकै। इनमें ऐसे-ऐसे नुस्खा मिल सकें जिनसौं सब तरियाँ की समस्यान कौ समाधान है सकै। चाय ब्यौपार होय, चाय खेती होय, चाय प्यार होय, चाय बैर होय, चाय जुद्ध की ललकार होय, चाय अतिथि-सत्कार होय, चाय सिच्छा की बात होय, चाय नर-नारी के सम्बन्धन की बात होय, इन लोकोक्तीन में ऐसौ पथ-प्रदर्सन मिलै कै सफलता की सीढ़ीन पै बढ़तेई चले जाऔ, कहूँ फिसलि नाँय सकौ। इनमें धरम-करम, पुरसारथ, ज्ञान-विज्ञान, रीति-रिवाज, ब्याह-सादी, तीज-त्यौहार, मेले-ठेले, हानि-लाभ, जीवन-मरन, सुरग-नरक, दु:ख-सुख अरु जल-थल-नभ सबई छेत्रन कौ व्यापक ग्यान भर्‌यौ भयौ है। इनके महत्व के बिसै में एक लोकोक्ती सौं ई समापन कीयौ जाय सकै -

डुबकी मारौ गहन जल, दोऊ हाथ टटोल।
मूँठा भरि ऊपर उठौ, रतन मिलैं अनमोल॥

-सरस्वती सदन, मौहल्ला कौड़ियान, भरतपुर

ब्रज संस्कृति में अलौकिक भाव जगामती लोकोक्ति

—श्री चैतन्य शास्त्री

हम भारत भूमि कूँ नाना प्रकार की संस्कृतीन कौ सामंजस्य कहि सकैं। ये पावन भूमि युग-युगन ते आपसी भाईचारे के अलावा ज्ञान-गुन, कर्म अरु लोकसंगीत आदि बिसैन में पारंगत रही है। यहाँ के गाम, कस्वा, छोटे-वड़े सहरन माँहि संस्कारन की तथा संस्कृति की गरिमा रही है। जेई कारन है कै आज तलक या माटी की सौंधी गन्ध में कोऊ फरक नाँय भयौ। गामन में जाय आज हू गाँड़े चौंखनौ, छाछ पीनौ, ठट्ठा करवौ कोऊ नाँय छोड़ि सकै। लोकगीतन माँहि सामन के, नौरात्रे के, बरसा के, राधा-कृस्न कै चरित कौ वखान आज लौं होमतौ चल्यौ आय रह्यौ है।

लोकजीवन माँहि एक अति प्राचीन विधा कौ बात बातन में चलन हतै, वाकूँ लोकोक्ति के नाम ते साहित्य मेंऊ स्थान मिल्यौ है। जि लोकमानस में वेजा प्रचलित हू है। कोऊ बात होइ बामैं 'फटे में पाम डारिवौ' जैसी 'वेई ढाक के तीन पात' और 'नाँय नौ मन तेल हो नाँय राधा नाचै'। ऐसी अनेकन प्रकार की मुहावेरयुक्त भासाऊ कौ प्रचार है। परन्तु लोकोक्तिन कीऊ भरमार हतै जो कै मानौ ज्ञान कौ भंडार सौई है। लोकोक्तीन के वारे में घाघ अरु भड्डरी की लोकोक्ति भौत महत्व रखें। कन्नौज अरु कासी के ये दोऊ पण्डित अपनी वात कूँ कविता के माँहिं कहबे में पूरन निपुण हे और इनके वचन पैऊ जनमानस कौ खूब विस्वास हौ। इननैं नैतिक, कृषि, बैलन के ऊपर, दवाईन के ऊपर अरु फुटकर हू खूब लोकोक्ति लिखीं। आजहूँ उनकौ चलन गाम, कस्वा, सहर के अनपढ़ अरु पढ़े जनन में खूब है। हिन्दी भासा में कहावत, किंवदंती आदि नाम ते लोकोक्ति कूँ पुकारौ जाय, फिरऊ कहबे के अर्थ में इनकौ प्रभाव यत्र-तत्र सर्वत्र परिलछित होवै, जिनमें गूढ़ ते गूढ़ तत्व छिप्यौ रह्यौ करै। सुनिबे बारेन के मन कूँ तौ ये वेध ही देवैं, जीवन कौ गम्भीर अनुभव इनमें होयौ करैं। ग्राम जीवन ते इनकौ ठोस संबंध है। जव कहूँ कोऊ घटना घटि जाय या व्यंग बाण मारनौ होवै तौ तीर तेऊ ज्यादा घाव जे लोकोक्ति करैं।

लोकजीवन माँहि अति मात्रान में इनकौ प्रयोग हतै। जैसें 'अधजल गगरी छलकत जाय' जाकौ जि अर्थ हौवै कै भैयाऔ, नीच अरु ओछौ आदमी ही दिखावौ कर्‌यौ करै ज्यों आधी गागर रस्ता में छलकती जावै। ऐसें ई 'अकेलौ चना भार नाँय फोरि सकै' जि कहावत संगठन शक्ति के ताँई कही गई

हतै। सबनकूँ मिल बैठ कैं काम करनौ चइये जाते सबकी तरक्की है सकै। 'बुद्धि बड़ी कै भैंस'-जेई लोकोक्ति सर्वत्र प्रयोग करी जाय। 'कारौ अक्षर भैंस बराबर'-अनपढ़ आदमी कूँ तौ किताब में कारे अक्षर भैंस की तरियाँ ही दीखैं।'उठी पैंठ आठए दिन जुरै'-या लोकोक्ति कौ जि अरथ है कै भैया, औसर चूकें पाछैं कोऊ बात नाँय बन्यौ करै।

'ओस के चाटबे ते प्यास नाँय बुझौ करै'- जि लोकोक्ति घर-घर में प्रचलित है। जाकौ जि अरथ होय कै-अपर्याप्त वस्तु सौं पूर्ति नाँय होयौ करै। इनमें जित्ते उदाहरन हैं वे सिगरे गाम जीवन ते संबंधित हैं। ग्रामवासीन के हृदै माँहि आखर कौ ज्ञान चाय होवै या नाँय परन्तु अनुभवन कौ ज्ञान भौत होयौ करै-या कारन कह्यौ करैं 'अनुभौ बिन जग आँधरौ' कित्ती सटीक बात हतै-एक बच्चा पढ़ लिखकैं ऊ जो काम नाँय करि पावै अनुभवी आदमी बाकूँ कर लेवै। याके ताँई एक कथा कही जाय। काऊ गाम में बरात आयबे बारी ही, बामें लड़की बारे नैं शर्त धरी कै कोऊ बूढ़ौ-बुजुर्ग आदमी नाँय लाऔगे। जवान-जवान ई आमैं। पंगत मे जब बिननैं नास्ता में ढेर सारौ माल धर दीन्हौ और खावे की कही तौ सब जवान एक-एक कर घबराय गये। उनते खाते नाँय बनी। बड़ी हाँसी वैयरवानीन नैं करी परन्तु एक बूढ़ौ आदमी विनके संग-संग आय गयौ हौ, बानैं कही कैं 'लालाऔ एकई संग सिगरे बैठि कैं खाते जाऔ, पतौ ही नाँय चलैगौ। या तरियाँ उनकी जीत है गई तौ छोरी बारे नैं कही "भैया तिहारे संग कोऊ बड़ौ-बूढ़ौ अवश्य आयौ होगौ क्योंकि अनुभवी आदमीन के बिना छोरा छापरे कहा जानिंगे।" मतलब अनुभव बहुत बड़ी पूँजी बताई गई है। याई भाँति गामन में एक बात बड़ी प्रचलित है-'मारिकें भाज जाऔ खायकैं सो जाऔ' यानी लड़ाई झगरौ होवै तौ मार-पीट कें भाज जायबे मेंई भलाई हतै। सूरबीरता दिखायबे कूँ खड़े रहबे मैं पाछें धुनाई है सकै अरु खायकैं थोड़ी घड़ी सोय जानौ चइये जाते भोजन पच जावै। खायकैं एक दम काम करिबे ते पेट दर्द है जाय। एक औरहू लोकोक्ति ब्रज माँहि ज्यादा बोली जाय कै-'जाकी छाती न एकऊ बार, ताते सब रहियौ हुसियार'- जाकौ गूढ़ अर्थ जि है कै ऐसौ व्यक्ति दुष्ट अरु कठोर होयौ करै सो बाते सावधान रहनौई चइये।

'अम्बा नींबू बनिया, गल दाबे रस देंय'- लोक माँहि याकौ भौत चलन है अरु हँसी ठट्ठा में जि समै-समै पै कही जाय है। आम कूँ और नींबू कूँ जित्तौ भीचौगे उतौई रस निकसैगौ। याई तरियाँ बनिया (व्यौपारी) बड़ौई कंजूस होयौ करै तथा 'बने कौ बनिया' होवै या कारन बिना दाब के हाथ तरे नाँय आय सकै। प्रवृत्ति के बारे में यहाँ पै भौत गंभीर बात कही है-

साधू कूँ दासी, चोर कूँ खाँसी,
प्रेम कूँ हाँसी, बुद्धि हरै रोटी बासी॥

याकौ नैतिक व न्याय रूप ते भौत ही गुणकारी प्रभाव है कै संत साधु महात्मा कूँ चेली सौं, चोर आदमी खाँसी ते, प्रेम अधिक हँसिबे ते और बासी रोटी के खायबे ते भ्रष्ट है जावै है। साधु को साधुत्व

जाय। चोर पकरौ जाय व प्रेम खत्म है जायौ करै है। याई तरियाँ कृसि के बारे में लोकोक्तीन कौ संसार फैल्यौ पर्‌यौ है। कोऊ इनपै ध्यान देवै तौ अनमोल खजाने कौ काम है सकै। खेती के बारे में ऊ अनेकन लोकोक्ति प्रचलित हतैं। जैसें-

उत्तम खेती मध्यम बान।
अधम चाकरी भीख निदान॥

याकौ जि अर्थ है कै भैया खेती करिबौ ही उत्तमोत्तम काम है क्योंकि हमारौ कृसि प्रधान देश कह्यौ गयौ है। वाके पाछें व्यौपार कौ नंबर आवै। अपनी मन मरजी ते आऔ जाऔ काऊ कौ दबाब झंझट नाँय परन्तु नौकरी चाकरी करबौ तौ अधम निकृष्ट काम बतायौ गयौ है। याते मनुष्य गुलामी ना करै।

तरकारी है तरकारी जा पानी की अधकारी,
धान, पान अरु केरा, ये पानी के चेरा॥

सब्जी भाजी, धान, पान अरु केला कूँ अत्यधिक पानी की जरूरत होय। याते ध्यान रखैं कम पानी में ये कबहूँ नाँय है सकैं।

खेती पाती बीनती औ घोड़े कौ तंग।
अपने हाथ सवारनौ, लाख लोग हों संग॥

जाके बारे में कहैं कै भैया खेती अपने हाथ ते करैं, चिट्ठी अरु प्रार्थना हू अपने करे की होयौ करैं तथा घोड़े की तंग अपने हाथ सौई बाँधें भलेंई लाखन लोग होवें, बिनते काम नाँय चलि सकै।

याई तरियाँ स्वास्थ्य संबंधी बात लोक में प्रचलित है-

ज्यादा खावै जल्द मरि जाय।
सुखी रहै जो थोड़ौ खाय॥

अधिक खायबे ते पेट में विकार है जाय याते कम खाबै जे सुखी जीवन कौ मूलमंत्र है।

खेतीबारी में बैलन कौ काम होवै अतः बैल कैसौ होवै याके बारे में बतायौ कै-

कारक छोटा झबरे कान।
इन्हें छोड़ जनि लेऔ आन॥ 1॥

श्वेत रंग और पीठ बरारी।
ताहि देख जनि भूलौ अनारी॥ 2॥

यानै अच्छे बर्द की जि पहचान है कै कालौ कच्छा और झबरे कान होवैं दबी पीठ बारौ सफेद रंग कौ बर्द बड़ौ काम कौ होयौ करै। औरहु अच्छी बात कही जावैं-

सींग मुरे माथौ उठ्यौ, मुंह कौ होवै गोल।
रोम नरम चंचल करन, तेज बैल अनमोल॥

याई तरियाँ छोटी पूँछ अरु छोटे सींग वारौ बरद बड़ौ अच्छौ होयौ करै। ऐंठे कान वारौ बर्द हू खेत के काम कौ अच्छौ होवै।

मियनी बैल बड़ौ बलवान।
तनिक में करिहै ठाड़े कान॥

बैल चमकनौ खेत में , और चमकीली नार।
जे बैरी हैं जान के लाज रखै करतार॥

यों तौ अनेक प्रकार ते बर्दन के बारे में जे लोकोक्ति प्रचलित हैं और आजहू इनकौ चाव जन-जन में देखते बनैं। सीधौ सच्चौ मारग दिखायवे वारी ये लोकोक्ति वास्तव में ग्रामीन जनन की रोज की व्यथा-कथा कौ एक निश्चित भाग हैं। नाना प्रकार की जाति और मजहब के लोगन के आयवे ते ये गंगा-जमना-सरस्वती सौं पावन देस कछू अपने लक्ष्य ते भटक गयौ पर ब्रज भूमि ब्रज कौ मानस नाँय बदलौ। लोकोक्तीन के माध्यम सौं आम आदमी कौ ज्ञान समझिवे कौ मौकौऊ मिल जाए-

'मंगलवारी होय दिवारी, हसैं किसान रोय ब्यौपारी'

जेऊ जन-जन के कंठ में रटी भई है-

कांटौ बुरौ करील कौ और बदरौटी घाम,
सौत बुरी है चून की, औ साझे कौ काम॥

करील कौ काटों एक महिना तक दूखै और बादर ते निकसी घाम प्राण लैवे वारी होयौ करै। आटे की हू सौत तथा साझे कौ काम खराब होयौ करै।

''चना चित्रा चौगुना स्वाँती गेहूँ होय।''

चित्रा नक्षत्र में चना अरु स्वाति नक्षत्र में गेंहू बोवै तौ किसान कौ घर भर जावै।

दिन में गरमी रातै ओस।
घाघ कहै बरसा सौ कोस॥

याई के संग कहैं कै यदि चैत में बरसा होय तौ सावन में नहिं होवै।

हमारे भारतवासीन के मन में सगुन विचार कौ बड़ौई महत्व होवै। काऊ काम कूँ करबे ते पैलें सगुन ज्योतिष ते अवश्य पूछैं। लोक में इनके बारे में प्रचलित है कै कुत्ता कान फड़फड़ा दे या भूमि पै लोटै तौ काम बन नाँय सकै। बिल्ली रस्ता काट जाये, सामने ते ऊपरा लैकैं बैयर आय जाय, खाली मटकी

आवें या विधवा औरत आवै तौ यात्रा न करी जाय। ऐसेई छींक कौ विचारऊ मानैं-

सम्मुख छींक लराई पीछैं की सुखदेय,
छींक दाहिनी धन हरै, बांयी भी सुखदेय॥

यासौं अपनी छींक भी दुःख देवै है। ऊँची छींक सुख तथा नीची दुःख देवै है।

भड्डरी कवि नैं कह्यौ कै भैया-

दिसाशूल लै जाये वाम, राहुयोगिनी पूठ।
सम्मुख लीजौ चन्द्रमा लाऔ लक्ष्मी लूट॥

तथा ऐसौ कह्यौ करैं कै घड़ान में गरम पानी है जाय, चेंटी अण्डा लै चढ़ैं, चिरैया धूर में न्हावे लगि जाँय तौ खूब बरसा होगी ऐसौ प्रमाण मिल जावै।

उतरे जेठ जो दादुर बोलै।
बादर बरसै भड्डुली बोलै॥

या प्रकार सौं हम कहि सकैं कै लोकोक्ति कौ साहित्य कम प्रभाव नाँय रखै। इन बिसैन पै सोध करवे की आवस्यकता है। ये लोकोक्ति नाना प्रकार सौं नाम भाव व प्रभाव बारी हैं। इनकौ संसार तेऊ आगे अलौकिक जगत सौं संबंध है। कुल मिलाइकैं ब्रज साहित्य में लोकोक्तीन की भरमार है। जरूरत है इनपै शोध करिबे वारेन की ताकि इनकी सत्यता जन-जन की थाती बन सकै।

-कार्यालय-'सत्ताचक्र'
हनुमान मंदिर, गुर्जर मौहल्ला
भीलवाड़ा-311001-(राज.)

लोकोक्ति अरु प्रकृति

—डॉ. रमेश चन्द मिश्र

लोकजीवन की घटनान सौं निसरौ भयौ सत्य, जब एकई वाक्य माँहि सारतत्व नौं प्रकट होय अरु तामें अभिव्यक्ति एवं अवबोध संबंधी सरलता अरु सहजता होय, ताकौं 'लोकोक्ति' नाम दियौ जात है। लोकोक्ति माँहि सरलता, सहजता अरु सुबोधता कौ होनौ आवस्यक होय है। संग ही हर एक लोकोक्ति काऊ ना काऊ घटनाचक्र सौं जुरी भयी हू होय है, लोकोक्ति कौ विस्तार छेत्र विराट पुरुष की नांई अनंत है। नवीन सौं नवीन लोकोक्तीन कौ जनम अनुदिन होतौ ही रहै है। मानुस, पसु, पंछी, वनस्पति, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकास, मन, प्रकृति, भाव, भाषा, खगोल, भूगोल, ईसुर, कृषि, ब्यौपार, ब्यौसाय, जात-पाँत, वरन, रीति-रिवाज आदि अनेकन विषयन सौं सुसंबद्ध 'लोकोक्ति' साहित्यजगत में प्रयुक्त हौंती रहैं।

सृजनधर्मा साहित्यकार नित्त नई लोकोक्तीन कूँ गढ़ते रहैं। लोकोक्तीन कूँ साहित्य जगत माँहि मान्यता प्राप्ति के काजैं बहौत साधना अरु तपस्या करनी पड़ै। एक बानी ते दूजी बानी लौं यात्रा तय करिबे में हू याए घनौं आयास सहनौ पड़ै क्योंकि जा अर्थ में वक्ता नें एक 'उक्ति' कूँ उचारौ होय, ताही अर्थ-बोधता के संग वाकूँ अनंत रसनान की रसग्राहिता अथच प्रस्तविता नाँय मिलै, तबलौं कोई 'उक्ति' लोकोक्ति नाँय बन सकै।

लोकोक्तीन कौ प्रकृति के संग प्रगाढ़ अरु नित्त संबंध है क्योंकि 'प्रकृति' कौ स्थूल जगत की संरचना, मानव-मन, ताकौ सुभाव, खगोल-भूगोल, जीव-जंतु, वनस्पति आदि के संग अविनाभाव-संबंध होय है। यदि विस्तृत दृष्टि सौं देखैं तौ ये बात कहनौ घनौ समीचीन लगै कै प्रकृति माँहि विस्व कौ सिगरौ प्रपंच समाविष्ट है, अतएव निखिल लोकोक्ति समूह कौ काऊ न काऊ अरथ मे प्रकृति सौं संबंध [illegible] आ सकै, पर हमारौ या आलेख माँहि 'प्रकृति' सौं आसय-मानव सुभाव, वनस्पति [illegible] संबंधित जीव-जंतु, ऋतु, पदार्थ आदि लौं सीमित है।

'लाख कही लुक्क पै ई लई' लोकोक्ति ऐसे ही हठी सुभाव, बेपरवाह [illegible] मानुस के सुभाव सौं संबंधित है। ऐसैं ही 'सौ चोट सुनार की एक चोट [illegible] समुदायन सौं संबंधित है। साधारणतया सुनार अपनी छोटी सी [illegible]

चोट मारतौ भयौ दीये की लौ सौं हलकी गरमी देतौ भयौ गहनौ गढ़ै है पर लुहार कौ काम हलकी चोटन सौं नाँय चल सकै। वो तौ कठोर धातु लोहे कूँ धौंकनी के सहारे जली भई आग सौं तपाय कैं,लाल सुरख करिकैं, दमदार चोटन सौं खटाखट करतौ भयौ उपकरन तैयार करै है। लोक-जीवन माँहि सुनार घनौ चतुर मानौ जाय अरु वो बहौत चालाकी सौं कारज साधै है, पर लुहार कामगार वर्ग कौ प्रतिनिधि है, वो सीधी-साधी बात करिकैं काम सरावै है। या लोकोक्ति सौं लगी भई एक कहानी ख्यात है।

काऊ गाँम माँहि एक सुनार रहतौ। वो गाम वासीन के गहने गढ़तौ। हरबार वो सौने माँहि बट्टौ काटतौ। गाँम माँहि एक लुहार कौ हू घर हतौ। गाँमवासी सुनार के बट्टौ काटिबे की चर्चा करते ही रहते। लुहार नैं हू सुनार सौं गहने गढ़वाये हते। वाके संगहू सुनार नैं वैसौ ही व्यौहार साधौ जैसौ सिगरे गामवासीन सौं साध राखौ हतौ। एक बिरियाँ वो सुनार अपने लोहे के औजारन कूँ उजरायबे अरु खुटवायबे के काजैं लुहार के पास लायौ। लुहार नैं चोखी-तरियाँ काम करिबे कौ वायदौ कर्यौ। जब सुनार अपने औजारन कूँ वापिस लैवे के काजैं आयौ तौ लुहार बोल्यौ 'तिहारे औजारन कूँ तौ जंग खा गई हती सो आग माँहि डारते ही वे तौ भसम है गए।' सुनार बहौत नाराज भयौ अरु वानैं गामवासीन की पंचायत जोरी। गामवासीन नैं पंचायत में सुनार सौं कही-'भैय्या, तुम हू तौ हर बिरियाँ बट्टौ काटते रहे हौ। या लुहार नैं एक ही बिरियाँ कसर निकास लई।' हम तौ या घटना कूँ यौं कह सकैं-'सौ चोट सुनार की, एक चोट लुहार की।' सुनार अपनौ सौ मौहँ लटकाय कैं रह गयौ। या तरियाँ दो जाति समुदायन के लोक-व्यौहार अरु सुभाव कूँ दरसायबे वारी लोकोक्ति कौ जनम भयौ।

हरेक लोकोक्ति के संग या प्रकार कौ घटनाचक्र जुरौ भयौ रहै, जो अनंत सत्य कूँ अपने माँहि समाहित राखै है।

एक बिरियाँ एक अध्यापक जी एक बालक के अभिभावक सौं बतराय रहे हते कै हमारी डाट-फटकार काऊ बालक कूँ नुकसानदेह नाँय होय, 'भैया हाथी के दाँत खायबे कूँ और होंय अरु दिखायबे कूँ और होंय।' अध्यापक जी नैं 'लोकोक्ति' के माध्यम सौं अपनी बात कूँ पुष्टि दई हती। बात कूँ प्रभावी बनायबे के काजैं 'लोकोक्ति' कौ प्रयोग कियौ जावै।

'लोकोक्ति अरु मुहावरे' दोऊन कौ उपयोग प्रभावोत्पादी कथन के रूप में होय। मुहावरौ तौ कथनीय वाक्य कौ अंश होय, जबकि 'लोकोक्ति' अपने आप में संपूरन वाक्य ही कथ्य के रूप में प्रयुक्त होय। 'मुहावरे' माँहि चुटीलोपन अरु तीखौपन होय जबकि लोकोक्ति माँहि भाव की गंभीरता अरु विचारसीलता होय। कबहुँ-कबहुँ 'लोकोक्ति', 'सूक्ति' अरु सुभाषित कौ एक ही अरथ माँहि प्रयोग कियौ जावै, जबकि इन तीनोंन माँहि भावगत अरु शैलीगत अंतर होय। 'सूक्ति' एक ऐसौ वाक्य अथवा वाक्यांस होय, जामें चिन्तन अरु अभिव्यक्ति के काजैं विस्तार होय। 'सूक्ति' काहू विचारक साहित्यकार कौ कथन होय। रचनाकार के कथ्य कूँ ध्यान में रखते भये ताकौ उपयोग 'सूक्ति' के रूप में होयबे लग परै।

'सुभाषित' काऊ महापुरुष अथवा रचनाकर्मी कौ वाक्य गुच्छ वाक्य वा 'वाक्यांस' होय, जो लोक-कल्याणकारी औसरन पै कह्यौ जाय। जदपि या मौंहि हू विस्तार कौ घनौ औसर होय, पर तामें भावाभिव्यंजन की प्रधानता होय। हमारौ कथ्य 'सूक्ति-सुभाषित' सौं भिन्न प्रकृति-परक लोकोक्तीन लौं सीमित हैं। 'प्रकृति' शब्द के अर्थ-विस्तार कूँ ध्यान में राखते भए प्रकृतिपरक लोकोक्तीन कौ वर्गीकरन नीचे लिखे प्रकारन सौं होय सकै-

1. मानव सुभाव सौं संबंधित लोकोक्ति

2. वन-उपवन अरु वनस्पति-जगत सौं संबंधित लोकोक्ति।

3. काल सौं संबंधित लोकोक्ति

4. पंच महाभूतन सौं संबधित लोकोक्ति।

5. पसु-पंछी वन-जीवन अरु आरन्यकन सौं संबंधित लोकोक्ति।

1. मानव सुभाव सौं संबंधित लोकोक्ति- 'प्रकृति' शब्द कूँ सुभाव अरु आदत कौ पर्यायवाची मानौ जावै, अतएव प्रानीमात्र की आदतन सौं संबंधित लोकोक्तीन की गणना या वर्ग मौंहि करी गई है-'सुभाव' अरु 'आदतन' सौं संबंधित लोकोक्ति नीचे लिखे प्रकार की हैं-

1. कहेते कुम्हार गधा पै नाँय चढ़ै।

2. हाथीन के पाछैं तौ कुतिया भूँकती ही रहै।

3. घोड़ा घास ते यारी करैगौ तौ खायगौ कहा।

4. बिल्ली कूँ तौ सुपने मैं हू छीछरा ही दीखैं।

5. चलते बाबाजी कूँ डंडौत।

6. धोये हू सौ बेर के काजर होय न सेत।

7. पानी में पखारे ते कौआ हंस नाँय होय सकै।

8. धूरि डारिवे ते सूरज नाँय छिपै।

9. टका भर की हाँड़ी तौ गई पर कुत्ता की जात पहचान लई।

10. चमड़ी जाय पर दमड़ी नाँय जाय।

11. भाग्य फरै तौ सिग फरै भीख, बनिज, ब्यौपार।

12. जैसौ परौ सुभाव जायगौ जीते, नीम न मीठौ होय सींच लेऔ घी ते।

13. जरी तौ जरी पर सिकी हू खूब।

14. जहाँ रूख नाँय होंय, तहाँ अंडउआ कूँ रूख मानों जावैं।

15. गूँगे की बोलीए गूँगो जानैं कै गूँगे के घर वारे जानैं।

16. सूरदास कारी कामर पै चढ़ै न दूजौ रंग।

17. होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

18. रामजी की माया–कहूँ धूप कहूँ छाया।

19. मन मन भावैं–मूँड़ हिलावैं।

20. प्यादे सौं फरजी भयौ टेढ़ौ टेढ़ौ जात।

21. गंगा गए गंगादास, जमुना गए जमुनादास।

ऊपर लिखी भई लोकोक्ति–कुत्ता, बिल्ली, कौआ, हंस, घोड़ा आदिक पसु–पंछीन की प्रवृत्ति, भिन्न–भिन्न प्रानीन कौ सुभाव अरु आदत, अबाधित सत्य, लोकरीति अरु नीति सौं संबंधित सुभावजन्य परंपरा अरु आदतन सौं जुरी भई हैं। इनकौ शाब्दिक अभिधेय अरथ इन माँहि लच्छित अरु व्यंजित अरथ सौं भिन्न है। इन लोकोक्तीन माँहि लच्छार्थ अरु व्यंग्यार्थ की प्रधानता है।

2. वन–उपवन अरु वनस्पति जगत सौं संबंधित लोकोक्ति–'प्रकृति परक' लोकोक्तीन माँहि वनस्पति–जगत सौं संबंधित लोकोक्तीन कौ महत्वपूर्न स्थान है। पेड़–पौधा, पर्वत, नदी, नद, कृषि, फल–फूल, वनस्पति सौं संबंधित लोकक्तीन की गणना या वर्ग माँहिं परिगनित हैं। इनसौं संबंधित लोकरीति, व्यौहार, नीति, परम्परा आदि कौ निदरसन इन लोकोक्तीन में मिलै है–

1. आम खायबे ते काम है, पेड़ गिनबे ते कहा काम।

2. विष बेल हू बढ़ी है जाय तौ काटी नाँय जाय।

3. किस्तूरी की गंध सौं गंधन सौं नाँय छिपै।

4. खोदौ पहाड़, निकरी चुहिया।

5. अब आयौ है ऊँट पहाड़ के तले।

6. एक मछरिया सिगरे तलाव कूँ गंदौ कर देवै।

3. काल सौं संबंधित लोकोक्ति–

कालचक्र कूँ प्रकृति तत्व कौ नियामक मान्यौ जावै। सांख्य शास्त्र माँहि काल कूँ 'पुरुष' कौ प्रतीक बतायौ गयौ है। प्राकृतिक प्रलय, आत्यन्तिक प्रलय, नित्य प्रलय आदिक माँहि 'काल–पुरुष' कौ

'नियंत्रन-सूत्र' ही नियामक है। तीनों गुनन की साम्यावस्था के माँहि 'प्राकृतिक संच्छोभ' हू काल-पुरुष की प्रेरना सौं होय,अरु सृजन-प्रक्रिया कौ प्रारम्भ हू 'काल-पुरुष' की संप्रेरना सौं होय। अतएव रितु-काल, प्रातः, सायं, घड़ी-पल, परम-पुरुष, कालावधि आदिकन सौं संबंधित लोकोक्तीन कूँ या वर्ग में गिन्यौ जावै, यथा-

1. सावन सूखौ न भादौं हरौ।
2. सावन भादौ के आँधरे कूँ हरौ ही हरौ दीसै।
3. नौ दिन चले अढ़ाई कोस।
4. चार दिना की चाँदनी फेर अँधेरी रात।
5. जो गरजैं हैं वे बरसैं नाँय।
6. जहाँ मुरगा नाँय बोलैं उहाँ सबेरौ ऊ नाँय होवै का?
7. रामजी की चिरिया राम जी कौ खेत, खाऔ री चिरैया भर-भर पेट।
8. बारह बरस में तौ घूरे के हू दिन बदलैं।
9. जौं लौं काग सराध पख तौलौं तौ सनमान।

4. पंचहाभूतन सौं संबंधित लोकोक्ति-सृष्टि-संरचना के माँहि पृथ्वी, जल, तेज, वायु अरु आकाश कूँ प्रकृति कौ विकार मान्यौ जावै। सांख्यशास्त्र के अनुसार प्रकृति सौं महत् तत्व, महतत्व सौं तीनों प्रकार के सात्विक, राजस, तामस अहंकारन की सर्जना भई है। सतोगुनी अहंकार सौं बुद्धि, रजोगुनी अहंकार सौं 'मन' अरु तमोगुनी अहंकार सौं पंच महाभूतन की उत्पत्ति भई है। पृथ्वी-जल-तेज-वायु-आकाश-अग्नि-सूर्य, अंतरिक्ष, बादल, बीजुरी, आदि सौं संबंधित अनेकानेक लोकोक्तीन कौ प्रयोग व्यौहार में देखौ जावै-

1. आकास तैं गिर्‌यौ धरती नैं झेल्यौ।
2. आग लगायकैं पानी कूँ धामनौ।
3. कूप खुदाये ते कहा, जब घर लागी आग।
4. सागर में बसकैं करैं, कहा मगर सौं बैर।
5. सूरज कूँ चाँदनौ दिखायबौ।
6. वीर भोग्या वसुंधरा।

7. प्यासौ ही कूआ के पास आवै।

8. जैसे उदई वैसे भान, उनके पूँछ न इनके कान।

9. जैसी चलै बयार तब तैसी ही दीजिय ओट।

10. सीस मुड़ाते ही ओरा गिरे।

11. एकलौ चना भाड़ कूँ नाँय फोड़ सकै।

5. पसु-पंछी, वन्य-जीव, आरन्यकन सौं संबंधित लोकोक्ति-

प्राकृतिक सुषमा तौ पसु-पंछी, वन्य जीव, साधु-सन्यासी, वन-उपवन, कुटी-आश्रम, ऋषि यज्ञ-यागादिकन के बिना सून्य के समान है। अतएव या वर्ग माँहि प्रकृति के सुखदाई वातावरन करिवे वारे प्रानी-वर्ग अरु बिनसौं संबंधित पदार्थन कूँ सम्मिलित कियौ गयौ है। इनसौं लोकोक्ति अगननीय हैं, फिरहू कछूक लोकोक्तीन कूँ उदाहरन के रूप में नीचैं लिख्यौ गयौ

1. वन में मोर नाँच्यौ कौंन नैं देख्यौ।

2. महाजनो येन गतः स पन्थाः।

3. हंसा तौ उड़-उड़ गए काग भए दीवान।

4. भइ गति साँप छछूँदर केरी।

5. साँप मरै ना लाठी टूटै।

6. सूख कैं काँटौ हौनौ।

7. जिन्दौ हाथी लाख कौ, मरौ सवा लाख कौ।

8. साँप तौ सिर पै, बूँटी पहाड़ पै।

9. मुरगी कूँ तौ तकुआ कौ घाव ही घनौ है।

.10. सेर-बकरी एक ही घाट पै पानी पीमैं।

11. बिच्छू कौ मंत्र ना जानैं, साँप के बिल पै हाथ मारै।

ऊपर लिखे पाँच वर्गन सौं भिन्न हू वर्गन में 'प्रकृति परक' लोकोक्ति है कूँ चार अरथन में प्रयुक्त कियौ जावै-(1) आदत, (2) सुभाव, (3) भाग्य रचनात्मक अरु नियामक शक्ति। इन चार अरथन सौं संयुक्त करिकैं प्रकृतिपर

में बाँटौ गयौ है। 'प्रकृति परक' लोकोक्तीन कौ मूल उद्देश्य, प्राकृतिक तत्वन माँहि निहित शक्तीन कौ प्रस्फुटन अरु ध्वनित व्यंग्यार्थ कौ प्रतिपादन करनौ है।

संस्कृत अरु हिन्दी के साहित्यकारन नें, लोकोक्ति कूँ अलंकार के रूप में हू स्वीकारौ है। 'लोकोक्ति' के काव्यात्मक प्रयोग कूँ उक्त अलंकार के रूप में लियौ गयौ है। जैसें-

चलौ सखी वहँ जाइयौ, जहां बसैं ब्रजराज।
गोरस बेचन हरि मिलन, एक पंथ द्वै काज॥

या दोहा के माँहि 'एक पन्थ द्वै काज' लोकोक्ति कौ प्रयोग भयौ है। सो 'लोकोक्ति' अलंकार है। अलंकार-सास्त्र के परम विद्वान कुवलयानन्द नामक अलंकार-ग्रंथ के रचयिता अप्पय दीच्छित नैं परिभाषित कियौ है- 'लोक प्रवादानुकृतिर्लोकोक्तिरिति भण्यते' (लोक माँहि प्रसिद्ध काऊ कहावत के काव्यात्मक प्रयोग कूँ लोकोक्ति-अलंकार कह्यौ जावै)

'लोकोक्ति अरु प्रकृति' दोऊ शब्द जनसामान्य की चेतना के परिचायक हैं। दोऊन में लोक-प्रयुक्त सहजता दीखै है। श्रम-साध्य शाब्दिक व्यायाम अरु दीर्घ आयासजन्य अर्थ-दुर्बोधता कौ सर्वथा अभाव पायौ जावै। अभिव्यक्ति कौ सहजता अरु सुबोधता ही दोऊन कौ मर्म-विज्ञान है। अतएव यौं कह्यौ जानौं घनौं समीचीन लगै है कै 'लोकोक्ति' अरु 'प्रकृति' माँहि सहजता कौ संचेतनात्मक भाव अरु लोकतत्व की भाव-प्रवणता कौ गहन संबंध है। या प्रकार सौं प्रकृति कौ अणु-अणु लोकजीवन कूँ प्रभावित करतौ रहै है। या प्रकार सौं 'लोकोक्ति' के कथ्य कौ ध्वन्यात्मक-भाव लोकजीवन की सांस्कृतिक चेतना कूँ प्रभावित करतौ ही रहै है।

'लोकोक्ति अरु प्रकृति' में सहज ही गुम्फन भाव विद्यमान रहै है।

-शास्त्री सदन, कामाँ (भरतपुर)

लोकोक्तीन कौ प्रासंगिक रूप

—श्री यमुनाप्रसाद चतुर्वेदी 'प्रीतम'

लोकोक्ति-

लोक चरित औ कथा प्रसंगा, करै प्रगट सब्द ध्वनि व्यंगा।
आखर थोर अर्थ अधिकाई, सो लोकन लोकोक्ति कहाई॥

लोकोक्ति काहू एक क्षेत्र या एक बर्ग की नाँय होइ। बू तौ प्रसंगबस कहूँ हूँ जोड़ी जाय सकै। या में चाहें काहू भासा की अथवा काहू देस की चौं न होय पै प्रासंगिक हौनी चहिए। यहाँ मैं कछू प्रसंग सहित लोकोक्ति लिख रह्यौ हूँ यथा-

''जा नबाबी घस घस नाएं'' अथवा ''जि का कोऊ नबाबी घस घसै?''

याकौ प्रसंग, जा राज में न्याव, सत्य और समै ते नाँइ मिलै तौ वहाँ जा लोकोक्ति कौ प्रयोग कियौ जाय। जद्य प्रसंग की लोकोक्ति काहू समै नबाबी राज सौं प्रचलित भई है। बतामें हैं कै भोपाल के नबाबी राज में जव काहू गाम में आग लग जाती तौ बा गाम बारे गाम के चौकीदार कूँ रिपोर्ट लिखाबै हे। तब बू चौकीदार निकट निकाय में पैदर जाइकैं दो तीन दिनन में खबर करतौ तब बू निकाय बारे तैसील में पन्द्रह बीस दिना पाछैं खबर पहुँचाबै हे। फिर बू खबर दो तीन महीना पाछैं नबाब तक पहुँचै ही। तब वहाँ ते आग बुझाइवे कौ औडर लैकैं दमकल गाम में पहुँचै ही। गाम वारेन ते दमकल वारे पूछै हे कै भैयाऔ आग कहाँ लगी है ताइ हम बुझायवे कूँ आए हैं।

आग तौ बुझई चुकी हौंती। वे कर्मचारी लौटकैं रिपोर्ट दैंते कै आग बुझ चुकी है। ताके बुझायवे में अमुक खर्चा पर्‌यौ है। ताकौं नबाब पास कर दैंते। जा तरियाँ की जा राज में न्याव व्यवस्था होंती ता जगै पै बहुधा जाई लोकोक्ति कौ प्रयोग कियौ जातौ। वर्तमान माँहिं देस में न्याव व्यवस्था कूँ देखौ जाय तौ देस में जि लोकोक्ति साँचई चरितार्थ है सकै। हमारे स्वराज की न्यायिक दशा प्रायः कानूनी व्यवस्था नैं ही बिगाड़ राखी है। मैंनें यापै कछू छन्द हू लिखे हैं जिनमें ते उदाहरण कूँ एक लिख रह्यौ हूँ यथा-

कैद करि राख्यौ है जु कलम कानून की नैं,
हथकड़ी हथकण्डा की नैं बाँध लीनौ है।

नजीर की जंजीर नैं जकर्यौ है अंग-अंग,
रिसवती रस्सी नैं बिखेर जाल दीनौ है।
वंकालती वेईमान बहस की बेड़ी डार,
फाँसी हेतु सिफारसी फन्दा फिट कीनौं है।
'प्रीतम' कहत सत्य न्याय यों पुकार कहैं,
मेरौ सरवस्व तौ स्वराज ही नैं छीनौ है॥

आत अपनाइत लै विरासती हितैषी के,
क्लेस की कुमूर्ति धूर्त द्वेस के जो दंस हैं।
जानत न न्याउ घाउ देखकैं लगामें दाउ,
ताउ दैं दबामें बनैं दया के नृसंस हैं।
जान कैं अजान होत खोत धर्म कर्म सभी.
बोत बिस बीज जाते होत घर ध्वंस हैं।
'प्रीतम' प्रसंस पूर्ण भान कर भनै आज,
ताज पंच बाँधें जो समाज बीच कंस हैं॥

जि लोकोक्ति प्राय सभी प्रदेसन में पढ़े-अनपढ़, गाम और खेरेन में हू सुनवे में आवै है। पै जि लोकोक्ति प्राय: अपभ्रंस रूप में ही मिलै है। यथा-'भूख में किबाड़ पापड़ है जाँय' जा लोकोक्ति में अप्रासंगिक सब्दन कौ अपभ्रंस के रूप में वर्णन मिलै है। सत्य में याकौ प्रसंग जि है कै कोऊ सुसर जी घर में आए और अपनी बहू ते बोले कै बहू-बहू मोइ बड़े जोर की भूख लग रही है तू जल्दी कछू कर कैं मोय खबाय दै। जि सुनकैं बहू नैं सोची कै जल्दी तौ पापड़ ही भुँज सकै सो वू बिचारी जल्दी-जल्दी पापड़ भूँज कैं देंन लगी तब ससुर जी बोले कै बहू 'भूख में कै बार पापड़।' साँच में जि लोकोक्ति के शब्द जे ई हैं कै 'भूख में कै बार पापड़' पै जि लोकोक्ति इतनी आगैं बढ़ी कै जाकौ प्रयोग प्राय: सबई 'कै बार' कूँ 'किबार' ही कहन लगे हैं। जब कै किवार और पापड़ कौ कोऊ संग नाँय।

याही तरियाँ एक लोकोक्ति और है। याकूँ बड़े-बड़े बुद्धिमान हूँ प्रयोग में लामें हैं। लोकोक्ति है, ''अकल बड़ी कै भैंस।'' ये हू लोकोक्ति अप्रासंगिक शब्द के सुनवे में आवै है। जब कि अकल और भैंस कौ कोऊ संबंध नाँय। सही में जि लोकोक्ति अपभ्रंस में प्रचलित है। या के सब्द उर्दू के हैं। जि जा तरियाँ है कै कोऊ बूढ़ौ है और बामें बुद्धि नाँय और बाके सामई कोऊ बालक बुद्धिमान बैठौ होय तौ वहाँ पै ये ही कह्यौ जायगौ कि 'अकल बड़ी या बैस' अर्थात बुद्धि बड़ी कै आय। जि बात तौ लोगन नैं छोड़ दीनी और बैस अर्थात उमर के ताँईं बैस की जगह भैंस कहन लगे हैं।

आसा है इन प्रासंगिक लोकोक्तीन कौं पाठकगण अवसि सुधार लिंगे।

-श्री यमुना दैवज्ञ पीठ
यंगाली घाट, मथुरा (उ.प्र.)

ब्रजकाव्य में लोकोक्तीन की छटा

—श्री गजेन्द्र नाथ चतुर्वेदी

ब्रज–काव्य–परम्परा कौ समीपस्थ सम्बन्ध देस के मध्यवर्त्ती भू–भाग और विशेष रूप सौं ब्रज प्रदेस, ग्वालियर, राजस्थान आदि क्षेत्रन सौं रह्यौ है जो सामाजिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक आदान–प्रदान की दृष्टि सौं भौत महत्वपूर्ण मान्यौ जाय है। याई सौं भिखारीदास आदि आचार्य कवीन नें विनेंई सुकविन कौ सरदार मान्यौ जिनके काव्य में विभिन्न भाषान के मिश्रन के संग प्रचलित लोकोक्तीन, मुहावरेन आदि कौ सुन्दर प्रयोग भयौ–

'भाषा ब्रजभाषा रुचिर कहैं सुकवि सब कोइ।
मिले संस्कृत पारसिहु पै अति प्रगट जु होइ॥

ब्रज मागधी मिलै अमर नागजमन भाषानि।
सहज पारसी हूँ मिलै खट विधि कवित बखानि॥'

याई कारन उक्त भू–भाग देस कौ कंठहार और ब्रजभाषा सब भाषान की मणि मानी गई। उक्ति–वैचित्र्य, शब्द–संगठन और व्यंजकता की दृष्टि सौं ब्रज–कवीन नें अन्य प्रयोगन के संग लोकोक्तीन, मुहावरेन आदि कौ खूब प्रयोग कियौ। ये ब्रजभाषा में निहित अभिजात संस्कार के संरक्षन के तौ हामी रहेई, लोक की सहज, स्वच्छन्द, उन्मुक्त प्रकृति कूँ विस्मृत नाँय करि सके। लोकोक्ति के लक्षन व्यक्त करते भये भिखारीदास जू नें लिख्यौ–

'सब्द जु कहिये लोक गति सो लोकोक्ति प्रमान।
ताही छेकोत्तयौ कहैं, होइ लिये उपखान॥'

संगई लोकोक्ति के प्रयोग कौ उदाहरणउ वित्रै दियौ–

'बीस बिसे दस द्यौस में आवहिंगे बलबीर।
नैन मूंदि नव दिन सहे नागरि अब दुख भीर॥

याऊ सौं बढ़िया नीति–परक लोकोक्तिन के उदाहरण हमें महाकवि पद्माकर के काव्य में मिलैं हैं। एक लोकोक्ति है–

"साँच हू ताको न होत भलौ जो न मानत है कही चार जने को।"

परकीया खंडिता कौ उदाहरण देत भयें महाकवि पद्माकर लिखें हैं-

"सीखन मानी सयानी सखीन की, यों 'पद्माकर' की अमने की।
प्रीति करी तुम सौं बजिकैं सु बिसारि करी तुम प्रीति घने की।
रावरी रीति लखी इमि सांमरे होति है संपति ज्यों सपने की।
साँच हूँ ताकौ न होत भलौ जो न मानत है कही चार जने को॥"

याई प्रकार सौं एक और लोकोक्ति-

"भूलि हू चूक परै जौ कहूँ तिहि चूक की हूक न जाति हियें ते" कौ सुन्दर प्रयोग देखौ। महाकवि पद्माकर परकीया कलहांतरिता कौ उदाहरण प्रस्तुत करि रहे हैं और कहि रहे हैं-

"कासौं कहामैं कहौं दुख यों मुख सूखतई है पियूष पिये तें।
त्यौं 'पद्माकर' या उपहास कौ त्रास मिटै न उसास लिये तें।
व्यापै बिथा यह जानि परी मन मोहन मीत सौं मान किये तें।
भूलि हूँ चूक परै जो कहूं तिहि चूक की हूक न जाति हिये तें॥"

इन उदाहरणन सौं स्पष्ट है कै सुकवीन कौ प्रयास ये रह्यौ कै लोकोक्तीन के प्रयोग में ये झलक न आवै कै ये जानबूझ कैं सप्रयास किये गये वरन् उनमें सहज स्वाभाविकता बराबर बनी रहै। एक लोकोक्ति है कै-

"आपने हाथ सौं आपने पाँय पै पाथर पारि पर्‌यौ पछराने।"

गणिका कलहान्तरिता कौ उदाहरण देत भये महाकवि पद्माकर लिखें हैं-

"हीर के हार हजारन को धन देत हुते सुख सौं सरसाने।
हौं न लयौ 'पद्माकर' त्यौं अरु बोलीन बोल सुधा रससाने।
वे चलि ह्याँते गये अनतै, हम का अब आपनी बात बखाने।
आपने हाथ सौं आपने पाँय पै पाथर पारि पर्‌यौ पछराने॥"

महाकवि 'पद्माकर' में लोकोक्तीन के प्रयोग भरे पड़े है-

"जो बिधि भाल में लीक लिखी सो बढ़ाई बढै न घटै न घटाई।"

"कैसी भई तुम्हें गंग को गैल में गीत मदारन के लगे गावन।"

"तन जोबन है धन की परछाँही।"

"अब हाथ के कंगन कौं कहा आरसी।"

"एक दिना नहिं एक दिना कबहूँ फिरबे दिन फेर फिरैंगे।"

"जहाँ जहाँ मइया तेरी धूरि उड़ि जात गंगा,

तहाँ तहाँ पापन की धूरि उड़ी जात है।"

लोकोक्तीन और मुहावरेन के प्रयोग सौं भाषा सजीव, सप्रमाण और गतिमती है जाय है। लाक्षणिका और व्यंजना कौ मेल यामें सुगुंफित भावानुभूति कौं व्यक्त करिबे में औरऊ सहायक होय है।

ब्रज में एक बड़ी प्रचलित लोकोक्ति है कै-

"चोरन सौं एजू कहूँ मोर मारे जात हैं।"

याकौ सफल प्रयोग नीचे उद्धृत छन्द में देखैं-

"दूध दधि माखन चुरात ना अघात न्हात,
गोपिन के चोरि चोरि चीर दुरे जात हैं।
डारि कैं ठगोरी मिलि चोरी-चोरी
चाह राधे मन मानिक चुराये लिये जात हैं।
मृग सौं चुराये दृग, चन्द सौं बदन जल-,
जात कर पग, नीलवन चोरे गात हैं।
ऐसे नामी चोर कहा भरि हैं भंडार मेरे,
चोरन सौं एजू कहूँ मोर मारे जात है॥"

ब्रजभाषा काव्य में लोकोक्तीन कौ ऐसौऊ प्रयोग मिलै है जो नैंक लीक सौं हटिकैं है, छन्द देखैं-

"ठाठ सौं प्रसन्न चित्त आपु आठौ जाम रहौ,
आठ आठ आँसू पै विपन्न हाय रोये हैं।
इनकौं न एजू कोऊ नाँठ लेवा पानी देवा,
आपु निज नाँठ की प्रसिद्धि ही में खोये हैं।
ये तौ दीन हीन, लच्छमी के पति आपु पै,
मलीन आपु माथे स्वर्न मुकुट सँजोये हैं।
प्यासे पपिहान नीर की न एकौ बूंद जुरी,
वल्ले वल्ले आपु छीर सागर में सोये हैं॥"

बड़ी प्रचलित लोकोक्ति है कै "भाग में जो बदौ है सोई मिलैगौ।"

याकूँ व्यक्त करत भये एक ब्रजकवि कहैं हैं-

''धाम नगेस, गनेस से पूत हैं सिद्धिदा क्लेस निवारन वारे।
अन्न की देवी सती घरनी, दरनी दुख गंग हू सीस पै धारे।
कोस अमी कौ ससो लसै भाल पै, नन्दी विसाल बँधौ नित द्वारे।
भाग की का कहिये हर सो लये खप्पर माँगत भीख विचारे॥''

फिर कहैं हैं कि ''जो नाँय बदौ सो कैसिऊ करौ नाँय मिलैगौ-''
''हर जोतत सीय सी कन्या महीयसी बूड़े वहैं उन्हें गंग सी माई।
मथैं सिन्धु समुद्रजा श्रीहरि कौं, द्रुपदा धिय द्रोपदी अग्नि की जाई।
मिलिवौ जो बदौ सो मिलै निहचै, न बदौ न मिलै करौ कोटि उपाई।
अरधांगिनी हेमवती मिलीं पै सिव नंगौ फिरै तन छार लगाई॥''

ब्रजकाव्य माँहि लोकोक्तीन कौ प्रचुर प्रयोग महात्मा सूर के जमाने सौं ई होन लग्यौ हो। सूर सागर में-

''छटि आठैं मोहि कान्ह कुंवर सौं''

''दाई आगें पेट दुरावति''

''पाँच की सात लगावति झूठी''

''निरे मूढ़ के खेत'' आदि लोकोक्तिन के प्रयोग भरे पड़े हैं।

डॉ. जगदीश चन्द्र गुप्त मेरे पुराने सहपाठी और ब्रजभाषा के वरिष्ठतम कवि हैं। उनके ई एक सवैया छन्द कौ उदाहरन ब्रज लोकोक्ति सम्बन्धी आलेख में दैते भये समाप्त करि रह्यौ हूँ-

''बात सिखावन की रही दूरि, सखीन कौं पास न आवन देती।
जानति हू पहिचानति नाँहि, न मानति मान भरी करौं केती।
जेती अबेर लगावत लाल हौ, बाल हिये बढ़ि है रिसि तेती।
छाँड़ि अँदेसन आपु चलौ, कहुँ होत है स्याम संदेसन खेती॥

-''हमीरपुर-हाउस'', 9, विद्यानगर,
लखनऊ-226004, (उ.प्र.)

दोहान माँहिं लोकोक्ति-सौंदर्य

—श्रीमती माधुरी शास्त्री

व्रजभाषा सदियन सौं कविता की भाषा रही है यातैं व्रज की लोकोक्तीन में काव्य कौ चमत्कार रहौ है। लोक भावनान की सहजता अरु सूक्ति की संग्रहणीयता हू रही है। हम या जगै कछू ऐंसी लोकोक्तीन के नमूना पेश करवे कौ प्रयास कर रहे हैं जिनमें काऊ न काऊ वात कूँ काव्य-चमत्कार की चासनी में पगाकैं रखौ गयौ है। मूलत: ये सव लोकभावनान कूँ अभिव्यक्त करवे वारी सूक्ति रहीं हैं। हाँ इनमें भाषा कौ सौष्ठव, काव्य कौ चमत्कार, अभिव्यक्ति कौ अनूठौपन कछू या तरियाँ सौं समाहित है जासौं ये सुभाषित या सूक्ति जैसे लगवे लग जाँय हैं। कछू नमूनान सौं हमारी ऊपर लिखी बात प्रमाणित है जाइंगी।

विद्वानन कौ मत है कै लोकोक्ति कहानीन कौ घिस्यौ भयौ स्वरूप हैं। याए यों हू कह सकैं हैं कै हर लोकोक्ति के पीछैं कोऊ न कोऊ कहानी है। जा वात कूँ कहानी कैई पन्नान में कह पावै वाई मन्तव्य कूँ लोकोक्ति एक पंक्ति में कह देत हैं। कहानीन के उद्देश्य जरूर हाँय। यथार्थ के चित्रण के पाछैं आदर्श कहूँ न कहूँ निहित होय।

समाज में नैतिकता कौ संदेश दैवौ हू कहानी कौ प्रमुख उद्देश्य रह्यौ है। याही सौं लोकोक्ति में नीति संवंधी संकेत अपने आप छुप्यौ भयौ होय। नीतिकाव्य माँहि लोकोक्ति सौने में सुहागौ जैसी लगैं। लोकोक्ति में सूक्ति हू गुंथी भई ऐसी लगै जैसें मणि-कांचन योग होय। यहाँ कछू दोहान सौं लोकोक्ति कौ काव्यमय स्वरूप स्पष्ट है जायगौ-

शहद पंख लिपटाय कैं, माखी यों पछिताय।
हाथ मलै और सिर धुनै, लालच वुरी वलाय॥

एक माखी हती। वाके सरीर में हमेशा आलस भर्‌यौ रहतौ। कछू काम धाम में वाकौ मन ही नाँय लगतौ। वाकी पड़ौसिनन नें आलस त्याग त्यागकैं अपने-अपने छत्ता वनाय लीने। आलसी मक्खी नैं जव रस सौं भरे छत्ता देखे तौ मन में सोचिवे लग गई कै मौकौ मिलते ई थोड़ौ-थोड़ौ रस इन छत्तान में सौं ही लै आयौ करूँगी। ऐसौ विचार करकैं, मौकौ हाथ लगतेंई वो छत्ता में जाय रस पीवे लग गई।

पीते-पीते वाके पंख सहद में बुरी तरह सौं सन गये, शहद में पंख ल्हिस जावे सौं वो उड़वे सौं लाचार है गई। वाय अपनी लालची प्रकृति पै बहुत ही दुख भयौ।

करिये सुख को होय दुख, यह थौं कौन सयान।
वा सौने कूं जारिये, जाते फाटत कान॥

एक महिला गहनेन की बहुतई सौकीन ही। हर साल पइसा बचा बचाकैं वो एक नयौ गहनौं गढ़वा लैंती। त्यौहार वार पै विन्नें पहर कैं अपनी पड़ौसनन कूं दिखाती। विनमें तै कछू तौ गहनेन कूं देख कैं सिहार्तीं अरु कछू मन ही मन जलकैं खाक है जातीं। धीरे-धीरे वाके पास भौत से गहने(जेवर) है गये। तब वाकूं चोरन कौ डर सतावे लग गयौ। कहूँ ऐसौ न होय कै काऊ दिना चोरी है जाय। वू रात दिना पहरेदारी करवे लग गई। वाकी रातन की नींद हराम हैवे लग गई। वानें डर के मारे सारे गहने पहर लिये। मोटी-मोटी झूमकी कानन में पहर लईं। चोर जानें आते या न आते और आते तौ कब आते पै इतेक भारी झूमकीन के पहरवे सौं वाके कानन की लौर बोझ सौं कटवे लग गईं। कानन में दर्द होवे लग्यौ सो अलग।

कछू दिनन के तांईं वाके पीहर सूं वाके साथ पढ़ी, साथ ई खेली भई सहेली वाके घर आई। वानें या महिला कौ सब चरित्तर देख्यौ तौ बहुतई दुखी भई। बोली ऐसे सौने सौं सखी, का फायदा जासौं कान ही दुख पा रहे हैं।

गिरि ते गिरिये जाय, मान सरोवर डूबिये।
मर जइये विष खाय, मूरख मित्र न कीजिये॥

ओछे व्यक्ति सौं कबहु दोस्ती नाँय करनी चइयै। यासौं दुख ही दुख मिलै है। मूरख मित्र की अनेकन कहानी प्रचलित हैं। एक कहानी मैं लिख रही हूँ -एक समय की बात है एक गधा और एक ऊँट में बहुत गहरी दोस्ती ही। वे संग-संग रहै हे। बहुत दिनान सौं गधेराम कूं एक खेत की हरियाली मन ही मन बहुत खटक रही। बू सोचतौ मैं यामें (खेत में) घुस कै चर लऊँ। वानें एक दिनाँ अपनी योजना ऊँट कूं हू बताई। ऊँट नैं कही-'दोस्त, या खेत में घुसनौ, खतरा मोल लैनौ है। सुन्यौ है कै खेत कौ मालिक बहुत ही जल्लाद है।' परि दोस्त की सीख गधा के मगज में नाँय घुसी। यो तौ सावन कौ आँधरौ है रह्यौ हो। वाए तौ हरौ ही हरौ सूझ रह्यौ हौ। वानें कही-'कछू हू होय ऊँट भाई मैं तौ या खेत कूं चरूं गौ। तबई मोकूं चैन परैगौ। ऊँट समझ गयौ कैं विनाश काले विपरीत बुद्धि है जाय है। कबहू नहीं मानैगौ, वानैं गुस्सा में कही जा और मर।

गधा नें जम कैं खेत कूं चरौ फिर खुशी में जोर-जोर सौं रेंकवे लगौ। अजीब आवाजन कूं सुनकैं खेत कौ मालिक जाग गयौ। वानैंहल्ला मचा-मचूं कैं और लोगन कूं इकट्ठौ कर लियौ। खेत मालिक

नैं सबसौं कही मेरी फसल इन दुष्टन नैं कैसी चौपट कर डारी। लोगन कूँ भौतई गुस्सा आयौ। विन ते कछून नैं मिलकैं गधा कूँ पीट्यौ और कछू लोगन नैं ऊंट कूँ। सच है गेंहू के संग घुन भी पिस जा हैं। ऊँट कूँ गधा सौं दोस्ती करवे पै बहुत पश्चाताप भयौ। वू मन ई मन सोचवे लग गयौ कै काऊ सच ई कही है मूरख मित्र सौं बुद्धिमान शत्रु भलौ। नादान की दोस्ती अरु जी कूँ जंजाल।

अपनी पहुंच विचारकैं, करतब करिये दौर।
तेते पाँव पसारिये, जेती लांबी सौर॥

अपनी ताकत के अनुसार ही खर्च और कार्य करने चइयें। आजकल लोग दूसरेन की देखादेख ब्याहन में लाखन रुपिया के मंडप बनवाय कैं वाहवाही लूटैं हैं। हजारन के तौ बामें बिजली के बल ही लग जाँय हैं। चाँदी की कुर्सीन पै बैठकैं लोग अपने कूँ एक दिन कौ बादशाह समझवे लग जाँ हैं। ये ही धन अगर बेटी-बेटान कूँ दियौ जाय तौ कितनौ अच्छौ रहै। बेकार कूँ हवा में लट्ठ मारवे स का फायदा? अपनी ही शक्ति (संचय) व्यर्थ चली जाय है। यदि आपके पास धन है तौ जो मन में आ सो करौ पै व्यर्थ की सोभा के ताँईं आप कर्जा लैकैं दिखावौ कर रहे हौं बू तौ ठीक [illegible]। ऋण लैं घी पीबे सौं का फायदा?

गिद्ध चाल चलकैं रोज एक जानवर कूँ या गुफा में भेज देंती। ऐसौ करते करते जंगल में बहुत कम जानवर रह गये। सब अपने-अपने कूँ ढूँढते और जब खूब तलाश करवे पै न मिलते तो झक मार कैं चुप बैठ जाते। एक लोमड़ी कौ बच्चा कछू दिनन सौं खो गयौ। लोमड़ी ढूँढती-ढूँढती गुफा तक जा पहुँची। वानें देखी गुफा में पामन के निसान हैं पर सिगरे निशान भीतर जावे के हैं लौटबे के नाँय हैं। बू समझ गई जरूर दाल में कछू कारौ है। वानें जायकैं जंगल के बचे जीवन सौं सिगरी बात बताय दई। सब सचेत है गये।

वहाँ बैठे द्रुतगति नामक हिरण नें कही कै गिद्ध तौ कह रह्यौ हतौ कै शेर नें मांसाहार करवौ छोड़ दियौ है। तबई चपलचित्त कौआ नें कही-''अजी छोड़ौ.....'जाकौ पड्यौ स्वभाव जाय नाँहि जीव सौं, नीम न मीठौ होय सिंचे गुड़ घीय सौं।'' (ऐसी राजस्थानी की हू लोकोक्ति है)

''निर्धन ही जग में भलौ, सोवै पांव पसार।''

या लोकोक्ति कौ अर्थ अपने आप में प्रगट होय है और बहुतई सरल हू है। तुलसीदासजी की एक उक्ति लोकक्ति है गई है 'सबते भले विमूढ़, जिन्हें न ब्यापै जगत गति।' यहाँ पै आये भये विमूढ़ सब्द पै मैं अपने विचार प्रगट करवौ चाहूं हूँ- विमूढ़ सब्द के कैई अर्थ है सकें हैं। जा तरियाँ विमूढ़न कूँ जगतगति नाँय व्यापै वाई तरियाँ घोर आलसीन कूँ हूँ नाँय व्यापै। यहाँ विमूढ़ कौ अर्थ अहदीपन हू सौं लियौ जा सकै है। ऐसे अहदीन कौ एक रोचक कथा मोकूँ याद आ रही है जाकूँ लिखिवे कौ मैं लोभ संवरण नाँय कर पाय रही हूँ-

लखनऊ के बादशाह के यहाँ कछू 'अहदी' रह्यौ करै हे। बिनके भोजनाच्छादन अरु अन्य सबई सुविधान कौ प्रबंध बादशाह सलामत के यहाँ सौंई हौंतौ हौ। *उन अहदीन कौ एक मात्र गुण मान्यौ जातौ* हौ कै वे मर जाइंगे परि अपनी चारपाई सौं उठेंगे नाँय।

फिर काहौ! जाय देखौ बूही अहदीखाने में भर्ती हैवे लग गयौ(मुफ्त कौ खानौ मुफ्त कौ पहननौ भला कौन कूँ बुरौ लगै है?) एक दिना हजरत सलामत नें इनकी बढ़ती संख्या कूँ देखिकैं बिनकी परीक्षा लैवे की बात सोची। बादशाह नें आज्ञा दई कै अहदीखाने में आग लगा दई जाय। ऐसौ ही कियौ हू गयौ। आग लगते ही पाँच हजार अहदीन में ते चार या पांच ऐसे निकसे जो चारपाई में बिना हिलेडुले परे रहे। न बिन्नैं आग की परवाह करी न जरिवे की।

बादशाह समझ गयौ कै येई चारों सच्चे अहदी हैं। इन्नैं जगत की गति नहीं व्यापै ...बिनकी तरफ सौं कोई जियौ या मरौ। सब सौं बड़ौ विमूढ़-अहदी अजगर ही होय है तबई तौ कह्यौ गयौ है कै 'अजगर करै न चाकरी पंछी करै न काम।' निर्धन के पास कोऊ कीमती वस्तु नाँय होय वाकूँ कछू बात को चिन्ता नाँय होय। बू तौ भाटा पथरान में भी लुढ़क कैं सो जाय है।

''जो विधना नें लिख दिये, छठी रात के अंक।
राई घटें न तिल बढ़ें, रह रह जीव निसंक॥''

सदियन सों भारतीय संस्कृति में ये मान्यता निर्बाध रूप सों चली आ रही है कै जो कछू मनुष्य भोगै हैं या पावै है वू सब अपने भाग्य में लिखे हैवे सों है। वह तदनुकूल ही कर्म की ओर प्रवृत्त होय है। याकौ प्रत्यक्ष उदाहरण संसार के भाँति-भाँति के मनुष्यन कों देखकें पतौ लग जाय है। सिगरे नर-नारी एक ही प्रकार के हाड़-माँस सों बने भये हैं परि का कारण है कै कछू लोक-साहित्यकार, कछू विद्वान, धुरंधर, कछू चित्रकार, कछू गायक तौ कछू मूर्तिकार और कछू समाज के काजें कलंक (निरर्थक) सावित हांय। विधाता, व्यक्ति कूँ जिन ग्रह नक्षत्रन में पैदा कर रह्यौ है वे ही ग्रह-नक्षत्र व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक हाँय हैं। जब सबई कौ रक्त एकसौ है तौ फिर चौं नहीं सब धुरंधर विद्वान पैदा हांय हैं? जरूर या बात कूँ माननौ परै है कै विधाता नें छठी की रात कूँ, जो जो जातक की जन्मपत्री में लिख दियौ है वही हैकें रहै। यामें रत्ती बढ़ैगौ ना माशा घटैगौ। व्यक्ति कूँ सुख मिलवे पै इतरानौ ना चइयै और ना ही दुख पड़वे पै घबरानों चइयै। ये मानकें सुख-दुख अंगीकार करनौ चइयै कै ये सब मेरे भाग्य के हैं, यदि सुख नहीं रह्यौ तौ दुख ऊ नाँय रहैगौ। दुनियाँ में कोऊ भी वस्तु स्थिर नाँय है, सब चलायमान हैं। तबई तौ ये लोकोक्ति प्रचलित है-'सबै दिन जात न एक समान।'

''दिन बिताओ आले वाले
कातूंगी चंदा उजियाले।''

आज कौ काम कबहू कल पै नहीं छोड़नौ चइए, जो करनौ है सो तत्काल योजना बनायकें कर लैं याही में भलाई हैं। बीतौ समय वापस नाँय आवै है। एक बेर समय निकस जावे सों सिर्फ पछतावे के अलावा हाथ कछू नाँय लगै है। कह्यौ भी गयौ है कै 'अब पछताये होत का जब चिड़िया चुग गई खेत।' कछू काम शुरू करवे सों पैलैं वामें आइवे वारे खतरान कौं हू सोच कैं, उन खतरान सौं सुरक्षा के उपाय हू करकें रख लैने चइएं।

जैसें काऊ के घर में कुँआ है वो कुँआ के ई पानी कौ इस्तेमाल करै है। वाकूँ चइये कै घर में रस्सी और बालटी-कलसा निकारवे वारे 'काँटा' कूँ पैलें से ही खरीद कें रख ले। कौन जानें कब बालटी कुँआ में गिर परै। फेर बाई बखत थोरी दौर कैं बजार सों खरीदवे भागैगौ। सब इंतजाम पैलें ही करकें राखनौ चइये। ये सोचनौ नाँय चइयै कै जब खतरा आवैगौ तब देख्यौ जायगौ।

''यद्यपि अपनौ होय तउ, दुख में करत न सीर।
ज्यों दुखती अँगुरी निकट, दूसरि ताहि न पीर॥''

व्यक्ति चाहे अपनौ कितनौ हू सगौ चौं न होय वू दुख परिवे पै दूर सरक जाय है। सोचै है कै कहीं

मोकूँ याकी सेवा सुश्रुषा न करनी पर जाय। याकौ रोवौ-धोवौ, आह अथवा चीत्कार ना सुनने परि जांय। सारौ संसार सुख कौ ही साथी होय है दुख कौ नहीं। जैसें अपनी ही काऊ आँगुरी में चोट आ जायवे सौं वाके साथ रहवे वारी अँगुरिया थोड़ी दूर खिसक जाँय हैं, वा दुखी अँगुरी कौं अपनी पीड़ा खुद ही सहन करनी परै है। कह्यौ भी जाय है कै "सुख के साथी सहस नर दुख में रहै न कोय।"

"मेरी पड़ौसन खाये दही, मोसौं कैसें जाय सही।"

हर व्यक्ति की नकल करबे की आदत होवै है। या आदत सौं कोऊ अछूतौ नाँय रह पायौ। यदि पड़ौसी के घर में टी.वी. आयौ है तौ मोय भी चइयै। वैसें ऐसौ चाहवौ कोई बुरी बात नाँय है पर नकल भी सोच समझकें करनी चइए। वितेक ई इच्छा बढ़ानी चहियै जितेक अपनी जेब में ताकत होय। नकल करवे के ताँई भी अकल की जरूरत होय है। फिर याहू बात कौ ध्यान रखनौ चहिए कै "देख पराई चूपड़ी चौं ललचावै जी।"

-सी-8, मंजु निकुंज,
पृथ्वीराज रोड, सी-स्कीम, जयपुर

मानवी ज्ञान के चोखे अरु चुमते भए सूत्र अरु घनीभूत रत्न ही लोकोक्ति हैं।

-डा. वासुदेव शरण अग्रवाल

कवितन में कहावत- मुहावरेन को प्रयोग

—श्री छज्जूराम पाराश

कहावत अरु मुहावरेन कौ प्रयोग जनसाधारण की बोलचाल में अनादि काल सौं हौंतौ आयौ है कहावत अधिकतर कविता या पद्य की कोई पंक्ति या पद्यांश ही होय परि याकौ प्रयोग गद्य लेखन या भाषण में ई अधिकतर कियौ जातौ रह्यौ है। याकौ कारन जि रह्यौ है कै पद्य में कहावत या मुहावरे कूँ हम वाकी ज्यौं की त्यौं भाषा में प्रयोग नाँय करि पामैं हैं। पद्य में कहावत की भाषा बदलनी परै है पर मेरौ अनुभव है कै वाकूँ समझिवे में अशिक्षित व्यक्ति कूँ हू कोऊ कठिनाई नाँय आवै है जैसैं नीचै दोइ कवित्त 'गँवार' की पहचान पै हैं जिनमें बदलते प्रयोग सौं एक अद्भुत काव्य-सौंदर्य दिखाई देय है:-

गँवार या ओछौ

उफनत ओछे पोखरा की भाँति बेर-बेर,
जाकौ हर पल्लौ रहै, कीच में सनौ-सनौ।
हींग की सी कोथरी में, बास ही तौ बास रहै,
तौऊ थोथे चना जिमि, बाजत घनौ घनौ॥

ठनकारत डोलै है, फटे बाँस की तरियाँ,
मन में जो मियाँ मिट्ठू डोलत बनौ बनौ।
ऊँची है दुकान जामें फीकौ पकवान भर्‌यौ,
भीतर तौ काँथौ नाँय, ऊपर बनौ ठनौ॥ 1॥

पूरौई चालीस सेरौ ही गँवार ताहि मानौ,
जो कछू न जानैं पर काहू की न मानैं है।
पशुन ते गयौ बीतौ, उल्लू सदा काठ कौ है,
हित अनहित निज, नाँहि पहचानै है॥

अकल कौ दुसमन, धारि लेय बेहापन,
अपनी पै आवै फेर, अपनी ही तानै है।
काटत है डार वो ही, जापै खुद बैठौ आप,
तौऊ निज शेखी निज मुख सौं बखानै है॥ 2॥

ऊपर लिखे कवित्तन में कहावत अरु मुहावरेन कौ प्रयोग शब्दन के बदलवे पैऊ सही अर्थ बताय रहौ है यथा 'तोऊ थोथे चना जिमि बाजत घनौ घनौ' 'थोथौ चना बाजै घनौ' ते अधिक प्यारौ लगै है। अत: या तरियाँ भाषा में बदलकैं प्रयोग करबे ते कहावत व मुहावरे सुनिवे व समझिवे में औरऊ उत्तम लगें हैं।

कछू सीख के कवित्त प्रस्तुत हैं-

झूंठी शान पै गुमान करै काहे अनजान,
सोच रे नादान कबै धूर मिलि जायगौ।
मिली गांठ हर्द की पसारी बन बैठौ है तू,
पानी कौ बबूला, केती देर टिक पायगौ॥
आँधरे के हाथ में बटेर मानौ लग गई,
ऊपर कूँ थूकैगौ तौ ऊपर ही आयगौ।
छोर जब आवै तेरे पीछे बारे पुन्यन कौ,
पाप कौ घड़ा तौ तेरौ आप भरि जायगौ॥ 1॥

बिन पाँख आसमान में उड़ान भरै मन,
ऊपर ते आप ही तू, नीचे गिर जायगौ।
ऊँची जो दुकान में तू, फीकौ पकवान भरै,
पर्‌यौ रहै न्यौंही कोऊ, ना खरीद पायगौ॥
अपने ही मन में तू मियाँ मिट्ठू बनौ रहै,
दूसरे की सीख कूँ जो चित पै न लायगौ।
जैसी करनी है वैसी भरनी परैगी तोय,
बोयगौ बमूर तौ तू, आम कैसें खायगौ॥ 2॥

चाँदनी है चार दिन, फेर है अँधेरी रात,
मृग तृष्णा में मन, काहे भरमात है।
पर्‌यौ निन्यानवैं के, फेर में तू व्यर्थ खल,
माया के झौंके में मूढ़, काहे झोका खात है॥
चालनी में धार काढ़ै, करम टटोरै फेर,
खोदै जो पहाड़ अन्त चुहिया ही पात है।
अपने ही पाँव में कुल्हाड़ी खुद मारि रहौ,
समझै न हारै तोते पार ना बसात हैं॥ 3॥

मैंनें कवित्तन में कहावत अरु मुहावरेन कौ प्रयोग जो बदलकैं कियौ है वाते श्रोतान कूँ आनन्द मिलौ और जा नये ढंग की सराहनाऊ करी है, देखौ आकर्षक प्रयोग –

सामन के आँधरे कूँ सूझत हरौ ही हरौ,
बेसुरे ही राग सदा वो अलापतौ रहै।
फूंक ते पहाड़ कूँ उड़ानौ चहै बेर-बेर,
बातन के फातिया ते नाँय धापतौ अहै॥
दूसरे कौ काम हू तमाम कर देत यार,
चाहै दुख दर्द के पहाड़ आपतौ सहै।
दमड़ी न जाय चाहै चमड़ी उतरि जाय,
मतलब हो गधा कूँ, निज बाप वो कहै॥ 1॥

मोंठ मन रही फूल, भाव न बजार माँहि,
सिंह बन जाय है जि, का मजाल भेड़ की।
रंग डारि स्यार चाहै, मृगराज बन जाऊँ,
पाँयन में नाल हू, ठुकानौ चाहै मेंड़की।
बाहर सतोल पर, भीतर भरी है पोल,
समझै न हारै बस, जे निसानी रेड़की।
कूप के मंडूक तोय, सूझ कछू नाँय रहौ,
बात करै ज्ञान की व चाल चलै ढेड़ की॥ 2॥

राम नाम नाँय लेत, माया ते लगायौ हेत,
चिड़िया चुगैं जो खेत, फेर पछताये का?
खायगौ हराम कौ तौ आपनौ विगारै काम,
खरचै नहीं छदाम, तौ खजानौ पाये का?
नौसै मूँसेन खायकैं, बिलैया हज्ज कूँ चली,
घट भरि आयौ फेर मूँड़ मुँडवाये का?
औसर गयौ जौ चूक, फेर हाथ आवै नाँय,
साँप गयौ निकसि तौ, लठिया बजाये का?॥ 3॥
अदरक के स्वाद कूँ, बन्दर का जानत है,
कहा होय भैंस आगें, बीन के बजाये ते?
आँधरे के आगें रोय, नैंनन कूँ दैंत खोय,

यूढ़ौ नाँय ग्यान होय, चूरमा खवाये ते।
चोर छोड़ै चोरी पर, तूमा पल्टी छोड़ै नाँय,
साँप नाँय विस तजै, दूध के पिवाये ते।
नौंन दियौ गधा कूँ, वो कहै आँख फोरि दई,
मूरख न चेत करै, लाख समझाये ते॥ 4॥

ढौंगीन के ऊपरऊ कछू व्यंग के कवित्तन में कहावत-मुहावरेन कौ प्रयोग या तरियाँ करौ है:-

सूत नाँय पौनी पर कोरिया ते लठा लठौ,
तीन पाव चून पर चौवारे रसोई है।
गाँठ में न खाक बात करै ठाठ बाटन को,
कूँजड़े पै हीरा की परख किमि होई है॥
अपने तौ पाँय खुद आपपै न धोये जाँय,
औरन के काजैं कहै भरी बटलोई है।
पूरौ मक्खी चूस पर कहै पीऊं रोज जूस
कोरौ नंगा कहै मेरी लूट लई.लोई है॥ 1॥

नाचनौ न जानै जो तौ आँगन बतावै टेढ़ौ,
आँखिन कौ अन्धौ चाहै, नैनसुख नाम है।
ओना मासी धम कहै, हम न काहू ते कम,
खिस्यानी बिल्ली कौ खम्म, नौंचिये कौ काम है॥
गति कौ न सूरत कौ, दीन कौ न दोजख कौ,
बाहर जो सौरि ते निकारै निज पाम है।
काम कौ न कट्ट कौ पै गालहू बजाय खूब,
नैंक जोर परे ताकौ निकसत राम है॥ 2॥

मेरे विचार ते कहावत-मुहावरेन कौ प्रयोग जितेक सरलता ते कवित्तन में कियौ जाय सकै है वितेक और काऊ विधा या छंद में नाँय है सकै। या प्रयोग ते अपनी रचना कूँ-जन-जन तक पहौंचायवे में रचनाकार कबहू असफल नाँय है सकै है। काव्य-सौंदर्य तौ या प्रयोग कौ सबते अनूठौ वरदान है।

-मुंसिफ कोर्ट के निकट, कामां (भरतपुर)

मैंनें कवित्तन में कहावत अरु मुहावरेन कौ प्रयोग जो बदलकैं कियौ है वाते श्रोतान कूँ आनन्द मिलौ औंर जा नये ढंग की सराहनाऊ करी है, देखौ आकर्षक प्रयोग –

सामन के आँधरे कूँ सूझत हरौ ही हरौ,
बेसुरे ही राग सदा वो अलापतौ रहै।
फूंक ते पहाड़ कूँ उड़ानौ चहै बेर-बेर,
बातन के फातिया ते नाँय धापतौ अहै॥
दूसरे कौ काम हू तमाम कर देत यार,
चाहै दुख दर्द के पहाड़ आपतौ सहै।
दमड़ी न जाय चाहै चमड़ी उतरि जाय,
मतलब हो गधा कूँ, निज बाप वो कहै॥ 1॥

मोंठ मन रही फूल, भाव न बजार माँहि,
सिंह बन जाय है जि, का मजाल भेड़ की।
रंग डारि स्यार चाहै, मृगराज बन जाऊँ,
पाँयन में नाल हू, ठुकानौ चाहै मेंड़की।
वाहर सतोल पर, भीतर भरी है पोल,
समझै न हारै बस, जे निसानी रेड़की।
कूप के मंडूक तोय, सूझ कछू नाँय रहौ,
बात करै ज्ञान की व चाल चलै ढेड़ की॥ 2॥

राम नाम नाँय लेत, माया ते लगायौ हेत,
चिड़िया चुगैं जो खेत, फेर पछताये का?
खायगौ हराम कौ तौ आपनौ विगारै काम,
खरचै नहीं छदाम, तौ खजानौ पाये का?
नौसै मूँसेन खायकैं, बिलैया हज्ज कूँ चली,
घट भरि आयौ फेर मूँड़ मुँडवाये का?

औसर गयौ जौ चूक, फेर हाथ आवै नाँय,
साँप गयौ निकसि तौ, लठिया बजाये का?॥ 3॥
अदरक के स्वाद कूँ, बन्दर का जानत है,
कहा होय भैंस आगैं, बीन के बजाये ते?
आँधरे के आगें रोय, नैंनन कूँ दैंत खोय,

यूढ़ौ नाँय स्यान होय, पूरगा [illegible] ते।
चोर छोड़ै चोरी पर, तूमा पल्टी छोड़ै नाँय,
साँप नाँय यिस तजै, दूध पे [illegible] ते।
नौन दियौ गधा कूँ, वो कहै आँख फोरि दई,
मूरख न चेत करै, लाख समझावै ते॥ 4॥

ढौंगीन के ऊपरऊ कछू व्यंग के कवित्तन में कहावत-मुहावरेन कौ प्रयोग या तरियाँ भयौ है:-

सूत नाँय पौनी पर कोरिया ते लठा लठी,
तीन पाय चून पर चौबारे रसोई है।
गाँठ में न खाक बात करै ठाठ बाटन की,
कूँजड़े पै हीरा की परख किमि होई है॥
अपने तौ पाँय खुद आपपै न धोयें जाँय,
औरन के काजैं करै भरी बटलोई है।
पूरी मक्खी चूस पर कहै पीठ रोज जुग
कोरी नंगा कहै मेरी लूट लई लोई है॥ 1॥

नाचनौ न जानै जो तौ आँगन बतावै टेढ़ौ,
आँखिन कौ अन्धौ चाहै, नैनसुख नाम है।
ओना मासी धम कहै, हम न काहू ते कम,
खिस्यानी बिल्ली को खम्भ, नौंचिबे कौ काम है॥
गति कौ न सूरत कौ, दाँन कौ न दांतन कौ,
बाहर जो सौरि ते निकरै निज काम है।
काम कौ न काज कौ पै [illegible],
नैंक [illegible] तिकाम गम है॥ 2॥

मेरे विचार ते कहावत-मुहावरेन कौ प्रयोग जितेक [illegible] कवित्तन में [illegible] है [illegible] और काऊ विधा या छंद में नाँय है सकै। या प्रयोग ते [illegible] रचनाकार कबहू असफल नाँय है सकै है। काव्य-सौंदर्य [illegible] है।

[illegible]

ब्रज लोकोक्तीन में स्वास्थ्य-चर्चा

–पं. रामगोपाल शर्मा 'गोपाल भैय्या'

लोकोक्ति या कहावत बिस्तृत भावन कूँ सार रूप में द्वै-चार वाक्यन की गद्यात्मक सरल भाषा में व्यक्त रचना कूँ कह्यौ जाय है। गो. तुलसी बाबा साँची कहैं-'थोरे में सब कहौं बुझाई।' अनेक ग्यात-अग्यात विद्वत जनन नैं लोक व्यवहार की लोकोक्ति बनायकैं खेती-बाड़ी, वर्षा, स्वास्थ्य, लोक-जीवन आदि विषयन पै शोधपूर्वक कहावत कहिकैं मार्ग प्रसस्त कियौ है। ब्रजवासी जन इनसौं प्रेरणा पायकैं इन्हें अक्षय बनाइबे कूँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ात रहे हैं।

संसार में ''पहिलौ सुख निरोगी काया'' बतायौ गयौ है। काया ही कष्टमय रही तौ धरम-करम सब धरे रहि जाइंगे। अत: काया राखे धरम एसौ हू कह्यौ जाय है। माया हू तब ही आछी लगै जब काया चलत रहै नहीं तौ आप मरे जग परलै होय है।

या काया कूँ स्वस्थ रखबे के ताँईं नियमित आहार-विहार जरूरी है। दिनचर्या बिगरी और कंचन सी काया माटी में मिली। भोर होते ही सूर्योदय सौं पूर्व उठनौ लाभदायक है। निन्नैं जल पीनौं कितेक हितकारी है या कहावत सौं स्पष्ट होय है-

प्रात:काल खटिया ते उठकैं निन्नैं पीवै पानी।
कबहू तन में रोग न रहिहै बात घाघ नें जानी।।

सौ दवा-एक हवा के अनुसार प्रात:काल टहलनौ चोला कूँ चैन में रखबे कौ सहज व सरल उपाय है। वैज्ञानिक हू कहैं पेड़-रूख सबेरे आक्सीजन देय हैं और असुद्ध वायु कार्बन डाइ- आक्साइड ग्रहन करैं हैं।'कहा वर्षा जब कृषि सुखानी' तातें भलौ है कै प्राकृतिक उपचार टहलनौ प्रारंभ करकैं निरोगी रहौ।

निरोगी काया कौ एक तत्व आहार-विहार हू है। सो जाके ताँईं सन्तुलित आहार बतायौ गयौ है। भोजन क्षुधा शान्ति कूँ होय है नर भरबे कूँ नाँय। या कारन ही कह्यौ है कम खायै-गम खायै। ब्रज में

सबेरे के खाइबे कूँ कलेऊ, दोपहर के खाइबे कूँ रोटी औंर संझा के खाइबे कूँ ब्यारू कह्यौ जाय है। 'खाय कै परिजाय मारकैं टरि जाय' अर्थात दोपहर के भोजन के उपरान्त नैंक कमर सीधी अवश्य करनी चाहिए तासौं भोजन पच जाय है। रात्रि के भोजन (ब्यारू) कौ नियम बताते भए जि कहावत लोक प्रसिद्ध है- पहली-'रहै निरोगी जो कम खाय-बिगरै काम न जो गम खाय।' दूसरी-

ब्यारू कर सौ पग चलै द्वै इक पान चबाय।
बाँई करवट नींद लै ता घर बैद्य न जाय॥

ब्यारू करकैं थोरी सी चहल कदमी जरूरी है। शयन करते समय बाँई ओर करवट लैकें सोयौ लाभदायक है। यासौं भोजन को पाचन प्रक्रिया सहजता सौं अपनौ काम कर पावै है। दूसरे, भोजन नली द्वार बांई करवट लैवे पै नीचे की ओर और दांई तरफ हैवे सौं भोजन थैली सौं वापिस भोजन नली में जाइबे कौ डर बन्यौ रहै या कारन बाँई करवट ही सोनौ हितकर है।

भक्षाभक्ष कूँ बताते भए कह्यौ जाय है कै बादी की चीज कम प्रयोग करैं यासौं कब्ज हैवे कौ डर बन्यौ रहै। आँव पैदा करवे बारे पदार्थ घुइयां (अरबी) आदि कम प्रयोग में लावैं-

जावकौं मारन चाहिए बिन मारे बिन घाव।
ताकौं यही बताइये घुइयां पूरी खाव॥

अरबी की तरकारी गरिष्ठ हैबे के कारण आँव बनावैगी और आँव शरीर कूँ जर्जर बनाइबे में सबसौं प्रमुख घटक मानौ जाय है।

शौच की स्थिति पै प्रकाश डारते भए कह्यौ गयौ है-'*एक बार योगी, दो बार भोगी, तीन बार रोगी*' शौच करिबे कूँ जाय है।

'शरीरं व्याधि मन्दिरं' *अर्थात् या शरीर कूँ बीमारीन कौ घर कह्यौ गयौ है। शुद्ध जलवायु के अभाव* में तन रूपी पादप कुम्लाय जाय है। आज कल सुगर की बीमारी जाकूँ मधुमेह कह्यौ जाय है ताके उपासक मधुमेह के सर्वप्रथम रोगी श्रीगणेश जी कूँ मान्यौ जाय है। *तबही तौ मोदक प्रिय हैवे के संग ही संग* जम्बूफल अर्थात जामुन खांय हैं। *भोजन के बाद ब्रजवासी जन मीठौ खायबौ पसन्द करैं और मीठे बिना* सब राँड़ रसोई बतात हैं। लोकोक्तीन में *बरसात के दिनन में गुड़ कौ सेवन जरूरी बतायौ गयौ है।* मँहगाई के कारन चाहे सौने की मुहर के *बराबर तोल में हू बिकत होय, गुड़ खानौ स्वास्थ्यकर है-*

सावन में गुड़ खावै। चाहे मुहर बराबर लावै।

वर्षा काल की मन्दाग्नि शान्त करिवे में गुड़ कौ अनुपान हितकारी होय है।

वर्षा ऋतु में कछु त्याज्य भोजनन कौ वर्णन हू इन लोकोक्तीन में मिलै है। दही कौ प्रयोग भाद्रपद में निषेध मान्यौ जावै, तवही तौ वेसन (कढ़ी) चौमासे में व्रजवासी नाँय वनावैं-

भादौं में खायौ दही। वारहमासी वीमारी गही।।

वरसा काल में व्यारू करनौ हू नियम विरुद्ध कह्यौ जावै-

सावन व्यारू जव तव कीजै।
भादौं व्यारू नाम न लीजै।।

वासी खानो तौ वीमारी कूँ निमंत्रण पत्र भेजवे के समान मान्यौ जाय है और यदि वासौ खानौ हू परै तौ जाड़ेन में वासौरे (होरी के वाद) तक ही प्रयोग करैं। अन्यथा वीमार परिकैं आँत्र शोथ आदि कौ शिकार वन जायगौ। पेट-पाल जानै अपने जीवन कौ उद्देश्य ही पेट भरवौ मान राख्यौ है ताकूँ या कहावत सौं शिक्षा ग्रहण करनी चहिए-

आठ कठौती मट्ठा पीवै, सोलह मकुनी खाय।
वाके मरे न रोइए, घर कौ दारिद जाय।

आठ-आठ वेला मठा रोज पीवै, मकुनी की सोलह रोटी खातौ होय वाके मरवे पै कोई शोक नहीं करनौ चहिए, अपितु समझै कै घर कौ दलिद्दर गयौ।

यदि कोऊ कवऊ कभार दण्ड लगावै, पोखर तलावन में नहातौ डोलै और ओस में सोवै तौ माननौ चहिए कै यानै मृत्यु देव कौ स्वयं वरण कियौ है-

अँतरे खोतरे दण्ड करै। ताल नहाय ओस में परै। दैव न मारै आपुहि मरै।

रोग के पूर्व ऐसौ परहेज राखै तौ वहुत सी वीमारीन सौं वचौ जाय सकै-

क्वार करेला चैत गुड़भादौं मूरी खाय।
पैसा खोवै गाँठ कौ रोग विसावन जाय।

याही सन्दर्भ में अमरत्व प्राप्ति के ताँई कह्यौ गयौ है-
सोंठ मिर्च पीपर, इन्हें खाय कैं जी पर।

कौन से महीना में कौन सी वस्तु कौ सेवन करनौ लाभदायक है और कौन वस्तु कौ हानिकारक

है यापै विचार करनौ हू आवश्यक है। ब्रज जनपद में पुराने ब्रजवासी इनहीं के सहारे जीते रहे हैं--

चैत गुड़ बैसाखे तेल। जेठ में पंथ, असाढ़ में बेल।
सामन साग, न भादौं दही। क्वार दूध न, कातिक मही।
अगहन जीरौ, पूसै धना माघै मिसरी, फागुन चना।

चैत में गुड़, वैसाख में तेल, जेठ में मार्ग चलनौ, असाढ़ में बेल, सावन में साग, भादौ में दही, क्वार में दूध, कार्तिक में मट्ठा, अगहन में जीरा, पूस में धनियाँ, माघ में मिश्री और फागुन में चना कौ सेवन करनौ स्वास्थ्य के ताँई हितकर नाँय बतायौ गयौ है। जो व्यक्ति सावन में हर्र, भादौ में चीता, क्वार में गुड़, कार्तिक में मूली, अगहन में तेल, पूस में दूध, माघ में घी-खिचड़ी, फागुन में प्रात: स्नान, चैत में नीम, बैसाख में भात, जेठ में दुपहरी कौ सोबौ आरंभ करै ताकूँ ज्वर असाढ़ में रोवै कै यापै कैसैं प्रकोप करूँ-

सामन हर्र, भादौं चीत। क्वार मास गुड़ खाइये मीत॥
कातिक मूली, अगहन तेल। पूस में करै दूध सौं मेल॥
माघ मास घी-खिचड़ी खाय। फागुन उठ जो प्रात: नहाय॥
चैत मास में बेसहती। वैशाख में खावै जड़हती॥
जेठ मास जो दिन में सोवै। ताको ज्वर असाढ़ में रोवै॥

ज्वर आजाइवौ एक साधारण सी बात है पर थोरी सी परहेज बिगरवे पै रोग घर कर जाय है याकौ उपचार हू साधारण सौ ही है-

ज्वर जाचक अरु पाहुनौ इनकौ जेहि सुभाउ।
लंघन तीन करा देउ फेर न देवें पाँउ।।

रोज-रोज पूरी तोरवे आइवे वारे पाहुने (मेहमान), जाचक और बुखार इन तीनौंन कूँ तीन लंघन अर्थात् निराहार राख दियौ जावै तौ फेर लौटिकैं आइवे की नाँय सोचैं।

चरक संहिता आदि ग्रन्थन में बड़े-बड़े अध्यायन में जो बात लिखी गई है सोई ब्रजवासीन नैं छोटी-छोटी कहावतन में समेट कैं राख लई है। कंठ कोकिला के समान सुरीलौ बनानौ होय तौ-

बच, बायब, ताम्बूल जड़, पीपर सहित गिलोय।
इह पीवै पन्द्रह दिना, कंठ कोकिला होय॥

याही प्रकार मंजन बनाइबे वारौ नुस्खा चार पंक्तिन में या प्रकार सौं कह्यौ जाय है-

त्रिफला त्रिकुटा तूतियापाँचौ नमक पतंग।
दाँत बज्र सम होत हैं माँजूफल के संग।।

हरड़, बहेड़ा, आँवला (त्रिफला),सोंठ, मिर्च (काली), पीपर(त्रिकुटा), सोधौ हुऔ तूतिया, काला, सेंधा, साँभर, लाहौरी(पाँचौ नमक) माँजूफल सहित कूट पीस छान कैं रखवे वारौ चूर्ण दाँतन कूँ चमकीलौ अरु ताकतवर बनावै है।

अच्छे स्वास्थ्य की पहिचान खानौ खाबे के पीछैं, शयन सौं पहलैं लघु शंका जानौ, गुर्दा संवंधी स्वस्थता मानी जावै-

खाय कैं मूतै, मूत कें सोवै। ताकूँ बैद्य कबहु नहिं रोवै॥

याई तरियाँ सौं एक अन्य कहावत ब्रज में या तरियाँ सौं बोली जाय है-

खाय कैं मूतै सोवै वाम। काहे वैद बसावै गाम॥

नाड़ीविज्ञान शरीर तंत्र की कुंजी मानी जाय है। आठ पंक्तिन में समूचौ नाड़ी विज्ञान कहाबतन में या तरियाँ सौं बर्णित कियौ गयौ है कै अज्ञानी जन हू ज्ञानी बन जाँय हैं-

कर अंगुष्ठ के मूल में देखहु नस आकार।
बरनौ सुख दुख जीव के पंडित बनौ विचार॥

हाथ के अँगूठा की जड़ में अपने हाथ की तीन अँगुरी फड़फड़ाती भई नस पै रख लेऊ-

आदि पित्त पुनि मध्य कफ अन्तहु पवन प्रधान।
लच्छन सुनहु त्रिदोष के जानत बैद्य सुजान॥

पहली अँगुरी पित्त नस कूँ, दूसरी कफ नस कूँ और तीसरी बायु विकार कूँ इंगित करैं हैं। पशु-पच्छीन की गति के आधार पै बात, पित्त, कफ, दोष ज्ञात किए जाँय सकैं-

मेंढ़क काग कुरंग गति पित्तज सोई जाय।
हंसहु मोर कपोत कफ नाग बगुलक बाय।

जौ तीनों नाड़ी एक संग तीतर लवा बटेर गति सौं चलैं तौ सन्नपात मानकैं घातक मान लेनी चहिए।

ज्वर की पहिचान के ताँईं द्वै पंक्तिन में सार भर दियौ है-

क्षीण चपल धमनी चलै, आगम बीर बखान।

चलै वेग अरु तपन होय ज्वर धमनी सोइ जान॥

इन नाड़ीन कूँ शरीर के आठ अंगन पै-दौनों हाथ, दौनों पैर (एड़ी के ऊपर) कंठ के दोऊ ओर, सिर में कनपटी के निकट और नाक के दोऊ बगलन पै परीक्षण कियौ जाय सकै।

या तरियाँ सौं कहावतन के माध्यम सौं आयुर्वेद कौ ज्ञान, अनुपान विधि आदि सीख कैं ब्रजवासी जन 'जीवेम: शरद: शतं' की अजस्र धारा कूँ प्रवाहित करते भए अपरस (स्वच्छता) पूर्वक अपने शरीर कूँ बलिष्ट-पुष्ट बनाते भए प्रात: काल स्नान कर मंगला सौं लैकें शयन आरती तक दिन में आठ-आठ बेर बरसाने की चढ़ाई-उतराई करते भए निरोगी रहिकें या लोक और परलोक दोऊन कूँ सुधार लेय हैं।

-ब्रज साहित्य एवं सांस्कृतिक गोष्ठ
9/218, खत्री गली, बाग मुजफ्फर खां, आगरा

-

विरुद्ध आहार स्वास्थ्य कूँ बड़ौ हानिकर होइ। या सम्बन्ध में लोकोक्ति हैं-

मच्छ मांस पुनि जल में होई।
दूध सहित जो खावै कोई॥
याही विरुद्ध संहिता गावै।
याते व्याधि प्रगट ह्वै आवै॥
क्षीर कसार मिलाय जो खावै।
बड़ौ विरुद्ध ग्रंथ में गावै॥
तक्र माँहि नाखौ मति केला।
एह विरुद्ध करौ मति भेला॥
दही माँहि बेल फल तजौ।
विरुद्ध जानि ज्ञान मति भजौ॥
घृत हू काँस्य पात्र के माँही।
दस वासर में विरुद्ध कहाही॥
मदिरा दूध साथ मति लीजौ।
विरुद्ध जानि कें दूषण दीजौ॥
दही-दूध भेला नहिं पीवै।
जौ जानै सुख पावै जीवै॥

संकलित

ब्रज लोकोक्तीन माँहिं मौसम की भविष्यवानी

—श्री शांतिस्वरूप शर्मा

भाषा कौ काम भाव अरु विचारन कूँ व्यक्त करिबौ मान्यौ जाय अरु वुई भाषा ज्यादा सच्छम अरु ससक्त मानी जाय जो इनकौ प्रकटन प्रभावसाली तरीका ते करिबे में समर्थ होय। हर भाषा में या उद्देस्य की पूर्ति के ताँईं लोकोक्तीन कौ प्रयोग पायौ जाय। लोकोक्ती कौ व्युत्पत्ति-परक अर्थ है-लोक अर्थात् आम आदमी अरु उक्ति कौ मतलब है-कथन या बात, तौ लोकोक्ती कौ मतलब भयौ-'वे सामान्य कथन जो काऊ विसेष सन्दर्भ में, काऊ बात के समर्थन में या बाकी प्रभावकारिता बढ़ायबे के ताँईं आम आदमी के द्वारा प्रयोग करी जाय।' याही ते सामान्य भाषा में इनकूँ कहावत कह्यौ जाय।

कहावतन की भाषा में विसेष हैसियत भयौ करै। इनकौ प्रचलन भाषा के अन्तर्गत सुरू-सुरू नें काकतालीय न्याय सौं प्रयोग करिबे बारे के द्वारा अचानचक्क (अचानक) है जाए पर पीछें ये वैसी स्थिति के बेर-बेर आयबे ते और प्रयोग करिबे बारे के द्वारा अपनी बात में बल और जोर पैदा करिबे के ताँईं प्रयोग करिबे ते भाषा में आम कथन के रूप में स्वीकार कर लिए जाएँ। जो भाषा में चमत्कार लाइबे के संगई बाकी अभिव्यक्ति की सामर्थ्य बढ़ायबेमेंऊ योगदान करैं। जोई कारन है कै हर भाषा में अपनी कछू विशेष कहावत होयौ करैं जो वा भाषा की निजी विसेषता कौ द्योतन करैं। यहाँ ई बात कहिबौ अनुचित नाँय होयगौ कै भाषा में अपनी मूल कहावतन के अलावा और दूसरी बोली जायबे बारो भाषान की ऊ कहावत पायी जाएँ।

चूँकि कहावत आम आदमी के द्वारा प्रयोग करी जाँए तौ इनमें इनके सबते पहले प्रयोग करिबे बारे की मानसिक स्थिति की झलक मिलबे के संगई इनमें छेत्र विसेष के सांस्कृतिक जीवन की झाँकीऊ देखी जाय सकै।

दूसरी भाषान की तरियाँ अपनी ब्रजभाषा मेंऊ कहावतन कौ प्रचलन खूब देखिबे कूँ मिलै, जो या क्षेत्र के जन-जीवन की एक झलक दिखायबे में पर्याप्त समर्थ दीखै।

काऊ गाँव बारे ते मिलकैं और बात करकैं देखी जाय तौ जल्दी ई पतौ लग जायगौ कै ब्रजभाषा

सहन, आचार-विचार, किसब (व्यवसाय) कौ अन्दाजौ आसानी ते लगायौ जाय सकै। या भाषा के बोलिवे वारे पूरे मुलक की तरियाँ ई मुख्यरूप ते खेती-बाड़ी कर्‌यौ करैं। तौ खेती-बाड़ी, बरसात, पसुपालन, फसल, पेड़-पौधा, औजार अरु मसीनन ते जुड़ी भयी सैंकरान कहावत मिल जाएँ। इनमें ते या छोटे से लेख कौ विषै ब्रजभाषा में मौसम ते जुड़ी भयी कहावतन कौ संकेत मात्र करिवौ है।

ब्रज छेत्र के खेती-प्रधान हैवे ते मेह की महत्ता अपने आपई दीख जाय। पुराने जमाने में कहावतन कौ उपयोग खेती-बाड़ी करिवे में हौंतौ रह्‌यौ है। इन कहावतन के आधार पै सौन(शगुन) लैकें मेह की मात्रा, अच्छे-बुरे सम्वत की, हल्की-भारी फसल की भविष्यवानी करी जांतो रही है।

यहाँ मौसम की जानकारी दैवे बारी कहावतन कौ वर्गीकरन या प्रकार सौं कर्‌यौ जाय सकै। एक तरियाँ की तौ वे कहावत हतैं जिनके रचिवे वारे कौ कछू अतौ-पतौ नाँय। काऊ जने नैं न्यौंई मौंह ते कोई बात निकार दई और पीछे-पीछे, धीरें-धीरें पब्लिक में चालू है गई। ऐसी कहावत अनुभव के आधार पै ई विकसित भई हैं, अत: मौसम की भविष्यवानी वारी इन कहावतन कौ महत्व सबते ज्यादा हतै और इनकी संख्या ऊ खूब पायी जाय। इनके विकसित हैवे में जोतिप, पसु-पच्छीन कौ असामान्य ब्यौहार, पेड़-पौधा और आदमी कौ सुभाव प्रमुख विषै रहैं।

जैसें जेठ के महीना में रोहनी नछत्र, मूल समूह के नच्छत्रन में बरसात है जाय अरु असाड़ की परवा के दिना खूब धूप निकरै तौ अच्छे सम्वत की सम्भावना करी जाय-

सगरी गर जाऔ रोहनी सबरे गर जाऔ मूल।
परबा तपै असाढ़ की उपजैं सातौं तूल॥

ऐसैंई जेठ के महीना में और पून्यौ तथा परवा के दिना बादर गरजबे लग जाय तौ बहत्तर दिनां तानूँ बरसा की सम्भावना मिट जाएगी। ''पून्यौ परवा गाजै दिना बहत्तर बाजै।''

सावन के महीना के अँधेरे पाख की एकादसी कूँ यदि सूरज बादरन के संग लुका-छिपी कौ खेल खेलै और फिर आधी रात कूँ बादर गरजवे लगै, तौऊ बरसा हल्की मानी जाए-

सावन पहली एकादसी गरबै ऊगै भान
गरबै ऊगै तौ कहा भयौ गरजै आधी रात,
तुम तौ पिया जाऔ मालुए हम जायं गुजरात।

सावन के ई महीना के अँधेरे पाख की सातें की रात कूँ यदि चन्दा की चाँदनी खूब खिलै तौ समझ लेऔ बरसात हाल-फिलहाल नाँय हतै-

सावन सुक्ला सप्तमी चन्दा चटक करै
कैतौ पानी कूप में कामिन घड़ा भरै।

क्वार के महीना में बरसा कौ हैवौ अच्छौ संकेत मान्यौ जाय-

'क्वार मानी भागमानी।'

बरसात के इन चार महीनान-असाढ़, सावन, भादों और क्वार में शुक्रवार के दिना छायौ बादर सनीचर के दिना ऊ छायौ रहै तौ समझौ मेह जरूर बरसैगौ-

सुक्कर बारी वादरी, रही सनीचर छाय।
गुरू कहैं सुन बालका, बिन बरसे नहीं जाय।

ऐसैंई पेड़-पौधान के फरिवे-फूलबे तेऊ संवत के अच्छे-बुरे हैवे कौ अनुमान लगायौ जाय सकै। यदि आक (अकऊआ) पै फूल खूब आवैं तौ गेंहू की अच्छी पैदावार हैवे कौ, नीम पै निबौरी खूब आवैं तौ तिल की फसल कौ बढ़िया हैवे कौ अरु आम के पेड़ पै बौर ज्यादा आवैं तौ ज्वार की पैदावार अच्छी हैवे कौ अनुमान लगायौ जाय-

आका गेहूँ नीम तिल, अम्मा मोरी ज्वार।

याही तरियाँ सौं पसु-पच्छीन के व्यवहार तेऊ मौसम के वारे में बतायौ जाय सकै। यहाँ कहावत के रूप में दोहा प्रचलित है-

चींटीं लै अण्डा चलै, चिड़ी उड़ावै धूर।
व्यास कहैं सुन भड्डरी, तौ वरसा नहीं दूर॥

स्पष्टत: दूसरी तरियाँ की मौसम ते जुड़ी कहावतन में वे कहावत आवैं जो काऊ कवि के द्वारा कविता के रूप में रची गईं और पीछे बिनके नाम ते कहावत के रूप में भाषा में प्रचलित है गईं। ऊपर कौ दोहा ऐसौई लगै।

घाघ कवि के दोहा कहावतन के रूप में आजऊ ब्रजभाषा में प्रचलन में पाए जाएँ।' धनुष परै बङ्गाली, मेह सांझ या सकाली।' यदि बंगाल वारी दिसा अर्थात पूरब दिसा में इन्द्रधनुष दिखाई परै तौ मेह जल्दी आयवे वारौ जानौं।

कहावतन कौ ई वर्गीकरन मन मानौ है। ना तौ भाषा में या प्रकार की लोकोक्तीन कौ वर्गीकरन पायौ जाय और ना ई जरूरी है। या छोटे से लेख माँहि लेखक कौ उद्देश्य ऐसी कहावतन कौ संकेत करिवौ मात्र है, संकलन करिवौ नाँय। आज के विज्ञान के प्रचार-प्रसार के युग में इन कहावतन कौ उपयोग मौसम की जानकारी लैवे के ताँईं तौ सीमित ई है पर या ते भाषा की सामर्थ्य और वाकौ सामयिक विकास जरूर पायौ जाय सकै। आज के तथाकथित पढ़े-लिखे लोग भाषा में कहावतन के प्रयोग कूँ भूलते जाय रहे हैं और ऐसी कहावतन के तौ अस्तित्व कौ प्रस्न ठाड़ौ है गयौ है। यदि इनके संकलन कौ समयोचित प्रयत्न नाँय कर्‌यौ गयौ तौ ये भाषा में ते लुप्तऊ है सकैं। इनके संकलन कौ काम समय- साध्य, श्रम-साध्य और धन साध्य हौंते भयेऊ अत्यन्त महत्त्व कौ है।

-केन्द्रीय विद्यालय
जैसलमेर (राज.)

ब्रजभाषा की कछू चुनी भई लोकोक्ति

– संकलनकर्ता श्री छज्जूराम पाराशर

1. जान हार वहू बेंरेड़े कूँ साँप बतावै।
2. नौसै मूसे खाय बिलइया हज्ज कूँ चली।
3. चोर-चोर मौसेरे भइया।
4. खरबूजे कूँ देखकैं खरबूजौ रंग बदलै है।
5. पूत कपूत तौ का धन संचै।
   पूत सपूत तौ का धन संचै॥
6. मा पै पूत पिता पै घोड़ा, बहौत नाँय तो थोड़ा-थोड़ा।
7. दूधन न्हाऔ पूतन फलौ।
8. काम कौ न कट्ट कौ।
9. तोय पराई कहा परी तू अपनी निबेर।
10. आँधरे के हाथ बटेर लगी।
11. जागते की पड़िया सोमते कौ पड्डा।
12. पढ़ गये पूत कुम्हार के सोलह दूनी आठ।
13. आँधरे के आगैं रोवै अपने नैंना खोवै।
14. रात भर पीस्यौ पारी में समैट्यौ।
15. तीन पा चून चौवारे रसोई।
16. सगरी रात रोई एकउ नाँय मर्‌यौ।
17. गाँठ कौ देय बलइया लेय।
18. करम गति टारे नाँय टरै।

19. जहाँ-जहाँ पाम परैं संतन के तहाँ-तहाँ है जाय पनियाढार।
20. देय न बट्ट की भुसी, राखै खुसी।
21. उलटे बांस बरेली कूँ।
22. मूसे कूँ मिली हर्द की गाँठ, पँसारी बन बैठौ।
23. हर्द लगै ना फिटकरी, रंग चोखौ आ जाय।
24. कूआ में जाय भार में निकसै।
25. दोउ हाथन ते ताली बजै।
26. बात में हुँकारौ, फौज में नक्कारौ।
27. ढप धर दै यार गई पर की।
28. मैं आई कछु और कूँ, इत है गई कछु और।
29. बातन बुढ़िया,कुनबा खाय।
30. मुल्ला की दौड़ मस्जिद तानूँ।
31. बगल में टोसौ, किसकौ भरोसौ।
32. गाम-गाम की चांमड़ न्यारी।
33. एक गज सीमैं, चार गज फट जाय।
34. आयौ ओर बरात कौ, दूल्है गाजर खाय।
35. मा तौ डोलै चोथी-चोथी, पूत बिटौरा बक्सै।
36. बिलइया के भागन छींकौ टूट्यौ।
37. जेबरी बटी पर पीछे ते पड्डा खा गयौ।
38. करत-करत अभ्यास के, जड़ मति होत सुजान।

62. उलटौ चोर कोतवाल कूँ डाँटै।

63. छोटौ मुँह बड़ी बात।

64. ना ऊधौ कौ लेनौ ना माधौ कौ दैनौ।

65. आँधी पीसै कुत्ता खाँय।

66. जलेबी की रखवारी कुतिया।

67. चोरी अरु सीना जोरी।

68. अपनी-अपनी ढपली, अपनौ-अपनौ राग।

69. ठन-ठन पाल, मदन गोपाल।

70. पंचन कौ कह्यौ सिर माथै, पनारौ वहीं लगैगौ।

71. पंच के मुख सौं परमेश्वर बोलतै।

72. राजा ह्वै चोरी करै, न्याव कौन घर जाय।

73. भूत-विद्या मल्लई, बारह बरस चल्लई।

74. माल खाय खसम कौ, गीत गाय यार के।

75. मेव जानैं अपनी सी टेब।

76. मुख में राम, बगल में ईंट।

77. गाँव में छोरा, अखारे कौ रोरा।

78. बूढ़ौ होय न ज्वान चाहै रोज मलीदा खाय।

79. अपनौ मारै तौ छाया में ई डारै।

80. घौंटू पेट कूँ ई नवै है।

81. जल अरु कुल कूँ मिलवे में देर नाँय लगै।

82. हारी कौ पेट सुहारी ते नाँय भरै।

83. पत जीवी किसान।

84. आँधरी कौ भइया तब जानौ जब कौरी में आ जाय।

85. मूँड़ मुँड़ाये हरि मिलैं, सब कोउ लेय मुँड़ाय।

86. मूँड मुँड़ाये तीन गुण, सिर पै आजाय आभा।
मँगौ मँगायौ चून खाँयगे, देश कहैगौ बाबा।।

87. काजर की कोठरी में कैसौऊ सयानौ जाय,
एक लीक काजर की लागि है पै लागि है।

88. अब पछताये हौंत का जब चिरिया चुग गईं खेत।

89. आधी छोड़ सारी कूँ धावै, आधी रहै न सारी पावै।

90. जैसे को तैसा।

91. जैसौ करौगे वैसौ भरौगे।

92. मरै न माचौ लेय।

93. ढिंग नाहै कछु दैन कूँ, घटौ बतावै सूत।

94. धूर खायबे ते पेट नाँय भरै।

95. धौरेन में धूर डरवाई।

96. जाट कहै सुन जाटनी तोय गाम में रहनौ।
ऊंटै बिलइया लै गई हाँजी हाँजी कहनौ॥

97. कंगाली पत्थर ते भारी होय।

98. जान मारै बानियाँ पहचान मारै चोर।

99. बनिया मित्तु न वैस्या सती।

100. चौंरा भले हौंते तौ ब्याह में नाँय चलते?

101. कहौ रहीम कैसैं निभै केर बेर कौ संग।

102. पूआ लग्यौ न पापरी, गदाक बहू आ परी।

103. चोर कौ भइया गठकटा।

104. एक बेल के तूमरा।

105. गधा ते पार नाँद बसावै, गधइया के कान ऐंठैं।

106. बाबरे गाम में ऊंट आयौ।

107. ऊंट के मुँह में जीरौ।

108. भैंस के आगें बैन बजाई, भैंस कहै मोकूँ सानी आई।

109. अन्धौ बाँटै रेवड़ी, फिर-फिर अपनेन कूँ देय।

110. राम नाम जपनौ परायौ माल अपनौ।

111. नानी ब्याह करै, धेवते पै डंड परै।

112. ब्याह न जानी, गौने न जानी, लला भयौ तब जानी।

113. अन्धेन में कानौ सरदार।

114. अंधेर नगरी चौपट राजा।

115. एक अनार सौ बीमार।

116. अरहर की टटिया गुजराती तारौ।

117. अपनी करनी पार उतरनी।

118. आँख के अन्धे गाँठ के पूरे।

119. आग लगे पै कूआ खोदौ।

120. आगें नाथ न पीछे पगहा।

121. आटे के संग घुन पिसै।

122. आ बैल मोय मार।

123. गीदड़ की मौत आवै तौ गाम सॉमईं धावै।

124. बा हाथ लैनौ या हाथ दैनौ।

125. ऊँट न जानैं कौन सी करबट बैठेगौ।

126. एक और एक ग्यारह।

127. एक मछुरी सग तालाब कूँ गन्दौ कर देय।

128. एक चुप्प सौत्रैं हरावै।

129. एक थैली के चट्टे बट्टे।

130. गधा-घोड़ा एक।

131. कबहु नाव गाड़ी में कबहु गाड़ी नाव में।

132. कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली।

133. खुदा गंजे कूँ नाखून नाँय दे।

134. खग जानैं खग ही की भाषा।

135. दूध कौ जरौ छाछ कूँ फूँक-फूँक कैं पीवै।

136. घर-घर मांटी के चूल्हे होंय।

137. वर्ध पुँछ्यारौ मर्द मुँछ्यारौ।

138. खायौ हलुआ फट गये गलुआ।

139. खिस्यानी बिल्ली खम्भा कूँ नौंचै।

140. बीनै आन्ने गावै भातई।

141. कानी के ब्याह में सौ जोखे।

142. मर गई मइया, गवै भतइया।

143. जाकूँ राखै साइयाँ मार सकै ना कोय।

144. खूँटा के बल बछरा नाचै।

145. लाल गूदरीन में नाँय छुपै।

146. आँधरे की माँखी राम जी तारै।

147. सौकीन बुढ़िया चटाई कौ लहँगा।

148. घोड़ा आपई कहूँ घास खाय जायगौ।

149. मूँड़ कटैगौ काऊ कौ, सोखै बेटा नाऊ कौ।

150. काबुल में का गधा नाँय होंय।

151. नाऊ-नाऊ बार कितने ऐं, जिजमान आगैं आ जायेंगे।

152. घर कौ जोगी जोगना, आन गाम कौ सिद्ध।

153. हाथी चलतौ रहै कुत्ता भूँसते रहैं ।

154. हमारी ई बिल्ली हमकूँ ई म्याऊँ।

155. नौंते बामन भूखे मर जातें।

156. दीपक तरे अँधेरौ।

157. जाई हँड़िया में खावै ताई में छेद करै।

158. आप मरै जग परलै होय।

159. तिल की ओट पहार।

160. गुड़ खावै गुलगुलेन ते परेज करै।

161. अपनौ भर्यौ जग कौ भर्यौ।

162. आप सुखी तौ जग सुखी।

163. अपनौ हाथ जगन्नाथ।

164. हीरा की परख जौहरी ई जानै।

165. ढोल में पोल।

166. हाथ कंगन कूँ आरसी कहा।

167. होम करत में हाथ जरैं।

168. नौत्यौ बामन जैं गयौ नाऊ।

169. कीच में मारौ ईंट, लागत खुद कूँ छोंट।

170. आपे ते बीतै तौई पतौ चलै है।

171. सात मामान कौ भानजौ भूखौई रह जाय।

172. हिन्दून कौ हुक्का तू लै तू लै में ई जाय।

173. कंगाली में आटौ गीलौ।

174. मल्हा कौ लँगोटाई भीजै ।

175. जब डूबै तौ तैराई डूबै।

176. चालनी में धार [illegible]।

177. नादान की दोस्ती है ज्यों जी जंजार।

178. पीपा में दो दाने, बीबी चली भुनाने।

179. गवाह चुस्त, मुद्दई सुस्त।

180. गधा तौ सई साँझ कौ मरि गयौ, कुम्हार [illegible]।

181. गधा मर्यौ कुम्हार कौ धोबिन सती होय।

182. लट्ठन मारी भामरी भरि भरि दोहनी देय।

183. पारे पिल्ला खुद मूँ ई खात हैं।

184. हाथी के दाँत खायबे के और दिखायबे के और।

185. सब धान सताईस सेर।

186. सौ-सौ जूता खाय तमासौ घुसि कैं देखै।

187. आगें गिरे तौ कुआ, पीछें गिरे तौ खाई।

188. आप काज महाकाज।

189. जैसौ राजा तैसी परजा।

190. [illegible]

191. [illegible]

192. [illegible]

193. [illegible]

194. [illegible]

195. [illegible]

196. [illegible]

197. [illegible]

198. मैंड़की कूँ जुकाम है गयौ।

199. नाम बड़े अरु दरसन छोटे।

200. टका ऊँट है रह्यौ है।

201. सीता राम सटक गये, थारी लोटा पटक गये।

202. आसमान ते गिर्‌यौ नीम में अटकि गयौ।

203. नयौ मुल्ला अल्लाई अल्ला पुकारै।

204. नई नाहिन, काठ कौ नहन्ना।

205. करम करै तौ छाजै, नहिं मूँड़ मौंगरा बाजै।

206. जब जागौगे तबइ दिवारी।

207. जहाँ जायगी ऊखा तहाँ परैगी सूखा।

208. ठाली बहू कौ नौंन के मेंई हाथ।

209. खाली दिमाग सैतान कौ घर।

210. रूठे सुजन मनाइये जो रूठैं सौ बार।

211. कहाँ राम-राम कहाँ टाँय-टाँय।

212. गैरौ गैरौ नत्थू खैरौ।

213. बुध वावनी शुक्कर लामनी।

214. आर बारचंगे, त्यौहार वार नंगे।

215. मारै घौंटू फूटै आँख।

216. सबकी मइया साँझ।

217. गंगा आमन हार भागीरथ के सिर परी।

218. रोमती राखी तौ संगई चलैगी।

219. ऊँगरिया पकरकैं पँहौचौ पकरौ।

220. फूट में लूट।

221. करौ भलाई मिलै बुराई।
222. गधा कूँ दयौ नौन ऊ कहै मेरी आंख फोरि दई।
223. गधा कैं गदका च्यौ बाँधौ।
224. जैसैं-जैसैं गोह मोटी होय तैसैं-तैसैं बिल सुकरतई जाय।
225. तू रूठी मैं छूटी।
226. एक बजार बन्दै।
227. कछू गंगा जल कछू जमुना जल।
228. थन में कै लोटा में।
229. घर में चार बासन हौंय तौ खटकतई ऐं।
230. निन्यानवें के फेर में।
231. बकरा की माँ कहाँ तक सीन्नी बाँटैगी।
232. कहूँ चोरन कूँ हू तारे?
233. मेह के रिपटे अरु पुलिस के पिटे कौ डर नाँय होय।
234. मगर के आँसू।
235. जल में दोष करम में कीरा, जित देखौ तित हीरा ही हीरा।
236. दालिद्दर अरु सूरमा जब चालै तब सिद्ध।
237. फूहर चालै सब घर हालै।
238. गधा खाय मरै कै लदि मरै।
239. बड़े गांम कौ ग्वारिया छोटे गांम कौ पंच।
240. धींगन कूँ तौ धींग भुतेरे घर नाहैं तौ बाहर घनेरे।
241. धींगरा की गैल मूंड पै हैकैं होय।
242. चार दिना की चाँदनी फेर अंधेरी रात।
243. टूटे पीछें गाँठ गठीलौ।

244. पाई चीज पराई, धर कौंने में खाई।

245. चोरी कौ माल मोरी में।

246. रटन्त विद्या फलन्त नांहीं।

247. करनी करै तौ क्यौं डरै क्यौं करिकैं पछताय।
वोयौ पेड़ वमूर कौ तौ आम कहाँ ते खाय॥

248. नीम निमाने धरम ठिकाने।

249. दवी विल्ली मूसेन पै कान कटावैं ऐ।

250. सैंत कौ चन्दन विस मेरे भइया।

251. वारह वरस दिल्ली रहे उत का भूँजौ भाड़?

252. कोऊ गावै होरी कोऊ गावै दिवारी।

253. सात पाँच की लाकरी।

254. अपने-अपने ओसरे कुआ भरैं पनिहार।

255. मार ते भूत भगैं हैं।

256. लातन के देव वातन ते नाँय मानैं।

257. वनी वनी के सवई सँगाती।

258. घौंटू कीच कमर पानी।

259. भेड़ की लात घौंटू ते नीचैं।

260. करि वहियाँ वल आपनी छाँड़ि विरानी आस।

261. सौ दिन चोर के एक दिन शाह कौ।

262. प्रीति घटै नित के घर जाये।

263. उघरे अन्त न होय निवाहू।

264. चुगौ सवनैं देखौ, फंदा काऊ नैं नाँय देखौ।

265. गुरु तौ गुड़ चेला शक्कर है गये।

266. कवहु घी घना कवहु मुट्ठी चना।

267. दार भात में मूसरचंद।
268. स्यानौ सोवै मूरख रोवै।
269. जाकी धीय दुखी वाकौ जहान दुखी।
270. निकरी होटन भई पोटन।
271. चलनौ तौ सड़क कौ चाहैं फेर च्यों न होय।
272. देखी तेरी पाली, जैसी आई वैसी चाली।
273. नौ नगद न तेरह उधार।
274. दूध कौ दूध पानी कौ पानी।
275. चालीस सेरौ नंग।
276. धरम करत मेंठ आवै हानि।
277. करकैंटा की चोट बिटौरा पैं।
278. मानैं तौ देव नहिं भीत कौ लेव।
279. उल्टी गरे निवाज परी।
280. कोढ़ में खाज।
281. को को भइया घर रहैं, कौ को जाँय बरात।
282. काऊ कूँ बैंगन पच काऊ कूँ कुपच।
283. परदेसी की प्रीति झोल कौ तापनौ।
284. छाछ कौ आस्र राग कौ कहा बढ़ाइबौ।
285. राम भरोसे जो रहै पर्वत पै हरियाय।
286. ऐंठ के मारे पैंठ चल्यौ।
287. कै मारै भादों की घाम, कै मारै साजे कौ काम।
288. ऊँट बकरिया कौ मेल।
289. लाख जीमनी धरि लेओ नाँम, अन्त रहैगी मरिकैं।

290. राजा जोगी अगिन जल इन की उल्टी रीति।

291. राजा के अगारी अरु घोड़ा के पिछारी नाँय चलैं।

292. पंछीन में कउआ आदमीन में नउआ।

293. अन्त भलौ तौ सग भलौ।

294. भूले वनिया भेड़ खाई, अव खाय तौ राम दुहाई।

295. लौट कैं बुद्धू घर कूँ आये।

296. रहिमन निज मन की विथा मन ही राखौ गोय।

297. स्यारन के लँहड़े चलैं, सिंह एकलौ धाय।

298. गाम की शोभा कूँ गौंड़े ई वताय दें।

299. भेजै तौ रोवापीटी करूँ नाँय तौ गोवर पानीऐ लगूँ।

301. जलदी कौ काम शैतान कौ।

302. सीखैगौ तौ बुई, जो कछु खो वैठैगौ।

303. वूँद-बूँद ते घट भरै।

304. दार विगरि गई तौ का साग की परतरऊ नाँच रही।

305. जूतान दार वँटै।

306. वात कौ पक्कौ लँगोट कौ सच्चौ, कहूँ डोल।

307. गीत में गावै न रोज में रोवै।

308. सुवरन की चोरी करै चोर चितेरौ कव।

309. डँगरिया-डँगरिया दूर डँगरिया-डँगरिया नजीक।

310. आवै ज्वानी सुधरै कानी।

311. संतोषी सदा सुखी।

312. फोरा फूटौ पीर गई।

313. शुभ काम में देरी कहा ?

314. ऊधौ करमन की गति न्यारी।

315. नकटी देवी पट्टू पुजारी।

316. जाकी पैनी वाकी पटपर में ऊ पैनी।

317. बूढ़ौ बैल सिरौंदा बाँधे ज्वानीपन में न्यौंहीं हाँड़े।

318. दाँत हे जब चना ना हे चना हैं तौ दाँत नाँय।

319. हाथी के पाम में सबकौ पाम।

320. कोरौ नाज कौ बासन।

321. आस्तीन कौ साँप।

322. पंडित वोइ जो गाल बजावा।

323. साँपन की पंचायत में जीभन की लपालप।

324. खायकैं पछतावै न्हाय कैं नाँय पछतावै।

325. पाँच पंच मिलि कीजै काजा।

326. आधौ तीतर आधौ बटेर।

327. बीती ताहि विसारि दे आगे की सुधि लेहि।

328. सहज पकै सो मीठौ होय।

329. जिन खोज्यौ तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ।

330. भई गति साँप छछूँदर केरी।

331. पुजारी फँसिगौ चक्कर में।

332. भैंस कौ मन देखकैं पड्डा रैंकत।

333. आग लगायकैं दूर परे।

334 जाकौ खायौ अन्न पानी, वाकी कीजै अबादानी।

-मुंसिफ कोर्ट के निकट, कामां, (भरतपुर)

कछू लोकोक्ति अकारादि क्रम सौं

–डा.राजेन्द्ररंजन चतुर्वेदी

अंत मता सो गता।

अकल के पीछे लट्ठ लिएँ फित्तु ऐ।

अकेलौ नीम घर-घर सीतला।

अनगहनी कौ गहनौ एक पचमनियाँ।

अत का फूला सैजना जरा मूँड़ ते जाय।

अनखाती धनियाँ लील गयी खसम की तनियाँ।

अन्न परायौ ऐ तौ पेट तौ परायौ नांएँ।

अपनी जाँघ उघारै अपने ई लाज आवै।

अपनी हँसी हँसै बिरानी हँसी रोवै।

अपनी पीठ काऊ ऐ नाँय दीखै।

अपने घर खइयो मति बिना बुलाए जइयो मति।

अपने ई मरें स्वर्ग दीखै।

अमीरै जान प्यारी ग़रीबै आन प्यारी।

आँखे ओट तो जी में खोट।

आँत भारी सो माथ भारी।

आग खायगौ सो अँगार हँगैगौ।

आग लगंता झोंपड़ा जो निकसै सोई सार।

आछे नीके जियरा कौं ला

आज मरें कल्ल दूसरौ दिन।

आपकौं न मानै ताके बाप कौं न मानियै।

आप लगावै आप बुझावै आपई करै बहानौ।

आग लगाय कैं पानी कूँ भाजै ताकौ कौन ठिकानौ।

आये कनागत फूले काँस पंडित ऊलैं नौ-नौ बाँस।

आसमान के फटे में कहाँ तक थेगरी लगावै।

आहार चूके वे गये, व्यौहार चूके वे गये।
दरबार चूके वे गये, ससुरार चूके वे गये॥

इकलंता चलियै नहिं बाट, दूजे झार बिछइयै खाट।
जागंता मूसै नहिं कोय, रिस मारे रिसायव होय॥

इतने दिन में मेहमान आये, सोऊ लाई में लगाय दिये।

ईतौ खेत बारी कूँ खाय।
राजा है चोरी करै न्याउ कौन घर जाय॥

ईतर के घर पीतर भार धरौ कै भीतर।

उतावला सो बावला।

उल्ले रे पल्ले ऐ मार, पल्ले रे तू हिल विड़ार।

एक अकेला दो का मेला तीन तेरह चार ख्वार।

एक आँख में कौन सी खोलै कौन सी बंद करै।

एक गाम में नकटौ बसै छिन में रोवै छिन में हँसै।

एक घड़ी की नकटाई, दिन भर की बास्याई।

एक चना दो दार करें हम जो कोई हमकौं पंच बना ले।

एक बँदरिया रूठ जायगी तौ का बिंदावन सूनौ है जायगौ?

एकु चुप्प सौनैं हरावै।

एक तौ कानी बेटी जाँकी की मांई।
ऊपर ते पूछबे वारेन्नें जान खाई॥

एक तौ बुढ़िया नाचनी, दूजे घर भयौ नाती।

एक तौ बसौ सड़क पै गाम, देजे बड़े-बड़ेन में नाम।
तीजे परे दरब से हीन घग्घा हमकौं विपता तीन॥

एक तौ बाबा बावरौ और दूसरे भूतन खंदेरौ।

एक हर्र कौ सेवन करै, काहे कौं खबर बैद कौं परै।

एक हाथ ते तारी, थोरेऊ बजै।

एक हाथ में औड़ी बौड़ी, एक में छाप मुलम्मा की।
घोड़ी माँग बिरानी लायौ, देखौ ठसक हरम्मा की॥

ऐंत घर कि पैंत घर।

ऐरन की चोरी करी करौ सुई कौ दान।
कोठे ऊपर चढ़ कै देखै कितनी दूर विमान।

ऐसे पै तौ ऐसी काजर दियें कैसी।

ऐसे बूढ़े बैल कौं कौन बाँध भुस देय।

ऐसे फूल का जो महेस पै चढ़े।

ऐसे ई मीयां रँगरेज होवें तौ अपनी ई दाढ़ी न रँग लेते।

ओछी लड़ै उधार मांगै।

ओछे के घर खानौ, जनम-जनम कौ तानौ।

ओछौ मंत्री राज बिनासै ताल बिनासै काई।
सुक्ख साहिबी फूट बिनासै घग्घा पैर बिबाई॥

और के पाँय नाइन मल मल धोबै।
अपने पाँयन पै भूभर न फोरै॥

और तिलक सब ऐदी-बैंदी, रामानंदी तिलका।

औसर चूकी बेड़नी गावै ताल बेताल।

कजरन की अथांई पै टुकड़न के न्याउ।

कन्या जिनके अति घनी पच्छिम जिनके द्वार।
साँई इन्हें न मारियै ये मारे करतार॥

कका काकी कूँ ई मर्द ऐ।

कचरिया के चोरै फाँसी नाँय दई जात।

कछू न रहैगौ ऊधौ बातें रहि जाँयगी।

कछुआ कौ काटौ कठौती ते डरपै।

कछू हाथ कौ झोलना कछू डाँड़ी कौ फेर।
औरन कौ जो तीनपा सो बनियाँ कौ सेर॥

कट्‌ट्या कौ खाय परि उघट्‌ट्या कौ न खाय।

कढ़ी कौ सौ उबाल आयौ और गयौ।

कनफटा कौ कौन ते नातौ?

कनैटा में एक गुण जादा।

कपड़ा कहै तू मेरी राख मैं तेरी राखुंगौ।

कबू बाबा की कबू बब्बर की।

कबू दिन बड़ौ तौ कबू रात बड़ी।

कब्जा सच्चा झगड़ा झूठा।

कम खाय और गम खाय, न हकीम के जाय न हाकिम के।

कमजोर गुस्सा भारी।

कमाऊ आवै डरतौ, निखट्टू आवै लड़तौ।

करघा छोड़ तमासा जाय, नाहक चोट जुलाहा खाय।

करता गुरु अनकरता चेला।

करे-धरे कौ नाम नांऐ, लात दए कौ नाम ऐ।

कर रहै, कै है रहै।

कर ले सो काम, भज ले सो राम।

करै करावै आप ही, सिर औरन के देय।

करैना जो आपको का माई का बाप को।

कर्म कौ दीपक संग चलै।

कल्ल की कहिकैं तौ भगवान हू नाँय लौटे।

कहा ओछे की प्रीति कहा सपने की माया।
कहा ओस कौ नीर कहा बादर की छाया॥

काऊ की घोड़ी काऊ की घास, बैठे बेटा नरायनदास।

काऊ की जीभ थोंरई पकरी जाऐ।

कागज की नाव नाँय चलै।

काजी के तौ पाजी है गये पाजी है गये काजी।
जिनकैं नाँई चूल मौंगरा उनकैं नौबत बाजी॥

काजी मारौ तुरकी कांपौ।

काजी कौ प्यादौ ऊ घुड़सवार।

कामला सो लाढ़ला।

काम होत नाँय, राम लेत नाँय।

काया कौं दुख दिये बिना कोऊ काम नाँय सुधरै।

कायथ मीत न कीजिये सुन कंता नादान।
राजी होय तौ धन हरै बैरी होय तौ प्रान।।

कुठौर काटी सुसर बायगी।

कुत्ता के बल गाड़ी नाँय चलै।

कुम्हार की भागमानी और बकरा की ज्वानी थोरे दिन चलै।

कूआ पानी कृपन धन गल बाँधीं निकसाय।

कूदत-कूदत ही नचनिया है जाए ऐ।

कै तौ पंडित पंडिताई छोड़ नहीं तौ धनकुटा लील।

कै सोबै राजा कौ पूत कै सोबै जोगी अवधूत।
कै सोबै जाकें माई न बाप कै सोबै जो आपमधाप।।

कोई देवी के गावै, कोई बराई के।

कोठी कुठीला ते हाथ मत लगइयो सब माल नेरौ ई ऐ।

को जानें पैलैं माट फूटै कै मटकना?

कोल्हू के बैल कूँ घर में पचास कोस।

कोस-कोस पै पानी बदलै चार कोस पै बानी।

कौन-कौन कौ लीजै नाम मूंड़ मुड़ायें सिगरौ गाम।

क्या भूखे को बासन और क्या नींद को आसन?

क्वार के दो पाख जतन-जतन से राख।

क्वारी कन्या सहस बर।

खइयै खदाँ जो निभियै सदाँ।

खरौ कहैया दाढ़ी जार।

खात की अपनी चैन की बिरानी।

खाती आई खाती गई कहा बहू बाप कैं गई।

खाबै पीबै अल्लोमल्लो तुपक चलाबौ हर बंसा।

–269/3, इंसार, पानीपत

के . एल . इंटर कालेज, सासनी (अलीगढ़) के तत्वावधान में ग्रामटोलीन्नैं, छात्र अरु अध्यापकन्नैं सासनी अंचल अरु ब्रज चौरासी कोस ते पाँच हजार लोकोक्तीन कौ संग्रह कियौ। उनसौं चुनी भई लगभग द्वै हजार लोकोक्ति सन् 1988 में डा . राजैन्द्र रंजन के सम्पादन में के. एल. जैन. इंटर कालेज सासनी की वार्षिक मुखपत्रिका 'आशा' के 'लोकोक्ति और लोकविज्ञान विशेषांक में छपि चुकी है।

–सम्पादक

लोक-नाट्य परम्परा

-डॉ. श्यासनेही लाल शर्मा

जैसें विरमा नें 'ऋक्' ते 'पाठ' साम ते गायन 'यजु:' ते अभिनय और 'अथर्व' ते रसु लैकें नाटक कौ पंचमवेद बनाऔ हतौ, वैसेंई लोक नाट्य रूपी वेदऊ आदि मानव नें प्रकृति की प्रेरना ते स्वयं ई अनजाने में अपनी रागात्मक वृत्तियन के प्रकासन के तांई बनायौ औरु या परम्परा कूँ आगे बढ़ायौ। प्रकृति के नाना किरिया-कलापन नें मानव कूँ नृत्य की प्रेरना दई, भासा के अभाव में मन के भावन कूँ प्रकट करिबे के प्रयास नें अंग-संचालन करिबौ सिखाऔ। जा तरै प्रकृति की ई खुली गोद में आदिम मानव की रंगसाला बनिकैं सौभाग्यसालिनी बनी और लोकनाट्य कौ जनमु भयौ। वाही तरियाँ, लोकनाट्य में हमकूं लोक-जीवन कौ जो यथारथ दरसन, जीवन और संस्कारन की जैसी प्रबल छाप मिल्ति है वह अन्य सास्त्रीय कलान में इतनी स्पस्ट ना है पावति। यहा ते 'श्री कन्हैयालाल चंचरीक' ने कह्यौ है, कै हमारे लोक-संस्कृति के समन्वयवादी दृष्टिकोण नें ई लोक-नाट्य परम्परा कूँ अजर औरु अमर बनायौ है। [1]

लोकनाट्य कौ स्वरूप

लोकनाट्य नाटक कौ वह रूप कह्यौ जात है, जाकौ संबंध विससे रूप ते पढ़े-लिखे समाज ते अलग सर्ब-साधारण के जीवन ते होइ औरु जो परम्परा ते अपने -अपने क्षेत्र के मनोरंजन कौ साधन रह्यौ होइ-ऐसौ 'डॉ. श्याम परमार' कौ मत है[2] जा मत ते अपनी असहमति जतावत भए 'डॉ. महेन्द्र भानावत[3] कौ विचार है कि लोक-धरमी रूढ़ियन की अनुकरणात्मक अभिव्यक्तियन कौ यह नाट्य रूप जो अपने-अपने क्षेत्र के लोक-मानस कूँ आहलादित, उल्लसित और अनुप्रानित करतु है- लोक नाट्य कह्यौ जातु है। विचार अपनी-अपनी जगै ठीक है सकै पर जे विचार नाट्य के स्वरुप कौं पूरी तरियाँ स्पष्ट करवे में समरथ नाहैं। हतै। लोक नाट्य तौ सहज रूप ते विना काऊ साज-सज्जा के और सास्त्रीय नियमन में बँधे विना लोक-मानस की रचना होतु है, जाई ते लोकनाट्य कूँ परिभासा में बाँधिबौ वाकी मुक्तता कौ हनन करिबौ है। सही बात तो जि है, कै लोक-नाट्य, लोक-मानस के उल्लसित क्षण की सहज अभिनयात्मक अभिव्यक्ति है, जामें भाव-प्रवणता और लोकानुगत प्रवृत्तियन के माध्यम ते क्षेत्र

खात की अपनी चैन की बिरानी।

खाती आई खाती गई कहा बहू बाप कैं गई।

खावै पीवै अल्लोमल्लो तुपक चलावौ हर बंसा।

–269/3, इंसार, पानीपत

के . एल . इंटर कालेज, सासनी (अलीगढ़) के तत्वावधान में ग्रामटोलीन्नैं, छात्र अरु अध्यापकन्नैं सासनी अंचल अरु ब्रज चौरासी कोस ते पाँच हजार लोकोक्तीन कौ संग्रह कियौ। उनसौं चुनी भई लगभग द्वै हजार लोकोक्ति सन् 1988 में डा . राजैन्द्र रंजन के सम्पादन में के. एल. जैन. इंटर कालेज सासनी की वार्षिक मुखपत्रिका 'आशा' के 'लोकोक्ति और लोकविज्ञान विशेषांक में छपि चुकी है।

–सम्पादक

लोक-नाट्य परम्परा

-डॉ. श्यामसनेही लाल शर्मा

जैसें विरमा नें 'ऋक्' ते 'पाठ' साम ते गायन 'यजु:' ते अभिनय और 'अथर्व' ते रसु लैकें नाटक कौं पंचमवेद बनाऔ हतौ, बैसेंई लोक नाट्य रूपी वेदऊ आदि मानव नें प्रकृति की प्रेरना ते स्वयं ई अनजाने में अपनी रागात्मक वृत्तियन के प्रकासन के तांई बनायौ औरु या परम्परा कूँ आगे बढ़ायौ। प्रकृति के नाना किरिया-कलापन नें मानव कूँ नृत्य की प्रेरना दई, भासा के अभाव में मन के भावन कूँ प्रकट करिबे के प्रयास नें अंग-संचालन करिबौ सिखाऔ। जा तरै प्रकृति की ई खुली गोद में आदिम मानव की रंगसाला बनिकें सौभाग्यसालिनी बनी और लोकनाट्य कौ जनमु भयौ। वाही तरियाँ, लोकनाट्य में हमकूं लोक-जीवन कौ जो यथारथ दरसन, जीवन और संस्कारन की जैसी प्रबल छाप मिल्ति है वह अन्य सास्त्रीय कलान में इतनी स्पस्ट ना है पावति। यहा ते 'श्री कन्हैयालाल चंचरीक' ने कह्यौ है, कै हमारे लोक-संस्कृति के समन्वयवादी दृष्टिकोण नें ई लोक-नाट्य परम्परा कूँ अजर औरु अमर बनायौ है। [1]

लोकनाट्य कौ स्वरूप

लोकनाट्य नाटक कौ वह रूप कह्यौ जात है, जाकौ संबंध विससे रूप ते पढ़े-लिखे समाज ते अलग सर्ब-साधारण के जीवन ते होइ औरु जो परम्परा ते अपने -अपने क्षेत्र के मनोरंजन कौ साधन रह्यौ होइ-ऐसौ 'डॉ. श्याम परमार' कौ मत है[2] जा मत ते अपनी असहमति जतावत भए 'डॉ. महेन्द्र भानावत [3]कौ विचार है कि लोक-धरमी रूढ़ियन की अनुकरणात्मक अभिव्यक्तियन कौ वह नाट्य रूप जो अपने-अपने क्षेत्र के लोक-मानस कूँ आहलादित, उल्लसित और अनुप्रानित करतु है- लोक नाट्य कह्यौ जातु है। विचार अपनी-अपनी जगै ठीक है सकै पर जे विचार नाट्य के स्वरुप कौं पूरी तरियाँ स्पष्ट करवे में समरथ नाहैं। हते। लोक नाट्य तौ सहज रूप ते विना काऊ साज-सज्जा के और सास्त्रीय नियमन में बँधे विना लोक-मानस की रचना होतु है, जाई ते लोकनाट्य कूँ परिभासा में बाँधिबौ बाकी मुक्तता कौ हनन करिबौ है। सही बात तो जि है, कै लोक-नाट्य, लोक-मानस के उल्लसित क्षण की सहज अभिनयात्मक अभिव्यक्ति है, जामें भाव-प्रवणता और लोकानुगत प्रवृत्तियन के माध्यम ते क्षेत्र

बिसेस की संस्कृति कूँ साकारता मिल्ति है।

लोकनाट्य और लोकेतर नाट्य रूप में मुख्य अंतरु सास्त्रीय बंधन में बँधिबे और न बँधिबे कौ है। जा अंतर कूँ अपने सब्दन में 'जगदीश चन्द्र माथुर ने यूँ कह्यौ है- लोक रंगमंच औरु नागरिक अथवा साहित्यिक रंगमंच में मुख्य अंतर जि है, कै लोक रंगमंच जन साधारन के दैनिक जीवन कौ एकु अंग रह्यौ है और सामाजिक उद्देस्यन कौ एकु माध्यम, जबकै नागरिक रंगमंच बर्ग बिसेस के लोगन के मनोरंजन कौ साधन, बिनकी फुरसत के क्षणन कौ मन-बहलाब है। दूसरे सब्दन में लोक-रंगमंच, लोक समाज की देह कौ अंग है, नागरिक या साहित्यिक रंगमंच बाकौ बाहरी आभूषन। लोक रंगमंच, जीवन की उमंग की सहज औरु अनायास अभिव्यक्ति है, नागरिक रंगमंच, कलात्मक औरु प्रयास- पूर्वक करी गई अभिव्यक्ति है।

लोकनाट्य परम्परा

'नाट्यशास्त्र' नामक ग्रंथ के प्रनेता आचार्य 'भरतमुनि' के ग्रंथ ते जि तौ सुबिदित ई है, कै हमारे देस में नाट्यकला कितनी प्राचीन है औरु संपन्नऊ है। लोकधरमी नाट्य परम्परा कौ इतिहास तौ बाऊ ते भौत पैले कौ है। विविध उत्सबन, अनुष्ठानन, मेले-ठेलन, ब्रत-त्यौहारन तथा धारमिक संसकारन में लोक अपने बहुरंगे उल्लास में उमड़ि परतु हतौ औरु नाचिबे-गाइबे की अभिनयात्मक अभिव्यक्तियन के संगई संगीत की स्वर लहरीन में भाव-विभोर हैकैं अपने सुखांत जीवन की चिरन्तन- ता कूँ साकार भयौ देखतु हतौ। धीरे-धीरे जैसैं-जैसैं सभ्यता कौ बिकासु भयौ और मनोरंजन के जे साधन स्थायित्व पाइबे लगे, तौ बिबिध भाव-भंगिमान नें इन्हें एक नई भूमिका दई, जो आगे चलिकैं लोक-नाट्य के रूप में बिकसित भई।[5]जाई ते लोक नाट्य परम्परा कौ संबंधु लोक-जीवन ते हैबे के कारन जि परम्परा भौत पैले की है।

लोक नाट्य के कैऊ रूप है (1) रास (2) स्वाँग (3) नकल (4) भगत या नौटंकी, (5) सांगीत स्वाँग (6) खोइया और (7) कायिक। इनमें ते कछू तौ प्रहसनात्मक और कछू नृत्य -नाट्यात्मक हैं। पैले नाट्यरूप में काऊ कथा या घटना कूँ अभिनय कौ बिसै बनायौ जात है औरु दूसरे में अभिमय के संगई संगीत तथा नाचिबे कौ प्रभाबऊ रहतु है। भारत के भिन्न भिन्न क्षेत्रन में भिन्न-भिन्न तरै के लोक नाट्य प्रचलित हैं। जब-जब समाज की रुचि में कोऊ परिबर्तन आयौ है, तब-तब हमारे लोक-मंच नें बाई के अनुरूप रूपु धारिकैं मनोबिनोद कौ साधनु सुलभ करायौ है और जातीय एकता और सांस्कृतिक दृढ़ता कौ परिचय दयौ है। रामलीला और रासलीला जाके सबते अच्छे उदाहरन हैं।

नौटंकी कौ जनमु जा रास परम्परा ते भयौ हतौ वह जैन काल मेंऊ हतौ। 'आइने अकबरी' में जो 'भगत' कौ उल्लेखु आयौ है-वही नौटंकी कौ मूलोत्स है। नौटंकी कौ जनमु स्थान तौ पंजाबु मानौ जातु है, परि जाकौ बिकास उत्तरप्रदेस में भयौ।[6]जातैं हिन्दी के क्षेत्र में हमारी लोकनाट्य परम्परा बिना काऊ बाधा कै बिकसित है रई है। लोकनाट्य के जितने रूप ऊपर बताए हैं, उन सब सरूपन में और

विनकी लम्बी परम्परान में अपने-अपने जनपदन की बिसेसता पाई जाति है। हमारी सिगरी भासान की लोक-नाट्य परम्परा में कछू ऐसे तत्व हैं, जो इन सभी लोकमंचीय परम्परान में एकता की भावबोध जगावत हैं। इनमें नृत्य और संगीत भौतु सुन्दरता ते गुँथौ भयौ है और जे लोक की भावात्मक और सामाजिक इच्छानु कूँ पूरी करत है।

लोकनाट्य की बिसेसताएँ :

लोक नाट्य की कछू उल्लेखनीय बिसेसताएँ होति हैं, जिनके भीतर लोक समुदाय की प्रवृत्ति छिपी रहति हैं। जा संबंध में डॉ. सत्येन्द्र[7] कौ इतनौई कहिवौ है, कै लोक रंगमंच कौ नाट्य संगीतात्मक होतु है, गेयताकी जामें प्रधानता होति है, परि जा गेयता कौ रूपु सास्त्रीय ना होतु, लोक संगीत के तत्व जामें रहत हैं। नगाड़े जैसे लोक वाद्य कौ जामें उपयोग होतु है। वेस-भूसा में लोकरुचि कौ ध्यानु रखौ जातु है। डॉ. श्याम परमार के[8] मत में लोकनाट्य की विसेसता याके लोकधरमी स्वरूप में निहित है। लोक-जीवन तें बाकौ अंग-अंगी कौ नातौ है। बाहरी आडम्बर और नागरिक सुसंस्कृत चेष्टानु के बिना लोक के मनोभावन कौ सुतंत्र बिकास लोकधर्मी नाट्य सैली में ई संभव है। परि डॉ. जगदीश चन्द्र माथुर[9] नें लोकनाट्य की आठ बिसेसता बताई हैं।

1. लोक नाट्य , लोक की अनुभूतियन, भावनानु एवं प्रवृत्तियन कूँ अभिव्यंजित करतु है, व्यक्तियन की कल्पना या अनुभावन की नहीं। लोक की सहज भासा पद्य होति है, याही ते लोक-नाट्य के संवाद पद्य मे होत हैं।

2. समूह बिसेस के सूचक पात्र यानी 'टाइप चरित्र'।

3. खुलौ रंगमंच, दृस्य परिवर्तन कौ अभाव। एकु परदा पीछैं टँगौ रहतु है।

4. अभिनय में संकेत, नाचिवे के हाव -भाव ते भरौ अभिनय।

5. पुरानन की कथा, विदूसक कौ अविर्भाव बीच-बीच में, मर्म कूँ छू लैवे वारे अभिनय के बीच में उपदेस या समसामयिक बिसमतान कौ दुखड़ा रोइबौ या फिरि उच्च वर्ग पै छींटाकसी।

6. कथानक कौ महतु कम, रसानुभूति के माध्यम तेई संतोस कूँ महतु, चौंकै कथान कौ आधार पतौई रहतु है।

7. नाटक मंडली कौ हर सदस्य जरूरत परिवे पै हर कामु करि सकतु है। यह नारी पात्रन कौ भूमिकाऊ करि लेतु है।

8. लोक-जीवन के रीति-रिवाज उत्सवन कौ उल्लेख भौत जरूरी है। यामें लोक में गयन रहे[10] गीत और कहावतन कौ आइबौऊ जरूरी है।

जा तरै लोकनाट्य में संगीत के संगई लोक की भावात्मक एकता समाई रहति है।

• संकेतांक :

1. भारतीय साहित्य एवं कला (.डॉ.नगेन्द्र) पुस्तक में "हमारी लोक :
(लेखक-कन्हैयालाल चंचरीक) पृ.416

2. लोकधर्मी नाट्य परम्परा, पृ.30-31 ।
3. सम्मेलन पत्रिका (लोक संस्कृति विशेषांक) पृ. 353 ।
4. लोकनाट्य:परम्परा और प्रवृत्तियाँ, पृ. 207 (डॉ. महेन्द्र भानावत) से उद्धृत ।
5. लोक नाट्य: परम्परा और प्रवृत्तियाँ, पृ.207
6. हमारी लोकनाट्य परम्परा, पृ. 420 ।
7. लोक साहित्य विज्ञान, पृ. 157 एवं 508-509 ।
8. भारतीय लोक नृत्यों की परम्परा (आलेख पृ. 421) ग्रंथ-भारतीय साहित्य एवं संस्कृति (सं.डॉ. नगेन्द्र)।
9. लोकधर्मी नाट्य परम्परा, पृ. 7 ।
10. सम्मेलन पत्रिका (लोक संस्कृति विशेषांक), पृ. 356-57 ।



रास नृत्य

-डॉ. लक्ष्मी नारायण गर्ग

जा तरियाँ 'ताण्डव' भगवान शंकर की तामसिक प्रवृतीन कौ प्रतीक है, ताही तरियाँ 'रास' भगवान कृष्ण की श्रृंगार-प्रधान भावनान कौ द्योतक है। 'नाट्य शास्त्र' माँहिं महर्षि भरत नैं रास के तीन भेद बताए हैं- 'ताल-रासक', 'दण्ड रासक' औरु 'मण्डल रासक', जाकूँ 'ताली रासक' हू कहैं हैं।

हल्लीसक, रास और रासक एक दूसरे के भौत निकट हैं। अभिनव गुप्त नैं ''नाट्य शास्त्र' की टीका माँहिं साफ-साफ लिखौ है, ''मंडल'' के द्वारा जो नृत्य सम्पन्न हो, उसे हल्लीसक कहते हैं। उसमें एक नेता होना चाहिए, जिस प्रकार गोपियों में भगवान हरि। इसमें अनेक राग, ताल तथा विभिन्न प्रकार की लयों का समावेश होता है। चौंसठ युगल अर्थात् एक एक स्त्री-पुरुष की चौंसठ जोड़ियाँ इसमें हो सकती हैं। ''

यही वर्णन 'भोज' नैं 'श्रृंगारप्रकाश' में करौ है। 'नाट्य दर्पण' में कह्यौ गयौ है, ''हल्लीसक में सोलह या बारह नायिकाएँ नृत्य करें तथा हाथों को बाँधकर ठीक प्रकार रखें। लास्य के भाव-भेद से इसके अनेक भेद हो जाते हैं जोकि नियम रहित होने के कारण परिवर्तित होते रहते हैं।''

कछु समै पाछैं 'मंडल रासक' अधिक लोकप्रिय भयौ। यह मंच पै ही मंचन हौतौ और यामें लोक नाँच की प्रधानता रहै ही। गुजरात में यह परम्परा आज हू है। मध्य गुजरात के घोल नियासी जिनदत्त सूरि (12 वीं सदी) नैं मानसन के लकुटियान सौं किए जावे वारे 'लकुट रास' कौ वरनन करौ है। 'रासक' की रूपरेखा कौ बरनन करते भए लक्ष्मन (1143 ई.) कहै है कै यह एक गीत है। यामें ताल की मंद और तेज गति कौ समावेश रहै है। सप्त श्रेणी रास (संवत 1327) में ताल रास और लकुट रास दोनोंन कौ बरनन है। 'ताल रास' भाटन में हौतौ और 'लकुटरास' नर्तकन नैं काम में लियौ। कवि बाण नैं रा[illegible] के बरनन में बतायौ है कै यह नृत्य 8, 12 या 32 महिलान सौं करौ जातौ। राजशेखर (नवीं सदी) 'दंडरासक' के बारे में कहैं हैं कै यह नाँच डाँडियन के बजाए जावे पै अद्भुत धुनि के आधार [illegible] 'बाघ गुफा' और चिदम्बरम के मंदिर में सात महिलान सौं प्रस्तुत 'दंडरासक' के भित्ति चित्र [illegible]

पन्द्रहवीं सदी की कछु वैष्णव पांडुलिपीन में 'लकुट' और दंडरासक' के चित्र मिले हैं। 17 वीं सदी में भानुदास नैं गर्वी नामक एक खास किसम के नृत्य कौ हवालौ दियौ है, जो ताली रासक कौ रूप है। यह नृत्य मान्सन सौं ताली बजा बजा कैं शक्ति की आराधना के गीत गाय-गाय कैं करौ जातौ।

दक्षिण माँहिं ''शिल्पाद्दिकारम' (दूसरी सदी) और 'मणिनेखेल' के अनुसार भगवान श्री कृष्ण नें अपनी प्रेयसि 'नाघिनैं' और बिनके भैया बलराम नैं सात गोपीन के संग हाथ माँहिं हाथ डारकैं 'कुराबाइकूतु' नाँच करौ। या नाँच कूँ भौत पुरानौ मानौं जाए। याकौ वेदन माँहि उल्लेख मिलै हैं। वेदन के पाछैं के संस्कृत साहित्य माँहिं या नाँच कूँ 'लाट नृत्य' की उपमा दई गई है। यह 'लकुट- रासक' कौ ही दूसरौ नाम मालूम परै। वात्स्यान नैं नाट्य रासक कौ उल्लेख करौ है।

'रास' और 'हल्लीसक' के सम्बन्ध में श्रीमच्छुक देव नैं 'टीका सिद्धान्त प्रदीप' में कह्यौ है कै अनेकन नाँचिवेवारीन कौ 'रास नृत्य' ही काऊ युग में हल्लीसक के नाम सौं प्रसिद्ध हौ। श्रीमज्जी-व गोस्वामी की 'वैष्णवी तोषिणी' टीका में कह्यौ गयौ है कै रास महोत्सव पारस्परिक सुख के ताँईं कृष्ण नैं प्रारम्भ कर्‌यौ। कुम्भ नैं 'रास' और 'रासक' के अलग-अलग लक्षण बताए हैं। रास के बारे में बिन्नैं कही है कै स्वर, पाट, बन्ध ,पद , तेन, विरुद, चित्र और मिश्र ये आठ करण यामें होंय हैं। उद्‌ग्राह, गायक और सान्द्र स्वर सौं आबद्‌ध आभोग और गात्र स्वामी (गात्र उपाधिवारे मान्स) सहित यह रास होय है। रासक में 'आसारित' नामक नाँच कियौ जाए। यामें चारी, मंडल, लास्य के सम्पूर्ण अंग और देसी ताल कौ समावेस रहै है।

'संगीत नारायण' में नाट्य भेद के ऊपर कोहल कौ मत बतायौ गयौ है, जामें कोहल नैं दत्तिल के मत कौ उल्लेख करते भए नाट्य के सट्टक, त्रोटक, गोष्ठि, वृन्दक पर, शिल्पक, प्रेक्षण, उल्लायक, हल्लीस, रासिका, उल्लापि, अंक, श्री गदित, नाट्यरासक, दुर्मल्ली, प्रस्थान और काव्य लासिका ये सोलह देसी रूप बताए हैं और डोम्बिका, भाण, भाणिका. प्रस्थानक, लासिका, रासिका, दुर्म्मल्लिका, विदग्ध,शिल्पनी, हस्थिनी, भिन्न की और तुम्बकी ये बारह नृत्य के प्रकार बताए हैं। अलंकार शास्त्र माँहि इन सबन के लक्षणन कौ उल्लेख करौ गयौ है।

आंध्र के महाराजा वेम (सन् 1400 ई.) नैं रास कौ वरनन करते भए कह्यौ है कै लास्य के समान चारी करते भए नाँचिवेवारी एक-एक पैर की दूरी पै स्थित हैकैंजोड़ी ते ठौर बदलते भए रंग में प्रवेस करैं। गायक ऋतुअनुसार गा रहे होंय।' सूड ताल' माँहि निबद्‌ध द्विपदी आदि प्रबन्धन कूँ गायौ जाय रह्यौ होय, वाद्य हू प्रस्तुत होंय। ता समै खंड मंडल लास्य अंग और चारी के योग सौं मनोहर नाँच करौ जाय। यह अनेकन बंध और सुदंर गीत और अभिनय आदि सौं युक्त होय। यामें प्रवेस, निस्क्राम, प्रसार, विसंधि होंय और वाद्य और ताल के अनुसार हाथ कूँ तालीन सौं विभिन्न लयन कौ समावेस करते भए

सुन्दर नर्तन होय।

शारदातनय के अनुसार रास में 16, 12 या 8 नायक हौने चहिएँ, जो आपस में हाथन कूँ बाँधकैं नाच करैं। पिंडन सौं पिन्डी बनायें और इनके गुम्फन सौं श्रृंखला बनाएँ ता पाछैं भेदन सौं भेद करैं। पिंड आदि की क्रिया छन्द या वाक्य की समाप्ति होंय हैं। पद के मध्य में या वाच्यार्थ सहित इनकौ व्यवस्थित प्रदर्सन संभव नाँहे। वसंत कूँ देखिकैं प्रफुल्ल चित्त सौं आनंद मगन महिला जब राजान जैसी चेष्टा करती भई नाँचै तौ वाकूँ नाट्य रास कह्यौ जाए।

वर्णताल सहित चारी और सम आदि कौ ज्ञान रखवेवारी महिलान के जोड़ा प्रवेस करैं हैं तौ वाए चर्चरी या '*चर्चरी रास*' कहैं हैं। *प्राचीन साहित्य माँहिं चर्चरी के अनेक अर्थ मिलैं हैं जैसैं* -केसन के अलग करवे में और हाथ की अँगुरियान सौं एक तरियाँ की आवाज(चुटकी) गीत कौ एक भेद, ताल कौ एक भेद, वर्ण भेद, वर्ण छंद, एक प्रकार कौ ढोल, आमोद-प्रमोद, गायन वादन, अंग-भंगी, नाटक में एक पर्दा गिरवे के पाछैं और दूसरौ उठवे के पहलैं गायवे वारौ गीत, चापलूसी, घुँघराले वार, दो मान्सन कौ वारी-वारी सौं कविता पाठ करवौ, चाचर, चच्चरी ताल, चर्चरिका ताल, एक राग विसेस। धेम नैं '*चर्चरी नृत्य*' और '*चर्चरी*' *की अलग व्याख्या करी है।* '*तेति गिध*' *बोलन सौं युक्त ताल सौं रास नृत्य* करौ जाए या चर्चरी ताल के अनुसार चार आवर्तन में नर्तन होय तौ वाए '*चर्चरी*' नृत्य कहैं हैं। जहाँ रास क्रम के अनुसार नर्तकी प्रविष्ट हो, वर्णताल के अनुसार वाद्य बज रहे हौं , युगल रूप में चर्चरी को बार-बार गाती भई या श्रृंगार वर्णन युक्त द्विपदी कूँ गाती भई लासिका नाँचै तो वाए चर्चरी कहैं हैं।

कुंभ के अनुसार दो पदन-वर्णताल (वाद्य) और '*चर्चरी*' सौं युक्त या मनोहर लास्य सहित गति भेदन सौं जहाँ महिला बसंतोत्सव में रस, राग और लय भेदन कौ ध्यान रखकैं मंडलाकार नांचैं वाए चर्चरी नाँच कहैं हैं। चर्चरी नाँच की क्रियान कूँ कई-कई बार दुहरायौ जाए और अधिक सौं अधिक यामें 24 युगल तक कौ विधान है। यामें दाएँ-बाएँ अंगन के संचालन सौं परिष्कृत वर्णन के अंत माँहिं दो '*आलीढ़*' सौं युक्त द्रुत ताल कौं '*छोटका*' के माध्यम सौं प्रदर्सित करौ जाए।

'*आलीढ़*' के तीन भेद होंय - स्थान, अंगहार और मंडल। वर्तमान रास में याकौ कछु रूप पायौ जाए। दाक्षिणात्य '*भरत नाट्यम्*' में आलीढ़ कौ काफी प्रयोग करौ गयौ है। याके अगंहार करवे में आठ करणन कौ प्रयोग करौ जाय है। व्यंसित, निकुट्ट और नूपुर कर्ण बाएँ पैर सौं और अलातक, आक्षिप्त, उरोमंडल करिहस्त और कटिच्छिन्न कर्ण क्रम सौं दाएँ पैर सौं प्रदर्सित करे जाएँ हैं। आलीढ़ स्थान में दाएँ पंजे पै बैठकैं बाएँ पैर कूँ सामने फैला दियौ जाय है और सीधे पैर सौं ताल के पाँच आघात मारे जाएँ हैं। आलीढ़ मंडल में बाएँ हाथ सौं सिखर-हस्त और दाएँ हाथ सौं कटका मुख हस्तमुद्रा बनाकैं दाएँ पैर सौं तीन बिलाँद आगैं बायौं पैर रखौ जाय है और चुटकी सौं द्रुत ताल कौ प्रदर्सन करौ जाय है। याके पाछैं अंगन कौ परस्पर संचार और हाथ सौं ताली दैंते भए नाँच सौं तीन या चार खंड करे जाँय हैं। ता पाछैं परकम्मा करकैं पात्र अलग है जाएँ हैं और फिर प्रवेस करैं हैं। यह सब एकहि समैं माँहिं होय। इन क्रियान के पाछैं ताल में पुष्पांजलि कौ प्रदर्सन करौ जाए है, यामें एक-एक युगल के बगल

में ते पात्र प्रवेस करैं हैं। पणव वाद्य पै रथ्या ताल कौ प्रयोग करौ जाए है, फिर नायिका 'शुष्क गीत' गावै है।

उत्तर भारत के कुमाऊँ प्रदेस में चर्चरी नृत्य आजहु सुरक्षित है, जहाँ याकूँ चाँचरी कहकें पुकारौ जाए। कुमाऊँ की धरती पै हर काऊ उत्सव में चाँचरी देखौ जाय सकै। दूसरे लोक नृत्यन की अपेक्षा यह वृत नृत्य वहाँ सर्वाधिक लोकप्रिय है और याकूँ झोड़ा कहकें पुकारौ जाए। नर्तक और नर्तकीन की यामें कोऊ सीमा नाँय होय। याही सौं यामें डेढ़ सौ स्त्री पुरुष तक दिखाई पड़ सकैं। भोरे भारे पर्वतीय सामूहिक रूप सौं अपनी भावनान कूँ व्यक्त करते भए नृत्यमय है जाएँ तौ देखते ही वनैं। हुड़का वाद्य पै थाप पड़ते ही कुमाऊँ कौ वच्चा-वच्चा चाँचरी के ताँईं पागल है उठै। वंसत हो या सिसिर, उत्सव हो या त्यौहार, या नांच कूँ काहू की अपेक्षा नाँहै। सव कछू याके अनुकूल है जाय। सचमुच चाँचरी में मनमोहक नसा है। या नाँच में हुड़का कौ नायक हुड़का पै पहली तान छेड़ै और सव वाकौ अनुसरण करैं है। यामै नायक में एक और विसेसता होय, वह है आसुकवि हौनौं। उन्मत्त भावनान सँ नए-नए छंदन कौ सृजन आनन फानन में होय है। दो पंक्तीन की तुक मिलावे के ताँईं जोड़ मिलाए जाएँ हैं।

एक ओर आधे मंडल में नारी और दूसरी ओर पुरुष वर्ग चाँचरी में होय। एक दूसरे की पिंडियाँ आपस में वँधी होय और फिर वाली, जावा के सुकुमार लास्य नृत्य जैसी गति में 'पाद विन्यास' और सारण क्रिया होय। थके भए नर्तक अपने आप हटते चले जाएँ। विनकौ स्थान दूसरे नर्तक लैं लैं। चाँदनी थक जाय-पै चाँचरी चलतौ रहै है। घेरे पै घेरे वनते चले जाँय। मध्य प्रदेस के आदिवासीन कौ 'करमा नृत्य' और 'जोड़ी नृत्य' हू चाँचरी के ही समान होंय।

'रास नृत्य' के अन्तर्गत भिन्न-भिन्न रूपक होंय। शुभंकर नें 'रास नृत्य' कूँ रूपक कौ सूत्रधार सौं रहित एकांकी वतायौ है। यामें उत्कृष्ट नाँदी (स्तुति) के पाछैं 'कैशिकी' और 'भारती' वृत्ति कौ समावेस होय है। मुख्य नायक के अलावा पाँच पात्र भाषा, विभाषा, वीथी और तीन सधीन सौं मंडित हौने चहिएँ। गर्भ और अवगर्ष संधीन कौ यामें अभाव रहै। विदूपक कौ उपदेस यामें क्रोध पैदा करवे वारौ होय। उदात्त भाव के संग यह उत्तरोत्तर वढ़तौ रहै।

शारंगदेव नें रास ताल के आश्रय सौं प्रयुक्त किए जावे वारे रासक के चार भेद-विनोद, वरद, नंद और कम्वुज वताए हैं।[1] गांधर्व वेद माँहिं कम्वुज रासक गायन के ताँईं राज विनोद ताल कौ उल्लेख करौ है, यामें 2 गुरु होंय और एक प्लुत होय।[2]

---

1. रासको रास तालेनं च चेतुर्धा निरुपित: ।
   विनोदी वरदो नंद:कम्वुजश्चेति शांगिणा ॥ संगीत रत्नाकर   अ. स. 318
2. राज विनोदे ताले , स्याद गुरुद्वं द्रुमघ प्लुतु: ।
   रासक कंवुजस्तेन गीयते गीत कोविदैं ॥ गंधर्व वेद

तमिल के कछु प्राचीन ग्रन्थन में श्री कृष्ण सौं प्रस्तुत कछु नाँचन के नाम मिलें हैं। 'शिल्पादिकारम्' ग्रन्थ में 'आल्लियाम् ' और कुरबई नृत्यन कौ उल्लेख करौ गयौ है। इनकूँ श्री राधा कृष्ण नैं अपनी बाल्यावस्था में करौ।

मणिपुर में रासलीलान के चार प्रकार- बसंत रास, कुंज रास, महारास, ओर नित्य रास प्रचलित हैं। बसंत रास बैसाख माह में करौ जाय। यामें राधा के सामई कृष्ण कौ आत्मसमर्पण होय है। 'कुंज रास' आश्विन मास में होय। यामें राधा औश्र कृष्ण के संयोग श्रृंगार नृत्य के विभिन्न रुप दृष्टिगोचर होय हैं।

महारास कार्तिक माह में होय, यामें कृष्ण और राधिका कौ विरह नाट्य नर्तन होय है। नित्य रास विरह और मिलन की लीलान कौ अनुपम प्रदर्सन है, यामें आध्यात्मिक तत्वन कौ चरमोत्कर्ष हू दर्सकन कौं प्राप्त होय है। या नृत्य के ताँईं समय कौ कोई ऊ बंधन नाँहे। मणिपुर के दूसरे नृत्य हू रास की वृत्ताकार शैली पै ही आधारित होंय हैं। समस्त नृत्यन में पाद विक्षेप लास्यगति पै पिर्भर होय है। भ्रू-संचालन, हस्त मुद्रा और अंगहार सब कछू लास्यमय रहैं हैं। ब्रज कौ द्योतक है। स्थान-स्थान पै तांडव कौ प्रयोग रास के लास्यांग की वृध्दि याही तरियाँ करै है जैसैं काऊ राग में विवादी स्वर कौ प्रयाग बाके रूप कूँ और हू आकर्पक बनावै है।

सारंगदेव नैं लास्य के दस अंग बताए हैं। चाली, चालिवड, लढ़ि सूक, उरोंगण, धसक, अंगहार, ओचारक, बिहसी और मन। नंदिकेश्वर के अनुसार, लास्यछुरित और यौवंत केवल दो तरियाँ कौ है। छुरित सब्द स्फूरित सब्द कौ अपभ्रंस है। यौवत में एकहि नर्तकी मधुर आवध्द लीला सौं दर्सकन कूँ मंत्र मुग्ध कर देय है। स्फुरित माँहिं नायक-नायिका परस्पर श्रृंगार रस कौ संचार करते भए लास्य के विविध अंग प्रत्यंगन कौ प्रदर्शन करैं हैं।

राजस्थान कौ डांडिया नाँच, घूमर या झूमर, गुजरात को गोफा और गरबा, छत्तीसगढ़ी कौ डंडा नृत्य, सिक्किम कौ शापद्रोह नृत्य, बंगाल की यात्रा, कस्मीर कौ हिटक, हिमाचल प्रदेस कौ मलका, मणिपुर कौ लाई हरोबा, आंध्र कौ कोलाटम्-ये सबई रास के अंश मात्र हैं। कुंडली नृत्य, तिरिय नृत्य, मंडि भ्रमरी, चित्र कुंडली, सूड, डोम्बी, श्री गदित, भांण, भाणी आदि रास के उपनृत्य विस्तृत विवेचन की अपेक्षा रखैं हैं।

भारतीय गुलामन सौं अरब में रास के एक प्रकार 'रूमाल नृत्य' कौ सत्रहवीं सदी में प्रचार में लायौ गयौ। पाश्चात्य जगत के वृत्त-नृत्यन में 'पोल्का-नृत्य' को उल्लेख मिलै है, याके वहाँ विविध रूप प्रचलित हैं। उत्तरी स्पेन में 'पोलोनृत्य' प्रसिध्द है। जापै स्पेन के इतिहासकारन के अनुसार पूर्वीय प्रभाव है। भारत के मणिपुर प्रदेस में 'दी डांस इन इंडिया' के लेखक फौबियन बोवर्स के मतानुसार पोलो और

रास दोनों कौ प्रचार एकहो समै में भयौ। हमारी धारणा के अनुसार स्वीडन के 'पोल्सका नृत्य' वोहेमिया के पोल्का, और पोलैंड के 'पोलोनैस' नृत्य की उत्पत्ति पोलो नृत्य सौं ही भई है। यूगोस्लोविया के 'लिजो 'कोलो' और 'चाचक' नृत्य व्रज के रास और चर्चरी के भौत निकट हैं।

मैक्सीकन भारतीन के नृत्यन मे रास के पर्याप्त तत्व आज हू सुरक्षित हैं। 'ग्रीस कौ सर्किल डांस (गोलाकार नृत्य) और अमेरिका कौ 'स्क्वायर डांस (वर्गाकार नृत्य) व्रज के रास सौं अभिन्न प्रतीत होंय हैं। वर्गाकार नृत्य में एक बेर में पाँच सौ युगल तक भाग लैं । एक नायक होय जो वाद्य यंत्रन के समीप खड़ौ हैकैं लय और धुन कौ संचालन करै है और युगल वृन्दन कौं विभिन्न गीतन के ताँईं निर्देस दे।

वर्तमान अनेक नृत्य शैलीन कौ प्रादुर्भाव "रास" सौं ही भयौ है। कत्थक नृत्य हू रास कौ एक अंग मात्र है। किन्तु आज याकौ स्वरूप भिन्न हैवे ते अब याकूँ स्वतंत्र रूप सौं शास्त्रीय आधार पै विकसित करनौ होयगौ।

–संगीत कार्यालय, हाथरस
(उ.प्र.) 204101



रासलीलान की प्राचीन परम्परा

-श्री रामनारायण अग्रवाल

डा. वासुदेव शरण अग्रवाल नैं लिख्यौ है कै' रास नृत्य इतना स्वाभाविक है और इसका लोकधर्मी रूप इतना प्रवल है कि लोक या जनजीवन में इसके नृत्य का अस्तित्व उन धुँधले युगों तक जा सकता है जिनका ऐतिहासिक प्रमाण आज दुष्प्राप्य है।'[1] यासौं यह सिध्द होय है कै रास हमारी प्राचीनतम परम्परा कौ प्रतिनिधि है जो भिन्न-भिन्न युगीन परिस्थितीन के अनुरूप अपनौ रूप वदलतौ भयौ हू अपनी प्राचीन मूल परम्परा ते जुड़ौ भयौ व्रज कौ देस प्रसिध्द नाट्य रूप है। ईसा पूर्व में रचित भरत के नाट्य शास्त्र में 'नाट्य रासक' और रासक कौ उल्लेख लोकधर्मी नाट्य परम्परान के रूप में भयौ हैं औरू रासक के तीन भेद (1) मंडल रासक (2) ताल रासक औरू (3) दंडक रासक बताए गए हैं।[2]

हरिवंश पुराण में श्रीकृष्ण के व्रजांगनान के संग नाचे गए नृत्य कौ उल्लेख 'हल्लीसक' नाम ते भयौ है। विद्वानन कौ मत है कै हल्लीसक या हल्लीस नाम के या नृत्य ते ही रास की उत्पति भई है। ये हल्लीसक नृत्य हमारे आभीर समाज (गोपन) कौ वड़ौ प्राचीन नृत्य है।

हल्लीसक और रास

कछु पच्छिमी विद्वानन कौ मत है कै रास और हल्लीसक[3] नृत्य दोनों एक ही नृत्य हैं। पर हमारे भारतीय विद्वानन नैं अपने लक्षण-ग्रन्थन में रासक नाट्य रासक हललिक्य संगीत कौ अलग-अलग उल्लेख करौ है, यासौं ये वात गरे नाँय उतरै कै जि एक ही नृत्य के नाम हैं। हल्लीसक गोप समाज कौ सामाजिक नाँच है। पर, हरिवंश पुराण ते ज्ञात होय है कै रास भगवान कृष्ण के द्वारिका पहुँचवे पै वहाँ के राज दरवार में नाँचौ गयौ है और वामैं श्रीकृष्ण औरु वलराम जी के जीवन की लीलान कौ प्रस्तुतीकरण होतौ हौ। सारंग देव नैं अपने ग्रन्थ 'संगीत रत्नाकर' में लिख्यौ है कै कृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध को पत्नि उपा (जानें स्वयं नृत्य की सिच्छा पार्वती जी ते प्राप्त करी ही) नैं द्वारिका की नारीन कूँ रास नृत्य सिखायौ हौ। यासौं प्रतीत होय है कै द्वारिका पहुँच कैं वचपन में अहीरनीन के संग श्रीकृष्ण नैं जो हल्लीसक नृत्य

1- देखौ-रास और रासान्वयी काव्य ग्रन्थ में भूमिका कौ पृष्ठ-12

2- ताल रासक नाम स्यात् च त्रिधा रासक स्मृत दंड रासमेकनु तथा मंडल रासक। नाट्य शास्त्र

3- देखो- डा. विटरनिट्ज के ग्रन्थ 'A History of India (Ancient) Vol I

नाँचौ बुही द्वारिका में जायकैं वहाँ के राजदरबार कौ शास्त्रीय नृत्य बन गयौ जो रास के नाम ते सर्वत्र लोकप्रिय है गयौ। हरिवंश पुराण में द्वारिका के पिंडारक छेत्र में भए यदुवंसीन के एक उत्सव कौ वरनन मिलै है। या उत्सव में अप्सरान द्वारा श्रीकृष्ण और बलराम जी के जीवन की अनेक लीलान कौ प्रदर्सन भयौ है। यामें वरनन है कै अप्सरान नैं बलरामजी कौं नमस्कार करकैं पहलैं उन्हें रास नृत्य दिखायौ और ता पाछें उन्हें कंस, प्रलम्भ, अरिष्टासुर और धेनुकपदा की लीलान के संग-संग श्रीकृष्ण कूँ दामोदर नाम प्राप्त हैवे की यमलार्जुन भंग, कालियदमन, गोवरधनधारण जैसी अनेक लीला दिखाई। ये सभी लीला नृत्य के माध्यम ते भई, जिनकूँ देखिकैं बलरामजी आनंद में मगन हैकैं अपनी पत्नि रेवती के संग हू हाथन ते ताल दै दै कैं नाचवे लगे। अर्जुन मृदंग बजावे लगे और नारदजी वीना बजायकैं नाचवे लगे। या वरनन सौं स्पष्ट है जाय कै नृत्य औरु रास में कृष्णलीलान के प्रदर्सन की ये परम्परा बहुत प्राचीन है।

रासलीला ओर संस्कृत नाटक

भारतीय इतिहास में प्राचीनतम दो नाटकन कौ उल्लैख मिलै है जो शालिनी ओर कृशास्व नें रचे हे। ये नाटक है 'कंसवध' औरु ' बालि वध'। इन नाटकन कौ आलेख प्राप्त नाँय है सकौ याते इनकौ स्वरूप कैसौ हौ ये ठीक नाँय कह्यौ जा सकै। पर, इनके नाम ते यह स्पष्ट है जाय है कै ये दोनों ही लीला नाटक हे।' कंसवध'तौ सीधौ ही कृष्ण सौं सम्बन्ध राखै है।'बालिवध' हू विष्णु की बलि ते दान माँगिवे की घटना पै ही आधारित है। यासौं ये स्पष्ट है जायै है कै कृष्णलीला की ओर संस्कृत नाटकन कौ रुझान आरम्भ ते ही रह्यौ।' भास' नैं हू 'बाल गोपाल स्तुति' नाटक रचकैं लीला नाटक की ही रचना करी पर संस्कृत नाटकन कौ अधिक रुझान राजा महाराजान के राजमहल और बिनकी प्रेमकथान पै ही केन्द्रित रह्यौ। याकौ मुख्य कारन यह है कै नाटकन ते हू पहलैं लोकनाट्य के नायक के रूप में कृष्ण चरित पूरे नाटकन में छाय गयौ जो जन-जन के आकर्षन कौ केन्द्र बन चुकौ हौ।

रासलीला नाटकन की जन्मस्थली मथुरा-

हम पहलैं कह चुके हैं कै रास नृत्य के जनक नटनागर कृष्ण माने जाते रहे हैं। बचपन में कृष्ण नें आभीर रमणीन के संग ब्रज में जो नृत्य करौ, बुही द्वारिका के राजदरबार में विकसित हैकैं रास के नाम सौं प्रसिध्द है गयौ। वहीं सौं रास कौ व्यापक प्रचार-प्रसार भयौ। ईसा की पहली और दूसरी सदी में ब्रजभूमि या नृत्य कौ प्रधान केन्द्र हती। मथुरा के कलाकार दूर-दूर तक रास करवे जावै हे।[4]

हरिवंश पुराण और पातंजलि के महाभाष्य के आधार पै डॉ. हाइन या निष्कर्ष पै पहुँचे हैं कै ईसा की दूसरी सदी में मथुरा में कृष्णलीला कौ अभिनय प्रमुख रूप ते हौतौ।[5] उन्नैं अपने या मत की पुष्टि एक प्राचीन पुरातत्वीय साक्ष्य सौं करी है जो सन् 1892 में मथुरा ते प्राप्त भयौ जाकूँ डा व्यूहलर नैं 'एपीग्राफीक इंडिया' में छापौ है। या लेख में 'चन्द्रक' नामक दो भैयान कौ उल्लेख है जिनकौ नाम चन्द्रक यासौं प्रसिध्द है गयौ कै वे दोनों चन्द्रवंसी श्री कृष्ण और बलराम कौ अभिनय करै हे। बिनकौ अभिनय इतेक प्रभावी हौ कै वे दूर दूर तक प्रसिध्द है गए।

---

4. जैसी स्थिति कौ ऊपर उल्लेख भयौ है वु आजहू ज्यों की त्यों विद्यमान है। आजहू ब्रज की रासलीला मंडली पूरे देस में रासलीला कौ प्रदर्सन कर रही हैं। यही नाँय पिछले 30-40 सालन ते तौ रामलीला हू पूरे देस में ब्रज की रासलीला शैली ते मथुरा-वृन्दावन की मंडली कर रही हैं। क्वार के दसहरा पै यहाँ ते 35-40 मंडली देस के विभिन्न भागन में रामलीला करैं हैं।

5. देखौ- डॉ. हाइन के 'मिरेकिल प्ले आफ मथुरा' पृष्ठ 233 से 236 तक।

यह अभिलेख नागराजा दधिकर्ण के राज्य काल कौ है। याके अला[illegible] [illegible] सौं हू कृष्णलीला हैवे की पुष्टि करी है।'' पंच रात्रि संहिता' के ग्यारहवें [illegible] के आधार पै बिनकौ कहबौ है कैं गंधर्व उपवरहन नैं अप्सरान के संग पुष्कर [illegible] में रास महोत्सव कियौ हौ। मथुरा के ही एक दूसरे सिलालेख के आधार पै स्व. [illegible] नैं एक 'शोभना' नाम की नारि कौ उल्लेख कियौ है जो इन नाटकन में नायक की भूमिका [illegible]।

जा उल्लेख में सबते प्रमुख बात जि है कै भरत मुनि ते लैकैं बाद तक लिखे गए लक्षण ग्रन्थन में कहूँ हू काहू नाटक में ऐसौ उल्लेख नाँय मिलै जामें काहु नारी नैं पुरुष की भूमिका करी होय। पर, नाटक में पुरुष की भूमिका करिबे कौ अधिकार ब्रजमंडल नैं ही नारीन कूँ हू प्रदान कियौ है और याही आधार पै शोभना हू नायक की भूमिका में उतारी गई होयगी। ब्रज में तौ रासलीला कौ अनुकरण प्रारम्भ ही गोपीन नैं कियौ हौ।

रासलीलान की संस्थापक गोपिकाएँ

रास नृत्य के संस्थापक श्री कृष्ण कहे जाएँ पर, भागवत में स्पष्ट उल्लेख है कै कृष्ण लीलान कौ अनुकरण सबते पहलें गोपिकान नैं ही कियौ। स्यात याही परम्परा कौ उल्लेख भरत मुनि नैं नाट्य शास्त्र में ' नाट्य रासक ' नाम ते कियौ है। भागवतकार कौ कथन है कै जब शरद के रास में ते कृष्ण अन्तर्ध्यान है गए तौ बिनके वियोग में गोपिकान नैं बिनकी लीलान कौ अनुकरण कियौ हौ। या लीला प्रदर्सन की कछु पंक्ति देखें-

भागवत के दसम् स्कंध के अध्याय 30 में 33 वें श्लोक तक गोपीन सौं करी गई इन लीलान कौ उल्लेख है, पूतनावध, ऊखल लीला, नागनाथन और गोवरधनधारण जैसी अनेक बाललीला गोपीन नैं ही रचीं। जिनमें पुरुष भूमिका उन्नैं ही करी है। भागवत की याही परम्परा के अनुसार रासलीला के नाटकन में शोभना ब्रज की लीलान को नायक बन सकी। संस्कृत के नाटकन के ताँईं यह अनहोनी बात है।

नाट्य रासक परम्परा

उक्त तथ्यन ते ये स्पष्ट है कैं ब्रज की ये कृष्ण लीला नाटकन ते अलग एक स्वतंत्र विधा ही [illegible] प्रदर्सन में गीत औरु नृत्य दोनों ही प्रमुख हे। इन लीलान की कथा हमारे प्रमुख ग्रन्थन पै आधारित ही याही कारन सौं कृष्णलीलान के नाटक पृथक ते नाँय लिखे गए। पर, जब जैन औरु बुध्दन नैं या लोकप्रिय परम्परा कौं अपने धरम प्रचार के ताँईं अपनायौ तौ बिन्नैं पृथक ते रासक ग्रन्थन की रचना करनी पड़ी। ये ही कारन है कै जैन और बुद्ध धरम के अनेक रासक खोज में प्राप्त भए हैं। पर कृष्ण [illegible] के रासक नाँय मिले। हमारे लक्षण ग्रन्थन में रासकन कौ उल्लेख निरंतर प्राप्त होय है। यासौं यह सि[illegible] रासक की ये परम्परा पीछें अनेक रूपन में पनपी जाकौ विवरण हम यहाँ दैकें लेख कौ विस्त[illegible] नाँय समझें। इतनौ ही कहनौ पर्याप्त है कै रास की परम्परा ते प्रभावित हैकैं जैन और बु[illegible]

रासक लिखे जिनमें ते अधिकांश कौ पाठ जैनमंदिर औरु बौद्ध मठन में हौतौ पर कछु ऐसे हू रासक हते जिनमें अभिनय या नृत्य के रूप में प्रदर्सन हू हौतौ। बाद में इन रासन में भौंड़े प्रदर्सन होन लगे औरु अश्लीलता कौ समावेस है गयौ। यातें मन्दिरन में इनकौ प्रदर्सन बंद है गयौ। महाराज हर्षवर्द्धन की मृत्यु ईसवीं 648 में है जायबे के उपरांत केन्द्रीय सता कौ ह्रास है गयौ। छोटे-छोटे स्वतंत्र राज्य बन गए। सबकी ढपली अलग-अलग रागन में बजिबे लगी। वाकौ प्रभाव रास परम्परा पै हू पड़ौ औरु वु छिन्न भिन्न है गई ऐसौ प्रतीत होय है। मुसलमानी राज्य स्थापित है जायबे के उपरान्त तौ हिन्दून पै जो अत्याचार भए वानें राग रंग ही बिखर गए।

वैष्णव रास परम्परा कौ पुनरोदय

तेरहवीं सदी में देस के पूर्वांचल में लगभग 300 बरस के अन्धकार के पीछैं फिरते वैष्णव भक्ति कौ सूर्योदय भयौ। महाकवि जयदेव के गीत गोविन्द की मधुर पदावली नैं फिर ते कृष्ण भक्ति की माधुरी ते जनमानस कौं अविभूत कर दियौ। या युग में उत्कल के परम प्रतापी महाराजा अनंग भीमदेव द्वितीय सिंहासन पै बैठे औरु बिन्नैं हुगली ते लैकैं गोदावरी तक अपने ससक्त हिन्दू राज्य की स्थापना करी। बिन्नैं सन् 1205 ई. में भगवान जगन्नाथ जी कौ मंदिर नीलांचल में स्थापित करायौ औरु भगवान जगन्नाथ, भैया बलरामजी औरुभगिनी सुभद्रा के संग समुद्र की बालुका ते प्रकट हैकैं मंदिर में ऐसी धजते बिराजे कै ब्रज कौ लुटौ-खुसौ वैभव जगन्नाथपुरी में नए सिरे ते साकार है गयौ। या नवीन भक्ति केन्द्र में पुरानी रास परम्परा हू फिरते जीवित है गई औरु भगवान जगन्नाथ के मंदिर में गीत गोविंद कौ अभिनय नृत्य गायन के संग होन लगौ।

तब ये नृत्य गायन की परम्परा महाराजा अनंग भीमदेव के पूरे राज्य के संग-संग दच्छिन तक जाय पहुँची। या प्रकार कह्यौ जाय सकै है कै रास की पुरानी परम्परा ही गीत गोविंद कौ सहारौ पायकैं मानौं फिर सौं जीवित है गई। वासुदेव शास्त्री कूँ तंजौर के पुस्तकालय में उत्तर भारत ते लाई गई गीत गोविंद की एक ऐसी प्रति मिली जामें या ग्रन्थ कूँ गीत नाट्य के रूप में लिपिबद्ध कियौ गयौ है।

इन गतिविधीन ते यह स्पष्ट है जाय है कै 15 वीं सदी तक गीत गोविंद कौ अभिनय देस में भौत लोकप्रिय है गयौ हौ। याहो बीच में लोक नाटकन की एक 'फागु' परम्परा कौ विकास भयौ जो होरी पै बिसेस रूप ते खेले जाते। ये फागु अधिकांश में जैन धर्म ते सम्बंधित हैं। वैष्णवीय फागु ही सर्वाधिक उल्लेखनीय हैं। इन नाटकन की गूंज जब ब्रज में पहुँची तौ वहाँ हू प्राचीन रास परम्परा कौ फिरते नवजीवन दैबे की भावना प्रबल है गई औरु यहाँ के भक्ताचार्यन नैं रास कूँ पुनरजीवित कियौ।

रास के या पुनरजन्म में जिन विभूतिन कौ प्रमुख योगदान मानौ जाए तिनमें महाप्रभु वल्लभाचार्य, रसिकाचार्य, स्वामी हरिदासजी महाराज, सहयोगी श्री हरिराम व्यास कौ भारी सहयोग हौ। ऐसी अनुभूति है कै महाप्रभु वल्लभाचार्य जी औरु हरिदास जी नैं सबते पहलैं विश्राम घाट पै चतुर्वेदी बालकन के संग रास कौ आयोजन कियौ। या घटना कौ उल्लेख राधाकृष्ण रासधारी नैं हू अपने ग्रन्थ 'रास सर्वस्व'

में कियौ है। उन्नैं करहला गाँव के ब्राह्मन घमंडदेव कूँ रासलीला करवे की आग्या दियौ और ब्रज के करहला गांव में ही सबतें पहलें रास मंडली कौ गठन भयौ। याके पीछें रास की लोकप्रियता बढ़ी औरु ब्रज क्षेत्र में अनेकन मंडली बन गईं जो दूर-दूर तांईं जायकें रास करवे लगीं। इन रास मंडलीन में श्रीकृष्ण की बाललीलान कौ प्रदर्शन गोस्वामी नारायन भट्टजी नैं आरम्भ करौ। नारायण भट्टजी सम्वत् 1602 में दच्छिन तें ब्रज में पधार कें यहीं बस गए। वे शास्त्रमर्मज्ञ और गुनी संगीतज्ञ हैवे के संग-संग अद्वितीय विद्वान हू हे। उन्नैं ब्रज में सम्राट अकबर के अर्थमंत्री राजा टोडरमल के सहयोग तें पक्के रास मंडल हू बनवाए जो बरसाने के आसपास आज हू दिखायत हैं। [illegible] बरसाने के क्षेत्र में हैवेवारी बूढ़ीलीलान के ढंग पै [illegible]। [illegible] घराने के प्रसिद्ध वल्लभ-दास के [illegible]। [illegible] नैं ही रास के वर्तमान नृत्यरूप कौ निर्माण कियौ [illegible] भयौ हौ।

या प्रकार पुराने रास की परम्परा [illegible] विनकी लीलान कौ रस उँड़ेलवे में समर्थ है। [illegible] रस कौ प्रसाद बाँट रही हैं।

[illegible]

[illegible]

ब्रज की रास लीला

–पं. वृन्दावन बिहारी मिश्र 'बिन्दुजी'

ब्रज की सुप्रसिध्द औरु जनप्रिय लोकमंच की रास लीला प्राचीन काल ते आजु तक बड़े आदर, श्रद्धा औरु चावते देखी जाय है। श्रीमद् भागवत दशम स्कन्ध में 29 अध्याय ते 33 अध्याय तक श्रीरास पंचाध्यायी रूपी रस वर्षण कर्‍यौ गयौ है श्रीमद्भागवत कथा ब्रजभाषा में कही जाय तौ रस कौ अजस्त्र प्रवाह प्रवाहित हैवे लगै है।

वर्तमान में हैवे वारी रास मंडलीन के द्वारा रासलीला कौ इतिहास बड़ौ पुरानौ है। सोलहवीं शताब्दी में श्रीस्वामी घमंड देवाचार्य जी द्वारा रासलीला कौ पुनर्गठन कियौ गयौ। स्वामी घमंडदेवजी बड़े भजनानन्दी–तपस्वी–यागी संत हते। वे महात्माजी बरसाने ते द्वै कोस दूर पूर्व में स्थित करहला गाँव में भजन करते। ये करहला श्री ललिताजी की जन्म भूमि है। भादौं की पून्यौ खिली भई ही चन्द्रमा की उज्ज्वल चाँदनी रात में महात्माजी के ह्दय में रासविलास देखिवे की प्रवल उत्कंठा उदय भई, वे बिरह में डूववे लगे तब श्री राधाकृष्ण नैं प्रकट हैकै अपने मुकट और चन्द्रिका कूँ नव किशोर ब्रजवासी ब्राह्मण वालकन के शिर पै धारन करायौ, सवरौ सिंगार श्रीठाकुर जी के अनुरूप धारन करायकैं रासलीला कौ सुख प्राप्त करौ या दर्शन ते तुम्हैं प्रत्यक्ष रास रसानुभूति कौ आनन्द मिलैगौ।

प्रारम्भ में श्रीघमण्ड देवाचार्य जी कौ करहला गाँव के ई दो ब्राह्मण उदयकरन और खेमकरन के सहयोग ते रासलीलानुकरण सर्वथा सफल भयौ। जे रासलीलानुकरण बड़ौई लोकप्रिय सिद्ध भयौ। अनेक भावुक भक्त बड़े प्रभावित भये हते। जे रासलीला भावना पै शंका करीवे वारे शंकालु जनन क्रू चमत्कारी सिद्ध भयी।

औरंगजेब के शासनकाल की बात है कै उदय करन के सुपुत्र विक्रम जी श्रीकृष्ण के स्वरूप बनते हते। वे बड़ेई मनहरन औरु प्रभावशाली हते। एक दिना काऊ धनाढ्य भक्त के यहाँ बड़े धूमधाम ते लीला कौ आयोजन रखौ गयौ हतौ। वा धनी भक्त नैं श्रीराधाकृष्ण के स्वरूपन कौ जवाहरात कौ सिंगार धारन करायौ। जरी की पोशाक आदि के वैभव की चर्चा सुनिकैं कोई चन्दा डाकूनाम कौ लुटेरौ आयौ। भीड़

तौ भय के मारे भाजिवे लगी परन्तु श्रीकृष्ण के स्वरूप साजे विक्रम जी नें मौकौ पाइ या डाकू की नाक पै एक टिल्ल जमाय दियौ जाते वो डाकू पछार खाइ गिर पर्यौ। वाके साथी संगी हूँ भाजि गये। जा चमत्कारै देखि कैं सवई दर्शक जै-जै कार करिवे लगे। जव डाकू कूँ हौस आयौ तौ यु डाकूपनौ छोड़ि कैं श्री ठाकुर जी कौ भक्त है गयौ।

जब जि घटना लोक प्रसिद्ध है गई तौ और हू रास मंडली वनिवे लगीं और विन में मर्यादा के अनरूप औरु विपरीत आचरन हू हैवे लगे। जा वात की सिकायत जयपुर के महाराजा जयसिंह जी तै हू करी गई। वा समैं व्रज में माँट गाँव तक जयपुर स्टेट हती। जयपुर राज घराने के अनेक मन्दिर और ध्वन्सावशेष आज हू-मिलें हैं। राजा नें सिकायतन के आधार पै इन रासलीला स्वरूपन की परीक्षा लैवे के ताँईं एक विशाल चौंतरा 18 हाथ उँचौ वनवायौ वापै सिंहासन लगवाय कैं कही कि आज रासलीला याई चौंतरा के ऊपर होयगी। याहै देखिकैं मण्डली के स्वामी तौ अपयश के भयते सिंगार घर में रोइवे लगे तौ विनके नाती (पौत्र) जो कृष्ण कौ सिंगार धारण करें हते अपने वावाते वोले 'वावा चिन्ता मत करौ आजुलीला चौंतरा के ऊपर ई होइगी ।'

राजा नैं ऊ अपने नौकर चाकर मण्डली ते स्वरूप वुलाइवे भेज दिये तौ कृष्ण कौ सिंगार धरैं कृष्ण भावावेश में भरे ठाकुर जी नें नौकरन ते कही तुम सव तौ आए परन्तु रास देखिवे राजाजी च्यौं नहीं आए, उन्हें बुलाऔ। जब महाराजा जयसिंह जी आए तौ वुई कृष्ण स्वरूप साजे वालक नें एक ठट्टा लगायौ और 18 हाथ ऊँचे चौंतरा पैं बने सिंहासन पै जाय कै विराज गए। चारौं ओर ते जै हो जै हो की धुनि [illegible] श्रीराधा [illegible]

हे श्रीकिशोरीजू आप ऐसै मति चढ़ौ वु तौ नन्द का लाला गैयान को ग्वाला है यु तौ [illegible] जानै है परन्तु आप राजराजेश्वरी परम सुकुमारनी हैं। आप या दास की सेवा स्वीकार करौ मेरे कन्धान पै विराजौ। मैं आपकी सवारी हूँ। मैं सिंहासनतक पहुँचाउँगौ। जा समैं राजा के कन्धन पै श्रीकिशोरी जी विराजी तौ राजा की आँखिन ते अश्रुधार वहिवे लगी। वृन्दावन में चीर घाट के समीप वाई ठौर जयसिंह घेरा के नाम ते प्रसिद्ध आजऊँ रास मण्डलीन के संचालक गंगोली स्वामी, किशन लालजी, मोहनस्वामी, घोथा स्वामी, व्रजलाल वौहरे, दामोदर स्वामी, घनश्याम दीक्षित, चेतराम विपिन, कुंजविहारी, श्रीराम फतहकृष्ण, फत्तेमोहन लाल, फतेचिकसौली आदि की मंडली लीला करती रहीं। आजकल्ह स्वामी श्रीहरिगोविन्द श्रीरामस्वरुप, श्रीदेवकीनन्दन स्वामी श्रीश्यामकिशोर आदि की मंडली वड़ी प्रसिद्ध हैं।

रासलीला कौ लोक मंच बड़े ते वडे और छोटे ते छोटे रूप में वनि जाय है। पन्द्रह वीस लोग याकौ संचालन करि लैंय हैं। या रासलीला देखिवे में एक समभाव होय है। या रासलीला लोक मंच की लीला औरु नृत्य कूँ देखिकैं बड़े कलाकार और छोटे नौसिखिया तमाशबीन, भक्त-अभक्त, पुरुष-स्त्री, देशी-विदेशी, व्रजभाषा ज्ञाता-अग्याता, आस्तिक-नास्तिक, भोगी-संगी सब ही मगन है प्रेम रस विभोर होते रहैं हैं।

गोकुल कौ लोकमंच

-श्री आनन्द वल्लभ शर्मा 'सरोज'

गोकुल ब्रजराज श्री कृष्ण कौ लीलास्थल रह्यौ है। जो स्थान अहर्निशि कृष्ण कन्हैया की लीलान में रच्यौ-पच्यौ रह्यौ होय, जो भूमि छछिया भर छाछ पै परब्रह्म कूँ अपने ऊपर नचाती रही होय, जहाँ वंशी की मादक स्वर लहरी चतुर्दिक व्याप्त होती रही होय, म्हां प्रतिपल-प्रतिक्षण कैसी रसवर्षा होती रही होइगी याकौ सहज अनुमान लगायौ जाय सकै। गोकुल के ब्रजजन रसावतार श्री कृष्ण के बाल सखा रहे हैं। चोरी-होरी में ग्वाल बाल कृष्ण के संग रहे, तौ दान-मान रास-विलास में ब्रजांगना विनकी सहभागिनी रहीं। या प्रकार यमुनातट वर्तीया मुक्ताकाशी मंच पै त्रिलोकी कौ अद्‌भुत अभिनेता अपनी बहुरंगी कलान कौ प्रदर्शन करतौ रह्यौ है। सम्पूर्ण गोकुल वाकौ रंगमंच हौ। यहाँ भयौ कन्हैया कौ नित्य विहार, जाके बिसै में श्री हित हरिवंस नैं कह्यौ ही है कैः-

चंद टरै सूरज टरै टरै जगत व्यौहार
दृढ़ व्रत हित हरिबंस कौ टरै न नित्य विहार

तौ यहां लीला के विराम कौ तौ प्रश्न ही नाँय। तब ही तौ भक्त रसखान नैं हूँ यही कामना करी कै 'मानुष हौं तौ वही रसखानि वसौं-ब्रज गोकुल गाम के ग्वारन'।

अस्तु-कालान्तर में जब काल के थपेरन ते ध्वस्त हैकैं गोकुल भू-गर्भ में विलीन है गयौ तो महाप्रभु बल्लभाचार्य के अन्वेषण के पश्चात ये पुनः प्रकाश में आयौ। याकूँ पुष्टिमार्ग के उदगम स्थल की मान्यता प्राप्त भई। श्री वल्लभ के आत्मज यशस्वी धर्माचार्य श्रीमद् विट्ठल नाथ गुसाँई जी नैं यहाँ विधिवत बस्ती बसायकैं प्रभु की वैभवमयी सेवा कौ सूत्रपात कियौ। अतः या सेवाविधि में राग-भोग तथा श्रृंगार की प्रधानता रही गुसाँई जी नैं यामें सबही ललित कलान कौ समावेश करकैं याकूँ औरहू चित्ताकर्षक बनाय दियौ। परिणामतः यहाँ साहित्य, संगीत कला की तरल त्रिवेणी वहि चली। यह वातावरण लोकोन्मुखी हैकैं मन्दिरन ते बाहर निकस कैं लोक में हू आयौ और गोकुल समग्र रूप में एक अभिनव रंगशाला के समान है गयौ जाके विभिन्न रंग आज लौं यहाँ के लोकजीवन में विखरते रहे हैं जिनपै प्रकास डारनौ ही या लेख कौ अभीष्ट है।

जैसौ कै ऊपर उल्लेख कियौ जाय चुकौ है गुसाई जी स्वयं संगीत के मर्मज्ञ हे। अत: उनके पास गोविन्दी नामक गायिका तथा गोकुलिया और कृष्ण दास नाम के नर्तक सदैव रहे आते । यहाँ गोकुलिया ते सम्बन्धित एक घटना कौ उल्लेख आवश्यक है। याते श्री गुसाँई जी की भाव प्रवणता, और गोकुलिया की उत्कृष्ट गायन-नर्तन शैली कौ द्योतन होय है। एक समय श्री गुसाँई जी गोकुल के समीप श्री राधाजी की जन्मस्थली 'रावल' ग्राम में दर्शनार्थ गए। विनके संग गोकुलिया हू गयौ। वहाँ गोकुलिया नें 'चलरी मिलिबौ मदन गुपालै ' पद गायकें भाव-नृत्य प्रस्तुत कियौ। वाहि देखि सुनिकें गुसाँई जी इतने प्रसन्न भए कै अपनौ पीताम्बर वाकूँ उढ़ाय दियौ। उल्लेख है के - खवास के हाथ में माखी निवारण कौ पीताम्बर हतौ सौ वाको उढ़ाय दियौ। एक समय वाके मुख ते हरि तेरी लीला की सुधि आवै' पद सुनिकें श्री गुसाँई जी भाव विह्वल हैकें बेसुध है गए। यहां लोक ते जुड़वे के क्रम में श्री गुसाँई जी के व्रजभाषा प्रेम कौ हू उल्लेख करनौं आवश्यक है। श्रीमती सुवोधिनी तैलंग के अनुसार- '' भगवान कौ स्वरूप वैदिक है या कारण श्री विट्ठलनाथ जी नें संस्कृत कौ महत्व यथावत राख्यौ किन्तु लीलास्वरूप की लौकिक भाषा कौ महत्व आप कैसें भुलाय सकते। विनकी मान्यता ही कै ब्रज भाषा कौ सम्बन्ध विनके इष्ट देव श्री कृष्ण सौं है और जब पुरुषोत्तम श्री कृष्ण वाहि अंगीकार कर चुके तौ विनकी अंगीकृत भाषा कौ अनुराग कैसें छोड़ौ जाय सकै। याही ते उननें ब्रज भाषा कूँ 'पुरुषोत्तम भाषा' नाम सौं अभिहित कियौ।'' गुसाँई जी 'सहज प्रीति' और ललितादि छाप ते स्वयं रचना कियौ करते । अष्ट छाप की स्थापना और ब्रज भाषा में लिखे विनके पत्र विनके ब्रज भाषानुराग के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

विषयान्तर कौ ध्यान रखते भए हम यहाँ यही कहनौं चाहें कैं गुसाँई जी प्रवर्तित परम्परा के अनुरूप यहाँ के पुष्टिमार्गीय देवालयन में उत्सव के अनुरूप विभिन्न प्रकार की झाँकीन कौ और लीलान कौ प्रदर्शन आज लौं होतौ चलौ आय रह्यौ है। जन्माष्टमी के दूसरे दिना नन्द महोत्सव की वेला में मन्दिरन के मुखिया जी और अन्य सेवकगण नन्द-जसोदा और गोप-ग्वालन कौ वेष धारण करकें 'दधि काँदौ' के प्रदर्शन में सम्मिलित होंय हैं। दर्शनार्थीन पै हरदी और दूध मिश्रित दही छिड़कते भए 'नन्द के आनन्द भए जै कन्हैया लाल की, ज्वानन कूँ हाथी घोड़ा बूढ़ेन कूँ पालकी' कौ महाघोष करकें हर्षोल्लास प्रकट करैं हैं।' आगामी दिनन में ढाढ़ी लीला और महादेव लीला कौऊ प्रदर्शन होय है। प्राचीन समय में मन्दिरन के अतिरिक्त गोकुल के ठकुरानी घाट पै कीर्तनकारन के पृथक- पृथक दल सखा और सखीन के यूथन के रूप में घाटन के अलग-अलग बुर्जन पै बैठकें अष्टछाप रचित दान लीला के सम्वादन कौ प्रश्नोत्तर रूप में गायन करते और यमुना तट पै बैठे श्रोता समूह कूँ अपार आनन्द की अनुभूति होती। समय-समय पै गुजराती भक्त समुदाय कौ 'गरबा नृत्य' हू दर्शकन कौ चित्त आकर्षित करतौ। होरी के अवसर पै जब ठाकुर जी फाग खेलवे कूँ अपने बगीचा या घाट पै पधारते तौ ब्रजवासीन की चौपाई नाचते-गाते ठाकुर जी की राजसी सवारी के संग चलती।

फागुन के महीना में गोकुल के चौबीस मन्दिरन में ठाकुर जी के सामैं विभिन्न प्रकार के, स्वांग बनायकें नचाये जाते। घोर श्रृंगारपरक रसियन कौ गायन हू पुराने कीर्तनकारन कूँ करते भए हमनें सुन्यौ।

जादा समय नाँय बीतौ जब गोकुलनाथ जी के मन्दिर में फागुन के दिनान में 'नट लीला' और 'जोगी-मनिहार लीला' के भव्य प्रदर्शन होते हे। नटलीला में नट विद्या के अद्‌भुत चमत्कार दिखाए जाते। याही प्रकार ते जोगी-मनिहार लीला' कौ अपनों अलग इतिहास है। इन लीलान कौ आरम्भ, लेखन, मंचन मन्दिर के तत्कालीन पीठाधीश्वर रसिकाचार्य गुरु कन्हैयालाल महाराज नैं कियौ। इन लीलान की हस्तलिखित पुस्तक मन्दिर श्री गोकुलनाथ जी में विद्यमान है। महाराज श्री काशी कवि समाज के संस्थापक, कविकुल शिरोमणि, कुशल अभिनेता, दानवीर जैसे अनेक गुणन ते सम्पन्न हे। इनके समय में गोकुल में डंडे शाही कौ हू आयोजन होतौ। मकर संक्रान्ति के अवसर पै आप स्वयं 'बिसुन देवा' बनकैं 'हर गंगा' की तुक पै अद्‌भुत रचना सुनायौ करते। आपके द्वारा रचित मनिहार उर्फ मनहरन लीला के सब पात्र लोक ते जुड़े भए हैं जिनमें दर्दबाज, इश्कबाज, लौंडेबाज, रंडीबाज, पतंगबाज, नजरबाज, तथा आतिशबाज जैसे पात्र सामिल हैं। जोगी-मनिहार कौ एक अंश यहाँ प्रस्तुत है यामें शाहजादी और मनिहार के रोचक संवाद दृष्टव्य हैं:-

दिल्ली की शहजादी का आना (जुबानी)
अहा ! हा ! आबे हयात बागे इश्क के
पाव दरख्त का फूल
जी जाये इस मरज से जिसे दम में दम नहीं
बोसा मेरा इलाजे मसीहा से कम नहीं

और फिर- जोबन पै आई बहार, बहार मोरे राजा.........
याही प्रकार ते मनिहार अपनौ परिचय देय है -

मैं ठट्ट शहर से आया- मनहारा रूप बनाया
मैं जोबन दा व्यापारी- कोठ चुरियाँ लेउ हमारी
ये छन्द निराला गाया- सब गुनियन के मन भाया

ऐसैं ही-'घट छाँड़ौ सँवरिया भरूँ गगरी' और 'करके कोई बहाना-सनम मेरे- कूँचे में आना-गली गली चपरासी डोले- बीच में पड़ गया थाना' या लीला की छन्द रचना के अन्य उदाहरण हैं। भाषा देश- और पात्रन के अनुरूप है।

'जोगी लीला' उर्फ योगाभ्यास कौ आरम्भ आदेश वाला लछमन जती ते होय है। या लीला में हू खटीक, धोबी, चमार और कुम्हार जैसे पात्र हैं। एक छन्द कौ नमूना प्रस्तुत है:-

खटीकरा ने चलनी तोरी बिगारी
चलनी भी तोरी घेरा भी तोरा टूक-टूक कर डारी

जैसौं कै हम निवेदन कर चुके हैं समय के अन्तराल और काल के प्रभाव ते आगें चलकैं ऐसी

ही लीला मन्दिरन की परिधि ते बाहर निकरकैंकछू परिवर्तित रूप में जन मंच की अंग बनी। भदुआ भगत कौ उदय हू स्यात ऐसी ही लीलान ते भयौ। हमने गोकुल के बुजुर्गन ते जो कछू सुन्यौ तदनुसार इन लीलान की गोकुल में कोई विधिवत मंच नाँय बनायौ जातौ। बाजार में लीला होती, स्वांग बनते, लीला स्थल पै चार कौनेन पै चार मसालची मसाल लैंकैं ठाड़े रहते। बड़े दिलचस्प और सच्चे किस्सा हैं इन लीलान के । गोकुल में पन्ना लाल कोठी वारे एक ऐसे सज्जन भए हैं जो अपनी विनोदी प्रकृति के कारण विख्यात हे। जे छै सौ छप्पन तर्ज पै स्वाँग दिखायवे कौ दावा करते। पहलें जे गनपतिया बन कैं घर में ते ही नाचते भए निकरकैं – बीच चौक में आय जाते। साजिन्दा 'गनपतिया' गायबौ शुरू करते और कोठी वारे पूरे बाजार में नाचते-नाचते बगीची-अखाड़े पै निकर जाते। गायवे वारे जब थक कें बिनकूँ लौटायवे कूँ आदमी भेजते तौ पतौ चलतौ कै बू तौ बगीची में डण्ड पेल रहे हैं। वे पुनः गनपतिया के वेष में ही नाचते भए लौटते। गोकुल के ही बीच चौक में श्री गुसँन पहलवान भए। जिन्नें [illegible] और महादेव लीला आदि स्वांगन की रचना करी और होरी के घोर शृंगारात्मक गीत लिखे।

आज ते दस-बारह बरस पहलें तक गोकुल में होरी के पीछें 'बामौड़े' की रात कूँ [illegible] चौपाई निकरती रही। होरी "धुलैंडी" के दिन गोली चौपाई अब भी निकरै है। [illegible] चौपाई में [illegible] ही जनाने स्वाँग बनते। यहीं के साजिन्दा रहते। हर गली-मौहल्ला और बाजार में [illegible] चौपाई निकरती, रूकती और नाँच-गानौ होतौ। चौपाई के चलते समय [illegible] चलतौ। रावलिया नामक एक पात्र याकें विशेष रूप ते सुसज्जित [illegible] के दुपट्टन कूँ धारण करतौ। माथे पै चमकीले कागज ते बनौ [illegible] और हाथ में मूसर लैंकें चलतौ। चौपाई के स्थान विशेष पै रुकवे के [illegible] हास-परिहासमयी पंक्तिन कूँ बुलन्द आवाज में नगाड़े की [illegible]। [illegible] की काहू व्यक्ति विशेष की गृहिणी पै कटाक्ष होतौ –यथा–

की भापा ते याकौ खुलासा होय है जो या प्रकार है –

श्री मद् गोकुलाधीशाय.नमः

स्थान (श्री गोकुल ठकुरानी गोविंद घाट श्री महाप्रभू जी की बैठक के अगाड़ी रेती में)

प्रघट हो कि यह चरित्र जिसमें सारासार नीति वेदान्त बोधक साहित्य शब्द चुने गये हैं इसका आनन्द केवल देखने से अच्छे प्रकार प्राप्त हो सकता है नकि सुनने से। मित्र मण्डली गोस्वामी श्री पुरुषोत्तम लाल जी महाराज ग्रामाधीश के चरणाश्रय से इस चरित्र का प्रारम्भ किया।

खुलासा

साहुकार जादे का परदेस जाना, धन दौलत कमाकर वापस आना, रास्ते में बहन के घर ठहरना, बहन को लोभ आना, उसको पति का समझाना, कठोर हृदय होना, धन का लेना, भाई को मारना, स्वप्न होना, बहन को यथोचित दण्ड मिलना। महादेव जी पार्वती का कृपा करना, साहूकार को जिलाना। सिवाय इसके हास्य प्रहसन और अदभुत स्वाँग जिनके देखन से आनन्द और आश्चर्य होगा। कोई समय ऐसा होगा कि देखने वालों को हँसते–हँसते प्रातःकाल ही बजाजों का ग्राहक होना पड़े। *** देखने वालों को हर्ष और न देखने वालों को पश्चाताप शेष रहेगा। पश्यति पश्यति पश्यति ॥

सज्जन जन सौं वीनती, करूँ युगल कर जोर।
तिय चरित्र रचना रची, यथा शक्ति मति मोर॥

मिती ज्येष्ठ सुदी 10 शुक्रवार से शुरू होगा 3 दिन तक 22 जून से 23 तक इस स्वाँग के कर्ता पण्डित वासदेव सारस्वत ब्राम्हण निवासी गोकुल।

प्राचीन समय में ही गोकुल में सुप्रसिद्ध भगत भई 'राजा चाँप' । कह्यौ जाय है कै याकौ प्रदर्शन लगातार छह दिनान तक भयौ। याके रचयिता उस्ताद कन्हैया लाल हे जो पूर्वोक्त कन्हैया लाल जी महाराज से पृथक हे। यामें सब पात्र स्थानीय हे। हमनें या भगत कौ मुद्रित आलेख देख्यौ है। याकौ प्रारम्भ 'रागनी' ते भयौ है –

दिल्ली में तप धारी रे अकबर भयौ भारी
अकबर नाम बादशा पायौ
जग में अपनौं सुयश बढ़ायौ
देस–देस के राजा जीते लाग्यौ कर सरकारी रे

यामें राजा चाँप, महारानी, बादशाह अकबर, शेर बेग और पहाड़ सिंह आदि पात्रन के माध्यम ते कथानक कूँ आगें बढ़ायौ गयौ है। रचनाकाल संवत 1971 वि. है। छन्दन में चौबोलान की अधिकता है। इनके अतिरिक्त लावनी, रेखता, कव्वाली, बहर तवील, छन्द और गजल कौ हू प्रयोग कियौ गयौ

है।

अन्य भगत संवत् 1973 में गोकुल के बीच चौंक में भई। याकौ नाम हौ रामचरित्र उर्फ सि स्वयम्वर। रचनाकार हे स्व. श्री नवनीत जी। याकौ प्रदर्शन चार दिनान तक भयौ। 180 छन्दन में नि या साँगीत के सम्वाद मानस की चौपाईन कौ छायानुवाद प्रतीत होय है। याकी पुस्तक हू मैनपुरी में ए है जो हमनैं देखी।

उपर्युक्त संवत के आसपास ही तीसरी भगत गोकुल के ख्यातिप्राप्त रईस श्री रमन लाल जी मंचित कराई। याकौ नाम नट-चरित्र हौ। याकी रचना स्व. मुंशी करीम बख्श नें करी। याकौ आले हमें सुलभ नहीं भयौ।

या प्रकार ते स्वाँग प्रदर्शन कौ सिलसिला गोकुल में आज ते बीस बरस पहले तक निरन्तर चल रह्यौ है। भगत गायकी के प्रशिक्षण में यहाँ के 'जय देव गढ़ अखाड़े' की प्रमुख भूमिका रही है। उस्ता राधाकृष्ण जी, स्व. उस्ताद बिहारीलाल जी, और उनके परिकर में स्व. उस्ताद श्याम लाल, सर्व कालूरामजी, वल्लभजी, गोपालजी (सबस्वर्गीय) पुन: 'ब्रज कोकिल' नाम सौं विख्यात श्री हरीचा जगदीश जी मुखिया जैसे रससिद्ध कलाकार अहर्निशि बैठक जमायकें नवोदित कलाकारन कूँ प्रशिक्ष देते। स्वयं हू अभ्यास करते। ये सब हवेलीसंगीत के हू मर्मज्ञ हे। ठकुरानी घाट के समीप यमुना त पै अखाड़े कौ भवन स्थित हो, आज भी है। अत: यहाँ हैकैं अन्य प्रान्तन के यात्रीगण हू गुजरते। गा गम्मत होती देखकैं बिन में यदि कोई संगीत प्रेमी होतौ हो तौ वो भी क्षण भर कूँ यहाँ आय बैठतौ, गातौ बजातौ। या प्रकारते सांगीतिक आदान-प्रदान होंतौ। नयी-नयी 'चीज' सुनवे कूँ मिलतीं।

बाल्यकाल में हमारे पिताश्री हमकूँ या अखाड़े पै संगीत श्रवण करायवे के निमित्त लै जाते हम श्रवण रस लेते। बड़े भए तौ हमने हूं यहाँ की शिष्यता ग्रहण करी। या समय तक गोकुल में स्वलिखि सांगीतन की परम्परा समाप्त है चुकी ही किन्तु प्रतिवर्ष शरदपूर्णिमा की रात्रि कूँ अखाड़े के कलाका स्वर्गीय नथाराम गौड़ लिखित स्वाँगन कौ मंचन करते। हमनें सर्व प्रथम ध्रुव चरित्र में रानी सुनीति औ तत्पश्चात पूरनमल में अम्बादे, स्याह पोश में स्याह पोश की जनानी भूमिका निभाई। उस्ताद राधाकृष्ण जी संगीत सिखाते, स्व. उस्ताद बिहारीलाल जी अखाड़े की सम्पूर्ण व्यवस्था संभारते, बिछायत करानों साजन कूँ वाद्य यंत्रन कूँ यथास्थान रखवानौं, पात्रन कूँ हाव भाव सिखानौं, सन्ध्या समय अपनी ओं ते सभी पात्रन कूँ हलवाई की दुकान पै दूध पिवानौं, बिनकूँ अपने-अपने घर रात कूँ पोहोंचानौं ! प्रदर्श के दिनन में महफिल की और स्वाँगन की सम्पूर्ण साज-सज्जा कौ प्रबन्ध स्वयं करनौं, बिनकी या विध में गम्भीर रुचि कौ परिचायक हौ। वे सर्वतोभावेन याकूँ समर्पित हे। नथारामजी के और कानपुर के श्रीकृष्ण पहलवान के अनेक स्वाँगन की पुस्तक उनके द्वारा लाई जायकें उनके घर और अखाड़े पै मौजूद रहतीं। सीन सीनरी के निर्माण में आप सिध्द हस्त हे। मोरध्वज पै चलते भए आरे और बाके शरीर में ते छूटते खून के फव्वारेन कौ दृश्य हमनें भक्त मोरध्वज भगत में अपनी आँखिन सौं बचपन में देख्यौ हो। याकौ याद आज हू ताजा है। ये उस्ताद बिहारी लालजी की ही करामात ही।

की भाषा ते याकौ खुलासा होय है जो या प्रकार है –

श्री मद् गोकुलाधीशाय. नमः

स्थान (श्री गोकुल ठकुरानी गोविंद घाट श्री महाप्रभू जी की बैठक के अगाड़ी रेती में)

प्रघट हो कि यह चरित्र जिसमें सारासार नीति वेदान्त बोधक साहित्य शब्द चुने गये हैं इसका आनन्द केवल देखने से अच्छे प्रकार प्राप्त हो सकता है नकि सुनने से। मित्र मण्डली गोस्वामी श्री पुरुषोत्तम लाल जी महाराज ग्रामाधीश के चरणाश्रय से इस चरित्र का प्रारम्भ किया।

खुलासा

साहुकार जादे का परदेस जाना, धन दौलत कमाकर वापस आना, रास्ते में बहन के घर ठहरना, बहन को लोभ आना, उसको पति का समझाना, कठोर हृदय होना, धन का लेना, भाई को मारना, स्वप्न होना, बहन को यथोचित दण्ड मिलना। महादेव जी पार्वती का कृपा करना, साहूकार को जिलाना। सिवाय इसके हास्य प्रहसन और अदभुत स्वाँग जिनके देखन से आनन्द और आश्चर्य होगा। कोई समय ऐसा होगा कि देखने वालों को हँसते-हँसते प्रात:काल ही बजाजों का ग्राहक होना पड़े। *** देखने वालों को हर्ष और न देखने वालों को पश्चाताप शेष रहेगा। पश्यति पश्यति पश्यति ॥

सज्जन जन सौं वीनती, करूँ युगल कर जोर।
तिय चरित्र रचना रची, यथा शक्ति मति मोर॥

मिती ज्येष्ठ सुदी 10 शुक्रवार से शुरू होगा 3 दिन तक 22 जून से 23 तक इस स्वाँग के कर्ता पण्डित वासदेव सारस्वत ब्राम्हण निवासी गोकुल।

प्राचीन समय में ही गोकुल में सुप्रसिद्ध भगत भई 'राजा चाँप'। कह्यौ जाय है कै याकौ प्रदर्शन लगातार छह दिनान तक भयौ। याके रचयिता उस्ताद कन्हैया लाल हे जो पूर्वोक्त कन्हैया लाल जी महाराज से पृथक हे। यामें सब पात्र स्थानीय हे। हमनें या भगत कौ मुद्रित आलेख देख्यौ है। याकौ प्रारम्भ 'रागनी' ते भयौ है –

दिल्ली में तप धारी रे अकबर भयौ भारी
अकबर नाम बादशा पायौ
जग में अपनौं सुयश बढ़ायौ
देस-देस के राजा जीते लाग्यौ कर सरकारी रे

यामें राजा चाँप, महारानी, बादशाह अकबर, शेर बेग और पहाड़ सिंह आदि पात्रन के माध्यम ते कथानक कूँ आगें बढ़ायौ गयौ है। रचनाकाल संवत 1971 वि. है। छन्दन में चौबोलान की अधिकता है। इनके अतिरिक्त लावनी, रेखता, कव्वाली, बहर तवील, छन्द और गजल कौ हू प्रयोग कियौ गयौ

है।

अन्य भगत संवत् 1973 में गोकुल के बीच चौक में भई। याकौ नाम हौ रामचरित्र उर्फ सिया स्वयम्वर। रचनाकार है स्व. श्री नवनीत जी। याकौ प्रदर्शन चार दिनान तक भयौ। 180 छन्दन में निबद्ध या साँगीत के सम्वाद मानस की चौपाईन कौ छायानुवाद प्रतीत होय है। याकी पुस्तक हू मैनपुरी में छपी है जो हमनैं देखी।

उपर्युक्त संवत के आसपास ही तीसरी भगत गोकुल के ख्यातिप्राप्त रईस श्री रमन लाल जी नैं मंचित कराई। याकौ नाम नट-चरित्र हौ। याकी रचना स्व. मुंशी करीम बख्श नैं करी। याकौ आलेख हमें सुलभ नहीं भयौ।

या प्रकार ते स्वाँग प्रदर्शन कौ सिलसिला गोकुल में आज ते बीस बरस पहले तक निरन्तर चलतौ रह्यौ है। भगत गायकी के प्रशिक्षण में यहाँ के 'जय देव गढ़ अखाड़े' की प्रमुख भूमिका रही है। उस्ताद राधाकृष्ण जी, स्व. उस्ताद बिहारीलाल जी, और उनके परिकर में स्व. उस्ताद श्याम लाल, सर्व श्री कालूरामजी, वल्लभजी, गोपालजी (सबस्वर्गीय) पुन: 'ब्रज कोकिल' नाम सौं विख्यात श्री हरीबाबू, जगदीश जी मुखिया जैसे रससिद्ध कलाकार अहर्निशि बैठक जमायकें नवोदित कलाकारन कूँ प्रशिक्षन देते। स्वयं हू अभ्यास करते। ये सब हवेलीसंगीत के हू मर्मज्ञ हे। ठकुरानी घाट के समीप यमुना तट पै अखाड़े कौ भवन स्थित हौ, आज भी है। अत: यहाँ हैकें अन्य प्रान्तन के यात्रीगण हू गुजरते। गान गम्मत होती देखकैं बिन में यदि कोई संगीत प्रेमी होतौ हो तौ वो भी क्षण भर कूँ यहाँ आय बैठतौ, गातौ-बजातौ। या प्रकारते सांगीतिक आदान-प्रदान होतौ। नयी-नयी 'चीज' सुनबे कूँ मिलतीं।

बाल्यकाल में हमारे पिताश्री हमकूँ या अखाड़े पै संगीत श्रवण करायबे के निमित लै जाते। हम श्रवण रस लेते। बड़े भए तौ हमने हूँ यहाँ की शिष्यता ग्रहण करी। या समय तक गोकुल में स्वलिखित सांगीतन की परम्परा समाप्त है चुकी ही किन्तु प्रतिवर्ष शरदपूर्णिमा की रात्रि कूँ अखाड़े के कलाकार स्वर्गीय नथाराम गौड़ लिखित स्वाँगन कौ मंचन करते। हमनें सर्व प्रथम ध्रुव चरित्र में रानी सुनीति और तत्पश्चात पूरनमल में अम्बादे, स्याह पोश में स्याह पोश की जनानी भूमिका निभाई। उस्ताद राधाकृष्ण जी संगीत सिखाते, स्व. उस्ताद बिहारीलाल जी अखाड़े की सम्पूर्ण व्यवस्था संभारते, बिछायत करानौं, साजन कूँ वाद्य यंत्रन कूँ यथास्थान रखवानौं, पात्रन कूँ हाव भाव सिखानौं, सन्ध्या समय अपनी ओर ते सभी पात्रन कूँ हलवाई की दुकान पै दूध पिवानौं, बिनकूँ अपने-अपने घर रात कूँ पोंहचानौं ! प्रदर्शन के दिनन में महफिल की और स्वाँगन की सम्पूर्ण साज-सज्जा कौ प्रबन्ध स्वयं करनौं, बिनकी या विधा में गम्भीर रुचि कौ परिचायक हौ। वे सर्वतोभावेन याकूँ समर्पित हे। नथारामजी के और कानपुर के श्रीकृष्ण पहलवान के अनेक स्वाँगन की पुस्तक उनके द्वारा लाई जायकैं उनके घर और अखाड़े पै मौजूद रहतीं। सीन सीनरी के निर्माण में आप सिध्द हस्त हे। मोरध्वज पै चलते भए आरे और बाके शरीर में ते छूटते खून के फव्वारेन कौ दृश्य हमनें भक्त मोरध्वज भगत में अपनी आँखिन सौं बचपन में देख्यौ हो। याकौ याद आज हू ताजा है। ये उस्ताद बिहारी लालजी की ही करामात ही।

कालान्तर में उपर्युक्त कलाकारन नैं अपनी-अपनी परिस्थितिवश आजीविका हेतु गोकुल ते बाहर जायवौ- रहिवौ सुरू कियौ तौ अखाड़े कौ प्राचीन स्वरूप खण्डित सौ है गयौ। तब इन पंक्तीन के लेखक नैं गोकुल में नवयुवक संगीत मण्डल स्थापित कियौ। स्वयं स्वाँग लिखवे की परम्परा पुनः चालू भई। या लेखक नैं चन्दहास, जयद्रथवध, भीष्म प्रतिज्ञा, जरासंध वध, रुक्मणी हरण और दक्ष यज्ञ विध्वंस जैसे धार्मिक कथानकन की रचना भगत शैली में स्थानीय जनता की रुचि के अनुकूल करी। उन में अभिनय कियौ, उनकौ मंचन तथा निर्देशन कियौ। दूसरी तरफ श्री केशव देव जी अखाड़े के ही एक वरिष्ठ कलाकार रहे। विननैं अखाड़े की तरफ ते स्वाँग लिखकैं उनकौ मंचन स्थानीय कलाकारन ते ही करायवे कौ व्रत निभायौ। याके विपरीत नवयुवक संगीत मण्डल के स्वाँगन में स्थानीय कलाकारन के संग-संग भगत के ख्यातिप्राप्त कलाकार स्व. मास्टर मनोहरलाल, मास्टर गिरिराज जी, श्रीअमरनाथ, लच्छोजी, श्री रामदयाल, रामसिंह जी और भूरेश आदि नैं ऊ अभिनय कियौ। इन स्वाँगन में यहाँ के अखाड़े की प्राचीन परम्परानुसार पूर्वाभ्यास के आरम्भ और स्वाँग के आरम्भ ते पूर्व भगवती कौ 'थापौ' धर्यौ जातौ। पूरी रात देवी की जोत जरती और पण्डित जी 'दुर्गा सप्तशती' कौ पाठ करते। ज्वाला मनाय कैं सब पात्र स्टेज पै चढ़ते। तात्पर्य ये है कि एक समय हौ जब गोकुल के बच्चा ते लैकैंबूढ़ेन तक की जबान पै कोई न कोई चौबोला या बहरतवील जरूर चढ़े रहते।

यहाँ नाटक खेलवे कौ हू भारी व्यसन रह्यौ है। स्व. कविवर 'देवी द्विज' नैं यहाँ 'गोकुल प्रकाश थियेट्रिकल कम्पनी' बनाई और देश के अनेक सहरन और रजवाड़ेन में अपने नाट्य प्रदर्शनन ते गोकुल कौ नाम रोशन कियौ। हमनैं कम्पनी के नाटक तौ नाँय देखे किन्तु स्व. द्विज जी ते अनेक नाटकन के सम्वाद अवश्य सुने और कम्पनी के अवशिष्ट पर्दान कौ उपयोग हू अपने स्वाँगन में समय-समय पै कियौ। बौहोत दिनान तक नाटक के क्षेत्र में शून्यता के पश्चात् उपर्युक्त श्री केशव देव जी नैं पुनः हमारे समय में यहाँ 'प्रेमानन्द क्लब' की स्थापना करी और भरत मिलाप के अवसर पै पं. राधेश्यामजी कथावाचक, अन्य लेखकन के सामाजिक, धार्मिक और राष्ट्रीय नाटक खेले। आज तौ इनकौ सिलसिला समाप्त प्रायः है।

अन्त में यहाँ गोकुल की रामलीला कौ उल्लेख हू आवश्यक है। गोकुल में मैदानी राम लीला होय है। गोकुल-महावन मार्ग के बीच में सत्यनारायण जी की बगीची के निकट रामलीला कौ मैदान बस्ती सौं थोड़ौ दूर है। यहीं बीच में पक्कौ मंच और तीन तरफ कूँ लंका, चित्रकूट और पंचवटी की भावना ते पात्रन के बैठवे के पक्के सिंहासन बने भए हैं। पात्र मैदान में घूम-घूम कैं, रुक-रुक कैं लीला-प्रदर्शन करैं हैं। रामायण के पाठकर्ता प्रसंगानुकूल संग-संग पाठ करैं हैं। आश्विन सुदी प्रतिपदा तें शुरू या लीला कौ क्रम शरद पूर्णिमा तक चलै है। भरत मिलाप और राज्याभिषेक की लीला बस्ती में ही होय है। या लीला में विभिन्न पात्रन कूँ स्वरूप के अनुसार पैंतरा खेलने पड़ें। पहले समय में राम-लक्ष्मण-हनुमान, रावण, योगिनी, भैरव आदि के पात्रन कूँ चाल-ढाल और युध्द के पैंतरा सिखाए जाते। अब हु स्वरुप इनकौ पूर्वाभ्यास करैं हैं। यहाँ स्वरूपन कौ साज-श्रृंगार देखते ही बनें है। युध्द के समय पारसी रंगमंच

की शैली के सम्वाद बोले जाएँ। गद्य सम्वाद ब्रजभाषा में होंय। या रामलीला के नारद की वेश भूषा भगत की अन्य रामलीलान के नारद ते भिन्न होय है। नारद के पात्र कूँ उच्च स्वर में मैदान के चारों तरफ बैठे-खड़े दर्शकन के बीच प्रसंगानुकूल उद्घोषणा करते रहनौ पड़ै। प्रति दिन की लीला के पूर्व नारद जी सम्पूर्ण बस्ती में घूमते भऐ वा दिन की लीला की घोषणा करते जाएँ। यथा- 'सुन लेउ भैया पुरवासियौ आज लीला में धनुष यज्ञ और लक्ष्मण परशुराम सम्वाद हौयगौ --। नारद कौ नृत्य कुशल हौनौं आवश्यक है। लीला समाप्त होते ही आरती होय। दशहरा के दिन रावण मेघनाद के पूतरा जरायवे के पश्चात आतिशबाजी होय है।

संक्षेप में यहाँ की विविध वर्णा रंग विधान यहाँ के वातावरण में समय-समय पै रस वर्षा करतौ भयौ या भूमि कूँ सरस और जीवन्त बनाएँ रखवे में अपनौ अनुपम योगदान करै है।

-सी-8, श्रीबालाजीपुरम,
डाकघर -रिफायनरी नगर, मथुरा-
(उ.प्र.)-281001.



लोकानुरंजन कौ लोकमंचः रामलीला

-डॉ. जीवन सिंह

भारत की दूसरी भासान माँहिं लिखे भए राम काव्य अरु महाकाव्यन के लोकप्रभाव की बात तौ मोय पतौ नाँय पर हिंदी माँहि महाकवि तुलसीदास-रचित 'रामचरित मानस' के लोकप्रभाव कूँ देखिकैं अचरजभरी खुशी होवै। काऊ एक व्यक्ति की रचना कौ ऐसौ जन-जन व्यापी प्रभाव शायद ई और कहीं मिलै। कारन याकौ कछू हू होय, पर है ई अचरज की बात कै भक्तिभाव सौं लिखी भई एक काव्यकृति तरह-तरह की कलान कौ माध्यम बनिकैं जन-जन कौ कंठहार बनी रहै। तुलसी कौ 'रामचरितमानस' ऐसी ई रचना है। विश्व की अनूठी रचना। यानैं कितने ई साँचे भगत हिंदी जाति कूँ दिए होइंगे। कितनेन कूँ ई जिंदगी कौ रस्ता बतायौ होयगौ। ई अलग बात है कै ऊ रास्ता जिदंगी कौ मुकम्मल अरु पूरौ रस्ता ना होय। ई बात हू सही है कै याकूँ माध्यम बनाइकैं कितने ई बगुला भगत हू पैदा भए होइंगे। पाखण्डी भक्तन की बात तुलसीदास जी खुद ऊ बहौत अच्छी तरियाँ जानते । बिनकी सच्चाई कौ बरनन बिन्नैं चौहत गहराई में उतर कैं कर्यौ है। 'रामचरितमानस ' में नाटक कौ तत्व याई कारन आइ है कै वामैं जीवन के दोनूँ पच्छ अपनी-अपनी सचाई के संग वर्णित हैं। अच्छाई हू है तौ अपनी पूरी ऊँचाई के संग आई है। अच्छाई अकेले आदमी तक ई सीमित नाँय- वहाँ अच्छाई अरु सच्चाई कौ एक भरौ पूरौ समाज है। वहाँ राम जैसौ बेटा अरु भाई ई नाँय-लक्ष्मण अरु भरत जैसे सचाई कौ साथ दैबे बारे हू हैं। राम कौ बड़प्पन तौ या बात माँहि है कै वे अपनी पीड़ा अरु कष्टन कूँ ई सब कछु मानि कै नाँय चलैं, बे दूसरेन की पीड़ा कूँ अपनी पीड़ा मानि कैं चलैं। याई भाव सौं वे अपने समै के समाज सौं जुरैं। राम-कथा कौ दूसरौ पच्छ बुराई, झूठ अरु पाखण्ड कौ पच्छ है। हम वाकूँ रावन पच्छ के रूप माँहि जानैं। तुलसी नैं अपने समै की बुराई कौ सच याई माध्यम सौ बतायौ है। या लिए या कृति के भीतर भावनान कौ एक बड़ौ नाटक रच दियौ गयौ है। इतनौ ई नाँय, मध्यकाल माँहि हमारे समाज के जितेकऊ छोटे-बड़े, ऊँच-नीच अरु बीच के वर्ग हते, स्वामी-सेवक, राजा-प्रजा के जितने हू रूप हते, बिन सबन कौ प्रतिनिधित्व 'रामचरितमानस' माँहि भयौ है। जेई बात रही कै हिंदी-जाति नैं 'रामचरितमानस' कूँ एक नए लोकमंच ' रामलीला' कौ माध्यम बनाइकैं हिंदी-लोक की नाट्य-कला कौ प्रदर्शन करबे में अद्भुत सफलता पाई है।

क्वार कौ महीना लगते ई हिंदी-प्रदेसन के गाँम-गाँम माँहि 'रामलीला' की मुरमुराहट चलवे लग जाय। बड़े-बूढ़े अपने-अपने गामन के छोरा-छोरीन सौं कहवे लगि परैं कै क्वार आवे वारौ है-राम कौ नाम लैवे में कहा जाय। मोय तौ अपने गाँम की पतौ है, जामें पिछले एक सौ चालीस बरसन सौं 'रामलीला' ह्वै रही है। रामलीला करवे वारे कहीं बाहर ते ना बुलाए जामैं। गाँव के ई पढ़े-बेपढ़े मिल कैं सब तामझाम इकट्ठौ कर लें, अरु सोलह-सत्तरह दिनान तक धरम कौ धरम अरु करम कौ करम दोनूं काम सध जाँय। जाकी जैसी भावना होय, ऊ वैसी ई भावना सौं काम करै। सबई भक्ति के सागर माँहिं डूबवे वारे नाँय होंमैं। ज्यादातर तौ रामलीला के नाटकीय प्रसंगन सौं अपने मन कौ रंजन ई करवे आमैं, पर फिरऊ भक्ति कौ आवरन ई सही, ई आवरन सिगरे दर्शकन पै पर्‍यौ रहै। कह्यौ तौ जेई जावै है कै सब काहु भक्ति के ताँई ई ह्वै रह्यौ है। अगर या बात कूँ सच मानि कैं चलैं तौ आज की दुनियाँ माँहि जितेक आपाधापी, स्वारथ अरु अनैतिकता दिखाई दै रही है, एक साँची भक्ति भाव वारे समाज माँहिं ऐसे दृश्य दिखाई नहीं दैंते। हमारे समाज कौ नजारौ तौ कछु और ई कह रह्यौ है। मैंनें अपने गांव की 'रामलीला' में ऐसे बदलाव देखे हैं। पुराने लोग दुनियादारी में बौहत सम्पन्न ना हते, बिनकी कच्ची मढ़ैया अरु झौंपड़ी हती, पर अपने भावन माँहिं वे साँच पै डटे रहते। आज समाज तौ सम्पन्न भयौ है, पर साँच पै डटौ रहनौ हाथ सौं छूट गयौ है। जेई फरक 'रामलीला' में ऊ आ गयौ है। रामलीला-मंच की चमक-दमक पहलैं सौं बढ़ी है पर भीतर कौ भाव बूढ़ौ ह्वै गयौ है।

मेरे गाँम कौ नाम जुरहरा है। पहले ई भरतपुर रियासत में परै हो, या लिए आजहु राजस्थान के भरतपुर जिले की कामाँ तहसील कौ एक बड़ौ गाँम है। संस्कृति की दृष्टि सौं एक ओर तौ ई अंचल ब्रज कौ अंग है तौ दूसरी ओर मेवात कौ हिस्सा है। यहाँ के लोगन की बोली-भाषा पै दोनूं बोली-भाषान कौ ई असर है। बड़े-बूढ़े बतामें कैं सवंत 1910 यानी सन 1853 के आसपास यहाँ 'रामलीला' कौ आरम्भ भयौ। जरूर याकौ उद्देश्य राम कौ नाम लैबौ रह्यौ होयगौ। वैसें 'रामलीला' के उद्‌भव-स्थल काशी माँहि रामलीला कौ आरंभ धार्मिक अनुष्ठान के रूप में भयौ। ई एक ऐसौ धार्मिक अनुष्ठान है, जाकौ संबंध केवल अनुष्ठान तक ई सीमित ना रह्यौ है वरन् यानैं हिंदी-जगत की लोकसंस्कृति की रचना करी है। पर हम या बात कूँ हू अच्छी तरियाँ जानैं कैं संस्कृति-निर्माण कौ एक छोर आदमी की *उत्पादन करिबे* वारी क्रियान सौं जुर्‌यौ भयौ है। अगर हम 'रामलीला' की संस्कृति कौ संबंध उत्पादन की *क्रियान सौं* देखें तौ या लोक कला रूप कौ सम्बंध किसानी उत्पादन अरु सौदागरी बाजार की *क्रियान कौ सम्बंध* उत्पादन की क्रियान सौं जुर्‌यौ भयौ मिलैगौ। आज हम देख रहे हैं कै जहाँ-जहाँ ये सम्बंध नये जमाने कौ औद्योगिक रूप लै रहे हैं, वहाँ 'रामलीला' कौ रूपऊ बदल रह्यौ है। रामलीला कौ ई कहा, हमारी संस्कृति कौ पुरानौ रूप ई बदल रह्यौ है। नई औद्योगिक संस्कृति कौ प्रवाह इतनौ जोर भरौ है कै वाके आगैं अच्छे-अच्छे संस्कृति-रखवारे दिग्गजन की कौंड़ी नाँप उठ रही। *बूढ़े-बड़े दैनें अपने जमाने की* बातन कूँ करि-करि कैं झींकते रहें अरु बिनकौ काऊ पै बस नाँय चलै. *वैसें ई आज की दुनियाँ माँहि* हमारी अपनी बोली-भासान सौं जुरी भई संस्कृति कौ हाल है *गयौ है। पर* [illegible]

नागरिकता वारे लोग 'रामलीला' जैसे लोककला रूपन कूँ पसंद करैं, वेई वजह है कै ये संस्कृति की दृष्टि सौं आज के कठिन समै में क जिन्दा हैं।

जुरहरा की 'रामलीला' कौ लोकमंच ब्रज-मेवात कौ मिलौ जुलौ लोकमंच है। केवल या मंच की ई खासियत है कै याकौ मंच पूरे कौ पूरौ गाँम ई होय। गाँम में रात कूँ होवे वारी लीलान कौ एक जगह पै मंच जरूर बनायौ जावै, पर वाके अलावा बौहत-सी लीला ऐसी होंय, जिनमें गाँम के रस्ता, मदमर, ऊँचे चौंतरा, कुण्डा-पोखर, बाग-बगीची, मंदिर-धर्मशाला सब 'रामलीला' कौ मंच बन जाएँ। जुरहरा की रामलीला कौ तौ ई विधान है कै हर साल भादौं के महीना माँहि गाँम के ठाकुर साहब के महलन में (पहले महल हते, अब भग्नावशेष मात्र हैं) डौंड़ी सौं पूरे गाँम की पंचायत जुरै। या पंचायत में पंच-प्रधान रामलीला करवे कौ फैसलौ करैं। पिछली बातन कूँ लैकै रूसा-मटकी हू होय, पर मान-मनौवल सौं सब मान जाएँ अरु राजी-राजी फैसलौ रामलीला करवे कौ ई होय। अबई तक ऐसौ समै कबहु नाँय आयौ कै रामलीला कूँ लैकै इतनौ विरोध बढ़ौ होय कै रामलीला ना करिवे की बात भई होय। याई बेग रामलीला के पाँच सरूप राम-लक्ष्मण, जानकी, भरत अरु शत्रुघ्न हू तय कर लिये जाएँ। ये ब्राह्मन जाति के होंय। इनकी दूसरी शर्त है किशोरावस्था वारे कुँवारे बालक। ये सबई एक धर्मशाला माँहि एक जगह रखे जाएँ। वहाँ इनके भोजन-पानी कौ इन्तजाम गाँम की तरफ सौं होय। इनकूँ एक सिंगारी 'रामचरित मानस' की चौपाइन कौ प्रशिक्षण देवै। 'रामचरितमानस' सौं भिन्न-भिन्न पात्रन की चौपाई छाँट कैं अलग-अलग कापी तैयार कराई जाएँ। इन कापीन सौं ये चौपाई के अरथ याद करैं, जिनकौ 'रामलीला-मंच' पै प्रसंगानुसार बोल कैं प्रदर्शन करनौ परै। पहलैं तो रामलीला की तालीम दो महीना पहलैं शुरू हो जावै ही। तालीम कौ पूरौ विधान हतौ। याकौ प्रमाण आजक विन डायरीन माँहि सुरक्षित हैं, जो रामलीला के व्यास जी नैं अपने समै में लिखी हैं। सन् 1915 के आसपास सौं जुरहरा की रामलीला के व्यास पं. ब्रजलाल शर्मा रहे। जिनके पिता पं. शोभराज जी नैं या रामलीला की नींव धरी हती। जिननैं याकूँ व्यवस्थित मंचीय रूप प्रदान कर्यौ। या कारन अखाड़ेन के अनुसार ई शोभराज जी के अखाड़े की रामलीला के नाम सौं बहौत दिनान तक मशहूर रही। बड़े-बूढ़े तौ आज तकऊ याई नाम ते जानें। पं. ब्रजलाल जी नैं याकूँ नयौ रूप प्रदान करिकैं पहले की तुलना में और कलात्मक बनायौ। बाकायदा तालीमन कौ चलन शुरू कर्यौ अरु 'रामलीला' के बाद तीन नाटकन की शुरूआत सन् 1933 सौं करी। पं. ब्रजलाल जी तालीमन के आरम्भ में या तरियाँ सौं प्रतिज्ञापत्र भरवायौ करै हे। कलाकारन के दस्तखत कराइकैं विनकूँ पूरी तरियाँ प्रतिज्ञा-सूत्र में बाँध देवै हे अरु वा समै के कलाकार हू अपने दिये गये वचनन की कीमत पहचानते हे। सन् 1958 में लिख्यौ गयौ 'प्रतिज्ञा पत्र' या तरियाँ है-

1. " श्री भाद्र. शु. 11 रविवार संवत् 2016 वि. ता. 13.9.58 ई. को रात के 8 बजे बस्ती महलों में इकट्ठी हुई। रामलीला करना निश्चय हुआ। नाटक की भी चर्चा हुई।

2. श्री भाद्र. शु. 14 मंगलवार संवत् 2016 वि. ता. 15.9.59 ई. तथा श्री भाद्र शु. 15

बुधवार संवत 2016 वि. ता. 16.9.56 दोनों दिन पात्रगण श्री सुधारिणी समिति की छत पर एकत्रित हुए। नाटक का विचार पक्का हुआ, कल श्री गणेश जी महाराज का पूजन, चाँदनी में करना निश्चय हुआ।

शपथ-पत्र

"हम श्री रामलीला नाटक कम्पनी के पाठ लेने वाले पात्रगण, ईश्वर को साक्षी कर धर्मपूर्वक शपथ लेते हैं कि अपने पाठ को सफलतापूर्वक सम्पन्न करेंगे और प्रतिदिन नियत समय पर उपस्थित हुआ करेंगे और अपने पाठों को सुरक्षित रखेंगे और कार्य समाप्त होने पर सँभाल देंगे।"

घूमतौ-फिरतौ लोकमंच

रामलीला कौ मंच स्थायी हू है अरु चलतौ-फिरतौ भयौ ऊ है। ई बात तौ सही-सही म लूम नाँय कै रात्रि माँहि रामलीला करवे की शुरुआत कब सौं भई, पर या बात-कूँ बुजरग कहैं कै पहलें रामलीला दिन में ई होमैं ही। गाँव के 'गोपाल कुण्ड' पै दिन में रामलीला होती भई बौहत से लोगन नैं देखी है। वाके बाद रात में मशाल जराइकैं रामलीला भई अरु जब गैस के हंडान कौ चलन है गयौ तौ गैस के उजीते में होवे लगि परी। जाई तरह पहलें रामलीला माँहि लाउडस्पीकर ना चलै हे, पर जैसैं-जैसैं आबादी बढ़वे सौं दर्शकन की तादाद बढ़वे लगी अरु लाउडस्पीकर बजार माँहि आ गयौ तौ ई यंत्रऊ 'रामलीला' के मंच कौ मुख्य अंग बन गयौ। आजतौ बिजली के दमदमाते उजीते में रामलीला होमैं। फोटू ऊ खिंचैं अरु वीडियो रील ऊ बनबे लगि गई हैं। जैसैं-जैसैं नई चीज आती गई हैं, 'रामलीला' कौ मंचऊ बिनसौं सजतौ-सँवरतौ अरु बदलतौ चलौ गयौ है। याई तरियाँ लोगन के भावन माँहिं ऊ बदलाव आयौ है। पहलैं तौ 'रामलीला' कौ प्रयोजन समाज की मर्यादा, अनुशासन, नैतिकता अरु अपनी संस्कृति कौ रक्षण अरु संवर्धन हतौ, लोगन के मन माँहि भक्तिभाव हतौ पर धीरे-धीरे भक्तिभाव अरु सामाजिक नैतिकता कौ सोता कमजोर पड़तौ चलौ गयौ। वाकी जगह मनोरंजन, उत्सव अरु आनंद कौ भाव मजबूत होतौ चलौ गयौ। ई बात जरूर है कै यासों गाँम की सामुदायिकता कौ भाव बनौ रह्यौ। एक दूसरे के पास उठवे-बैठवे अरु काम करवे सौं एक दूसरे की आँखन की शरम बनी रही। आदमी के भीतर के कलाकार कूँ अपने करतब दिखाइवे कौ औसर मिलतौ रह्यौ, जासौं वाकी रचनाशीलता कूँ अपनी जमीन मिलती रही। यासौं समाज के बीच एका कौ भाव हू बनौ रह्यौ।

जुरहरा की रामलीला कौ आरम्भ रामलीला के 'झण्डा पूजन' सौं होतौ रह्यौ है। क्वार कृष्णा ग्यारस कूँ 'रामलीला' कौ ध्वज जुलूस के रूप माँहि बाजार में होकै निकार्यौ जावै, जो दिन में चार बजे 'गोपालकुण्ड' पै ले जाकैं पूजौ जावै। दूसरे दिना बारस कूँ रात में 8 बजे पाण्डाल में गणेशजी महाराज कौ पूजन कियौ जावै। तीसरे दिना तेरस कूँ रात्रि में 8 बजे 'नारद मोह' अरु 'स्वायंभवमनु की कथा' सौं रामलीला की शुरुआत होवै। याके बाद 'रामविवाह' सौं पहली सबई रामलीला रात्रि में मंच पै ई होमैं। राम के विवाह की तिथि सदां-सदां सौं क्वार सुदी दौज रही है। या दिना बाकायदा राम के विवाह की निकासी बाजार में भव्य जुलूस के रूप में निकारी जाय। ऐसौ लगै जैसैं पूरौ गाँम ई राम को ...

शामिल हो रह्यौ है। पहलै तौ राम के ब्याह की तैयारी कैई दिना पहलैं सौं होबे लग जाबै ही। गाँम किसान अपने-अपने बहली-भारकस, रथ, आदीन कूँ तैयार करै हे। बैलन कूँ नहा-धुबाइ कै बिनकैं ़दी लगाबै है अरु सजा-सजा कै अपने भारकसन (वाहन) कूँ राम के ब्याह में ले जाबे में अपने भाग्य सराहै हे। राजा दशरथ कौ नाई घर-घर जाइकैं सबकूँ राम के ब्याह में चलबे कौ नौंतौ दैकैं आबै । या तरियाँ सौं लीला की लीला अरु हँसी-मजाक की हँसी मजाक, चलै कर्‌यौ ही। पूरी की पूरी ीला जैसैं लोगन की जिंदगी कौ हिस्सा ही। वा समै लोगन के पास रुपया-पैसा बौहत ज्यादा ना हतौ, ़ बिनके उत्साह में काऊ तरह की कमी ना हती। आज हालत ई है कै रुपया-पैसा तौ खूब ए, पर वैसौ त्साह नाँय। कबहूँ कबहूँ तौ लकीर पीटबे कौ सौ अहसास होबे लग जाबै। 'रामलीला' की परम्परा । आजऊ निभ रही है अरु सिंगार-सजावट कौ ताम-झाम कबहू पहलैं सौं बौहत बढ़ गयौ है। दशहरा ौ मेलौ हू खूब जुरै। दर्शकन कौ ऊ टोटौ नाँय आयौ, पर फिरऊ कोऊ बात ऐसी दीखै कै जैसैं कसर ़ जाय। पुराने लोगन के से सरल-सुभाव बारे लोग अब बौहत कम दिखाई परैं। ज्यादातर लोग ामलीला' जैसे आयोजन में हू जब जोड़-तोड़, उठा-पटक करते दिखाई दैं तौ जेई लगै कै 'लीला' ़ भीतरी पच्छ कौ असर इन पै नाँय पर्‌यौ है।

याके बावजूद लोगन की ई भावना जरूर रहबै कै 'रामलीला' गाँम कौ उत्सव है। पूरी गाँम-स्ती कौ बरस दिना कौ मेलौ है, ई होतौ रहनौ चहिए। रामजी के ब्याह के बाद वनगमन सौं पहलैं तक ़ी लीला रात कूँ मंच पै ई होमैं। जब राम वन कू चलैं तौ वन की लीला गाम के बाजार के बीच सौं ़ोती भई गोपाल कुण्ड पै पहुँचै। बीच-बीच चलते भए ई वन के बीच परबे बारे लोगन सौं राम-लीला ़ सवाल-जवाब होते चलैं। या तरियाँ सौं वन गमन की लीला स्टेज पै ना होकै गाँम के दगरेन में होबै। ाम-लक्ष्मण-सीता अपने तपस्वी वेश में पूरे सिंगार के साथ चलैं। बिनके आगै-आगै पाँतिया बिछते जाएं, बिन पै अपने पग धरते भए राम आगै बढ़ैं। गोपालकुण्ड पै नाव बनाइकें तैयार रखी जाय। दर्शकगन ाम के संग-संग चलते भए गोपाल कुण्ड के घाटन पै इकट्ठे ह्वै जाएं। वहाँ केवट-संवाद की लीला ़ोय। केवट पानी में उघाड़ौ-पुघाड़ौ खड़ौ रहकैं राम सौं अपनी बात कहबै कै, हे नाथ भले ई लखनलाल ़ेरे तीर मारि कैं मोकूँ मार दें पर मेरौ तौ जेई हठ है कै आपकूँ तब तलक अपनी नाव पै ना चढ़ाउंगौ, जब तलक आपके पामन नैं ना धो लूंगौ। आपकी चरण रज कौ कहा भरोसौ, ऊ कहीं मेरी नाव एक ़ुनिघरनी में बदल दे। राम केवट के प्रेमभरी चतुराई कूँ समझि कै वाकूँ अपने चरनन कूँ धोबे की आज्ञा ़ेबैं। तबई केवट बिन तीनोंन कूँ सुरसरि पार करावै। वा समै कुण्डा कौ पूरौ प्राकृतिक वातावरण ई ामलीला कौ मंच बनि जाबै। केवट की नौका में राम जब पार होमें तौ दर्शकन के भाव अरु विचार ़ू थोरी देर के लिये बदल जामैं। याके बाद राम वनगमन की, चित्रकूट, पंचवटी आदि की लीला मंच ़ै होमैं। सीताहरण की लीला के दिना दर्शकन की खास भीड़ रहबै। जुरहरा के आसपास दूर-दूर सौं ़ोग या लीला कूँ देखबे आमैं। याके बाद 'लंका दहन' की लीला गाँम की एक बगीची 'इन्द्रकुटी' ़ै होबै। ह्वाँ लंका के पुतला में हनुमान जी आग लगाइकैं नष्ट करैं। रावन की अशोकवाटिका कूँ उजारैं,

रावन के बेटा अक्षयकुमार कौ वध करैं। ई रामलीला क्वार सुदी आठै कूँ होवे। याई दिना रात कूँ स्टेज पै 'अंगद रावन संवाद' को लीला होवै। नौमी कूँ कुम्भकर्ण वध अरु मेघनाथ वध की लीला रात्रि कूँ स्टेज पैं खेली जाएँ। दसमी कूँ दिन में रावन वध की लीला एक मैदान में होमैं, जहाँ रावण कौ विमाल पुतला वनाईकैं वाकूँ जरायौ जावै। आश्विन शुक्ला एकादशी के दिना भरत-मिलन, राम-राज्य कौ लीला होवै। विजया दशमी अरु एकादशी कूँ राम-राज्य अभिषेक की लीला जुलूस प्रधान हैं। दोनूं दिना गाजे-बाजे के संग राम की सवारी गाँम में निकारी जाय। दशमी के दिना तौ रावन की सवारी हू निकसै। मेवभाई हू अपनी टामक वजाते भए राम-रावण के युध्द-प्रसंग में शामिल होमैं। दशहरा के दिना के ज्यादातर दर्शक तौ हमारे मेवसमुदाय सौं ई होमैं। वैसे रात की रामलीलान में ऊ मेवभाईन की कोई कमी ना रहै। या वात ए देखैं तौ ई लीला धर्म की छोटी हद कूँ पार करिकैं अपनी वास्तविक अरु सच्ची हद पै पौंहच जावै है। या समै धरम कौ सवसौं निखरौ भयौ अरु विराट सरूप ई सर्वत्र दिखाई परै। अपने-अपने धरमन की वनी भई छोटी-छोटी दीवार एक संस्कृति के आंगन माँहि आइकैं ढहती दिखाई परैं। हिन्दू-मुसलमान कौ जैसैं भेद ई मिट जाय। रामलीला के दर्शकन माँहिं रामलाल-श्यामलाल होंय तौ करीमखां-रहीमखां हू होंय, भगवती-कलावती होंय तौ फातिमा-नाजिमा हू होंय। सब एक ई प्यार अरु सद्भाव की संस्कृति में वंधे भए मनुष्यता की हद में पौंहच जाँय। आज हू या प्रयोजन कूँ एक हद तक 'रामलीला' जैसौ लोकव्यापी लीलामंच पूरौ कर रह्यौ है, जेई सवसौं वड़े संतोष की वात है।

-1/14, अरावली विहार,
अलवर(राज.)301001.



भरतपुर की रामलीला

-डॉ. विष्णुदत्त शर्मा

भरतपुर की जनता सदा ते ई धर्मप्राण जनता रही है। यहाँ के लोगन के भक्ति भावनान के केन्द्र नयौ लक्ष्मण मंदिर, पुरानौं लक्ष्मण मन्दिर, गंगामंदिर, विहारी जी कौ मन्दिर अरु सैकड़ौं छोटे-बड़े भरतपुर के मन्दिर रहे हैं। गोर्वधन, मथुरा, विन्दावनऊ, यहाँ के लोगन के भक्तिभावनान के सशक्त केन्द्र हैं। याकौ प्रमाण हर माह यहाँ के लोगन के द्वारा दिये जावे वारी हर पूर्णिमा कूँ गोवर्धन की परिक्रमा है। ए धर्मप्राण भरतपुर शहर माँहि होवे वारी रामलीलाऊ सदा ते ही यहाँ के लोगन की भक्ति भावना कौ एक सशक्त प्रमाण है।

भरतपुर शहर माँहिं रामलीलान कौ प्रचलन राजान की रियासतन के समय ते ई चलौ आय रह्यौ है। सैकड़ान बरसन ते रामलीला हौंती चली आय रही है। समाज सेवक, त्यागी, परिश्रमी, लगनशील अरु धार्मिक भावनान ते ओतप्रोत भरतपुर के अनेक लोग रामलीला के आयोजन माँहि बड़ी रुचिपूर्वक सक्रियता ते भाग लियौ करें हैं। नगर सेठ श्री देवीप्रसाद गोस्वामी, समाज सेवक स्व. श्री चिंरजीलाल पोद्दार, भक्त प्रवर स्व.श्री युधिष्ठिर प्रसाद चतुर्वेदी आदि भरतपुर की रामलीला के आयोजन माँहि सक्रिय रुचि लियौ करें हैं। जाके कारण ई रामलीला भौत उच्च स्तर की अरु व्ययशील सुव्यवस्थित अरु भव्य दृश्य युक्त भयौ करै ही। या रामलीला माँहिं भरतपुर के प्रसिद्ध शिक्षक स्व. पं. नत्थी के पुत्र स्व. श्री राजीव लोचन शर्मा व पौत्र श्री योगन्द्र शर्मा व प्रपौत्र श्री विनोद शर्मा नैं पात्र बनिकैं तीन पीढ़ीन तक सेवा करी ही। भरतपुर की रामलीला के आयोजन हेतु श्री सनातन धर्म सभा भवन भरतपुर माँहिं महीनान पहले ते ई पात्रन कौ चयन प्रारम्भ कर दियौ जायौ करै हौ। समाज सेवक बड़े परिश्रम ते रामलीला के ताँईं योग्य अरु उपयुक्त पात्रन कौ चयन करै हैं। विनके व्यक्तित्व अरु योग्यता कूँ देखिकैं विनकूँ 'रामचरितमानस' की चौपाई अरु दोहा बुलवाय कैं अभ्यास करायौ जातौ। जब ये पात्र अच्छी तरियाँ तैयार है जावै हे तब भरतपुर में रामलीला कौ प्रारम्भ सम्पूर्ण भरतपुर कूँ खुलौ रंगमंच बनायकैं करौ जायौ करै हौ। रामलीला के विभिन्न काण्डन कौ मंचन भरतपुर के विभिन्न खुले स्थलन पै कियौ जावै हौ अरु विन स्थानन पै सुन्दर रंगमंच की स्थापना करिकैं, पात्रन कूँ भव्य वेशभूषा पहनायकैं रामलीला कौ आयोजन कियौ जायौ करै हौ। जा स्थान पै रामलीला होनी होती वा स्थान पै एक दिना पहलैई रंगमंच

कौ निर्माण मजदूरन सौं करायौ जायौ करै हो। रामलीला की अलग-अलग लीला भरतपुर के अलग-अलग स्थानन पै भयौ करैं हीं या कारण बिनकी मंच-सज्जा हू रोज अलग-अलग स्थानन पै करी जायौ करै हो। या कारण ई रामलीला भौत खर्चीली हौवै ही। रामलीला के सभी चयनित पात्र प्रारम्भ ते ई सनातन धर्म सभा भवन में ही रहवै हे। बिनकौ भोजन, निवास सम्पूर्ण रामलीला पर्यन्त यहीं रहवै हौ। या प्रकार ते वे घर नाँय जाय सकै हे। पात्र धर्मसभा भवन में ई रहकैं दिन भर अपने अभिनय के पाठन कूँ याद कियौ करै हे। इन पात्रन कूँ लीला स्थल पै लै जायवे के ताँई भरतपुर के सेठन के द्वारा कारन कौ इन्तजाम कियौ जायौ करै हौ।

भरतपुर की रामलीला मंचन की प्रणाली देश की अन्य रामलीला मंचन ते भिन्न हो । या रामलीला माँहिं पात्र अपने मुख ते चौपाई बोलै हे अरु फिर पंडित वाकौ अर्थ ब्रजभाषा माँहिं करिकैं जनता कूँ सुनायौ करै हौ। अर्थ सुनायवे वारे पंडितन में श्री ब्रज विहारी शर्मा, ब्रजभाषा कवि श्रेष्ठ स्व. श्री नन्द कुमार शर्मा, स्व. पं. श्री सुमेर सिंह पुरोहित अरु श्री प्रभुदयाल 'दयालु' प्रमुख हे।

भरतपुर की रामलीला माँहिं खुलौ मंचन भरतपुर के जिन स्थलन पै होतौ हो उनमें नयौ लक्ष्मण मंदिर, सूरदास कौ घेर,पुरानौ लक्ष्मण मंदिर आदि स्थल बालकांड की प्रारम्भिक लीलान के ताँईं चुने जाते ।'पुष्पवाटिका' प्रसंग के लिये म्यूजियम किले माँहिं चमन बगीची में मंचित कियौ जायौ करै हौ। भरत कौ चित्रकुट आगमन प्रसंग गांधी पार्क में मंचित कियौ जावै हो, केवट प्रसंग अरु राम-लक्ष्मण सीता, कूँ गंगा नदी पार करिवे के ताँईं खिरनी घाट भरतपुर ते नाव में तीनोंन कूँ बैठार कैं गांधी पार्क के काशी घाट पै लै जायौ करै हे।

गांधी पार्क में ही रावण द्वारा सीता हरण के रंगमंच कौ निर्माण कियौ जायौ करै हौ। गांधी पार्क के पास अब जहाँ हेड पोस्ट आफिस बन गयौ है कच्चे गढ़ के नीचे अशोक वाटिका प्रसंग को रामलीला मंचन हेतु रंगमंच कौ निर्माण कियौ जातौ । यहाँ पै ही हनुमान द्वारा मुद्रिका गिरानौ अरु सीता सौं संवाद अरु लंका दहन की लीला होयौ करै ही। यहीं पै मेघनाथ, खरदूषण, कुभंकर्ण आदि सौं राम-लक्ष्मण के युध्द की लीला होयौ करै ही। भरतपुर के अखड्ड पै राम-लक्ष्मण युध्द अरु रावन के पुतलेन के दहन की लीला करी जावैं हीं। अंत में राम-भरत मिलाप की लीला अरु राम राज्याभिषेक की लीला नये लक्ष्मण मंदिर पै करी जायौ करै ही। इन में प्रसंगन कौ मंचन अरु रामलीला के नाट्य रूप कौ विवरण यहाँ प्रस्तुत है :-

भरतपुर की रामलीला कौ प्रारम्भ नये लक्ष्मणजी के मंदिर व सूरदास के घेर के खुले प्रांगण में भऔ करै हौ। रामजन्म लीला, विश्वामित्र कौ राजा दशरथ ते राम लक्ष्मण कौ माँगनौ, विश्वामित्र यज्ञ की रक्षा आदि की लीला के ताँईं रंगमंच कौ निर्माण नये लक्ष्मणजी के मन्दिर पै ही होतौ। एम. डी.) चबूतरा पै तखत ते विशाल मंच बनायौ जावै हौ। यापै चाँदनीन की बिछायत करी जावै हो अरु पीले रेशमी पर्दानते लीला कक्ष बनायौ जावै हौ। सामईं खुले स्थान पै विश्वामित्र जी कौ आश्रम रातो पतान

बनायौ जावै हौ जामैं यज्ञ की वेदी कौ निर्माण कियौ जावै हौ अरु अनेक पात्र ऋषिन कौ रूप धारण करिकैं यज्ञ कियौ करै हे। बिनके यज्ञ कूँ ध्वंस करिवे के ताँईं राक्षस पात्रन की लीलाऊ हौंती। वा प्रांगन के एक ओर अर्थ करिवे वारे पंडितजी कौऊ स्थान निर्धारित होयौ करै हौ। बिनके सामई माइक भी लगौ रहै हौ। या रामलीला माँहि जि विशेषता ही कै पात्र स्वयं अपने मुख सौं रामचरितमानस की चौपाई बोलौ करै हे अरु पंडितजी बाकौ अर्थ ब्रजभाषा में करिकैं जनता कूँ समझायौ करै हे। जबकै दूसरी जगह होवे वारी रामलीलान माँहिं पात्र चौपाईन कौ अर्थ करैं हैं अरु पंडित चौपाई बोलैं हैं।

भरतपुर में पुष्पवाटिका प्रसंग के ताँईं रामलीला के मंच हेतु किले माँहिं म्यूजियम के प्रांगण (चमन बगीची) कौ प्रयोग कियौ जावै हौ। म्यूजियम के प्रांगण कूँ बगीचा की तरह सजायवे कूँ घमलान में अनेक पेड़ पौधा लगाये जायौ करै हे। बिजलीन के फोकसन की सुव्यवस्था रहती। प्रांगण के एक ओर गौरी को मन्दिर बनायौ जावै हो। एक ओर ते राम अरु लक्ष्मण वा वाटिका में पुष्प लैवे के ताँईं आते अरु दूसरी ओर ते सीताजी अरु बिनकी सखी गौरी पूजन के ताँईं आती ही। तब राम अरु सीता कौ परस्पर दर्शन जनता के मनकूँ रोमांचित कर दियौ करै हो। वाके पश्चात सीता की गौरी ते प्रार्थना प्रसंग की लीला बहुत प्रभावशाली होयौ करै ही। या लीला में सब पात्रन की भेषभूषा भौत आकर्षक भयौ करै ही।

भरतपुर की सुजान गंगा के खिरनी घाट कौ प्रयोग केवट प्रसंग की लीला के ताँईं अरु राम, लक्ष्मण, सीता के नदी पार करिवे के ताँईं सुसज्जित नौका कूँ खिरनी घाट ते चलायौ जावै हौ जामैं तीनों पात्र बैठे रहवै हे अरु केवट जा नाबै चलायौ करै हौ वामें गैस जलौ करै ही। भरतपुर की जनता या लीलाये नहर के किनारे देखती भई गांधी पार्क पहुँच जावै ही जहाँ गांधी पार्क के नहर के घाट पै राम, लक्ष्मण, सीता उतर जावै हे अरु केवट राम कौ चरणामृत लैवे के लिये भगवान ते प्रार्थना करै हौ।

भरतपुर के गांधी पार्क माँहिं चित्रकूट कौ रंगमंच बनायौ जावै हो। पार्क के खुले लौन माँहिं विशाल रंगमंच कौ निर्माण कियौ जातौ। वा ऊँचे रंगमंच कूँ लता पतान ते सुसज्जित कियौ जातौ । वा मंच पै राम, सीता अरु लक्ष्मण विराजमान रहते तब भरत जी अयोध्यावासी जनता, गुरुजन अरु मातान नैं लैकैं वहाँ आवै हे अरु वा मंच पै बैठ जावै हे। तब भरतजी की राम ते अयोध्या लौट चलिवे की प्रार्थना की लीला वा ही रंगमंच पै भऔ करै ही अरु चरण पादुका सीस पै रखिकैं भरतजी वहां ते ही प्रस्थान करै हे। गांधी पार्क में ही राम की कुटिया कौ निर्माण करिकैं रावण द्वारा सीता हरण प्रसंग की लीला करी जाती। याई पार्क माँहिं ऊँचे मंच पै लक्ष्मण शक्ति प्रसंग की लीला करी जाती। रामजी सुग्रीव, जामवंत, वानर, भालून सहित मंच पै विराजमान रहते। रामजी अपने भाई मूर्छित लक्ष्मण कूँ गोदी में लैकैं सुग्रीव आदि कूँ हनुमानजी के संजीवन बूटी लैकैं नाँय आवे की बात कहै हे अरु बिनकी आँखन में टपटप आँसू टपकौ करै हे। बिनके ही संग में दर्शकन की आँखिन में ते आँसू निकलौ करै हे । या अवसर पै रामजी द्वारा चौपाई बोलिवे कौ स्वर विशेष प्रकार कौ रहतौ जामै रोयवे अरु सिसकी लैवे की आवाजऊ

रहती। या प्रकारते लक्ष्मण शक्ति की लीला भौत भावुकता ते भरी भई रहती। याई के संग जनताऊ भावुक है जायो करै ही। रावण द्वारा सीताहरण की लीला हू यहाँ गांधी पार्क के पास ही होवैई। मुख्य सड़क के दूसरी तरफ (जहाँ अब हैड पौस्ट आफिस हतै) कच्चे गढ़ के नीचें अशोक वाटिका प्रसंग के तांई रंगमंच कौ निर्माण कियौ जातौ। कच्चे मैदान कूँ पूरो तरियाँ समतल करिकैं यहाँ पेड़ पौधा लगायकैं अशोक वाटिका कौ निर्माण कियौ जातौ। यामें हनुमान जी के बैठवे के तांई एक बड़ौ पेड़ऊ लगायौ जातौ जापै बैठिकैं वे सीताजी कूँ राम की मुद्रिका पटकते अरु वा पेड़ के नीचें सीताजी रहती जो वा मुद्रिकाय उठाय लेंती।

गांधी पार्क की मुख्य सड़क के दूसरी तरफ वाले कच्चे गढ़ के नीचेंई मैदान में मेघनाद, खरदूषण, कुंभकरण वध प्रसंग की लीला करी जाय ही। या औसर पै ई मैदान एक युध्द क्षेत्र के रूप में सजायौ जावै हौ। जहाँ एक ओर ते राक्षसन की विशाल सेना आती अरु दूसरी ओर ते राम लक्ष्मणजी के साथ बन्दरन की सेना आवै ही। राक्षस काले कपड़ा अरु कालौ मुखौटो लगायौ रखै हे जबकै बन्दर लाल कपड़ा अरु बन्दर कौ लाल मुखौटौ लगाय रखै हे। राम के युध्द करिवे के तांई लम्बौ चौड़ौ मैदान हो जहाँ वे पहलें खरदूषण अरु पाछें कुंभकरण कूँ मारे हे।

हनुमानजी द्वारा लंकादहन करिवे के तांई कच्चे गढ़ के ऊपर स्वर्णिम पन्नीन ते लंका कौ निर्माण कियौ जातौ। यामें बम पटाके लगाये जाते। हनुमानजी की पूँछ में आग लगावे पै वे गढ़ के ऊपर चढ़ जावै है अरु वा स्वर्णिम पन्नीन ते बनी सुन्दर लंका में आग लगाय देंते ।

भरतपुर माँहि राम-रावण युद्ध अरु रावण दहन की लीला के प्रसंग कौ रंगमंच अखड्ड के विशाल मैदान में बनायौ जातौ। यहाँ राम-लक्ष्मण कूँ बैठिवे के तांई कच्चौ मिट्टी कौ ऊँचौ चबूतरा बनायौ जातौ। वापै चांदनीन की बिछायत अरु मंच की सज्जा करी जाती। सामने ई दूरी पै रावण, कुंभकरण के पुतले स्थापित किये जाते। अखड्ड पै ई राम अरु रावण कौ युध्द होंतौ अरु यहाँ पै ई विभीषण के रहस्योद्घाटन के आधार पै रामजी द्वारा विष कौ बाण चलायौ जातौ अरु वू रावण की टुंडी में ते अमृत कूँ सोखि कै वाय मौत के घाट उतार देतौ। फिर याके बाद रामजी जलते भए बाण ते कुंभकरण अरु रावण के पुतलान में आगि लगाय देते। या रावण दहन की लीला के प्रसंग कूँ देखिवे राज परिवारऊ आतौ अरु भरतपुर की जनता काफी संख्या में उपस्थित होंती।

राम-भरत मिलाप प्रसंग के तांई नये लक्ष्मणजी के मन्दिर कूँ रंगमंच बनायौ जातौ। या लीला के तांई गंगा मंदिर की ओर ते हाथी पै बैठि कें रामजी, सीता अरु लक्ष्मणजी आते अरु कोतवाली की ओर ते भरत जी हाथी पै बैठ कें आते अरु दोनों कौ मिलाप नये लक्ष्मण जी के मन्दिर के भव्य द्वार पै होंवै हौ। मन्दिर के भव्य द्वार के झरोखान पै महिला बैठी रहतीं जो या अवसर पै मधुर कंठते गीत गायौ करैं हीः-

'उठ मिल लेऊ राम भरत आए................

भरतपुर के नये लक्ष्मण जी के मन्दिर के विशाल चौक में दूसरे दिना राम के राज्याभिषेक के ताँईं रंगमंच कौ निर्माण कियौ जातौ। या रंगमंच की सज्जाभौत भव्य भयौ करै ही। भौत बड़े चाँदी के सिंहासन कूँ स्थापित कियौ जातौ। लीला कक्ष कौ ऊ निर्माण भौत भव्य भयौ करै हौ। या सज्जा युक्तमंच पै राम के राज-तिलक की लीला भयौ करै ही।

या प्रकार ते 40 वर्ष पहले भरतपुर माँहि हैवे वारी रामलीला के ताँईं पूरे भरतपुर कूँ ई खुलौ रंगमंच वनाय लियौ जातौ अरु वामें अर्थ व्यवस्था, सज्जा के ताँईं सनातन धर्म सभा व भरतपुर के नागरिक तथा राजपरिवार कौऊ पूरौ-पूरौ सहयोग रह्यौ करै हौ अरु ई रामलीला भौत भव्य हौंती जाय देखिवे भरतपुर की जनता के अलावा वाहर के लोगऊ आवै हे।

आजकल भरतपुर माँहिं अर्थाभाव के कारण वैसे खुले रंगमंचवारी रामलीला नाँय है रही। राजगुरु महंत गंगादास जी, स्व. श्री युधिष्ठिर प्रसाद चतुर्वेदी जी अरु श्री मोहनलाल 'मधुकर' के सत् प्रयत्न अरु लगनते ई रामलीला पुराने लक्ष्मणजी के मंदिरमें हैवे लग गई। वहीं पै पूरी रामलीला कौ मंचन कियौ जावै। रामलीला के पूरे प्रसंगन की मंच-सज्जा याऊ में भव्य हौंत है।

पच्चीस-तीस वरस श्री वेंकटेश रामलीला के नाम ते पुराने लक्ष्मणजी के मन्दिर पै रामलीला हौंती रही। पाछैं श्री सनातन धर्म सभा द्वै-तीन वरसन ते वन्द है।

ब्रजक्षेत्र डीग माँहि रामलीला कौ दूसरौ ढंग:- भरतपुर ते 36 मील दूर प्रसिद्ध जलमहलन की प्रसिध्द नगरी डीग में ई एक दूसरे ढंग की रामलीला हौंय। या रामलीला में रंगा रामचरित मानस की चौपाई वोलै अरु पात्र विन चौपाइन कौ अर्थ संवाद रूप में करै हैं। डीग में रामलीला प्रतिस्पर्धा के रुप में हौती रही हैं। नई डीग में लक्ष्मनजी के मंदिर के सामईं पं. नारायनजी के अखाड़े के स्व. हरप्रसाद, स्व. वावूलाल, स्व. चुन्नीलाल, स्व. श्री चन्द आदि याकूँ साथ सौं सम्पन्न करते रहे। पुरानी डीग की रामलीला माँहि श्री निवास ब्रह्मचारी स्व. श्री नत्थन पुरोहित श्री गोपालप्रसाद 'मुद्गल' (सचिव राज. ब्रजभाषा अकादमी) आदि की अहम् भूमिका रही है। वे याकौ संचालन वड़ी रुचि ते करे हे। इन रामलीलान में ऊ मंच की सज्जा भव्य होय है अरु याय डीग की जनता भौत रुचिपूर्वक देखै ही कछू दिनान सौं पुरानी डीग की रामलीला वन्द है।

ब्रज क्षेत्र में ही रामलीला करिवे के दो ढंग देखिवे कूँ मिलैं हैं। जहाँ भरतपुर माँहिं पूरे भरतपुर कूँ खुलौ रंगमंच मानि कैं लीला करी जाय औरु जामैं पात्र स्वयं रामचरित मानस की चौपाई वोलें अरु पंडित अर्थ करिकैं जनता कूँ वा प्रसंग कूँ समझावैं वहीं डीग माँहि रंगा चौपाई वोले अरु पात्र वाके अर्थ करि कैं संवाद रूप में वोलैं हैं। या प्रकार ते ब्रज माँहिं रामलीला के दोनों ई ढंग मिलैं हैं।

आशा है कै भविष्य में भरतपुर के नागरिक भरतपुर की नगरी की या अनौखी रामलीला कौ मंचन भरतपुर की धार्मिक जनता के लाभ के ताँईं हर वरस कराइवे को प्रयास करिगे।

-विनायक, 408 बरकत नगर,
टोंकफाटक, जयपुर (राज.)



लोक नाट्य विधा-नौटंकी और भगत

- श्री मोहन स्वरूप भाटिया

ब्रज की लोकनाट्य परम्परा माँहिं दो विधा भौत ससक्त हैं- नौटंकी और भगत। नौटंकी के पात्र भाँति-भाँति के स्वरूप या स्वाँग धारकैं मंच पै आवैं, याही सौं याकूँ स्वाँग नाम सौं पुकारैं हैं। यामें अभिनय की बजाय संगीत पक्ष की अधिकता रहै है, यासौं याकूँ संगीत कह्यौ गयौ।

नौटंकी के नामकरन के बारे में अनेक धारना हैं। महाकवि जयशंकर प्रसाद कौ मत है कै नाटक कौ अपभ्रंश नौटंकी है। एक मत यह है कै पंजाब में मल्ल नामक जाट, रंगा जुलाहौ और रावत राजपूत मिलकैं ढोलक पै गायौ करै हे। विनकौ वही गायन लोक प्रसिद्धि पायकैं नौटंकी कहलायौ। आजहु नौटंकी के सूत्रधार कूँ रंगा कहौ जाए। पंजाब की एक लोककथा में नौटंकी नाम की एक सुन्दरी भई। वाके रूप-सौन्दर्य की बड़ी चर्चा ही। वाके सम्बन्ध में एक किंवदंती मिलै कै फूलसिंह नामक युवक जब देर रात अपने घर पहुँचौ तौ वाकी भाभी कूँ किवार खोलवे में देर है गई। फूलसिंह वापै तुनक उठ्यौ। भाभी पै ई सहन नहीं भयौ। तानौ मारौ तुम तौ ऐसैं जल्दी मचा रहे हैं, मानौ नौटंकी कूँ ब्याह कैं लाए हौ। फूलसिंह कूँ भाभी कौ तानौ लग गयौ। फूलसिंह फौरन लौट परौ। चलतौ-चलतौ वहाँ पहुँचौ जहाँ नौटंकी ही। फूलसिंह नैं नौटंकी के बाग की मालिन सौं सम्पर्क साधौ। अन्त में नौटंकी कूँ ब्याह कैं लायौ। नौटंकी की जि प्रेम कथा लोक गायकन के माध्यम सौं इतेक अधिक लोकप्रिय भई कै याके पाछैं या शैली पै लिखी गई दूसरी लोक कथा नौटंकी पुकारी गई। कछु लोगन कौ मत है कै काहू प्रेमकथा की नौ टंक वारी कोमलांगी नायिका के जीवन पै लिखी गई लोक नाट्य लोक प्रियता के आधार पै नौटंकी कही जावे लगी।

अधिकतर विद्वानन कौ मत है कै नौटंकी कौ जन्म पंजाब में भयौ। 'दी लीजैन्ड्स ऑफ दी पंजाब'' में टेम्पिल नामक अंग्रेज नैं कछु नौटंकी प्रकासित करी हैं। कछु समय पाछैं नौटंकी अपनी लोकप्रियता सौं यात्रा करते भए उत्तर प्रदेस तक जा पहुँची और यहाँ के रससिद्ध कलाकारन नैं याकूं लोकप्रियता के सिखर पै पहुँचा दियौ। या सम्बन्ध में प्रचलित दो दोहान सौं ज्ञात होय कै सम्वत् 1884 में अमरोहा सौं स्वाँग कौ प्रादुर्भाव भयौ-

अमरोहा खारी कुआ, चौरासी को साल।

नयौ स्वाँग प्रकट कियौ, बिशन बिरहमन लाल.॥

अरु

अमरोहा से प्रकट भई, चौरासी की साल।
नयौ स्वाँग प्रकट कियौ, बिशन बिरहमन लाल॥

अमरोहा के पाछैं नौटंकी की गायकी उत्तर प्रदेस के अन्य नगरन में गई। वहाँ सौं पड़ौसी राज्यन में याकौ विस्तार भयौ।

भगत– नौटंकी सौं पहलैं हू नाट्य परम्परा विद्यमान ही। याकी अनेक विधा हर्ती। वर्तमान समय में भरतमुनि कौ नाट्यशास्त्र सबसौं पुरानी कृति मानौ जाए पर जरूर यासौं पहलैं नाट्य परम्परा रही हुंगी जिन्नैं भरत मुनि कूँ नाट्यशास्त्र की रचना करवे में मदद करी होगी। इनमें भगत कौ हू एक मंच है। यह मंच पहले की नाट्य परम्परान कौ प्रतीक है सकै। प्रसिद्ध प्राकृत नाटक 'कर्पूर मंजरी' कौ सरूप और नाटकीय प्रदर्सन वर्तमान भगत के अनुरूप हो। नाट्यशास्त्र की दृष्टि सौं सट्टक के रासकत्त्व और रासक के कवित्व के हू भगत में दर्सन होंय हैं।

नवीं सदी में रचित सिद्ध साहित्य में भगत के समकक्ष स्वाँग के सम्बन्ध में एक पंक्ति या तरियाँ है – 'आली डोंवि तोए सम करिब्य सांग। निधिण दणह कमाली जोई लाग।' याकौ मतलब है कै सिद्ध दणहपा नै डोंमिनी के संग स्वांग करौ। यह स्वाँग या भगत की प्राचीनता कौ परिचायक है।

भगत साहित्य की उपलब्धि के अभाव में निहचै रूप सौं नहीं कह्यौ जा सकै कै भगत कौ प्रारम्भ अमुक सदी में भयौ। पर, यह अवसि कह्यौ जा सकै कै भगत कौ लोकमंच पाँच सौं बरसन सौं अधिक सौं लोक मानस कौ अनुरंजन करतौ रह्यौ है। औरंगजेब के समकालीन कवि मौलाना गनीमत की सन् 1685 ई. में लिखी भई 'नौरंग इश्क' में भगत के अस्तित्व और व्यापकता कौ उल्लेख या तरियाँ भयौ है कै– भगतवाजी की मंडली हौंती और वे उत्तराखंड के या छोर सौं दूसरे छोर तक घूमौ करैं हीं। भगत के ततकालीन रूप स्वरूप कौ वर्णन करते भए 'नवरंग इश्क' के रचनाकार नैं लिखौ है कै–' आज शहर में अजब किसम के लोग आए भए हैं जो एक नाजी अन्दाज के संग नकल करैं हैं। वे नगमों साज के संग शोवदे दिखावै हैं। नाँच और नकल में ये उस्ताज हैं। इनकी आवाज हू मीठी है। हमारी भाषा में इनकूँ भगतवाज कहैं हैं। ये कबहु मर्द, कबहु औरत और कबहु बच्चा की नकल करैं हैं। कबहु परेसान हाल सन्यासी बन जावैं हैं। कबहु मुसलमान, कबहु कश्मीरी और कबहु फिरंगी बन जावैं हैं। यो वे हर कौम कौ जलवा दिखावैं हैं। हर तरह के रश्वा जमाने ते काम लैं। अबुल फजल की प्रसिध्द ऐतिहासिक कृतित आइने अकबरी में भगत कौ वर्णन या तरियाँ भयौ है कै भगत–कीर्तन के समान संगीत है परन्तु बामें विभिन्न तरियाँ की वेसभूसा धारण करकैं स्वाँग कौ प्रदर्सन करौ जाए।

भगत सब्द सौं यह प्रतीत होय है कै यह मंच कबहु भक्ति भावनान को अभिव्यक्ति कौ माध्यम रह्यौ होगौ। किन्तु अब तौ भगत कौ अभ्यास प्रारम्भ हैवे ते समाप्ति के दिन तक काऊ ठौर पै देगी कौ थापौ रख कै ढोक दैवे और समाप्ति पै ब्राह्मण भोजन, मंगलाचरण और गनेश पूजन के रूप में तौ भगत में भक्ति और धर्म के दर्सन होंय। भगत के प्रारम्भ के दिना सौं नगारौ बजाय कैं जराई गई जोत भगत के समापन तक जरै।

भगत नामकरण के संबंध में कह्यौ जाय है कै जब महाप्रभु वल्लभाचार्य नैं ब्राह्मणन के छोरान कूँ प्रसिच्छित करकैं रासलीला कौ प्रारम्भ करौ तब कोल जाति के कछु लोगन नैं अपनी मंडली बनाय कैं लोकगायिकी में कछु लीला प्रस्तुत करीं। कोल लोग देवी के भगत हैवे के कारन भगत कहलावैं हैं। स्यात बिनके ताँईं कियौ जावे वारौ सम्बोधन कछु दिनान पाछैं लोकनाट्य कौ विसेसन बन गयौ। भगत के प्रारम्भिक समै में कथानक भक्तिमय भयौ करै हे जाके कारन यह लोकनाट्य विधा भगत कहलाई। धीरैं-धीरैं भक्ति और धार्मिक भावनान कौ असर कम हौंतौ गयौ और सिंगार प्रधान प्रेम आख्यानन नैं भगत पै अधिकार कर लियौ। यह रीतिकालीन सिंगार की प्रवृत्तीन कौ परिनाम हौ। प्रेमकथान के संग संग वीरता के आख्यान और सम सामयिक घटना हू भगत कौ विसै बन गईं। स्याहपोश, सब्जपरी, गुलफाम, रूप बसंत, हीर रांझा, पूरनमल, अमरसिंह राठौर, सुलताना डाकू, धर्मवीर हकीकत राय, रामायण सांगीत, झांसी की रानी, छत्रपति वीर शिवाजी, महाराणा प्रताप, पृथ्वीराज चौहान और गरीब हिन्दुस्तान याके उदाहरन हैं।

भगत कौ मंच पूरी तरियाँ कलात्मक मंच है। यामें साहित्य और संगीत कौ एक श्रेष्ठ स्तर रखौ जाए है। यह परम्परागत अखाड़ेन कौ अव्यावसायिक रूप सौं कार्यक्रम प्रस्तुत करवे वारौ मंच है। जब कै नौटंकी काहू अखाड़े सौं न करी जाय कैं पेशेवर मंडलीन सौं करी जाए है। नौटंकीकारन कौ उद्देश्य कला की सेवाभावना नहीं अपितु धन कमावौ है। नौटंकी मंडली कौ संचालन मालिक, मैनेजर, कछु कर्मचारी और पेशेवर कलाकारन सौं होय। इन कलाकारन कूँ या तौ माहवारी वेतन मिलै या लाभ में एक तै करौ भयौ भाग मिलै है। भगत में कलाकार अखाड़ेन के गुरु (उस्ताद) के नेतृत्व में भगत की गायिकी के प्रति लगाव के कारण शौकिया कलाकार उस्ताद की शागिर्दी स्वीकार करकैं गायिकी कौ प्रशिक्षण प्राप्त करैं हैं और भगत कौ आयोजन हैवे पै भाग लैं। पहलैं यह वातावरन हौ कै अखाड़ेन में भगत की तैयारी चलती रहै ही पर फिल्म, दूरदर्सन और आर्थिक संकटन के कारन अब अखाड़े निष्क्रिय है गए हैं। भगत के कछु कलाकार धन के लालच में नौटंकी के कलाकार बन गए हैं।

भगत और नौटंकी में समानता हू हैं। दोनोंन कौ प्रारम्भ मंगलाचरन सौं होय। मंगलाचरन कूँ भेंट कहैं। यामें काऊ इष्ट देवी देवता की स्तुति करी जाय।

प्रसिद्ध नौटंकीकार और गायक पं. नथाराम शर्मा की लिखी 'रुकमनि मंगल' या तरियाँ है-

दोहा- अम्बा जगदम्बा उमा, करौ सदा कल्यान।
हरि भ्रम संज्ञा भगत के, देउ अभय वरदान॥

चौवोला- देउ अभय वरदान दास को कृपा दृष्टि से हेरौ।
मैं अजान अति दीन, मात है सदा भरोसौ तेरौ॥

तुव दरसन से जग जननि, उपजत सुक्ख घनेरौ।
ध्यान धरत तुव चरनन कौ, होय दुक्ख दूर सब मेरौ॥

भेंट के पाछैं सूत्रधार जाए रंगा कह्यौ जाए नौटंकी या भगत के रचयिता कौ प्रतिनिधित्व करते भए कथा सन्धीन कूँ जोरतौ चलै और परिवर्तन की सूचना दैंतौ जाए। याके संग कथानक संगीत के संग प्रवाहमान रूप में आगै बढ़ै।

नौटंकी और भगत की गायिकी में दोहा, सवैया, लावनी, बहरतवील, दौड़, ख्याल, रेखा, ठुमरी, दादरा, गजल, शैर, कव्वाली, सोरठा, छप्पय, आल्हा आदि धुनन कौ सहारौ लियौ जाए। चौबोला इन विधान कौ प्रमुख छन्द है। बहरतवील आवाज कूँ लम्बी खेंचि कैं गाई जाए। अब तौ फिल्मी धुन और पैरोडी भी गाई जाएं। अखाड़ेन की भगत में हू इनकी छाया दिखाई परै।

नौटंकी और भगत दोनोंन में नगारौ केवल प्रधान वाद्य ही नाहैं बिनकौ सिंगार है। देह के बीच प्राणन के समान है। नगारौ नाट्य विधा की गति कूँ बाँधे रखै है और श्रोतान कूँ स्पन्दित रखै। नगारे के अलावा हारमोनियम, ढोलक, क्लारनेट तथा बैंजो हू इनके वाद्य वृंद हैं।

नौटंकी और भगत कौ मंच बनावटी नाँय हैकैं सीधौ-सादौ होय। तख्तन के चारों ओर बल्ली गाढ़ कै शामियानौ तान दियौ जाए, पर ई हू जरूरी नाँय। बस तख्तन ते हू काम चल जाय। मंच पै कलाकारन कौ आइवौ-जाइवौ अनौपचारिक रूप सौं होय। पात्र मंच पै तेजी सौं आवैं और तीनौं ओर बैठे दर्शकन की ओर घूमते भए अपनौ गायन और प्रदर्शन करैं।

नौटंकी मैं कलाकारन की वेसभूषा बिना चमक-दमक की हौंती पर अब तौ तड़क-भड़क वारी वेसभूषा काम में लैं। राजा कूँ मुकुट लगायकैं राजा दरसा दियौ जाए। वेसभूषा पात्रन के समान सादी होय। अधिकतर चूड़ीदार पायजामा पहरैं हैं।

भगत की बात कछू और ही है। अखाड़ेन कें धनी मानी लोग होड़न पै पात्रन कूँ लाखन रुपैयान के हीरा, मोती, पन्ना, सोने-चाँदी आदि के आभूषन सौं सुसज्जित करैं हैं। याही कूँ स्वाँग सजानौ कह्यौ जाए। याके माध्यम सौं धनीमानी अपने वैभव कौ प्रदर्शन हू करैं हैं। पर बीस-पच्चीस बरसन सौं सामाजिक जीवन में आई असुरक्षा और कछु अन्य कारनन सौं स्वाँग सजावे की परम्परा खतम है रही है। मथुरा में बाबू श्यामाचरण के समय में भगत के पात्रन कौ फूलन सौं सिंगार कियौ जातौ हौ।

नौटंकी और भगत दोनों कूँ सुनवे में तौ अत्यधिक आनंद आवै ही है पर, असंख्य श्रोता पाठक के रूप में इनकौ रसास्वादन करैं हैं। यही कारन है कै नौटंकी और भगत की किताब पूब छपैं और मेले ठेलेन में आम जनता रुचि सौं खरीदैं और पढ़ैं।

नौटंकी की प्रारम्भिक रचनान में अरबी, फारसी और उर्दू मिश्रित ब्रजभाषा की प्रधानता रहै ही। कछु अखाड़ेन के विद्वानन नैं तौ अपने भगत में संस्कृतनिष्ठ हिन्दी कौ हू प्रयोग करौ है। एक उदाहरण देखौ-

दोहा- विधु वदनी मृग लोचनी, मृदु भाषिणि सुकुमार ।
आम्र वृक्ष पर अली इक, सूक्ष्म दृष्टि तौ डार॥

चौबोला- सूक्ष्म दृष्टि तौ डार, वारि क्यों यह तरु गिरा रहा है।
पवन प्रकम्पित प्रति पत्ता, व्याकुलता दिखा रहा है।
तुम्हें लता ही समझ ये जड़ भी जड़ता गँवा रहा है।
पल्लव पाणि हिलाकर सुमुखि तुमको बुला रहा है।

संगीत और भगत दोनोंन में अभिनय पक्ष की बजाय संगीत पक्ष की प्रधानता रहै। कलाकार हाथ पैर चलाकैं या आँख मटकाकैंअभिनय करैं हैं पर वे ही कलाकार अच्छे माने जाएँ जो अपनी उत्कृष्ट गायिकी और टीपदार आवाज सौं श्रोतान कूँ बाँधें रखें, विनके मन कूँ झंकृत करें।

भगत कौ एक विशेष अंग है फटके बाजी याके अन्तर्गत एक भगत के कलाकार दूसरे भगत के कलाकारन कूँ चुनौती दें। अपने कूँ श्रेष्ठ बतावें। यहाँ यह कह दैनों उचित है कै ये कलाकार ही भगत कुँ बचाए भए हैं।

नौटंकी या भगत के मंच में राष्ट्रीय संगीतिका हैवे के सिगरे तत्व विद्यमान हैं। जरूरत या बात की है कै इनकूं प्रश्रय मिलै। मंच के विकास में प्रभावी प्रयास करे जाएँ। ये मंच जहाँ जन-जन कौ मनोरंजन करैं वहाँ दूसरी ओर जनता कूँ ज्ञान और प्रेरणा दैवे में सक्षम हैं। आज जहाँ अनेक लोकनाट्य परम्परा खत्म होंती जाय रही हैं, वहाँ भगत और नौटंकी सक्रिय हैं। या दिसा में नियोजित ढंग सौं भगत और नौटंकीन कौ विधिवत सर्वेक्षण होय। इनकी परम्परा और शैलीगत विसेसतान कौ अध्ययन होय। भगत और नौटंकी के कलाकारन कूँ विधिवत प्रशिक्षण दियौ जाय। प्रशिक्षण केन्द्र खोले जाएँ। इनकी श्रेष्ठ कृति तैयार होंय। साहित्य, संगीत और अभिनय की दृष्टि सौं परिपक्व नौटंकी और भगत के देश के कोने कोने में प्रदर्शन करे जाएँ। जासौं ये लुप्त होती नाट्य विधा जीवित रह सकैं। भगत और नौटंकी की विधान कौ देश की एकता, अखंडता और साम्प्रदायिक सद्भाव के ताँईं प्रभावशाली उपयोग करौ जाए। एक विचार यह है कै कानपुर, फर्रुखाबाद, पंजाब, हरियाणा, मेरठ, हाथरस, आगरा और मथुरा-वृन्दावन की नौटंकी-भगत परम्परान कौ तुलनात्मक अध्ययन करौ जाय। यासौं इनके सुखद परिणाम मिलिंगे।

- ज्ञानदीप, डेम्पियर नगर,
मथुरा(उत्तरप्रदेश)

नौटंकी : कछू संस्मरण

- श्री रामबाबू शुक्ल

सन् तिरेसठ -चौंसठ की बात होगी। मैं एक ऐसे गाँम में पढ़ाबै हो जामें नट जाति कौऊ एक मौहल्ला हतौ। वैसें बिन नटन के घर गाँम ते दूर ही हते पर गाँम के लोगन कौ वहाँ पै आयवौ-जायवौ बनौ रहवै हौ। नट जाति के लोग शरीर सौं मजबूत और कलाबाजी के पारंगत हुऔ करैं हैं। रस्सी और बाँस पै बिनके करतब देखवे जोग होंय। पर जब कोऊ काम ना मिलैहौ तौ उनकी बैयर बानी नाच गाकैंऊ गुजारौ करैं ईं। धीरे-धीरे बिनकौ नाचवे -गाइवे कौ कारोबार बड़े सहरन मेंऊ फैलवे लगौ। सो उननें अपनी छोरीन कूँ पढ़ावौ सिरू कर दीनौ। मेरे पासऊ कैऊ छोरी-छोरा पढ़िवे आवे लगे। एकाध छोरी नें प्रयाग की हिन्दी की परीक्षा विद्या-विनोदिनी अरु विशारद पास कर लीनी। पर बिननें संगीत विषय लीनौ। मैंनें पूछी तौ बिननें बतायौ कै बड़े सहरन में संगीत के प्रमाण-पत्तर ते नाचवे-गाइवे कौ स्कूल चलायौ जा सकें। काऊ तरियाँ कौ कोऊ कानूनी जुरम नाँय होय। सो मेरी पढ़ाई भई कैऊ छोरी बिन बड़े सहरन में पाठशाला चलावे लगीं। एकाध छोरी अच्छी गायक बन गयी सो वानें नौटंकी में काम करवौ सिरू कर दीनौ।

उन दिनान में भरतपुर नौटंकी कौ गढ़ बन गयौ हतो। हाथरस ते सिरू हैकैं गुरु नथाराम गौड़ और इन्दरमल के नाम ते नौटंकीन की किताब संगीत कार्यालय हाथरस ते छपकैं गाँम-गाँम में पौहंच गयीं। सो गाँम-गाँम में अच्छे गायक अरु संगीतकार पैदा हैवे लगे। गाँमन के कैई लोगन नें मिल जुल कै नौटंकीन की मंडली बना लई। धीरे धीरे नौटंकी कानपुर-लखनऊ जैसे सहरन के आस-पास के गामन में बड़ी लोकप्रिय है गयी। बारातन के संग छोरा वारौ एक नौटंकी जरूर ले जावैऔ नहिं तो बड़ी ख्वारी होवैई। सो भरतपुर की नौटंकी-कम्पनी पूरबी भारत के गाँमन में बड़े चाब ते देखी जावे लगी।

वा समै भरतपुर में बीसन नौटंकी-कम्पनी बन गयीं। महाराज किसन सिंहजी की प्रेरना ते पारसी-थियेटर की तरज पै एक नौटंकी बनायी गयी। महाराज नें याके काजैं किले में एक हॉल बनवायौ। आगे चलकैं महाराज किसन सिंह नें भरतपुर में सहकारी विभाग खोलौ। गाँमन में वाकौ प्रचार करवे कूँ ऐसी ही नौटंकी बनवायी गई। एक धीर साहब नाम के सहकारी विभाग के अधिकारी बाकौ सब काम काज

देखैं है। वा समय गोपाल गढ़ के रूपी पण्डित बड़े अच्छे कलाकार भये। विनके संग श्यामा नामकी आगरे की एक नाचवे वारी बड़ी अच्छी कलाकार भयी। या समय के बड़े-बूढ़े बताऔ करें हैं कै रूपी पण्डित तौ मँजनू बनौ करै हौ और वू श्यामा लैला बनै ई। सो दोनों बिल्कुल साकार रुप तै या नौटंकी '' लैला मँजनू '' कौं दरसाय देऔ करैं हे।

इनके पाछैं कामां के गिरिराज और मनोहर को जोड़ी निकरकें नौटंकीन पै छा गयो। सो गिरिराज तौ अबई जीवै है और आज नौटंकीन कौ अकेली जीवित पात्र कहौ जा सकै है। जे दोनों पंडित पूबीराम भरकऊ वारे की कम्पनी में काम करै हे। इन दोनोंन कौ कोऊ मुकाबलौ ना कर सकै हौ। इनके संग जनानी काम करवे कूँ कौऊ नाचवे वारी नाँय हती। ताखे गाम कौ कुंजी और सेत गाम कौ लक्खी इनके संग जनानौ बनौ करैऔ। भरतपुर सहर में कबहु तौ लछमन मन्दिर पै और कबहूँ गंगा मन्दिर के चौराहे पै नौटंकी होबेई। पूरी रात निकर जावेई। सवेरे चार पाँच बजे तक सांगीत हुए करै हौ। हजारन लोग बिना हल्ला गुल्ला करे चुपचाप बैठकें नौटंकी देखते।

या समय तक लाउडस्पीकर ना चले। सब पात्र अपनी दमखम पै इतेक उँची आवाज में गावै हे कै दूर-दूर तक बैठे लोगन तक उनकी स्वर लहरी पौहंच जावेई। कछु तौ विनकौ मीठौ सुर और कछु विनके प्रेमी दरसकन कौ चुपचाप बैठकें सुनवौ दोनोंई बातन कौ ऐसौ मधुर संजोग है जातौ कै रात निकरि जावै ई पर उठवे कौ मन नाँय करैऔ। जो जहाँ बैठौ सो वहीं पै ही बैठौ रहवै हौ। पात्रन की मीठी और पैनी टीप और नगाड़े की कड़कड़ाती चोट दोनों मिलकें ऐसौ जादू सौ करैंई कै एक-एक 'चौबोला' अरु ''बहरतबील' सुनवे कौ मन करैऔ। हम वा समय मिडिल में पढ़े हे सो एक-एक अच्छर याद करकें दिन में हमऊ कब हु 'दही वाली' कबहुँ 'इन्दल हरन' कबहूँ 'राजा हरीचन्द' और कबहु ''लैला मँजनू'' या ''सीरी फरियाद '' के चौबोला या बहरतबील या दादरा, ठुमरी या गजल को एकाध लाइन बड़े जोर-जोर की टीप लगाकें गावे लग जावें हे।

ताखे कौ कुंजी '' लैला '' कौ कै 'सीरी' कौ अथवा '' दही वाली '' कौ ऐसौ बढ़िया काम करैऔ कै लोग या बातै भूल जावै हैं कै जी नाचवे वारी बाई नाँय, छोरा है। हमैं खूब अच्छी तरियाँ याद हतै कै कुंजी कमते कम चालीस की उमर तक जनानौ बनतौ रहौ। हिन्डौन कौ एक '' पपहिया '' नाम कौ छोरा और सैंत गाम कौ 'लक्खी '' हू पैंतीस चालीस बरस की उमर तक जनानौ रूप धारन करकें नौटंकीन की सोभा बढ़ाते रहे।

धीरे-धीरे जनाने काम करवे कूँ नाचवे गावे वारी नट जाति की छोरीन नैं नौटंकोन में काम करियौ सिरू कर दोनौ वा समय हिन्डौन की मुस्तर बाई, बिब्बो बाई, और डहरे की शोभा, प्रेम आदि लड़की इन नौटंकीन की सोभा बढ़ावे लगीं। इनमें सोभा-प्रेम और गीता तीनों मेरी पढ़ाई भयी लड़की हतीं।

ऊपर जिन लड़कीन कौ नाम लियौ है विननें जब पहली-पहली बेर नौटंकी में काम कियौ वू घटना मोय आजहू याद हतै। गाम डहरे के एक पंडित जी के छोरा कौ ब्याह हतौ सो बानैं नौटंकी/

की वात आई। सो बिननै गाम के ई एक फत्ते जाट ते, जो बौहत वढ़िया हारमोनियम वजाइवे वारौ हतौ और कैऊ वरसन ते नौटंकीन में काम करै हौ, अपनी वात कही। फत्ते नें गाम की उन नटन की छोरिन कूँ संगीत सिखायौ। वानैं वे छोरी खूब अच्छी तरियाँ सौंतैयार करीं। कुम्हेर कौ एक छोरा रामस्वरूप वड़ौ अच्छौ गावैऔ अरु नौटंकीन में काम करैऔ सौं वू बुला लीनौ। थोड़े दिनान कौ रियाज करवा कैं गाम में ही एक दिना नौटंकी करवाई। मैं रोजीना गाम में पढ़ाकैं भरतपुर लौट आवैऔ पर वा दिना फत्तै नें मैं रोक लीनौ। सो नौटंकी देखी। उन लड़कीन नें खूब अच्छौ काम कीनौ। मैंनेंऊ उन लड़कीन की तारीफ कर दीनी।

पंडित के छोरा की बारात आगरे के पास एक गाम में गई। मैंऊ वा बारात में गयौ। फत्ते वारी नौटंकी हू गई। वा दिन लैला मँजनू की नौटंकी दिखाई जा रही। रामसरूप तौ मँजनू बनौ और सोभा नैं लैला कौ काम कीन्हौ। मैंऊ दरसकन मैं वैठौ हतौ । सवई वराती विनके गावे की तारीफ कर रहे। वीच-बीच में रुपया भेंट कर रहे। रुपया के संग उन लोगन कौ नाम बुलै हो और कंपनी की तरफ सौं वाकूँ आशीष दियौ जावैऔ। मेरेऊ मन में आई कै जिन वालिकान कूँ मैंनें पढ़ायौ लिखायौ है वे इतनी अच्छी कलाकार है गयी हैं। मोय वौहत अच्छी वात लगी। सो मैंनेंऊ उनकौ मन वढ़ावें कूँ कछ इनाम देवै केकाजें रुपया निकारे, अरु दोनों शिस्यान कूँ दै दीने। सौ दोनोंन ने मोय मंच पैई बुलायौ। मैं गाम कौ मास्टर अनेक मेरे पढ़ाये छोरा वा बारात में गये सो उनकूँ देखकैं मोय सरम आ रही कै मंच पै इन नाचवे बारी छोरीन के पास जायवौ एक मास्टर कूँ सोभा नाँय देय। पर बिनकौ इतनौ जादा आग्रह हतौ कै मोय जानौ पड़ौ। उन तीनों छोरीन नैं नाचवौ गायवौ वंद कियौ और दिये भये रुपया माथे ते लगायकैं उनमें कछु और मिलायकैं मेरे चरनन में धर दीने और वा भरी सभा में अपनौ माथौ मेरे चरनन में धर दीनौं। मैं गदगद है गयौ। सबरी बरात और गाम के सवई दरसकन नैं तारी वजा-वजा कैं मेरो सम्मान कीनौ। फत्तै अपने वाजै तै उठकैं आयौ, मेरौ परिचै दीनौ। उन लड़कीन की तारीफ करकैं बतायौ कै इनमें कितनी गुरु भक्ति है। वा घटना कूँ मैं जव जव याद करूँ मेरौ मन भर आवै कै गुरु कौ दरजा कितनौ वड़ौ होय।

हमारे समाज में वैश्या कूँ बड़ी नीची निगाह सौं देखौ जाय। पर नौटंकीन में काम करिवे वारी मुश्तर वाई, विब्बो, प्रेम, शोभा, गीता, श्यामा आदि ऐसी महिला भयीं कै विननें बड़ी इज्जत के संग नौटंकीन में काम कीनौ अरु लोगन कौ भरम हू तोड़ौ कै इनकैं काजें पैसा ही सव कछु नाँय, अपनी इज्जत हू कछु होय। इन्सानियत हू कछु होय।

इन नौटंकीन में काम करिवे वारे छोरान के काजें वा समै एक कहावत चलौ करैई कि '' नौटंकी कौ छोरा अरु ताँगे कौ घोड़ा काऊ दूसरे काम के ना रह जाँय''। पर इन नौटंकीन में काम करिवे वारी महिलान कूँ जि वात नाँहि कही जावैगी। इनमें काम करिवे वारी चाहै वैश्या नाम ते अभिहित करी जावैई पर विनकी वड़ी इज्जत होवैई। कोऊ कितनौऊ वड़ौ आदमी, कितेकऊ-रुपया विनकूँ देवै पर वे अपने हाथ में वा रुपया कूँ नाँय छुएँगी। नौटंकी कौ ही कोऊ मरदानौ पात्र वा रुपया कूँ लैकैं कम्पनी की तरफ

ते धन्यवाद देवै हौ। उन महिलान कूँ रहवे के काजैं अलग कमरा कै छोलदारी लगाई जावै ही। यहे सम्मान के संग बिनकौ रहवौ-सहवौ देखकैं और बिनकी गुरुभक्ति देखकैं मन में आवै कै हमारे ब्रज-क्षेत्र की ऐसी अनौखी कला अब कहाँ बिलाय गयी। जि दूरदर्सन अरु सिनेमा हमारी ऐसी जनप्रिय अरु गाँम गाँम के भोरे-भारे लोगन कौ मनोरंजन करवे वारी अनौखी कला कूँ निगल गयौ। जिन लोगन नैं नौटंकी कौ रस लीनौ ए, रात-रात जागकैं अरु पाँच-पाँच कोस दूर तेंई नगाड़े की चोट सुनकैं बड़े उत्साह सौं दौड़ लगाकैं नौटंकी देखवे जावे कौ साहस कीनौ है, जिनके काजैं तौ आज नौटंकी सपने की बात है गई है। नयी पीढ़ी तौ डिसको, पॉप म्यूजिक, अरु आधे नंगे अंग प्रदरसन कूँ ही कला समझ कैं मगन है रही है। उनके काजैं तौ नौटंकी गमारन कौ संगीत है। बिनकी नजर में गिरिराज कौ का कदर। याकी कदर तौ *अशोक वाजपेयी जानै जिननैं भौपाल के भारत-भवन में बिनकौ लोक संगीत-कला के सम्मान में* पचास हजार रुपया कौ 'तुलसी' पुरस्कार प्रदान करकैं उनकी (गिरिराज की) कला कूँ सम्मानित कीन्हौ। लोक कला के या पतन कूँ देखकैं हमारौ सिर-सरम ते झुक जाय पर का कर सकैं 'समै की बलिहारी है।''

-मौहल्ला खेरापति, होलिकेश्वर महादेव,
भरतपुर, (राज.)



आगरे की भगत अरु भगतकार

– श्री राजेन्द्र रघुवंशी

जिन सज्जन नैं आगरे की भगत कौ समीप सौं अध्ययन नाँय कियौ है वे केवल पढ़े–पढ़ाए ग्रन्थन के आधार पै भगत, स्वाँग, नौटंकी जैसे लोक रंगमंच रूपन कूँ गड्ड–मड्ड कर दैंवे। ब्रज कला केन्द्र अरु जाके महामंत्री श्री रामनारायण अग्रवाल नैं प्रारम्भ तेई इन लोकनाट्य रूपन की भिन्नता कूँ रेखांकित कियौ है। 1966 में हाथरस माँहि हुए सम्मेलन के समै अधिवेशनन में रखे भए निबन्धन के विसै भगत, रासलीला अरु नौटंकी के तुलनात्मक अध्ययन कूँ अभिव्यक्ति देबै बारे हे। श्री अग्रवाल नैं तब उचित ही कहौ कै कछु लोग नौटंकी कूँ भगतऊ कहैं हैं 'क्योंकि भगत अरु नौटंकी की मंच परम्परा अरु गायन शैली में एक दम समानता है।' नाट्य शास्त्र के बड़े–बड़े पंडितु नौटंकी अरु भगत में भेद नाँय कर पामै हैं।

याकै विपरीत डॉ. श्याम परमार अपनी पुस्तक "लोकधर्मी नाट्य परम्परा" में लिखै हैं– नौटंकी, स्वाँग अरु भगत तीनों एक ही वस्तु है। कहूँ स्वाँग के नाम ते नौटंकी विख्यात है तौ कहीं भगत के नाम ते। डॉ. श्रीराम शर्मा नैं ब्रज के भगत लोक–नाट्य कूँ स्वांग प्रधान वर्ग में रखौ है।" जो आगे चलकै ख्याल परम्परा ते जुड़कैं अखाड़ेन के रूप में आ गयौ। भक्ति भावना सौं युक्त लोगन के द्वारा खेले जावे के कारन इनकौ नाम भगत परि गयौ।"

वस्तुतः भगत कौ अपनौ विशिष्ट स्वरूप है। डॉ. अरविन्द कुलश्रेष्ठ अरु डॉ. मिहीलाल यादव नैं अपने शोध प्रबनधन अरु श्री विश्वनिधि मिश्र नैं अपनी प्रोजेक्ट रिपोर्ट (क.मु.विद्यापीठ) में जाकी अलग पहचान् स्थापित करिबे कौ सफल कार्य कियौ है।

भगत कौ चलन आगरा के अलावा हाथरस अरु मथुरा में हू है। परि आगरा की भगत कौ स्वरूप अरु विधा अपनी विशिष्टता रखै है। सबते उल्लेखनीय बात ई है कै ई प्रारम्भ ते अब तानूं साधिक बनी रही है। हाँ याकी गहन तालीगन अरु प्रस्तुतीन कूँ भव्य अरु आकर्षक रुप प्रदान करबे के काजै अनाप–सनाप रुपइया फूँकौ जावै है। पहलैं तौ कलाकारन कौ श्रृंगार असली जेवरन ते कियौ जातौ फिर आधे असली अरु आधे नकली जेवर चलन में आए। अब तौ नकली जेवरन ते ही काम निकारौ जाए है, किन्तु तड़क–भड़क में कोऊ कमी नाँय आई है।

पहलैं भगत कौ पाड़ (मंच) दर्जनन बल्लीन ते 10–12 फीट ऊँचौ बनायौ जातौ हौ। जासौं लोग बाके नीचे ते आ–जा सकैं अरु वाये खूब सजायौ जा सकै। लोहामण्डी में एक बेर चांदी कौ औरु एक

बेर राँगे की पाड़ (मंच)बनायी गई। फूलन की पाड़ (मंच) तब आम बात हती। ताजिए बनाबे बारे मुसलमान कारीगर रुई की पाड़ बनावें हते। सोने या चांदी या रुई की पाड़ कौ अर्थ हो कै यत्निन कूँ सोने-चांदी की पत्तरन ते माढ़ी जावें ही। औरु मेहराबन की सज्जाऊ पाई तरियाँ होती ही । सोने की पाड़केऊ उदाहरन मिलै हैं। नूरी दरवाजे पै मिठाई केऊ पाड़ बाँधे जावें ही। ई ऊंची मंच चौंतुखाऊ होती हो।

एक-एक जवाब (संगीतबद्ध डायलॉग) चार-चार बार दौहराए जावें हैं। अब लाउडस्पीकर औरु विद्युत प्रकाश के कारन मंच छै फुट ऊँचौ होवें हैं तीन ओर ते खुली। सांगीत की मंचन बैंक ड्राप के आगें होय है। भड़कीले पर्दा, विग औरु झालरन कौऊ उपयोग होय। मंच पै बिजली कौऊ जबर्दस्त सजावट होय है। बड़े-बड़े मैदानन में 50 हजार तक स्त्री-पुरुष जाकौ रात-रात भर दो औरु तीन दिना तानूं खूब आनन्द लैमें हैं। बस्तीन में हैवे बारी भगत में दस-बीस हजार दर्शक तौ सामान्यतः होंय।

भगत के लोकमंच के सबई संवाद पद्य में होंय, गद्य कौ कहूं कोऊ स्थान नाँय । जामें प्रयोग करे जावे बारे छन्द हैं- दोहा, चौबोला (जो कि जाकौ जान हैं), बहरतबील, चौक, दौड़, कड़ा, गजल, कव्वाली, लंगड़ी लावनी, भजन आदि। इन छन्दन कौ उपयोग नौटंकी मेंऊ होतौ, किन्तु नौटंकी औरु आगरे की भगत की गायकी में अन्तर है। नौटंकी में जहाँ-चटख औरु चुलबुलोपन होय है, वहाँ भगत की गायकी में सौम्यता, सन्जीदगी औरु समपन भाव कौ प्राधान्य रहै है। आगरा की भगत गायकी नौटंकी सौं या दृष्टि सौं बिल्कुल अलग हतै। जि गायकी आगरा के भगत प्रेमीन के दिल में रच-बस गई है। चौबोले के अन्त में आवे बारी 'थेईता, थेईता, थेईता' कौ तोड़ साठ बरस के वृद्धन को नस-नस कूँ फड़फड़ा देवे है औरु वे बरबस अपने मोह ते हाथ फैंक-फैंक कैं 'थेईता, थेईता, थेईता तथा' अनायास बोल कैं दुहर है है जाएँ हैं। आगरा की भगत अपनी गायकी की वजह सौं आजऊ जीवित है औरु कैऊ अखाड़े याकूँ जीवन्त बनाए भये हैं।

आगरा की भगत में सबई संवाद संगीतमय होय हैं। बिनकूँ कलाकार बिना काऊ अभिनय के गावै है। हाँ अपने गायन कूँ प्रभावी बनावे के काजैं कबहू सामई उपस्थित कलाकार मौंऊ हाथ उठाकैंभाव प्रकट करै है या कबहू दर्शकन मौंऊ हाथ फैंक कै 'सम' बतावै है। *अब तौ पात्रन की वेशभूषा में फिरऊ* यथार्थता आवे लगी है- पहलैं तौ हरिशचन्द्रऊ चूड़ीदार पजामा औरू जरीदार अचकन पहरकैं हाथ में पतरी चाँदी की मूठ कौ बेंत लैकैं मंच पै उपस्थित होवें हें। *जि भगत अभिनय प्रधान ना हैकैं विशुद्ध* रूप सौं संगीत प्रधान ही हे।

डॉ. श्रीराम शर्मा नैं अपने ग्रन्थ में *जि सही लिख्यौ है कै "प्रारम्भ में तौ या लोकनाट्य कौ प्रचलन* शुद्ध रूप सौं धार्मिक हौ किन्तु बाद में ख्यालबाजन के अखाड़ेन नैं याए हथियायौ औरु तबसौं भिन्न-भिन्न अखाड़ेन में प्रतियोगी भावना सौं 'भगत' खेली जावे लगी। या प्रतिस्पर्धा के कारन साज-सज्जा औरु पात्रन की वेशभूषा आभूषणन आदि की होड़ लगी। एक दंगल में पात्र कौ वेश जा स्तर कौ हो तौ, दूसरे अखाड़े की 'भगत' में पात्र कूँ बासौं अधिक मूल्यवान वस्त्राभूषन पहराये जाते। बाही दौर में जि स्पर्धा नाँय रही, 'भगत' की रचना करिबे बारे खलीफा, उस्ताद, कवि लोगन नैं यामें चमत्कार प्रधान काव्य की रचना करिकैं प्रतिस्पर्धी भाव सौं कांट छांट आरम्भ कर दई।" विद्वान लेखक कौ मन्तव्य स्यात भगत की फटकेबाजी सौं है, जामें दूसरे अखाड़ेन पै व्यंग्य कियौ जाय है औरु वाय अपनी भगत कटिकैं जवाब देवे कैं लए उकसायौ जाए।

भगत के प्रदर्शन ते पहलैं 'नागे' निकारवें की विधि सम्पन्न करी जाए है। अखाड़े के प्रमुख व्यक्ति गामते भये सबई बारह मण्डिन में गा-गाकैं निमंत्रन देवै हैं। जामैं 'फटके बाजी' कौऊ स्थान होय है जो सुलुस मण्डीन के अखाड़ेन कूँ जगावे कौ व्यंग्य पूर्ण कार्य करैं हैं। पहलैं इतेक लम्बे-लम्बे स्वांग लिखै जावै हे जो कै 6-7 दिनान तक चलौ करते हे। रोजाना रात्रि कूँ 6-7 घन्टा। भगत आमतौर पै रात्रि कूँ दस बजे शुरु होवेई। अबहु भगत कम ते कम दो या तीन दिना तानूं चलै है। जाकौ एक कारन औरु है कै भगत मन्थर गति ते चलै है औरु जितनौ समै 'जवाब के गायन में लगै है बाकौ आधौ या वाते अधिक समै वाद्य-वादन में लग जाए है। वाद्य-वादन में नगाड़े कौ तौ प्रमुख स्थान है ही, साथ में ढोलक, हारमोनियम, कटोरी, वायलिन, चंग ऊ होंमे हैं। वाद्य वादन दूर-दूर ते लोगन कूँ आकर्षितऊ करै है औरु सैकड़ान, हजारन की तादाद में लोग खिंचे चले आमें हैं।

भगत की तालीम दो-तीन महीना चलै है औरु उस्ताद खलीफा लड़कान कूँ तैयार करवे में बड़ी मेहनत करावैं है। क्योंकि सबई कलाकार तौ गाबे में पहिलैं ते निपुण नाँय होय (आखिर ई शौकियां मंच है) गायन आमतौर पै ऊँचे स्वर में गायौ जाए है। जाई लिए कलाकारन की खूब खबाई-पिबाई कराई जाय है। गले की रच्छा भी रहै। पहलैं काऊ-काऊ भगत में एक पात्र के काजै दो-दो कलाकार तैयार करे जाते हे। सम्वत् 1984 में चौक चमन अखाड़े में 'सत्यभान सावित्री' सांगीत की तौ 8-9 महीना तालीम चलौ करती। एक-एक पात्र के लएं दो-दो लड़कान कूँ तैयार करौ जातौ। वा समै रुपया कौ 16 सेर दूध औरु सवा सेर घी हौ। जा सांगीत में संगीत पक्ष बड़ौ सशक्त हतौ। जामैं लावनी, कड़े, छन्द, चौपाई, दादरा, ठुमरी, गजल, ख्याल सभी हते। सांगीत में 182 जवाब हे।

चलती भाषा के अधिकारी स्व. माधौप्रसाद खलीफा 'सत्यवान सावित्री' के रचयिता हे। घटना प्रसंग प्रभावोत्पादक हे औरु चरित्रन कौ विकास उत्तम रूपन में भयौ हौ। एक प्रसंग में यमदूत सत्यवान के पास पहुँचें है, किन्तु सती सावित्री ते परास्त है कैं धर्मराज के पास लौट आवै है

दोहा- वचन पाय गण चल दिये, वन दमयन्ती।
ध्यान लगा देखन लगे, जहाँ पड़ा सतवान॥
चौबोला-जहाँ पड़ा सतवान, आन कर अच्छी तरह निहारा।
देखी एक सती पतिबरता, हर हर करती हरवारा॥
दी लगा धरन की आन, नार का है बलवान सितारा।
यां चलै ना अपनी पेस, लौट चल दिये तुरत अठवारा॥
आ धरम राज के पास, करी अरदास ब्यान लै सारा।
वां पतिवरता की लगी आन, काबू नहिं चला हमारा॥

मानपाड़ा निवासी ला. माधोप्रसाद नैं 70-71 बरस की आयु पाई। ई लाला सुल्लोमल घी वारेन के म्हाँ मुनीम हतौ।

माधोप्रसाद जी के सांगीत कौ सम्वत् 2015 में 'सती विहुला' कौ रामलीला मैदान में आठ दिना तानूँ प्ररदर्सन भयौ

जन्म औरु विकास

'*भगत*'-*भक्त शब्द कौ विकसित रूप है।* प्रतीत होय है कै जाकौ मूल धार्मिक है। [illegible] में ऐसे तत्त्व मिलैं हैं जिनसौं अनुमान होय हैं कै भगत कौ आरंभ में देवी पूजा सौं सम्बन्ध [illegible]: जाके उदाहरन हैं- भगत प्रदर्सन के पहलैं त्रिशूल औरु स्वास्तिक कौ चित्र बनानौं, अक्षत द्वार कौ [illegible] तथा आखिर में कन्या-लांगुरियान (देवी के भक्त) कूँ भोजन, देवी पूजा सौं ही सम्बन्धित हैं। [illegible] हजामैं भक्तन के चरित्रन कूँ ही लियौ जाए हो। आजहु भकत पूरनमल, भक्त प्रहलाद, भक्त ध्रुव [illegible] खेले जामैं हैं।

भगत कौ पहलौ उल्लेख 'आइने अकबरी'' में मिलै है।''भगत कीर्तन के [illegible] है, 'परि जामैं अनेकन प्रकार की वेशभूसा धारन करकैं असाधारन स्वांग कौ प्रदर्सन कियौ [illegible] है। [illegible] कूँ ही आयोजित करैं जामैं हैं।'' बाद में भगत कौ उल्लेख औरंगजेब के समकालीन [illegible] की मसनबी 'नौरंगे इश्क' (सन् 1695) में मिलै है।

आगरे में भगत लगभग सम्वत् 1884 में शुरु भई। अमरोहा निवासी [illegible] के '[illegible]' 'रूप बसन्त' कूँ मोती कटरा के रामप्रसाद औरु जौहरी राय आगरा लाये औरु संवत् 1884 में [illegible] प्रदर्सन वहाँ कौ अखाड़ौ सथापित करके भयौ जौहरीराय कूँ गुरु बनायौ गयौ। बाद मे अनेकन [illegible] में हू अखाड़े बने औरु भगत की परम्परा आगरे माँहि चल निकरी।

डॉ. अरविन्द कुलश्रेष्ठ नैं अपने शोध ग्रन्थ ''आगरे के लोक काव्य में भाषा वैज्ञानिक अध्ययन'' (सन् 1964) माँहिं पन्द्रह अखाड़ेन कौ उल्लेख कियौ है। बाद मे ई बढ कैं अट्ठारह है गये औरु जा समय इक्कीस हैं। कछु अखाड़े एक-दूसरे ते सम्बन्धित ऊ हैं। कछु औरऊ उपाय अखाड़े ऊ हैं।

1948 माँहिं काव्य कला संगीत कमेटी कौ गठन भयौ आरु फिर अक्टुबर 1956 मे कावय कला संगीत परिषद् कौ नये सिरे ते गठन कर्यौ। इ अबहू काऊ न काऊ रूप मे जारी है।

विशेषताएं छन्दन की

आगरे की भगत कौ चौबोला प्रान है। जाके तीन भाग हैं - पहला भाग दोहा कहलावै है, जामें चार चरण कुल 48 मात्रा होवैं। सम चरनन में 11 औरु विषम चरनन मे 13 मात्रा होय हैं। समचरनन के अन्त में दीर्घ-लघु आवै हैं। दोहान कूँ बिना ताल ते गायौ जाए है।

चौबोलान में चार चौक होंय हैं औरु प्रत्येक चौक मे दो चरन। प्रथम चरन कौ प्रारम्भ, [illegible] चौथे चरन ते होय है। प्रत्येक चरन मे 28 मात्रा होय हैं। 11 पै विश्राम होय है।

तीसरे भाग में दौड़ कौ स्थान है। जे चौबोला के अन्त मे [illegible]

मात्रा, 16 पै विश्राम होंय ।'चलती' में दौड़ की अपेक्षा गति कम होय है। विश्राम ऊ अधिक दियौ जाए। दो चरन होय- प्रत्येक चरन में 31 मात्रा होंय। 10, 16, 31 पै विश्राम। अन्त में दीर्घ आवश्यक है।

कड़ा- कबऊ-कबऊ चौबोला औरु दौड़ या चौबोला औरु चलती के बीच में 'कड़ा' नामक छन्द ऊ गायौ जाय है। जामेऊ दो चरन होंय- प्रत्येक चरन में 24 मात्राएं, ॥ 11 औरु 24 पर यति। 'कड़ा' कौ प्रयोग काऊ विशेष पात्र कूँ सम्बोधित करबे के काजैं कियौ जाय है, जैसैं ''कै राजा जी'' 'कै भइयाजी', 'कै लाला जी'', 'कै प्यारे जी।'

आगरे की भगत में रागिनी कौऊ बड़ौ महत्व होय। जामैं होंय दुबोला, चौपाई, गजल, दादरा, लावनी, सदा, मल्हार, रसिया, राग मारु। स्व. संगीतकार पं0 सुनहरीलाल शर्मा नैं भगत गायकी की स्वरलिपि ऊ तैयार करी है।

अनुष्ठान

अखाड़े के गुरु भगत के प्रदर्सन के काजैं मंच निर्माण के लएं शुभ महूरत में एक कड़ी या बल्ली कूँ अनुष्ठानिक करबे के काजैं एक गड्ढा बनावैं। जाकैं पाछै मजबूत मंच बनायौ जाबै है। भगत के शुरु होवे ते चार-पांच घण्टा पहलैं अखाड़े के प्रमुख सदस्य श्रृंगारगृह में इकट्ठे है कैं दीप प्रज्जवलित करैं हैं। जो प्रदर्सन के समापन तानूं अनवरत जलतौ रहै है। जा स्थान पै पात्रन कौ श्रृंगार औरु वेश विन्यास होय है। लड़कान कूँ नजर नाँय लगै, बाकौ पूरौ विधान कियौ जाय है। गुरू द्वारा मंच पै सुरसुती वन्दना कैं पाछैं सब अभिनेता मिलकैं मंगलाचार गावै हैं। पुराने समै में मुख्य प्रदर्शन के पहलैं कोऊ कृष्णलीला होवै ई, परि अब नाँय होवै।

सांगीत के समापन पै अखण्ड ज्योति कौ मंत्रोचारण के संग गुरु या मुख्य संचालक सबरे शिष्यन की उपस्थिति में शांत करैं हैं। गुरु या मुख्य संचालक शिष्यन कूँ आशीर्वाद देवैं। हवन की भस्म आदि कूँ यमुना में प्रवाहित कियौ जाय। कोऊ अखाड़े में इष्ट देवी है, तौ कहूं भैरोंजी।

भगत की अन्तिम रस्म के रूप में जिन देवतान कूँ भगत की सफलता के काजैं आहवान कियौ गयौ उनकूं आदर सहित विदा कियौ जाए। हलुवा और उबले नमकीन चनान कौ परसाद बांटौ जाय। देवतान के रूप में 5 या 7 या 11 कन्या तथा लांगुरन कूँ खानौ खवायौ जाय। आजुकल खीर पूरी और लड्डू ऊ चलन में आ गए हैं।

जा प्रकार विधि विधान ते आगरे की भगत कौ प्रदर्शन होय है। कथावस्तु के रूप में आगरे की भगत परम्परा कौ जा प्रकार विभाजन कियौ जाए सकै-

(1) पौराणिक कथाएं

शिव विवाह, राजा बलि, सती अनुसुइया, उषा चरित्र, सत्यवान सावित्री, अर्जुन प्रतिज्ञा, नाग लीला, मान लीला, दान लीला, गोवर्धन लीला, कृष्ण सुदामा, इन्द्र सभा, लक्ष्मण परसुराम संवाद, राम केवट संवाद, चीर हरन, भक्त ध्रुव, सीताहरन, नारद कौ मोह आदि।

(2) ऐतिहासिक-

शकुन्तला, राजा विक्रमादित्य, हकीकतराय, राणा प्रताप, मीराबाई, भक्त सूरदास, भर्तहरि, हरिशचन्द्र, छत्रपति शिवाजी।

(3) लोक गाथान पै आधारित-

भक्त पूरनमल, कृष्ण गूजरी, मनहारी लीला, शीला, नरसी कौ भात, लैला मँजनू, हीर राँझा, बड़े मुनीर, रूप बसन्त, ढोला मारू, पंजाबी नौटंकी, सपेरा, मैना सुंदरी, आल्हा ऊदल को लड़ाई, सौदागर, पनिहारी आदि।

(4) राष्ट्रीय व सामाजिक-

झाँसी की रानी, सुभाष चन्द्र बोस, वीर भगत सिंह, उधम सिंह, गरीब किसान, निबल की लड़ाई, आजादी कैसै मिली, अटल प्रतिज्ञा, तुलादान, दहेज आदि।

यहाँ हम बेस सज्जा के काम आयबे वारे आभूसनन कौ और उल्लेख कर लैं। ये हैं- मुकुट, कलगी, सिरपेच, सीस फूल, झूमर, चोटी, करनफूल, झब्बो, झूमका, झूमरी, कुंडल, ऐरन, बारी, मूंदे, तिलक-बेंदी, हारन में सतलड़ी, पचलड़ी, मोहन माला, हँसली, गुलुबन्द, बाजूबन्द, पौंहु, अंगूठी आदि।

प्रमुख अखाड़े -

नमक की मंडी के अखाड़े में गुरु लाला काशीनाथ नैं बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त करी। लाला काशीनाथ और चौक कै श्री शिवलाल माधोनाथ के बीच अक्सर नौंक झौंक चलै ही, जैसैं कै है पहलवानन में। जब तानूं इनकी छेड़छाड़ नाँय होय, तब तानूं जनता कूँऊ मजौ नाँय आवै हौ। सांगीत में रोचकता ऐसेंई स्वस्थ प्रतिद्वन्दिता सौं आवै है। उपर्युक्त भगतकार परस्पर प्रेम भावऊ रखै हे और अपनी रचनान कूँ एक दूसरे कूँ दिखावे जावे हे अरु कांट-छाँट होवे पै बुरौ नाँय मानते हे। बिनकौ कथन हो 'भाई चारे के नाते सुनाये जा रहा हूं।' दूबे कौ कथन हो, 'राजा दुस्मन अच्छौ, नादान दोस्त बुरौ।'

आगरा की भगत में जो फटके बाजी कौ चल्ला है, बामें एक दूसरे की अहित की भावना नाँय होती। सब अपने अखाड़े कूँ सशक्त बनावे कौ यत्न करैं हैं, जानें एक चलन जेऊ है कै अखाड़े के सांगीतन कूँ सुरक्षित सन्दूकन में सँभार कैं गुरू रखै हे अरु बिनकूँ मुद्रित नाँय कियौ जातौ। एक अखाड़े कौ कलाकार दूसरे अखाड़े के प्रदर्सन में भाग नाँय लै सकै। लेकिन भगत कै जि हित में है कै बिनकी फोटो स्टेट

प्रतियाँ एक संग्रहालय में सुरक्षित कर शोधकर्तान कूँ ताँई सुलभ करी जाँय। इनमें ते अच्छी कृतीन का प्रकासन कर्‌यौ जाए। अच्छे कलाकारन कौ आदान प्रदान कर्‌यौ जाए अरु अखाड़े परस्पर मिलजुल कैं प्रदर्सनन कौ आयोजन करैं। भगत की मद्धम पड़ती भई परंपरा कूँ पुनर्स्थापित करबे कौ जेई तरीका है। पुरानी बस्तीन कै लोग नई-नई कालोनीन में जा बसे हैं अरु अपनी लोक परंपरा सौं कट से गए हैं। इतकूँ बस्तीन में साधनन की कमी आ गई है। अब व्यय साध्य भगत प्रदर्सन के स्थान पै छोटे-छोटे आयोजन होने चइएँ अरु या गायकी के बरस भर प्रशिक्षण कै लँए विद्यालय कायम होनौ चइए। राज्य सरकार अरु उत्तर प्रदेस संगीत नाटक अकादमी कूँ लोकमंच की रक्षा के लए हाथ बढ़ानौ चइए।

जैसौ कै अबई मैंनें बतायौ कै आगरा की भगत कौ श्री गणेश मोती कटरा कै गुरू जौहरीराम के अखाड़े सौं भयौ। बरस 1972 में या अखाड़े के गुरू रामनारायण अग्रवाल द्वारा लिखित 'श्री कृष्ण सुदामा' और 'स्वर सुन्दरी' के प्रदर्सन रामलीला के विसाल मैदान माँहिं 20 सौं 24 अक्टूबर तक चले। हजारन की संख्या में स्त्री-पुरुषन नैं याकौ आनंद लियौ। 6 फुट ऊँचौ मंच खूब सजायौ गयौ हो अरु बिजली के छोटे बल्बन की लड़ीऊ सजावट कौ अंग ही।

ताजगंज अखाड़े के संस्थापक उस्ताद नंदराम हे बिन्नैं अपनी पगड़ी हनुमानजी के चरनन में रख दई। हनुमानजी कूँ 'लहरी' ऊ कह्यौ जाए है। यासौं जि अखाड़ो नन्दराम लहरी के नाम सौं विख्यात भयौ। श्री कल्याणदास के स्वाँग 'हीर राँझा' के समै फूलन की सुंदर पाड़ मंच पै बांधी गई ही।

ऐतिहासिक बस्ती नूरी दरवाजा-अब याकौ नाम है भगतसिंह द्वार- उस्ताद सेढ़ासिंह के अखाड़े के कारन विख्यात है। श्री सेढ़ासिंह महाराष्ट्र सौं आए हे अरु बूरौ कूटते हे। बिनके भाई लेखराज नैं कई सांगीत लिखे- जिनमें पंजाबी नौटंकी, लैला मजनूँ, शीरी फरहाद प्रसिद्ध भये। जे सफल ख्यालगोऊ हे। या अखाड़े के अविवाहित सांवलदास भगत कूँ समर्पित हे। बिनकी 'वीर हकीकत राय' खूब प्रसिद्ध भई। पं. शोभाराम दीक्षित वा अखाड़े के सुयोग्य संचालक हे, किन्तु पढ़े लिखे नाहे, मौखिक रूप सौं बोलकैं सांगीत लिखवाते हे। वे अनपढ़ बूरौ कूटबे वारेन अरु खटीक, नाईन कूँ स्वयं तालीम दैबे हे। बे कलाकारन कौ स्वयं सिंगार करै हे। एक सज्जन के कथनानुसार बिन्नैं अनपढ़न कूँ भगत पढ़ाई और अखाड़े कौ नाम ऊँचौ कर्‌यौ।

पथवारी स्थित गुरु बूचासिंह कौ अखाड़ो अबऊ जीवन्त बनौ भयौ है। गुरू दुर्गाप्रसाद के डॉ. श्री भगवान शर्मा, बिनके भ्राता अरु पुत्र तथा स्वनामधन्य गुरू पं. डालचंद शर्मा के सुपुत्र पुखराज शर्मा नैं 'भरत बाहुबली' सांगीत कौ प्रदर्सन कर अपनी सक्रियता कौ परिचै दियौ है। पं. डालचन्द नैं नरसी भगत, दहेज, महाकवि तुलसीदास, रघुकुल की आन, महावीर चरित्र, दीनबंधु आदि सांगीतन की रचना करी। बे सुध्द रूप सौं लेखन कूँ समर्पित हे। बिनकी भाषा शुध्द प्रांजल अरु अलंकार युक्त है।

पथवारी अखाड़े कौ प्रारंभ बड़ौ रोचक है। श्री जमुनादास शायरी के शौकीन हे। विन्नैं छीपीटोला निवासी गुरु [illegible] तौ हूँ नाँय, [illegible] फेर जमुनाप्रसाद जी नैं भगत शैली में लेखन प्रारंभ कर दियौ।

कचहरी घाट अखाड़े के संस्थापक गुरू रूपकिशोर के संबंध मौहिं नाँय लिख्यौ जाय तौ आगरा की भगत कौ इतिहास अधूरौ है। विनके कवित्व आगरा के बाहरऊ धाक ही, कई राजे विनके सिस्य हे। जे भगत कै अतिरिक्त ख्याल लायकी ऊ कुसलता सौं रचै हे।

राजामंडी अखाड़े के गुरू सीताराम कूँ लोहामंडी के दुरगसिंह के अखाड़े बारे मानैं हैं। गंगलेश्वर तालाब पै विनके हाथ के लगाए पीपर के पेड़ की जेऊ पूजा करैं हैं। श्री दुरगसिंह श्री सीताराम केई सिस्य हे। विनकौ सांगीत 'शीला' भौत प्रसिध्द भयौ। गुरू दुरगसिंह जद्यपि अनपढ़ हे अरु नूरी दरवज्जे में दूध की दुकान ही। विन्नैं सिरकर, पंजाबी नौटंकी, हीर रांझा आदि लिखै। वर्तमान खलीफा फूलसिंह यादव नैं सती पार्वती, गुरू कौ ग्यान, बाल भगवान, शीला विवाह, कृष्ण जन्म, कृष्ण अर्जुन आदि लिखे हैं। याई अखाड़े के श्री मदारी लाल बड़े लोकप्रिय भए मिजाज के बड़े फक्कड़ हे। जब इच्छा भई तख्त, बांस, गैस कौ हण्डा लगाकैं गावौ सिरू कर दैवै हे। मंच पै बिनकूँ सजावट की जरूरत ना ही। हर तीसरे महीना बिनकौ स्वांग है जाय हो। विनके बारे में कह्यौ जाय है कै जे तौ कूँड़े भाँड़े हैं- इनते कौन टकराएँ। अन्ना गुरू के ढिंग तौ बांसऊ रखे रहते,चाहे जब विनकूँ लगाकैं स्वांग शुरू कर दैते।

संभावनाए-

भगत मात्र इतिहास नाँय है। ब्रज की संस्कृति अरु रंगमंच की जे जीवन्त परम्परा है, जो अबहु जारी है। जि बात अवस्य है कै याकौ प्रचलन कम है गयौ है। याकौ एक बाड़ौ कारन भगत की तालीम अरु प्रदर्सन कौ अत्यधिक व्यय साध्य होनौ है। फिरऊ जि देखकैं बड़ौ सन्तोस होय है कै ना तौ आ लोकमंच के समर्पित कलाकारन की कमी है, ना दर्सकन की। यामें बड़ी संख्या युवान की है। याकौ प्रमान नवम्बर 1995 में आगरा में भगत के मंचन के समै मिल्यौ। एम. डी. जैन कॉलेज के प्रांगण में श्री मुन्नालाल लिखित निर्देसित 'सत्य धर्म की विजय' तथा लोहामंडी में श्री फूलसिंह लिखित निर्देसित 'कृष्ण अर्जुन युध्द'' की प्रस्तुती भई। या क्रम कूँ जारी रखे जाबे की आयस्यकता है।

अखाडेन की प्रतिद्वन्द्विता पैऊ पुनर्विचार की जरूरत है। संगई विभिन्न अखाड़ेन के [illegible] सौं सहेजी गई भगत संबंधी सामग्री के संकलन अरु प्रकासन की दिसा मेंऊ कदम उठार [illegible]

और सबते महत्वपूर्न आवस्यकता जि है कै समकालीन हिन्दी रंगकर्म अरु [illegible] क्रिया कूँ विकसित कर्‌यौ जाए। ऐसी कछू संभावना जगीऊ है।

भगत मथुरा की

-श्री मोहन स्वरूप भाटिया

एक बेर हमन्नै हाथरस में स्वाँग देख्यौ हौ औरु एक बार आगरा के मोती कटरा में भगत दैखी है- कैसी भीड़ ही, तिल रखिवे कूँ जगै नांई। रात ते भोर ताऊं नगाड़ौ खनकतौ रह्यौ , रंगु तौ अपुनी मथुरा वृन्दावन की भगतु कौ ऊ अनूठौ है।

भगत ब्रज के लोकजीवन कौ सच्चौ मंच है। मथुरा की भगत की परम्परा कोऊ पाँच सताव्दी प्राचीन हतै। यौं सुन्तैं कै जब महाप्रभू बल्लभाचार्य नैं कछू ब्राह्मनन के लरिकन कूँ सिखाइ कैं रासलीला कौ प्रारम्भ कीनौं हौ तबई कोरी जातु के कछू लोगन्नैं अपनी मंडली बनाइ कैं लोकगायकी मैं कछू लीला कीर्नी। कोरी लोग देवी के भगत हौमैं हैं औरु जाई ते बिन्नैं भगत कह्यौ जाइ है। भगत में भक्ती भाव की कथा औरु देवी के इन भगत लोगन कै करिवे ते जा लोक मंच ए भगत कह्यौ जाइवे लगौ। पैहलैं भगत में भक्ती की ही कथा रैंहत ही परि धीरें-धीरै भगत में औरु कहानी किस्सा ऊ, जुरिवे लगै।

मथुरा की भगत में भक्ती और, धार्मिकता के नाम पै इत्ती परम्परा तौ अब ऊ ऐ कै जा दिनां भगत की तालीम सुरू हौइ है वा दिनां कढ़ैया औरु दैवी कौ थापा रखैं हैं औरु नगाड़ौ बजाइ कैं जोत जरामतैं। जि जोत भगत समाप्त हैवे तक जलती रहै है। हलुआ कौ भोग लगाइ कैं औरु अखाड़ेन में ऊ वांट्यौ जाइ है। जब भगत में खेल सुरू हौइ है तबऊ भक्ती की प्रधानता रहै है। गनेस जी कौ पूजन होइ हैऔर अपने इस्ट दैवी देवता की स्तुती करैं हैं मंगलाचरन में। एक भगत कौ मंगलाचरन जा प्रकार है -

अम्बा जगदम्बा उमा, करौ सर्व कल्यान।
हरि भ्रम संका भक्त के, देउ अभय वरदान॥
देउ अभय वरदान, दास को कृपा दृष्टि से हैरौ।
मैं अजान अति दीन, मात है सदा भरोसौ तैरौ।
तुम दरसन से है जगजननी, उपजत सुक्ख घनेरौ।
ध्यान धरत तुम चरनन कौ, होय दुक्ख दूर सब मेरौ॥

मथुरा में भगत कौ प्रारम्भ कब भयौ ? जाकौ कोऊ ठोस परमान तौ अबई नांइ मिल्यौ है परि

बड़े बूढ़ेन तैं जो एक बाति सुनिबे कूँ मिली है व बड़ी रोचक है और रोमांचक हू। यौं कही जाइ कै सन सत्तावन के गदर के बाद जब अंग्रेजन के दमन तें जनता कौ जोस नाँइ दब्यौ और क्रांतिकारीन की देस भक्ती की भावना बढ़ती गई तौ अंग्रेज शासकनै सोची कै काऊ तरियाँ भारतीयन्नैं राजनीति तें हटाइकैं बिलासी बनायो जाय जाते जि लोग हमारे गुलाम बने रहैं। बिनई दिनान की बात है, मथुरा के अंग्रेज कलक्टर के एक पेसकार हे- भगवती प्रसाद। अंग्रेज कलक्टर नैं भगवती प्रसाद ते कही कै तुम माने भए सायर हौ, कौऊ ऐसी सायरी करौ जाते हिन्दुस्तानीन कौ मन सरकार की तरफ है जाय। भगवती प्रसाद कलगी पार्टी के उस्ताद हे। बिन्नैं सब्जपरी कौ खेल खेल्यौ। जामैं खूब रंगीनी भरी ही और खूबई अंग्रेजन की तारीफ करी ही। सब्जपरी कौ खूब रंग जम्यौ। सरकार नैं भगवती प्रसाद यूँ दस हजार रुपया इनाम दियौ। भगवती प्रसाद देवी के उपासक हे और सब बिनकूँ भगत जी कह्यौ करते हे। बिनकौ लिखौ खेल भगत कहिलायौ। जा खेल के प्रभाव ते क्रान्तिकारीन कूँ चिन्ता भई और एक दिना भगत के बाद काऊ नैं बिनैं गोली मारि दई। जाके कछू दिनान तक फिर कोऊ भगत नाँहि भई।

मथुरा में भगत के प्रारम्भ की एक और बात सुनी जाय है। यौं कहबे कै बारौ की दीपचन्द नाम के एक आदमी नैं पंजाब में भगत जैसौ खेल देख्यौ परि वामें संगीत नाँइ हौ। बिना संगीत के बामें कछू रस नाँइ हो सौ काऊ नैं वामें कविता जोड़ दीनी और बाद में श्यामाचरन नैं संगीत डारि दियौ। मथुरा ते जाकौ दूरि-दूरि प्रचार हैवे लगौ।

कछू दिना बाद भगत में भक्ती साहित्य हटि कै बिलासी साहित्य कौ प्रभाव बढ़िबे लगौ। बिन्हीं दिनान में उस्ताद नथन जड़िया नैं शीरी फरिहाद और इन्दल हरन, नत्थीलाल नैं लैला मजनू, हीर रांझा, सियाह पोश, नीलम परी, सब्ज परी, लाल परी, दीन बादशाहजादी खेले गए। श्यामाचरन मुकर्जी यूँ जो कलकता सौं ब्रजवास करिबे कूँ आये हे, भगत में जा प्रकार के किस्से कहानी देखि कै दुखी भये। बिन्नै श्यामा श्यामसमाज की स्थापना कीनी और भक्ति रस के खेल खेले।

जैसैं- जैसैं भगत कौ प्रचार बढ़ती गयौ, संगीत प्रेमीन्नैं व्यवस्थित रूप तै काम सुरू कियौ और अपने अखाड़े बनाइ लीने। अखाड़े के उस्ताद कथते, बिनकैं सिस्य तालीम करते और कोऊ दिना तय करिकैं वाकौ प्रदर्सन कीयौ जांतौ। अब तें कछू बरस पैहलैं तक भगत में स्वाँग सजाइबे की परम्परा ही। अखाड़े के धनीमानी लोग भगत कै पात्रन्नैं हीरा, मोती, सौने, चाँदी के गहनेन तें सजामते और कोऊ ओरु नंगी तरवारि के साथ बिनैं मंच पै लै जाते।

मथुरा कै अखाड़ेन में गौर अखाड़ा गुरु गनिपा भट्ट को सौ साल तें पुरानी है। गनिपत भट्ट के एक खास सिस्य नारायण लाल की लिखी भई 'चन्द्रलता चन्द्रभानै' सन1866 में इलाहाबाद तें छापी गई ही।

बिनके सिस्य नथन अखाड़े के उस्ताद बने।

चौक बाजार के हरसुख मिश्र और मंडी रामदास के छीतूसिंह कौ अखाड़ौ ऊ जाई समै कौ है। छीतूसिंह के अखाड़े कै सिस्यन्नैं परम्परा तै हटि कैं दहेज, अहिंसा, बेमेल विवाह, पंचवर्षीय योजना जैसे विसयन पै भगत लिखीं।

वृन्दावन में जाहरमल रूप रसिक, द्विज माखनलाल राधारमन, किशोरीलाल औरु मदनमोहन बाँके के अखाड़े नामी रहे हैं।

भगत में जो साहित्य रचौ गयौ है बू हमारे काव्य की एक मूल्यवान थाती हतै। भगत में वीर रस, करुना रस, और श्रृंगार रस की प्रमुखता रही है। पहलैं भगत की भासा पै उर्दू कौ प्रभाव अधिक हो। जाकौ कारन जि हौ कै एक तौ स्वांग की भासा पै उर्दू कौ रंग हौ, दूसरे आजादी ते पहलैं हिन्दी कौ उतेक प्रभाव नांऔ परि स्वतंत्रता के बाद जो भगत रची गई हैं बिनमैं हिन्दी औरु अपनी ब्रजभासा कौ जम कैं प्रयोग भयौ है। जि चार पंक्ती सुनौं, कैसी साहित्यिक भासा हतै-

छवि निधि मधुकर गुंज पुंज नव कानन कुंज विचरणी।
पथ पाथोद सरोज मुखी, मृगनैनी चम्पक वरणी॥
तरणी तरल तरंग कंग उज्ज्वल अनंग हिय हरणी।
वेद विदित इतिहास हास निज जन मन पूरन करणी॥

भगत के मंच और गायकी में जहाँ मथुरा औरु हाथरस की परम्परा में समानता हतै म्हाँ आगरा की गायकी और मंच में अन्तर हतै। भगत के कलाकारन की वेस-भूसा साधारन ही होइ है। बसि, अन्तर इतेक होय है कै राजा तौ मुकुट लगाइ लेइ है और कोऊ कलाकार योद्धा कौ काम करि रह्यौ होइ तौ बू पगड़ी बाँधि लेइ है। भगत मैं जब स्वांग सजाइबे की परम्परा ही तब तौ जरूर बिन्नैं गहनेन ते लादि दियौ जातौ हौ परि अब तौ फूलन कौ सिंगार करैं हैं। भगत के कलाकारन की रूप सज्जा सीधी सादी ही होइ है। आंखन में काजर, गालन पै नैंक-नैंक लाली। जैसौ पात्र होइ वाके अनुसार जरूरी होइ तौ दाढ़ी मौंछ लगाइ लैं। पाउडर औरु सेलखड़ी ऊ चलै हैं। जि सब नाँइ होइ तौऊ कामु नाँइ रूकै है।

भगत के साजन में नगाड़ा सबते प्रमुख है। नगाड़ौ तौ साँची पूछौ तौ भगत नौटंकी कौ सिंगार है। वाकौ प्रान है। हारमौनियम, ढोलक, सारंगी, क्लारनैट,गिटार ऊ भगत में बजैं हैं।

भगत जनता कौ मंच है। सिनेमा, कवि सम्मेलन, संगीत सम्मेलन सबई ते अधिक मनभावतौ ऐसौ लोक मंच ए कैं वापैं ध्यान दीनौं जाइ औरु जाकौ विकास होइ तौ जि हमारे देस के राष्ट्रीय रंगमंच कौ रूप लै सकै है चौकै जामैं आडम्बर भौतई कम है और अपनी भासा, संगीत और अभिनय के कारन लोकमानस कूँ अपनी ओर, खेंचिबे की महान् सक्ती होत है।

-ज्ञानदीप, मथुरा (उ.प्र.)



स्वांग : एक परिचै

-श्रीमेवाराम कटारा

'बड़े करैं सो लीला, छोटे करैं सो स्वाँग' जैसी कहावत और स्वाँग रचिवौ, स्वाँग करिवौ, स्वाँग भरिवौ जैसैं भौत से मुहावरेन कौ प्रयोग तौ हम पग-पग पै करते आये हैं। खैर बड़ेन की लीला तौ बड़ेई जानैं, हम छोटेन के स्वाँग पै तौ विचार करई सकैं परि या बात पै हमनैं कबहुँ विचार नाँय करयौ, और करयौऊ है तौ भौत कम कै स्वाँग कहें काइते हैं। स्वाँग ब्रजलोक माँहि खेलो जायवे वारी एक रूपक विधा है ज्याकौ जनम संस्कृत के रूपक प्रहसन ते मान्यौ जाय सकै। तौ याते पहलें कै हम स्वाँग पै विचार करैं, प्रहसन के लच्छनन पै विचार करिवौ कछू जादा जरूरी है।

संस्कृत के लच्छन ग्रन्थन माँहि और नाट्य शास्त्रन में रूपक के दस भेद बताये गए हैं जिननैं ते प्रहसनऊ एक भेद है। सो प्रहसनऊ एक रूपक है। दशरूपककार नैं प्रहसन तीन भाँति कौ बतायौ है-सुद्ध, विकृत अरु संकर। सुद्ध प्रहसन कौ लच्छन या तरियाँ बतायौ गयौ है।

> पाखण्डि विप्र प्रभृति चेट चेटी विटाकुलम्।
> चेष्टितं वेष भाषाभिः शुध्दं हास्य वचोन्वितम् ॥ 3/54-55 ॥

सुद्ध प्रहसन माँहि पाखण्डी (ढोंगी) बाम्हन, नौकर-चाकर, नौकरानी और विट (लंपट, लुंगा, ठगिया, चालाक-चपूटे) जैसे पात्रन कौ जमघट होय। इनके भेस और भासा के अनुरूपई इनकी चेष्टाऊ पाई जाएँ। कथोपकथन हास्य भरे होंय। हास्य यानें अंगी रस होय। कन्दर्प-केलि प्रहसन या श्रेनी में समझ्यौ जाय सकै। विकृत प्रहसन कौ लच्छन यौं बतायौ गयौ है-

> कामुकादि वचनो वेषैः षण्ढ कंचुकि तापसैः ॥ 3/55 ॥
> विकृतं संकरञ्चीथ्या संकीर्णं धूर्त संकुलम् ।
> रसस्तु भूयसा कार्यः षड्विधो हास्य एव तु ॥ 3/56 ॥

जहां ऐसे नपुंसक (हीजरा), कंचुकी (रांडोल्या) और पाखंडी अरु ढोंगी तपसी पात्र होंय, जो कामुक लोगन के वचन और भेस धारन करें म्हाँ विकृत प्रहसन होय। धूर्त- चरित प्रहसन याकौ उदाहरन कह्यौ जाय सकै। कटक-मेलकऊ यायी श्रेनी कौ प्रहसन है। साहित्यदर्पनकार के अनुसार यामें नपुंसक

बिनके सिस्य नथन अखाड़े के उस्ताद बने।

चौक बाजार के हरसुख मिश्र और मंडी रामदास के छीतूसिंह कौ अखाड़ौ ऊ जाई समै कौ है। छीतूसिंह के अखाड़े कै सिस्यन्नैं परम्परा तै हटि कैं दहेज, अहिंसा, बेमेल विवाह, पंचवर्षीय योजना जैसे विसयन पै भगत लिखीं।

वृन्दावन में जाहरमल रूप रसिक, द्विज माखनलाल राधारमन, किशोरीलाल औरु मदनमोहन बाँकि के अखाड़े नामी रहे हैं।

भगत में जो साहित्य रचौ गयौ है बू हमारे काव्य की एक मूल्यवान थाती हतै। भगत में वीर रस, करुना रस, और श्रंगार रस की प्रमुखता रही है। पहलैं भगत की भासा पै उर्दू कौ प्रभाव अधिक हो। जाकौ कारन जि हौ कै एक तौ स्वांग की भासा पै उर्दू कौ रंग हौ, दूसरे आजादी ते पहलैं हिन्दी कौ उतेक प्रभाव नांऔ परि स्वतंत्रता के बाद जो भगत रची गई हैं बिनमैं हिन्दी औरु अपनी ब्रजभासा कौ जम कैं प्रयोग भयौ है। जि चार पंक्ती सुनौं, कैसी साहित्यिक भासा हतै-

छवि निधि मधुकर गुंज पुंज नव कानन कुंज विचरणी।
पथ पाथोद सरोज मुखी, मृगनैनी चम्पक वरणी॥
तरणी तरल तरंग कंग उज्ज्वल अनंग हिय हरणी।
वेद विदित इतिहास हास निज जन मन पूरन करणी॥

भगत के मंच और गायकी में जहाँ मथुरा औरु हाथरस की परम्परा में समानता हतै म्हाँ आगरा की गायकी और मंच में अन्तर हतै। भगत के कलाकारन की वेस-भूसा साधारन ही होइ है। बसि, अन्तर इतेक होय है कै राजा तौ मुकुट लगाइ लेइ है और कोऊ कलाकार यौद्धा कौ काम करि रह्यौ होइ तौ बू पगड़ी बाँधि लेइ है। भगत मैं जब स्वांग सजाइबे की परम्परा ही तब तौ जरूर बिन्नैं गहनेन ते लादि दियौ जातौ हौ परि अब तौ फूलन कौ सिंगार करैं हैं। भगत के कलाकारन की रूप सज्जा सीधी सादी ही होइ है। आंखन में काजर, गालन पै नैंक-नैंक लाली। जैसौ पात्र होइ वाके अनुसार जरूरी होइ तौ दाढ़ी मौंछ लगाइ लैं। पाउडर औरु सेलखड़ी ऊ चलै हैं। जि सब नाँइ होइ तौऊ कामु नाँइ रूकै है।

भगत के साजन में नगाड़ा सबते प्रमुख है। नगाड़ौ तौ साँची पूछौ तौ भगत नौटंकी कौ सिंगार है। वाकौ प्रान है। हारमौनियम, ढोलक, सारंगी, क्लारनैट,गिटार ऊ भगत में बजैं हैं।

भगत जनता कौ मंच है। सिनेमा, कवि सम्मेलन, संगीत सम्मेलन सबई ते अधिक मनभावतौ ऐसौ लोक मंच ए कैं वापैं ध्यान दीनौं जाइ औरु जाकौ विकास होइ तौ जि हमारे देस के राष्ट्रीय रंगमंच कौ रूप लै सकै है चौकै जामैं आडम्बर भौतई कम है और अपनी भासा, संगीत और अभिनय के कारन लोकमानस कूँ अपनी ओर, खेंचिबे की महान् सक्ती होत है।

-ज्ञानदीप, मथुरा (उ.प्र.)



स्वांग : एक परिचै

-श्री[illegible]

'बड़े करैं सो लीला, छोटे करैं सो स्वाँग' जैसी कहावत और स्वाँग रचिवौ, स्वाँग करिवौ, स्वाँग भरिवौ जैसैं भाँत से मुहावरेन कौ प्रयोग तौ हम पग-पग पै करते आये हैं। खैर बड़ेन की लीला तौ बड़े ई जानैं, हम छोटेन के स्वाँग पै तौ विचार करई सकैं परि या बात पै हमनैं कबहुँ विचार नाँय कर्यौ, और कर्यौऊ है तौ भौत कम कै स्वाँग कहैं काइते हैं। स्वाँग ब्रजलोक मौंहि खेली जाइबे वारी एक नाटक विधा है ज्याकौ जनम संस्कृत के रूपक प्रहसन ते मान्यौं जाय सकै। तौ याते पहलें कै हम स्वाँग पै विचार करैं, प्रहसन के लच्छनन पै विचार करिवौ कछू जादा जरूरी है।

संस्कृत के लच्छन ग्रन्थन मौंहि और नाट्य शास्त्रन में रूपक के दस भेद बताये गए हैं जिन्नें ते प्रहसनऊ एक भेद है। सो प्रहसनऊ एक रूपक है। दशरूपककार नैं प्रहसन तीन भाँति कौ बतायौ है-सुद्ध, विकृत अरु संकर। सुद्ध प्रहसन कौ लच्छन या तरियाँ बतायौ गयौ है।

पाखण्ड विप्र प्रभृति चेट चेटी विटाकुलम्।
चेष्टितं वेप भाषाभि: शुध्दं हास्य वचोन्वितम् ॥ 3/54-55 ॥

सुद्ध प्रहसन मौंहि पाखण्डी (ढोंगी) बाम्हन, नौकर-चाकर, नौकरानी और विट (लंपट, लुंगा, ठगिया, चालाक-चपूटे) जैसे पात्रन कौ जमघट होय। इनके भेस और भासा के अनुरूपई इनकी चेष्टाऊ पाई जाएँ। कथोपकथन हास्य भरे होंय। हास्य यामें अंगी रस होय। कन्दर्प-केलि प्रहसन या श्रेनी में समझ्यौ जाय सकै। विकृत प्रहसन कौ लच्छन यौं बतायौ गयौ है-

कामुकादि वचनो वेपै: पण्ढ कंचुकि तापसै: ॥ 3/55 ॥
विकृतं संकराद्वीथ्या संकीर्णं धूर्त संकुलम् ।
रसस्तु भूयसा कार्य: पड्विधो हास्य एव तु ॥ 3/56 ॥

जहां ऐसे नपुंसक (हीजरा), कंचुकी (रांडोल्या) और पाखंडी अरु ढोंगी तपसी पात्र होंय, जो कामुक लोगन के वचन और भेस धारन करें म्हाँ विकृत प्रहसन होय। धूर्त- चरित प्रहसन याकौ उदाहरन कह्यौ जाय सकै। कटक-मेलकऊ यायी श्रेनी कौ प्रहसन है। साहित्यदर्पण कार के अनुसार यामें नपुंसक

कंचुकी और तापस लोग कामुक चारन और जोधान की भेसभूसा और बोलचाल कौ अनुसरन करें। दोनूंन कौ मेल ज्यामें होय और जो धूर्त (चालाक)पात्रन ते भर्‌यौ होय बाते संकर और संकीर्ण प्रहसन कहैं। यामें बीथि अंगन की मिलावट होय। कविराज विश्वनाथ नैं अपने साहित्यदर्पण में प्रहसन कौ परिचै दैंते भये बतायौ है कै प्रहसन कौ इतिवृत्त अधम प्रकृति के नायकन कौ होय और कवि लेखक की कल्पना ते जनम्यौ भयौ होय। यामें न तौ आरभटी बृत्ति होय और न विष्कम्भक और प्रवेशकन कौई विधान होय। बीथी अंग योजना यामें जरूरी जांच होय। भरत मुनि के अनुसार ज्यामें वेसा, विट, चेट बन्धकी नपुंसक और विदूषक जैसेन कौ चरित चित्रन होय जिनकौ पहराव, सुभाव अरु करतूतन कौ ज्यों की त्यों अनुकरन कर्‌यौ जाय। या प्रहसन भेद में अकेले हास्यरस कौई प्रयोग होय। जि हास्य रस पूरी तरियाँ अपने छहों भेदन माँहिं उपनिवद्ध होनौ चइयै।

ई बात तौ रही प्रहसन की। अब हम स्वाँग पै सोचें। सवते पहलें स्वाँग कौ अरथ जानिवौ जरूरी ए। स्वांग सुद्ध प्रसहन कह्‌यौ जाय सकै क्यौंकै कामें वे सवई लच्छन पाये जायें जो प्रहसन में होंय। 'नालन्दा हिन्दी शब्दकोश' मांहि स्वाँग के अर्थ लिखे हैं- 1. काऊ के अनुरूप धारन कर्‌यौ जायवे वारौ बनावटी रूप अरु नकली भेस।

2. परिहास सौं भर्‌यौ खेल तमासौ 3. नकल करिवौ कै निकारिवौ 4. लोगन कूँ छलिबे के ताँईं बनायौ भयौ रूप और कर्‌यौ गयौ आडम्बर।

न्योंतौ स्वाँग के ये सबई अर्थ होंय और च्यारोंई लच्छन पाये जाँय परि दूसरौ अर्थ हमारे बरनन करे जायवे बारे विसै ताँईं जादा उचित। स्वाँग कौ परिचै दैंते भये हिन्दी साहित्य कोश माँहिं लिख्यौ है- ''स्वाँग लोक-नाट्य का अत्यन्त जनप्रिय रूप है। यह प्राय: गाँवों की निम्न जातियों- भंगी, धोबी, धानुक, कुर्मी, चमार, पासी, बाछी, बारी आदि के द्वारा समूह नृत्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें पुरुष-पात्रों की बहुलता होती है।''

डॉ. सत्येन्द्र तनेजा नें स्वाँग की दो साखा बताई हैं (1) हरियानवी-स्वाँग सैली, ज्यामें मंच की साजसज्जा भेषभूषा और प्रस्तुति में सादापन होय और अनौपचारिकता पाई जाय (2) हाथरसी स्वाँग सैली में हाँसी ठट्‌ठे, बुझावती और फवतीन सौं मनोरंजन कर्‌यौ जाय। हाथरस, आगरौ और कानपुर याके केन्द्र माने गये हैं।

भारतेन्दु जी अपनी रंग-चेतना कौ एक सोत लोक नाटक मानैं जिनकौ मंचन चौपार पै, मन्दिर के चौंतरा पै, काऊ चौक में और काऊ चौराहे पै कर्‌यौ जाय। स्वाँग, सांगीत, भगत, नौटंकी, ख्याल, तमासौ माच और मवई ज्याके लोकप्रिय रूप कहे जाय सकैं। इन परम्परासील नाटकन की रंग पद्धति बहुआयामी होय। यामें सूधौ सौ वस्तु विधान होय, कौतूहल और कौतुक पैऊ जोर दियौ जाय, परि नाच और संगीत कौ मेल याकौ कथान कूँ कछू ढीलौ करि दे। संगीत तौ याके प्रान होय। लोक-धुनन की

विविधता और रंगीनीन की तौ कछू सीमाई नाँय। फिरऊ लावनी, चौवोला, सोरठा अरु दोहा कौ जादा प्रयोग होय।

डॉ. दशरथ ओझाऊ इन नाटकन्नैं हिन्दी नाटक कौ स्रोत मानते भये लिखें- "हिन्दी नाटक की परम्परा का मूल स्रोत यह जन-नाटक ही हैं, जो स्वाँग आदि नाम से अपने प्राचीन रूप में अव तक विद्यमान हैं। क्रमश: इन जन-नाटकों की एक शाखा ने विकसित होकर साहित्यिक रूप धारण किया।" (हिन्दी नाटक: उद्भव और विकास पृ.42) । या बात कौ पानी भरते भये डॉ. गिरीश रस्तोगी नेंऊ आगे लिखौ ए- "परन्तु यह धारा हिन्दी की ओर मुड़ गई। यद्यपि ये लोकनाटक ब्रजभाषा में ही खेले जाते थे और आज भी लोकभाषा में ही प्रचलित हैं। " (हिन्दी नाटक:सिध्दान्त और विवेचन) स्वाँगे बुझावत, कहावत, पहेली, फवती, हाँसी-ठट्ठे, धौल-धप्पे और नकल काढ़िवौ खूव मनें राजी करिवे वारौ अरु रोचक वनायदें। सूत्रधार अरु विदूपक चाय काऊ नाम ते आमें परि वे अपनी भूमिका भौत प्रभावी और असरदार निभामें। स्वाँग जनमानसै देखिकेंई खेले जाँते सो कवहुँ-जवहुँ असलील रूपऊ धारन कर लेंते। सो या कारन ये साहित्य माँहिं असली रूप में अपनी ठौर नहीं वनाय सके ज्याते स्वांग खेलिबे बारे बदनाम है गये। याकौ सर्मथन करते भये डॉ. ए. वी. कीथ नें अपनी पोथी 'संस्कृत ड्रामा' में लिख्यौ कै बिनकौ व्यवसाय भौत बदनाम है चुक्यौ ज्याके कारन विन्नैं ऊंचे बर्ग बारेन के भौत से अधिकारन ते हाथ धोनों पर्यौ च्यों कै स्वाँग अनपढ़ लोगन के ताँईं बिना पढ़े लिखे गमार और नीचे वर्ग के लोग खेलें सो यामें कोऊ सालीनता कौऊ ध्यान नाँय राख्यौ जाय। नंगौपन, असलीलता, फूहर सिंगार, भड़ुवागिर्दी, गारी गलौंच कौ पुट आई जाय। या कारन जि विधा गामन मेंई जादा प्रचलित है सोऊ होरी जैसैं उच्छवन के समैं जव किसान अपनी फसलैं उठाय कैं निरचू है जांय तौ सुस्तौ सौ मनोरंजन करिवे ताँईं और अपनी मन को निकारिवे ताँईं जहाँ ठौर मिलो म्हाँई रात कूँ रोटीपानी ते निरचू हैकें सिरू करिदैं। ठौर ठौर पै अघाने वर जाय। देखिवे वारे ताप्यौ करैं और हँस्यौ करौ। देखिवे वारे ज्यों ज्यौं हँसे त्यों त्योंई स्वांगिया जादाभाँड़ी तारैं और इतेक हँसामें कै लोग लोटपोट है जाँय और पेटन में वल परि जाय। भौतसेन कौ तौर पेट दूखवे लगै और स्वाँस भरि आवै। सामाजिक (दिखवैया) स्वाँगियान की विशेप स्वाँग को विशिष्टता करते भये खुसी ते चिल्लाय उठै। जव कवहुँ देर लगजाय कै प्रभावहीन प्रदर्शन होय तौ हल्ला मचाय दैं चौंकै सामाजिक गांमन के और अनपढ़ तौ हौंइये संगई ल्हौरे मोटे खरे खोटे सवई तरह के हांय। ऐसेई स्वाँग के अभिनेता हांय जो ओछी चड़ी सव तरह की वात कह सकैं। न्यौं कहौ ऐसेई पद्दू पुजारी और ऐसीई नकटी देवी।

न्यों तौ स्वाँग नाटक के सिगरे प्रयोजनन नें पूरौ नांय करै परि फिरऊ भौत कछू याते पायौ जाय सकै। सो नाटक के प्रयोजनई याके प्रयोजन हें। कनती वढ़ती है सकैं। जव नारद जी नें मृत लोक की यात्रा करी तौ देख्यौ कै विद्वान लोग तौ अपनौं मन 'काव्य शास्त्र-विनोद' ते राजी करि लैं परि अनपढ़ और गमारन कौ समै तौ नींद और कलह मेंई वीतै सो विन्नैं ब्रह्माजी ते कही। ब्रह्मा जी नैं नाट्य ते कहकैं पांचवे वेद नाट्यशास्त्र की रचना करवाई ज्यानें प्रयोजन बताते भये कही-

दु:खार्त्तानां श्रमार्त्तानां शोकार्त्तानां तपस्विनाम्।
विश्रान्ति जननं काले नाट्यमेतन्मया कृतम्॥

दुखिया, काम ते हैरान भये और थके माँदे, सोक में परे विचारे गये बीते लोगन कूँ स्वाँति पहुँचायवे ताँई नाटक की रचना करी। जब गामन के किसान–मँजूर, लोग–लुगाई अरु बाल बच्चा दिनभर के घर–बाहर के काम ते थक जाँय, गिरस्त के बोझै ढोमत–ढोमत जब हिए पक जाँय, अनेकन दु:खन्नैं अरु सोकन्नें झेल–झेल कें जब जीवन की राह पै रुक जाँय तौ रात कूँ रोटीपानी ते निरचू हैकैं बिना मंच केई सादा से साधनन ते ई हाँसी ठट्ठे करिबे तांई स्वाँग जमाय बैठैं और सब दुख सोक और हैरान गतै भूल कें हाँसी की लहरन में हिलोर लैवे लगें ज्याते अगले दिना के काम में फुर्ती सी आय जाय और मन में एक उछाह सौ समाय जाय।

या श्रेनी के रूपकन कौ अपनौं एक विसेस उपयोग होय जैसौ कै 'नाट्य दर्पणकार' नें बतायौ है– 'प्रहसनेन हि पाखण्डि प्रभृतीनां चरितं विज्ञाय विमुख: पुरुषो न भूयस्तान् वंचकान् उपसर्पति।' मतलब जिए कै दम्भ पाखण्ड जैसें दुरगुनन बारे नायक चरित कौ जो चित्रन होय बाते सामाजिक (देखवे वारौ) सीख लै सकै कै दम्भी पाखण्डीन के फन्दान ते सदाँ बचनौं चइयै।

स्वाँग माँहि सुद्ध हास्य पायौ जाय ज्यामें व्यंग्य की सम्भावना तौ भौतई कम होय चौंकै कै याकौ प्रयोजनई दिखवैयान्नें राजी करिवौ है और हास, परिहास, उपहास ते मन भरिवौ है। न्यों कहौ दुखन की खाई में ते निकारकें 'हास' ते जीवन भरिवौ है। भौत से विद्वानन कौ ऐसौ विचार रह्यौ है कैं हाँसी–मजाक मेंई आदमी कूँ अच्छी सीख दई जाय सकै। भारतेन्दु जी नैंऊ जि बात कहीए– ''साँच माँच नाटक के प्रचार ते या धरती कौ भौत कछू भलौ है सकै..... दिल्लगी ते इन लोगन कूँ जैसी सीख दई जाय सकै वैसी और काऊ तरह ते नांय दई जाय सकै।'' पं. किसोरी लाल गोस्वामी कौ कहवौ हैकै– 'नाटक ते बढ़िकैं ऐसौ दूसरौ कोऊ उपाय नांय ज्याते सर्व साधारन कूँ सामाजिक दसा कौ जीमतौ जागतौ चित्र दिखाय कें वाकौ पूरौ–पूरौ सुधार कर्‌यौ जाय सकै।' पं. अम्बिका दत्त व्यास तौ नाटक के तीनई लच्छ मानें– छनिक मनोविनोद, देस की उन्नति अरु धार्मिक उपदेश। स्वाँग इनमें ते पहलै लच्छै पूरौ करै। बिना सोचेई दूसरे लच्छ थोरे–भौत पूरे होंय तौ होंय परि स्वाँगियान्नें या बात की चिन्ता नाँय रहै। काशीनाथ जी खत्री 'मन वहलाव के संग उपदेश कौ साधन' मानैं। प्रहसन लेखक देवकी नन्दन त्रिपाठी जीऊ याकौ अनुमोदन करैं। डॉ. गिरीश रस्तोगी के विचार ते ''स्वाँग प्रहसन आदि प्राय: मौखिक ही हैं जिन्हें लोग मनोरंजन के लिए खेलते थे। उनमें किसी समस्या को लेकर नहीं चलते।'' ऐसौ रूपक 'क्वचिध्दास्यम्' की पूर्ति करतौ भयौ भरत मुनि के विचार ते–

क्लीवानां धार्ष्ट्यं जननुत्साह: शूरमानिनाम्।
अवोधानां विवोधश्च वैदग्ध्यं विदुषामपी॥

के प्रयोजन कूँ पूरौ करै। याही सुद्ध मनोरंजन के ताँई पहली अप्रेल के दिना भारतेन्दु जी कोऊ

न कोऊ स्वाँग जरूर रचते। कवहुँ लुगाई कौ भेस धरिके फोटू खिंचवामते, कवहुँ लाट साव के दरवार में मसालची कूँ अपने लत्ता पहरायकेहु पठामते। एक वेर तौ विन्नें 'मूसा पैगम्बर' कौ स्वाँग रच्यौ और दूजी वेर 'थके म्रादे राही' कौ स्वाँग करिकहु सब अचरज में डार दिये।

भारतेन्दु जी नैं नाटक के च्यार उद्देश्य बताए हैं जिनमें पहलौ हास्य मान्यौ गयौ है। विन्नैं आगे कही कै या हास्य माँहिं दिल्लगी मुख्य होय और सीख गौण होय। सो स्वाँग 'बहुजन सुखाय बहुजन हिताय' बारौ रूप 'बहुजन सम्प्रेषणाय' कौ सबल साधन बन्यौ रह्यौ है। भारतेन्दु जीऊ 'बहुजन हिताय' याकौ जादा ते जादा सदुपयोग करनौं चाहते चौंकि परम्परासील नाटक कौ लोकधर्मी सरूप सास्त्रन के चौखटा ते अलग थलग अरु स्वच्छन्द रूप सौं जि उच्छव, वार-त्यौहार अरु रीत रिवाजन पै आधारित है। याही स्वच्छन्द रंग विधान नें भारतेन्दु जी कूँ अनुप्रानित कर्‌यौ। लोक नाटक कौ प्रयोजन बताते भये, जो स्वाँग कौऊ प्रयोजन कह्यौ जाय सकै, डॉ. सत्येन्द्र तनेजा नें लिख्यौ- 'परम्परा शील नाटक का प्रयोजन प्रेक्षक को 'दिल्लगी और शिक्षा' देना है। इन उद्देश्यों के मुताबिक इनकी रंग परिकल्पना की प्राण शक्ति में खुलापन, ताजगी, जीवन्तता और अभिनेता वक्ता और श्रोता का जैसा पारस्परिक सौहार्द यहाँ होता है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है', या प्रकार के नाटकन में 'सिंहावलोकन पद्धति' कौ कुसल प्रयोग कर्‌यौ गयौ है।

जहाँ तानूँ याके प्रयोजन की बात है, यामें सुद्ध हास्य तौ होइयै संगई कबहुँ-कबहुँ भौंड़े से व्यंग्य कौऊ पुट आय जाय परि बू व्यंग्य और स्थिति कौ चित्रन जीवन में बदलाव लाय सकै। भौत से दो अर्थ धारे ऊ वाचन होंय। यामें जो धूर्त लंपट लुंगा रैमाले पात्र होंय बिननैं देखिवे बारे बिनके छल कपट ते सचेत है जाँयचौंकि स्वाँग कौ अर्थई भेस बदल कैं धोखौ दैवौ है। सो धूर्त लोगन के स्वाँगन्नैं देखि देखि कें बिन्नै समझिवे की छिमता आय जाय ज्याते वे सचेत है जाँय।

स्वागँ एक अलिखित खेले जायवे बारी नाटक-विधाए। और जो रचना लिखी भई नाँय होय बाकी का समीच्छा परि फिरऊ कछू न कछू तरह ते तौ पाठकन तक नहीं तौ दरसकन तानूं तौ पहुँचैइयै। सो याकीऊ नाटक के सास्त्रीय तत्तन के आधार पै समीच्छा करी जाय सकै। डॉ सत्येन्द्र तनेजा कौ कथन है कै नाटक कूँ पढ़िवे की वस्तु मानिवे कौ मोह एक विशेष वैचारिकता की निपज है जो खास तौर सौं विश्व विद्यालय में पढ़िवे -पढ़ायवे अरु खोजवीन करिवे के ताँई बरसन सौं जुर्‌यौ भयौए। ऐसी स्थिति माँहि सबई तत्तन ते बाँधे भये सास्त्रीयता के चौखटा सौं छूटिवौ असम्भव है। सो कैसेऊ विसै कूँ कैसौऊ नाम दैदियौ जाय बू सास्त्र की चपेट में आइ जाय। परिनामसरूप एकरूपता अरु पुनरावृति जैसैं भौत से दोस सामई आयवे लगैं। याकौ मतलब जि नाँय कै सास्त्रीय समीच्छा ते हम नट रहे हौय और जिम्मेदारी ते पीछे हटि रहे होंय। क्योंकै ऐसौ करिवौ न तौ खैंरे हाथ कौ मैलै और न ई संभव है।

तौ का ऊपर की बात कौ जि अरथ निकार्‌यौ जाय कै नाटक कौ छेत्र खाली रंग मंचइयै और नाटक की समीच्छा बाके प्रदरसन पै मात्र टिप्पणी करिवौय ? तनेजा [illegible] कौ मानिवौय- ''नाट्यानभति का सम्पूर्ण साक्षात्कार रंगमंच पर होता है और रंगमंच पर ही [illegible]

इन सब बातन कौ एकई सार है कै रचना चाय कोई होय- स्त्रव्य होय चाय दृश्य, लिखी होय चाय बिना लिखी, सास्त्रीय समीच्छा तौ करी ई जाय सकै सो हमऊ न्ह्यां या लेख में स्वाँग कौं सास्त्रीय तत्तन की कसौटी पै कसनौं चाहैं और समीच्छा के चौखटा में मढ़नौं चाहैं कै स्वाँग कहाँ तानूँ रूपक है और कहाँ तानूँ नाटक है , कौन सी श्रेणी माँहि धर्‌यौ जाय सकै।

नाटक चाय काऊ तरह कौ होय बाकी कोऊ न कोऊ कथावस्तु तौ होइ है। सबते पहलैं कथा-वस्तु वेद के आख्यानन पै भयौ करती फिर पुरानन ते, इतिहास ते, रामायन महाभारत में ते लैवे लगे ता पाछैं काल्पनिक कथानक लोक सौं जुरे भये लैवे लगे। स्वाँग की कथावस्तु काल्पनिक तौ होइयै परि बिना लिखी होय जो स्वाँगिया की बाई समैं ऐन औसर पै सोची भई होय, एकदम ताजा और हथगढ़ू। न्यों कहौ कै औसर कै बातावरन कैं अनुरूप सोच्यौ भयौ 'आशु-मंचन' होय और सबई औपचारिकतान ते दूर होय। कथानक कोऊ समस्याय लैकैं नाँय चलै। कोऊ ऐसी लोककथा, चुटकला, परसोकला, मसखरी, लोकगीत, लोक संवाद लियौ जाय ज्याते देखिवे वारेन कौ मन राचौ होय और विनोद सुद्ध साँचौ होय। लोक अभिनेतान की औसर परे की सूझ-बूझ पै म्हाँ की म्हांई रच्यौ जाय जैसैं- नाँय मानें मेरौ मनुआँ मैं तौ मेलौ देखन जाऊँगी' गीत लै लियौ और यायी आधार पै एक नारी पात्र और एक पुरुष पात्र, दोनूँन में संवाद होय। पुरुष पात्र नारी कौ मेलौ देखिवौ निषेध बतावै तौ नारी बाय उचित ठहरावै। दोनूँ अटेक करि बैठें हैं, नांच-नांच कैं और गाय-गाय कैं अपनी-अपनी बात कूँ कहैं और फिर आपस में झगरवे लगे जाँय, मारा पीटीऊ करि डारैं। चीख चिल्लाहट और रोवा पीटीऊ होय। रोमते समै ऐसे संवाद बोलैं ज्याते लोग हँसैं। याही तरियाँ सामन के लोक गीतन पै, देवी के लांगुरिया पै, डाकिया और विरहनी संवाद, धोवी के गधा खोयवे कौ प्रसंग, अनपढ़ मास्टर की चटसार, रेलगाढ़ी में पहली पोत जात्रा करिवे वारे भोरे भारे मेवाती कौ किस्सा जैसे ल्हौरे-ल्हौरे हाँसी ठट्ठा भरे प्रसंगन्नें लैकें स्वाँग खेलिवे लगि जाँय। यामें कथानक एकई हैवौ जरूरी नाँय। कथा ते कथा ऐसे जुरी होय जैसैं ऊट की पूंछते ऊँट। अलग-अलग प्रसंगन कौ स्वाँग रचैं। या तरियाँ जि 'आशु इतिवृत्त' बिना लगाम भयौ बहते पानी की नाँई जितकूँ राह मिलजाय बितई कूँ धार परिजाय। कथानक लोक में तेई उठायौ जाय अरु साधारन सी बातन कौ चित्रन कर्‌यौ जाय।

नाटक प्रभावी बनायव के ताँई बामें बोले जायवे वारे संवादन कौ असरदार हैवौ भौत जरुरी है। स्वाँग के संवादऊ कथा की नांई औसर परे के हथगढ़ऊ और तत्कालीन वातावरन के अनुरूप होंय। हास्य भरे संवादई स्वाँग की जान होंय। साधारन रूप ते तौ ये गद्यमें ई होंय। बीच बीच में तुकऊ मिलायकैं बोलें। आशु संवाद सुतन्त्र तौ होंय परि महत्व भरी भूमिका निभामें। इन संवादन में कही गई बुझावत कहावत, मुहावरे, पहेली, फवती हाँसी ठट्ठौ और बिनके संगई धौल धप्प और नकल प्रदर्शनें खूब मनोरंजक और रोचक बनाय दैं। स्वाँग में संवाद ल्हौरे-ल्हौरे, हंसायवे वारे हिरदै में पार हैवे वारे, और साधारन बोलचाल की भाषा में होय। ये संवाद जनमानस की भावना अरु स्तर के अनुकूलई औसर देख कैं बोले जायें सो असलील और दो अर्थ वारे अरु व्यंग्य भरेऊ बन जाँय। परि या सबकौ लच्छ एकई

है- हँसायवौ। और कोऊ दूसरौ उद्देश्य नाँय होय।

ठौर-ठौर पै संवादन में तुक मिलायवे कौऊ जतन कर्यौ जाय, गाय कैंऊ बोल्यौ जाय। याते ऐसे ढंग ते सिरु करैं कै असलील सी लगै ज्याते लोग हँसिजाँय परि याते संभार लैं और सुधार लैं। कहूँ-कहूँ तौ संवाद पद्य मेंऊ हाँय परि इनमें कै तौ तुकबन्दी होय कै चौबोला बहरतबील जैसे लोक छन्दन कौ प्रयोग होय। कहूँ कहूँ तौ संवाद काऊ अच्छे से साहित्यिक नाटक तेऊ बढ़िके अच्छे अरु प्रभावी लगिवे लगैं। ये संवाद न तौ लिखे भये हौंय और न ई पहले ते सोचे भये हौंय। यामें तौ स्वाँगियाई अभिनेता होय वूई नाटककार, कथाकार अरु संवाद लेखक हाँय। संवाद याई की तुरत बुद्धि की सूझ हाँय। संवादन कौ प्रभावी हैवौ अभिनेता की सूझबूझ और तुरत-फुरवे वारी बुध्दि पैई निरभर करै। ठौर-ठौर पै कहावत और मुहावरेन कौ प्रयोग कर्यौ जाय। संवादन में अभिनेता (स्वाँगिया) पात्र के अनरूपई रूपक और धरै, हूबाहूब सुर निकारै। वाकौ जैसौ गरौ, बोली और बोलिवे की सैली होय वैसौई बोलै। न्यौं कहौ कै पात्र की नकल सब तरह सौं सजीव करिवे कौ जतन कियौ जाय। जैसैं कोऊ सेठ पात्र तौ वाकी दबी भई सी बोली की नकल करी जायगी।

कथानक काल्पनिक और ल्हौरौ हैवे के कारन नायक नायिका ऐसे नाँय होंय जिन्नैं काऊ सास्त्रीय श्रेणी में रख सकैं। यामें नायक-नायिका और पात्र नीची श्रेणी के होंय। नायक-नायिका इतेक महत्वहीन होंय कै और दूसरे पात्र विनकौ न तौ कोऊ सम्मान करैं और न विन्नैं अपने ते बड़ौ मानैं। न्यौं समझौ कै सब एकई फर्स पै बैठवे वारे हैं। नायक न तौ धीरोदात्त होय न धीरोध्दत्त, न धीर ललित और न धीर प्रशान्त। धीर तौ होई नाँय हाँ उद्धत जरूर मिलैं। नायकऊ धूर्त, थोथी बात करिकेवारे, मिथ्या व्यौहार करिवे वारे गप्पी, छलिया, ठगिया, झाँसेबाज, टठोर्‌या, हँसोर्‌या, म्हौ मसकोर्‌या होंय। भाषा में कोऊ सालीनता नाँय होंय। स्वाँग को नायिकाऊ मानिनी सी अरु कामिनी सी होय। ई स्वकीया है सकै और परकीयाऊ। जेष्ठा और कनिष्ठाऊ भाँत मिलैं। ये समाज के नीचे वर्ग की होय जो अपने पति तेऊ गारी देवे और बुरी भली कहवे में नाँय चूकैं। दूसरे पात्रऊ यासी लच्छन के होंय। सबई अनपढ़, असभ्य और अभद्र होंय। सूत्रधार और विदूपकऊ होंय। वे चाय काऊ नाम तेआवैं परि अपनी धाक जमाय जाय। वैसे तौ स्वाँग के सबई पात्र विदूपक जैसेई होंय, सबई हँसायवे कौ काम करैं परि एक विदूषक कौ हैवौ भौतई जरूरी ऐ, वूई सबरे स्वाँग पै और दिखाइन के मन पै छायौ रहै। गामन में याते लोग 'नकली' कह्यौ करैं। कबहुँ मुखौटाऊ लगाय कैं आवैं ज्याते 'मुंह मटकना' कहैं। विदूषक के मुँह पै खूब पोतदई जाय, आँखिन के ऊपर नीचें कारौंच लगाई जाय ज्याते दरसक वाय देखतेई हँस जावैं। ज्यों-ज्यों लोग वा सूरते देख देखकें हँसें त्यों-त्योंई स्वाँग कौ लच्छ पूर्ण होतौ दीखै। 'साहित्य कोश भाग एक' में बतायौ गयौ है कै स्वाँग में पुरुष पात्रन की भीर होय परि नारी पात्रन कोऊ कमी नाँय होय। वे दो-दो के जोड़ान ते नांचैं और गामैं, हाँसी ठट्ठे भरी बात करैं, संग-संग गामैं, सारिन्दा वारौ बजानें और विनके साथ की एक लैनें पकरिलैं ज्याय बेर-बेर में गामैं, ढोलक, मजीरा, बेला, मटका [illegible] बजाते-बजाते विभोर है जाँय। इतेक मस्ती में आय-जांय कै कैदो नदे में आयकें [illegible]

तथा वाचिक रहता है।''

संस्कृत के नाटकन की नाँईं यामें नांदी जैसी कोऊ चीज नाँय होय परि स्वाँगिया अपने इष्ट जरूर सुमरैं। सबते पहलैं वे भमानी मनामें। यामें वे गणेश और सुरसुती कौऊ सुमरन करैं। 'भवानी' ते ऐसौ लगै कै वे शक्ति के उपासक होंय। परि ऐसी कोऊ बात नाँय। हाँ भवानी कूँ पहलौ पद अवसि दैं। ये लोक देवतान्नें सुमिरैं।

सदाँ भवानी दाहिनी, सन्मुख रहत गनेस।
पाँच देव रच्छा करैं, विरमा विष्नु महेस॥

या भवानी ए सबई अभिनेता एक संग ठाड़े हैकें हाथ जोरिकें ई मनामें, साजिन्दा लम्बौ अलाप खैंचें ज्याते पूरे गांम में पतौ चलि जाय कै कहूँ स्वाँग है रह्यौ है। जब भमानी पूरी मन जाय तौ विदूषक अपनी भमानी सिरू करै-

सदाँ दाहिनी चालनी, सन्मुख रहत तयौ।
पाँच रोट रच्छा करैं, जिन्नें खायकें सोय रहूयौ॥
बस, याही पैरौडी के संग हास्य-रस की धार फूट परै।

याय तौ सब कोऊ जानैं कै स्वाँग लोक ते पूरी तरियाँ जुर्यौ भयौ होय। जन-मन की बात यामें कही जाँय सो कथावस्तु के रूप में लोककथा और गीतन की ठौर पै लोक-गीत काम में लिए जाँय। जो लोकगीत ज्या ठौर पै जम-जाय बाय बाई ठौर पै गाय उठै । आज काल तौ सिनेमा के गीत और बिन पै बनी भई पैरोडी ऊ गाई जांय। संगीत की पूर्ति लोक संगीतई करै। लोक धुनन पैई गीत गाये जाँय। ढोलक, मंजीरा, बेला, मटका जैसैं लोक वाद्यई बजाये जाँय। संगीत के संगई नृत्य कौऊ विधान । नाँच यामें धमा-चौकड़ी कौ और तखत तोर होय ज्यामें ताल लय कौ बैठबौ कोऊ जरूरी नाँय। वा नाँच की कोऊ सैलीऊ नाँय कही जाय सकै परि लास्य कम और तांडव सौ जादा होय। डॉ. सत्येन्द्र नें याके विसै में लिख्यौ है- ''नृत्य और संगीत के कारन गति संचार तथा समूहन पर बल होता है।'' डॉ. धीरेन्द्र वर्माऊ स्वाँग में नाँच और गीतन की प्रधानता मानैं। नाँच स्वाँग की स्वाँस। स्वाँग में ते नांचै निकार दें तौ स्वाँग की दम सी निकरि जाय।

स्वाँग में अन्तरद्वन्द्व जैसी कोऊ चीज नांय पाई जाय हाँ बहिर द्वन्द्व की कोऊ कमी नाँय परिसब नकली। उद्देश्य कौऊ को ध्यान नाँय रख्यौ जाय चौंकै ये कोऊ उद्देश्य लैकैंई नांय चलैं।

स्वाँग की कछूक दूसरे नाटकन ते समानता देखी जाय। इनमें नौटंकी (लोक नाटक), नुक्कड़ नाटक (नई विधा) और प्रहसन (संस्कृत) और हिन्दी में पुराने समै ते चली आई भौत सी नाटक-विधा। हिन्दी साहित्य कोश भाग-1 नें तौ एक ठौर पै नौटंकी स्वाँग की पर्यायवाची बताय दइयै परि बात ऐसी नांय। कछूक बातन में ई नौटंकी और स्वाँग एक जैसें हैं। दोनूँई लोक नाटक की विधा हैं। नाँच और गीत प्रधान। सुरसती और भवानी की बन्दना होय। अभिनेता कम पढ़े-लिखे होंय। पुरुष लुगाई कौ भेस

धरैं। चौबोला बहरतवील जैसे छन्द गाये जाएँ। ऐसी भौतसी बात एक सी हैं परि नौटंकी में कथानक कोऊ प्रेम कथा, वीर कथा, धरम कथा जैसी होय जो लम्बी और एक सूत में बंधी होय परि स्वाँग में न तौ कोऊ एक कथा होय, न लम्बी होय न एक सूत में बँधी होय। ल्हौरी-ल्हौरी कथान की पूंछ ते कथा बँधी रहैं। नौटंकी के संवाद गायकैंई बोले जांय। स्वाँग में तौ संवाद गद्य में भौत होंय और पद्य में थोरे। नौटंकी में नायिका नायक विभिन्न श्रेनीन के होंय परि स्वाँग में कोऊ नायक नायिका नाँय होय और होय तौ वाकौ न तौ विसेस महत्व होय और न कोऊ श्रेनी। नौटंकी के औरऊ पात्र कथावस्तु ते बँधे भये और अलग-अलग चरित्रन के धनी होंय परि स्वाँग के पात्र दार भात में मूसर चन्द हॉय, चाहैं जब चाहै ज्यों प्रसंग में बिना बुलाये मेहमान की नांई आय धमकें। नौटंकी में अलग- अलग अंगी रस होंय और अंग रसन की भौत सम्भावना होय परि स्वाँग में एकई अंगी रस होय- हास्य और अंग रसन की भौत कम सम्भावना होय। नौटंकी के मंच की सजावट और ठौरऊ सोच समझकैं और खर्चऊ करिकैं अच्छी ते अच्छी करी जाय परि स्वाँग में इन बातन की कोऊ चिन्ता नाँय होय। चाहै जहाँ चौंतरा, चौक, चौराहे पै बिना पर्दान केई खेल्यौ जाय सकै। नौटंकी के अभिनेता और पात्रन में तौ ऊँचे वर्ग के लोगऊ सामिल होंय परि स्वाँग में तौ गये बीते स्तर केई लोग आमें। अभिनेतान में नौटंकी में तौ लुगाईऊ भाग लैवे लगी है। ऐ परि स्वाँग में कोऊ नाँय ले। नौटंकी में सब तरह की दुन्द होंय, साज बाजेऊ तरह-तरह के होय, साजिन्दाऊ भौत होंय परिस्वाँग में ये सब नाँय मिलें। भौत थोरे। दोनूँ गामन के किसान और मंजूरन के मनें राजी करिवे कूँ खेले जांय परि नौटंकी कौ उद्देश्य याऊ ते बढ़कें होय। नौटंकी काऊ न काऊ समस्या के निराकरन के ताँई और आदर्श प्रस्तुत करिवे के ताँई कोई न कोई उद्देश्य लैकें चलै परि स्वांग कौ हँसायवे ते बढ़िकें कोऊ उद्देश्य नाँय होय।

आज कल नुक्कड़ नाटक पै भौत जोर दियौ जाय रहयौ है। नुक्कड़ नाटक और स्वाँगऊ कछुक बातन में समान है। दोनूँ सास्त्रीय नियमन ते निरे छुटे पात्र और अभिनेता बाई समाज में ते लिए जाएँ जो पेसेवर नाँय होंय। मंच की साजसज्जा कोऊ कोऊ जरूरत नांय होय। इतेक सब कछू समान हौते भए इन दोनून में अन्तरु देख्यौ जाय। नुक्कड़ नाटक काऊ समस्या कूँ लैकें चलै। बाकौ कोऊ न कोऊ उद्देश्य होय। आज काल की बरती भई समस्यान के समाधान के ताँई नुक्कड़ नाटक एक जगार करै। परि स्वाँग में ऐसी कोऊ बात नाँय। स्वाँग में पहलें तैयारी है जाय, दरसक आय के बैठ जाएँ बाजे बजें पर्दा लगैं परि नुक्कड़ नाटक में तौ एक ढोल, थारी, बेला, पीपा जैसी चीज बजाई जाय और बाय सुनकैं भीर इकठौरी है जाय वाई भीर मेंते पात्र और अभिनेता छाँट लिए जाँय। यामें गम्भीरता होय परि स्वाग मे कोऊ गम्भीरता नाँय होय। नुक्कड़ नाटक में हास्य कम और सीख जादा होय। याके संवाद पैने और आर-पार हैवे [illegible] स्वाँग में तौ सीख भौत कम और हास्य भौत ज्यादा होय। नुक्कड नाटक मे असलीलता [illegible]

स्वाँग के भौत से लच्छन और विशेपता संस्कृत और हिन्दी के प्रहसनन ने [illegible] ऊपर बताये जाय चुके हैं स्वाँग में याके जैसे ई लच्छन पाये जाएँ। नायक [illegible]

ाषा शैली और उद्देश्य की दृष्टि सौं स्वाँग संस्कृत के प्रहसन ते पूरी तरियाँ मेल खामें। यामें और वामें तेकई फरकै कै वे (प्रहसन) लिखितऊ मिलैं परि स्वाँग कहूँ लिखे नाँय मिलैं। प्रहसन में असलीलता न' के बराबर होय और वू अप्रत्यच्छ रूप मेंई होय परि स्वाँग में तो सूदमसट्ट होय। सरम कूँ खूंटी ते ाँग दें। नुक्कड़ नाटक में पात्रन कौ कोऊ विशेष मेकप नांय कर्‌यौ जाय परि स्वाँग कौ तौ अरथई भेस बदलवौ होय।

या तरियाँ स्वाँग एक मनोरंजन के साधन के रूप में एक अच्छी विना म्रजी ऊवड़ खावड़ विना ारासी परि सुद्ध हास्य भरी सुस्ती लोक-नाटक की विधा हैं। यामें रूपधर्‌यौ जाय, सोई रूपक चौंकै रूपकं तत्समारोपात' और 'अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्' परिभाषा के अनुसार स्वाँग नाटक 'यामें भांड़ी भौत ोरी जाय सो भाणतेऊ याकौ कछून कछू नातौ जरूरै। जि पूरी तरह दृश्य काव्य कह्यौ जाय सकै। नाच और अभिनेयताऊ याके नाटक नामें सिद्ध करैं। नाटक की सवई विधा व्यवसाय वन सकैं और वनती ही ऐं परि स्वाँग व्यावसायिकता के कलंक ते वचतौ रह्यौंय। ई तौ सदाँ लोक-रंजन सोक-भंजन के ाँई 'परहिताय' और 'स्वान्तः' सुखाय कर्‌यौ जाय। सो और सव विधा तौ आगैं वढ़ि गई, धन और कीरत की चुटिया पै चढ़िगई परि प्रहसन के कुनवा में पैदा भयौ विचारौ स्वाँग म्हाँकी म्हांई स्वाँग रचतौ रह्यौ, अपनी पुरानी परम्परा कूँ पचतौ रह्यौ, काऊ 'वड़े'' आदमी नें वा माऊं प्यार भरी निगाह नहीं डारी। इन वड़ेन नें या कौ अरथई 'ढोंग' मान लियौ, मानें चौं नहीं, सांची वात- वड़े करैं सो लीला और छोटे करैं सो स्वाँग।

-36, जसवन्त नगर, प्रदर्शनी मार्ग,
भरतपुर (राज.)321001.



राजस्थान कौ लोकनाट्य : हेला

-डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ

लोकसाहित्य लोकाभिव्यक्ति कौ सबनिते ऊँचौ माध्यम है। यामें तीन तरियाँ अभिव्यक्ति समोयी जायौ करै- शरीर तोषिणी, मनोपोषिणी अरु मनोमोदिनी। इनसौं लोक सत्य, तथ्य अरु कथ्य कौ ऐसौ सरूप बन आवत है कै बाय सुनतेई या देखतई सारे लोग-लुगाई या मरद-बैयर झूमि-झूमि जात हैं।। राजस्थान के लोकसाहित्य नैं राजस्थान कौ खूबई नाम करौ है। यामें लोकगीत, पवाड़े, लोककथाएं, लोक नाट्य, कहावतें, मुहावरे, लोकरंजन के कई तरियाँ के खेल-सबकछू लोक साहित्य कौ भण्डार भरते आये हैं। यामैं 'ख्याल' लोकनाट्य विधा कौ अंग है। भरतपुर, करौली, चिड़ावा, चुरू के अलावा जैसलमैर, जोधपुर मांय ख्याल कौ अच्छौ प्रचार रह्यौ है। लोकनाट्य के ख्याल साहित्य की एक प्रसिध्द धारा 'हेला ख्याल' की है। वैसैं तौ राजस्थान के पूर्वांचल मांय भरतपुर, अलवर, धौलपुर, सवाईमाधोपुर आदि में ख्याल नाट्य की अविरल धाराऊ प्रवाहित रही हती। अपने दौसा जिला मांय लालसोट के ख्याल 'हेला' नैं तौ जा दिशा मे ऊँचौ नाम कर्‌यौ है।

हेला ख्याल लालसोट मांय गणगौर के त्यौहार पर होय है अरु याके काजै 'दंगल' या अखाड़े लगैं हैं। कहिये कूँ लालसोट आधुनिकता की दौड़ मांय पीछे भलेई है, पर अपनी सांस्कृतिक विरासत मांय बाकौ प्रौढ़ अरु अटल रूप लिये आस-पास के इलाकेन मांय बड़ौई नाम करि रखौ है। लालसोट की पहाड़ीन मांय प्राचीन रजवाड़ी छतरियाँ अरु रणक्षेत्र मांय शहीद भये। कर वसूलकर्ता भोमियो के स्थान, प्राचीन मंदिर सौं भर्‌यौ है। पिपलाज माता, बियाई माता के अलावा मैड़ा के भैरुं के पुजारी मीणा जाति के लोग हैं। बियाई माता के पुजापे कौ बँटवारौ तौ वहाँ के चौहान जागीरदारन अरु मीणा पुजारिन के बीच होतौ आयौ है। लालसोट अंचल मांय लोकनाट्य 'ख्याल' के कई रूप मिल्यौ करैं हैं। आज ताँई लोकनाट्य परम्परा राज्याश्रित नाँय रही या ते लोकाश्रित रही हतौ। जाकैं पीछैं यह उदाहरन दियौ जाय सके है कै यहाँ के लोक कविन कूँई राजाश्रय प्राप्त नहीं हतो अरु वे लोकमनोरंजन के ताँई ख्याल 'हेला' कौ दंगल सदा तै करते आये हैं। तबई ऐसौ कोऊ ख्याल लालसोट क्षेत्र माय नाँय मिल्यौ जाकौ सम्बन्ध काऊ राजपरिवार सौं अरु ऐतिहासिकता सौं रह्‌यौ होय।

ख्याल की परम्परा की अकेली बात नाँय, लालसोट मांय रसिया लोकगीतन कौ प्रसारऊ कम नाँय हतौ। लोक साहित्य कौ जि क्षेत्र तौ दूढ़ाणी , ब्रज, मागधी, मेवाती, बोलिन पै आधारित रह्यौ है ! लालसोट कौ 'ख्याल' अकेलौई नाँय प्रचलित रह्यौ वाके संग पुराने जमाने तेई तुर्रा कलगी कौ ख्याल चालू रह्यौ है। 'हेला' लोकभाषाई शब्द हतै, याकौ अर्थ-असम्मान, बुलाना, आवाज देना, झाला देना, संकेत करना, उमंग, तरंग [1], रहयौ है। राजस्थानी मांय याकौ अर्थ पृथ्वी, धरती, भूमि, तरंग, लहर, उमंग, क्रीडा खेल नायक सौं मिलती बिरियां प्रेमपूर्वक क्रीडा की मुद्रा [2] रह्यौ है। पर हेला ख्याल के नाट्य रूप मांय यांकी परिभाषा पर विद्वानन मांय एक मतौ नाँय रह्यौ।

करौली क्षेत्र के तुर्रा कलगी के ख्याल साहित्य की रपट मांय (1992) महेन्द्र भानावत नैं कही है कै-तुर्राकलगी की श्रेणी में समादृत हुआ संलग्न गांमन में "अजी ए हो, की टेर से युक्त ख्याल कहा जाता है।[3]

हेला मूलतः तुर्राकलगी ख्याल परम्परा कौ एक विशिष्ट रूप हतै। याकौ प्रचलन लालसोट क्षेत्र माँय बहुतई ज्यादा रह्यौ है। सांस्कृतिक रूप सौं यही कह्यौं जाय सकै है कै हेला ख्याल गीतनाट्य है चौंकि जामे पद्यबद्ध सम्वादऊ है अरु कहूं कहूं गद्यऊ मिल्यौ करें है। यामें राग अरु ताल की प्रधानता होत है अरु येई नाँय ख्याल हेला में गुरु परम्परा अरु मण्डली परम्परा कौ रूपऊ विद्यमान है। हेला जहां राजस्थानी लोक शब्दावली सौं गृहीत शब्द हतौ, बाकौ अर्थऊ 'बुलाइबे कौई है। [4] यामें हाथ ऊँचौ करकैं इशारौ कियौ जायौं करै है। या ख्याल कूँ ऊँचे गले सों अरु भारी भीड़ मांय मण्डल के दाएँ-बाएँ भाग माँय बैठी जनता के बीच मंडली के सदस्य ज़ा-जाकर गायौ करैं हैं। याकौ महत्वई यामेंई हतै कै सुनबइयन की भीर हजारन की होति रही है। या भीर माँय अन्दर घुसिकै ऊँचे सुर लगाइकैं हाथनु के इशारे अरु कमरि पै बलु दैकैं दंगलियां दुहरावत हैं। कबऊतौ गायक कलाकारन की मुद्रा देखतेई सुनबइया दिखबइया ठहाके लगा-लगा के हंसैं हैं। याकी अब तौ एक निश्चित गायन परम्परा प्रचलित है गई है। या परम्परागत ख्याल गायन माँय हेला के साथ लावणी, रंगत, कव्वाली, ठप्पा, ठुमरी, ध्रुपद, गजल, तराना, तुर्रा, कलगी कौ प्रयोगऊ कियौ जायौ करै है। हेला ख्याल मूलताईं निम्न रूप माँय गायौ जाय है-

(1) वर्णमालाश्रित : बारहखड़ी

(2) छन्दाश्रित :-

(क) चौपाई या चौपई	(ख) दूहा या दोहा
(ग) दोहावली	(घ) छप्पय
(ड़.) कुण्ड़लियां	(छ) (कवित्त)

(3) रागाश्रित :-

(1) रास	(2) लावणी
(3) गरवा	(4) पद

(5) कजरी	(6) धमाल

(4) धर्माश्रित :-

(अ)	स्तुति	(आ)	स्तोत्र
(इ)	विनय	(ई)	स्तवन
(उ)	विनती	(ऊ)	पूजा
(ए)	प्रभाती	(ऐ)	संझा/सांझी
(ओ)	निर्गुन	(औ)	सगुन

(5) ऋतु-आश्रित :-

(प)	फाग	(फ)	होली
(ब)	चांचरी	(भ)	चौमासा
(म)	बारहमासा	(य)	षटऋतु

(6) प्रकीर्णक :-

(1)	अष्टयाम	(2)	दूत काव्य/ सन्देश
(3)	गोष्ठी	(4)	सम्वाद
(5)	हास्य	(6)	व्यंग्य
(7)	विज्ञापन	(8)	परिवार कल्याण

वर्गीकरणन के अन्तिम दोनों रूप लेखकनैं लालसोट के हेला ख्याल दंगल में स्वंय उपस्थित होकैं सुने हैं अरु याते जि पतौ लगै है कै हेला ख्याल पुरातन परम्परा कौई प्रतिनिधित्व नाँय करे है, बाके आगे आजु की नई धारान कौऊ अनुसरण करिवे लगौ है। अन्तिम द्वै रूपन माँय हेला प्रचार माध्यम कौ सबसे अच्छौ रूप है सकै है।

हेला ख्याल कौ विषय वस्तु परक अध्ययन करबे ते यह पतौ चल सकै है कै अब ताँईं जि हेला का तरियाँ खेलौ और गायौ जायौ करै है। याके कछु बहुतई अच्छे रूपन कौ उल्लेख जा तरियाँ कियौ जाय सकै है-

(1) पौराणिक	(2) सामाजिक
(3) राष्ट्रीय	(4) राजनीतिक
(5) पर्वोत्सवीय	(6) अन्य-

(क) ऋतु वर्णन
(ख) हास्य व्यंग्य
(ग) विज्ञापन

पौराणिक हेला ख्याल महाभारत अरु रामायण सौं सम्बन्धित कथानकन पै तैयार करे जाय हैं। कबहु

जिन हेला ख्यालन सौं हटिकैं वेद अरु पुराननि के कथानक पैऊ हेला तैयार कराये जावैं हैं। महाभारत ते सम्बन्धित हेला कौ उदाहरन दियौ जाय रह्यौ है-

दोहा- धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में मेरे पाड़ो लाल।
क्या कर रहे संजय से कुरुपति करत सवाल॥
शत्रुदल पारथ लख्यो बोल्यो धनुष उठाय।
मेरे रथ को मध्य म्ह माधव द्यो पहुँचाय॥

शेर- हेरे----बाज रणभेरी शंख चोट
नगाड़े पर पड़ रही है।
सजधज खड़ी दोऊ सुन मरण-
मारण पर तुल रही हैं।
घड़ी पल छिन्न घट रही है।

- (हजारी लाल ग्रामीण)

रामायण सौं सम्बन्धित हेला ख्याल माँय रावण मां के ताँईं शिवलिंग अरु अपने ताँईं मन्दोदरी लै आवै है-

दोहा- अजीतो माता उसे कह रही सुन बेटा दे ध्यान।
नहाय धोय सेवा करुँगी कछु मेरा मन को ज्ञान।
अरे या दशकन्दर सूं कहिए
मनकी इच्छा पूरी कर दे-
अरे सुन बेटा बलवान
अरे मेरी इच्छा पूरी कर दे

- (गिरधारीलाल मीणा)

कृष्ण के ताँईं मीरा की भगति भावना इतनी बढ़ि गई कै बाने कुल-मर्यादा नाँय मानी-यापै लिखौ गयौ हेला देखिवे लाइक है-

अन्तरा- अजी हे जी राजा बात रही न म्हारा बस की
दासी चरण की। अजी---------
जन्म-जन्म की मूरत बसगी मन म्हा मोहन की
कड़ी अस्थायी- यो ल्यौं थाका फूल झूमका
जोड़ी बुझ बन्धन की
हार हमेल सम्भालो राजा

माला ल्यौ मोतियन की।
म्हांन अब चाट नहीं नथ की
रखड़ी-बगड़ी बेसर की।

-(हजारीलाल ग्रामीण)

देवी सम्बन्धी हेला ख्याल माँय दंगल की शुरूआत भवानी की रचना सूं ही होय है-

ऐ मोहे तो भरोसा रे ज्वाला रानी तेरा---------
अजी ए---------अखण्ड जोत तेरी जुड़ भवन म्हं ओ ओ--

-(गोरधन जयनारायण)

सरस्वती कौ हेला नीचे की तरियाँ दंगल माँय गायौ जायौ करै है--

रखो हमारी लाज दंगल के दर में ले हरे------
हम अरजी तेरी कर रियें
जगदम्बा तो हे मना रहे
तेरे भरोसे पै गा रहे हैं
कोई तो हमारो ध्यान लै हरे

-(लालाराम शर्मा)

हजारीलाल ग्रामीण सिद्धहस्त हेला लेखक अरु गायक हैं। राष्ट्रीयता, देश की एकता आदि पै उनके हेला बड़े ही मातबर रहे हते :-

हे हियागी फिरत तुम्हारा है
परम पूजनीय हमारा है
दुश्मन ने आज ललकारा है
करणां हैं सीमा पार------- तेरी जय जय हो

याईं तरियाँ राष्ट्रीय एकता या देश की एकता पैऊ बिनकौ हेला देखिबे लाइक है-

हिमालय चाहे तो झुक जाये
सागर सीमा से हिल जाये
दिशाएं इधर-उधर हो जायें दिगपालों की।

देवी सरस्वती ज्ञान की देवी है। हेला ख्याल गायक मण्डल गणेश वन्दना के उपरान्त सरस्वती वन्दना करैं ही हैं।

हेला गायक मानैं हैं कै देवी मां सदैव अस्त्र-शस्त्रन सौं सजी रहिबे बारी है परि बखत परे जैसोई

रूप अरु वेश धरि लेति है हेला गायक गावे है कै-

जय अम्बे जय अम्बिके हे जगदम्बे मात।
दास जान रक्षा करो, हम जोड़ें तुमको हाथ॥

(खेम सिंह पथिक)

जाई तरियाँ लोकदेवतान की पूजा-अर्चना माँय हेला गायक कई अनुष्ठान कियौ करैं हैं। यहाँ धौमियां देव कौ ख्याल लिख्यौ है-

अरे भोमियां अरजी तोसूँ म्हारी
करूँगौं सुवामणी थारी
दोनों जणा कूं मन म्हँ कस्यां
किया मोखो आयो, हरे।
कोई तो पै विश्वास अरे मन म्हँ
अरे भोमियाँ करियो भाया
औं भी गल्ला आया
अरे! म्हार भरोस मत रिजो तू
भैरूजी क जाया
अरे! देवी कूँ भी लेजा लार
जोड़ी की जात कराया।

हेला ख्याल गायक समाज में चल रहे राजनीतिक सामाजिक विशेपतान पैऊ ख्याल रचना करिवे में पीछे नाँय रहे। जाई मारैं हेला समाज कौ दर्पण सिद्ध है जाय है। वैसै तौ ख्यालन की रचना काफी लम्बी होय है, परि कछुन माँय आकार छोटौऊ मिल्यौ है। जेऊ ध्यान दैवे की बात है कै हेला गायक मण्डल परम्परागत खयाल रचनान अरु संगीत की धुनन पै ही ख्याल गायन कर्‌यौ करैं हैं।

राजनीति की परम्परा बहुतई पुरानी रही है। आज आधुनिक प्रजातंत्रीय काल है। सत्ता के सिंहासन पै वैठिवे के ताँई नेताजी अपनी कोशिशें बनाए रखें हैं।

हजारीलाल ग्रामीण नें राजनीति सम्बन्धी हेला ख्याल या तरियाँ लिखौ हतौ-

कूण्डी सोट, खप्पर फैंचा
गोरे तन गुस्सो छायो
साफी कली चिलम फैंकी
जुगल जोर सूं फैंकायौ
एक हाथ ले त्रिशूल
दूजे से डमरु घुमकायौ
मारी आसन पर लात
पड़त आघात की धरती हिल रही है।

इन्द्र उवो-उवो कांप

डरतो सो नीड़े आयौ
सिंहासन वापोती समझायौ
इतनो मत तोम छायौ
अपने मतलब खातिर तुमने
ही षड़यंत्र रचाऔ
मर्यादा दीनी तोड़, तोड़ मरोड़
डिक्टेटरशिप चल रही है।

हेला गायक मण्डल ऐसेई व्यक्तियन कौ नाम हेला में दुहरायौ करैं है, बिनकौ नाम पैलेई इतिहास माँय अमर है-

है काची नींद म्हं जगावो
ऐ जोदा मलखान को
अरी हेऽऽऽ कहता तिरिया बस
कह मारु हाल ऐसो सकड़ो
कहा पड़ोयो जगाओ हाल
अरी हे ऽऽऽ तिरिया कह
थारां हिवड़ा री वात

ऋतुवर्णन सम्बन्धी हेला ख्याल लेखकन कौ सर्वप्रिय विषय बनौ रह्यौ है। हमारे ह्यां छः ऋतुअन कौ चक्र चलतौ रह्यौ है। वैसैंई लोक साहित्य माँय ही नाँय परिनिष्ठित साहित्य माँय षटऋतु वर्णन अरु याई बारहमासा वर्णन परम्परागत रूप में आवत हैं। याई प्रकार कौ हेला ख्याल देखिवे लाइक है-

आज तौ रंगीली म्हारी आई गणगौर
सात सखी मिल पूजन चालीं।
गान करत जैसैं कहूकत मोर।
तीज कौ पिहरियां में आई
चौथ को दौड़ सासरे धाई
पाँचें को बोर्ड में रखवाई
देखो जी चंदा की कोर।
अरे हे रे--------
यह तो बारह महीने की जाय
हाड़ो, ले चालौ गणगौर

– (रामस्वरूप जोशी)

लालसोट कौ हेला दंगल में हरसाल अपनौ खेल दिखाइवे में आगैं से आगैं नाम कमाय रह्यौ हैं। यह कह्यौ जाय है कै सबते पहलैं गोविन्द गिरि जोशी तुर्राकलगी कौ ख्याल गायौ करते। अबऊ बिनकी समाधि तम्बाकू पाड़े के प्राथमिक स्कूल के पासई बनी भई है। हेला ख्याल में मंडलीन माँय गुरु परम्परा

कौ निर्वाह अव ताँई चल रह्यौ है। मण्डली में गायक, वादक अरु अन्य कलाकार होय है। यामें जो रचनाकार होय है, वु रचना रचकैं मण्डली कूँ दै देय है अरु ये ऊ वताइ देत हैं कै कैसै वू गायौ जानौ है। मण्डली कौ गुरु मंडली के सव सदस्य कूँ मोली कौ डोरा वांध के तिलक लगाय के शिष्यत्व प्रदान करै है तौ शिष्य गुरुदक्षिणा दैकैं अपनी श्रद्धा व्यक्त करै है।

लालसोट के हेला ख्याल के दंगल सम्वन्धी मंडली कई हैं जिनमें लक्ष्मीनाथ सैनी, पारख, महाकाली अरु वजरंग मण्डलन कौ नाम कछु ज्यादा है। जेईनाथ लालसोट सौं वाहर के गामन माँय कछु मंडली हेला ख्याल गायकी में अपनौ नाम वढ़ाय सकी हैं। इनमें 'राधारमण' (गण्डाल) ' वासर (कस्वा शहर) देवनारायण(सितौड़) भवानी मण्डल (लवाण) आगे हैं।

यामें कछू शक नाँय हत कै ख्याल की परम्परा पुरानी है तौ वाके समानान्तर हेला ख्याल की परम्परा ऊ पुरानी रही हती। कह्यौ जाय है कै राजस्थान माँय ख्याल गायकी कौ प्रवेश ग्वालियर-आगरा की तरफ सौं भयौ है। प्रवेस कहूँ सौं और कवहू भयौ होय, पर आज राजस्थान के सिगरे अंचल माँय ख्याल की परम्परा वहुत वढ़ी चढ़ी रही हतै। दौसा जिला माँय लालसोट क्षेत्र में हेला ख्याल गायकी अरु प्रदर्शन की अलौकिकता मिलै है।

वर्तमान सम्प्रेषण माध्यम के प्रचार-प्रसार अरु सुविधा के कारण ई लोक साहित्य के गायन-वादन अरु चर्चा करवे वारेन कूँ पिछड़ौ समझौ जायौ करै है। जिऊ संकीर्ण मानसिकता कौई एक रूप रह्यौ है सकै। आज ताँई लोकसाहित्य अरु लोककलान पै प्रतिवन्ध लगायौ गयौ है पर जि महत्त्वपूर्ण है कै लालसोट के हेला ख्याल गायकी में गायकन नैं अपनी गायकी वरकरार रखी है। ताई मारै लालसोट कौ नाम आगैं वढ्यौ है।

अन्त में यही कहनौ है कै या हेला गायकी कौ समग्र अध्ययन कियौ जाय। अवई तक उल्लेखित हेला ख्यालन के अलावाऊ गोपीचंद, मोरध्वज, हरिशचन्द्र आदि के हेला खूवई गाये अरु प्रदर्शित किये जाय हैं अरु जे सवई लोकनाट्य परम्परा सौं अपनौ पोषण करि रहे हैं।

सुराग :

1 (क) पाठक , आर. सी. (सं) कन्साइज डिक्शनरी : हिन्दी भाषा, 933
(ख) विलियम, मोइनियर (सं) : संस्कृत इंगलिश डिक्शनरी (1996) पृ. 1305

2 लालस, सीताराम (सं) राजस्थानी सवद कोस, प्रथम खंड पृ. 214

3 भानावत, महेन्द्र (सं) करौली क्षेत्र का ख्याल साहित्य, प्रथम भाग, पृ. 25

4 सत्येन्द्र : लोक साहित्य की पगडण्डियां पृ. 51

- R -18 सुखाड़िया विश्वविद्यालय परिसर,
उदयपुर-1



हेला ख्याल

-डॉ. रामप्रकाश कुलश्रेष्ठ

लोक नाट्यन माँहिं ख्यालन कौ महत्व बड़ौ ऊँचौ होय। ख्यालनु माँहिं 'हेला ख्याल' कौ अपनौ अलग सौ ई स्थान है। सब अपनौ- अपनौ घर छोड़िकैं 'हेला ख्याल' सुनबे-देखवे आवैं। 'हेला ख्याल' दो सब्दन सौं बन्यौ है-हेला+ख्याल' । ब्रज भाषा माँहिं 'हेला' कौ मतलबु एहै -

हेला- संज्ञा स्त्री (सं.) (1) उपेक्षा और तिरस्कार योग्य या तुच्छ समझनौ । (2) परवाह नाँय करनौ, ध्यान नाँय देनौ (3) खिलवाड़ । (4) प्रेम पूर्ण केलि-क्रीड़ा । (2) सरल काम, सहजबात। (6) साहित्य में संभोग श्रृंगार के अन्तर्गत एक 'हाव' जामें नायिका आंखन या भौंहे मटकाकर या नचाकैं मिलन अथवा संभोगेच्छा सूचित करै है। संज्ञा पु.(हि.हल्ला) (1) हाँक, पुकार ।(2) चढ़ाई, आक्रमण संज्ञा पु.(हिं.रेलना) ठेलने की क्रिया या भाव, रेला, धक्का।

संज्ञा पु. (हि.हेल = खेप)-खेय, खेवा। (2) बारी, पारी, एक और सब्दु है- 'हेरा' वाकौ मतलव है -

हेरा- संज्ञा पुं. (हेरना) (1) पुकारबे या बुलाबे कौ सब्द (2) ढूँढबे-खोजबे। ब्रजभासा में एक सबदु औरु मिलै- 'हेलया' वाकौ मतलब, है- खेल ही खेल या खिलवाड़ में । (2) हँसी-मजाक में (3) सहज में, सरलता सौं।

'ख्याल' की परिभासा देते भए लोक साहित्य चक्रवर्ती डॉ. सत्येन्द्र जी नैं लिखौ है- 'ख्याल लोकगीत जैसौ एक दैवी वाक्य है, जाकौ न कोई निर्माता है और न कोई स्वर संधाता, बू मानव समुदाय में सहज ही स्वयं उदित हो उठै है और बिना प्रयास के सहज ही कंठ सौं कंठ में उतरती भई परम्परा स्थापित करनौ है।

'हेला' सब्द कौ प्रचलन मेरे विचार सौं- हेलया -हेल्या-हेला सौं भयौ है जाकौ अर्थ है- हँसी-मजाक में, खेल ही खेल या खिलवाड़ में। दूसरी संभावना है कै 'हेरा' सूँ 'हेला' प्रचलन माँहिं आइ गयौ, आजकल तौ 'हेला' सब्द कौ प्रचलन है।

डॉ. देवी लाल सामर नैं लिखौ है कै- 'सत्रहवीं 'शताब्दी में आगरा के निकट ख्यालन की एक लोकधर्मी परम्परा शुरू भई जाकौ दायरौ केवल काव्य-रचना तथा काऊ ऐतिहासिक तथा पौराणिक व्यक्ति सौं संबंधित काव्य रचना की प्रतियोगिता तक ही सीमित हो। यही परम्परा प्रथम बार 18 वीं शताब्दी में राजस्थान के रंगमंचीय ख्यालन के रूप में परिवर्तित भई जो आज अनेक रूपन में राजस्थान के जन-जीवन कूँ आह्लादित कर रही है। यह 'ख्याल' सर्व प्रथम कल्पना और विचारन सौं उत्पन्न कवित्त रचना कौ ही दूसरौ नाम हो, परन्तु जब सौं वह रंगमंच पै खेल तमाशे कौ रूप धारण करबे लगौ, यह खेल या ख्याल कहलायौ।

राजस्थान माँहिं तालबंदी की एक परम्परा औरु मिलै वाकौ केन्द्र मानौ जाय सवाई माधोपुर। जाकौ प्रसार-प्रचार भयौ जैपुर अलवर, अरु भरतपुर में। दौसा जनपद के समाजसेवी साहित्य मर्मज्ञ श्री मथुरेश बिहारी माथुर, एडवोकेट तालबंदी के लिए समर्पित हे।

'हेला ख्याल' तुर्राकलगी ख्याल की ई गायन परम्परा में है, ख्याल के अन्त में 'अजी-ए-हो' की लम्बी टेर लगावैं। जा लम्बी टेर की ई वजह सौं नाम 'हेला ख्याल' परौ।

'हेला ख्याल' की विसेसता नीचे लिखी तरियाँ गिनाई जाइ सकें-

(1) हेला ख्याल माँहिं 'अजी-ए-हो' की लम्बी टेर लगावैं।
(2) काऊ कूँ बुलाबे के काजैं जा सब्द कौ प्रयोग हौवै।
(3) जामें हाथ ऊँचौ करिकैं इसारौ करौ जाइ।
(4) हेला सब्द तौ सबनि के लिएं समान है। वाते न तौ काऊ कौ सम्मान होइ औरु न अपमान मानौ जाइ।

'हेला ख्याल' माँहिं 'हेला' कौ अपनौ महत्व है। पैले-पैले हजारन की भीड़ माँहिं बिना माइक के गाइवौ करते। गावे के अन्त माँहिं 'सम' पै गबैया 'अजी-ऐ-हो' की टेर लम्बी खेंचि जाते। गाइवे के वक्त अपने हाथन सौं इसारौ करौ करते। जासौं श्रोता सुनिवे के संग हाथन के इशारे ऊ समझते। गाइवे के संग अभिनय ऊ होतौ जातौ। श्रोता अभिनय की मुद्रानु पै हँसैं। जामैं अतिसयोक्ति नाँय कै हेलाख्याल माँहिं गाइवे के संग हाथन कौ अभिनय गाइकी में चार चाँद लगाइ दे।

'हेला ख्याल' माँहिं पैलै-पैलै दो जोटि हौंतीं जो आपस में सवाल-जवाब करौ करतीं। इन जोटनि के पास बड़े-बड़े चंग हौंते। चंग बजाइवे के संग नाचते ऊ। सवाल-जवाब के समै जि पतौ नाँय रहतौ कै अगली जोट काइ पै सवाल करैगी। सवाल-जवाब पक्की राग-रागनिन पै होत हे। पैले-पैले वो सवाल-जवाब सगुन अरु निर्गुन पै हौत हैं अरु वाइ के संग ताल राग-रागिनीन बँधे-बँधाये होत हैं। पैली-जोट जा सुर ताल माँहिं प्रश्न करेगी वाई सुर ताल माँहिं दूसरी जोट कूँ उत्तर दैनौं होगौ। जो जोट सवाल कौ जवाब नाँय दै सके तौ वू हारी भई मानी जावै। ख्याल रचना करिवे के वख्त जोट प. फ. ब. भ. सौं अपनी रचना सुरू नाँय करती अरु इन अच्छरन सौं सुरू हैवे वारे सवालन कौ जवाव देति ई, काउ समै

एक जोट नैं प. फ. ब. अरु भ सौं सवाल करौ तौ दूजी जोट जाई वरन माँहिं वाकौ जवाव देति ई। लाल सोट के दंगलनि माँहिं त्रिताल कौ प्रयोग होयौ करतौ। पंचम सुर पै तोड़ होय हौ। सवई तरै की राग-रागिनी कौ प्रयोग हौंतौ हौ।

'लाल सोट' माँहिं हेला ख्याल कौ जो दंगल होइ वाकौ समै निश्चित है। होरी के बाद गनगौर पै जि दंगल होय। गनगौर के समै किसानन की फसल तैयार है जाइ। गनगौर के मेला देखिवे कूँ गांवन के नर नारी इकट्ठे होंइ। गनगौर की सवारी संध्या कूँ निकरै बाइके बाद 'हेला ख्याल' सुरू होइ। पैले ई पैले रात्रि कूँ भवानी मनावत हैं अरु एक-एक ख्याल एक-एक मंडली गावै। दूसरे दौर माँहिं मंडली सामाजिक ख्याल गांवै अरु तीजे दौर माँहिं मंडली राजनीति पै बनौ बनाऔ ख्याल गावै या जो मन में आवै वाई विसै वै ख्याल गावै। जा तरियाँ सौं जि मानि सकैं कै 'हेला ख्याल' कौ दंगल किसानन के लिए खेती के हिसाब सौं अरु फसल काटिवे कौ त्यौहार है। जि दंगल वहत्तर घंटान तक चलै, जामै कोई हाफ टाइम नाँय होइ। सब अपने-अपने काम करैं औरु सुनिवे आ जाँय। लगातार बहत्तर घंटन तक चलिवे वारौ जि दंगल अपने आप में सुशासित है। गवैया अरु सुनिवे वारे सब अनुशासन में रहें।

'हेला ख्याल' के दंगल माँहिं मंडलीनि कूँ वुलाइवे कूँ लिखित में सूचना मंडली के मीडिया कूँ भेजी जाइ। दंगल समिति जि चिट्ठी भेजै। चिट्ठी डाक सौं न भैजिकैं आदमी लैकैं जाय अरु वाकौ उत्तर ऊ लिखित में लावै। चिट्ठी कै सावइ के लिए वापै तारीख जरुर होइ।

'हेला ख्याल' के गाइवे के वख्त वाद्य यंत्रन कौ प्रयोग होइ। जामैं चंग, नौवत (बम), ढोलक, हारमोनिया, मंजीरा अरु चिमटा कौ प्रयोग होइ। मंडली गाइवे सौं पैलें 'गजर बजावै। (गजर' कौ मतलब कै गाइवे के पैलें अपने साज-सामान कूँ ताल व सुर के संग बजावै। मंडली ख्याल के अंत में ऊ 'गजर' बजावै।

'हेला ख्याल' मण्डली माँहिं सब तरै के लोग हौंइ। जाति-विरादरी कौ ख्याल नाँय करैं। सुरू-सुरू में तौ जातिनि के आधार पै मंडली वनिबौ करतौ परि अब जापै नाँय विचार करैं। 'हेला ख्याल' मंडली सबसौं पैलें गनेस जी कूँ स्मरन करैं औरु गनेस जी कूँ पैले ई पैले निमंत्रित करैं-

दोहा-	श्री कृष्णा नारद चाल्यो बरात।
	गणपति दिख्यो साथ म्ह धर उपजी एक बात॥
उठाव	सुन रे कृष्णा मुरारी, एक बात सलाह की मारी।
	चोखी बनी बरात तुम्हारी, आ जँच गई है। ऐ ----
	हे शंकर ब्रम्हा साथ हैं, हैं सब देव वरात म्ह।
	ओ पन या गनपत बुरो लग,
	यासो सब रंगत फीकी पड़ गई है। ऐ-----
अरी	आँख याकी छोटी-छोटी, [illegible]म्ब सी पीढ़ी मोटी।

हल्यो-चल्यो नहीं जावै, सबसूँ ज्यादा खावै रोटी।
बुरौ लग या बड़ा पेट को, जान कोई कोठी।
बुरा लग है भारी
सुन म्हारी मान खा-वा=पट्टी धारी
सवर तौ या कहत नाहीं है।
मृहार तौ माली जाँच छोड़ याकूँ गिरधारी।
याकूँदेख हंसगें सारे कुनदरपुर के नर-नारी।
जो या चले बरात साथ म्ह बात विगड़ जाव सारी।
जँच गई कृष्ण के मन म्हें मिनट म्हं गनपत के टेगे।
जा पहुँच्यौ चल म्ह रे -------
ओड़ी सोड़ी नित कर दीख नारद मुनिराज।
आकर झट वेका दियों श्री गनपत महाराज।
नारद गनपत के सें कह रहें ऐसे बात।
गनपत तोसूँ भारी नेकी कर दई है।
अरे ! देख तू तो उल्टो बगद् आयो
चोखौ नोतो देर बुलायौ
ऐसे नहीं करनी चहिए रे तो ही
यामें तो यारी भारी हलकी हुई है।
अरे ! कै कृष्ण बोल्यो द्वारिका वारो।
पहले ब्याव करूँगो थारो।
गनपत राजी हो रह्यौ भारी
फूल्यौ भाव नहीं है रै
गनपत की गैल म्हं शादी कर दी।

गनेस जी कूँ स्मरन करिकैं सरसुति कूँ स्मरन करौ जाइ। ग्यान की देवी के बिना ग्यान नाँय मिलै। जहाँ जैसी जरूरत परै बैसौई रूप देवी मैया राखिले। खेमसिंह पथिक कौ बनायौ भयौ ख्याल है-

जय अम्बे जय अम्बिके हे जगदम्बे मात
दास जान रक्षा करो, हम जोड़ें तुमको हाथ।
जय-जय जगदम्बे मां, जय दुर्गे भवानी कल्यानी।
हम धरे तुम्हारो ध्यान ले रे ----
रक्ताम्वर पट अति शुभकारी
तन कनक मुकुट भूपण भारी

है सिंह सवारी खडग धारी
तेरा रूप अनूप म्हान तेरे। जय अम्बे ------
भक्तों के सब संकट टारे
बाजे नौबत नगारे अति भारे।
भैरव नाचे तेरे द्वारे
दे ज्ञान, ध्यान वरदान। तेरे ---- जय अम्बे।
सुर साज को मधुर बना मैया
भवधार से पार लगा नैया।
शुभ पथ का पथिक बना मैया।
रख जय भारत का ध्यान। तेरे ----जय अम्बे।

विसै के हिसाब सौं महाभारत के एक प्रसंग पै बनायौ भयौ ख्याल है। मथुरेश जोशी जी नैं जि जा तरियाँ लिखौ है-

हमारौ रन म्हं कर सूं धनुष छूट्यो जाय।
इधर खड़े भीष्म पिता उधर खड़े गुरु महाराज।
इनको कर वध जो कोई कर डूब सकल समाज।
हमारौ रन म्हं कर सूँ धनुष छूट्यौ जाय।

रावण अपनी मैया की शिवपूजा के लैं शिव लिंग लायौ और खुद के लै लायौ यो मंदोउरी। जा विसै पै गिरधारी लाल मीणा नैं जि हेला ख्याल लिख्यौ एं-

दोहा- अजी तो माता उसे कहरहि सुन बेटा दे ध्यान।
नहाय दोह सेवा करूँगी कछु मेरा मन को ग्यान।
चौठा- अरे या दशकन्द सू कहिये मन इच्छा पूरी कर दे।
शिवलिंग मुरती चाहिए।
अरे सुन बेटा बलवान, अरे मेरी इच्छा पूरी कर दे।
अरे मेरो मन या ही कैहिरियौ "
कली-- अरे शिवलिंग मूरती चाहिए या दशकन्द से कहिए।
बेटा मन या प्रतिग्या लइयै सुन दशानन हरसारियै।
ऐरी दिल में धीरज राखल मैया निश्चय करया कह दइये।
तेने दिल जे बात अरी सब मैंने घट में धर लई ऐ।
मैं जाऊँ लौट अब आऊँ।
और तेरौ दूध पियौ है, मैनें या कु कस्या लजाऊँ।

मैं जाऊँ मुरली लेन, तुम रहो मात वैचेन।
ऐरी तोसु या कहन निश्चय होगी शिव देन।
मेरी तेरी सरत या पूरी करके जव ही पड़ेगौ चैन।
मैनें तो प्रण या कर लियौ॥

भक्ति नौ तरियाँ की मानी जावै। जाय 'नवधा भक्ति' कहैं। जा नवधा भक्ति कूँ गोपीलाल जोशी नैं जा तरियाँ परोसौ है-

स्रोता कौ सुख परीक्षक नैं लियौ।
कीर्तन वैद्य व्यास कियौ।
तीजौ में भय अक्रूर।
पाद सेवन में लक्ष्मी रे भक्ति चौथी वतलाई।
पाचँवी पूजन कर पृथ्वी राज तर्‍यौ।
छ: दास भाव हनुमत म्हं भर्‍यौ।
सातवीं में भये प्रहलाद स्मरन जिननें कियौ।
आठवाँ सखा भये अर्जुन।
वली कियौ आत्म निवेदन।

जैसैं पैले कहि चुके हैं कै हेला ख्याल दंगलनि माँहि भवानी गाई जाय। भवानी की रचना जा तरियाँ है -

ऐं ऽऽऽमोहे तो भरोसा रे ज्वाला रानी तेरा ------।
अजी ऐ ऽऽऽ अखण्ड जोत तेरी जुड़ भवन म्हां ओ हो ऽऽऽ।
रे ऽऽऽ नौरंग स्यान तेरा मंदिर घेरा। मोहे तो -----।
अरे ऽऽऽ मुगल रे गजव का मारा दौड़ा कागरु घेर लिया।
अजी ऐ ऽऽऽ अजी ऐ ऽऽऽ हो अरे तोप चले वन्दूक रेकड़ा।
रे जव मेरी ज्वाला ने चक्कर फैरा।
अजी ऐ ऽऽऽ हो मोहे तो भरोसा ----।

सन् 1962 माँहिं पाकिस्तान नैं भारत पैं चढ़ाई करी, वा समै लालसोट माँहिं हेला ख्याल दंगल में हजारी लाल ग्रामीण नैं जि हेला ख्याल परोसौ हो-

हे वीणा पाणी चरणों मे लो, सत-सत बार प्रणाम।
देश उभार तेरी जय-जय हो कार।
हे री महामाया रूप ममता रूप बिसार दे।
वीणा को उतार रूप चण्डी का सार ले।
कर म्ह कृपाण ले मुण्डमाल सार ले।
शत्रु को संहार आज देश को उभार ले।
हेरी हर-हर करणी खप्पर भरणी तेरी जग हो।
ये हियागी पितर तुम्हारा है
परम पूजनीय हमारा है।
दुश्मन ने आज ललकारा है।
करना है सीमा पार ! तेरी जय जय हो कार ----।

देश की एकता कौं बनायौ भयौ ख्याल जा तरियाँ है-

हिमालय चाहे तो झुक जाये।
सागर सीमा से हिल जाये।
दिशाएँ इधर-उधर हो जायें, दिग्पाल की।
सीमा टूटें नहीं हमारी।
भारत भूमि हमको प्यारी।
हजारी बार बार बलिहारी थारी प्राणों की।

पर्वन पैऊ ख्याल खूब.बनैं हैं। रामसरूप जोशी हाड़ा की गणगौर पै बनायौ भयौ ख्याल जा तरियाँ है-

आज तो रंगीली म्हारी आई गनगौर
सात सखी मिल पूजन चालीं।
गान करत जैसैं कुहकत मोर। आई-
तीज को पिहरियाँ में आई
चौथ को दौड़ सासरे धाई
पाँचें को थोर्ड में रखवाई
देखौ जी चन्दा की कोर। आई -----
अरे हे रे यह तो बारह महिने की बात।

हाड़ो ले चालो गणगौर। आई ----

आज के प्रजातंत्र माँहिं का का है रह्यौ हैं, जाकौ दर्सन कराइ रहे हैं हजारी लाल ग्रामीण अपने 'हेला ख्याल' माँहिं-

बार-बार पारवती विल्लाव, नशों नहीं शंकर कूँ आव।
बेचैनी ज्यादा बढ़ रही, भोले की भृकुटी तन रही है। तोड़ सील-
गैरवज्या सोचकर मन महं नशो नहिं कलिमन म्हं
आक़ धतूरा भांग नीमड़ा सारा धो दिया तब भी इन्हें खुमारी चढ़ रही है।
कूण्डी सोटा खप्पर फैंक्या गोरे तन गुस्सौ छायौ।
साफी कली चिलम फैंकी चुगल चोर सूं फैकायौ।
एक हाथ ले तिरसूल दूजे से डमरू डमकायौ
मारी आसन पर लात पड़त आघात की धरती हिल रही है। तोड़
खुड़के फोन पै फोन, देवता काठ पै चढ़के आयौ
गरुड़ कार में विष्णु आयौ, हँसकर विष्णु धायौ
नई नरसी ऐरावत पर इन्द्र, रमा झटपट आयौ
सब झुक-झुक कर प्रणाम लेले नाम घिग्घी सबकी बंध रही है
इन्द्र ऊबौ ऊबौ कांप डरतो सो नीड़ आयो
सिंहासन वापोती समझायौ।
इतनौ मत तोम छायौ।
अपने मतलब खातिर तुमने ही षडयंत्र रचायौ।
मर्यादा दीनी तोड़ तोड मरोड़
डिक्टेटरशिप चल रही है।
गुरु वृहस्पति तुमको लज्जा थोड़ी सी भी नहीं आई
गुरुकुल की परिपाटी उल्टी चलवाई
भारत की भाषा बोली म्हं कैसी कठिनाई आई।
चले गये अंग्रेज छोड़ रंगरेज
आज अंग्रेजी चल रही है। तोड़ सील ----
बाल विवाह पै व्यंग्य करते भये श्री हजारी लाल ग्रामीण कहि रहे हैं-
कहता नहीं यह धर्म शास्त्र तुम छोटी उम्र म्हं व्याह करो।
कहता नहीं यह धर्म शास्त्र तुम घर माण्डा दे घर वरवादकरो।
भर-भर टिन लुट्यो घी के घर म्हं एक [illegible]

बड़ी बड़ी लुगाई कोरी होती फिर बेटा बेमौत मरो।
पति मरग्या सब कुछ लुटग्या फिर मन म्हं घबराती है।
कभी सास कभी ननद की नित उठ ठोकर खाती है।
महा दुखी कर अबला को घर से निकाली जाती है।
दर दर फिरती ठोकर खाती गैरों के घर जाती है।
पर पुनर्विवाह कर पाती है
यों कहते पंच चौधरी नाक समाज की जाती है।

आजकाल के फैसन माँहिं बड़े-बूढे कौ भेद नाँय। इतनौ ई नाँय नर अरु नारी माँहिं भेद नाहिं करि सकें। जा फैसन पै व्यंग्य करते भए इक हेला ख्याल प्रस्तुत है-

देखो कलयुग के माँहिं फैसन की आंधी आई।
या फैसन में जा रही देख कमाई सुनना भाई।
अरे लम्बे-लम्बे बाल बढ़ाकैं छोरा बने लुगाई।
छींटन की बुशर्ट सिलावैं दिनभर गुटका पान चबावैं।
छोरी भी कर रही कमाल रखती छोरा जस्या बाल।
अरे छोरा-छोरी हँस बतरावैं अधपर में शादी हो जावैं।
अरे भइया बाप क्या जानें छोरी बी. ए. पास हो जाये।
देखो या क्वारी छोरी बनि रही गोड़ा की सी गोरी।
अरे कोई नहीं पहचान सके या छोरा है कै छोरी।
ऐसी हवा चल रही कलजुग में।

भारतीय समाज माँहिं एक पति की मंजूरी है। परि आजकल की व्यवस्था माँहिं द्वै-द्वै तीन तीन पत्नी वाले बनि जाय। जा संसार सौं मुक्ति पावे के लिएं एक लला जरूरी मानौ जावै। जा कारन जादा सादी कर लैं। पैली सौं छोरा नाँय भयौ तौ दूजी करि लीनी। जा पै व्यंग्य करते भये हेला ख्यालकार कहि रहे हैं-

हे जी कौन गाँव की रहने वाली कहां पै पति तुम्हारौ है।
फट्यो घाघरो तन पै प्यारी कहाँ सासरो थारो है।
कुँवारी है तो चाल लार म्हारो घर भी थारो ही है।
नही काम काज है भारी बस गधा चरावत प्यारी।
नहा धोकर तू टन रह प्यारी।
बात मान ले म्हारी पहल्या आलीक छोरा छोरी हत नाही हैं।

महात्मा गांधी कौ एक सपनौ हौ राम राज लावे कौ। जि सपनौ संविधान माँहिं कितनौ साकार भयौ ऐ जाकी ओर ध्यान दैवे कै लिएं हेला ख्याल माँहिं जि कही जाय-

जाग उठा ये देश हमारा चमन बनाने गुलशन को,
अरे बने जव जन की सरकार।
राम-राज्य का अपना सपना तब होगा साकार।

ख्याल गायकी माँहिं सब बिसैन कौ समावेस होइ। प्राचीन सौं लै कैं अर्वाचीन तक, इतनौई नाँय आजकालि केऊ समकालीन विसैन पै खूब लिख रहे हैं। जि अच्छी बात है कै पच्छिमी प्रभाव अरु टी.वी. के वावजूद हेला ख्याल जीवित है। गनगौर पै नई फसल आवे पै खूब गायौ जाय हेला ख्याल। हेला ख्याल के ई कारन दौसा जिले के लालसोट नैं खूब नाम कमायौ है। राजस्थान के लोगन की निगाह लालसोट पै टिकी रहैं कै कब गनगौर आवै अरु कब हेलाख्याल सुनिवे कूँ मिलैं।

-भगत निलयम, 1 त 2, जवाहर नगर,
जयपुर-302004.



लुगाईन कौ लोकमंच-खोरिया

- श्रीमेवाराम कटारा

मैं या बातै खूब जानूँ कै या सीरसकै पढ़िकें आपके कान ठाड़े भए बिना नहीं रहिंगे और आप अचरज सौ करिंगे। आप या बात पै हँसऊ सकौ, उपहासऊ कर सकौ-देखौ भैया मैंढ़कीऊ नाल ठुकायबे चली है, गूंगी ऊ गायवे चली है। महेरीऊ न्यौं कहै कै मोऊऐं दांतन ते खाँऔ। खैर, आप कछू ई सोचौ परि हम तौ डंका की चोट याइयै कहिंगे और कहते रहिंगे कै खोरियाऊ लोक मंच की एक विधा है। अब आप न्यों कहौ कै यापै अब तक काऊ नैं च्यों नाँय लिख्यौ ? तौ साब यामैं न तौ मेरौ कछू दोप और न विचारे खोरिया कौ दोप। खोरिया कौ दोप तौ बस इतेक इहै कै बू नेंक असलील होय परि साब जूँआन के डरते घाघरौऊ तौ नाँय फैंकौ जाय, बेटा कानों है जाय तौ का घर ते निकार्यौ जाय। मेरौ दोप इतेक कै मैं अब तानूं खोरिया करिवे वारी लुगाईन की नांई आप जैसें नरन ते डरपतौ और सरमातौ रह्यौ। परि आज तौ मैंनें हिम्मत कराई लई है। खैर साब हम थोरौ सौं अपने दिमाग पै जोर दै कैं सोचैं तौ खोरिया पूरी तरियाँ ब्रजलोकमंच की एक ससक्त और प्रभावी विधा सिध्द होय।

जब हम लोक-रूपकन के भेद विभेदन माँऊ निगाह फैंकैं तौ पतौ चलो है कै या ब्रज लोक माँहि ऐसी भौतसी लोक मंच की विधा जनमीं और पनपी हैं कैं वे जन-जन के मन पै छाय के एक परम्परा सौं चलिकैं संस्कृति कौ अंग बन गई हैं और रीति रिवाजन कौ रूप धारन करि चुकी हैं।

खोरिया छोरा के ब्याह के औसर पै मंचन कर्यौ जायवे वारौ एक लोक रूपक है। ब्रज में तौ जि खोरिया के नाम ते जान्यौ जाय परि न्यारी-न्यारी ठौरन पै याके न्यारे-न्यारे नाम हैं जैसैं राजस्थानी छेत्र में याते टूँट्या कै टूँटिया बोलैं। या सब्द की व्युत्पत्ति कैसैं भई, कहाँ ते भई , कब भई, या बात कौ तौ अभई तानूं कोऊ अतौ-पतौ नाँय चल्यौ परि फिरऊ हमारे सामईं एक प्रश्न अवसि ठाड़ौ करै कै जि काऊ समझदार लुगाई के दिमाग की निपज है।

भारत और विशेष रूप ते ब्रज लोक सदां ते सहृदय रह्यौ है सो पुरुष के संग नारीऊ हरेक छेत्र में सोचती रही है और फिर पुरुष होय चाय नारी, जीजा होय चाय सारी, मनबहलायवे की जरूरत तौ सबकूँई होय। नारी पुरुष ते जादा सहृदय होय। भारत की नारी लाज की मारी मर्जाद में बंधी भई सदाँ ते घरई घर में घुटती रही है। बाय अपने मन की बात कहबे कौ भौत कम औसर मिलै। थोरौ भौत मिलै तौ फागुन के महीना में होरी के औसर पै मिलै कै फिर ब्याह-विरौंद में मिलै। सोऊ छोरी के ब्याह में तौ भंमती रहै, स्वाँस लैवेऊ कूँ समै नाँय मिलै। छोरा के ब्याह में जरूर मिलै, जब सबई मर्द मान्स बरात में चले जाँय और लुगाईन कौई राज होय तौ गाय उठैं- या घर में राज हमारौ री या घरमें --।'

मरदन के संग लुगाईऊ रामलीला, रास लीला, नौटंकी, स्वांग, भगत जैसे दूसरे रूपक और लोक-रूपकन्नैं तौ देखैई है सो या सुतन्त्र औसर पै जब मर्द माँसि सब बरात कूँ चले जाँय तौ या अमोल औसर ते फायदा उठायवे के ताँई नारी के मन माँहि एक ऐसी रूपक विधानैं जनम लियौ ज्याय वे मिल कैं बिना मरद की सहायता के, खेल सकैं। बू विधा है-खोरिया

जब हम रूपक माँऊं निगाह डारैं तौ पतौ चलै कै रूपक में रूप धरयौ जाय, नायक-नायिका और पात्र होंय, काऊ ठौर पै मंच बनैं, कथानक संवाद, गीत बाजेऊ होंय। अभिनेता अरु चरित्र-चित्रन होय। रूपक की कोऊ न कोऊ भाषा और शैलीऊ होय। उद्देश्यऊ होइ है। इन बातन में ते भौत सी बात खोरिया मेंऊ पाई जाँय तौ फिर खोरिया रूपक च्यों नाँय है सकै ?
रूपक कौ अर्थ है- 'रूपयति इति रूपकम्' 'रूपारोपात्तु रूपकम्।' रूप में कन् और ण्वुल, प्रत्यय लगाये ते रूपक बनैं। इन सबन कौ सार है 'रूप धारन करिवौई रूपक है'। दशरूपक में रूपक कौ लच्छन लिख्यौ है-

> अवस्थान्द कृतिनोट्यं रूप दृश्यतयोच्यते।
> रूपकं तत्समारोपात् दशधैव रसाश्रयम् ॥ 117

अवस्था के अनुकरन तेई नाट्य कहैं, देखे जायवे के कारन याते रूप ऊ कहैं। वा नाट्य-रूप तेई रूपक कहैं चौंकै यामें आरोप पायौ जाय। रूप धारन करवे के अलाबाऊ रूपक में मंच, नांच, गीत, बाजे, प्रेक्षागृह, नायक-नायिका, पात्र, अभिनेता, अभिनेयता, देखिवे वारें (सामाजिक) रस, कथा-वस्तु, संवाद जैसी भौत सी बात होंय। ये सब बात थोरी भौत खोरिया में मिलैं सो हम कह सकैं कै खोरियाऊ एक रूपक विधा है।

जब काऊ गिरस्त में छोरा कौ ब्याह होय तौ घर माँहिं भौत बड़ौ उच्छव होय। सबके मन माँहिं उछाव छायौ रहै। ब्याह वारे कौ हियौ भौत उदार है जाय। बू जी खोलिकैं खरच करै अरु जन-जन अपने मनकूँ उछाह सौं भरै। जब- 'सादी बारे कौ दिल दरियाव हमारें घर सादी' जैसें गीत गववे लगैं तो दूलहा की मैया, भाभी, काकी, ताई, भुआ, भैन और दूसरी आई गईऊ खुसी मनायवे में पीछें कैसै रह जाएंगी। परि जौलों मर्द मांसि घर में घिरे रहैं तौलौं वेऊ घर में ई घुटती रहें अरु खुलिकैं अपने मन की बातै

नाँय कह सकैं। परि जब दूलहा, की निकासी है जाय, दूलहा घोड़ी पै चढ़िकैं मन्दिर में जायकैं,देवतान कूँ ढ़ोक लगायकैं, अपनी मैया कौ आंचर लैकैं विजय जात्रा पै चलि दे और सबई घर बारे नातेदार रिसतेदार और गांम वारे मर्द जांमें अंडी बच्चाते बरात कूँ चले जाँय तौ घर पै छोरी छापरी और वैयरवानी ई रहजांय। रोटी-पानी कौ कोऊ काम रहै नाँय सौं सब जुरि मिलिकैं खुलिकैं बात करें, हाँसी ठट्ठे करें और अपने मन की घुटन कूँ निकारबे ताँई हल्की-भारी सब तरह की बात कहवे में नाँय चूकैं। ई सुतन्त्रता स्वच्छन्दता कौ रूप धरिले ज्याते न तौ बिनकी नाक में नकेल रहै और न मुंह में लगाम। जो कछू मुंहपै आय जाय सोई बिना रोक टोक बोलती चली जाँय। बात असलीलता तानूं पहुँच जाय। दिन छिपबे की बाट देखती रहैं। अपने दूसरे काम-काजै दिन में जल्दी तेई सिलटाय लैं और सबते निरचू हैकैं अँधेरौ परतई अनुमान लगाय लैं कै अब तौ बरात पहुँच गई होयगी। म्हाँ बेटी बारे के द्वार पै कहा है रह्यौ होयगौ, सो वा पूरे दृश्य कौ अपने घर में रूपक और अभिनय करैं। या रूपक और अभिनय कौ नाम ही खोरिया है। न्यों संस्कृत रूपकन की तौ काऊ श्रेणी में नाँय राख्यौ जाय सकै परि ब्रज लोक रूपकन में याकौ अपनौं महत्व है।

खोरिया में सबई लुगाई भाग लें। सबई लाजै खूंटी ते टांग कै खुलिकै बोलिवे लगैं। कछूक जो जादा बोलिवे वारी हौंय वे यामें पहल करैं। म्हौड़ी पै बेई आमें और टाढ़-टाढ़ कै गामें। इनमें तेई एक ज्वान सी दूलहा बनैं जो मरदानों भेस धरै और दूसरी दुलहन बनैं जो नयौ जोड़ा पहरै। दूलहा कै म्हौर बंधै और दुलहन कें म्हौरी। म्हौर की ठौर पै बीजना ते काम चलाय लैं। तोरन मारिवे के ताँई तरिवार की ठौर पै कोऊ छरियाँ लैलैं।

सबई नाटकन की तरियाँ यामैंऊ स्थापना करनी परै। या अरदासै जोर जोर ते गामें-

अलखा ई आयौ छैल खबर लीजौ, अलखा री आयौ ----

फलाने के पिछवारें चरकला टूट्यौ है, हाँ बलाजी टूट्यौ है

तोर गयौ कोऊ और, फलानौं 'पीट्यौ है।

संवाद- बोल बे सांड़िया,

कह रे लगानियां।

गीत में फलाने 'की ठौर पै काऊ आदमी कौ नाम लें। या गीत ते खोरिया के इतिहास कौ पतौ चलै। ऐसो लगै कै कबहूं काऊ घर में काऊ के ब्याहु के औसर पै अकेली लुगाईन के संग काऊ मुसलमान नैं अभद्र आचरन करि दियौ हो। वाई घटना ते प्रेरित है कैं लुगाईनैं ऐसे दुराचारीन कूँ सबक सिखायवे के ताँईं और अपनी और घर की रच्छा करिवे के ताँई खोरिया रच्यौ ज्याके सहारे ते जग कैं रातै आंखिन में है कैं निकार सकैं। याते जि बात सिध्द होय कै बू मुसलमान कोऊ 'अलखां' या अलीखां नाम कौ होयगौ। इन सब बातन ते सिद्व होय कै खोरिया कौ आरम्भ - मुगल सासनकाल में भयौ। जभई सोटा लंगोटा ते तैयार रहैं।

भारत और विशेष रूप ते ब्रज लोक सदां ते सहृदय रह्यौ है सो पुरुष के संग नारीऊ हरेक छेत्र में सोचती रही है और फिर पुरुष होय चाय नारी, जीजा होय चाय सारी, मनबहलायवे की जरूरत तौ सबकूँई होय। नारी पुरुष ते जादा सहृदय होय। भारत की नारी लाज की मारी मर्जाद में बंधी भई सदाँ ते घरई घर में घुटती रही है। बाय अपने मन की बात कहबे कौ भौत कम औसर मिलै। थोरौ भौत मिलै तौ फागुन के महीना में होरी के औसर पै मिलै कै फिर ब्याह-विरौंद में मिलै। सोऊ छोरी के ब्याह में तौ भंमती रहै, स्वाँस लैवेऊ कूँ समै नाँय मिलै। छोरा के ब्याह में जरूर मिलै, जब सबई मर्द मान्स बरात में चले जाँय और लुगाईन कौई राज होय तौ गाय उठैं- या घर में राज हमारौ री या घरमें --।'

मरदन के संग लुगाईऊ रामलीला, रास लीला, नौटंकी, स्वांग, भगत जैसे दूसरे रूपक और लोक-रूपकन्नैं तौ देखैई है सो या सुतन्त्र औसर पै जब मर्द माँसि सब बरात कूँ चले जाँय तौ या अमोल औसर ते फायदा उठायवे के ताँई नारी के मन माँहि एक ऐसी रूपक विधानैं जनम लियौ ज्याय वे मिल कैं बिना मरद की सहायता के, खेल सकैं। बू विधा है-खोरिया

जब हम रूपक माँऊं निगाह डारैं तौ पतौ चलै कै रूपक में रूप धरयौ जाय, नायक-नायिका और पात्र होंय, काऊ ठौर पै मंच बनैं, कथानक संवाद, गीत बाजेऊ होंय। अभिनेता अरु चरित्र-चित्रन होय। रूपक की कोऊ न कोऊ भाषा और शैलीऊ होय। उद्देश्यऊ होइ है। इन बातन में ते भौत सी बात खोरिया मेंऊ पाई जाँय तौ फिर खोरिया रूपक च्यों नाँय है सकै ?
रूपक कौ अर्थ है- 'रूपयति इति रूपकम्' 'रूपारोपात्तु रूपकम्।' रूप में कन् और ण्वुल, प्रत्यय ल
ते रूपक बनैं। इन सबन कौ सार है 'रूप धारन करिवौई रूपक है'। दशरूपक में रूपक कौ ल
है-

अवस्थान्द कृतिनोट्यं रूप दृश्यतयोच्यते।
रूपकं तत्समारोपात् दशधैव रसाश्रयम् ॥ 117

अवस्था के अनुकरन तेई नाट्य कहैं, देखे जायवे के
रूपक कहैं चौंकै यामें आरोप पायौ जाय। रूप धारन
प्रेक्षागृह, नायक-नायिका, पात्र, अभिनेता, अ
जैसी भौत सी बात होंय। ये सब बात थ
रूपक विधा है।

जब काऊ गिरस्त में छोरा कौ ब्याह होय तौ घर म
उछाव छायौ रहै। ब्याह वारे कौ हियौ भौत उदार है जाय। बू जी ख
मनकूँ उछाह सौं भरै। जब- 'सादी बारे कौ दिल दरियाव हमारें घर साद
की मैया, भाभी, काकी, ताई, भुआ, भैन और दूसरी आई गईऊ खुसी मनायवे म
परि जौलों मर्द मांसि घर में घिरे रहें तौलों वेऊ घर में ई घुटती रहें अरु खुलिकैं अ

आदमीन कौ नाम लैंती जाँय गारी बकती जांय और चूरी पहरती जाँय। चूरी पहरे पीछैं सब अपने अपने हाथन में कछू न कछू हथियार लैकें चल परैं, देखती फिरैं कै कहूँ काऊ कौने कुचारे में कोऊ मर्द मांसि तौ नाँय दुवक रह्यौ। सो कबहुँ तौ छप्पैर कूटैं, कबहुँ काऊ खाट पै परे बिस्तरनैं। कबहुँ भुसैरा में भरे भुस में मारैं तौ कबहुँ घास और करब की गरी में मारैं। जो कछू सामई आजाय, चाहै नांज की बोरी होय और चाय न्यार को गठरिया, सबमें मारती चली जांय। मर्द मांसि के हैवे के भैम ते सब ठौरन पै डंडा मारैं ज्याते दुबक्यौ भयौ चोर पिटजाय और राह कौ कांटौ मिट जाय। चौंकैं बिनकी बातन्नें कोऊ सुनले तौ सबरी पोल खुल जाय। ऐसे औसर पै बा आदमी की कम्बख्ती आवै, जाय रखबारी कूँ घर पै छोड़ि जांय बिचारौ करैऊ कहा, इत गिरै तौ कुआ वित गिरै तौ खाई।

सिगरी भार चौक में इकठौरी है जांय फिर कोरिया कोरिन कौ स्वांग करैं। यामें एक जनी कोरिया बनैऔर एक कोरिन बनै। कोरिया ताने-बाने बुनिबे की नकल उतारै, कोरिन गावै, और सब वाके संग गामें।

मेरौ कौरी गयौ बरात,
तानों कौन बुनैंगो रे,
मेरे कोरी की दूखैं आंख
कै तानों कौन बुनैगौंरे।

फिर सब जनी गरौ निकार कें जोर जोर ते बोलें-

तानौं बुननौ तानौं बुननौं
बुननौं सूत पुरानौं।

बीच में ई सँवाद सिरु है जाय संवाद में एक कोरिन होय एक कोरिन की छोरी। संवाद या तरियाँ सिरु होय-

बेटी- ओरी मैया, ओरी मैया, कौन कौ सूत लाइयै ?
मैया- बाकौ लाइयूं बाकौ, मोहन कौ लाइयूं।
बेटी- अरी, बाकौ तौ बेकार होयगौ। बूढे कौ सूतऊ बूढ़ौ होयगौ। पट्ट पट्ट टूटैगौ। बाकौ का खोर बनैगी।
(सब हँसैं और उपहास सौ उड़ामें)

फिर सबगाय उठै - तानौं बुननौं तानौं बुननौं,
बुननौं सूत पुरानौं।

फिर ऐसौई संवाद सिरू है जाय-
बेटी- ओरी मैया, आज कौन कौ सूत लाइयै ?
मैया- बाकौ लाइयूं, गोपाल कौ।
बेटी- अरी, बाकौ तौ भौत मोटौ होयगौ।

(सव हँसे और फिर गामें- तानों......)

वेटी- ओरी मैया, आजु कौन कौ सूत लाइयै ?

मैया- अरी, वाकौ लाइयूँ, गुलाव कौ।

वेटी- अरी, वाकौ तौ वहू रोटीऊ नहीं देगौ।

(सव हँसे और वाई गीतै गामें')

सूत वुनवे कौ गीत पूरौ हैवे के संगई कोरियां वारौ स्वांग पूरौ है जाय और फिर धोवी कौ स्वांग सिरू है जाय। यामेऊ एक धोवी एक धोविन, एक धोवी की छोरी होय। एक लुगाई कूँ औंधी सुवाय लैं जो धोवी के घाट की सिला वन जाय। धोवी वापै लत्तान्नैं पछाटै और धोवै, धोविन गीत गावै संगई औरऊ गामें-

धोवी कौ लाल गुलावी
मैं दौर घाट पै आई।
सौ ऽऽ ओ ऽऽ - राम
धोवी कौ लाल खिलाई
मैं दौर घाट पै आई॥

और फिर संवाद सिरु-

वेटी- ओरी मैया, ओरी मैया, कौन के लत्ता लाइयै ?

मैया- अरी वाके लाइयूं छुट्टन के'

वेटी- अरी वाके तौ मैल में चुर रहे हुंगे मैल के मारें।

(सव हँसें और ऊपर वारे गीतै गामें)

वेटी- ओरी मैया आज कौ के कपरा लाइयै धोयवे कूँ ?

मैया- अरी वाके लाइयूं किसन के।

वेटी- अरी वूतौ वज्जर सूमैं, वूतौ धुवाई के पैसाऊ नहीं देगौ

(सव हँसें और गामें-धोवी कौ लाल गुलावी ....

इन संवादन में भौत से पुरुषन कौ उपहास उड़ामें। ज्या मान्स में जौ औगुन होय वाय उजागर करिवे में नाँय चूकैं। या तरियाँ अनेकन ल्हौरे ल्हौरे कथानकन्नैं लैकैं हाँसीठठ्ठे भरे संवाद करैं, रूप धरैं नकल करैं, या तरियाँ हँसाय-हँसाय कैं सवन की हैरानगत हरैं और मन माँहि मोद भरै है।

यानें कथानक कोऊ वड़ौ और देर तानूँ चलिवे वारौ नाँय होय। याकी वस्तु प्रासांगिक कही जाय सकै। नायक नायिकाऊ यामें काऊ श्रेणी के नाँय होंय। सवई साधारण पात्र होंय। चाहे तौ दुल्हा-

दुल्हन कूँ नायक-नायिका मान सकैं सोऊ अधम स्रेनी के होंय।

संवाद पूरे हुए पाछैं फिर सब अपने धनुस बानन्नैं लेकै चल परैं। गाँम की गली-गली में बंगला, बैठक, चौपार, अथोई गैल, बाड़ौ कछु छानी नाँय रहै। कौने कौनेए छान मारैं। परि आज के जुग में आदमी कछु सुकर तौ सौ जाय रह्यौ है, सो अपने घर बैठक के आसपास परिकम्मा दैलैं म्हाईं चुहलबाजी करिलैं और अपनौ मन भरिलैं।

सबई रचनान कौ कछू न कछु लच्छ होय। खोरियाऊ कछु उद्देश्य और प्रयोजनन की राह पै आगें बढ़ै। पहलौ, लुगाई घर में घुसी-घुसी घुटती रहैं, घुटन अनुभव करैं सो बिनकैं सोचिवे बिचारिबे की छिमता कम है जाय, कूप मंडूक सी बनि जाँय। या घूटन कौ बापै भौत बुरौ मनौवैज्ञानिक असर परै सो या औसर पै बू अपने मन की गंदगी कूँ निकार के बाहर करैं। जिन असलील बातन्नैं बू मर्दमांसिन कैं सामई और अकेली नाँय करि सकैं बिन्नै या पुरुपन ते रहित समाज में सामूहिक रूप में संगेड़े में कह सकैं। याते वे भरि पेट हँसिलैं, अपनौ मन हलकौ करिलैं कछु नयौ उछाह सौं भरिकैंआगे के ताँईं कछु औरऊ तानौ-बानौ बुन लैं। दूजौ, या तरियाँ ब्याह कौ उच्छव भली भाँति मनाय सकैं। तीजौ, बिना मरदन के सूनी सी रात कूँ अच्छी तरियाँ बिताय सकैं। चौथौ, लुगाईन्नैं अकेली जानिकैं कै ब्याह के काम काज में डुबी भई जानि कैं कहूँ कोऊ चोर नहीं आय जाय अरु अपने काम में सफल नाँय है जाय याके मारै रातभर जगनों परै कोऊ चोर चकोर आय जाय तौ बांके पीछै भगनौ परै सो वे सोटा लंगोटा ते तैयार रहैं। या जगवे तांई कोऊ बहानौ चइये। बिना कामे कोऊ जगऊ नाँय सकै। सो याके सहारे वे पूरी रातै आंखन में है कै निकार दें और बिनके धनकुटा सोटा पटैगा और लटठन्नैं देखकैं आये भये चोर ता कहा डकैतऊ भाग जाँय। बिनके वा विकराल रूप कूँ दैखिकैं कैसौऊ अजनबी टांगन में पूंछ दवाय कें भाग जाय। या तरियाँ खोरिया नारी मन की विथा कूँ कम करिबे कै तांई, मन की घुटन कूँ हरिवे के ताँईं, मन माँहिं नयौ उल्लास भरिवे ताँईं, सूनी राति पूरी करिवे कै तांई और चोर चकोरन ते रखवारी करिवे के ताँईं खेल्यौ जाय। जो रूप धरिवे के कारन रूपकैं, नाच गीत, संवाद, पात्र और अभिनेता हैवे के कारन नाट्य है। यामें नाट्य के घाट बाढ़ि सवरे ई तत्त पाये जांय। सोई विसवास के संग कह्यौ जाय सकैकै खोरियाऊ एक नाट्य, रूपक और लोक मंच की विधा है। जि लोक सौं पूरी तरियाँ जुर्‌यौ भयौ लोक रंजन ताँईं कर्‌यौ जायवे वारौ नारी लोक कौ अनौखौ सृजन है।

- 36, जसवन्त नगर प्रदर्शनी मार्ग,
भरतपुर- 321001



ब्रज कौ 'ढोला' औरु बाकौ लोक-नाट्य रूप

-डॉ. श्याम सनेही लाल शर्मा

ब्रज कौ लोक महाकाव्य 'ढोला' लोक-साहित्य में अपनौ बिसेस स्थानु राखतु है। जाकौ ब्रज के जन-जीवन पै बड़ौ भारी प्रभाबु है। याकौ कारन जि है, कै समूचे ब्रज मंडल की संस्कृति यामें प्रतिबिम्बित होय है। 'ढोला' कूँ ब्रज में तीन तरैं ते गायौ जात रह्यौ है। उनकूँ गाइबै के तीनि तरीका या फिरि गाइवे की तीनि सैलियाँ कह्यौ जाइ सकतु है। बे तीनि गायन सैलियाँ हैं

1. चिकाड़े कौ 'ढोला'
2. कनटेका कौ 'ढोला'
3. दइया मइया कौ 'ढोला'

'ढोला' गाइबै कौ जि तीसरौ रूपई नौटंकी कौ रूप है। काऊ समै जि रूप बड़ौ प्रचलन में हतौ परि अब समाप्त-सौ है। ब्रज में 'ढोला' के नौटंकी रूप कूँ प्रचलित करिबे बारेन में ''सरनाम'' और 'बाबू'' कौ नामु सब जानत हैं। आगे ''नथाराम'' ने जाइ बिकसित करिबे में बड़ी भूमिका निभाई। यूँ तो चिकाड़े कौ 'ढोला' अबऊ गायौ जातु है। परि 'दइया मइया कौ 'ढोला' काऊ समै अपनी अभिनयात्मक प्रवृत्ति के कारन बहुत सराहौ जातु रह्यौ हतौ। जा सैली की कछू बिसेसता ह्याँ उल्लिखित करिवौ समीचीन रहैगौ-

1. 'ढोला' की जा सैली में लोकनाट्य के लिए आवस्यक सभी लोकधरम औरु लोकधरमी रम्परान कौ पा : कर्यौ जातु है। जामें लोक रूढ़ियन की औरु लोक-बिस्वासन की सबलता ाई जाति है।

2. गेय तथा नर्तय गुणन की प्रधानता औरु अभिनयात्मक गुनन की न्यूनता के संगई-पूर्वाभ्यास, सिच्छन औरु प्रबीनता की आवस्यकता कौ अभावु यामें अक्सर देख्यौ गयौ है।

3. प्रस्तुतीकरन में फुर्ती और चुस्ती ई जाकौ प्रान तत्तु है। - हूँ -असोभनीय संबादन कौ प्रयोगऊ र्यौ जातु रहयौ है।

4. बाद्य उपकरणन में 'हारमोनियम', 'नक्कारा' (नगाड़ा), 'ढोलक' कौ प्रयोग बिसेस रूप ते

रामलीला में कुँवर कलेऊ

- श्रीमती माधुरी शास्त्री

फागुन में सुर मंडल संस्था होरी कार्यक्रम रखै। हर बरस मंच पै नए-नए रंग दिखावै। दो तीन बरस पहले की बात है-रवीन्द्र मंच के मुक्ताकाश पै 101 (एक सौ एक) कलाकार उतारे। मंच पै रँगीलौ रसीलौ कार्यक्रम फागुनायौ। कार्यक्रम के बीच में बरात के जैमे कौ दृश्य हौ। राजा जनक के द्वार पै बराती भोजन कर रहे हैं। वैयरबानी गारी गा रही हैं गारी या तरियाँ हीं-

राम रँग बरसैगौ
रँग बरसै और इमरत बरसै और बरसै कस्तूरी
रँग बरसैगौ।

या दृश्य कूँ देखि कैं पुराने समय की बरात की याद आ गई। पांतियान पै बैठी बरात जैं रही है। ढाक की पत्तर हैं। कुल्ली-सकोरा हैं। घराती झुक-झुक कैं मनुहार करते भए परोस रहे हैं। वैयरवानी गा रही हैं-

धीरैं धीरैं परसौ निरोती लाल
मैलौ होय दुपट्टा रंग बरसैगौ
हाँ हाँ राम रँग बरसैगौ।

समधिन नाम लैं लैकैं समधीन कूँ गारी दै रही हैं और समधी हँस-हँस कै जैं रहे हैं।

मोप सूझी कै जब गारीन कौ दृश्यांकन है सकै तौ कुँवर कलेऊ के हास्य भरे मनोविनोद कौ तौ और अच्छी तरह मंचन है सकै।

आजकल कुँवर कलेऊ कौ रिवाज उड़ सौ गयौ है। कुँवर कलेऊ पहलैं ब्याह के दूसरे दिन हौंतौ। दूल्है कूँ बेटीवारे के घर न्हवाते। ता पाछैं दूल्हैं अपने संगी साथीन के संग कलेऊ करतौ। घर की वैयरवानी हँसी ठिठोली करती रहतीं। कैसौ मनोहारी हास परिहास हौंतौ होयगौ। याकूँ मंच पै बखूबी उतारौ जा सकै।

एक सुरम्य दृश्य राम, लक्ष्मण, भरत शत्रुघ्न के कुँवर कलेऊ कौ है। चारों राजकुँवर राजा जनक के महलन में हैं। सीता, उर्मिला, माँडवी और श्रुतिकीर्ति हू हैं। इनकी भाभी सिद्धि हू है। बिनकी सहेली हू हैं। चारों कुँवर अपनी सास के पास बैठे हैं। सिद्धि सीता के भाई लक्ष्मीनिधि की बहू हैं। वह कुँवर कलेऊ के पाछें चुहलबाजी सिरु करै-

सिद्धि - ओहो आप तौ हमसौं छुपकैं सासूजी के पास बैठे हौ।
हो चितचोर किशोर भूप के, बड़े चोर तुम प्यारे।
सुरति हमारि भुलाय साँवरे, सास समीप सिधारे।

राम- भाभी हम तौ आपकूँ ही ढूँए रहे आप तौ जानैं कहाँ छुप कैं बैठ गईं।

सिद्धि- तौ आऔ हमारे संग आऔ। हमारे घर कूँ हू देख लेऔ और कछू मन गुन की हू बतरा लेऔ।

(सिद्धि चारों कुँवरन कूँ अपने संग लिवाय कै लै जाए फिर करैं ठिठोली)

सीता की सहेली - सुनौ लालजी आप बड़े सुंदर हौ बुढ़ऊ दशरथ तौ इतेक सुंदर हत नाएँ। फिर इतेक रूप आपनैं कहाँ सौं पा लियौ? हमैं तौ ऐसौ लगै जैसें आप कामदेव के बेटा हौं ?

''कानन सुनौ काम अति सुंदर, का तुमकौं सोई जाए ''

सिद्धि - अरी तुमनैं चोखी बात करी। इनके यहाँ सब कछू है सकै। सबतौ अपनी जाति में ब्याह करैं पर इनकी बहन शांता तौ ब्राह्मण सृंगी ऋषि पै मोहित है गई। का वानैं प्रेम विवाह करौ। कै ऐसौ लगै सृंगी ही बाए लैकैं भाग गए?

लक्ष्मण- सुनौं लाड़िली, विधाता नैं जो लिख दियौ है, वही होय। तुम देख लेऔ- हाथ कंगन कूँ आरसी का। कहाँ तौ हम सूर्यवंशी राजकुमार और कहाँ विदेह (बिनादेह के वैरागी) की कन्या। पर हमैं हू तौ यहाँ आपकैं फँसनौ परौ।

उर्मिला की सहेली - अजी आपसौं कौन जीत सकै। आपके यहाँ की तौ रीतहि अनौखी है आपके यहाँ तौ मैया खीर खाय कैं ही छोरान नैं जन दें। बाप की जरुरत ई नाँए। अयोध्या में बड़ी निराली बात है।

राम- ओ हो, बड़ी भली बात कर रही हौ। अयोध्या में तौ मैया ही जनैं पर जनकपुरी में तौ धरती में ते ही छोरी है जाएँ
''तुम्हरे तौ सब जनमे महि ते, हमरे नहिं जस रीति''

लक्ष्मीनिधि की साली चन्द्रकला - अरे तुमतौ बड़े चटर-मटर जवाब दै रहे हौ। बचपन नैं तौ तुम मुनीन के संग रहे फिर ये सब बात कहाँ ते सीख लईं। मुनीन की पतीन ते कै [illegible] ते?

खट्टे-मीठे को स्वाद तौ बिना चखे आवै ही नाहै।

भरत- अरी लाड़िली मुनीन के संग रह कैं तौ हमनै ज्ञान सीखौ है और सब बात तौ आपसौं सीखवे आए हैं।

रहे मुनिन संग ज्ञान सिखन कौ, सो सब सुने सुनाए ।

कामिनी काम कला सब सीखन, पास तिहारे आए।

सिद्धि- तुम तौ भरतजी ऐसी बात मत करौ। तिहारी तौ साधून में गिनती है। तुम संसारी बातन नैं का जानौ।

भरत- तुम सच कहौ हौ। हम साधु हैं। हम तौ परायौ काज करैं। पर तुमहू तौ कछू करौ।

"ऐसी सेवा करौ हमारी, जामें हौं हम राजी।"

मांडवी की सखी - पर एक बात बताऔ तिहारे भैया तौ मुनि के यहाँ यज्ञ की रक्षा करवे गए। पर, वहाँ का भयौ-उनकूँ सुंदर देख कामवस त्रिया ताड़का आई।

पर कछु ना कर सके लालजी, मारेहु तेहि खिसियाई।

शत्रुघ्न - अच्छौ, हमैं का पतौ ताड़का के नातेदार यहाँ बैठे हैं। हमसौं तौ भूल है गई। पर अब आप जो बदलौ लैनौ चाहौ लै लेऔ, जासौं फिर पछतावौ नहीं रहै। हम चारों भाई तिहारी सेवा में हाजिर बैठे हैं।

सिद्धि- अरे तुम तौ बड़े छरछन्दी हौ। मुनीन के संग रहे पर ये करतब कहाँ ते सीख लिए।

शत्रुघ्न - याकी पहचान आपही कर सकौ। भेदिया कौ भेद भैदिया ही जान सकै। खग जानैं खग ही की भासा ।

(सब तारी बजावैं, खिल खिलाप कैं हसैं)

यह बानगीसरुप हास परिहास कुँवर कलेऊ के औसर कौ है। राम कथा के गंभीर प्रवाह के बीच ऐसे हल्के फुल्के विनोद कूँ मध्यकालीन कवीन नैं क्षेपक के रुप में तुलसी के राम चरित मानस में हू जोड़ो है। इनकौ कथावाचक, कथान के मध्य प्रयोग करैं और सरस हास्य विनोद कौ सृजन करैं। है सकै क्षेपक लोप है रहे होंय। पर, ऐसे प्रसंगन कौ मंचन, लोक के मनोरंजन कूँ और जानकारी दैवे कूँ सार्थक सिद्ध होगयौ।

सी-8, पृथ्वीराज रोड,
जयपुर, (राज.)